हु -श्र ण-सिद्धान्त
प ा लि

❀ संग्रहकर्त्ता ❀

परमपूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज
के परम शिष्य श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी
श्री १०८ मुनि देवनन्दिजी, श्री १०५
आर्यिका कुलभूषणमति माताजी

प्रकाशन संयोजक
शान्तिकुमार गगवाल

प्रबन्ध सम्पादक
लल्लूलाल जैन (गोधा)

❀ प्रकाशक ❀

श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रन्थमाला समिति
१९३६, घी वालो का रास्ता, कसेरो की गली, जौहरी बाजार,
जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)

श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज के संघ सहित हासन (कर्नाटक) चातुर्मास वर्ष १९८२ में इन्द्र ध्वज विधान के विसर्जन के शुभ अवसर पर प्रकाशित



❀ प्रथम सस्करण ११०० प्रतियाँ

❀ मूल्य [illegible] रुपये
[डाक व्यय अतिरिक्त]

❀ मुद्रक मूनलाइट प्रिन्टर्स, जयपुर-३



प्राप्ति स्थान

शान्तिकुमार गगवाल

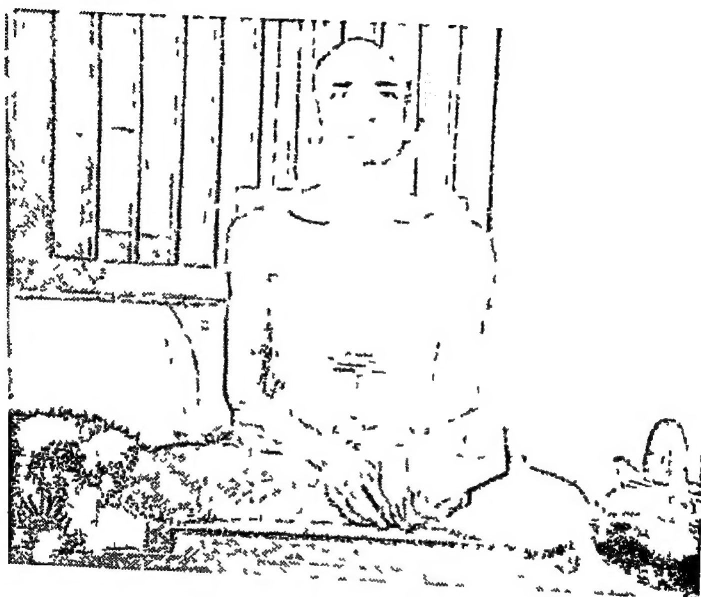
प्रकाशन सयोजक

श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रंथमाला समिति

कार्यालय १६३६, घी वालो का रास्ता,

कसेरो की गली, जौहरी बाजार,

जयपुर - ३०२००३ (राजस्थान)



अध्यात्म बालयोगी श्री १०८
आचार्य सन्मतिसागरजी महाराज साहब



श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज साहब

परमपूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज के संघस्थ साधुगण



बायें से दायें—श्री १०५ आर्यिका कुलभूषणमती माताजी, श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी, श्री १०८ उपाध्याय मुनि कनकनन्दिजी, श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज साहब, श्री १०८ मुनि वीरनन्दिजी, श्री १०८ मुनि देवनन्दिजी महाराज ।

 **भजन** 

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ।
आप तरे और पर को तारें निष्प्रेही निर्मल है । ऐसे
तिल-तुष मात्र शेष नहीं जाके,
ज्ञान ध्यान गुण बल हैं । ऐसे
शान्त दिगम्बर मुद्रा जिनकी निष्प्रेही निर्मल है । ऐसे
भागचन्द तिनको नित चाहे,
ज्यों कमलनि को अलि हैं । ऐसे

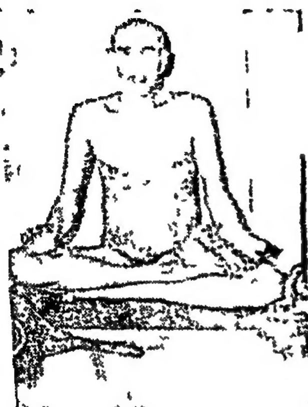


श्री गणिनी १०५ आर्यिका विदुषीरत्न, सम्यक्ज्ञान शिरोमणि
सिद्धान्त विशारद विजयामति माताजी।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः

हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि

आशीर्वाद एव शुभकामनाएँ



त्रिमूर्ति, नेशनल पार्क

बोरीवली, बम्बई

दिनाक ८-११-८२

श्री १०८ सन्मार्ग-दिवाकर निमित्तज्ञान-शिरोमणि ाचार्यरत्न विमलसागरजी महारा ा मंगलमय शुभाशीर्वाद

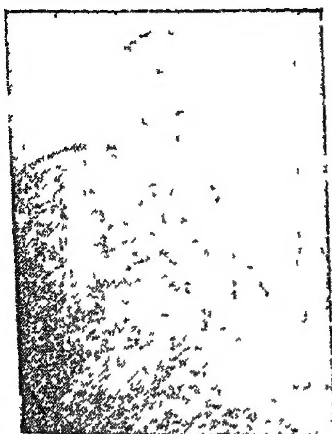
श्री दिगम्बर जैन कुन्थुविजय ग्रथमाला समिति, जयपुर (राजस्थान) के चतुर्थ पुष्प "हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि" का प्रकाशन हो रहा है। इसके लिये हमारा पूर्ण आशीर्वाद है। यह ग्रथ श्रमण (साधु) के लिये ठीक रहेगा। साधु, त्यागी तथा श्रावक, सभी को इस ग्रन्थ के पारायण से अपने ज्ञानावरणी दर्शनावरणी के क्षयोपशम की सिद्धि हो, ऐसी हम कामना करते हैं। यह ग्रथ आगमानुसार प्रकाशित हो रहा है। हमारी समाज व साधुवृ द अवश्य ही इससे लाभ उठावेंगे।

आचार्य विमलसागर



श्री १०८ सन्मार्ग-दिवाकर निमित्त-ज्ञान-शिरोमणि आचार्यरत्न विमलसागरजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए प्रकाशन-सयोजक शान्तिकुमार गगवाल

आशीर्वाद एव शुभकामनाएँ



विश्वधर्मप्रवक्ता विद्यालंकार श्री १०८ आचार्य स्थिवर संभवसागरजी महाराज का मंगलमय शुभाशीर्वाद

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री दिगम्बर जैन कुथुविजय ग्रथमाना ममिति के चतर्थ पुष्प **"हुम्बुज श्रमण सिद्धान्त पाठावलि"** का प्रकाशन हो रहा है। स्तोत्र सस्कृत मे है, तो भी समस्त साधुवर्ग व जैन समाज मे पहुँचने से निश्चित ही लाभ मिलेगा। जिसका सस्कृत नही भी आती तो उसे रोज सुनकर धारण तो अवश्य ही हो जावेगी। कहा गया है कि एक बूढी मा रोज भक्तामर का पाठ सुना करती थी। उसने एक बार एक पडितजी से कहा कि मुझे भक्तामर सुनाओ, तो उस पडित ने कहा – तुमको सस्कृत नही आती है, क्या सुनोगी ? लेकिन बुढिया के आग्रह करने पर पडित ने पाठ सुनाना प्रारम्भ किया। एक श्लोक भक्तामर का बोल कर बुढिया की परीक्षा करने के लिये उन्होने बीच मे वयभूस्तोत्र बोलना चालू कर दिया, तो बुढिया मा बोली कि आपने भक्तामर का पाठ बोलते-२ यह दूसरा स्वयभू स्तोत्र ले लिया। यह सुन कर पडितजी आश्चर्य करने लगे और बूढी मा से पूछा कि आप तो सस्कृत नही जानती हो फिर आपको क्या मालूम है कि कौन सा स्तोत्र है। बुढिया ने कहा रोज मैं ध्यान से स्तोत्र सुनती हू इस लिये मेरी धारणा बैठी हुई है। इसी प्रकार जिनको सस्कृत नही भी आती हो उन्हें भी रोज सुनने से कई स्तोत्र कठ पाठ हो जाते है।

श्री शान्तिकुमारजी गगवाल, जो यह सग्रहीत स्तोत्र ग्रथ के प्रकाशन का कार्य कर रहे है, उनका यह सकल्प निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो ऐसा मेरा आशीर्वाद है। उनका यह सद्भाग्य है। हर कोई इस प्रकार का कार्य नही कर सकता है।

कहा भी हैं —

सौभाग्य हि सुदुर्लभम् ।

नीतिकार कहते है —

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्

व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन च ।।

अर्थात् विवेकवान पुरुष हमेशा अपना मन काव्य शास्त्र में ही लगाता है और अज्ञानी मनुष्य व्यसन मे, निद्रा मे, झगडे मे मन को लगाता है। आपको जो जिनवाणी प्रचार का सुअवसर मिला है इस अवसर से आप ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम करते हुए अपने आत्म कल्याण के मार्ग मे अडिग रहे। आप समाज एव साधुओ के उपकरण को सीमित रखने की ऐसी ही अनेक पुस्तको का सग्रह करें और आपकी जो यह ग्रथमाला समिति है वह दिनो-दिन वृद्धि को प्राप्त हो, ऐसा आशीर्वाद है।

— आचार्य सभवसागर







स्थान--मोजमाबाद

श्री १०५ क्षुल्लक सिद्ध-सागरजी महाराज का

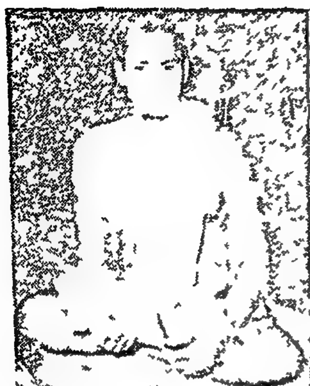
मंगलमय शुभाशीर्वाद



श्री दिगम्बर जैन कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति के चतुर्थ पुष्प लघुज-श्रमण-सिद्धान्त पाठावलि के प्रकाशन के समाचार मालूम हुए। इसमे लगभग ७५ ग्रन्थो से कई स्तोत्र पाठो का सकलन है। इसमे दो सहस्र-वर्ष पूर्व रचे गये मूलाचार तथा ढाई सहस्र पूर्व पूर्व रचे गये गोतमस्वामी-कृत प्रतिक्रमणो का भी प्रकाशन हो रहा है। सगीताचार्य श्री शान्तिकुमारजी गगवाल का उत्साह प्रशसा के योग्य है।

इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन के लिए प्रकाशन सयोजक श्री गगवालजी को शुभाशीर्वाद तथा पूज्य गणधराचार्य जी मुनिराजो के लिये सादर सधन्यवाद नमोस्तु वदामि विदित हो।

क्षुल्लक सिद्धसागर
मोजमाबाद, जयपुर (राजस्थान)



स्थान—बोरीवली, बम्बई

१०५ श्री क्षुल्लक सन्मति-सागर 'ज्ञानानन्दजी' महाराज का मंगलमय

❋ शुभाशीर्वाद ❋

❋ श्रीवीतरागाय नमः ❋

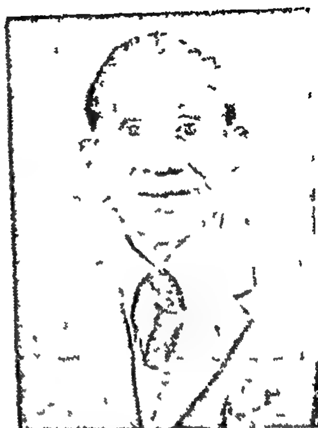
भारतवसुन्धरा पर सम्यग्ज्ञान के प्रचार एवं प्रसार मे अनेको सस्थाए कार्यरत हैं उन मे से एक है—श्री दिगम्बर जैन कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति, जयपुर (राजस्थान)। यद्यपि ग्रन्थमाला की स्थापना को अधिक समय नही हुआ है, फिर भी अल्पकाल मे ही कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन कर इसने समाज मे प्रतिष्ठा स्थापित की है। कोई भी सस्था कुशल सचालको के अभाव मे कार्य करने मे सफल नही होती। श्री शान्तिकुमारजी गगवाल, कुन्थुविजय ग्रन्थमाला के प्रकाशन सयोजक है। आप ग्रन्थमाला का सचालन कर रहे है। आपकी अभिरुचि, कार्यकुशलता सराहनीय है। आपकी विशेष लगनशीलता के ही कारण अल्पकाल मे सस्था तीन पुष्प प्रकाशित कर चुकी है और अब चतुर्थ पुष्प हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि नाम से प्रकाशित होने जा रहा है। आपके सभी साथियो की भी सम्यग्ज्ञान के प्रसार मे अच्छी अभिरुचि है।

अभी जयपुर खनियां मे पचकल्याणक महोत्सव के शुभावसर पर श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र-मन्त्र तत्र विधि, दशलक्षणपर्व के शुभावसर पर तजो मान करो ध्यान पुस्तक का विमोचन परमपूज्य भारत गौरव श्री १०८ आचार्य-रत्न देशभूषणजी महाराज के कर कमलो द्वारा हुआ था। पुस्तको का समाज मे अच्छा आदर हो रहा है। अनेको महानुभाव चर्चा करते है कि वर्तमान युग के लिये विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

पूज्य गणधराचार्य श्री १०८ कुन्थुसागरजी एव श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयामति माताजी के शुभाशीर्वाद से सस्थापित यह सस्था अनेकान्तात्मक वस्तु स्वरूप का स्याद्वाद शैली से जिनमे विवेचन हो—ऐसे चारो अनुयोगो के ग्रन्थो का सदैव प्रकाशित करने मे सफलीभूत होती रहे—यही हमारा शुभाशीर्वाद है।

क्षुल्लक सन्मतिसागर

४८/२ रावजी बाजार, इन्दौर
१३/१०/८२



प्रो० अक्षयकुमारजी जैन

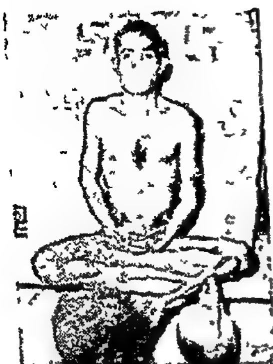
एम. ए (हिन्दी-सस्कृत), एम. जे
पी. एच, साहित्य-आयुर्वेद-धर्मरत्न,
सिद्धान्तशास्त्री, सम्पादनकलाविशारद,
आर. एम. पी., फलित ज्योतिष
वशेषज्ञ

"श्री हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि का प्रकाशन एक भागीरथ प्रयत्न है"। इस भक्ति ज्ञानगगा मे अवगाहन कर जहाँ कर्ममल से मुक्ति मिलेगी, वही आत्मानद भी प्रकट होगा।

'ये स्तोत्र आत्मा के सगीत है'। भावुक भक्त के विह्वल हृदय की पवित्र पुकार हैं। जैन सिद्धान्त साहित्य-काव्य महोदधि के इन स्तोत्र-रत्नो की मणिमाला मुनि, आर्यिका, श्रावण-श्राविका चतुर्विध जिनसघ को कलिकाल मे सम्यक्त्व पाथेय देकर आत्मशान्ति और शुद्धोपलब्धि करावें—यही कामना है।

इस स्तुत्य एव अभिनन्दनीय कार्य के लिए मेरा नमन और बधाइयाँ स्वीकार करें।

अक्षयकुमार जैन



श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज के ग्रंथप्रकाशन के बारे में उद्‌गार एवं मंगलमय शुभाशीर्वाद

ससार को दु ख से छुडाने के लिये शुक्लध्यान को मुख्य माना है। धर्मध्यान शुक्लध्यान का साधन है। साधन के बिना साध्य की कभी सिद्धी नहीं हो सकती है। आत्मध्यान की सिद्धी के लिये धर्मध्यान ही मुख्य है। प्रथम अवस्था मे धर्मध्यान के माध्यम से ही आत्मध्यान मे एकाग्रता आती है। इस काल मे इस क्षेत्र मे आचार्यों ने शुक्लध्यान के होने का निषेध किया है। आत्मध्यान के बिना शुक्लध्यान की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती है। आत्मध्यान के लिये धर्मध्यान की आराधना करना परम आवश्यक है। ससारी जीवो को धर्मध्यान पूर्वक ही अपना समय बिताना चाहिये। हमारा समय धर्मध्यान पूर्वक व्यतीत नहीं होता है, तो समझो निश्चित ही आर्त व रौद्रध्यान पूर्वक समय बीतेगा, और आर्त-रौद्रध्यान संसार का ही कारण होगा। हमे ससार से छूटना है, मोक्ष जाना है, इसलिये धर्मध्यान की आराधना करनी चाहिये। मन को एकाग्र करने के लिये स्तोत्र, स्तुति, वदना, प्रतिक्रमण, सिद्धान्त ग्रंथों का पठन-पाठन, मनन रूप धर्मध्यान परम आवश्यक है। आचार्य तार्किक विद्वान विद्यानन्दिस्वामी को आप्तमीमासा के सुनने और मनन रूप निमित्त से ही सम्यक्त्व लाभ हुआ। हमे भी यही करना चाहिये। सम्यग्दृष्टि श्रावक, देशव्रती श्रावक, और मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, ऐलक आदि को अपने धर्मध्यान मे स्थित रहने के लिये शुभोपयोगरूप क्रिया बताई है, और उन क्रियाओ को चतुर्विध संघ करता भी है। लेकिन सब पाठो के एक जगह एकत्रित नही होने से साधुओ को अनेक पुस्तकें रखने से संयम में बाधा भी आती है, इसके अलावा एक स्थान से दूसरे स्थान मे ले जाने के लिये नाना प्रकार के कष्टो का भी अनुभव होता है और उस कष्ट से साधुता मे दोष भी सम्भावित है, और ले जाने लाने मे जिनवाणी का भी अविनय होता है, क्योंकि साधू सब शास्त्रो

को लेकर स्वयं मस्तक पर तो लाद कर ले नहीं जायेगा, उसके लिये वाहन आदि की आवश्यकता पडेगी ही, इसप्रकार नाना प्रकार के दोष उत्पन्न होगे। इसी को ध्यान मे रखते हुये साधुओ की नि सगता की रक्षा के उद्देश्य से इस पाठावली का सग्रह किया गया है। इस मे करीब ७५ ग्रंथो का गुटका रूप सकलन है। सब साधुओ की नित्यक्रिया, पाठ आदि के लिये और आत्म स्थिति को बनाये रखने के लिये अनेक सिद्धान्त ग्रंथो का मूल सग्रह किया गया है। इसी एक ग्रथ मात्र से ही साधु का सर्व कार्य हो सकता है। अनेक ग्रथो के रखने की आवश्यकता भी नही पडेगी। अनेक ग्रथो के मूल का प्रतिदिन पाठ करने मे भी सुविधा रहेगी। मैं तो समझता हू कि इस प्रकार का सग्रह अभूतपूर्व ही है। पहले प्रथम गुच्छक गुटका मात्र १८ ग्रथो का संकलन तो छपा है, लेकिन ७२ ग्रथो का इस प्रकार का सकलन अभी तक नहीं छपा है। इसके अतिरिक्त उक्त प्रथम गुच्छक (गुटका) अब उपलब्ध भी नहीं है।

यह सकलन मात्र साधुओ को ध्यान मे रखते हुए किया है। जरूर ही इससे साधु वर्ग लाभान्वित होगे। विहार मे साधुओ को मात्र एक पुस्तक से ही काम चल सकेगा और आदान-निक्षेपण समिति का भी अच्छी तरह से पालन हो सकेगा।

इस पुस्तक मे, कुन्दकुन्दाचार्य, पूज्यपादाचार्य, सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य, द्वारा रचित ग्रथो का सकलन है। यह एक ही ग्रथ अपने आप मे पूर्णरूप हैं। इस ग्रथ मे आध्यात्मिक ग्रंथ, आचारसारादि ग्रथ, करणानुयोग ग्रंथ आदि और क्रियाकाण्ड यह सब कुछ सकलित हो सका है। इस गुटका की प्रेस कापी करने मे सहायक हमारे ही प्रिय शिष्य वर्ग हैं —

श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी, १०८ मुनि देवनन्दिजी १०५ आर्यिका कुलभूषणमति माताजी इन सब ने रातदिन श्रम करके इस सकलन की पाण्डुलिपि तैयार की है, इसलिये ये लोग बहुत-बहुत आशीर्वाद के पात्र है। इन लोगो का परिश्रम सराहनीय है। इस ग्रंथ का सकलन भगवान गोम्मटेश श्री बाहुवलि के क्षेत्र श्री श्रवणबेलगोल मे सम्पन्न हुआ है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति जयपुर (राजस्थान) ने चतुर्थ पुष्प के रूप मे करवाया है। इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित प्रथम पुष्प लघुविद्यानुवाद (यत्र-मंत्र तत्र का एकमात्र सदर्भ ग्रथ) का प्रकाशन बाहुवलि सहस्राभिषेक महोत्सव के

सुग्रवसर पर दिनाक २४-२-८१ को श्रवणवेलगोल मे हुआ था। उसके बाद बहुत ही कम समय मे द्वितीय पुष्प "श्री चतुर्विशति-तीर्थंकर अनाहत यत्र-मत्र-तत्र विधि" तथा तृतीय पुष्प "तजो मान करो ध्यान" का प्रकाशन हुआ है।

श्रीमान् सेठ ताराचन्दजी वगडा व उनकी धर्मपत्नि श्रीमती मणिदेवी सेलम निवासी व उनके समस्त परिवार को भी शुभाशीर्वाद देता हूँ कि जिन्होने इस ग्रथ के प्रकाशन खर्च मे विशेष आर्थिक सहायता प्रदान की है। ग्रथ के प्रकाशन मे अन्य दानदाता व सहयोगी भी शुभाशीर्वाद के पात्र हैं।

ग्रथमाला के इन महत्त्वपूर्ण प्रकाशनो के लिये ग्रथमाला के प्रकाशन-संयोजक श्री शातिकुमारजी गंगवाल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनके अकथनीय परिश्रम से ही इस ग्रथमाला के ये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन इतने जल्दी प्रकाशित हो सके हैं। उनका सर्व कार्य प्रशसनीय है। मै उनके इस कार्य के लिये शुभाशीर्वाद देता हूँ कि वह इस कार्य मे दिनो-दिन उन्नति करते रहे।

गणधराचार्य कुन्थुसागर



स्तावना

जैन धर्म मे साधक का लक्ष्य होता है – स्वरूपोपलब्धि या स्वात्मोपलब्धि। इसी दृष्टि से आ० पूज्यपाद ने 'सिद्ध भक्ति' मे कहा है—सिद्धि स्वात्मोपलब्धि। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग का प्रतिपादन शास्त्रो मे किया गया है। वे तीन रत्न है – सम्यक्दर्शन (रुचि या श्रद्धान), सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। सद्गुरु-उपदेश, सच्छास्त्र-श्रवण-पठनादि निमित्तो से साधक को स्वरूप-ज्ञान हो जाता है, तदन्तर वह परमात्मस्वरूप के साथ एकात्मकता स्थापित करने का अभ्यास करता है। आराधना के माध्यम से स्वय आराध्यरूप हो जाना उसका लक्ष्य बन जाता है। इस शुद्धस्वरूप की प्राप्ति मे जो कर्म बाधक होते है, उनसे वह स्वय को सुरक्षित (सवृत) करता है। दूसरी ओर आत्मा को अधिकाधिक उज्ज्वल बनाने की दिशा मे कर्म–निर्जरा हेतु भी वह प्रयत्नशील रहता है।

जैसे लक्ष्य को बीधने से पूर्व, कुशल शूरवीर अपनी दृष्टि को अलक्ष्यभूत वस्तुओ से हटाकर, स्वलक्ष्यभूत वस्तु मात्र पर स्थिर करने का अभ्यास करता है, वैसे ही कुशल साधक स्वरूप प्राप्ति हेतु अपने चित्त को सासारिक विषयो से हटाकर स्वलक्ष्यभूत परमात्म–तत्व पर स्थिर करता है। इसी स्थिरता की प्रक्रिया के ही भक्ति, स्तुति, उपासना, ध्यान आदि विविध अ ग हैं।

सिद्धि–प्राप्त या सिद्धि-प्राप्ति की प्रक्रिया मे उच्च पदासीन (गुणस्थानस्थ) व्यक्तित्वो, तथा सिद्धि प्राप्ति मे सहायक/उपयोगी पदार्थों के प्रति साधक के मन मे श्रद्धा या विनय भाव जाग्रत हो जाते हैं। अर्हंत, तीर्थंकर, सिद्ध, श्रद्धे य आचार्य, उपाध्याय, मुनी – इन परमेष्ठी जनो की भक्ति द्वारा आत्मोत्कर्ष की साधना ही भक्तिमार्ग है। और भक्ति है – उनके गुणो मे अनुराग, तदनुकूल वर्तन, या उनके प्रति गुणानुरागपूर्वक आदर सत्कार की प्रवृत्ति।

स्तावना

जैन धर्म मे साधक का लक्ष्य होता है – स्वरूपोपलब्धि या स्वात्मोपलब्धि। इसी दृष्टि से आ० पूज्यपाद ने 'सिद्ध भक्ति' मे कहा है—सिद्धि स्वात्मोपलब्धि। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग का प्रतिपादन शास्त्रो मे किया गया है। वे तीन रत्न है – सम्यक्दर्शन (रुचि या श्रद्धान), सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। सद्गुरु-उपदेश, सच्छास्त्र-श्रवण-पठनादि निमित्तो से साधक को स्वरूप-ज्ञान हो जाता है, तदन्तर वह परमात्मस्वरूप के साथ एकात्मकता स्थापित करने का अभ्यास करता है। आराधना के माध्यम से स्वय आराध्यरूप हो जाना उसका लक्ष्य बन जाता है। इस शुद्धस्वरूप की प्राप्ति मे जो कर्म बाधक होते है, उनसे वह स्वय को सुरक्षित (सवृत) करता है। दूसरी ओर आत्मा को अधिकाधिक उज्ज्वल बनाने की दिशा मे कर्म–निर्जरा हेतु भी वह प्रयत्नशील रहता है।

जैसे लक्ष्य को बीधने से पूर्व, कुशल शूरवीर अपनी दृष्टि को अलक्ष्यभूत वस्तुओ से हटाकर, स्वलक्ष्यभूत वस्तु मात्र पर स्थिर करने का अभ्यास करता है, वैसे ही कुशल साधक स्वरूप प्राप्ति हेतु अपने चित्त को सासारिक विषयो से हटाकर स्वलक्ष्यभूत परमात्म–तत्व पर स्थिर करता है। इसी स्थिरता की प्रक्रिया के ही भक्ति, स्तुति, उपासना, ध्यान आदि विविध अ ग हैं।

सिद्धि–प्राप्त या सिद्धि-प्राप्ति की प्रक्रिया मे उच्च पदासीन (गुणस्थानस्थ) व्यक्तित्वो, तथा सिद्धि प्राप्ति मे सहायक/उपयोगी पदार्थों के प्रति साधक के मन मे श्रद्धा या विनय भाव जाग्रत हो जाते है। अर्हंत, तीर्थंकर, सिद्ध, श्रद्धेय आचार्य, उपाध्याय, मुनी – इन परमेष्ठी जनो की भक्ति द्वारा आत्मोत्कर्ष की साधना ही भक्तिमार्ग है। और भक्ति है – उनके गुणो मे अनुराग, तदनुकूल वर्तन, या उनके प्रति गुणानुरागपूर्वक आदर सत्कार की प्रवृत्ति।

भक्ति शब्द विनय, श्रद्धा, सेवा वैयावृत्य — इन भावों से ओतप्रोत व्यापार को प्रकट करता है। श्रद्धालु जन द्वारा सेवा-भाव से देव, गुरु आदि पूज्य व्यक्तित्वों के प्रति वन्दना करना, वैयावृत्ति व स्तुति करना, परोक्ष में उनके गुणों का स्मरण करना आदि कार्य किये जाते हैं, वह सब 'भक्ति' के अन्तर्गत है। स्तुति, प्रार्थना वन्दना, उपासना, पूजा, सेवा, श्रद्धा, आराधना — ये एक ही विषय को अभिव्यक्त करते हैं। यह भक्ति कार्य शुद्धात्मवृत्ति की उत्पत्ति व रक्षा — दोनों में उपयोगी होता है, इसीलिए भक्ति क्रिया को 'सम्यक्त्व-वर्द्धिनी क्रिया' कहा गया है।

सद्भक्ति द्वारा औद्धत्य व अहंकार क्षीण होते हैं और प्रशस्त अध्यवसाय/कुशल परिणामों में वृद्धि होती है। इसी का समर्थन आ० समन्तभद्र के 'स्तुतिः स्तोतुः साधोः कुशलपरिणामाय' (स्वयम्भू स्तोत्र—२१/१) इस कथन से होता है। परिणाम-विशुद्धि होने से संचित कर्मों की निर्जरा प्रारम्भ हो जाती है। इसी दृष्टि से यह कथन है — ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनाति चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः (स्वयम्भू स्तोत्र १२/२)। दूसरी ओर, आत्मीय गुणों का विकास प्रारम्भ हो जाता है। इसीलिए, जिनेन्द्रादि-भक्ति को दुर्गति-निवारक व पुण्यवर्धक होने के साथ-साथ परम्परया मोक्ष की साधिका भी कहा गया है :—

> एया वि सा समत्था, जिणभत्ती दुग्गई-निवारेण।
> पुण्णाणि य पूरेदु आसिद्धि परंपरसुहाणं॥
>
> (भगवती आराधना, ७५२)

स्तुति, वन्दनादि के रूप में इस भक्ति-क्रिया को जैन साधक की नैमित्तिक क्रियाओं में ही नहीं, नित्य क्रियाओं में भी सम्मिलित किया गया है। उक्त भक्ति-क्रिया को 'कृतिकर्म' भी कहा जाता है।

'कृति कर्म' के पर्यायवाची नाम हैं — चितिकर्म, पूजाकर्म और विनयकर्म। अक्षरोच्चाररूप वाचनिक क्रिया, तथा नमस्कारादिरूप कायिक क्रिया — इनके अनुष्ठान से ज्ञानावरणादि कर्मों का कर्तन/छेदन होता है, इसलिए 'कृतिकर्म' यह संज्ञा सार्थक है। चूंकि इससे पुण्य का भी संचय होता है, इसलिए 'चितीकर्म' संज्ञा भी सार्थक है। इसीप्रकार, विनयभाव से युक्त होने के कारण इसे 'विनयकर्म' भी कहा जाता है। विनय का एक अर्थ 'निराकरण' भी है — 'विनीयते निराक्रियते कर्माणि येन' अर्थात् विनय के द्वारा कर्मों का निराकरण/क्षय होता है, इस दृष्टि से भक्ति की विनय-कर्म संज्ञा सारगर्भित सिद्ध होती है।

भक्तिक्रिया, सामान्यत श्रावक व साधु – दोनो के लिए उपयोगी है।
श्रावक के ६ आवश्यक कर्म है जिनमे देवपूजा व गुरु-उपासना को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मुनिजीवन मे भी स्तवन, वन्दना आदि को छ आवश्यक क्रियाओ मे विशिष्ट स्थान दिया गया है। साधुओ की नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं के अन्तर्गत दश भक्तियो का (या १२ भक्तियो का) विशेप महत्व सर्वविदित है। वे है – सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगी, आचार्य, पंच महागुरु, चैत्य, वीर, चतुर्विशति तीर्थंकर और समाधि (निर्वाण भक्ति व नन्दीश्वर भक्ति)। प्रथम छ भक्तियाँ तथा निर्वाण-भक्ति सस्कृत व प्राकृत दोनो भाषाओ मे हैं, शेप सस्कृत मे ही हैं। प्राकृत भक्तियो की रचना आ० कुन्दकुन्द (या पद्मनन्दि) द्वारा, तथा सस्कृत भक्तियो की रचना आ० पूज्यपाद द्वारा की गई है। अन्य आचार्यों ने भी भक्तिया लिखी है।

उक्त भक्ति-क्रिया की परिणति आत्म-रति/आत्म-रमणता के रूप मे होने पर मुक्ति की प्रक्रिया अत्यन्त सरल हो जाती है। विरले लोग ही 'भक्ति' मे तत्पर हो पाते हैं। किसी आदर्श विशेष से अनुरक्त होकर भगवान के चरणो मे आत्मार्पण करना सबके लिए सरल नहीं है। जिनराज के आदर्श – वीतरागता की ओर आकर्षित होना आज के विलासितामय जीवन मे कठिन है। किन्तु धन्य है वे मुनिराज जो इस युग मे भी, वीतराग-धर्मोचित अपरिग्रही जीवन व्यतीत करते हुए आत्म-रमणता की साधना मे अग्रसर हैं, और हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत हैं। उक्त मुनिराजों की विशाल परम्परा मे परमपूज्य समाधिसम्राट १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी महाराज, श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज, १०८ श्री आचार्य विमलसागर जी महाराज, आचार्य सन्मतिसागर महाराज तथा उनके सघस्थ मुनियों आर्यिकाओ का नाम श्रद्धा/आदर से चर्चित होता है।

श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज की आज्ञा से उनके परम शिष्य श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी, १०८ मुनि देवनन्दिजी व श्री १०५ आर्यिका कुलभूषणमति माताजी के सत्प्रयत्न से प्रस्तुत 'हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त

---

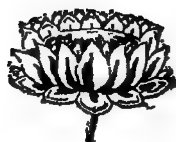
१ देवपूजा गुरूपास्ति स्वाध्याय सयमस्तप । दान चेति गृहस्थाना पट्कर्माणि दिने दिने ॥ (पद्मनन्दि पचविंशतिका, ६/७)। दाण पूजा मुक्खं सावयधम्मे, ण सावया तेंण विणा (रयणसार-११)।

२ समदा थओ य वदण, पडिक्कमण तहेव णादव्वं । पच्चक्खाण विसग्गो करणीयावासया छप्पि ॥ (मूलाचार, २२०)

पाठावली' का निर्माण हुआ है, जिसका मुद्रितरूप आपके हाथो मे है। इसमे आवश्यक भक्ति-क्रिया के अनुष्ठान मे सभी स्वाध्यायोपयोगी पाठो का सकलन है। यह सकलन अपने आप मे एक अभूतपूर्व प्रयास है।

मैं इसके प्रकाशन मे प्रकाशन – सयोजक श्री शान्तिकुमारजी गगवाल के प्रति भी अपना धन्यवाद ज्ञापित करता चाहूँगा, जिनके प्रयास से, अल्प समय मे ही, इसका सुसज्जित/आकर्षक मुद्रितरूप प्रकाश मे आ सका। इस ग्रन्थमाला के मुख्य प्रेरणा-स्तम्भ पू० श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज व श्री गणिनी १०५ आर्यिका सिद्धान्त विशारद, सम्यग्ज्ञान शिरोमणि, विदुषीरत्न विजयामती माताजी के प्रति शत-शत नमन।

विनीत
दामोदर शास्त्री
अध्यक्ष
जैन दर्शन विभाग श्री लालबहादुर
"शास्त्री" केन्द्रीय विद्यापीठ
(शिक्षा मत्रालय भारत सरकार)
कटवारिया सराय,
नई-दिल्ली-१६



पाठावलि का प्रकाशन करवाया गया है। ग्रंथ के छपे फ़ार्मों का संकलन गणधराचार्य महाराज की आज्ञा से उनके शिष्य श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी, १०८ मुनि देवनन्दिजी व १०५ आर्यिका कुलभूषणमति माताजी ने बहुत ही कम समय में कठिन परिश्रम से किया है। मैं उनके इस कार्य के लिये उनके चरणों में नमोस्तु अर्पित करता हूँ।

वास्तव में यह बहुत ही उत्तम कार्य किया है। मुझे आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि साधुवर्ग व विद्वत-जन इससे निश्चित ही लाभान्वित होंगे। क्योंकि इतने ग्रंथों का संग्रह-ग्रंथ **आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है।** परम पूज्य १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज ने इस प्रकार के कार्य करने की आज्ञा देकर बहुत बड़ा उपकार किया है। गणधराचार्य महाराज के इस कार्य के लिये हम सभी कृतज्ञ हैं। गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज ने वर्ष १९७२ में राणाजी की नसियाँ, खानियाँ, जयपुर में विशाल संघ के साथ चातुर्मास किया था। तभी से उनकी मेरे ऊपर विशेष कृपा रही है। समता, वात्सल्य तथा निर्ग्रंथता आपके विशेष गुण हैं। जो भी आपके पावन पवित्र चरणों के एक बार दर्शन कर लेता है, वह अपने आपको धन्य मानता है और उसका मन यह कह उठता है कि "**महाराज तुम्हारे चरणों में दुनियाँ दौड़ी आती है। कुछ बात अनोखी है तुम में जो औरों में नहीं पाती है।**" गणधराचार्य कुन्थुसागरजी के बारे में कुछ विशेष लिखना मेरा उसी प्रकार अनुपयुक्त होगा जैसे सूर्य को दीपक दिखाना। गणधराचार्य महाराज वास्तव में त्याग व तप की साक्षात् मूर्ति है। श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज व श्रीगणिनी १०५ आर्यिका विजयामति माताजी के नाम पर ही इस ग्रंथमाला का शुभारम्भ वर्ष १९८१ में हुआ था। मुझे आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है, कि भविष्य में इस ग्रंथमाला से ऐसे ग्रंथों का प्रकाशन होगा जिनका प्रकाशन पहले कभी नहीं हुआ है और ऐसे ग्रंथों को पढ़कर निश्चित ही सभी लोग लाभान्वित होंगे।

ग्रंथमाला समिति के प्रकाशन कार्यों में श्री लल्लूलालजी जैन (गोधा) प्रबन्ध सम्पादक श्री मोतीलालजी हाडा, जैन संगीत कोकिला रानी एवं आध्यात्मिक संगीत विदुषी बहिन श्रीमती कनकप्रभाजी हाडा, श्री कपूरचन्दजी पाण्ड्या, श्री हीरालालजी सेठी, श्री रमेशचन्दजी जैन, श्री राजकुमारजी बोहरा, श्रीलूणकरण जी पापड़ीवाल आदि महानुभावों का बड़ा आभारी हूँ। समय समय पर मेरे अनुरोध पर कार्य में सहयोग प्रदान करते रहते है। इसके अलावा अन्य सभी महानुभावों का जिनका सहयोग मिला है उन सभी का मैं बड़ा आभारी हूँ और उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

मेरी धर्मपत्नि श्रीमती मेमदेवी गगवाल व सुपुत्र श्री प्रदीपकुमार गगवाल का भी बडा आभारी हूँ कि जिन्होने मुझे गृहकार्य से मुक्त रखकर प्रकाशन कार्य को करने मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। श्री प्रदीपकुमार गगवाल द्वारा ग्रथमाला को दी जा रही सेवायें काफी प्रशसनीय है। अपने अध्ययनकार्य मे व्यस्त होते हुये भी आचार्य महाराज व माताजी के आशीर्वाद से अपने कर्तव्य को निभा रहा है।

आदरणीय डा० प्रो० अक्षयकुमारजी जैन इन्दौर का भी ग्रथमाला के लिये दिये जा रहे सहयोग के लिये भी बडा आभारी हूँ। आशा है कि भविष्य मे भी उनका आशीर्वाद सहयोग व मार्ग दर्शन हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

आदरणीय डा० श्री दामोदरदास जी शास्त्री प्राध्यापक व अध्यक्ष जैन दर्शन विभाग, लालबहादुर केन्द्रीय विद्यापीठ, नईदिल्ली का भी बडा आभारी हू कि जिन्होने अपने अमूल्य समय मे से समय निकालकर मेरे अनुरोध पर अपने कर कमलो से पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। डा० साहब बहुत ही उच्चकोटि के विद्वान है। जिसका अन्दाज आप स्वय ही पुस्तक मे छपी प्रस्तावना को पढकर लगा सकते है। आशा है कि डा० साहब का आशीर्वाद, सहयोग व मार्ग-दर्शन इस ग्रथमाला को हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रथमाला समिति की ओर से दानवीर सेठ श्री ताराचन्दजी बगडा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणिदेवीजी को भी धन्यवाद देता हू। कि जिन्होने इस ग्रथ प्रकाशन मे 10,000 रु० का विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। आशा है आपका सहयोग भविष्य मे भी इसी प्रकार मिलता रहेगा। ग्रथमाला समिति की ओर से अन्य सभी दातारो को भी धन्यवाद देता हू जिनका सहयोग इस ग्रथमाला को प्राप्त होता रहा है।

ग्रथ प्रकाशन मे पूज्य आचार्यो, साधुओ व विद्वानो के शुभाशीर्वाद व शुभकामना सदेश भेजे हैं, मैं उन सभी का बडा आभारी हूँ।

ग्रथमाला समिति द्वारा प्रकाशन कार्यो को बहुत ही सावधानी पूर्वक किया गया है। फिर भी त्रुटियो का रहना स्वाभाविक है। मेरा स्वय का ज्ञान अल्प है और पुस्तक मे प्रकाशित स्तोत्र मेरे सामान्यज्ञान की परिधि के बाहर है। परम पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज की आज्ञा को सिरोधार्य करते हुए उनके आशीर्वाद से मैंने यह विकट कार्य किया है। अत साधुजन, विद्वत् जन व पाठकगणो से नम्र निवेदन है कि त्रुटियो के लिए क्षमा करें।

जैन मित्र, जैन दर्शन, जैन गजट, करुणादीप, महिला जागरण आदि पत्रो के सम्पादक महोदयो को उनके ग्रथमाला के लिए दिये गये सहयोग के लिए भी मैं बडा आभारी हू और उनके सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हू । आशा है आप सभी का सहयोग ग्रथमाला के प्रकाशनो के प्रचार मे हमेशा प्राप्त होता रहेगा। ।

अन्त मे परम पूज्य १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज के कर-कमलो मे यह ग्रथ विमोचन हेतु समर्पित करते हुए आज मे अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हू कि आप श्री के आशीर्वाद से मैंने इस कार्य को करने मे सफलता प्राप्त की है ।

पुन आशीर्वाद की भावना के साथ
गुरुभक्त सगीताचार्य प्रकाशन सयोजक
शातिकुमार गगवाल
बी० कॉम०

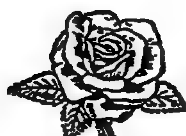
दिनाक २-१२-८२



वि यानु मणिका

क्रम स०	विषय	पृ० स०

क्रम स०	विषय	पृ० स०



मूलाचारो

गोम्मट ारः ीव ाण्डम्

गोम्मटसारः कर्मकाण्ड

निम्नलिखित गाथाओं को ग्रन्थश पाठ करते समय पढ़ें:—

कल्याणालोचना

(पृष्ठ संख्या ५७)

न शील नैव क्षमा विनयस्तपो न सयमोपवासा. ।
न कृता न भावनीकृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।१६–१।।

तत्वार्थ-सूत्र

(पृष्ठ संख्या २६३)

मोक्षमार्गस्य नेत्तारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ।।१।।

. ६ ार कलश

पुण्यपाप अधिकार

(पृष्ठ संख्या ४१३)

हेलोन्मीलत् परमकलया सार्धमारब्धकेलि ।
ज्ञानज्योतिः कवलितमः प्रोज्जजृम्भे भरेण ।।१३।।

ग्रथ के विमोचन समारोह पर लिये गये चित्रो की झलक



हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि ग्रन्थ की प्रथम प्रति श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज को विमोचन करने हेतु भेंट करते हुए प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल



श्री १०८ गणधराचार्य कुथुसागरजी महाराज ग्रन्थ का विमोचन कर उपस्थित जन समुदाय को ग्रन्थ का दिग्दर्शन कराते हुए। पास मे श्री १०८ उपाध्याय मुनि कनकनन्दिजी महाराज विराजे हुए है।



श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज आशीर्वाद प्रदान करते हुए। मंच पर बैठे है दायें से बायें–श्री १०८ मुनि पद्मनन्दिजी महाराज श्री १०८ उपाध्याय मुनि कनकनन्दिजी महाराज, श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज, श्री १०८ मुनि वीरनन्दिजी महाराज व स्वस्ति श्री पट्टाचार्य चारुकीर्त्तिजी भट्टारक स्वामीजी (मूडबद्री)।



श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज प्रवचन करते हुए।

हुम्बुज-श्रमण-सिद्धान्त-पाठावलि

गोम्मटे -थुदि

ि ट्ट-कंदोट्ट-दलाणुयारं,
सुलोयणं चंद-समाण-तुण्ड ।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥१॥

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गंडं,
आबाहु-दोलंत-सुकण्णपासं ।
गइन्द-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥२॥

सुकण्ठसोहा-जिय दिव्व-संखं,
हिमालयुद्दाम-विसाल-कंधं ।
सुपेक्खणिज्जायल-सुठ्ठु-मज्झं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥३॥

विज्झायलग्गे पविभासमाणं,
सिहामणिं सव्व-सुचेदियाणं ।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥४॥

लया-समक्कंत-महासरीरं,
भव्वावलीलद्ध-सुकप्परुक्खं

देविंदविंदच्चिय - पायपोम्मं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥५॥

दियंबरो जो ण च भीइ-जुत्तो,
ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो ।
सप्पादि-जंतु-प्फुसदो ण कंपो,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥६॥

आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि,
सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं ।
विरायभावं भरहे विसल्लं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥७॥

उपाहि-मुत्तं धण-धाम-वज्जियं,
सुसम्मजुत्तं मय-मोह-हारयं ।
वस्सेय-पज्जंत-मुववास-जुत्तं,
तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥८॥

॥ ❀ ॥

पार्श्व, महावीर, प्रभु, गणधर वंदों पांय ।
जिनवाणी सरस्वति नमूं, हो जाऊं भवपार ॥
आदि, महावीर, विमल, गुरू, सन्मति गुण भंडार ।
नमन करुं त्रियोग से, अज्ञान-तिमिर नश जाय ॥

नित्य भक्ति-पाठ व प्रतिक्रमण

महामंत्र (पंचनमस्कार मन्त्रम्)

णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

मन्त्र-महात्म्यम्

मन्त्रं संसारसारं त्रिजगदनुपमं सर्व-पापारिमन्त्रम् ,
संसारोच्छेदमन्त्रं विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमन्त्रम् ।
मन्त्रं सिद्धिप्रदानं शिवसुखजनन केवलज्ञानमन्त्रम् ,
मन्त्रं श्री जैनमन्त्र जप जप जपितं जन्मनिर्वाणमन्त्रम् ॥२॥

आकृष्टि सुरसंपदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यताम् ,
उच्चाट विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य संमोहनम् ,
पायात्पञ्चनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥३॥

अनन्तानन्तसंसार-सन्ततिच्छेदकारणम् ।
जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम ॥४॥

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥५॥

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥६॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥७॥

प्रातर्विधि

प्रातरेव समुत्थाय, तल्पाद् दक्षिणपार्श्वतः ।
निषण्णस्तत्र पूर्वास्यः एकाग्रश्चिन्तयेदिति ॥१॥
अनादौ घोर-ससारे, भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा कुयोनिषु ।
कथञ्चिज्जिनधर्मोऽयं, गृहस्थो यो मया धृतः ॥२॥
अद्यापि भुवनाराध्यो, यति धर्मो न लक्ष्यते ।
हन्त चारित्र-मोहेन, लब्धो निर्वासतेऽधुना ॥३॥
चिन्तयित्वेति निर्दोषं, स्मृत्वा स्तुत्वा जिनेश्वरम् ।
वन्दित्वा च परामृश्य, कृतं पूर्वेद्युरात्मना ॥४॥

अथाद्याष्टक-स्तोत्रम्

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम ।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसंपदः ॥१॥
अद्य ारगंभीरपारावारः सुदुस्तरः ।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥२॥
अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते ।
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥३॥
अद्य मे मफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमंगलम् ।
संसारार्णवतीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥४॥
कर्माष्टकज्वालं विश्रु तं सकषायकम् ।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥५॥
अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश स्थिताः ।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६॥
अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः ।
सुखसंगसमापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥७॥
अद्य कर्माष्टकं नष्टं दु.खोत्पादनकारकम् ।
सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥८॥

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञानदिवाकरः ।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥९॥
अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।
भुवनत्रय पूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥१०॥
अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणानन्दितमानसः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धिर्जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥११॥

भूतकाल-तीर्थङ्करा.

(१) श्री निर्वाण (२) सागर (३) महासाधु (४) विमलप्रभ (५) श्रीधर (६) सुदत्त (७) अमलप्रभ (८) उद्धर (९) अंगिर (१०) सन्मति (११) सिन्धु (१२) कुसुमाञ्ज्जलि (१३) शिवगण (१४) उत्साह (१५) ज्ञानेश्वर (१६) परमेश्वर (१७) विमलेश्वर (१८) यशोधर (१९) कृष्णमति (२०) ज्ञानमति (२१) शुद्धमति (२२) श्री भद्र (२३) अतिक्रान्त (२४) शान्ताश्चेतिभूतकालसम्बन्धि चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

वर्तमानकाल-तीर्थङ्करा

(१) ऋषभ (२) अजित (३) सम्भव (४) अभिनन्दन (५) सुमतिनाथ (६) प्रद्मप्रभ (७) सुपार्श्व (८) चन्द्रप्रभ (९) पुष्पदन्त (१०) शीतल (११) श्रेयान् (१२) वासुपूज्य (१३) विमल (१४) अनन्त (१५) धर्मनाथ (१६) शान्ति (१७) कुन्थु (१८) अर (१९) मल्लि (२०) मुनिसुव्रत (२१) नमि (२२) नेमि (२३) पार्श्वनाथ (२४) महावीराश्चेति वर्तमानकाल-सम्बन्धि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ।

भविष्यत्काल तीर्थङ्करा

(१) श्री महापद्म (२) सुरदेव (३) सुपार्श्व (४) स्वयंप्रभ (५) सर्वात्मभूत (६) देवपुत्र (७) कुलपुत्र (८)

प्रातर्विधि

प्रातरेव समुत्थाय, तल्पाद् दक्षिणपार्श्वतः ।
निषण्णस्तत्र पूर्वास्यः एकाग्रश्चिन्तयेदिति ॥१॥
अनादौ घोर-संसारे, भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा कुयोनिषु ।
कथञ्चिज्जिनधर्मोऽयं, गृहस्थो यो मया धृतः ॥२॥
अद्यापि भुवनाराध्यो, यति धर्मो न लक्ष्यते ।
हन्त चारित्र-मोहेन, लब्धो निर्वासितेऽधुना ॥३॥
चिन्तयित्वेति निर्दोषं, स्मृत्वा स्तुत्वा जिनेश्वरम् ।
वन्दित्वा च परामृश्य, कृतं पूर्वेद्युरात्मना ॥४॥

अथाद्याष्टक-स्तोत्रम्

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम ।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसंपदः ॥१॥
अद्य संसारगंभीरपारावारः सुदुस्तरः ।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥२॥
अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते ।
स्नातोऽहं धर्म-तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥३॥
अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमंगलम् ।
संसारार्णवतीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥४॥
अद्य कर्माष्टकज्वालं विधूतं सकषायकम् ।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥५॥
अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश स्थिताः ।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६॥
अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः ।
सुखसंगसमापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥७॥
अद्य कर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादनकारकम् ।
सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥८॥

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञानदिवाकरः ।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।।९।।
अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।
भुवनत्रय पूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।।१०।।
अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणानन्दितमानसः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धिर्जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।।११।।

भूतकाल-तीर्थङ्कराः

(१) श्री निर्वाण (२) सागर (३) महासाधु (४) विमलप्रभ (५) श्रीधर (६) सुदत्त (७) अमलप्रभ (८) उद्धर (९) अंगिर (१०) सन्मति (११) सिन्धु (१२) कुसुमाञ्जलि (१३) शिवगण (१४) उत्साह (१५) ज्ञानेश्वर (१६) परमेश्वर (१७) विमलेश्वर (१८) यशोधर (१९) कृष्णमति (२०) ज्ञानमति (२१) शुद्धमति (२२) श्री भद्र (२३) अतिक्रान्त (२४) शान्ताश्चेतिभूतकालसम्बन्धि चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ।।

वर्तमानकाल-तीर्थङ्करा

(१) ऋषभ (२) अजित (३) सम्भव (४) अभिनन्दन (५) सुमतिनाथ (६) पद्मप्रभ (७) सुपार्श्व (८) चन्द्रप्रभ (९) पुष्पदन्त (१०) शीतल (११) श्रेयान् (१२) वासुपूज्य (१३) विमल (१४) अनन्त (१५) धर्मनाथ (१६) शान्ति (१७) कुन्थु (१८) अर (१९) मल्लि (२०) मुनिसुव्रत (२१) नमि (२२) नेमि (२३) पार्श्वनाथ (२४) महावीराश्चेति वर्तमानकाल-सम्बन्धि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ।

भविष्यत्काल तीर्थङ्करा

(१) श्री महापद्म (२) सुरदेव (३) सुपार्श्व (४) स्वयंप्रभ (५) सर्वात्मभूत (६) देवपुत्र (७) कुलपुत्र (८)

उदंक (९) प्रौष्ठिल (१०) जयकीर्ति (११) मुनिसुव्रत (१२) अर (अमम) (१३) निष्पाप (१४) निष्कषाय (१५) विपुल (१६) निर्मल (१७) चित्रगुप्त (१८) समाधिगुप्त (१९) स्वयम्भू (२०) अनिवर्तक (२१) जय (२२) विमल (२३) देवपाल (२४) अनन्तवीर्याश्चेति भविष्यत्-काल-सम्बन्धि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ।

विदेह क्षेत्रस्थ-विंशतितीर्थङ्कराः

[१] सीमन्धर [२] युगमन्धर [३] बाहु [४] सुबाहु [५] सुजात [६] स्वयंप्रभ [७] वृषभानन [८] अनन्तवीर्य [९] सुरप्रभ [१०] विशालकीर्ति [११] वज्रधर [१२] चंद्रानन [१३] भद्रबाहु [१४] भुजंगम [१५] ईश्वर [१६] नेमप्रभ (नेमि) [१७] वीरसेन [१८] महाभद्र [१९] देवयश [२०] अजितवीर्याश्चेति विदेहक्षेत्रस्थ-विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ।

भा स्तोत्र

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज्जन्माभिषेकोत्सवे
यद्दीक्षाग्रहणोत्सवे यदरि ज्ञानप्रकाशोत्सवे ।
यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुतं तद्भवैः
संगीतस्तुतिमंगलैः प्रसरतां मे सुप्रभातोत्सवः ।।१।।
श्रीमन्नतामरकिरीटमणिप्रभाभिः
आलीढपादयुग ! दुर्द्धरकर्मदूर !
श्रीनाभिनंदन ! जिनाजित ! शम्भवाख्य !
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।२।।
छत्रत्रयप्रचलचामरवीज्यमान-
देवाभिनन्दनमुने सुमते जिनेन्द्र ।

पद्मप्रभारुणमणिद्युतिभासुरांग,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥३॥
अर्हन् सुपार्श्वकदली दलवर्णगात्र,
प्रालेयतारगिरिमौक्तिकवर्णगौर ।
चन्द्रप्रभस्फटिकपाण्डुर पुष्पदन्त,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥४।
संतप्तकाञ्चनरुचे जिनशीतलाख्य,
श्रेयान्विनष्टदुरिताष्टकलंकपंक ।
बंधूक बन्धुररुचे जिनवासुपूज्य,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥५॥
उद्दंडदर्पकरिणो विमलामलांग,
स्थेमन्ननंतजिदनंतसुखाम्बुराशेः ।
दुष्कर्मकल्मषविवर्जित धर्मनाथ,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥६॥
देवामरीकुसुमसन्निभ शांतिनाथ,
कुन्थो दयागुण विभूषणभूषितांग ।
देवाधिदेव भगवन्नर तीर्थनाथ,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥७॥
मन्मोहमल्ल--मदभंजन मल्लिनाथ,
क्षेमंकरावितथशासन सुव्रताख्य ।
यत्संपदाप्रशमितो नमिनामधेय,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥८॥
तापिच्छगुच्छरुचिरोज्ज्वलनेमिनाथ ,
घोरोपसर्ग-विजयिन्, जिनपार्श्वनाथ ।
स्याद्वादसूक्तिमणिदर्पण वर्द्धमान,
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥९॥

प्रालेयनीलहरितारुणपीतभासं
यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनीन्द्राः ।
ध्यायंति सप्ततिशतं जिनवल्लभानाम्
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥१०॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं माङ्गल्यं परिकीर्तितम् ।
चतुर्विंशतितीर्थाना सुप्रभात दिने दिने ॥११॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनंदितम् ।
देवता ऋषयः सिद्धाः सुप्रभातं दिने दिने ॥१२॥
सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः ।
येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्वसुखावहम् ॥१३॥
सुप्रभातं जिनेन्द्राणा ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम् ।
अज्ञानतिमिरान्धानां नित्यमस्तमितो रविः ॥१४॥
सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य वीरः कमललोचनः ।
येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानोग्रवह्निना ॥१५॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं सुकल्याणं सुमंगलम् ।
त्रैलोक्यहितकर्तृणां जिनानामेव शासनम् ॥१६॥

—इति सुप्रभात स्तोत्रम्—

श्रीमानतुंगाचार्य विरचित

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणाम्
उद्योतकं दलित पापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादौ
आलंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधात्
उद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।

स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥
बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बाल विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्बम्
अन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुम् ॥३॥
वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र ! शशाककांतान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रम्
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रम्
नाभ्येति कि निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥
त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धम्
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सुर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥
मत्वेति नाथ ! तव सस्तवनं मयेदम्
आरभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥८॥

प्रालेयनीलहरितारुणपीतभासं
यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनीन्द्राः ।
ध्यायंति सप्ततिशतं जिनवल्लभानाम्
त्वद्-ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।१०।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं माङ्गल्यं परिकीर्तितम् ।
चतुर्विंशतितीर्थानां सुप्रभातं दिने दिने ।।११।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनंदितम् ।
देवता ऋषयः सिद्धाः सुप्रभातं दिने दिने ।।१२।।
सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः ।
येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्वसुखावहम् ।।१३।।
सुप्रभातं जिनेन्द्राणां ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम् ।
अज्ञानतिमिरान्धानां नित्यमस्तमितो रविः ।।१४।।
सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य वीरः कमललोचनः ।
येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानोग्रवह्निना ।।१५।।
सुप्रभातं सुनक्षत्रं सुकल्याणं सुमंगलम् ।
त्रैलोक्यहितकर्तॄणां जिनानामेव शासनम् ।।१६।।

—इति सुप्रभात स्तोत्रम्—

श्रीमानतुंगाचार्य विरचित

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणाम्
उद्योतकं दलित पापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादौ
आलंबनं भवजले पततां जनानाम् ।।१।।
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधात्
उद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।

कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
कि मंदराद्रिशिखरं चलित कदाचित् ॥१५॥
निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्य.
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥
नित्योदय दलितमोहमहान्धकारम्
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥
किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ॥१९॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजो महामणिषु याति यथा महत्त्वम्
नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टाः
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषम्
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः !
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयम्
नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेः रसितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निश्शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांककलाकलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकम्
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिः
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।

कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारम्
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजो महामणिषु याति यथा महत्त्वम्
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टाः
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिम्
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांसम्
आदित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यम्
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकम्
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरुपात्तविबुधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखम्
आभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।

स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानम्
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानम्
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभम्
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारम्
उच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्तम्
उच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभम्
प्रख्यापयस्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।३२॥
गम्भीरताररवपूरितदिग्विभागः
त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराज ! जय घोषणघोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥
मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वयसां ततिर्वा ॥३३॥
शुंभत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभावपरिणामगुणप्रयोज्यः ॥३५॥
उन्निद्रहेमनवपंकज-पुंजकान्ति
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल
मत्त-भ्रमद् भ्रमरनाद्विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तम्
दृष्ट्वाऽभयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त
मुक्ताफलप्रकर भूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते ॥३९॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पम्
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तम्
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलम्
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।

आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गत्तुरंगगजर्गजित भीमनादम्
आजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह
वेगावतार तरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षाः
त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र
पाठीनपीठभयदोल्वणबाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्राः
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोमृतदिग्धदेहाः
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गाः
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्तेजनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

॥ इति श्रीमन्मानतुङ्गाचार्यविरचित भक्तामरस्तोत्रम् ॥

श्री कुमुदचंद्राचार्यप्रणीतम्

ल्याणमन्दिर स्तोत्र

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि-
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः
स्तोत्रंसुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोः
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥
(युग्मम्)

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूपम्
अस्मादृशाः कथमधीशभवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो
रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥३॥

मोहक्षयादनु भवन्नपि नाथमर्त्यो
नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत ।

कल्पान्तवान्तपयस. प्रकटोऽपि यस्मात्
मीयेतकेनजलधेः न नु रत्नराशिः ॥४॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि
कुर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥५॥

ये योगिनामपि नयन्तिगुणास्तवेश
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गमया इव मध्यभागम्
अभ्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र
रौद्रैरुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनी स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव
त्वामुद्वहन्ति हृदयेनय दुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनूनम्
अन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

यस्मिनहरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन
पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ॥११॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्नाः
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तः
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः ।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोषदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवपदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या
ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः ।

पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

त्वामेव वीततमस परवादिनोऽपि
नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खः
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावाद्
आस्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव
विष्वक्पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न–
सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः
चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेनम्
आगत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोरुसितातपत्र
व्याजात्त्रिधा धृतधनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन ।
माणिक्यहेमरजत-प्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपानाम्
उत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव
चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं
किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ।

अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरित विश्वविकासहेतु ॥३०॥

प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषाद्
उत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशः
ग्रस्तस्त्वमाभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारिदध्रे
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव
मन्ये मयामहितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

नूनं न मोहतिमरावृतलोचनेन
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ।।३७।।

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ।।३८।।

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य
कारुण्य पुण्यवसते वशिनां वरेण्य ।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ।।३९।।

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्यम्
आसाद्य सादितरिपुप्रथितावदानम् ।
त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानबन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि तद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ।।४०।।

देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार-
संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ।
त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीही
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ।।४१।।

यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां
भक्ते फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ।।४२।।

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र
सान्द्रोल्लसत्पुलक कञ्चुकिताङ्गभागाः ।

त्वबिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्म्या
ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

॥ इति सिद्धसेनदिवाकरप्रणीत कल्याणमन्दिरस्त्रोतम् ॥

श्री वादिराज-प्रणीतम्

ए ीभा -स्त्रोत

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो
घोरं दुःख भवभवगतो दुर्निवारः करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनवरे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽपरस्तापहेतुः ॥१॥

ज्योतीरूपं दुरितनिवहध्वान्तविध्वंशहेतुं
त्वामेवाहुर्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः ।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमानः
तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे ॥२॥

आनन्दाश्रुस्नपितवदनं गद्गदं चाभिजल्पन्
यश्चायेन त्वयि दृढमनाः स्तोत्रमन्त्रैर्भवन्तम् ।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहबल्मीकमध्यात्
निष्कास्यन्ते विविधविषमव्याधयः काद्रवेयाः ॥३॥

प्रागेवेह त्रिदिवभवनादेष्यता भव्यपुण्यात्
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्ये त्वयेदम् ।
ध्यानद्वारं मम रुचिकर स्वान्तगेहं प्रविष्टः
तत्किं चित्रं जिन वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि ॥४॥
लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धुः
त्वय्येवाऽसौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका ।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥५॥
जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूषवापी ।
तस्या मध्ये हिमकरहिमव्यूहशीते नितान्तं
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः ॥६॥
पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः ।
ङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति ॥७॥
पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम् ।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैकभूमिं
क्रूराकाराः कथमिव रुजाकण्टका निर्लुठन्तिः ॥८॥
पाषाणात्मा तदितर : केवलं रत्नमूर्ति
मानस्तम्भो भवति च परस्ता ो रत्नवर्गः ।
दृष्टिप्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्तिहेतुः ॥९॥
हृद्यः प्राप्तोमरुदपी भवन्मूर्ति शैलोपवाही
: पुंसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति ।

ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टः
तस्याशक्यः क इह भुवने देवलोकोपकारः ॥१०॥
जानासि त्वं मम भवभवे यच्च यादृक्च दुःखं
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम् ॥११॥
प्रापद्दैवं तव नुतिपदैर्जीवकेनोपदिष्टः
पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यम् ।
कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं
जल्पञ्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम् ॥१२॥
शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचां
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम् ।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुंसो
मुक्तिद्वारं परिदृढमहा मोहमुद्राकवाटम् ॥१३॥
प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्
पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः ।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः ॥१४॥
आत्मज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानन्दहेतुः
कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः परेषाम् ।
हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बन्धप्रकृतिपुरुषोद्दामधात्रीखनित्रैः ॥१५॥
प्रत्युत्पन्ना नयहिमगिरेरायता चामृताब्धे
या देव त्वत्पदकमलयोः सङ्गता भक्तिगङ्गा ।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः
कल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेहभूमिः ॥१६॥

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुखं त्वामनुध्यायतो मे
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा ।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रासादाद्भवन्ती ।।१७।।
मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरङ्गैः
वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव पर्येति यस्ते ।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेतसैवाचलेन
व्यातन्वन्तः सुचिरममृतासेवया तृप्नुवन्ती ।।१८।।
आहार्येभ्यः स्पृहयती परं यः स्वभावादहृद्य ।
शस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः ।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्व न शक्यः परेषां
तत्किं भूषावसनकुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ।।१६।।
इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां कि तया श्लाघनं ते
तस्यै वेयं भवलयकरी श्लाघ्यतामातनोति ।
त्वं निस्तारी जननजलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्व
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमीत्थम् ।।२०।।
वृत्तिर्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यः
स्तुत्युद्गारः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते ।
मैवं भूवंस्तदपिभगवन्भक्तिपीयूषपुष्टाः
ते भव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति ।।२१।।
कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम् ।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं संनिधिर्वैरहारी
क्वैवंभूत भुवनतिलकः प्राभवं त्वत्परेषु ।।२२।।
देव स्तोतुं त्रिदिवगणिकामण्डलीगीतकीर्तिं
तोतूर्ति त्वां सकलविषयज्ञानमूर्तिर्जनो य. ।

तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जाह्र्ति पन्थाः
तत्त्वग्रन्थस्मरणविषयो नैष मोमूर्ति मर्त्यः ॥२३॥
चित्ते कुर्वन्निरवधिसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपं
देव त्वां यः समयनियमादादरेण स्तवीति ।
श्रेयोमार्गः स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानाम् ॥२४॥
भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद ! त्वत्कीर्तने न क्षमाः
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा वयम् ।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः ॥२५॥
वादिराजमनुशाब्दिकलोकः वादिराजमनुतार्किकसिंहः ।
वादिराजमनुकाव्यकृतस्ते वादिराजमनुभव्यसहायः ॥२६॥

॥ इति श्री वादिराजकृतमेकीभावस्तोत्रम् ॥

श्री धनञ्जयकविप्रणीतम्

विषापहार-स्तोत्र

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्तव्यापारवेदी विनिवृत्तसङ्गः ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥१॥
परैरचिन्त्यं युगभारमेकः स्तोतुं वहन्योगिभिरप्यशक्यः ।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः किमप्रवेशे विशति प्रदीपः ॥२॥
तत्याजशक्रः शकनाभिमानं नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम् ।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं वातायनेनेव निरूपयामि ॥३॥

त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः ।
वक्तुं कियान्कीदृश इत्यशक्यः स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु ॥४॥
व्यापीडितं बालमिवात्मदोषैरुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम् ।
हिताहितान्वेषणमान्ध्यभाजः सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः ॥५॥
दाता न हर्त्ता दिवसं विवस्वानद्यश्व इत्यच्युतदर्शिताशः ।
सव्याजमेव गमयत्यशक्तः क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय ॥६॥
उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि त्वयि स्वभावाद्विमुखश्च दुखःम् ।
सदावदातद्युतिरेकरूपस्तयोस्त्वमादर्श इवावभासि ॥७॥
अगाधताऽब्धेः स यतः पयोधिर्मेरोश्च तुङ्गा प्रकृतिः स यत्र ।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि ॥८॥
तवानवस्था परमार्थतत्त्वं त्वया न गीतः पुनरागमश्च ।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषीर्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम् ॥९॥
स्मर. सुदग्धो भवतैव तस्मिन्नुद्धूलितात्मा यदिनाम शम्भुः ।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः किं गृह्यते येन भवानजागः ॥१०॥
स नीरजाः स्यादपरोऽघवान्वा तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम् ।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव स्तोकापवादेन जलाशयस्य ॥११॥
कर्मस्थितिं जन्तुरनेकभूमिं नयत्यमुं सा च परस्परस्य ।
त्वं नेतृभावं हि तयोर्भवाब्धौ जिनेन्द्रनौनाविकयोरिवाख्यः ॥१२॥
सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाचरन्ति ।
तैलाय बाला. सिकतासमूहं निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीयाः ॥१३॥
विषापहारं मणिमौषधानि मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च ।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति पर्यायनामानि तवैव तानि॥१४॥
चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्व देव कृतश्चेतसि येन सर्वम् ।
हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः ॥१५॥
त्रिकालतत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी स्वामीति संख्यानियतेरमीषाम् ।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यंस्तेऽन्येऽपि चेद्व्याप्स्यदमूनपीदम् ॥१६॥

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं नागम्यरूपस्य तवोपकारि ।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानोरुद्विभ्रतश्च्छत्रमिवादरेण ।।१७।।
क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः स चेत् किमिच्छाप्रतिकूलवादः ।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं तन्नो यथातथ्यमवेविचं ते ।।१८।।
तुङ्गात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः ।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः ।।१६।।
त्रैलोक्यसेवानियमाय दण्डं दध्रे यदिन्द्रो विनयेन तस्य ।
तत्प्रातिहार्यं भवतः कुतस्त्यं तत्कर्मयोगाद्यदि वा तवास्तु ।।२०।।
श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः श्रीमान्न कश्चित्कृपणं त्वदन्यः ।
यथा प्रकाशस्थितमन्धकारस्थायी क्षतेऽसौ न तथातमःस्थम् ।।२१।।
स्ववृद्धिनिःश्वासनिमेषभाजि प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः ।
किं चाखिलज्ञेयविवर्तिबोधस्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः ।।२२।।
तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव त्वां तेऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य ।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति ।।२३।।
दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः सुरासुरास्तस्य महान्स लाभः ।
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः ।।२४।।
मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्तेश्चतुर्गतीनां गहनं परेण ।
सर्वं मया दृष्टमिति स्मयेन त्वं मा कदाचिद्भुजमालुलोके ।।२५।।
स्वर्भानुरर्कस्यहविर्भुजोऽम्भः कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः ।
संसारभोगस्य वियोगभावो विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये ।।२६।।
अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति ।
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः ।।२७।।
प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैर्दग्धस्य देवव्यवहारमाहुः ।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वं दृष्टं कपालस्य च मङ्गलत्वम् ।।२८।।
नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तं हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः ।
निर्दोषतां के न विभावयन्ति ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण ।।२९।।

न क्वापि वाञ्छा ववृते च वाक्ते काले क्वचित्कोऽपि तथा नियोगः ।
न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति ।।३०।।
गुणा गभीराः परमाः प्रसन्ना बहुप्रकारा बहवस्तवेति ।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषां गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति ।।३१।।
स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि ।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम् ।।३२।।
ततस्त्रिलोकीनगराधिदेवं नित्यं परं ज्योतिरनन्तशक्तिम् ।
अपुण्यपापं परपुण्यहेतुं नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम् ।।३३।।
अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम् ।
सर्वस्य मातारमेयमन्यैर्जिनेन्द्रमस्मार्यमनुस्मरामि ।।३४।।
अगाधमन्यैर्मनसाऽप्यलङ्घ्यं निष्किचनं प्रार्थितमर्थवद्भिः ।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं पतिं जिनानां शरणं व्रजामि ।।३५।।
त्रैलोक्यदीक्षा गुरवे नमस्ते यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत् ।
प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः पश्चान्न मेरुः कुलपर्वतोऽभूत् ।।३६।।
स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम् ।
न लाघवं गौरवमेकरूपं वन्दे विभुं कालकलामतीतम् ।।३७।।
इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि ।
छायातरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्कश्छायया याचितयात्मलाभः ।।३८।।
अथास्ति दित्सा यदि वोपरोधस्त्वय्येव शक्तां दिशभक्तिबुद्धिम् ।
करिष्यते देव तथा कृपां मे को वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः ।।३९।।
वितरति विहिता यथाकथंचिज्जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः ।
त्वयि नुतिविषया पुनर्विशेषाद्दिशति सुखानि यशो धनं जयं च।।४०।।

।। इति श्रीधनजयकृत विषापहारस्तोत्रम् ।।

श्री भूपालकविप्रणीता

जिनचतुर्विंशतिका

श्रीलीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत् ।
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनाङ्घ्रिद्वयम् ।।१।।

शान्तं वपुः श्रवणहारिवचश्चरित्रं
सर्वोपकारि तव देव ततः श्रुतज्ञाः ।
संसारमारवमहत्स्थलरुद्रसान्द्र-
च्छायामहीरुह भवन्तमुपाश्रयन्ते ।।२।।

स्वामिन्नद्य विनर्गतोऽस्मि जननीगर्भान्धकूपोदराद्
अद्योद्घाटितदृष्टिरस्मि फलवज्जन्मास्मि चाद्यस्फुटम् ।
त्वामद्राक्षमहं यदक्षयपदानन्दाय लोकत्रयी-
नेत्रेन्दीवर काननेन्दुममृतस्यन्दिप्रभाचन्द्रिकम् ।।३।।

निःशेषत्रिदशेन्द्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली
सान्द्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटीमाणिक्यदीपावलिः ।
क्वेयं श्रीः क्व च निस्पृहत्वमिदमित्यूहातिगस्त्वादृशः
सर्वज्ञानदृशश्चरित्रमहिमा लोकेश लोकोत्तरः ।।४।।

राज्यं शासनकारिनाकपति यत्त्यक्तं तृणावज्ञया,
हेलानिर्दलितत्रिलोकमहिमा यन्मोहमल्लो जितः ।
लोकालोकमपि स्वबोधमुकरस्यान्तःकृतं तत्त्वया,
सैषाऽऽश्चर्यपरम्परा जिनवर क्वान्यत्र संभाव्यते ।।५।।

दानं ज्ञानधनाय दत्तमसकृत्पात्राय सद्वृत्तये
चीर्णान्युग्रतपांसि तेन सुचिरं पूजाश्च वन्ह्यः कृताः ।

शीलानां निचयः सहामलगुणैः सर्वः समासादितो
दृष्टस्त्वं जिन येन दृष्टिसुभगः श्रद्धापरेण क्षणम् ।।६।।
ापारमितः स एव भगवन्पारं स एव श्रुत-
स्कन्धाब्धेर्गुणरत्नभूषण इति श्लाघ्यः स एव ध्रुवम् ।
नीयन्ते जिन येन कर्णहृदयालंकारनां त्वद्गुणाः
संसाराहिविषापहारमणयस्त्रैलोक्यचूडामणेः ।।७।।
जयति दिविजवृन्दान्दोलितैरिन्दुरोचि-
र्निचय रुचिभिरुच्चैश्चामरैर्वीज्यमानः ।
जिनपतिरनुरज्यन्मुक्तिसाम्राज्यलक्ष्मी-
र्युवतिनवकटाक्षक्षेपलीला दधानैः ।।८।।
देवः श्वेतातपत्रत्रयचमरिरुहाशोकभाश्चक्रभाषा-
पुष्पोघासारसिंहासनसुरपटहैरष्टभिः प्रातिहार्यैः ।
साश्चर्यैर्भ्राजमानः सुरमनुजसभाम्भोजिनी भानुमाली
पायान्नः पादपीठीकृतसकलजगत् पादमौलिर्जिनेद्रः ।।९।।
नृत्यत्स्वर्दन्तिदन्ताम्बुरुहवन नटन्नाकनारीनिकाय
सद्यस्त्रैलोक्ययात्रोत्सवकरनिनदातोद्यमाद्यन्निलिम्पिः ।
हस्ताम्भोजातलीलाविनिहितसुमनो दामरम्यामरस्त्री-
काम्य. कल्याणपूजाविधिषु विजयते देव देवागमस्ते ।।१०।।
चक्षुष्मानहमेव देव भुवने नेत्रामृतस्यन्दिनं
त्वद्वक्त्रेन्दुमतिप्रसादसुभगैस्तेजोभिरुद्भासितम् ।
तेनालोकयता मयाऽनतिचिराच्चक्षु. कृतार्थीकृतं
द्रष्टव्यावधिवीक्षणव्यतिकरव्याजृम्भमाणोत्सवम् ।।११।।
कन्तोः सकान्तमपि मल्लमवैति कश्चित्
मुग्धो मुकुन्दमरविन्दजमिन्दुमौलिम् ।
मोघीकृतत्रिदशयोषिदपाङ्गपातः
तस्य त्वमेव विजयी जिनराजमल्लः ।।१२।।

किसलयितमनल्पं त्वद्विलोकाभिलाषात्
कुसुमितमतिसान्द्रं त्वत्समीपप्रयाणात् ।
मम फलितममन्दं त्वन्मुखेन्दोरिदानीं
नयनपथमवाप्ताद्देव पुण्यद्रुमेण ॥१३॥

त्रिभुवनवनपुष्यत्पुष्पकोदंडदर्प-
प्रसरदवनवाम्भोमुक्तिसूक्तिप्रसूतिः ।
स जयति जिनराजव्रातजीमूतसङ्घः
शतमखशिखिनृत्यारम्भनिर्बन्धबन्धुः ॥१४॥

भूपालः स्वर्गपालप्रमुखनरसुरश्रेणिनेत्रालिमाला
लीलाचैत्यस्य चैत्यालयमखिलजगत्कौमुदीन्दोर्जिनस्य ।
उत्तंसीभूतसेवाञ्जलिपुटनलिनीकुड्मलाश्री परित्य
श्रीपादच्छाययापस्थितभवदथुः संश्रितोऽस्मीवमुक्तिम् ॥१५॥

देव त्वदङ्घ्रिनखमण्डलदर्पणेऽस्मिन्
अर्घ्ये निसर्गरुचिरे चिरदृष्टवक्त्रः ।
श्रीकीर्तिकान्तिधृतिसङ्गमकारणानि
भव्यो न कानि लभते शुभमङ्गलानि ॥१६॥

जयति सुरनरेन्द्रश्रीसुधानिर्झरिण्याः
कुलधरणिधरोऽयं जैनचैत्याभिरामः ।
प्रविपुलफलधर्मानोकहाग्रप्रवाल-
प्रसरशिखरशुम्भत्केतनः श्रीनिकेतः ॥१७॥

विनमदमरकान्ताकुन्तलाक्रान्तकान्ति-
स्फुरितनखमयूखद्योतिताशान्तरालः ।
दिविजमनुजराजव्रातपूज्यक्रमाब्जो
जयति विजितकर्मारातिजालो जिनेन्द्रः ॥१८॥

सुप्तोत्थितेन सुमुखेन सुमङ्गलाय
द्रष्टव्यमस्ति यदि मङ्गलमेव वस्तु ।

अन्येन किं तदिह नाथ तवैव वक्त्रं
त्रैलोक्यमङ्गलनिकेतनमीक्षणीयम् ॥१९॥

त्वं धर्मोदयतापसाश्रमशुकस्त्वं काव्यबन्धक्रम-
क्रीडानन्दकोकिलस्त्वमुचितः श्रीमल्लिकाषट्पदः ।
त्वं पुन्नागकथारविन्दसरसीहंसस्त्वमुत्तंसकः
कैर्भूपाल न धार्यसे गुणमणिस्रङ्मालिभिर्मौलिभिः ॥२०॥

शिवसुखमजरश्रीसङ्गमं चाभिलष्य
स्वमभिनिगमयन्ति क्लेशपाशेन केचित् ।
वयमिह तु वचस्ते भूपतेर्भावयन्त
स्तदुभयमपि शश्वल्लीलया निर्विशामः ॥२१॥

देवेन्द्रास्तव मज्जनानि विदधुर्देवाङ्गनामङ्गला-
न्यापेठुः शरदिन्दुनिर्मलयशो गन्धर्वदेवा जगुः ।
शेषाश्चापि यथानियोगमखिलाः सेवां सुराश्चक्रिरे
तत्किं देव वयं विदध्म इति नश्चित्तं तु दोलायते ॥२२॥

देव त्वज्जननाभिषेकसमये रोमाञ्चसत्कञ्चुकैः
देवेन्द्रैर्यदनर्ति नर्तनविधौ लब्धप्रभावैः स्फुटम् ।
किं चान्यत्सुरसुन्दरीकुचतटप्रान्तावनद्धोत्तम-
प्रेङ्खद्वल्लकिनादझंकृतमहो तत्केन संवर्ण्यते ॥२३॥

देव त्वत्प्रतिबिम्बमम्बुजदलस्मेरेक्षणं पश्यतां
यत्रास्माकमहो महोत्सवरसो दृष्टेरियान्वर्तते ।
साक्षात्तत्रभवन्तमीक्षितवतां कल्याणकाले तदा
देवानामनिमेषलोचनतया वृत्तः स किं वर्ण्यते ॥२४॥

दृष्टं धाम रसायनस्य महतां दृष्टं निधीनां पदं
दृष्टं सिद्धरसस्य सद्म सदनं दृष्टं च चिन्तामणेः ।
किं दृष्टैरथवानुषाङ्गिकफलैरेभिर्मयाद्य ध्रुवं
दृष्टं मुक्तिविवाहमङ्गलगृहं दृष्टे जिनश्रीगृहे ॥२५॥

दृष्टस्त्वं जिनराजचन्द्र विकसद्भूपेन्द्रनेत्रोत्पलैः
स्नातं त्वन्नुतिचन्द्रिकाम्भसि भवद्विद्वच्चकोरोत्सवे ।
नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शांति मया गम्यते
देव त्वद्गतचेतसैव भक्तो भूयात्पुनर्दर्शनम् ।।२६।।

।। इति श्रीभूपालकविप्रणीता जिनचतुर्विंशतिका ।।

तीर्थंकर-स्तुतिः

स्वस्त्यैव नः स्याद् वृषभो जिनेन्द्रः,
स्वस्तिप्रदो नस्त्वजितो जिनेन्द्रः ।
श्रीसंभवो नोऽस्तु सदैव स्वस्ति,
स्वस्त्यैव भूयादभिनंदनो जिनः ।।१।।
स्वस्तिप्रवृद्धो सुमतिस्तु नोऽस्तु,
पद्मप्रभो नः प्रतनोतु स्वस्ति ।
सुपार्श्वनामापि जिनोऽस्तु स्वस्ति,
चंद्रप्रभो नो दिशतां च स्वस्ति ।।२।।
श्रीपुष्पदंतो विदधातु स्वस्ति,
सुस्वस्तिदायी मम शीतलोऽस्तु ।
श्रेयांस स्वस्त्यैव ममैव भूयात्,
श्रीवासुपूज्योऽपि जिनोऽस्तु स्वस्ति ।।३।।
स्वस्तिप्रदो नो विमलो जिनोऽस्तु,
स्वस्ति त्वनंतोऽपि ममास्तु नित्यं ।
धर्मोऽपि मां स्वस्तिकरः सदास्तु,
श्रीशांतिनाथोस्तु ममैवस्वास्त ।।४।।

कुन्थुस्तु भूयान्मम स्वस्तिकारी,
जिनस्त्वरः स्वस्तिकरश्च नोस्तु ।
स्वस्त्यैव मल्लिस्तु जिनोस्तु नित्यं,
स्वस्तिप्रदो नो मुनिसुव्रतोऽस्तु ।।५।।
नर्मिजिनः स्वस्तिकृदोस्तु नित्यं,
स्वस्त्यैव नेर्मिजिन मेऽस्तु नित्य ।
श्री पार्श्वनाथो मयि स्वस्तिदोऽस्तु,
श्रीस्वस्तिदो वीरजिनः सदास्तु ।।६।।

।। इति तीर्थंकर-स्तुति ।।

लं स ोत्रम्

(शार्दूलविक्रीडितछन्द)

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं,
साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि ।
रागद्वेषभयामयान्तकजरालोलत्वलोभादयो,
नालं यत्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ।।१।।
दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा तीव्रार्चिषा वह्निना,
यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गुहः ।
सोऽयं किं मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोहक्षयं,
कृत्वा य. स तु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः ।।२।।
यत्नाद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्येन्द्रवक्षःस्थलं,
सारथ्येन धनंजयस्य समरे योऽमारयत्कौरवान् ।

नासौ विष्णुरनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं,
विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु महाविष्णुः सदेष्टो मम ॥३॥
उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो यदीयं पुनः,
पात्रीदंडकमंडलुप्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिम् ।
आविर्भावयितुं भवति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां,
क्षुत्तृष्णाश्रमरागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोऽस्तु नः ॥४॥
यो जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन्,
कर्त्ता कर्मफलं न भुक्त इति यो वक्ता स बुद्धः कथम् ।
यज्ज्ञानं क्षणवर्ति वस्तु सकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा,
यो जानन्युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥५॥

(स्रग्धरा छन्द)

ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यात्,
नाथः किं भैक्ष्यचारी यतिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च ।
आर्द्राजः किन्त्वजन्मा सकलविदिति किं वेत्ति नात्मान्तरायं,
संक्षेपात्सम्यगुक्तं पशुपतिमपशुः कोऽत्र धीमानुपास्ते ॥६॥
ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुरयुवतिरसावेशविभ्रान्तचेताः,
शम्भुः खट्वाङ्गधारी गिरिपतितनयापाङ्गलीलानुविद्धः ।
विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहितरमगमद्गोपनाथस्य मोहात्,
अर्हन्विध्वस्तरागो जितसकलभयः कोऽयमेष्वाप्तनाथः ॥७॥
एको नृत्यति विप्रसार्य कुकुभां चक्रे सहस्रं भुजान्,
एकः शेषभुजंगभोगशयने व्यादाय निद्रायते ।
द्रष्टुं चारुतिलोत्तमामुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रताम्,
एते मुक्तिपथं वदंति विदुषामित्येतदत्यद्भुतम् ॥८॥
यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधेर्भङ्गिनः पारदृश्वा,
पौर्वापर्याविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम् ।

तं वंदे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषद्विषंतं,
बुद्धं वा वर्द्धमानं शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा ॥९॥
माया नास्ति जटाकपालमुकुटं चन्द्रो न मूर्धावली,
खट्वाङ्गं न च वासुकिर्न च धनुः शूलं न चोग्रं मुखं ।
कामो यस्य न कामिनी न च वृषो गीतं न नृत्यं पुनः,
सोऽस्मान्पातु निरंजनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः ॥१०॥
नो ब्रह्मांकितभूतलं न च हरेः शम्भोर्न मुद्रांकितं,
नो चन्द्रार्ककरांकितं सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च ।
षड्वक्त्रांकितबौद्धदेवहुतभुग्यक्षोरगैर्नांकितं,
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्रमुद्रांकितम् ॥११॥
मौञ्जीदंडकमंडलुप्रभृतयो नो लाञ्छनं ब्रह्मणो,
रुद्रस्यापि जटाकपालमुकुटं कौपीनखट्वांगनाः ।
विष्णोश्चक्रगदादिशंखमतुलं बुद्धस्य रक्ताम्बरं,
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्रमुद्रांकितम् ॥१२॥
नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं,
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्यबुद्ध्या मया ।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो,
बौद्धौघान्सकलान् विजित्य स घटः पादेन विस्फालितः ॥१३॥
खट्वांगं नैव हस्ते न च हृदि रचिता लम्बते मुंडमाला,
भस्मांगं नैव शूलं न च गिरिदुहिता नैव हस्ते कपालम् ।
चन्द्रार्द्धं नैव मूर्द्धन्यपि वृषगमनं नैव कंठे फणीन्द्रः,
तं वन्दे त्वक्तदोषं भवभयमथनं चेश्वरं देवदेवं ॥१४॥
किं वाद्यो भगवानमेयमहिमा देवोऽकलंकः कलौ,
काले यो जनतासुधर्मनिहितो देवोऽकलंको जिनः ।
यस्य स्फारविवेकमुद्रलहरीजाले प्रमेयाकुला,
निर्मग्ना तनुतेतरां भगवती तारा शिरःकम्पनम् ॥१५॥

सा तारा खलु देवता भगवतीमन्यापि मन्यामहे,
षण्मासावधिजाड्यसांख्यभगवद्भट्टाकलंकप्रभोः ।
वाक्कल्लोलपरम्पराभिरमते नून मनोमज्जन-
व्यापारं सहते स्म विस्मितमतिः सन्ताडितेतस्ततः ।।१६।।

।। इति अकलकस्तोत्रम् समाप्तम् ।।

ामारि ाठः

सिद्धं सम्पूर्णभव्यार्थसिद्धेः कारणमुत्तमम् ।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ।।१।।
सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेसरम् ।
प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलम् ।।२।।
सिद्धवस्तुवचो भक्त्या सिद्धान् प्रणमतां सदा ।
सिद्ध-कार्याः शिवं प्राप्ताः सिद्धि ददतु नोऽव्ययाम् ।।३।।
नमोस्तु धुतपापेभ्यः सिद्धेभ्यः ऋषिपरिषदे ।
सामायिकं प्रपद्येऽहं भवभ्रमणसूदनम् ।।४।।
समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ।।५।।
साम्यं मे सर्वभूतेषु वैरं मम न केनचित् ।
आशाः सर्वाः परित्यज्य समाधिमहमाश्रये ।।६।।
रागद्वेषान्ममत्वाद्वा हा मया ये विराधिताः ।
क्षाम्यन्तु जन्तवस्ते मे तेभ्यो मृष्याम्यहं पुनः ।।७।।

मनषा वपुषा वाचा, कृतकारितसम्मतैः ।
रत्नत्रयभवं दोषं, गर्हे निन्दामि वर्जये ॥८॥
तैरश्चं मानवं दैवमुपसर्गं सहेऽधुना ।
कायाहारकषायादीन्, प्रत्याख्यामि त्रिशुद्धितः ॥९॥
रागद्वेषं भयं शोकं, प्रहर्षौत्सुक्यदीनताः ।
व्युत्सृजामि त्रिधा सर्वामरतिं रतिमेव च ॥१०॥
जीविते मरणे लाभेऽलाभे योगे विपर्यये ।
बन्धावरौ सुखे दुःखे सर्वदा समता मम ॥११॥
आत्मैव मे सदा ज्ञाने दर्शने चरणे तथा ।
प्रात्याख्याने ममात्मैव तथा संसारयोगयोः ॥१२॥
एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञानदर्शनलक्षणः ।
शेषा बहिर्भवा भावाः सर्वे संयोगलक्षणाः ॥१३॥
संयोगमूलाजीवेन प्राप्ता दुःखपरम्परा ।
तस्मात्संयोगसंबन्धं त्रिधा सर्वं त्यजाम्यहम् ॥१४॥
एवं सामायिकात्सम्यक्सामायिकमखण्डितम् ।
वर्त्तताां मुक्तिमानिन्या वशीचूर्णायितं मम ॥१५॥
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥१६॥
तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥१७॥
अक्खर पयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाण देवय मज्झवि दुक्खक्खयं दिन्तु ॥१८॥

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाओ य ।
मम होउ जगदबन्धव जिणवर तव चरणसरणेण ॥१६॥

श्री हा ीराष्टकं स्तोत्रम्

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोतरहितः ।
जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥२॥
नमन्नाकेन्द्रालीमुकुटमणिभाजालजटिलं
लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥३॥
यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः ।
लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो

विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः ।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिः
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥५॥

यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला
वृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता
महावीरस्वामी नयनपथगानी भवतु मे (नः) ॥६॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः ।
स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥७॥

महामोहातङ्कप्रशमनपराकस्मिकभिषग्
निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमा मङ्गलकरः ।
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो
महावीरस्वामो नयनपथगामो भवतु मे (नः) ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दुना कृतम् ।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिम् ॥९॥

॥ इति श्रीमहावीराष्टक स्तोत्रम् ॥

दृष्टाष्टकं स्तोत्रम्

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि
भव्यात्मना विभवसम्भवभूरिहेतुः ।
दुग्धाब्धिफेनधवलोज्ज्वलकूटकोटी
नद्धध्वजप्रकरराजिविराजमानम् ॥१॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भुवनैकलक्ष्मी
धामर्द्धिवर्द्धितमहामुनिसेव्यमानम् ।
विद्याधरामरवधूजनमुक्तदिव्य-
पुष्पाञ्जलिप्रकरशोभित भूमिभागम् ॥२॥

दृष्टं जिनेन्द्रभ भवनादिवास-
विख्यातनाकगणिकागणगीयमानम् ।
नानामणिप्रचयभासुररश्मिजाल-
व्यालीढनिर्मलविशालगवाक्षजालम् ॥३॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं सुरसिद्धयक्ष-
गन्धर्वकिन्नरकरार्पितवेणु वीणा ।
संगीतमिश्रितनमस्कृतधीरनादै-
रापूरिताम्बरतलोरुदिगन्तरालम् ॥४॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विलसद्विलोल-
मालाकुलालिललितालकविभ्रमाणम् ।
माधुर्यवाद्यलयनृत्यविलासिनीनां
लीलाचलद्वलयनूपुरनादरम्यम् ॥५॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं मणिरत्नहेम
सारोज्ज्वलैः कलशचामरदर्पणाद्यैः ।
सन्मङ्गलैः सततमष्टशतप्रभेदैः
विभ्राजितं विमलमौक्तिकदामशोभम् ॥६॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं वरदेवदारु–
कर्पूरचन्दनतरुष्क सुगन्धिधूपैः ।
मेघायमानगगने पवनाभिघात–
चंचच्चलविमलकेतनतुङ्गशालम् ॥७॥
दृष्टं जिनेन्द्रभवनं धवलातपत्र–
च्छाया निमग्नतनुयक्षकुमारवृंदैः ।
दोधूयमानसितचामरपंक्तिभासं
भामण्डलद्युतियुतप्रतिमाभिरामम् ॥८॥
दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विविधप्रकार–
पुष्पोपहाररमणीयसुरत्नभूमिः ।
नित्यं वसन्ततिलकाश्रियमादधानं
सन्मङ्गलं सकलचन्द्रमुनीन्द्रवन्द्यम् ॥९॥
दृष्टं मयाद्य मणिकांचनचित्रतुङ्ग–
सिंहासनादिजिनबिंबविभूतियुक्तम् ।
चैत्यालयं यदतुलं परिकीर्तितं मे
सन्मङ्गलं सकलचंद्रमुनीद्रवंद्यम् ॥१०॥

॥ इति दृष्टाष्टक स्त्रोत्र समाप्तम् ॥

ंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीदवः स्थायिनः ॥
ये सर्वे जिनसिद्धिसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥१॥
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममल रत्नत्रयं पावनं ।
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ॥
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं ।
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥२॥
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्री मन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये णु विष्प्रतिविष्णु लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः ।
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
य कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभाविनः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृत्तिमसी वीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वररस्यार्हतो ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वृक्षारुप्याद्रिषु ॥

इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥६॥
ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिगताः पञ्च ये ।
ते चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला येऽष्टौविधाश्चारणाः ॥
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥७॥
देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः ।
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ॥
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधाः ।
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥८॥
इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः ॥
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्थर्माकामान्विता ॥
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

श्री अमितगतिसूरिविरचिता

भा ना ात्रिंशतिका

सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा
ममात्मा विदधातु देव ॥१॥

शरीरतः कर्त्तु मनन्तशक्ति
विभिन्नमात्मानमपास्त दोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं
तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे
योगे वियोगे भुवने वने वा ।
निराकृताशेषममत्वबुद्धेः; समं
मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ॥३॥

मुनीश ! लीनाविव कीलिताविव
स्थिरौ निषाताविव बिंबिताविव ।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा
तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव ॥४॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव देहिनः
प्रमादतः संचरता इतस्ततः ।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिता
तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥५॥

विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना
मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।

चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं
तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ।।६।।
विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं
मनोवचः कायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं
भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ।।७।।
अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं
जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः
प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ।।८।।
क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं
व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलंघनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं
वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ।।९।।
यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं
मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम् ।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी
सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ।।१०।।
बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः
स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः ।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने
त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवि ।।११।।
यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः
यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१२।।

योदर्शनज्ञानसुखस्वभावः
समस्तसंसार – विकारबाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥

[illegible]दते यो भवदुःखजालं
निरीक्षते यो जगदन्तरालं ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१४॥

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो
यो जन्ममृत्युव्यसनाद्यतीतः ।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१५॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा
रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१६॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः
सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकार
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैः
यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः ।
निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१८॥

विभासते यत्र मरीचिमाली
न विद्यमाने भुवनावभासि ।

चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं
तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ।।६।।
विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं
मनोवचः कायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं
भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ।।७।।
अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं
जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः
प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ।।८।।
क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं
व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलंघनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं
वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ।।९।।
यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं
मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम् ।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी
सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ।।१०।।
बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः
स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः ।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने
त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवि ।।११।।
यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः
यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१२।।

योदर्शनज्ञानसुखस्वभावः
समस्तसंसार – विकारबाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञ
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥

निषूदते यो भवदुःखजालं
निरीक्षते यो जगदन्तरालं ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१४॥

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो
यो जन्ममृत्युव्यसनाद्यतीतः ।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१५॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा
रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१६॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः
सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैः
यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः ।
निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१८॥

विभासते यत्र मरीचिमाली
न विद्यमाने भुवनावभासि ।

स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१९॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं
विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् ।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२०॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्छा
विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपञ्चः
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी
विधानतो नो फलको विनिर्मितः ।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः
सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥२२॥

न संस्तरो भद्रसमाधिसाधनं
न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं
विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥२३॥

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था
भवामि तेषां न कदाचनाहम् ।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं
स्वस्थः सदा त्वं भव भद्रमुक्त्यै ॥२४॥

आत्मानमात्मन्यवलोकमानः
त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र
स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम् ॥२५॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा
विनिर्मलः साधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ता
न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ।।२६।।
यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्द्धं
तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः
कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ।।२७।।
संयोगतो दुःखमनेकभेदं
यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो
यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ।।२८।।
सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं
संसारकान्तार–निपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्षमाणो
निरीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ।।२९।।
स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा
फल तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं
स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ।।३०।।
निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो
न कोपि कस्यापि ददाति किंचन ।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः
परो ददातीति विमुंच शेमुषीम् ।।३१।।
यै. परमात्माऽमितगतिवन्द्यः
सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।

शश्वदधीते मनसि लभन्ते
मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥३२॥

इति द्वात्रिंशत्वृत्तैः परमात्मानमीक्षते ।
योऽनन्यगतचेतस्को यात्यस पदमव्ययम् ॥३३॥

॥ इत्यमितगतिसूरिविरचिता भावना द्वात्रिंशतिका समाप्ता ॥

ीतरागस्तोत्र

शिवं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं,
न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्ता ।
न अङ्गं न सङ्गं न स्वेच्छा न कायं,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥१॥
न बन्धो न मोक्षो न रागादिदोषः,
न योगो न भोगो न व्याधिर्न शोकः ।
न कोपो न मानो न माया न लोभः,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥२॥
न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा,
न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा ।
न स्वामी न भृत्यो न देवो न मर्त्यः,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥३॥
न जन्ममृत्यू न मोहो न चिंता,
न क्षुद्रो न भीतो न कार्श्यं न तन्द्रा ।
न स्वेदो न खेदो न वर्णो न मुद्रा,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥४॥

त्रिदंडं त्रिखंडं हरं विश्वनाथम्,
हृषीकेश विध्वस्तकर्मादिजालम् ।
न पुण्यं न पापं न चाक्षादि गात्रम्,
चिदानंदरूपं नमो वीतरागम् ॥५॥

न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो,
न स्वेदो न भेदो न मूर्तिर्न स्नेहः ।
न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंद्रा,
चिदानंदरूपं नमो वीतरागम् ॥६॥

नाद्यं न मध्यं नान्तं न चान्यत्,
न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावः ।
शिष्यो गुरुर्नापि हीनो न दीनः,
चिदानंदरूपं नमो वीतरागम् ॥७॥

इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी,
न पूर्णं न शून्यं न चैत्यस्वरूपम् ।
न चान्यो न भिन्नो परमार्थमेकम्,
चिदानंदरूपं नमो वीतरागम् ॥८॥

आत्माराम गुणाकरं गुणनिधिं चैतन्यरत्नाकरं
सर्वे भूतगतागते सुखदुःखे ज्ञाते त्वयि सर्वगे ।
त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगीश्वराः
वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यताम् ॥९॥

॥ इति श्री वीतरागस्तोत्र समाप्तम् ॥

पर ानन्‍ स्तोत्र

परमानन्दसंयुक्तं निर्विकारं निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थिम् ॥१॥
अनंतसुखसंपन्नं ज्ञानामृतपयोधरम् ।
अनंतवीर्यसंपन्नं दर्शनं परमात्मनः ॥२॥
र्निविकारं निराबाधं सर्वसंघविर्वाजतम् ।
परमानन्दसंपन्नं शुद्धचैतन्यलक्षणम् ॥३॥
उत्तमा स्वात्मचिन्तास्यात् देहचिन्ता च मध्यमा ।
अधमा कामचिन्ता स्यात् परचिन्ताधमाधमा ॥४॥
र्निविकल्पसमुत्पन्नं ज्ञानमेव सुधारसं ।
विवेकमंजलिं कृत्वा त पिबंति तपश्विनः ॥५॥
सदानन्दमयं जीवं यो जानाति स पडितः ।
स सेवते निजात्मानं परमानन्दकारणम् ॥६॥
नलिनाच्च यथा नीरं भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ।
सोऽयमात्मा स्वभावेन देहे तिष्ठति निर्मलः ॥७॥
द्रव्यकर्ममलैः मुक्तं भावकर्मविर्वाजतम् ।
नोकर्म-रहितं सिद्धं निश्चयेन चिदात्मकम् ॥८॥
आनन्दं ब्रह्मणो रूपं निजदेहे व्यवस्थितम् ।
ध्यानहीना न पश्ययन्ति जात्यंधा इव भास्करम् ॥९॥
सद्ध्यानं क्रियते भव्यैर्मनो येन विलीयते ।
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं चिच्चमत्कारलक्षणम् ॥१०॥

ये ध्यानलीना मुनयः प्रधानाः
ते दुःखहीना नियमाद्भवन्ति ।
सन्प्राप्य शीघ्रं परमात्मतत्वं
व्रजन्ति मोक्षं क्षणमेकमेवं ॥११॥

आनंदरूपं परमात्मतत्त्वं,
समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तम् ।
स्वभावलीना निवसन्ति नित्यं,
जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वम् ॥१२॥

निजानन्दमयं शुद्धं निराकारं निरामयम् ।
अनंतसुखसंपन्नम् सर्वसंघविवर्जितम् ॥१३॥

लोकमात्रप्रमाणोयं निश्चयेन हि न संशयः ।
व्यवहारे तनुर्मात्रः कथितः परमेश्वरैः ॥१४॥

यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं तत्क्षणं गतविभ्रमः ।
स्वस्थचित्तः स्थिरीभूत्वा निर्विकल्पसमाधितः ॥१५॥

स एव परमं ब्रह्म स एव जिनपुंगवः ।
स एव परमं तत्त्वं स एव परमो गुरुः ॥१६॥

स एव परमं ज्योतिः स एव परमं तपः ।
स एव परमं ध्यानं स एव परमात्मकः ॥१७॥

स एव सर्वकल्याणं स एव सुखभाजनम् ।
स एव शुद्धचिद्रूपः स एव परमं शिवः ॥१८॥

स एव परमानंदः स एव सुखदायकः ।
स एव परमज्ञानं स एव गुणसागरः ॥१९॥

परमाह्लादसंपन्नं रागद्वेषविवर्जितम् ।
सोहं तं देहमध्येषु यो जानाति स पंडितः ॥२०॥

आकाररहितं शुद्धं स्वस्वरूपे व्यवस्थितम् ।
सिद्धमष्टगुणोपेतं निर्विकारं निरंजनम् ॥२१॥

तत्सदृशं निजात्मानं यो जानाति स पंडितः ।
सहजानंदचैतन्य – प्रकाशाय महीयसे ॥२२॥

पाषाणेषु यथा हेमं दुग्धमध्ये यथा घृतम् ।
तिलमध्ये यथा तैलं देहमध्ये तथा शिवः ॥२३॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पंडितः ॥२४॥

॥ इति परमानन्दस्तोत्रम् ॥

कल ाणालो ना

परमात्मानं वर्द्धितमतिं परमेष्ठिनं करोमि नमस्कारम् ।
स्वकपरसिद्धिनिमित्तं कल्याणालोचनां वक्ष्ये ॥१॥
रे जीव ! अनंतभवे ससारे संसारताबहुवारम् ।
प्राप्तो न बोधिलाभः मिथ्यात्वविजृंभितप्रकृतिभिः ॥२॥
संसारभ्रमणगमनं कुर्वन् आराधितो न जिनधर्मः ।
तेन विना वरं दुःखं प्राप्तोऽसि अनन्तवारम् ॥३॥
संसारे निवसन् अनन्तमरणानि प्राप्तोऽसि त्वम् ।
केवलिना विना तेषां संख्यापर्याप्तिर्न भवति ॥४॥
त्रीणि शतानि षट्त्रिंशानि षट्षष्ठिसहस्रवारमरणानि ।
अन्तर्मुहूर्तमध्ये प्राप्तोऽसि निगोदमध्ये ॥५॥
विकलेन्द्रिये अशीतिं षष्ठिं चत्वारिंशदेव जानीहि ।
पंचेन्द्रिये चतुर्विंशतिं क्षुद्रभवान् अन्तर्मुहूर्ते ॥६॥
अन्योन्यं क्रुध्यन्तो जीवा प्राप्नुवन्ति दारुणं दुःखम् ।
न खलु तेषां पर्याप्तिः कथं प्राप्नोति धर्ममतिशून्यः ॥७॥
माता पिता कुटुम्बः स्वजनजनः कोपि नायाति सह ।
एकाकी भ्रमति सदा न हि द्वितीयोऽस्ति संसारे ॥८॥

आयुःक्षयेपि प्राप्ते न समर्थः कोपि आयुर्दाने च ।
देवेन्द्रो न नरेन्द्रो मण्यौषधमन्त्रजालानि ।।९।।
सम्प्रति जिनवरधर्मं लब्धोऽसि त्वं विशुद्धयोगेन ।
क्षमस्व जीवान् सर्वान् प्रत्येकसमये प्रयत्नेन ।।१०।।
त्रीणि शतानि त्रिषष्ठिमिथ्यात्वानि दर्शनस्य प्रतिपक्षाणि ।
अज्ञानेन श्रद्धितानि मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।११।।
मधुमासमद्यद्यूतप्रभृतीनि व्यसनानि सप्तभेदानि ।
नियमो न कृतस्तेषा मिथ्या मे दुष्कृत भवतु ।।१२।।
अणुव्रतमहाव्रतानि यानि यमनियमशीलानि साधुगुरुदत्तानि ।
यानि यानि विराधतानि खलु मिथ्या मे दुष्कृत भवतु ।।१३।।
नित्येतरधा तु सप्त तरुदश विकलेन्द्रियेषु षट् चैव ।
सुरनारकतिर्यक्षु चत्वारश्चतुर्दश मनुष्ये शतसहस्राणि ।।१४।।
एते सर्वे जीवाश्चतुरशीतिलक्षयोनिवशे प्राप्ताः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।१५।।
पृथ्वी जलाग्निवायुतेजोवनस्पतयश्च विकलत्रयाः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।१६।।
मलसप्ततिर्जिनोक्ता व्रतविषये वा विराधना विविधा ।
सामायिकक्षमादिका मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।१७।।
मलसत्तरा जिणुत्ता वयविसये जा विराहणा विविहा ।
सामइय खमइया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।१८।।
फलपुष्पत्वग्वल्ली अगालितस्नानं च प्रक्षालनादिभिः ।
ये ये विराधताः खलु मिथ्या मे दुष्कृत भवतु ।।१९।।
कन्दफलमूलबीजानि सचित्तरजनीभोजनाहाराः ।
अज्ञानेन येऽपि कृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।२०।।
नो पूजा जिनचरणे न पात्रदान न चेर्यागसनम् ।
न कृता न भाविता मया मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ।।२१।।

बह्वारम्भपरिग्रहसावद्यानि बहूनि प्रमाददोषेण ।
जीवा विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२२॥
सप्ततिशतक्षेत्रभवाः अतीतानागतवर्तमानजिनाः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२३॥
अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः साधवः पंचपरमेष्ठिनः।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२४॥
जिनवचनं धर्मः चैत्यं जिनप्रतिमा. कृत्रिमा अकृत्रिमाः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२५॥
दर्शनज्ञानचारित्रे दोषा अष्टाष्टपंचभेदा हि ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२६॥
मतिः श्रुतमवधिः मनःपर्ययं तथा केवलं च पंचकम् ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२७॥
आचारादीन्यंगानि पूर्वप्रकीर्णकानि जिनैः प्रणीतानि ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२८॥
पंचमहाव्रतयुक्ता अष्टादशसहस्रशीलकृतशोभाः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥२९॥
लोके पितृसमाना ऋद्धिप्रसन्ना महागणपतयः ।
ये ये विराधिताः खलु मिथ्या मे दुष्कृत भवतु ॥३०॥
निर्ग्रंथा आर्यिकाः श्रावक-श्राविकाश्च चतुर्विधः सघः ।
ये ये विराधिता· खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३१॥
देवा असुरा मनुष्या नारकाः तिर्यग्योनिगतजीवाः ।
ये ये विराधताः खलु मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३२॥
क्रोधो मानो माया लोभ एते रागद्वेषाः ।
अज्ञानेन येऽपि कृता मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३३॥
परवस्त्रं परमहिला प्रमादयोगेनार्जितं पापम् ।
अन्येपि अकरणीया मिथ्या मे दुष्कृतं भवतु ॥३४॥

एकः स्वभावसिद्धः स आत्मा विकल्पपरिमुक्ताः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।३५।।
अरसोऽरूपोऽगंधोऽव्याबाधोऽनन्तज्ञानमयः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।३६।।
ज्ञेयप्रमाणं ज्ञानं समयेनैकेन भवति स्वस्वभावे ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।३७।।
एकानेकविकल्पप्रसाधने स्वकस्वभावशुद्धगतिः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।३८।।
देहप्रमाणो नित्यो लोकप्रमाणोऽपि धर्मतो भवति ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।३९।।
केलदर्शनज्ञाने समयेनैकेन द्वावुपयोगौ ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४०।।
स्वकरूपसहजसिद्धो विभावगुणमुक्तकर्मव्यापारः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४१।।
शून्यो नैवाशून्यो नोकर्मकर्मवर्जितो ज्ञानम् ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४२।।
ज्ञानतो यो न भिन्नः विकल्पभिन्नः स्वभावसुखमयः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४३।।
अच्छिन्नोऽवच्छिन्नः प्रमेयरूपत्वमगुरुलघुत्वं चैव ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४४।।
शुभाशुभभावविगतः शुद्धस्वभावेन तन्मय प्राप्तः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४५।।
न स्त्री न नपुंसको न पुमान् नैव पुण्यपापमयः ।
अन्यो न मम शरणं शरणं स एकः परमात्मा ।।४६।।
तव को न भवति स्वजनः त्वं कस्य न बंधुः स्वजनो वा ।
आत्मा भवेत् आत्मा एकाकी ज्ञायकः शुद्धः ।।४७।।

जिनदेवे भवतु सदा मतिः सुजिनशासने सदा भवतु ।
सन्यासेन च मरण भवे भवे भवतु मम सम्पत् ॥४८॥

जिनो देवो जिनो देवो जिनो देवो जिनो जिनः ।
दयाधर्मो दयाधर्मो दयाधर्मो दया सदा ॥४९॥

महासाधवः महासाधवः स्थ्येमहासाधवो दिगंबराः ।
एव तत्त्वं सदा भवतु यावन्नो मुक्तिसंगमः ॥५०॥

एवमेव गतः कालोऽनन्तो हि दुःखसंगमे ।
जिनोपदिष्टसंन्यासे न यत्नारोहणा कृता ॥५१॥

सम्प्रति एव सम्प्राप्ताऽऽराधना जिनदेशिता ।
का का न जायते मम सिद्धिसन्दोहसम्पत्तिः ॥५२॥

अहो धर्म· अहो धर्मः, अहो मे लब्धिर्निर्मला ।
संजाता सम्पत्सारा येन सुखमनुपमम् ॥५३॥

एवमाराधयन्नालोचनवंदनप्रतिक्रमणानि ।
प्राप्नोति फलं च तेषां निर्दिष्टमजितब्रह्मणा ॥५४॥

॥ इति कल्याणालोचना ॥

—— ——

श्री मद्विद्यानन्दिस्वामिविरचितं

पात्र रिस्तोत्रम्

जिनेन्द्र ! गुणसंस्तुतिस्तव मनागपि प्रस्तुता
भवत्यखिलकर्मणां प्रहतये परं कारणम् ।
इति व्यव ा मतिर्मम ततोऽहमत्यादरात्
स्फुटार्थनयपेशलां सुगत ! संविधास्ये स्तुतिम् ॥१॥
मतिः श्रुतमथवावधिश्च सहजं प्रमाणं हि ते
ततः स्वयमबोधि मोक्षपदवी स्वयंभूर्भवान् ।
न चैतदिह दिव्यचक्षुरधुनेक्ष्यतेऽस्मादृशां
यथा सुकृतकर्मणां सकलराज्यलक्ष्म्यादयः ॥२॥
व्रतेषु परिरज्यसे निरुपमे च सौख्ये स्पृहा
बिभेष्यपि च संसृतेरसुभृता वधं द्वेक्ष्यपि ।
कदाचिददयोदयो विगतचित्तकोऽप्यञ्जसा
तथाऽपि गुरुरिष्यसे त्रिभुवनैकबन्धुर्जिनः ॥३॥
तपः परमुपश्रितस्य भवतोऽभवत्केवलं
समस्तविषयं निरक्षमपुनश्च्युति स्वात्मजम् ।
निरावरणमक्रमं व्यतिकरादपेतात्मकं
तदेव पुरुषार्थसारमभिसम्मतं योगिनाम् ॥४॥
परस्परविरोधवद्विविधभङ्गशाखाकुलं
पृथग्जनसुदुर्गमं तव निरर्थकं शासनम् ।
तथापि जिन ! सम्मतं सुविदुषां न चात्यद्भुतं
'भवन्ति हि महात्मनां दुरुदितान्यपि ख्यातये' ॥५॥
सुरेन्द्रपरिकल्पितं बृहदनर्घ्यसिंहासनं
तथाऽऽतपनिवारणत्रयमथोल्लसच्चामरम् ।

वशं च भुवनत्रयं निरुपमा च निःसंगता
न संगतमिदं द्वयं त्वयि तथाऽपि संगच्छते ।।६।।
त्वमिन्द्रियविनिग्रहप्रवणनिष्ठुरं भाषसे
तपस्यपि यातयस्यनघदुष्करे संश्रितान् ।
अनन्यपरिदृष्टया षडसुकायसंरक्षया
स्वनुग्रहपरोऽप्यहो ! त्रिभुवनात्मना नापरः ।।७।।
ददास्यनुपमं सुखं स्तुतिपरेष्वतुष्यन्नपि
क्षिपस्यकुपितोऽपि च ध्रुवमसूयकान्दुर्गतौ ।
न चेश ! परमेष्ठिता तव विरुद्ध्यते यद्भवान्
न कुप्यति न तुष्यति प्रकृतिमाश्रितो मध्यमाम् ।।८।।
परिक्षपितकर्मणस्तव न जातु रागादयो
न चेन्द्रियविवृत्तयो न च मनस्कृता व्यावृतिः ।
तथाऽपि सकलं जगद्युगपदंजसा वेत्सि च
प्रपश्यसि च केवलाभ्युदितदिव्यसच्चक्षुषा ।।९।।
क्षयाच्च रतिरागमोहभयकारिणां कर्मणां
कषायरिपुनिर्जयः सकलतत्त्वविद्योदयः ।
अनन्यसदृशं सुखं त्रिभुवनाधिपत्यं च ते
सुनिश्चितमिदं विभो ! सुमुनिसम्प्रदायादिभिः ।।१०।।
न हीन्द्रियधिया विरोधि न च लिंगबुद्ध्या वचो
न चाप्यनुमतेन ते सुनयसप्तधा योजितम् ।
व्यपेतपरिशङ्कनं वितथकारणादर्शना—
दतोऽपि भगवंस्त्वमेव परमेष्ठितायाः पदम् ।।११।।
न लुब्ध इति गम्यसे सकलसङ्गसंन्यासतो
न चाऽपि तव मूढता विगतदोषवाग्यद्भवान् ।
अनेकविधरक्षणादसुमृतां न च द्वेषिता
निरायुधतयाऽपि च व्यपगतं तथा ते भयम् ।।१२।।

यदि त्वमपि भाषसे वितथमेवमाप्तोऽपि सन्
परेषु जिन का कथा प्रकृतिलुब्धमुग्धादिषु ।
न चाऽप्यकृतकात्मिका वचनसंहृतिर्दृश्यते
पुनर्जननमप्यहो ! न हि विरुध्यते युक्तिभिः ।।१३।।
सजन्ममरणर्षिगोत्रचरणादिनामश्रुते-
रनेकपदसंहतिप्रतिनियामसन्दर्शनात् ।
फलार्थिपुरुषप्रवृत्तिविनिवृत्तिहेत्वात्मनां
श्रुतेश्च मनुसूत्रवत्पुरुषकर्तृकैव श्रुतिः ।।१४।।
स्मृतिश्च परजन्मनः स्फुटमिहेक्ष्यते कस्यचित्
तथाप्तवचनान्तरात्प्रसृतलोकवादादपि ।
न चाऽप्यसत उद्भवो न च सतो निमूलात्क्षयः
कथं हि परलोकिनामसुभृतामसत्त्वोह्यते ।।१५।।
न चाऽप्यसदुदीयते न च सदेव वा व्यज्यते
सुराङ्गमदवत्तथा शिखिकलापवैचित्र्यवत् ।
क्वचिन्मृतकरन्धनार्थपिठरादिके नेक्ष्यते
कथं क्षितिजलादिसङ्गगुण इष्यते चेतना ।।१६।।
प्रशान्तकरणं वपुर्विगतभूषणं चाऽपि ते
समस्तजनचित्तनेत्रपरमोत्सवत्वं गतम् ।
बिनाऽऽयुधपरिग्रहाज्जिन ! जितास्त्वा दुर्जयाः
कषायरिपवो परैर्न तु गृहीतशस्त्रैरपि ।।१७।।
धियान्तरतमार्थवद्गतिसमन्वयान्वीक्षणात
भवेत्खपरिमाणवत्क्वचिदिह प्रतिष्ठा परा ।
प्रहाणमपि दृश्यते क्षयवतो निमूलात्क्वचित्
तथाऽयमपि युज्यते ज्वलनवत्कषायक्षयः ।।१८।।
अशेषविदिहेक्ष्यते सदसदात्मसामान्यवित्
जिन ! प्रकृतिमानुषोऽपि किमुताखिलज्ञानवान् ।

कदाचिदिह कस्यचित्क्वचिदपेतरागादिता
स्फुटं समुपलभ्यते किमुत ते व्यपेतैनसः ।।१९।।

अशेषपुरुषादितत्त्वगतदेशनाकौशलं
त्वदन्यपुरुषान्तरानुचितमाप्ततालाञ्छनम् ।
कणादकपिलाक्षपादमुनिशाक्यपुत्रोक्तयः
स्खलन्ति हि सुचक्षुरादिपरिनिश्चितार्थेष्वपि ।।२०।।

परैरपरिणामकः पुरुष इष्यते सर्वथा
प्रमाणविषयादितत्त्वपरिलोपनं स्यात्ततः
कषायविरहान्न चाऽस्य विनिबन्धनं कर्मभिः
कुतश्च परिनिर्वृतिः क्षणिकरूपतायां तथा ।।२१।।

मनो विपरिणामकं यदीह संसृतिं चाश्नुते
तदेव च विमुच्यते पुरुषकल्पना स्याद् वृथा ।
न चाऽस्य मनसो विकार उपपद्यते सर्वथा
ध्रुवं तदिति हीष्यते द्वितयवादिता कोपिनि ।।२२।।

पृथग्जनमनोनुकूलमपरैः कृतं शासनं
सुखेन सुखमाप्यते न तपसेत्यवश्येन्द्रियैः ।
प्रतिक्षणविभंगुरं सकलसंस्कृतं चेष्यते
ननु स्वमतलोकलिंगपरिनिश्चियैर्व्याहितम् ।।२३।।

न सन्ततिरनश्वरी न हि च नश्वरी नो द्विधा
वना[illegible] भाव एव यत इष्यते तत्त्वतः ।
वृथैव कृषिदानशीलमुनिवन्दनादि[illegible]ाः
कथञ्चिदविनश्वरी यदि भवेत्प्रतिज्ञाक्षतिः ।।२४।।

अनन्यपुरुषोत्तमो मनुजतामतीतोऽपि स-
मनुष्य इति शस्यसे त्वमधुना नरैर्बालिशैः ।
क्व ते मनुजगर्भिता क्व च विरागसर्वज्ञता
न जन्ममरणात्मता हि तव विद्यते तत्त्वतः ।।२५।।

स्वामातुरिह यद्यपि प्रभव इष्यते गर्भतो
मलैरनुपसंप्लुतो वरसरोजपत्राऽम्बुवत् ।
हिताहितविवेकशून्यहृदयो न गर्भेऽप्यभूः
कथं तव मनुष्यमात्रसदृशत्वमाशङ्क्यते ॥२६॥

न मृत्युरपि विद्यते प्रकृतिमानुषस्येव ते
मृतस्य परिनिर्वृतिर्न मरणं पुनर्जन्मवत् ।
जरा च न हि यद्वपुर्विमलकेवलोत्पत्तितः
प्रभृत्यरुजमेकरूपमवतिष्ठते प्राङ् मृतेः ॥२७॥

परः कृपणदेवकैः स्वयमसत्सुखैः प्रार्थ्यते
सुखं युवतिसेवनादिपरसन्निधिप्रत्ययम् ।
त्वया तु परमात्मना न परतो यतस्ते सुखं
व्यपेतपरिणामकं निरुपम ध्रुवं स्वात्मजम् ॥२८॥

पिशाचपरिवारितः पितृवने नरीनृत्यते
क्षरद्रुधिरभीषणद्विरदकृत्तिहेलापटः ।
हरो हसति चायत कहकहाट्टहासोल्बणं
कथं परमदेवतेति परिपूज्यते पण्डितैः ॥२९॥

मुखेन किल दक्षिणेन पृथुनाऽखिलप्राणिनां
समत्ति शवपूतिमज्जरुधिरात्रमांसानि च ।
गणैः स्वसदृशैर्भृशं रतिमुपैति रात्रिंदिवं
पिबत्यपि च यः सुरां स कथमाप्तताभाजनम् ॥३०॥

अनादिनिधनात्मकं सकलतत्त्वसंबोधनं
समस्तजगदाधिपत्यमथ तस्य संतृप्तता ।
तथा विगतदोषता च किल विद्यते यन्मृषा
सुयुक्तिविरहान्न चाऽस्ति परिशुद्धतत्त्वागमः ॥३१॥

कमण्डलुमृगाजिनाक्षवलयादिभिर्ब्रह्मणः
शुचित्वविरहादिदोषकलुषत्वमभ्यूह्यते ।

भयं विघृणता च विष्णु हरयोः सशस्त्रत्वतः
स्वतो न रमणीयता च परिमूढता भूषणात् ॥३२॥

स्वयं सृजति चेत्प्रजाः किमिति दैत्यविध्वंसनं
सुदुष्टजननिग्रहार्थमिति चेदसृष्टिर्वरम् ।
कृतात्मकरणीयकस्य जगता कृतिर्निष्फला
स्वभाव इति चेन्मृषा स हि सुदुष्ट एवाऽऽप्यते ॥३३॥

प्रसन्नकुपितात्मनां नियमतो भवेद्दुःखिता
तथैव परिमोहिता भयमुपद्रुतिश्चामयैः ।
तृषाऽपि च बुभुक्षया च न च संसृतिश्छिद्यते
जिनेन्द्र ! भवतोऽपरेषु कथमाप्तता युज्जते ॥३४॥

कथं स्वयमुपद्रुताः परसुखोदये कारणं
स्वयं रिपुभयार्दिताश्च शरणं कथं बिभ्यताम् ।
गतानुगतिकैरहो त्वदपरत्र भक्तैर्जनैः
अनायतनसेवनं निरयहेतुरंगीकृतम् ॥३५॥

सदा हननघातनाद्यनुमतिप्रवृत्तात्मनां
प्रदुष्टचरितोदितेषु परिहृष्यतां देहिनाम् ।
अवश्यमनुषज्यते दुरितबन्धनं तत्त्वतः
शुभेऽपि परिनिश्चितस्त्रिविधबंधहेतुर्भवेत् ॥३६॥

विमोक्षसुखचैत्यदानपरिपूजनाद्यात्मिका
क्रिया बहुविधासुभृन्मरणपीडना हेतवः ।
त्वया ज्वलितकेवलेन न हि देशिताः किं नु ताः
त्वयि प्रसृतभक्तिभिः स्वयमनुष्ठिताः श्रावकैः ॥३७॥

त्वया त्वदुपदेशकारिपुरुषेण वा केनचित्
कथंचिदुपदिश्यते स्म जिन ! चैत्यदानक्रिया ।

अनाम्रकविधिश्च केशपरिलुचनं चाऽथका [illegible] भवन

श्रुतादनिधनात्मकादधिगतं प्रमाणान्तरात् ॥३८॥

न चासुपरिपीडिनं नियमतोऽशुभायेष्यते

त्वया न च शुभाय वा न हि च सर्वथा सत्यवाक् ।

न चाऽपि दमदानयोः कुशलहेतुतैकान्ततो

विचित्रनयभंगजालगहनं त्वदीयं मतम् ॥३९॥

त्वयाऽपि सुखजीवनार्थमिह शासन चेत्कृतं

कथं सकलसंग्रहत्यजनशासिता युज्यते ।

तथा निरशनार्द्धभुक्तिरसवर्जनाद्युक्तिभि-

र्जितेन्द्रियतया त्वमेव जिन ! इत्यभिख्या गतः ॥४०॥

जिनेश्वर ! न ते मतं पटकवस्त्रपात्रग्रहो

विमृश्य सुखकारण स्वयमशक्तकैः कल्पितः ।

अथायमपि सत्पथस्तव भवेद्यथा नग्नता

न हस्तसुलभे फले सति तरुः समारुह्यते ॥४१॥

परिग्रहवतां सता भयमवश्यमापद्यते

प्रकोपपरिहिंसने च परुषानृतव्याहृती ।

ममत्वमथ चोरतो स्वमनसश्च विभ्रान्तता

कुतो हि कलुषात्मनां परमशुक्लसद्ध्यानता ॥४२॥

स्वभाजनगतेषु पेयपरिभोज्यवस्तुष्वमी

यदा प्रतिनिरीक्षतास्तनुभृतः सुसूक्ष्मात्मिकाः ।

तदा क्वचिदपोज्झने मरणमेव तेषा भवे-

दथाऽप्यभिनिरोधनं बहुतरात्मसंमूर्च्छनम् ॥४३॥

दिगम्बरतया स्थिता. स्वभुजभोजिनो ये सदा

प्रमादरहिताशयाः प्रचुरजीवहत्यामपि ।

न बन्धफलभागिनस्त इति गम्यते येन ते

प्रवृत्तमनुबिभ्रति स्वबलयोग्यमद्याप्यमी ॥४४॥

यथागमविहारिणामशनपानभक्ष्यादिषु
प्रयत्नपरचेतसामविकलेन्द्रियालोकिनाम् ।
कथंचिदसुपीडनाद्यदि भवेदपुण्योदय-
स्तपोऽपि वध एव ते स्वपरजीवसंतापनात् ॥४५॥

मरुज्ज्वलनभूपयःसु नियमात्क्वचिद्युज्यते
परस्परविरोधितेषु विगतासुता सर्वदा ।
प्रमादजनितागसां क्वचिदपोहनं स्वागमात्
कथं स्थितिभुजां सतां गगनवाससा दोषिता ॥४६॥

परैरनघ निर्वृतिः स्वगुणतत्त्वविध्वंसन
व्यघोषि कपिलादिभिश्च पुरुषार्थविभ्रंशनम् ।
त्वया सुमृदितैनसा ज्वलितकेवलौघश्रिया
ध्रुवं निरुपमात्मकं सुखमनन्तमव्याहतम् ॥४७॥

निरन्वयविनश्वरी जगति मुक्तिरिष्टा परैः
न कश्चिदिह चेष्टते स्वव्यसनाय मूढेतरः ।
त्वयाऽनु गुणसंहतेरतिशयोपलब्ध्यात्मिका
स्थितिः शिवमयी प्रवचने तव ख्यापिता ॥४८॥

इत्यपि गुणस्तुतिः परमनिर्वृतेः साधनी
भवत्यलमतो जनो व्यवसितश्च तत्काङ्क्षया ।
विरंस्यति च साधुना रुचिरलोभलाभे सतां
मनोऽभिलषिताप्तिरेव ननु च प्रयासावधिः ॥४९॥

इति मम मतिवृत्त्या संहृतिं त्वद्गुणाना-
मनिशममितशक्ति संस्तुवानस्य भक्त्या ।
सुखमनघमनंतं स्वात्मसंस्थं महात्मन् ।
जिन ! भवतु महत्या केवलं श्रीविभूत्या ॥५०॥

इति श्रीनिखिलतार्किकचूडामणि विद्यानंदिस्वामिप्रणीत
वृहत्पचनमस्कारस्तोत्रापरनामधेय पात्रकेसरिस्तोत्रं
समाप्तम् ।

ऋषि ं ल-स्तोत्र

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यस्थितम्
अग्निज्वालासमं नादं विन्दुरेखा समन्वितं ॥१॥
अग्निज्वालासमाक्रान्तं मनोमलविशोधनम् ।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥युग्मम्॥२॥
ॐ नमोऽर्हद्भ्यः ईशेभ्यः ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥३॥
ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः तत्वदृष्टिभ्यः ॐ नमः ।
ॐ नमः शुद्धबोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः ॥४॥
श्रेयसेस्तु श्रीयेस्त्वेनदर्हदाद्यष्टकं शुभं ।
स्थानेष्वष्टसु संन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितम् ॥५॥
आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥६॥
पञ्चमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षतु घंटिकाम् ।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादांतं चाष्टमं पुनः ॥७॥युग्मम्
पूर्वं प्रणवतः सांतः सरेफो द्वित्रिपञ्चषान् ।
सप्ताष्टदशसूर्यांकान् श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ॥८॥
पूज्यनामाक्षराद्यस्तु पञ्चदर्शनबोधकम् ।
चरित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांतसमलंकृतम् ॥९॥
जबूवृक्षधरो द्वीपः क्षीरोदधि-समावृतः ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥१०॥
तन्मध्ये संगतो मेरुः कूटलक्षेरलंकृतः ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार-तारामंडल-मंडितः ॥११॥
तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं ।
नमामि बिम्बमार्हत्य ललाटस्थं निरञ्जनं ॥१२॥ विशेषकं

अक्षयं निर्मलं शात बहुलं जाड्यतोज्झितम् ।
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरं घनम् ॥१३॥
अनुद्धभूतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतम् ।
तामसं विरसं बुद्धं तैजस शर्वरीसमम् ॥१४॥
साकारं च निराकारं सरसं विरसं परम् ।
परापरं परातीतं परं परमपरापरम् ॥१५॥
सकलं निष्कलं तुष्टं निभृतं भ्रांतिवर्जितम् ।
निरञ्जनं निराकाक्षं निर्लेपं वीतसंशयम् ॥१६॥
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरम् ।
ज्योतिरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकं ॥१७॥ कुलकं ॥
अर्हदाख्यः सवर्णान्तः सरेफो बिंदुमंडितः ।
तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः ॥१८॥
एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् ।
पञ्चवर्णं महावर्णं सपरं च परापरं ॥१९॥ युग्मं ॥
अस्मिन् बीजे स्थिताः ऋषभाद्या जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२०॥
नादश्चंद्रसमाकारो बिंदुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमा सांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२१॥
शिरःसंलीन ईकारो विलीनो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुशारिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः ॥२२॥
चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२३॥
पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ ।
शिर स्थिति ीनौ सुपार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ ॥२४॥
शेषास्तीर्थङ्कराः सर्वे रहःस्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्तश्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥२५॥

गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवन्तु जिनोत्तमा ॥२६॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मा हिंसतु पन्नगाः ॥२७॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसतु नागनी ॥२८॥
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वाङ्गं मां मा हिंसतु गोनसाः ॥२९॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु वृश्चिकाः ॥३०॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु काकिनी ॥३१॥
देवदेवस्य..... मा हिंसतु डाकिनी ॥३२॥
देवदेवस्य.. ...मा हिंसतु साकिनी ॥३३॥
देवदेलस्य......मा हिंसतु राकिनी ॥३४॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु लाकिनी ॥३५॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु शाकिनी ॥३६॥
देलदेवस्य... ..मा हिंसतु हाकिनी ॥३७॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु राक्षसाः ॥३८॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु व्यंतराः ॥३९॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु भेकसाः ॥४०॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु ते ग्रहाः ॥४१॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु तस्कराः ॥४२॥
देवदेवस्य . ..मा हिंसतु वह्नयः ॥४३॥
देवदेवस्य .. ..मा हिंसतु शृंगिणः ॥४४॥

---

* नोट—२९वें श्लोक के वाद ३०वें मे भी २९वें श्लोक की भाति पाठ पढते हुए अन्त मे 'गोनसा ' के स्थान पर वृश्चिका तथा ३१ व ३२, ३३ आदि में क्रमश काकिनी, डाकिनी, साकिनी आदि वोलना चाहिए ।

देवदेवस्य......मा हिंसतु दंष्ट्रिण: ॥४५॥
देवदेवस्य . ...मा हिंसतु रेलपाः ॥४६॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु पक्षिणः ॥४७॥
देवदेवस्य.. ..मा हिंसतु मुद्गलाः ॥४८॥
देवदेवस्य .....मा हिंसतु जृंभकाः ॥४९॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु तोयदाः ॥५०॥
देवदेवस्य......मा हिंसतु सिंहकाः ॥५१॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु शूकराः ॥५२॥
देवदेवस्य... .मा हिंसतु चित्रकाः ॥५३॥
देवदेवस्य.. ...मा हिंसतु हस्तिनः ॥५४॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु भूमिपाः ॥५५॥
देवदेवस्य.. ...मा हिंसतु शत्रवः ॥५६॥
देवदेवस्य... ..मा हिंसतु ग्रामीणः ॥५७॥
देवदेवस्य......मा हिंसतु दुर्जनाः ॥५८॥
देवदेवस्य......मा हिंसतु व्याधयः ॥५९॥

श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः सर्वनिधीश्वरः ॥६०॥

पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः ।
स्वःस्वर्गवासिनो देवाः सर्वे रक्षंतु मामितः ॥६१॥

येऽवधिलब्धयः ये तु परमावधिलब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षन्तु सर्वतः ॥६२॥

ॐ श्री ह्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चंडी सरस्वती ।
जया व विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा ॥६३॥

कामांगा कामबाणा च सानंदा नंदमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया ॥६४॥

एताः सर्वा महादेव्यो वर्तंते या जगत्त्रये ।
मम सर्वाः प्रयच्छंतु कान्ति लक्ष्मी धृति मति ।।६५।।
दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वे उपशाम्यतु देवदेवप्रभावतः ।।६६।।
दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः श्री ऋषिमंडलस्तवः ।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोऽनघः ।।६७।।
रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजेहरौ ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानव ।।६८।।
राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदं ।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजं लक्ष्मी प्राप्नुवति न संशयः ।।६९।।
भार्यार्थी लभते भार्या पुत्रार्थी लभते सुतं ।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः ।।७०।।
स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वति ।।७१।।
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितः सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशिनं ।।७२।।
भूतैः प्रेतग्र्हैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा ।
वातापित्तकफोद्रेको मुच्यते नात्र संशयः ।।७३।।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ।।७४।।
एतद्गोप्य महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिनो देये बालहत्या पदे पदे ।।७५।।
आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलिं ।
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ।।७६।।
शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवंति च सम्पदः ।।७७।।

अष्टमासावधि यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्बिंबं स पश्यति ।।७८।।
दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तमके ध्रुवं ।
पदं प्राप्नोति विश्वस्तं परमानन्दसम्पदा ।।७९।।युग्म।।
इदं स्तोत्रं महास्तोत्र स्तुतीनाममुत्तम परं ।
पठनात्स्मरणाज्जाप्यात् सर्वदोषैर्विमुच्यते ।।८०।।

—०—

श्री जिनसेनाचार्यकृतं

श्री जिनसहस्रनामस्तोत्र

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ।।१।।
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते ।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ।।२।।
कर्मशत्रुहणं देवमामनन्ति मनीषिणः ।
त्वामानमत्सुरेण्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमम् ।।३।।
ध्यानदुर्घणनिर्भिन्नघनघातिमहातरुः ।
अनन्तभवसन्तानजयादासीरनन्तजित् ।।४।।
त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयम् ।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन मृत्युंजयो भवान् ।।५।।
विधूताशेष–संसार–बन्धनो भव्यबाधवः ।
त्रिपुरारिस्त्वमीशोऽसि जन्ममृत्युजरान्तकृत् ।।६।।
त्रिकालविजयाशेषतत्त्वभेदात् त्रिधोत्थितम् ।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशिता ।।७।।
त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धासुरमर्दनात् ।
अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्द्धनारीश्वरोऽस्यतः ।।८।।

शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हरः ।
शंकरः कृतशं लोके शंभवस्त्वं भवन्सुखे ॥९॥
वृषभोऽसि जगज्जेष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः ।
नाभेयो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१०॥
त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने ।
त्वं त्रिधा बुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥
चतुश्शरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरस्रधीः ।
पञ्चब्रह्ममयो देव पावनस्त्व पुनीहि माम् ॥१२॥
स्वर्गावतरिणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः ।
जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोऽस्तु ते ॥१३॥
संनिष्क्रान्तावघोराय परं प्रशममीयुषे ।
केवलज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोऽस्तु ते ॥१४॥
पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तपदभाजिने ।
नमस्तत्पुरुषावस्थां भाविनी तेऽद्य बिभ्रते ॥१५॥
ज्ञानावरणनिर्ह्रासात् नमस्तेऽनन्तचक्षुषे ।
दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदृश्वने ॥१६॥
नमो दर्शनमोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये ।
नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥
नमस्तेऽनन्तवीर्याय नमोऽनन्तसुखात्मने ।
नमस्तेऽनन्तलोकाय लोकालोकावलोकिने ॥१८॥
नमस्तेऽनन्तदानाय नमस्तेऽनन्तलब्धये ।
नमस्तेऽनन्तभोगाय नमोऽनन्तोपभोगिने ॥१९॥
नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये ।
नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥
नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे ।
नमः परमतत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥

नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे ।
नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२२॥
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः ।
नमः पारेतमःप्राप्तधाम्ने परतरात्मने ॥२३॥
नमः क्षीणकलंकाय क्षीणबंध नमोऽस्तु ते ।
नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥
नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे ।
नमस्तेऽतीन्द्रियज्ञानसुखायाऽनिन्द्रयात्मने ॥२५॥
कायबन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोऽस्तु ते ।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥२६॥
अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः ।
नमः परमयोगीन्द्रवन्दितांघ्रिद्वयाय ते ॥२७॥
नमः परमविज्ञान नमः परमसंयम ।
नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय तायिने ॥२८॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशकस्पृशे ।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षिणे ॥२९॥
संज्ञसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने ।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥३०॥
अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे ।
व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे ॥३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं नमस्ते स्तादजन्मिने ।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाऽक्षरात्मने ॥३२॥
मास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावका गुणाः ।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसि स्महे ॥३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः ।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशान्तये ॥३४॥

॥ इति पीठिका ॥

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरां पतिम् ।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ॥१॥

श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥२॥

विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः ।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः ॥३॥

विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥४॥

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः ।
विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥५॥

जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः ।
अनन्तजिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥६॥

युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः ।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥७॥

स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः ।
मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥८॥

प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः ।
ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥९॥

शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः ।
सिद्धः सिद्धान्तविद्ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥१०॥

सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः ।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥११॥

विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः ।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥१२॥

॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥१॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः ।
पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥१॥
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः ।
तीर्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥२॥
अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः ।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥
निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिरनामयः ।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥४॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः ।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥६॥
हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः ।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः ॥७॥
हिरन्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोऽभवः ।
स्वयंप्रभः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्पतिः ॥८॥
सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ।
त्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः ।
विश्रुतो विश्वतःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः ॥१०॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥११॥

॥ इति दिव्यादिशतम् ॥२॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः ।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगीः ॥१॥

विश्वभृद् विश्वसृड् विश्वेड् विश्वभुग्विश्वनायकः ।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥२॥
विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् ।
विरागो विरतोऽसङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः ॥३॥
विनेयजनताबन्धुः विलीनाशेषकल्मषः ।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥४॥
क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सूत्रामपूजितः ।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥६॥
व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥७॥
मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तग. ।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत् ॥८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्य· कृतक्रतुः ।
नित्यो मृत्युंजयोऽमृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भवः ॥९॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः ।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१०॥
सुप्रसन्न प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभु. ।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥

॥ इति स्थविष्ठादिशतम् ॥३॥

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः ।
पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्य· स्तुतीश्वरः ।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥२॥

गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः ।
गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः ।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥३॥
अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः ।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपात्मा वीतकल्मषः ।
निर्द्वंद्वो निर्मदः शातो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥
निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः ।
निष्कलंको निरस्तैना निर्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥
विशालो विपुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः ।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्सुनयतत्त्ववित् ॥८॥
एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः ।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतातकः ॥९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥
कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः ।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

॥ इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥४॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः ।
निरक्षः पुंडरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥१॥
सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः ।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥
वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः ।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥

अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः ।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् ।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्राच्र्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥५॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः ।
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश्वरः ॥६॥
अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः ।
प्राग्र्य प्राग्रयहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ॥७॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः ।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः ।
महाशक्ति र्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥९॥
महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महादयः ।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः ॥१०॥
महामहा महाकीर्तिर्महाकातिर्महावपुः ।
महादानो महाज्ञानो महारोगो महागुणः ॥११॥
महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः ।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१२॥

॥ इति श्री वृक्षादिशतम् ॥५॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादम. ।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१॥
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः ।
महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः ॥२॥
महाकारुणिको मंता महामंत्रो महायतिः ।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसां पतिः ॥३॥

गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः ।
गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥
गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः ।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥३॥
अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः ।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपात्मा वीतकल्मषः ।
निर्द्वंद्वो निर्मदः शांतो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥
निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः ।
निष्कलंको निरस्तैना निर्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥
विशालो विपुलज्योतिरतुलोऽचिन्त्यवैभवः ।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्सुनयतत्त्ववित् ॥८॥
एक[illegible]ो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः ।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥९॥
पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥
कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः ।
प्र[illegible]ो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

॥ इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥४॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः ।
निरक्षः पुंडरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥१॥
सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः ।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥
वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः ।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥

अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः ।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥
अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् ।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्रार्च्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥५॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः ।
अगाह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश्वरः ॥६॥
अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः ।
प्राग्र्यः प्राग्रयहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ॥७॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः ।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः ।
महाशक्ति र्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥९॥
महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महादयः ।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः ॥१०॥
महामहा महाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः ।
महादानो महाज्ञानो महारोगो महागुणः ॥११॥
महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः ।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१२॥

॥ इति श्री वृक्षादिशतम् ॥५॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः ।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१॥
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः ।
महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः ॥२॥
महाकारुण्यको मंता महामंत्रो महायतिः ।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसां पतिः ॥३॥

महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक् ।
महात्मा महसा धाम महर्षिर्महितोदयः ॥४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः ।
महापराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥५॥
महाभवाब्धिसंतारी महामोहाद्रिसूदनः ।
महागुणाकरः क्षांतो महायोगीवरः शमी ॥६॥
महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मो महाव्रतः ।
महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥७॥
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः ।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥८॥
सर्वयोगीश्वरोऽचिंत्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः ।
दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥९॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ।
प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः ।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ॥११॥
आनन्दो नन्दनो नंदो वंद्योऽनिन्द्योऽभिनंदनः ।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिन्जयः ॥१२॥

॥ इति महामुन्यादिशतम् ॥६॥

असंस्कृतसुसंस्कार: प्राकृतो वै कृतांतकृत् ।
अंतकृत् कांतिगुः कांतश्चितामणिरभीष्टदः ॥१॥
अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः ।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः ॥२॥
जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः ।
महेन्द्रवंद्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ॥३॥

नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः ।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधगुरुः सुधीः ॥४॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः ।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥५॥
क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी ।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥६॥
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः ।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।
सत्याशीः सत्यसंधानः सत्यः सत्यपरायणः ॥८॥
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः ।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम् ॥९॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः ।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥१०॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् ।
सुगुप्तो गुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥११॥

॥ इति असस्कृतादिशतम् ॥७॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुषीशो गिरांपतिः ॥१॥
नैकरूपो नयोत्तुङ्गो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयोऽतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥२॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥३॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाऽध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता ।
मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो गंभीरशासनः ॥४॥

धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः ।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ।।५।।
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः ।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ।।६।।
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः ।
अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गतस्पृहः ।।७।।
वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।
प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्मङ्गल मलहाऽनघः ।।८।।
अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः ।
अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ।।९।।
अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः ।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ।।१०।।
शंकरः शवदो दान्तो दमी क्षांतिपरायणः ।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ।।११।।
त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः ।
त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ।।१२।।

।। इति वृहदादिशतम् ।।८।।

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढ :।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ।।१।।
पुराण पुरुषः पूर्व कृतपूर्वाङ्गविस्तरः ।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ।।२।।
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः ।
कल्याणवर्ण. कल्याण कल्पः कल्याणलक्षणः ।।३।।
कल्याणप्रकृतिर्दीप्तकल्याणात्मा विकल्मषः ।
विकलंकः कलातीत. कलिलघ्नः कलाधरः ।।४।।

देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः ।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥५॥
चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः ।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥६॥
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः ।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्य कोटिसमप्रभः ॥७॥
तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः ।
संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ॥८॥
निष्टप्तकनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः ।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भनिभप्रभः ॥९॥
द्युम्नाभो जातरूपाभः तप्तजाम्बूनदद्युतिः ।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥१०॥
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरःक्षमः ।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ॥११॥
शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः ।
शान्तिदा शान्तिकृच्छान्तिः कांतिमान्कामितप्रदः ॥१
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ॥१३

॥ इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥ ९ ॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः ।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥१॥
तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः ।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोऽपहः ॥२॥
जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्वान्विघ्नविनायकः ।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥

अनिन्द्रालुरतंद्रालुर्जागरूकः प्रभामयः ।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥४॥

मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः ।
प्रशांतरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ॥५॥

मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः ।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥६॥

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् ।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥७॥

श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥८॥

लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥९॥

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेंद्रियः ।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥१०॥

समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः ।
कर्मण्य कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥११॥

अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः ।
त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥१२॥

समंतभद्रः शांतारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः ।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥१३॥

शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः ।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥१४॥

॥ इति दिग्वासादिशतम् ॥ १० ॥

॥ इत्यष्टाधिकसहस्रनामावली समाप्ता ॥

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः ।
समुच्चिन्वन्ननुध्यायन्पुमान्पूतकृतिर्भवेत् ॥१॥

गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः ।
स्तोता तथाप्य संदिग्धं त्वत्तोभीष्टफलं लभेत् ॥२॥

त्वमतोऽसि जगद्वन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् ।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥३॥

त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् ।
त्वं त्रिरूपैकमुक्तङ्गं सोत्थानंत चतुष्टयः ॥४॥

त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः ।
षड्भेद भावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥

दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवलमब्धिकः ।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वरः ॥६॥

युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ।
भवंतं वरिवस्यामः प्रसीदानुगृहाणनः ॥७॥

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः ।
यः स पाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनम् ॥८॥

ततः सदेदं पुण्यार्थि पुमान्पठति पुण्यधीः ।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥९॥

स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरु ।
ततस्तीर्थविहारस्य व्याधात्प्रस्तावनामिमां ॥१०॥

स्तुतिपुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः ।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखम् ॥११॥

यः स्तुत्योजगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित् ।
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित्॥१२॥

यो नेतृन् नयते नमस्कृतिमलं नंतव्यपक्षेक्षणः ।
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुःपावनः ॥१३॥

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरम् ।
प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जिनीनामिनम् ॥१४॥

मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिम् ।
प्राप्तार्चित्य बर्हिविभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे ॥१५॥

॥ इति धाम्नापत्यादिशतम् ॥११॥

॥ इति श्री भगवज्जिनसेनाचार्यं विरचित जिनसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ॥



श्रीस्वामिसमन्तभद्राचार्यविरचितम्

बृहत्स्वयम्भूस्तोत्रम्

स्वयम्भुवा भूतहितेन भूतले समञ्जसज्ञानविभूतिचक्षुषा ।
विराजितं येन विधुन्वता तमः क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः ॥१॥
प्रजापतिर्यः प्रथमं जिजीविषुः शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः ।
प्रबुद्धतत्त्वः पुनरद्भुतोदयो ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः ॥२॥
विहाय यः सागरवारिवाससं
वधूमिवेमां वसुधावधूं सतीम् ।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकुकुलादिरात्मवान्
प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः ॥३॥
स्वदोषमूलं स्वसमाधितेजसा निनाय यो निर्दयभस्मसात्क्रियाम् ।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः ॥४॥
स विश्वचक्षुर्वृषभोऽर्चितः सतां
समग्रविद्यात्मवपुर्निरञ्जनः ।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो
जिनो जितक्षुल्लकवादिशासनः ॥५॥

॥ इत्यादिजिनस्तोत्रम् ॥

यस्य प्रभावात्त्रिदिवच्युतस्य क्रीडास्वपि क्षीबमुखारविन्दः ।
अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश्चकार नामाजित इत्यवन्ध्यम् ॥६॥
अद्यापि यस्याजितशासनस्य सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम् ।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके ॥७॥
यः प्रादुरासीत्प्रभुशक्तिभूम्ना भव्याशयालीनकलङ्कशान्त्यै ।
महामुनिर्मुक्तघनोपदेहो यथारविन्दाभ्युदयाय भास्वान् ॥८॥
येन प्रणीतं पृथुधर्मतीर्थं ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम् ।
गाङ्गं ह्रदं चन्दनपङ्कशीतं गजप्रवेका इव धर्मतप्ताः ॥९॥

स ब्रह्मनिष्ठः सममित्रशत्रु·
विद्याविनिर्वान्तिकषायदोषः ।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा
जिनःश्रियं मे भगवान् विधत्ताम् ॥१०॥

॥ इत्यजितजिनस्तोत्रम् ॥

त्वं शम्भवः संभवतर्षरोगैः संतप्यमानस्य जनस्य लोके ।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथा नाथ रुजां प्रशांत्यै ॥११॥
अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम् ।
इदं जगज्जन्मजरान्तकार्तं निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम् ॥१२॥
शतह्रदोन्मेषचलं हि सौख्यं तृष्णामयाप्यायनमात्रहेतुः ।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं तापस्तदायासयतीत्यवादीः ॥१३॥
बंधश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतुः
बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः ।
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं
नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता ॥१४॥
शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः ।
तथापि भक्त्या स्तुतपादपद्मो ममार्य देयाः शिवतातिमुच्चैः ॥१५॥

॥ इति शंभवजिनस्तोत्रम् ॥

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान् दयावधूं क्षान्तिसखीमशिश्रयत् ।
समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चायुजत् ॥१६॥
अचेतने तत्कृतबन्धजेऽपि ममेदमित्याभिनिवेशकग्रहात् ।
प्रभङ्गुरे स्थावरनिश्चयेन च क्षतं जगत्तत्त्वमजिग्रहद्भवान् ॥१७॥
क्षुधादिदुःखप्रतिकारतः स्थितिः
न चेन्द्रियार्थप्रभवाल्पसौख्यतः ।
ततो गुणो नास्ति च देहदेहिनो-
रितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् ॥१८॥
जनोऽतिलोलोऽप्यनुबंधदोषतो भयादकार्येष्विह न प्रवर्त्तते ।
इहाप्यमुत्राप्यनुबंधदोषवित्कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् ॥१९॥

स ब्रह्मनिष्ठः सममित्रशत्रु:
विद्याविनिर्वान्तकषायदोषः ।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा
जिनःश्रियं मे भगवान् विधत्ताम् ॥१०॥

॥ इत्यजितजिनस्तोत्रम् ॥

त्वं शम्भवः संभवतर्षरोगैः संतप्यमानस्य जनस्य लोके ।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथा नाथ रुजां प्रशांत्यै ॥११॥
अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम् ।
इदं जगज्जन्मजरान्तकार्तं निरञ्जनां शान्तिसजीगमस्त्वम् ॥१२॥
शतहृदोन्मेषचलं हि सौख्यं तृष्णामयाप्यायनमात्रहेतुः ।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं तापस्तदायायतीत्यवादीः ॥१३॥
बंधश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतुः
बद्धश्च भुक्तश्च फलं च मुक्तेः ।
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं
नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता ॥१४॥
शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः ।
तथापि भक्त्या स्तुतपादपद्मो ममार्य देयाः शिवतातिमुच्चैः ॥१५॥

॥ इति शंभवजिनस्तोत्रम् ॥

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान् दयावधूं क्षान्तिसखीमशिश्रयत् ।
समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चापुजत् ॥१६॥
अचेतने तत्कृतबन्धजेऽपि ममेदमित्याभिनिवेशकग्रहात् ।
प्रभङ्गुरे स्थावरनिश्चयेन च क्षतं जगत्तत्त्वमजिग्रहद्भवान् ॥१७॥
क्षुधादिदुःखप्रतिकारतः स्थितिः
न चेन्द्रियार्तप्रभवाल्पसौख्यतः ।
ततो गुणो नास्ति च देहदेहिनो-
रितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् ॥१८॥
जनोऽतिलोलोऽप्यनुबंधदोषतो भयादकार्येष्विह न प्रवर्त्तते ।
इहाप्यमुत्राप्यनुबंधदोषवित्कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् ॥१९॥

सचानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्
तृषोऽभिवृद्धिः सुखतो न च स्थितिः ।
इति प्रभो लोकहितं यतो मतं
ततो भवानेव गतिः सतां मतः ॥२०॥

॥ इत्यभिनन्दनजिनस्तोत्रम् ॥

अन्वर्थसंज्ञः सुमतिर्मुनिस्त्वं स्वयं मतं येन सुयुक्तिनीतम् ।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति सर्वक्रियाकारकतत्त्वसिद्धिः ॥२१॥
अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं भेदान्वयज्ञानमिदं हि सत्यम् ।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे तच्छेषलोपोऽपि ततोनुपाख्यम् ॥२२॥
सतः कथञ्चित्तदसत्त्वशक्तिः खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम् ।
सर्वस्वभावच्युतप्रमाणं स्ववाग्विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत् ॥२३॥
न सर्वथा नित्यमुदेत्यपैति न च क्रियाकारकमत्र युक्तम् ।
नैवासतो जन्म सतो न नाशो दीपस्तमःपुद्गलभावतोऽस्ति ॥२४॥
विधिर्निषेधश्च कथंचिदिष्टौ विवक्षया मुख्यगुणव्यवस्था ।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं मतिप्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ ॥२५॥

॥ इति सुमतिजिनस्तोत्रम् ॥

पद्मप्रभः पद्मपलाशलेश्यः पद्मालयालिङ्गितचारुमूर्तिः ।
बभौ भवान् भव्यपयोरुहाणां पद्माकराणामिव पद्मबन्धुः ॥२६॥
बभार पद्मां च सरस्वतीं च भवान्पुरस्तात्प्रतिमुक्तिलक्ष्म्याः ।
सरस्वतीमेव समग्रशोभां सर्वज्ञलक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः ॥२७॥
शरीररश्मिप्रसरः प्रभोस्ते बालार्करश्मिच्छविरालिलेप ।
नरामराकीर्णसभां प्रभावच्छैलस्य पद्माभमणेः स्वसानुम् ॥२८॥
नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं सहस्रपत्राम्बुजगर्भचारैः ।
पादाम्बुजैः पातितमोहदर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्ष भूत्यै ॥२९॥
गुणाम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं नाखण्डलः स्तोतुमलं तवर्षे ।
प्रागेव मादृक्किमुतातिभक्तिर्मां बालमालापयतीदमित्थम् ॥३०॥

॥ इति पद्मप्रभस्तोत्रम् ॥

स्वास्थ्य यदात्यन्तिकमेष पुंसा स्वार्थो न भोगः परिभङ्गुरात्मा ।
तृषोऽनुषङ्गान्न च तापशान्तिरितीदमाख्यद्भगवान्सुपार्श्वः ॥३१॥
अजङ्गमं जङ्गमनेययन्त्रं यथा तथा जीवधृतं शरीरम् ।
बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च स्नेहो वृथात्रेति हितं त्वमाख्यः ॥३२॥
उलंघ्यशक्तिर्भवितव्यतेयं हेतुद्वयाविष्कृतकार्यलिङ्गा ।
अनीश्वरो जन्तुरहंक्रियार्त्तः संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः ॥३३॥
विभेति मृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो
नित्यं शिवं वाञ्छति नास्य लाभः ।
तथापि बालो भयकामवश्यो
वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः ॥३४॥
सर्वस्य तत्त्वस्य भवान्प्रमाता मातेव बालस्य हितानुशास्ता ।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य ॥३५॥

॥ इति सुपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम् ।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥३६॥
यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेषभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम् ।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥३७॥
स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः ।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा गजा यथा केशरिणो निनादैः ॥३८॥
यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः ।
अनन्तधामाक्षरविश्वचक्षुः समन्तदुःखक्षयशासनश्च ॥३९॥
स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः ।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः पूयात्पवित्रो भगवान्मनो मे ॥४०॥

॥ इति चन्द्रप्रभजिनस्तोत्रम् ॥

एकान्तदृष्टिप्रतिषेधि तत्त्वं प्रमाणसिद्धं तदतत्स्वभावम् ।
त्वया प्रणीतं सुविधे स्वधाम्ना नैतत्समालीढपदं त्वदन्यैः ॥४१॥

तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्तथा प्रतीतेस्तव तत्कथञ्चित् ।
नात्यन्तमन्यत्वमनन्यता च विधेर्निषेधस्य च शून्यदोषात् ।।४२।।

नित्यं तदेवेदमिति प्रतीतेर्न नित्यमन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धेः ।
न तद्विरुद्धं बहिरन्तरङ्गनिमित्तनैमित्तिकयोगतस्ते ।।४३।।

अनेकमेक च पतस्य वाच्यं वृक्षा इति प्रत्ययवत्प्रकृत्या ।
आकांक्षिणः स्यादिति वै निपातो गुणानपेक्षे नियमेऽपवादः ।।४४।।

गुणप्रधानार्थमिदं हि वाक्यं जिनस्य ते तद्द्विषतामपथ्यम् ।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां ममापि साधोस्तव पादपद्मम् ।।४५।।

।। इति सुविधिजिनस्तोत्रम् ।।

न शीतलाश्चन्दनचन्द्ररश्मयो
न गाङ्गमम्भो न च हारयष्टयः ।
यथा मुनेस्तेऽनघवाक्यरश्मयः
शमाम्बुगर्भा शिशिरा विपश्चिताम् ।।४६।।

सुखाभिलाषानलदाहमूर्च्छितं
मनो निजं ज्ञानमयामृताम्बुभिः ।
विविध्यपस्त्वं विषदाहमोहितं
यथा भिषग्मन्त्रगुणैः स्वविग्रहं ।।४७।।

स्वजीविते कामसुखे च तृष्णया दिवा श्रमार्ता निशि शेरते प्रजा ।
त्वमार्य नक्तंदिवमप्रमत्तवानजागरेवात्मविशुद्धवर्त्मनि ।।४८।।

अपत्यवित्तोत्तरलोकतृष्णया तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते ।
भवान्पुनर्जन्मजराजिहासया त्रयी प्रवृत्तिं शमधीरवारुणत् ।।४९।।

त्वमुत्तमज्योतिरजः क्व निर्वृतः क्व ते परे बुद्धिलवोद्धवक्षताः ।
ततः स्वनिःश्रेयसभावनापरैर्बुधप्रवेकैर्जिनशीतलेड्यसे ।।५०।।

।। इति शीतलजिनस्तोत्रम् ।।

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयः प्रजाः शासदजेयवाक्यः ।
भवाश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन्नेको यथा वीतघनो विवस्वान् ।।५१।।

विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः प्रमाणमत्रान्यतरत्प्रधानम् ।
गुणोपरो मुख्यनियामहेतुर्नयः स दृष्टान्तसमर्थनस्ते ।।५२।।
विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो गुणोऽविवक्षो न निरात्मकस्ते ।
तथाऽरिमित्राऽनुभयादिशक्तिद्वयाऽवधिः कार्यकरं हि वस्तु ।।५३।।
दृष्टान्तसिद्धावुभयोर्विवादे साध्यं प्रसिद्धयेन्न तु तादृगस्ति ।
यत्सर्वथैकान्तनियामिदृष्टं त्वदीयदृष्टिर्विभवत्यशेषे ।।५४।।
एकान्तदृष्टिप्रतिषेधसिद्धिन्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य ।
असि स्म कैवल्यविभूतिसम्राट् ततस्त्वमर्हन्नसि मे स्तवार्हः ।।५५।।

।। इति श्रेयानजिनस्तोत्रम् ।।

शिवासु पूज्योऽभ्युदयक्रियासु त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्रपूज्यः ।
मयाऽपि पूज्योऽल्पधिया मुनीन्द्र! दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः।५६।
न पूजयाऽर्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ! विवान्तवैरे ।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः ।।५७।।
पूज्यं जिनं त्वाऽर्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ।
दोषाय नाऽलं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ।।५८।।
यद्वस्तु वाह्यं गुणदोषभूतेर्निमित्तमभ्यंतरमूलहेतोः ।
अध्यात्मवृत्तस्य तदङ्गभूतमभ्यंतरं केवलमप्यलं न ।।५९।।
बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं कार्येसु ते द्रव्यगदः स्वभावः ।
नैवान्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम्।६०।

।। इति वासुपूज्यजिनस्तोत्रम् ।।

य एव नित्यक्षणिकादयो नया मिथोऽनपेक्षाः स्वपरप्रणाशिनः ।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः परस्परेक्षाः स्वपरोपकारिणः।।६१।।
यथैकश. कारकमर्थसिद्धये समीक्ष्य शेषं स्वसहायकारकम् ।
तथैव सामान्यविशेषमातृका नयास्तवेष्टा गुणमुख्यकल्पतः ।।६२।।
परस्परेक्षाऽन्वयभेदलिङ्गतः प्रसिद्धसामान्यविशेषयोस्तव ।
समग्रताऽस्ति स्वपरावभासक यथा प्रमाणं भुवि बुद्धिलक्षणम्।६३।

विशेष्यवाच्यस्य विशेषणं वचो
यतोविशेष्यं विनियम्यते च यत् ।
तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते
विवक्षितात्स्यादिति तेऽन्यवर्जनम् ॥६४॥

नयास्तव स्यात्पदसत्यलाञ्छिता
रसोपविद्धा इव लोहधातवः ।
भवन्त्यभिप्रेतगुणा यतस्ततो
भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिणः ॥६५॥

॥ इति विमलजिनस्तोत्रम् ॥

अनन्तदोषाऽऽशयविग्रहो ग्रहो विषङ्गवान्मोहमयश्चिरं हृदि ।
यतो जितस्तत्त्वरुचौ प्रसीदता त्वया ततोऽभूर्भगवाननन्तजित्॥६६॥
कषायनाम्नां द्विषतां प्रमादिनामशेषयन्नाम भवानशेषवित् ।
विशोषणं मन्मथदुर्मदाऽऽमयं समाधिभैषज्यगुणैर्व्यलीनयत् ॥६७॥
परिश्रमाऽम्बुर्भयवीचिमालिनी त्वया स्वतृष्णासरिदाऽऽर्य! शोषिता।
असंगधर्मार्कगभस्तितेजसा परं ततो निर्वृतिधाम तावकम् ॥६८॥
सुहृत्त्वयि श्री सुभगत्वमश्नुते द्विषंस्त्वयि प्रत्ययवत्प्रलीयते ।
भवानुदासीनतमस्तयोरपि प्रभो परं! चित्रमिदं तवेहितम् ॥६९॥
त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम प्रलापलेशोऽल्पमतेर्महामुने ।
अशेषमाहात्म्यमनीरयन्नपि शिवाय संस्पर्श इवाऽमृताम्बुधेः ॥७०॥

॥ इत्यनन्तजिनस्तोत्रम् ॥

धर्मतीर्थमनघं प्रवर्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान् ।
कर्मकक्षमदहत्तपोऽग्निभिः शर्म शाश्वतमवाप शङ्करः ॥७१॥
देवमानवनिकायसत्तमै रेजिषे परिवृतो वृतो बुधैः ।
तारकापरिवृतोऽतिपुष्कलो व्योमनीव शशलाञ्छनोऽमलः ॥७२॥
प्रातिहार्यविभवैः परिष्कृतो देहतोऽपि विरतो भवानभूत् ।
मोक्षमार्गमशिषन्नरामरान्नापि शासनफलैषणाऽऽतुरः ॥७३॥

कायवाक्यमनसां प्रवृत्तयो नाऽभवंस्तव मुनेश्चिकीर्षया ।
नाऽसमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो धीर ! तावकमचिन्त्यमीहितम् ।।७४।।
मानुषी प्रकृतिमभ्यतीतवान् देवतास्वपि च देवता यतः ।
तेन नाथ ! परमाऽसि देवता श्रेयसे जिनवृष ! प्रसीद नः ।।७५

।। इति धर्मजिनस्तोत्रम् ।।

विधाय रक्षा परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः ।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शान्तिर्मुनिर्दयामूर्तिरिवाऽघशान्तिम्।।७६।।
चक्रेण यः शत्रुभंयकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम् ।
समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ।।७७।।
राजश्रिया राजसु राजसिंहो रराज यो राजसुभोगतन्त्रः ।
आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो देवाऽसुरोदारसभे रराज ।।७८।।

यस्मिन्नभूद्राजनि राजचक्रं
मुनौ दयादीधितिधर्मचक्रम् ।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देवचक्रं
ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्तचक्रम् ।।७९।।

स्वदोषशान्त्या विहिताऽऽत्मशान्तिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः ।।८०।।

।। इति शान्तिजिनस्तोत्रम् ।।

कुन्थुप्रभृत्यखिलसत्त्वदयैकतानः
कुन्थुर्जिनो ज्वरजरामरणोपशान्त्यै ।
त्वं धर्मचक्रमिह वर्तयसि स्म भूत्यै
भूत्वा पुरा क्षितिपतीश्वरचक्रपाणिः ।।८१।।
तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा-
मिष्टेन्द्रियार्थविभवैः परिवृद्धिरेव ।
स्थित्यैव कायपरितापहरं निमित्त-
मित्यात्मवान्विषयसौख्यपराङ्मुखोऽभूत् ।।८२।।

बाह्यं तपः परमदुश्चरमाऽऽचरस्त्व-
मध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम् ।
ध्यानं निरस्य कलुषद्वयमुत्तरेऽस्मिन्
ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने ॥८३॥

हुत्वा स्वकर्मकटुकप्रकृतीश्चतस्रो
रत्नत्रयाऽतिशयतेजसि जातवीर्यः ।
बिभ्राजसे सकलवेदविधेर्विनेता
व्यभ्रे यथावियति दीप्तरुचिर्विवस्वान् ॥८४॥

यस्मान्मुनीन्द्र ! तव लोकपितामहाद्या
विद्याविभूतिकणिकामपि नाप्नुवन्ति ।
तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमाऽऽर्याः
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८५॥

॥ इति कुन्थुजिनस्तोत्रम् ॥

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः ।
आनन्त्यात्ते गुणा वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम् ॥८६॥

तथाऽपि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामाऽपि कीर्तितम् ।
पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किञ्चन ॥८७॥

लक्ष्मीविभवसर्वस्वं मुमुक्षोश्चक्रलाञ्छनम् ।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते जरत्तृणमिवाऽभवत् ॥८८॥

तव रूपस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान् ।
द्व्यक्षः शक्रः सहस्राक्षो बभूव बहुविस्मयः ॥८९॥

मोहरूपो रिपुः पापः कषायभटसाधनः ।
दृष्टिस विदुपेक्षाऽस्त्रैस्त्वया धीर ! पराजितः ॥९०॥

कन्दर्पस्योद्धरो दर्पस्त्रैलोक्यविजयार्जितः ।
हेलयामास तं धीरे त्वयि प्रतिहतोदयः ॥९१॥

आयत्या च तदात्वे च दुःखयोनिर्दुरुत्तरा ।
तृष्णा नदी त्वयोत्तीर्णा विद्यानावा विविक्तया ॥९२॥

अन्तकः क्रन्दको नृणा जन्मज्वरसखः सदा ।
त्वामन्तकाऽन्तकं प्राप्य व्यावृत्तः कामकारतः ॥९३॥
भूषावेषाऽऽयुधत्यागि विद्यादमदयापरम् ।
रूपमेव तवाऽऽचष्टे धीर ! दोषविनिग्रहम् ॥९४॥
समन्ततोऽङ्गभासा ते परिवेषेण भूयसा ।
तमो बाह्यमपाकीर्णमध्यात्मध्यानतेजसा ॥९४॥
सर्वज्ञज्योतिषोद्भूतस्तावको महिमोदयः ।
कं न कुर्यात्प्रणम्रं ते सत्त्वं नाथ ! सचेतनम् ॥९६॥
तव वागमृतं श्रीमत्सर्वभाषास्वभावकम् ।
प्रीणयत्यमृत यद्वत्प्राणिनो व्यापि संसदि ॥९७॥
अनेकान्तात्मदृष्टिस्ते सती शून्यो विपर्ययः ।
ततः सर्व मृषोक्तं स्यात्तदयुक्तं स्वघाततः ॥९८॥
ये परस्खलितोन्निद्राः स्वदोषेभनिमीलिनाः ।
तपस्विनस्ते किं कुर्युरपात्रं त्वन्मतश्रियः ॥९९॥
ते तं स्वघातिनं दोषं शमीकर्त्तुमनीश्वराः ।
त्वद्द्विषः स्वहनो बालास्तत्त्वाऽवक्तव्यतां श्रिताः ॥१००॥
सदेकनित्यवक्तव्यास्तद्विपक्षाश्च ये नयाः ।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति पुष्यन्ति स्यादितीह ते ॥१०१॥
सर्वथा नियमत्यागी यथादृष्टमपेक्षकः ।
स्याच्छब्दस्तावके न्याये नान्येषामात्मविद्विषाम् ॥१०२॥
अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः प्रमाणनयसाधनः ।
अनेकान्तः प्रमाणात्ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥१०३॥
इति निरुपमयुक्तशासनः प्रियहितयोगगुणऽनुशासनः ।
अरजिन दमतीर्थनायकस्त्वमिव सतां प्रतिबोधनाय कः ॥१०४॥
मतिगुणविभवानुरूपतस्त्वयि वरदाऽऽगमदृष्टिरूपतः ।
गुणकृशमपि किञ्चनोदितं मम भवताद्दुरितासनोदिम् ॥१०५॥

॥ इत्यरजिनस्तोत्रम् ॥

यस्य महर्षेः सकलपदार्थप्रत्यवबोधः समजनि साक्षात् ।
सामरमर्त्यं जगदपि सर्वं प्राञ्जलि भूत्वा प्रणिपतति स्म ॥१०६॥
यस्य च मूर्तिः कनकमयीव स्वस्फुरदाभाकृतपरिवेषा ।
वागपि तत्त्वं कथयितुकामा स्यात्पदपूर्वा रमयति साधून् ॥१०७॥
यस्य पुरस्ताद्विगलितमाना न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते ।
भूरपि रम्या प्रतिपदमासीज्जातविकोशाम्बुजमृदुहासा ॥१०८॥
यस्य समन्ताज्जिनशिशिरांशोः शिष्यकसाधुग्रहविभवोऽभूत् ।
तीर्थमपि स्वं जननसमुद्रत्रासितसत्त्वोत्तरणपथोऽग्रम् ॥ १०६ ॥
यस्य च शुक्लं परमतपोऽग्निर्ध्यानमनन्तं दुरितमधाक्षीत् ।
तं जिनसिंहं कृतकरणीयं मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि ॥११०॥

॥ इतिमल्लिजिनस्तोत्रम् ॥

अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिर्मुनिवृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः ।
मुनिपरिषदि निर्बभौ भवानुडुपरिषत्परिवीतसोमवत् ॥१११।
परिणतशिखिकण्ठरागया कृतमदनिग्रहविग्रहाभया ।
तव जिन ! तपसः प्रसूतया ग्रहपरिवेषरुचेव शोभितम् ॥११२॥
शशिरुचिशुचिशुक्ललोहितं सुरभितरं विरजो निजं वपुः ।
तव शिवमतिविस्मयं यते! यदपि च वाङ्मसीयमीहितम् ॥११३॥
स्थितिजननिरोधलक्षणं चरमरचरं च जगत्प्रतिक्षणम् ।
इति जिन! सकलज्ञलाञ्छनं वचनमिदं वदतांवरस्य ते ॥११४॥
दुरितमलकलङ्कमष्टकं निरुपमयोगबलेन निर्दहन् ।
अभवदभवसौख्यवान् भवान्भवतु ममोपि भवोपशान्तये ॥११५॥

॥ इति मुनिसुव्रतजिनस्तोत्रम् ॥

स्तुतिस्तोतुः साधोः कुशलपरिणामाय स तदा ।
भवेन्मा वा स्तुत्यः फलमपि ततस्तस्य च सतः ॥

किमेव स्वाधीन्याज्जगति सुलभे श्रायसपथे ।
स्तुयान्न त्वा विद्वान्सततमथि पूज्यं नमिजिनम् ॥११६॥
त्वया धीमन् ! ब्रह्मप्रणिधिमनसा जन्मनिगलं ।
समूलं निर्भिन्नं त्वमसि विदुषां मोक्षपदवी ॥
त्वयि ज्ञानज्योतिर्विभवकिरणैर्भाति भगव–।
न्नभूवन् खद्योता इव शुचिरवावन्यमतयः ॥११७॥
विधेयं वार्यं चाऽनुभयमुभयं मिश्रमपि तद् ।
विशेषैः प्रत्येकं नियमविषयैश्चापरिमितैः ॥
सदान्योन्यापेक्षैः सकलभुवनज्येष्ठगुरुणा ।
त्वया गीतं तत्त्वं बहुनयविवक्षेतरवशात् ॥११८॥
अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमं ।
न सा तत्रारम्भोस्त्यणुरपि च यत्राश्रमविधौ ॥
ततस्तत्सिध्द्यर्थं परमकरुणो ग्रन्थमुभयं ।
भवानेवात्याक्षीन्न च विकृतवेषोपधिरतः ॥११९॥
वपुर्भूषावेषव्यवधिरहितं शान्तकरणं ।
यतस्ते संचष्टे स्मरशरविषातंकविजयम् ॥
विना भीमैः शस्त्रैरदयहृदयामर्षविलयं ।
ततस्त्वं निर्मोहः शरणमसि नः शान्तिनिलयः ॥१२०॥

॥ इति नमिजिनस्तोत्रम् ॥

भगवानृषिः परमयोगदहनहुतकल्मषेन्धनः ।
ज्ञानविपुलकिरणैः सकलं प्रतिबुध्य बुद्धकमलायतेक्षणः ॥१२१॥
हरिवंशकेतुरनवद्यविनयदमतीर्थनायकः ।
शीलजलधिरभवो विभवस्त्वमरिष्टनेमिजिनकुञ्जरोऽजरः ॥१२२॥
त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्नकिरणविसरोपचुम्बितम् ।
पादयुगलममलं भवतो विकसत्कुशेशयदलारुणोदरम् ॥१२३॥

नखचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिरशिखराङ्गुलिस्थलम् ।
स्वार्थनियतमनसः सुधियः प्रणमन्ति मन्त्रमुखरा महार्षयः ॥१२४॥
द्युतिमद्रथाङ्गरविबिम्बकिरणजटिलांशुमण्डलः ।
नीलजलजदलराशिवपुः सहबन्धुभिर्गरुडकेतुरीश्वरः ॥१२५॥
हलभृच्च ते स्वजनभक्तिमुदितहृदयौ जनेश्वरौ ।
धर्मविनय रसिकौ सुतरां चरणारविन्दयुगलं प्रणेमतुः ॥१२६॥
ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः ।
मेघपटलपरिवीततटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा ॥१२७॥
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च सततमभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीतिविततहृदयैः परितो भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः ॥१२८॥
बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविघाति नार्थकृत् ।
नाथ! युगपदखिलं च सदा त्वमिदं तलामलकवद्विवेदिथ ॥१२९॥
अत एव ते बुधनुतस्य चरितगुणमद्भुतोदयम् ।
न्यायविहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्नमनसः स्थितावयम् ॥१३०॥

॥ इत्यरिष्टनेमिजिनस्तोत्रम् ॥

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः ।
बलाहकैर्वैरिवशैरुपद्रुतो महामना यो न चचालयोगतः ॥१३१॥
बृहत्फणामण्डलमण्डपेन यं स्फुरत्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणाम् ।
जुगूह नागो धरणो धराधरं विरागसन्ध्यातडिदम्बुदो यथा ॥१३२॥
स्वयोगनिर्स्त्रिंशनिशातधारया निशात्य यो दुर्जयमोहविद्विषम् ।
अवापदार्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं त्रिलोकपूजातिशयास्पदं पदम् ॥१३३॥
यमीश्वर वीक्ष्य विधूतकल्मषं तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः ।
वनौकसः स्वश्रमवन्ध्यबुद्धयः शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे ॥१३४॥
स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान् ।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः
॥१३५॥

॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

कीर्त्या भुवि भासि तया, वीर त्वं गुणसमुत्थया भासितया ।
भासोडुसभासितया, सोम इव व्योम्नि कुन्दशोभासितया ॥१३६॥

तव जिन शासनविभवो जयति कलावपि गुणानुशासनविभवः ।
दोषकशासनविभवः स्तुवंति चैनं प्रभाकृशासनविभवः ॥१३७॥

अनवद्यः स्याद्वादतव दृष्टेष्टाविरोधतः स्याद्वादः ।
इतरो न स्याद्वादो सद्वितयविरोधान्मुनीश्वराऽस्याद्वादः ॥१३८॥

त्वमसि सुरासुरमहितो ग्रन्थिकसत्वाशयप्रणामामहितः ।
लोकत्रयपरमहितोऽनावरणज्योतिरुज्ज्वलद्धामहितः ॥१३९॥

सभ्यानामभिरुचितं दधासि गुणभूषणं श्रिया चारुचितम् ।
मग्नं स्वस्या रुचितं जयसि च मृगलाछनं
स्वकान्त्या रुचितम् ॥१४०॥

त्वं जिन गतमदमायस्तवा भावानां मुमुक्षुकामद मायः ।
श्रेयान् श्रीमदमायस्त्वया समादेशि सप्रयामदमायः ॥१४१॥

गिरिभित्त्यवदानवतः श्रीमत इव दन्तिनः स्त्रवद्दानवतः ।
तव शमवादानवतो गतमूर्जितमपगतप्रमादा*–नवतः ॥१४२॥

---

*प्रकृष्टा मा हिंसा प्रमा, अपगता नष्टा प्रमा अपगतप्रमा अहिंसा, तस्या दानमभयदानम् । तस्यास्तीति तस्य ।

॥ इति श्री वीरजिनस्तोत्रम् ॥

बहुगुणसंपदसकलं परमतमपि मधुरवचनविन्यासकलम् ।
*नयभक्त्यवतंसकलं तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ॥१४३॥

यो निःशेषजिनोक्तधर्मवि : श्री गोतमाद्यैः कृतः ।
सूक्तार्थैरमलैः स्तवोयमसमः स्वल्पैः प्रसन्नैः पदैः ॥
तद्यास्व्यानमदो यथा हस्यवगतः किञ्चित्कृतः ।
स्थेयाच्च न्द्रं दिवाकरावधि बुधप्रल्हादचेतस्यलम् ॥१४४॥

॥ इति बृहत्स्वम्भूस्तोत्रम् ॥



*नया नैगमादय । तेपा भक्त्यो भङ्गास्यावस्तीत्यादय । त एवाऽवर्ससर्क कर्णभूपणं तल्लातीति ।

ाकृ ं नि ाणकाण्ड

— —

अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्ज जिणणाहो ।
उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥१॥
वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा ।
सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥२॥
सत्तेव य बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
गजपथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥३॥
वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥४॥
णेमिसामि पज्जुण्णो संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
बाहत्तरकोडीओ उज्जन्ते सत्तसया सिद्धा ॥५॥
रामसुआ बेण्णि जणा लाडणरिंदाण पचकोडीओ ।
पावागिरिवरसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥६॥
पंडुसुआतिण्णि जणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
सत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥७॥
रामहणूसुग्गीवो गवयगवक्खो य णीलमहणीला ।
णवणवदी कोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥८॥
णगाणंगकुमारा कोडीपचद्धमुणिवरा सहिया ।
सुवण्णवरगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥९॥
दहमुहरायस्स सुआ कोडी पंचद्धमुणिवरे सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१०॥

रेवाणइए तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूटे ।
दो चक्की दहकप्पे आहुट्ठयकोडि णिव्वुदे वंदे ।।११।।
वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे ।
इंदजियकुंभकण्णो णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१२।।
पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो ।
चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१३।।
फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे ।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१४।।
णायकुमार मुणिंदो वालि महावालि चेव अज्झेया ।
अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१५।।
अच्चलपुरवरणयरे ईसाणभाए मेढगिरिसिहरे ।
आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१६।।
वसत्थलवरणियडे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे ।
कुलदेसभूसणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१७।।
जसहररायस्स सुआ पंचसयाइ कलिंगदेसम्मि ।
कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१८।।
पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच ।
रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ।।१९।।
जे जिणु जित्थु तत्था, जे दु गया णिव्वुदिं परमं ।
ते वन्दामिय णिच्चं, तियरणसुद्धो णमस्सामि ।।२०।।
सेसाण तु रिसीणं, णिव्वाणं जम्मि जम्मि ठाणम्मि ।
तेह वन्दे सव्वे, दुक्खक्खयकारणट्ठाए ।।२१।।
पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वन्दे ।
अस्सारम्भे पट्टणिमुव्वओ तहेव वन्दामि ।।२२।।
बाहूबलि तह वदमि पोदणपुरहत्थिणापुरे वंदे ।
संति कुंथुव अरिहो वाराणसीए सुपास पासं च ।।२३।।

महुराये अहिछित्ते वीरं पासं तदेव वन्दामि ।
जंबुमुणिंदो वन्दे णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ॥२४॥
पचकल्लाणठाणइ जाणवि संजादमच्चलोयम्मि ।
मणवयणकायसुद्धी सव्वे सिरसा णमंसामि ॥२५॥
अग्गलदेवं वन्दमि वरणयरे णिवणकुंडली वन्दे ।
पासं सिवपुरि वन्दमि लोहागिरिसंखदीवम्मि ॥२६॥
गोमटदेवं वन्दमि पंचसयं धणुहदेहउच्चं तं ।
देवा कुणंति वुट्ठी केसरकुसुमाण तस्स उवरम्मि ॥२७॥
णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसये सहिया ।
सजाद मिच्चलोए सव्वे सिरसा णमंसामि ॥२८॥
जो जेण पढइ तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए ।
भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥२९॥

क्षेपक श्लोक

श्रीमच्चंद्रगुहावराक्षरशिलां वस्त्रावतारं सदा ।
अर्चे चारणपादुका चरणगुहे सर्वामरैरर्चिताम् ॥
भास्वल्लक्षणपंक्तिनिर्वृतिपथं बिंदुं च धर्मं शिलाम् ।
सम्यग्ज्ञानशिलां च नेमिनिलयं वन्दे सशृंगत्रयम् ॥१॥
समवसरणमानं योजनं द्वादशादि ।
जिनपतियदुयावद्योजनार्द्धार्द्धहानि· ॥
कथयति जिनपार्श्वे योजनैकं सपादम् ।
निगदितजिनवीरे योजनैकं प्रमाणम् ॥२॥
नाभेयस्य शतानि पंच धनुषा मानं परं कीर्तितम् ।
सद्भिस्तीर्थंकराष्टकस्य निपुणैः पचाशदूनं हि तत् ॥
पंचानां च दशोनकं भुवि भवेत्पंचोनकं चाष्टके ।
हस्ता स्युर्नव सप्त चान्त्यजिनयोर्येषां नु तान्नौम्यहम् ॥३॥

श्रीचन्द्रप्रभनाथपुष्पदशनौ कुंदावदातच्छवी ।
रक्ताम्भोजपलाशवर्णवपुषौ पद्मप्रभद्वादशौ ।।
कृष्णौ सुव्रतयादवौ च हरितौ पार्श्वः सुपार्श्वश्च वै ।
शेषाः सन्तु सुवर्णवर्णवपुषो मे षोडशाघच्छिदे ।।४।।

वासुपूज्यस्तथा मल्लिर्नेमिः पार्श्वोऽथ सन्मतिः ।
कुमाराः पंचनिष्क्रान्ताः पृथिवीपतयः परे ।।५।।

वृषभश्च वासुपूज्यश्च नेमिः पर्यंकयोगतः ।
कायोत्सर्गस्थितानां तु सिद्धिः शेषजिनेशिनाम् ।।६।।

गौर्गजोश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वास्तिकः शशी ।
मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिषसूकरौ ।।
सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा ।
कच्छपश्चोत्पलं शखो नागराजश्च केसरी ।।७।।

शांतिकुंथ्वरकौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरो शेषा इंक्ष्वाकुवंशजा. ।।८।।

इच्छामि भंते ! परिणिव्वाणभक्ति काउस्सगो कओ तस्सालोचेउं । इयम्मि अवसप्पिणीये चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए । आउठ्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि । पावाए णयरीए कत्तियमासस्स किण्ह चउदसिए रत्तीए सादीए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धि गदो तिसु विलोएसु भवणवासिय वाणविन्तर जोयिसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंच्चति पूजंति वदंति णमंसति परिणिव्वाण महाकल्लाणपुज्जं करंति । अहमवि इह सन्तो तत्थ सताइयं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं । । इति ।

श्रीपूज्यपादाद्याचार्यविरचितः

श्री दशभक्त्यादि सं हः

कौनसी भक्ति कहाँ करनी चाहिए ?

कार्य	भक्ति
जिनप्रतिमावंदन, आचार्य वंदना (गवासनसे)	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, लघु-सिद्धभक्ति, लघुआचार्यभक्ति ।
सिद्धांतवेत्ता आचार्य की वंदना	सिद्ध, श्रुत, आचार्यभक्ति ।
सिद्धान्तवेत्ता मुनियो की वंदना	सिद्धभक्ति ।
स्वाध्याय का प्रारम्भ	लघुश्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति ।
स्वाध्याय की समाप्ति	लघुश्रुतभक्ति ।
आचार्य की अनुपस्थिति मे पहले दिन उपवास वा प्रत्याख्यान ग्रहण किया हो तो दूसरे दिन आहार के समय आहार की समाप्ति पर अगले दिन के उपवास वा प्रत्याख्यान का ग्रहण करने में	सिद्धभक्ति ।
आचार्य की उपस्थिति में आहार जाने के लिये जाने के पहले	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति ।

आहार के अनन्तर प्रत्याख्यान वा उपवास की प्रतिज्ञा के लिये	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति ।
आचार्य वंदना	लघु आचार्यभक्ति
चतुर्दशी के दिन त्रिकाल वंदना के लिए	चैत्यभक्ति, श्रुत, पंचगुरु भक्ति, अथवा सिद्ध, चैत्य, श्रुत, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति ।
नंदीश्वर पर्व मे	सिद्धभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
सिद्ध प्रतिमा के सामने	सिद्धभक्ति ।
तीर्थंकर के जन्म दिन	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, श्रुतभक्ति, शांतिभक्ति ।
अष्टमी चतुर्दशी की क्रिया मे अपूर्व चैत्यवंदना वा त्रिकाल नित्य वंदना के समय	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
अभिषेक वंदना	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
स्थिरबिम्ब प्रतिष्ठा	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति ।
जलबिम्ब प्रतिष्ठा के चतुर्थ अभिषेक मे	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
तीर्थंकरो के गर्भ जन्म कल्याणक मे	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति ।

दीक्षाकल्याणक	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति ।
ज्ञानकल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शातिभक्ति ।
निर्वाण कल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांतिभक्ति ।
वीर निर्वाण-सूर्योदय के समय	सिद्धभक्ति, निर्वाणभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शातिभक्ति ।
श्रुतपंचमी	वृहत्सिद्धभक्ति, वृहत्श्रुतभक्ति, श्रुतस्कन्ध को स्थापना, वृहत्-वाचना, वृहत्श्रुतभक्ति, आचार्य-भक्ति पूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा स्वाध्याय की पूर्णता अन्त मे शांतिभक्ति कर क्रिया की पूर्णता ।
श्रुतपंचमी के दिन गृहस्थो को	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
सिद्धांत वाचना	सिद्ध, श्रुतभक्ति द्वारा प्रारम्भ श्रुतभक्ति आचार्यभक्ति कर वाचना अंत मे श्रुत और शांति-भक्ति ।
गृहस्थो को संन्यास के प्रारंभ मे	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
गृहस्थों को संन्यास के अंत मे	सिद्ध, श्रुत, शांति ।
वर्षा योग धारण करते	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति ।
वर्षा योग धारण की प्रदक्षिणा मे	यावन्ति जिनचैत्यानि, स्वयम्भू स्तोत्र की दो स्तुति, चैत्यभक्ति ।

वर्षा योग स्वीकार करते समय	गुरुभक्ति शान्तिभक्ति ।
वर्षा योग ाप्ति में	वर्षायोग धारण करने की पूर्ण विधि ।
आचार्य पद ग्रहण करते समय	सिद्ध, आचार्य, शान्तिभक्ति ।
प्रतिमायोग धारण करने वाले मुनि की वन्दना करते समय	सिद्ध, योगि, शान्तिभक्ति ।
दीक्षा ग्रहण करते समय	बृहत्सिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति ।
दीक्षा के अन्त मे	सिद्धभक्ति ।
केशलोच करते समय	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति ।
लोच के अन्त में	सिद्धभक्ति ।
प्रतिक्रमण मे	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशति तीर्थंकरभक्ति ।
रात्रि योग का धारण	योगिभक्ति ।
रात्रि योग का त्याग	योगिभक्ति ।
देव वन्दना में दोष लगने पर	समाधिभक्ति ।
सामान्य ऋषि के स्वर्गवास होने पर उनके शरीर और निषधा की क्रिया मे	सिद्ध, योगि, शान्तिभक्ति ।
सिद्धान्तवेत्ता साधु के स्वर्गवास में	सिद्ध, श्रुत, योगि, शान्तिभक्ति ।
उत्तरगुणधारी साधु के स्वर्गवास मे	सिद्ध, चारित्र, योगि, शान्तिभक्ति ।
उत्तरगुणधारी सिद्धातवेत्ता	सिध्द, श्रुत, चारित्र, योगि, शांति

दीक्षाकल्याणक	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति ।
ज्ञानकल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति ।
निर्वाण कल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांतिभक्ति ।
वीर निर्वाण-सूर्योदय के समय	सिद्धभक्ति, निर्वाणभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति ।
श्रुतपंचमी	वृहत्सिद्धभक्ति, वृहत्श्रुतभक्ति, श्रुतस्कन्ध की स्थापना, वृहत् वाचना, वृहत्श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति पूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा स्वाध्याय की पूर्णता अन्त मे शांतिभक्ति कर क्रिया की पूर्णता ।
श्रुतपंचमी के दिन गृहस्थो को	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
सिद्धांत वाचना	सिद्ध, श्रुतभक्ति द्वारा प्रारम्भ श्रुतभक्ति आचार्यभक्ति कर वाचना अंत मे श्रुत और शांतिभक्ति ।
गृहस्थो को संन्यास के प्रारंभ में	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
गृहस्थों को संन्यास के अंत मे	सिद्ध, श्रुत, शांति ।
वर्षायोग धारण करते समय	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति ।
वर्षा योग धारण की प्रदक्षिणा मे	यावन्ति जिनचैत्यानि, स्वयम्भू स्तोत्र की दो स्तुति, चैत्यभक्ति ।

वर्षा योग स्वीकार करते समय	गुरुभक्ति शान्तिभक्ति ।
वर्षा योग ाप्ति मे	वर्षायोग धारण करने की पूर्ण विधि ।
आचार्य पद ग्रहण करते समय	सिद्ध, आचार्य, शान्तिभक्ति ।
प्रतिमायोग धारण करने वाले मुनि की वन्दना करते समय	सिद्ध, योगि, शान्तिभक्ति ।
दीक्षा ग्रहण करते समय	वृहत्सिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति ।
दीक्षा के अन्त मे	सिद्धभक्ति ।
केशलोच करते समय	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति ।
लोच के अन्त मे	सिद्धभक्ति ।
प्रतिक्रमण मे	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विशति तीर्थंकरभक्ति ।
रात्रि योग का धारण	योगिभक्ति ।
रात्रि योग का त्याग	योगिभक्ति ।
देव वन्दना मे दोष लगने पर	समाधिभक्ति ।
सामान्य ऋषि के स्वर्गवास होने पर उनके शरीर और निषधा की क्रिया में	सिद्ध, योगि, शान्तिभक्ति ।
सिद्धान्तवेत्ता साधु के स्वर्गवास मे	सिद्ध, श्रुत, योगि, शान्तिभक्ति ।
उत्तरगुणधारी साधु के स्वर्गवास मे	सिद्ध, चारित्र, योगि, शान्तिभक्ति ।
उत्तरगुणधारी सिद्धातवेत्ता	सिध्द, श्रुत, चारित्र, योगि, शांति

साधु के स्वर्गवास होने पर	भक्ति ।
आचार्य के स्वर्गवास होने पर	सिद्ध, योगि, आचार्य, शांतिभक्ति
सिध्दान्तवेत्ता आचार्य के स्वर्गवास पर	सिद्ध, श्रुत, योगि, आचार्य, शान्तिभक्ति ।
उत्तरगुणधारी सिध्दान्तवेत्ता आचार्य के स्वर्गवास पर	सिध्द, श्रुत, योगि, आचार्य, शांतिभक्ति ।
पाक्षिक प्रतिक्रमण मे	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीर-भक्ति, चतुर्विशतिभक्ति, चारित्रा-लोचना, गुरुभक्ति, वृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघुआचार्यभक्ति ।
चातुर्मासिक प्रतिक्रमण	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीर-भक्ति, चतुर्विशतिभक्ति, चारित्रा-लोचना, गुरुभक्ति, वृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघुआचार्यभक्ति ।
वार्षिक प्रतिक्रमण	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वीर-भक्ति, चतुर्विशतिभक्ति, चारित्रा-लोचना, गुरुभक्ति, वृहदालोचना, गुरुभक्ति, लघुआचार्यभक्ति ।

ईर्यापथशुद्धिः

नि संगोऽहं जिनानां सदनमनुपम त्रिःपरीत्यैत्य भक्त्या ।
स्थित्वा गत्वा निषद्योच्चरणपरिणतोऽन्तः शनैर्हस्तयुग्मम् ।।

भाले संस्थाप्य बुद्धया मम दुरितहर कीर्तये शक्रवन्द्यम् ।
निन्दादूर सदाप्तं क्षयरहितममुं ज्ञानभानुं जिनेन्द्रम् ।।१।।

श्रीमत्पवित्रमकलङ्कमनन्तकल्पं
स्वायंभुवं सकलमङ्गलमादितीर्थम् ।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानां
त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥२॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥३॥
श्रीमुखालोकनादेव श्रीमुखालोकनं भवेत् ।
आलोकनविहीनस्य तत्सुखावाप्तयः कुतः ॥४॥
अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य
देव ! त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे
संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणः ॥५॥
अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमलीकृते ।
स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६॥
नमो नमः सत्वहितंकराय
वीराय भव्याम्बुजभास्कराय ।
अनन्त-लोकाय सुरार्चिताय
देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥७॥
नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय
विनष्टदोषाय गुणार्णवाय ।
विमुक्तिमार्गप्रतिबोधनाय
देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥८॥
देवाधिदेव ! परमेश्वर ! वीतराग !
सर्वज्ञ ! तीर्थंकर ! सिद्ध ! महानुभाव !
त्रैलोक्यनाथ ! जिनपुंगव ! वर्द्धमान !
स्वामिन्! गतोऽस्मि शरणं चरणद्वयं ते ॥९॥

जितमदहर्षद्वेषा जितमोहपरीषहा जितकषायाः ।
जितजन्ममरणरोगा जितमात्सर्या जयन्तु जिनाः ॥१०॥
जयतु जिनवर्द्धमानस्त्रिभुवनहितधर्मचक्रनीरजबन्धुः ।
त्रिदशपतिमुकुटभासुरचूडामणिरश्मिरंजितारुणचरणः॥११॥
जय जय जय त्रैलोक्यकाण्डशोभिशिखामणे
नुद नुद नुद स्वान्तध्वान्त जगत्कमलार्क नः ।
नय नय नय स्वामिन् शांति नितान्तमनन्तिम
नहि नहि नहि त्राता लोकैकमित्र भवत्परः ॥१२॥
चित्ते मुखे शिरसि पाणिपयोजयुग्मे
भक्तिं स्तुतिं विनतिमञ्जलिमञ्जसैव ।
चेक्रीयते चरिकरीति चरीकरीति
यश्चर्करीति तव देव स एव धन्यः ॥१३॥
जन्मोन्माज्यं भजतु भवतः पादपद्मं न लभ्यं
तच्चेत्स्वैरं चरतु न च दुर्देवतां सेवतां सः ।
अश्नात्यन्नं यदिह सुलभं दुर्लभं चेन्मुधास्ते
क्षुद्व्यावृत्त्यै कवलयन्ति कः कालकूटं बुभुक्षुः ॥१४॥
रूपं ते निरुपाधि सुन्दरमिदं पश्यन् सहस्रेक्षणः
प्रेक्षाकौतुककारिकोऽत्र भगवन्नोपैत्यवस्थान्तरम् ।
वाणी गद्गदयन्वपुः पुलकयन्नेत्रद्वयं स्रावयन्
मूर्धानं नमयन्करौ मुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन् ॥१५॥
त्रस्ताराातिरिति त्रिकालविदिति त्राता त्रिलोक्या इति ।
श्रेयःसूतिरिति श्रियां निधिरिति श्रेष्ठः सुराणामिति ॥
प्राप्तोऽहं शरणं शरण्यमगतिस्त्वा तत्त्यजोपेक्षणम् ।
रक्ष क्षेमपदं प्रसीद जिन किं वि ापितैर्गोपितैः ॥१६॥
त्रिलोकराजेन्द्रकिरीटकोटि प्रभाभिरालीढपदारविन्दम् ।
निर्मूलमुन्मूलितकर्मवृक्षं जिनेन्द्रचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या ॥१७॥

करचरणतनुविघातादटतो निहतः प्रमादतः प्राणी ।
ईर्यापथमिति भीत्या मुंचे तद्दोषहान्यर्थम् ॥१८॥

ईर्यापथे प्रचलताऽद्य मया प्रमादादे-
केन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा ।
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥१९॥

पडिक्कमामि भन्ते ! इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते, अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे पाणुग्गमणे, विज्जग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चारपस्सवणखेलसिंघाणयवियडियपइट्ठावणियाए, जे जीवा एइन्दिया वा, बेइंदिया वा, ते इंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचेंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिच्छिदा वा, लेसिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाणचंकमणदो वा तस्स उत्तरगुणं तस्स पायच्छित्तकरणं तस्स विसोहिकरणं जाव अरहंताणं भयवंताणं णमोकारं करोमि ताव कालं पावकम्म दुच्चरियं वोस्सरामि । "ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं" ॥ जाप्यानि ॥९॥ ॐ नमः परमात्मने नमोऽनेकान्ताय शान्तये । इच्छामि भंते ! इरियावहियस्स आलोचेउं पुव्वुत्तरदक्खिणपच्छिमचउदिसुविदिसासु विहरमाणेण, जुगंतरदिट्ठिणा, भव्वेण, दट्ठव्वा, पमाददोसेण डवडवचरियाए पाणभूदजीवसत्ताणं एदेसिं उवघादो कदो वा, कारिदो वा, कीरंतो समणुमण्णिदो वा, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पापिष्ठेन दुरात्मा जडधिया मायाविना लोभिना ।
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम् ॥
त्रैलोक्याधिपते ! जिनेन्द्र भवतः श्रीपादमूलेऽधुना ।
निन्दापूर्वमहं जहामि सततं निर्वर्तये कर्मणाम् ॥१॥

जिनेन्द्रमुन्मूलितकर्मबन्धं, प्रणम्य सन्मार्गकृतस्वरूपमम् ।
अनन्तबोधादिभवं गुणौघं, क्रियाकलापं प्रकटं प्रवक्ष्ये ॥२॥

अथार्हत्पूजारंभक्रियाया पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगल, अरहंता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहू मंगल, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पव्वजामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वजामि । केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वजामि ॥ अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्दे सो पण्णारसकम्मभूमिसु, जाव अरहंताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं ,जिणाण, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाण, बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतयडाणं, पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसियाण, धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं, दंसणाणं, चरित्ताणं, सदा करेमि, किरियम्मं । करेमि भंते ! सामाइयं सव्वसावज्जजोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवं तिविहेण मणसा-वचसा-कायेण, ण करेमि ण कारेमि करंतं पि ण समणुमण्णामि । तस्स भंते ! अइचार पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि जाव अरहंताणं, भयवंताणं, पज्जुवासं करेमि, तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं, वोस्सरामि । जीवियमरणे लाहालाहे संजोगविप्पजोगे य बंधुरिपुसुहदुक्खादो समदा सामाइअं णाम ॥

त्थोस्सामि अहं जिणवरे, तित्थयरे केवली अणंतजिणे ।
णरपवरलोयमहिए, विहुयरयमले महप्पणे ॥१॥

लोयस्सुज्जोययरे, धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे ।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ।।२।।
उसहमजियं च वंदे, संभवमभिणंदण च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिण च चंदप्पहं वंदे ।।३।।
सुविहिं च ! पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपूज्जं च ।
विमलमणंतं च णिण धम्म संति च वंदामि ।।४।।
कुन्थुं च जिणवरिन्दं अरं च मल्लि च सुव्वयं च णमि ।
वंदाम्यरिट्ठनेमिं तह पासं वढ्ढमाणं च ।।५।।
एवं मए अभित्थुया विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ।।६।।
कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ।
आरोग्यणाणलाहं दिन्तु समाहिं च मे बोहिं ।।७।।
चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहियपहा सत्ता ।
सायरमिव गम्भीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ।।८।।

श्री सिद्धभक्तिः

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान् ।
वंदे सिद्धिप्रसिद्धयै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः ।।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणाच्छादिदोषापहारात् ।
योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ।।१।।
नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः ।
अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी ।।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा ।
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ।।२।।
स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या– ।
सपद्धे तिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्यसारैः ।।

कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि- ।
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥३॥
जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं संप्रतृप्यन्वितन्वन् ।
धुन्वन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभावम् ॥
कुर्वन्सर्वप्रजानामपरमभिभवन्ज्योतिरात्मानमात्मा ।
ह्यात्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥४॥
छिंदन् शेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः ।
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ॥
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै- ।
रूर्ध्वं व्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ॥५॥
अन्याकाराप्तिहेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ॥
क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजरानिष्टयोगप्रमोह- ।
व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहृतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥६॥
आत्मोपादानसिद्ध स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालम् ।
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम् ॥
अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपमममित शाश्वतं सर्वकालम् ।
उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥७॥
नार्थः क्षुत्तृट्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या ।
नास्पृष्टैर्गन्धमाल्यैर्न हि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ॥
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद् ।
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥८॥
तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि- ।
चर्यासिद्धाः समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ॥
भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनतांत्रिजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥९॥

कृत्वा कायोत्सर्गं चतुरष्टदोषविरहितं सुपरिशुद्धम् ।
अति भक्तिसंप्रयुक्तो यो वंदते स लघु लभते परमसुखम् ।।१०।।

इच्छामि भंते! सिद्धभत्ति काउसग्गो कओ। तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्झयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, वंदामि, पूजेमि, णमंस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

।। इति सिद्धभक्ति ।।

श्रीश्रु भि :

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत् श्री श्रुतभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोक विलोकितलसल्लोचनानि सदा ।।१।।
अभिमुखनियमितबोधनमाभिनिबोधितकमनिन्द्रियेन्द्रियजम् ।
बह्वाद्यवग्रहादिककृतषट्त्रिंशत्त्रिशतभेदम् ।।२।।
विविधर्द्धिबुद्धिकोष्ठ स्फुटबीजपदानुसारिबुद्ध्यधिकं ।
संभिन्नश्रोतृतया सार्धं श्रुतभाजन वन्दे ।।३।।
श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचित द्व्यनेकभेदस्थम् ।
अङ्गाङ्गबाह्यभावितमनंतविषय नमस्यामि ।।४।।

पर्यायाक्षरपदसंघातप्रतिपत्तिकानुयोगविधीन् ।
प्राभृतकप्राभृतकं प्राभृतकं वस्तुपूर्वं च ।।५।।
तेषा समासतोऽपि च विंशतिभेदान्समश्नुवानं तत् ।
वंदे द्वादशधोक्तं गभीरवरशास्त्रपद्धत्या ।।६।।
आचारं सूत्रकृत स्थान समवायनामधेयं च ।
व्याख्याप्रज्ञप्ति च ज्ञातृकथोपासकाध्ययने ।।७।।
वंदेऽन्तकृद्दशमनुत्तरोपपादिकदशं दशावस्थम् ।
प्रश्नव्याकरणं हि विपाकसूत्रं च विनमामि ।।८।।
परिकर्म च सूत्रं च स्तौमि प्रथमानुयोगपूर्वगते ।
सार्द्धं चूलिकयापि च पचविधं दृष्टिवादं च ।।९।।
पूर्वगतं तु चतुर्दशधोदितमुत्पादपूर्वमाद्यमहम् ।
आग्रायणीयमीडे पुरुवीर्यानुप्रवादं च ।।१०।।
सततमहमभिवंदे तथास्तिप्रवादपूर्व च ।
ज्ञानप्रवादसत्यप्रवादमात्मप्रवाद च ।।११।।
कर्म प्रवादमीडेऽथ प्रत्याख्याननामधेयं च ।
द ् विद्याधार पृथुविद्यानुप्रवादं च ।।१२।।
कल्याणनामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं च ।
अक्ष लोकबिन्दुसारं वन्दे लोकाग्रसारपदं ।।१३।।
दश च चतुर्दश चाष्टावष्टादश च द्वयोर्द्विषट्कं च ।
षोडशं च विंशति च त्रिशतमपि पंचदश च तथा ।।१४।।
वस्तूनि दश दशान्येष्वनुपूर्वं भाषितानि पूर्वाणाम् ।
प्रतिवस्तु प्राभृतकानि विंशति विंशति नौमि ।।१५।।
पूर्वांतं ह्यपरान्तं ध्रुवमध्रुवच्यवनलब्धिनामानि ।
अध्रुवसंप्रणिधिं चाप्यर्थं भौमाव याद्यं च ।।१६।।
सर्वार्थकल्पनीयं ज्ञानमतीत त्वनागतं कालम् ।
सिद्धिमुपाध्य च तथा चतुर्दशवस्तूनि द्वितीयस्य ।।१७।।

पंचमवस्तुचतुर्थप्राभृतकस्यानुयोगनामानि ।
कृतिवेदने तथैव स्पर्शनकर्मप्रकृतिमेव ॥१८॥
बधननिबंधनप्रक्रमानुपक्रममथाभ्युदयमोक्षौ ।
संक्रमलेश्ये च तथा लेश्यत्याः कर्मपरिणामौ ॥१९॥
सातमसातं दीर्घं ह्रस्वं भवधारणयसंज्ञं च ।
पुरुपुद्गलात्मनाम च निधत्तमनिधत्तमभिनौमि ॥२०॥
सनिकाचितमनिकाचिमथ कर्म स्थितिकपश्चिमस्कधौ ।
अल्पबहुत्वं च यजे तद्द्वाराणां चतुर्विशम् ॥२१॥
कोटीनां द्वादशशतमष्टापंचाशतं सहस्राणाम् ।
लक्षत्र्यशीतिमेव पंच च वंदे श्रुतपदानि ॥२२॥
षोडशशतं चतुस्त्रिंशत्कोटीनां त्र्यशीतिलक्षाणि ।
शतसंख्याष्टासप्ततिमष्टाशीतिं च पदवर्णान् ॥२३॥
सामायिकं चतुर्विशतिस्तवं वंदनां प्रतिक्रमणं ।
वैनयिकं कृतिकर्म च पृथुदशवैकालिक च तथा ॥२४॥
वरमुत्तराध्ययनमपि कल्पं व्यवहारमेवमभिवदे ।
कल्पाकल्पं स्तौमि महाकल्पं पुंडरीकं च ॥२५॥
परिपाट्या प्रणिपतितोऽस्म्यहं महापुण्डरीक नामैव ।
निपुणान्यशीतिकं च प्रकीर्णकान्यंगबाह्यानि ॥२६॥
पुद्गलमर्यादोक्तं प्रत्यक्षं सप्रभेदमवधिं च ।
देशा-वधि-परमावधि-सर्वावधिभेद-मभिवंदे ॥२७॥
परमनसि स्थितमर्थं मनसा परिविद्य मंत्रिमहितगुणम् ।
ऋजुविपुलमतिविकल्पं स्तौमि मनःपर्ययज्ञानम् ॥२८॥
क्षायिकमनन्तमेकं त्रिकालसर्वार्थयुगपदवभासम् ।
सकलसुखधाम सततं वदेऽहं केवलज्ञानम् ॥२९॥
एवमभिष्टुवतो मे ज्ञानानि समस्तलोकचक्षूंषि ।
लघु भवताज्ज्ञानर्द्धिर्ज्ञानफलं सौख्यमच्यवनम् ॥३०॥

इच्छामि भंते ! सुदभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं अंगोवंगपइण्णए पाहुडयपरियम्मसुत्तपढमाणिओगपुव्यगयचूलिया चेव सुत्तत्थयथुइ धम्मकहाइयं णिच्चकालं अचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

॥ इति श्रुतभक्ति ॥

श्री ारित्रभक्तिः

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमच्चारित्रभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान् ।
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुंगोत्तमाङ्गान्नतान् ॥
स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा ।
वंदे पंचतयं तमद्य निगदन्नाचारमभ्यर्चितम् ॥१॥
अर्थव्यंजनतद्द्वयाविकलता कालोपधाप्रश्रयाः ।
स्वाचार्याद्यनपण्हवो बहुमतिश्चेत्यष्टधा व्याहृतम् ॥
श्रीमज्ज्ञातिकुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽजसा ।
ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम् ॥२॥
शंकादृष्टिविमोहकांक्षणविधिव्यावृत्तिसन्नद्धता ।
वात्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं धर्मोपबृंहक्रियाम् ॥
शक्त्या शासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनम् ।
वंदे दर्शनगोचरं सुचरितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ॥३॥

एकान्ते शयनोपवेशनकृतिः संतापनं तानवम् ।
संख्यावृत्तिनिबन्धनामनशनं विष्वाणमर्द्धोदरम् ।।
त्याग चेन्द्रियदन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम् ।
षोढा बाह्यमहं स्तुवे शिवगतिप्राप्त्यभ्युपायं तपः ।।४।।

स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः सम्प्रत्यवस्थापनम् ।
ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ वृद्धे च बाले यतौ ।।
कायोत्सर्जनसत्क्रिया विनय इत्येवं तपः षड्विधं ।
वंदेऽभ्यंतरमन्तरंगबलवद्विद्वेषिविध्वसनम् ।।५।।

सम्यग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते ।
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः ।।
या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा लघ्वी भवोदन्वतो ।
वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं वंदे सतामर्चितम् ।।६।।

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः ।
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ।।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृष्टं परैः ।
आचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ।।७।।

आचारं सह पंचभेदमुदितं तीर्थं परं मंगलं ।
निर्ग्रन्थानपि सच्चरित्रमहतो वंदे समग्रान्यतीन् ।।
आत्माधीनसुखोदयामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनीम् ।
इच्छन् केवलदर्शनावगमनप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ।।८।।

अज्ञानाद्यदवीवृत नियमिनोऽवर्तिष्यह चान्यथा ।
तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं चैनोनिराकुर्वति ।।
वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिं नयत्यद्भुतं ।
तन्मिथ्या गुरु दुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदतो निंदितम् ।।९।।

संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः ।
प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः ।।
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तरा ।
मारोहन्तु चारित्रमुत्तममिदं जैनेन्द्रमोजस्विनः ।।१०।।

इच्छामि भंते ! चारित्तभत्तिकाउस्सग्गो कश्रो, तस्स श्रालोचेउं सम्मणाण जोयस्स, सम्मत्ताहिट्ठियस्स, सव्वपहाणस्स, णिव्वाणमग्गस्स, कम्मणिज्जरफलस्स, खमाहारस्स, पंचमहव्वय-संपण्णस्स, तिगुत्तिगुत्तस्स, पंचसमिदिजुत्तस्स, णाणज्झाणसाहणस्स, स ा इव पवेसयस्स सम्मचारित्तस्स, सया श्रंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खश्रो, कम्मक ो, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

।। इति चारित्रभक्ति ।।

ोगिभक्ति :

अथार्हत्पूजारंभ क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म ार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्री ् श्री योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

जातिजरोरुरोगमरणातुरशोकसहस्रदीपिताः ।
दुःसहनरकपतनसन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्धचेतसः ।।
जीवितमंबुबिंदुचपलं तडिदभ्रसमा विभूतयः ।
सकलमिदं विचिन्त्य मुनयः प्रशमाय वनान्तमाश्रिताः ।।१।।

व्रतसमितिगुप्तिसंयुताः शिवसुखमाधाय मनसि वीतमोहाः ।
ध्यानाध्ययन वशंगताः विशुद्धये कर्मणां तपश्चरन्ति ॥२॥
दिनकरकिरणनिकरसंतप्तशिलानिचयेषु निस्पृहाः ।
मलपटलावलिप्ततनवः शिथिलीकृतकर्मबंधनाः ॥

व्यपगतमदनदर्परतिदोषकषायविरक्तमत्सराः ।
गिरिशिखरेषु चंडकिरणाभिमुखस्थितयो दिगंबराः ॥३॥
सज्ज्ञानामृतपायिभिः क्षान्तिपयः सिच्यमानपुण्यकायैः ।
धृतसंतोषच्छत्रकैस्तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मुनीन्द्रैः ॥४॥
शिखिगलकज्जलालिमलिनैर्विबुधाधिपचापचित्रितैः ।
भीमरवैर्विसृष्टचण्डाशनिशीतलवायुवृष्टिभिः ॥
गगनतलं विलोक्य जलदैः स्थगितं सहसा तपोधनाः ।
पुनरपि तरुतलेषु विषमासु निशासु विशंकमासते ॥५॥
जलधाराशरताडिता न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहा ॥
संसारःदुखभीरवः परीषहारातिघातिनः प्रवीराः ॥६॥
अविरतबहलतुहिनकणवारिभिः अंघ्रिपपत्रपातनैः ।
अनवरतमुक्तसीत्काररवैः परुषैरथानिलैःशोषितगात्रयष्टयः ।
इह श्रमणा धृतिकंबलावृताः शिशिरनिशां ।
तुषारविषमां गमयन्ति चतुःपथे स्थिताः ॥७॥
इति योगत्रयधारिणः सकलतपःशालिनः प्रवृद्धपुण्यकायाः ।
परमानंदसुखैषिणः समाधिमग्र्यं दिशंतु नो भदन्ताः ॥८॥
गिह्मे गिरिसिहरत्था वरिसायकाले रुक्खमूलरयणीसु ।
सिसिरे बाहिरसयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं ॥१॥
गिरिकंदरदुर्गेषु ये वसंति दिगंबराः ।
पाणिपात्रपुटाहारास्ते यांति परमां गतिम् ॥२॥

इच्छामि भंते ! योगिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अड्ढाइज्जदीवदोस मुद्देसु पण्णारसकम्मभूमीसु आदावणरुक्ख-मूलअब्भोवासठाणमोणविरासणेक्कपासकुक्कुडासण चउछपक्ख-खवणादियोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं वदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं ।

॥ इति योगिभक्ति ॥

आचार्यभक्तिः

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमदाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

सिद्धगुणस्तुतिनिरतानुद्धतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान् मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥

मुनिमाहात्म्यविशेषाज्जिनशासनसत्प्रदीपभासुरमूर्तीन् ।
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो बद्धरजोविपुलमूलघातनकुशलान् ॥२॥

गुणमणिविरचितवपुषः षड्द्रव्यविनिश्चितस्य धातॄन्सततम् ।
रहितप्रमादचर्यान्दर्शनशुद्धान् गणस्य संतुष्टिकरान् ॥३॥

मोहच्छिदुग्रतपसः प्रशस्तपरिशुद्धहृदयशोभनव्यवहारान् ।
प्रासुकनिलयाननघानाशाविध्वंसिचेतसो हतकुपथान् ॥४॥

धारितविलसन्मुन्डान्वर्जितबहुदर्डापडमंडलनिकरान् ।
सकलपरीषहजयिनः क्रियाभिरनिशं प्रमादतः परिरहितान् ।।५।।

अचलान्व्यपेतनिद्रान्स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्याहीनान् ।
विधिनानाश्रितवासानलिप्तदेहान्विनिर्जितेन्द्रियकरिणः ।।६।।

अतुलानुकुटिकासान्विविक्तचित्तानखंडितस्वाध्यायान् ।
दक्षिणभावसमग्रान्व्यपगतमदरागलोभशठमात्सर्यान ।।७।।

भिन्नार्तरौद्रापक्षान्संभावि धर्मशुक्लनिर्मलहृदयान् ।
नित्यं पिनद्धकुगतीन्पुण्यान्गण्योदयान्विलीनगारवचर्यान् ।।८।।

तरुमूलयोगयुक्तानवकाशातापयोगरागसनाथान् ।
बहुजनहितकरचर्यानभयाननघान्महानुभावविधानान् ।।९।।

ईदृशगुणसंपन्नान्युष्मान्भक्त्या विशालया स्थिरयोगान् ।
विधिनानारतमग्र्यान्मुकुलीकृतहस्तकमलशोभितशिरसा ।।१०।।

अभिनौमि सकलकलु भवोदयजन्मजरामरणबंधनमुक्तान् ।
शिवमचलमनघमक्षयमव्याहतमुक्तिसौख्यमस्त्विति सततम् ।।११।।

इच्छामि भंते! आइरियभत्तिकाउसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं,आयारादिसुदणाणोवदेसाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं,सव्वसाहूणं, सया अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, जिणगुणसपत्ति होउ मज्झं ।

॥ इति आचार्यभक्ति ॥

पं गुरुभक्ति :

अथार्हत्पूजारम्भक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्पंचगुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आय-रियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

श्रीमदमरेन्द्रमुकुटप्रघटितमणिकिरणवारिधाराभिः ।
प्रक्षालितपदयुगलान्प्रणमामि जिनेश्वरान्भक्त्या ॥१॥
अष्टगुणैः समुपेतान्प्रणष्टदुष्टाष्टकर्मरिपुसमितीन् ।
सिद्धान्सततमनन्तान्नमस्करोमीष्टतुष्टिसंसिद्ध्यै ॥२॥
साचारश्रुतजलधीन्प्रतीर्य शुद्धोरुचरणनिरतानाम् ।
आचार्याणां पदयुगकमलानि दधे शिरसि मेऽहम् ॥३॥
मिथ्यावादिमदोग्रध्वान्तप्रध्वंसिवचनसंदर्भान् ।
उपदेशकान्प्रपद्ये मम दुरितारिप्रणाशाय ॥४॥
सम्यग्दर्शनदीपप्रकाशका मेयबोधसंभूताः ।
भूरिचरित्रपताकास्ते साधुगणास्तु मां पान्तु ॥५॥
जिनसिद्धसूरिदेशकसाधुवरानमलगुणगणोपेतान् ।
पंचनमस्कारपदैस्त्रिसंध्यमभिनौमि मोक्षलाभाय ॥६॥
एष पंचनमस्कारः सर्वपापप्रणाशनः ।
मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं मंगलं भवेत् ॥७॥
अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः सर्वसाधवः ।
कुर्वन्तु मंगलाः सर्वे निर्वाणपरमश्रियम् ॥८॥
सर्वाञ्जिनेन्द्रचन्द्रान्सिद्धानाचार्यपाठकान् साधून् ।
रत्नत्रयं च वन्दे रत्नत्रयसिद्धये भक्त्या ॥९॥

पान्तु श्रीपादपद्मानि पंचानां परमेष्ठिनाम् ।
लालितानि सुराधीशचूडामणिमरीचिभिः ।।१०।।
प्रातिहार्यैर्जिनान् सिद्धान् गुणैः सूरीन् स्वमातृभिः ।
पाठकान् विनयैः साधून् योगाङ्गैरष्टभिः स्तुवे ।।११।।

इच्छामि भंते ! पंचमहागुरुभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अट्ठमहापाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्झयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं, अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगईगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति पंचगुरुभक्ति



ी ` रभक्ति :

अथ देवसिय पडिक्कमणाए सव्वाइच्चारविसोहिणिमित्तं ।
पुव्वाइरियकमेण चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गं करेमि ।।
चउवीसं तित्थयरे उसहाईवीरपच्छिमे वंदे ।
सव्वेसिं मुणिगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ।।१।।
ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवांतर्गता- ।
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चंद्रार्कतेजोधिकाः ।।

ये　　　साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्वार्चिताः ।
तान्देवान्वृषभादिवीरचरमान्भक्त्या　　　नमस्याम्यहं ॥२॥

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजित सर्वलोकप्रदीपम् ।
सर्वज्ञं सभवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ॥

कर्मारिघ्नं सुबुद्धि वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगंधम् ।
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चंद्रनामानमीडे ॥३॥

विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथम् ।
श्रेयांसं शीलकोषं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं ॥

मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्व विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रम् ।
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शांन्ति शरण्यम् ॥४॥

कुन्थुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रम् ।
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् ॥

देवेन्द्राच्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तम् ।
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्द्धमानं च भक्त्या ॥५॥

इच्छामि भंते ! चउवीसतित्थयर भत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाण-संपण्णाणं अट्ठमहापाडि-हेर-सहियाणं चउतीसअतिसयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिम-उडमत्थय महियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइ-अणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइ-वीरपच्छिम-मंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

॥ इति तीर्थंकरभक्ति ॥

शान्तिभक्तिः

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्शान्तिभक्तिकायो-त्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो-आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वय ते प्रजाः ।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः ।।
अत्यंतस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमंडलो ।
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ।।१।।
क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविषज्वालावलीविक्रमो ।
विद्याभेषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशांति यथा ।।
तद्वत्ते चरणारुणाबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् ।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ।।२।।
संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगौरद्युते ।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयं ।।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिता ।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ।।३।।
त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यंतरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानलान् ।
न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ।।४।।
लोकालोकनिरंतरप्रविततज्ञानैकमूर्ते विभो ।
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिरश्वेतातपत्रत्रय: ।।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः ।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुंजरा ।।५।।

दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूडामणे ।
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामंडल ॥
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं ।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥६॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं- ।
स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम् ॥
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदय- ।
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥७॥

शान्ति शान्तिजिनेन्द्र शान्तमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् ।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः ॥
कारुण्यान्मम भक्तिकस्य च विभोर्दृष्टिं प्रसन्नां कुरु ।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः ॥८॥

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं
शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं
नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रम् ॥९॥

पं मभीप्सितचक्रधराणां
पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः
षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ॥१०॥

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः ।
दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे
यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥११॥

तं जगदर्जितशान्तिजिनेन्द्रं
शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं
मह्यमरं पठते परमां च ॥१२॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः
तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भ ॢ ॥१३॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां
यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः
करोतु शान्तिं भगवाञ्जिनेन्द्रः ॥१४॥

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु
बलवान्धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यक् वर्षतु
मघवा व्याधवो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि
जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु
सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥१५॥

तद्द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः
संतन्यतां प्रतपतां सततं स कालः ।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण
रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे ॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।।१७।।

×इच्छामि भंते ! शान्तिभत्तिकाउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं - पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडि-हेर सहियाणं चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणि-मयमउडमत्थयमहियाणं बलदेववासुदेवचक्कहररि-सिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उस-हाइवीरपच्छिमअंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अचेमि, पूजेमि, वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।।

इति शान्तिभक्ति



× शान्तिः शिरोधृतजिनेश्वरशासनानां । शान्तिर्निरन्तरतपोऽभवभावितानाम् ।। शान्तिः कषायजयजृंभितवैभवानां । शान्तिः स्वभावमहिमानमुपागतानाम् ।।१।। जीवन्तु संयमसुधारसपानतृप्ता । नन्दन्तु शुद्धसहसोदयसुप्रसन्नाः ।। सिध्यन्तु सिद्धिसुखसंगकृताभियोगा । तीव्रं तपन्तु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा ।।२।। शान्तिः शं तनुतां समस्तजगतः संगच्छतां धार्मिकैः श्रेयः ।श्रीः परिवर्धतां नयधुराधुर्यो धरित्रीपतिः ।। सद्विद्यारसमुद्गिरन्तु कवयो नामाप्यघस्यास्तु मा । प्रार्थ्यं वा कियदेक एव शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम् ।।३।।

माधिभक्ति :

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्समाधिभक्तिकायो-त्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणम् श्रुतचक्षुषा ।
पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ॥१॥

X शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥२॥

जैनमार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः ।
निष्कलंकविमलोक्तिभावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥३॥

गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धान्तवार्धिसद्घोषे ।
मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणम् ॥४॥

व्युत्सृज्य दोषान्निःशेषान्सद्ध्याने स्यात्तनूत्सृतौ । सहेताप्युपसर्गोर्मीन् कर्मैव भिद्येतरां ॥१॥ ध्यानाशुशुक्षुणा विद्धे मनोऽरत्विक्समाहित स्वकर्मसमिधो भावसर्पिषा जुहुमोऽधुना ॥२॥ अहमेवाहमित्यात्मज्ञानादन्यत्र चेतना । इदमस्मि करोमीदमिद भुज इति क्षिपेत् ॥३॥ अहमेवाहमित्यन्तर्जल्पसपृक्त-कल्पना । त्यक्त्वाऽवाग्गोचर ज्योति स्वय पश्यामि शाश्वतम् ॥४॥ अमुह्य-तमरज्यतमद्विषत च य स्वय । शुद्धे निधत्ते स्वे शुद्धयुपयोग स शुद्धयति ॥५॥ वोधिसमाधिविशुद्धस्वचिदुपलब्ध्युच्चलत्प्रमोदभाव ब्रह्म विदति पर ये ते सद्गु-रवो मम प्रसीदतु ॥६॥

जन्मजन्म कृतं पापं जन्मकोटिसमार्जितम् ।।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ।।५।।

आबाल्याज्जिनदेवदेव भवतः श्रीपादयोः सेवया ।
सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोऽद्य यावद्गतः ।।
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे ।
त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽस्त्वकुण्ठो मम ।।६।।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ।।७।।

एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम् ।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ।।८।।

पंच अरिंजयणामे पंच य मदिसायरे जिणे वन्दे ।
पंच जसोयरणामे पंच य सीमंदरे वंदे ।।९।।

रयणत्तयं च वन्दे चउवीसजिणे च सव्वदा वंदे ।
पंचगुरूणं वदे चारणचरणं सदा वंदे ।।१०।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे ।।११।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।१२।।

आकृष्टिं सुरसंपदा विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां ।
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ।।
स्तंभं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम् ।
पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ।।१३।।

अनंतानंतसंसार-संततिच्छेदकारणम् ।
जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम ।।१४।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।१५।।
नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ।।१६।।
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ।।१७।।
याचेऽहं याचेऽहं जिन चरणारविन्दयोर्भक्तिम् ।
याचेऽहं याचेऽहं पुनरपि तामेव तामेव ।।१८।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।१९।।

इच्छामि भंते ! समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं। रयणत्तयपरूवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति समाधिभक्ति



निर्वाणभक्तिः

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमन्निर्वाणभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्। णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

विबुधपतिखगपनरपतिधनदोरगभूतयक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरुपमशिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम् ॥१॥
कस्याणैः संस्तोष्ययेे पंचभिरनघं त्रिलोकपरमगुरुम् ।
भव्यजनतुष्टिजननैर्दु रवापैः सन्मतिं भक्त्या ॥२॥
आषाढसुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते शशिनि ।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा पुष्पोत्तराधीसः ॥३॥
सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुंडपुरे ।
देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान्संप्रदर्श्य विभुः ॥४॥
चैत्रसितपक्षफाल्गुनि शशांकयोगे दिने त्रयोदश्याम् ।
स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने ॥५॥
हस्ताश्रिते शशांके चैत्रज्योत्स्ने चतुर्दशीदिवसे ।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम् ॥६॥
भुक्त्वा कुमारकाले त्रिंशद्वर्षाण्यनंतगुणराशिः ।
अमरोपनीतभोगान्सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्यु: ॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणिविभूषाम् ।
चंद्रप्रभाख्याशिबि ामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः ॥८॥
मार्गशिरकृष्णदशमीहस्तोत्तरमध्यमाश्रिते सोमे ।
न त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज ॥९॥
ग्रामपुरखेटकर्वटमटंबघोषाकरात्प्रविजहार ।
उग्रैस्तपोयिधानैर्द्वादशवर्षाण्यमरपूज्यः ॥१०॥
ऋजुकूलायास्तीरे शालद्रुमसंश्रिते शिलापट्टे ।
अपराण्हे षष्ठेनास्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे ॥११॥
वैशाखसि दशम्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते चंद्रे ।
क्षपकश्रेण्यारूढस्योत्पन्नं - - के ज्ञानम् ॥१२॥
अथ भगवान् संप्रापद्दिव्यं वैभारपर्वतं रम्यम् ।
चातुर्वर्ण्यसुसंघः तत्राभूद्गौतमप्रभृति ॥१३॥

छत्राशोकौ घोषं सिंहासनदुंदुभी कुसुमवृष्टिम् ।
वरचामरभामंडलदिव्यान्यन्यानि चावापत् ॥१४॥
दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम् ।
देशयमानो व्यवहरंस्त्रिंशद्वर्षाण्यथ जिनेन्द्रः ॥१५॥
पद्मवनदीर्घिकाकुलविविधद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये ।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः ॥१६॥
कार्तिककृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्मरजः ।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम् ॥१७॥
परिनिर्वृतं जिनेंद्रं ज्ञात्वा विबुधा ह्यथाशु चागम्य ।
देवतरुरक्तचंदनकालागरुसुरभिगोशीर्षैः ॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभिधूपवरमाल्यैः ।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गता दिवं खं च वनभवने ॥१९॥
इत्येवं भगवति वर्धमानचंद्रे, यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि ।
सोऽनंतं परमसुखं नृदेवलोके भुक्त्वाते शिवपदमक्षयं प्रयाति ॥२०॥

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां
निर्वाणभूमिरिह भारतवर्षजानाम् ।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या ॥२१॥

कैलासशैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ
शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा ।
चंपापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्
सिद्धिं परामुपगतो गतरागबंधः ॥२२॥

यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्वराद्यैः
पाखंडिभिश्च परमार्थगवेषशीलैः ।
नष्टाष्टकर्मसमये तदरिष्टनेमिः
संप्राप्तवान् क्षितिधरे बृहदूर्जयन्ते ॥२३॥

पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे
पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये ।
श्रीवर्द्धमानजिनदेव इति प्रतीतो
निर्वाणमाप भगवान्प्रविधतपाप्मा ॥२४॥

शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहमल्ला
ज्ञानार्कभूरिकिरणैरवभास्य लोकान् ।
स्थानं परं निरवधारितसौख्यनिष्ठं
सम्मेदपर्वततले समवापुरीशा ॥२५॥

आद्यश्चतुर्दशदिनैर्विनिवृत्तयोगः
षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिनवर्द्धमानः ।
शेषा विधूतघनकर्मनिबद्धपाशाः
मासेन ते यतिवरास्त्वभवन्वियोगाः ॥२६॥

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा-
न्यादाय मानसकरैरभितः किरंतः ।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः ॥२७॥

शत्रुंजये नगवरे दमितारिपक्षाः
पंडोः सुताः परमनिर्वृ ति भ्युपेताः ।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा
नद्यास्तटे ि रिपुश्च सुवर्णभद्रः ॥२८॥

द्रोणीमति प्रबलकुंडलमेढ्रके च
वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे ।
ऋष्याद्रिके च विपुलाि ाहके च
विंध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥२९॥

सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे ।
दंडात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ ।

ये साधवो हतमलाः सुगतिं प्रयाताः
स्थानानि तानि जगति प्रतिथान्यभूवन् ॥३०॥

इक्षोर्विकाररसपृक्तगुणेन लोके
पिष्टोऽधिकां मधुरतामुपयाति यद्वत् ।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥३१॥

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां
प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृतिभूमिदेशाः ।
ते मे जिना ि भया मुनयश्च शान्ताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्यसौख ॥३२॥

कैलासाद्रौ मुनींद्रः पुरुरपदुरितो मुक्तिमाप प्रणूतः
चंपायां वासुपूज्यस्त्रिदशपतिनुतो नेमिरप्यूर्जयंते ।
पावायां वर्धमानस्त्रिभुवनगुरवो विंशतिस्तीर्थनाथाः
सम्मेदाग्रे प्रजग्मुर्ददतु विनमतां निर्वृतिं नो जिनेन्द्राः ॥३३॥

गौर्गजोश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वस्तिकः शशी ।
मकरः श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिषसूकरौ ॥३४॥
सेधा वज्रमृगच्छागाः पाठीनः कलशस्तथा ।
कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराजश्च केसरी ॥३५॥
शान्तिकुंथ्वरकौरव्या यादवो नेमिसुव्रतौ ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः ॥३६॥

इच्छामि भंते ! परिणिव्वाणभत्ति काउस्सग्गो कम्रो तस्सा-लोचेउं--इमम्मि अवसप्पिणीये चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए । आउट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि ॥ पावाए णयरीए कत्तियमासस्स किण्हचउदसीए । रत्तीए सादीए णक्खत्ते पच्चूसे भयवो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो । तिसुवि लोएसु, भवणवासियवाणवितरजोइसियकप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा

सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं, अच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाणमहाकल्लाणपुज्जं करंति, । अहमवि इह संतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।।

इति निर्वाणभक्ति



नंदीश रभक्ति :

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमन्नंदीश्वरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्य-हम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूण ।

त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणिगणकरनिकरसलिलधाराधौतक्रम- ।
कमलयुगलजिनपतिरुचिरप्रतिबिंबविलयविरहितनिलयान् ।।१।।
निलयानहमिह महसां सहसाप्रणिपतनपूर्वमवनौम्यवनौ ।
त्रय्या त्रय्या शुद्धया निसर्गशुद्धाण्विशुद्धये घनरजसाम् ।।२।।
भावनसुरभवनेषु द्वासप्ततिशतसहस्रसंख्याऽभ्यधिकाः ।
कोटयः सप्त प्रोक्ता भवनानां भूरितेजसा भुवनानाम् ।।३।।
त्रिभुवनभूतविभूनां संख्यातीतान्यसंख्यगुणयुक्तानि ।
त्रिभुवनजननयननमःप्रियाणि भवनानि भौमविबुधनुतानि ।।४।।
यावन्ति सन्ति कान्तज्योतिर्लोकाधिदेवताभिनुतानि ।
कल्पेऽनेकविकल्पे कल्पातीतेऽहमिन्द्रकल्पानल्पे ।।५।।
विंशतिरथ त्रिसहिता समस्तगुणिताच सप्तनवति प्रोक्ता ।
चतुरधिकाशीतिरतः पचकशून्येन विनिहतान्यनघानि ।।६।।

अष्टापंचाशदतश्चतुःशतानीह मानुषे च क्षेत्रे ।
लोकालोकविभागप्रलोकनालोकसंयुजां जयभाजाम् ॥७॥
नवनवचतुःशतानि च सप्त च नवतिः सहस्रगुणिताः षट् च ।
पंचाशत्पंचवियत्प्रहताः पुनरत्र कोटयोऽष्टौ प्रोक्ताः ॥८॥
एतावंत्येव सतामकृत्रिमाण्यथ जिनेशिनां भवनानि ।
भुवनत्रतये त्रिभुवनसुरसमितिसमर्च्यमानसत्प्रतिमानि ॥९॥
वक्षाररुचककुंडलरौप्यनगोत्तरकुलेषुकारनगेषु ।
कुरुषु च जिनभवनानि त्रिशदान्यधिकानि तानि षड्विंशत्या॥१०॥
नंदीश्वरसद्द्वीपे नंदीश्वरजलधिपरिवृते धृतशोभे ।
चंद्रकरनिकरसंनिभरुन्द्रयशोविततदिङ्महीमंडलके ॥११॥
तत्रत्यांजनदधिमुखरतिकरपुरुनगवराख्यपर्वतमुख्याः ।
प्रतिदिशमेषामुपरि त्रयोदशेन्द्रार्चितानि जिनभवनानि ॥१२॥
आषाढकार्तिकाख्ये फाल्गुनमासे च शुक्लपक्षेऽष्टम्याः ।
आरभ्याष्टदिनेषु च सौधर्मप्रमुखविबुधपतयो भक्त्या ॥१३॥
तेषु महामहमुचितं प्रचुराक्षतगंधपुष्पधूपैर्दिव्यैः ।
सर्वज्ञप्रतिमानामप्रतिमानां प्रकुर्वंते सर्वहितम् ॥१४॥
भेदेन वर्णना का सौधर्मः स्नपनकर्तृतामापन्नः ।
परिचारकभावमिताः शेषेन्द्रा रुन्द्रचन्द्रनिर्मलयशसः ॥१५॥
मंगलपात्राणि पुनस्तद्देव्यो बिभ्रति स्म शुभ्रगुणाढ्याः ।
अप्सरसो नर्तक्यः शेषसुरास्तत्र लोकनाव्यग्रधियः ॥१६॥
वाचस्पतिवाचामपि गोचरतां संव्यतीत्य यत्क्रममाणम् ।
विबुधपतिविहितविभवं मानुषमात्रस्य कस्य शक्तिः स्तोतुम् ॥१७॥
निष्ठापितजिनपूजाश्चूर्णस्नपनेन दृष्टविकृतविशेषाः ।
सुरपतयो नंदीश्वरजिनभवनानि प्रदक्षिणीकृत्य पुनः ॥१८॥
पंचसु मंदरगिरिषु श्रीभद्रशालनंदनसौमनसम् ।
पांडुकवनमिति तेषु प्रत्येकं जिनगृहाणि चत्वार्येव ॥१९॥

सम्मदकरिवनपरिवृत-सम्मेद-गिरीन्द्रमस्तके विस्तीर्णे ।
शेषा ये तीर्थंकराः कीर्तिभृतः प्रार्थितार्थसिद्धिमवापन् ॥३३॥
शेषाणां केवलिनामशेषमतवेदिगणभृतां साधूनाम् ।
गिरितलविवरदरीसरिदुपवनतरु–विटपिजलधिदहनशिखासु ।३४।
मोक्षगतिहेतुभूतस्थानानि सुरेन्द्ररुन्द्रभक्तिनुतानि ।
मंगलभूतान्येतान्यंगीकृतधर्मकर्मणामस्माकम् ॥३५॥
जिनपतयस्तत्प्रतिमास्तदालयास्तन्निषद्यका स्थानानि ।
ते ताश्च ते च तानि च भवन्तु भवघातहेतवो भव्यानाम् ॥३६॥
संध्यासु तिसृषु नित्य, पठेद्यदि स्तोत्रमेतदुत्तमयशासम् ।
सर्वज्ञानां सार्वं, लघु लभते श्रुतधरेडितं पदममितम् ॥३७॥
नित्यं निःस्वेदत्वं निर्मलता क्षीरगौररुधिरत्वं च ।
स्वाद्याकृतिसंहनने सौरूप्यं सौरभ च सौलक्ष्यम् ॥३८॥
अप्रमितवीर्यता च प्रियहितवादित्वमन्यदमितगुणस्य ।
प्रथिता दशसंख्याता स्वतिशयधर्माः स्वयंभुवो देहस्य ॥३९॥
गव्यूतिशचतुष्टसुभिक्षतागगनगमनमप्राणिवधः ।
भुक्त्युपसर्गाभावश्चतुरास्यत्वं च सर्वविद्येश्वरता ॥४०॥
अच्छायत्वमपक्ष्मस्पंदश्च समप्रसिद्धनखकेशत्वम् ।
स्वतिशयगुणा भगवतो घातिक्षयजा भवंति तेपि दशैव ॥४१॥
सार्वार्धमागधीया भाषा मैत्री च सर्वजनताविषया ।
सर्वत्रफलस्तबकप्रवालकुसुमोपशोभिततरुपरिणामा ॥४२॥
आतर्शतलप्रतिमा रत्नमयी जायते मही च मनोज्ञा ।
विहरणमन्वेत्यनिलः परमानंदश्च भवति सर्वजनस्य ॥४३॥
मरुतोऽपि सुरभिगंधव्यामिश्रा योजनान्तरं भूभागम् ।
व्युपशमितधूलिकंटकतृणकीटकशर्करोपलं प्रकुर्वन्ति ॥४४॥
तदनु स्तनितकुमारा विद्युन्मालाविलासहासविभूषाः ।
प्रकिरन्ति सुरभिगंधिं गंधोदकवृष्टिमाज्ञया त्रिदशपतेः ॥४५॥

वरपद्मरागकेसरमतुलसुखस्पर्शहेममयदलनिचयम् ।
पादन्यासे पद्मं सप्त पुरः पृष्ठतश्च सप्त भवंति ॥४६॥
फलभारनम्रशालिव्रीह्याद्दिसमस्तसस्यधृतरोमांचा ।
परिहृषितेव च भूमिस्त्रिभुवननाथस्य वैभवं पश्यंती ॥४७॥
शरदुदयविमलसलिलं सर इव गगनं विराजते विगतमलम् ।
जहति च दिशस्तिमिरिकां विगतरजःप्रभृतिजिह्मताभावं सद्यः॥४८॥
एतेनेति त्वरितं ज्योतिर्व्यंतरदिवौकसाममृतभुजः ।
कुलिशभृदाज्ञापनया कुर्वन्त्यन्ये समन्ततो व्याव्हानम् ॥४९॥
स्फुरदसहस्त्ररुचिरं विमलमहारत्नकिरणनिकरपरीतम् ।
प्रहसितकिरणसहस्त्रद्यु तिमंडलमग्रगामि धर्मसुचक्रम् ॥५०॥
इत्यष्टमंगलं च स्वादर्शप्रभृति भक्तिरागपरीतैः ।
उपकल्प्यन्ते त्रिदशरेतेऽपि निरुपमातिविशेषाः ॥५१॥
वैडूर्यरुचिरविटपप्रवालमृदुपल्लवोपशोभितशाखः ।
श्रीमानशोकवृक्षो वरमरकतपत्रगहनबहलच्छायः ॥५२॥
मंदारकुंदकुवलयनीलोत्पलकमलमालतीबकुलाद्यैः ।
समदभ्रमरपरीतैर्व्यामिश्रा पतति कुसुमवृष्टिर्नभसः ॥५३॥
कटककटिसूत्रकुंडलकेयूरप्रभृतिभूषितांगौ स्वंगौ ।
यक्षौ कमलदलाक्षौ परिनिक्षिपतः सलीलचामरयुगलम् ॥५४॥
आकस्मिकमिव युगपद्दिवसकरसहस्त्रमपगतव्यवधानम् ।
भामंडलमविभावितरात्रिंदिवभेदमतितरामाभाति ॥५५॥
प्रबलपवनाभिघातप्रक्षुभितसमुद्रघोषमन्द्रध्वानम् ।
दंध्वन्यते सुवीणावंशादिसुवाद्यदुंदुभिस्तालसमम् ॥५६॥
त्रिभुवनपतितालांछनमिंदुत्रयतुल्यमतुलमुक्ताजालम् ।
छत्रत्रयं च सुबृहद्वैडूर्यविक्लृप्तदंडमधिकमनोज्ञम् ॥५७॥
ध्वनिरपि योजनमेक प्रजायते श्रोत्रहृदयहारिगभीरः ।
ससलिलजलधरपटलध्वनितमिव प्रविततान्तराशावलयम् ॥५८॥

स्फुरितांशुरत्नदीधितिपरिविच्छुरितामरेन्द्रचापच्छायम् ।
ध्रियते मृगेन्द्रवर्यैः स्फटिकशिलाघटितसिंहविष्टरमतुलम् ॥५९॥
यस्येह चतुस्त्रिंशत्प्रवरगुणा प्रातिहार्यलक्ष्म्यश्चाष्टौ ।
तस्मै नमो भगवते त्रिभुवनपरमेश्वरार्हते गुणमहते ॥६०॥

इच्छामि भंते ! णंदीसरभत्तिकाउस्सग्गो कओ । तस्सालोचेउं-णंदीसरदीवम्मि चउदिसिविदिसासु अंजणदधिमुहरदिकरपुरुण वरेसु जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासियवाणवितरजोइसियकप्पवासियत्तिचउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहि गंधेहि, दिव्वेहि पुप्फेहि, दिव्वेहि धुव्वेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि वासेहि, दिव्वेहि ण्हाणेहि आसाढकत्तियफागुणमासाणं अठ्ठमिमाइं काऊण जाव पुण्णिमंति णिच्चकालं अच्चंति, पूजति वंदति णमसंति, णंदीसरमहाकल्लाणं करंति अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरण जिणगुणसंपति होऊ मज्झं ।

इति नदीश्वरभक्ति



चैत्य भक्ति :

अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीमच्चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

श्रीगौतमादिपदमद्भुतपुण्यबंध-
मुद्योतिताखिलममोघमघप्रणाशम् ।
वक्ष्ये जिनेश्वरमहं प्रणिपत्य तथ्यं
निर्वाणकारणमशेषजगद्धितार्थम् ॥१॥

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृम्भिता-
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ।
कलुष हृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिण ।
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः ॥२॥

तदनु जयति श्रेयान्धर्मः प्रवृद्धमहोदयः ।
कुगतिविपथक्लेशाद्योसौ विपाशयति प्रजाः ॥
परिणतनयस्यांगीभावाद्विविक्तविकल्पितम् ।
भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेन्द्रवचोऽमृतम् ॥३॥

तदनु जयताज्जैनी वित्ति. प्रभंगतरंगिणी ।
प्रभवविगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी ॥
निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलम् ।
विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम् ॥४॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः ।
सर्वजगद्वंद्येभ्यो नमोस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥५॥

मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदा हतरजोभ्यः ।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ॥६॥

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं ।
शुभधामनि धातार वंदे धर्म जिनेन्द्रोक्तम् ॥७॥

मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि ।
सांगोपागमजेयं जैनं वचन सदा वंदे ॥८॥

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि ।
त्रिजगदभिवंदितानां त्रेधा वंदे जिनेन्द्राणाम् ॥९॥

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तॄणां ।
वंदे भवाग्निशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः ॥१०॥

इति पंचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि ।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टाम् ॥११॥
अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मंदिरेषु ।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिंबानि जगत्त्रये जिनानाम् ॥१२॥
द्युतिमंडलभासुराङ्गयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम् ।
भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वंदमानः ॥१३॥
विगतायुधविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां

जिनेश्वराणाम् ।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवंदे

॥१४॥

कथयन्ति कषायमुक्तिलक्ष्मी परया शान्ततया भवान्तकानाम् ।
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम् ॥१५॥
यदिदं मम सिध्दभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन ।
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे

॥१६॥

अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसंपदाम् ।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये ॥१७॥
श्रीमद्भवनवासस्था स्वयंभासुरमूर्तयः ।
वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम् ॥१८॥
यावंति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च ।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वंदे भूयांसि भूतये ॥१९॥
ये व्यंतरविमानेषु स्थेयास प्रतिमागृहाः ।
ते च संख्यामतिक्रान्ताः संतु नो दोषविच्छिदे ॥२०॥
ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसंपदः ।
गृहाः स्वयंभुवः संति विमानेषु नमामि तान् ॥२१॥

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृम्भिता-
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ।

कलुष हृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः ।
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसु. ॥२॥

तदनु जयति श्रेयान्धर्मः प्रवृद्धमहोदयः ।
कुगतिविपथक्लेशाद्योसौ विपाशयति प्रजा ॥

परिणतनयस्यांगीभावाद्विविक्तविकल्पितम् ।
भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेन्द्रवचोऽमृतम् ॥३॥

तदनु जयताज्जैनी वित्ति. प्रभंगतरगिणी ।
प्रभवविगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी ॥

निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलम् ।
विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम् ॥४॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः ।
सर्वजगद्वंद्येभ्यो नमोस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥५॥

मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदा हतरजोभ्यः ।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ॥६॥

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं ।
शुभधामनि धातारं वंदे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम् ॥७॥

मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि ।
सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वंदे ॥८॥

भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि ।
त्रिजगदभिवंदितानां त्रेधा वंदे जिनेन्द्राणाम् ॥९॥

भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तॄणां ।
वंदे भवाग्निशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः ॥१०॥

इति पंचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि ।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टाम् ।।११।।
अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मंदिरेषु ।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रति[illegible]नि जगत्त्रये जिनानाम् ।।१२।।
द्युतिमंडलभासुराङ्गयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानाम् ।
भुवनेषु विभूतये प्र[illegible] वपुषा प्राञ्जलिरस्मि वंदमानः ।।१३।।
विगतायुधविक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिना जिनेश्वराणाम् ।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिवंदे ।।१४।।
कथयन्ति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शान्ततया भवान्तकानाम् ।
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिनानाम् ।।१५।।
यदिदं मम सिध्दभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि तेन ।
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे ।।१६।।
अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसंपदाम् ।
कीर्तयिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये ।।१७।।
श्रीमद्भवनवासस्था स्वयंभासुरमूर्तयः ।
वंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः परमां गतिम् ।।१८।।
यावंति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च ।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वंदे भूयांसि भूतये ।।१९।।
ये व्यंतरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः ।
ते च संख्यामतिक्रान्ता. संतु नो दोषविच्छिदे ।।२०।।
ज्योतिषामथ लोकस्य भूतयेऽद्भुतसंपदः ।
गृहा. स्वयंभुव. संति विमानेषु नमामि तान् ।।२१।।

वंदे सुरकिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम् ।
याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्चाः सिध्दिलब्धये ॥२२॥

इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां मम ।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरोधिनी ॥२३॥

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरितम् ।
प्रक्षालनैककारणमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ॥२४॥

लोकालोकसुतत्त्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञान- ।
प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयम् ॥२५॥

शुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितमसकृत् ।
स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्तिसिकतासुभगम् ॥२६॥

क्षान्त्यावर्तसहस्र सर्वदयाविकचकुसुमविलसल्लतिकम् ।
दुःसहपरीषहाख्यद्रुततररंगत्तरंगभंगुरनिकरम् ॥२७॥

व्यपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोपशैवलरहितम् ।
अत्यस्तमोहकर्दममतिदूरनिरस्तमरणमकरप्रकरम् ॥२८॥

ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोषविविधविहगध्वानम् ।
विविधतपोनिधिपुलिनं सास्रवसंवरणनिर्जरानिःस्रवणम् ॥२९॥

गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः ।
बहुभिः स्नातं भक्त्या कलिकलुषमलापकर्षणार्थममेयम् ॥३०॥

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरम् ।
व्यहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावभावगंभीरम् ॥३१॥

अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवह्नेर्जयात्
कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः ।
विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यन्तिकीम् ॥३२॥

निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात्
निरंबरलनोहरं प्रकृतिरूपनिर्दोषतः ।
निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात्
निरामिषसुतृप्तिमद्विविवेदनानां क्षयात् ॥३३॥
मितस्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनम्
नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगंधोदयम् ।
रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतम्
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥३४॥
हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः
कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते ।
सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः
शरद्विमलचंद्रमंडलमिवोत्थितं दृश्यते ॥३५॥
तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणि-
स्फुरत्किरणचुम्बनीयचरणारविन्दद्वयम् ।
पुनातुभगवज्जिनेन्द्र तव रूपमन्धीकृतम्
जगत्सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः ॥३६॥
मानस्तम्भाः सरांसि प्रविमलजलसत्खातिका पुष्पवाटी ।
प्राकारो नाटयशालाद्वितयमुपवनं वेदिकांतर्ध्वजाद्याः ॥
शालः कल्पद्रुमाणां सुपरिवृतवनं स्तूपहर्म्यावली च ।
प्राकारः स्फाटिकोन्तर्नृसुरमुनिसभा पीठिकाग्रे स्वयंभूः ॥३७॥
वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥३८॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणां
वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम् ।
इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां
जिनवरनिलयाना भावतोऽहं स्मरामि ॥३९॥

जम्बूधातकिपुष्करार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवा-
श्चंद्राभोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभाः जिनाः ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनभ्यो नमः ।।४०।।
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे ।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांके ।।
इश्वाकारेंऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके ।
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्याययानि ।।४१।।
देवासुरेन्द्रनरनागसमर्चितेभ्यः
पापप्रणाशकरभव्यमनोहरेभ्यः
घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यो
नित्यं नमो जगति सर्वजिनालयेभ्यः ।।४२।।

इच्छामि भंते ! चेइयभत्तिकाउस्सग्गो कओ । तस्सालो-चेउं, अहलोयतिरियलोयढ्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय-वाणवितरजोइसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अच्चंति, पुज्जति, वंदंति, णमंसंति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति चैत्यभक्ति

ुदिग न्दना

प्राग्दिग्विदिगन्तरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः ।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे ॥१॥

दक्षिण दिग्विदिगन्तरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः ।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे ॥२॥

पश्चिमदिग्विदिगन्तरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः ।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे ॥३॥

उत्तरदिग्विदिगन्तरतः केवलिजिनसिद्धसाधुगरदेवाः ।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे ॥४॥

र्वदो – ा शि ि धिः

ये ये पञ्चमहाव्रतेषु समितिस्थानेषु गुप्तित्रये ।
ये षड्जीवनिकायकेषु बहुधा पञ्चास्तिकायेषु च ॥

दोषा ये च पदार्थकेषु नवसु प्रोद्यत्प्रमादस्य मे ।
तान्हन्तुं प्रयजे जिनेश! विधिना त्वत्पादपद्माह्वयम् ॥

ॐ ह्री अर्हं असिआउसा त्रयस्त्रिशदत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नम. ॥२॥

ॐ ह्री अर्हं सत्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-

ॐ ह्री अर्हं अचौर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥४॥

ॐ ह्री अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥५॥

ॐ ह्री अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥७॥

ॐ ह्री अर्हं भाषासमितेरत्यासदनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं एषणासमितेरत्यासादनात्यागानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥९॥

ॐ ह्री अर्हं आदाननिक्षेपणसमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्गसमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय : ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचोगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१३॥

ॐ ह्री अर्हं कायगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोधोष-द्योतनाय नमः ॥१८॥

ॐ ह्रीं आकाशास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्कायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योत-नाय नमः ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं तेजःकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योत-नाय नमः ॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योत-नाय नमः ॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ॥२७॥

ॐ ह्री अर्हं आस्रवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।२८।।

ॐ ह्री अर्हं बन्धपदार्थस्यात्यासादनात्यागाय अनुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।२९।।

ॐ ह्री अर्हं संवरपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३१।।

ॐ ह्री अर्हं मोक्षपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३३।।

ॐ ह्री अर्हं पापपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधो-द्योतनाय नमः ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः ।।३५।।

ॐ ह्री अर्हं सम्यग्ज्ञानाय नमः ।।३६।।

ॐ ह्री अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः ।।३७।।

।। इति सर्वदोषप्रायश्चितविधि ।।

दै रि -रात्रि - ति मण

जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराः प्रदोषा
यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थं
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥१॥

पापिष्ठेन दुरात्मा जडधिया मायाविना लोभिना
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र ! भवतः श्रीपादमूलेऽधुना
निन्दापूर्वमहं जहामि सततं वर्तितिषुः सत्पथे ॥२॥

खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि ॥३॥

राग बंधपदोसं च हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोस्सरे ॥४॥

हा ! दुठ्ठकयं हा! दुठ्ठचितियं भासियं च हा दुठ्ठं ।
अन्तोअन्तो उज्झमि पच्छुत्तावेण वेदंतो ॥५॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य कदावराहसोहणयं ।
णिदणगरहण जुत्तो मणवचकाएण पडिकमणं ॥६॥

एइंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणप्फदिकाइया, तसकाइया – एदेसिं उद्दावणं परिदावणं, विराहणं, उवघादो, कदो वा कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वदसमिदिंदियरोधो, लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेयभत्तं च ।।

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थपमादकदादो अइचारादोणिवत्तोहं ।।

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

पञ्चमहाव्रत–पञ्चसमिति–पंचेन्द्रियरोध-लोच षडावश्यक-क्रिया-अष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्य-संयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशयविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलं सम्पूर्णं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं, द्रढव्रतं, सुव्रतं समारूढं ते मे भवन्तु ।

अथ सर्वातिचारविशुद्धयर्थं दैवसिक–रात्रिकप्रतिक्रमण-क्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-ार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं, आलोचनासिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इति प्रतिज्ञाप्य
णमो अरहताणमित्यादि सामायिकदडक पठित्वा
कायोत्सर्गं कुर्यात् थोसामीत्यादि
चतुर्विंशतिस्तव पठतु)

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमितविद्विषे ।।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते ।।१।।
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्ताजुत्ताणं अट्ठविहकम्ममुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्भयम्मि पयिट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं सं सिद्धाणं चरित्तासिद्धाणं अतीदाणागद-वट्ठमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं ाहिमरणं जिनगुणसंपत्ती होउ मज्भं ।

आलोचना

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो, तेरसविहो परिविहाविदो, पंचमहव्वदाणि, पंचसमिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि, तत्थ-पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा, असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा ंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंता, हरिआ, बीआ, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणु म-णिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

बेइन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खिकिमिसंख-खुल्लुय-वराडय-अक्ख-रिठ्ठवाल-संबुक्क-सिप्पि-पुलविकाइया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरन्तो वा समणुमणिदो वा, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

तेइन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुन्थु-द्दे हियविंछिय-गोंभिद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं

वदसमिदिंदियरोधो, लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेयभत्तं च ।।

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थपमादकदादो अइचारादोणिवत्तोहं ।।

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

पञ्चमहाव्रत—पञ्चसमिति—पंचेन्द्रियरोध-लोच षडावश्यक-क्रिया-अष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्य-संयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशयविध चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलं सम्पूर्णं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं, द्रढव्रतं, सुव्रतं समारूढं ते मे भवन्तु ।

अथ तिचारविशुद्धयर्थं दैवसिक—रात्रिकप्रतिक्रमण-क्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-र्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं, आलोचनासिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इति प्रतिज्ञाप्य
णमो अरहंताणमित्यादि सामायिकदडक पठित्वा
कायोत्सर्गं कुर्यात् थोसामीत्यादि
चतुर्विंशतिस्तव पठतु)

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमितविद्विषे ।।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते ।।१।।
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्ताजुत्ताणं अट्ठविहकम्ममुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्झयम्मि पयिट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं सं सिद्धाणं चरित्तासिद्धाणं अतीदाणागद-वट्ठमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ती होउ मज्झं।

आलोचना

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो, तेरसविहो परिविहाविदो, पंचमहव्वदाणि, पंचसमिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि, तत्थ-पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा, असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा खेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंता, हरिआ, बीआ, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुम-ण्णिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

बेइन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खिकिमिसंख-खुल्लुय-वराडय-अक्ख-रिट्ठवाल-संबुक्क-सिप्पि-पुलविकाइया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरन्तो वा समणुमण्णिदो वा, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

तेइन्दिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुन्थु-द्देहियविंछिय-गोंभिद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं

विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरन्तो वा समणुमण्णिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥३॥

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंसमसयमक्खि-पयग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावण विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरन्तो वा समणुमण्णिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

पंचिंदिया जीवा असखेज्जासंखेज्जा अंडाइया पोदाइया जराइया रसाइया संसेदिमा सम्मुच्छिमा उब्भेदिमा उव्वादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु एदेसिं उद्दावण परिदावण विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरन्तो वा समणुमण्णिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥५॥

प्रतिक्रमणपीठिकादण्डक

इच्छामि भन्ते ! देयसियम्मि (राईयम्मि) आलोचेउं, पंचमहव्वदाणि, तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदत्तादाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठं अणुव्वदं राई भोयणादो वेरमणं, ईरियासमिदीए भासासमिदीए एसणासमिदीए आदाननिक्खेवण-समिदीए, उच्चारपस्सवण–खेल–सिंहाणवियडिपइट्ठावणिया-समिदीए, मणगुत्तीए वचिगुत्तीए कायगुत्तीए, णाणेसु दंसणेसु चरित्तेसु, बावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठारससीलसहस्सेसु, चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु, वारसण्हं संजमाणं, वारसण्हं तवाणं, वारसण्हं अंगाणं, चोदसण्हं पुव्वाणं, दसण्हं समणधम्माणं, दसण्हं धम्मज्झाणाणं, णवण्हं

बंभचेरगुत्तीणं, णवण्हं णोकसायाणं, सोलसण्हं, कसायाणं, अट्ठण्हं कम्माणं, अट्ठण्हं पवयणमाउयाणं, अट्ठण्हं सुद्धीणं, सत्तण्हं भयाणं,सत्तविहसंसाराणं,छण्हं जीवणिकायाणं, छण्हं आवासयाणं, पंचण्हं इन्दियाणं, पञ्चण्हंमहव्वदाणं, पंचण्हं चरित्ताणं, चउण्हं सण्णाणं, चउण्हं पच्चयाणं,चउण्हं उवसग्गाणं, मूलगुणाणं, उत्तर-गुणाणं, दिट्ठियाए पुट्ठियाए पदोरि　ाए परदावणियाए, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रागेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा, एदेसि अच्चासणदाए, तिण्हं दण्डाणं, तिण्हं लेस्साणं, तिण्हं गारवाणं, दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणं, तिण्हं अप्पसत्थसङ्किलेसपरि-णामाणं, मिच्छणाण-मिच्छदंसण-मिच्छचरित्ताणं, मिच्छत्तपा-उग्गं, असंयमपाउग्गं, कसायपाउग्गं, जोगपाउग्गं, अपाउग्गसेवण-दाए, पाउग्गगरहणदाए-इत्थं मे जो कोई देवसिओ (राईयो) अविक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि, मए पडिक्कंत तस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडियमरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं　ाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ॥२॥

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवा मचेलमण्हाणं ।
खिदिसवणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

(इति प्रतिक्रमणपीठिकादडक)

अथ सर्वातिचारविशुद्धयर्थं दैवसिक (रात्रिक) प्रतिक्रमण-क्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीप्रतिक्रमणभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरहंताणं इत्यादि दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्।

अनन्तरं थोस्सामीत्यादि पठेत्)

(निषिद्धिकादंडका)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

णमो जिणाणं ३, णमोणिस्सहीए ३, णमोत्थुदे ३ अरहंत! सिद्ध! बुद्ध! णीरय! णिम्मल! सममण! सुभमण! सुसमत्थ! समजोग! समभाव! सल्लघट्ठाण! सल्लघत्ताण! णिब्भय! णीराय! णिद्दोस! णिम्मोह! णिम्मम! णिस्संग! णिस्सल्ल! माण-माय-मोस-मूरण! तवप्पहावण! गुणरयणसलिसायर! अणंत! अप्पमेय! महदिमहावीरवड्ढमाणबुध्दरिसिणो चेदि णमोत्थुए णमोत्थुए णमोत्थुए।

मम मंगलं अरहंता य सिद्धा य बुद्धा य जिणा य केवलिणो ओहिणाणिणो मणपज्जयणाणिणो चउदसपुव्वंगमिणो सुदसमिदिसमिद्धा य तवो य वारहविहो तवस्सी, गुणा य गुणवंतो य, महरिसी तित्थं तित्थंकरा य, पवयणं पवयणी य, णाणं णाणी य, दंसणं दंसणी य, संजमो संजदा य, विणओ विणदा य, बंभचेरवासो बंभचारी य, गुत्तीओ चेव गुत्तिमंतो य, मुत्तीओ चेव मुत्तिमंतो य, समिदीओ चेव समिदिमतो य, सुसमयपरसमयविदू, खंतिक्खवगा य खंतिवंतो य, खीणमोहा य

खीणवंतो य, बोहियबुद्धा य बुद्धिमंतो य, चेइयरुक्खा य चेंइयाणि ।

उड्ढमहतिरियलोए सिद्धायदणाणि णमंसामि, सिद्धणिसीहियाओ अट्ठावयपव्वए सम्मेदे उज्जंते चंपाए पावाए मज्झिमाए हत्थिवालिय सहाए जाओ अण्णाओ काओवि णिसीहियाओ जीवलोयम्मि, इसिपब्भारतलग्गयाणं सिद्धाणं बुद्धाण कम्मचक्कमुक्काणं णीरयाणं णिम्मलाण गुरुआइरिय- उवज्झायाणं पव्वत्तित्थेर-कुलयराणं चाउवण्णो य समणसंघो य भरहेरावएसु दससु पंचसु महाविदेहेसु । जे लोए संति साहवो संजदा तवसी एदे मम मंगलं पविरां । एदेहं मगलं करेमि भावदो विसुद्धो सिरसा अहिवंदिऊणं सिद्धे काऊण अंजलिं मत्थयम्मि, तिविहं तियरणसुद्धो ।।६।।

(इति निषिद्धिकादडक)

पडिक्कमामि भंते ! देवसियस्स अइचारस्स अणाचारस्स मणदुच्चरियस्स वचिदुच्चरियस्स कायदुच्चरियस्स णाणाइचारस्स दंसणाइचारस्स 'तवाइचारस्स वीरियाइचारस्स चारित्ताइचारस्स पंचण्हं महव्वयाण पंचण्हं समिदीणं तिण्हं गुत्तीणं छण्हं आवासयाण छण्हं जीवणिकायाणं विराहणाए पील कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समगुणमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कड ।।१।।

पडिक्कमामि भंते ! अइगमणे णिग्गमणे ठाणे गमणे चंकमणे उव्वत्तणे आउंटणे पसारणे आमासे परिमासे कुइदे कक्कराइदे चलिदे णिसण्णे सयणे उव्वट्टणे परियट्टणे एइंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं जीवाणं संघट्टणाए संघादणाए उद्दावणाए परिदावणाए विराहणाए एत्थ मे

जो कोई देवसि ाो (राईओ) अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।२।।

पडिक्कमामि भंते ! इरियावहियाए विराहणाए उड्ढमुहं चरंतेण वा अहोमुहं चरंतेण वा तिरिमुहं चरंतेण वा दिसिमुहं चरंतेण वा विदिसिमुहं चरंतेण वा पाणचंकमणदाए वीयचंकमणदाए हरियचंकमणदाए उत्तिंग-पणय-दय-मट्टिय-मक्कडय-तन्तु-सत्ताण चंकमणदाए पुढविकाइयसंघट्टणाए आउकाइयसंघट्टणाए तेउकाइयसंघट्टणाए वाउकाइयसंघट्टणाए वणप्फदिकाइयसंघट्टणाए तसकाइयसंघट्टणाए उद्दावणाए परिदावणाए विराहणाए इत्थ मे जो कोई इरियावहियाए अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।३।।

पडिक्कमामि भंते ! उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण वियडियपइट्ठावणियाए पइट्ठावंतेण जो कोई पाणा वा भूदा वा जीवा वा सत्ता वा संघट्टिदा वा संघादिदा वा उद्दाविदा वा परिदाविदा वा इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईयो) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।४।।

पडिक्कमामि भंते ! अणेसणाए पाणभोयणाए पणयभोयणाए वीयभोयणाए हरियभोयणाए आहाकम्मेण वा पच्छाकम्मेण वा पुराकम्मेण वा उद्दिट्ठयडेण वा णिद्दिट्ठयडेण वा दयसंसिट्ठयडेण वा रससंसिट्ठयडेण वा परिसादणियाए पइट्ठावणियाए उद्देसियाए निद्देसियाए कीदयडे मिस्से जादे ठविदे रइदे अणसिट्ठे बलिपाहुडदे पाहुडदे घट्टिदे मुच्छिदे अइभोयणाए इत्थ मे जो कोई गोयरिस्स अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे ु ड ।।५।।

पडिक्कमामि भंते ! सुमणिंदियाए विराहणाए इत्थि-विप्परियासियाए दिट्ठिविप्परियासियाए मणविप्परियासियाए वचिविप्परियासियाए कायविप्परियासियाए भोयणविप्परियासियाए उच्चासियाए सुमणदंसणविप्परियासियाए पुव्वरए पुव्व-खेलिए णाणाचिंतासु विसोतियासु इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥६॥

पडिक्कमामि भंते ! इत्थीकहाए अत्थकहाए भत्तकहाए रायकहाए चोरकहाए वेरकहाए परपासंडकहाए देसकहाए भास-कहाए अकहाए विकहाए णिट्ठुल्लकपाए परपेसुण्णकहाए कंद-प्पियाए कुक्कुच्चिहाए डंबरियाए मोक्खरियाए अप्पपसंसणदाए परपरिवादणदाए परदुगंछणदाए परपीडाकराए सावज्जाणु-मोयणियाए इत्थ मे जो कोई देवसीओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥७॥

पडिक्कमामि भंते ! अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे इहलोय सण्णाए परलोयसण्णाए आहारसण्णाए भयसण्णाए मुहुणसण्णाए परिग्गह-सण्णाए कोहसल्लाए माणसल्लाए मायसल्लाए लोहसल्लाए पेम्मसल्लाए पिवासल्लाए णियाणसल्लाए मिच्छादंसणसल्लाए कोहकसाए माणकसाए मायकसाए लोहकसाए किण्हलेस्सपरि-णामे णीललेस्सपरिणामे काउलेस्सपरिणामे आरम्भपरिणामे परिग्गहपरिणामे पडिसयाहिलासपरिणामे मिच्छादंसणपरिणामे असंजमपरिणामे पावजोगपरिणामे कायसुहाहिलासपरिणामे सद्देसु रूवेसु गन्धेसु रसेसु फासेसु काइयाहिकरणियाए पदोसियाए परिदावणियाए पाणाइवाइयासु इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥८॥

पडिक्कमामि भंते ! एक्के भावे अणाचारे, बेसु राय-

जो कोई देवसि ाो (राईश्रो) श्रदिक्कमो वदिक्कमो श्रइचारो श्रणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।२।।

पडिक्कमामि भंते ! इरियावहियाए विराहणाए उड्ढमुहं चरंतेण वा श्रहोमहं चरंतेण वा तिरिमुहं चरंतेण वा दिसिमुहं चरंतेण वा विदिसिमुहं चरंतेण वा पाणचंकमणदाए वीयचंकमणदाए हरियचंकमणदाए उत्तिग-पणय-दय-मट्टिय-मक्कडय-तन्तु-सत्ताण चंकमणदाए पुढविकाइयसंघट्टणाए श्राउकाइयसंघट्टणाए तेउकाइयसंघट्टणाए वाउकाइयसंघट्टणाए वणप्फदिकाइयसंघट्टणाए तसकाइयसंघट्टणाए उद्दावणाए परिदावणाए विराहणाए इत्थ मे जो कोई इरियावहियाए श्रइचारो श्रणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।३।।

षडिक्कमामि भंते ! उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण ि डियपइट्ठावणियाए पइट्ठावंतेण जो कोई पाणा वा भूदा वा जीवा वा सत्ता वा संघट्ठिदा वा संघादिदा वा उद्दाविदा वा परिदाविदा वा इत्थ मे जो कोई देवसि ाो (राईयो) श्रइचारो श्रणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।४।।

पडिक्कमामि भंते ! श्रणेसणाए पाणभोयणाए पणयभोयणाए वीयभोयणाए हरियभोयणाए श्राहाकम्मेण वा पच्छाकम्मेण वा पुराकम्मेण वा उद्दिट्ठयडेण वा णिद्दिट्ठयडेण वा दयसंसिट्ठयडेण वा र ंसिट्ठयडेण वा परिसादणियाए पइट्ठावणियाए उद्दे सियाए निद्दे सियाए कीदयडे मिस्से जादे ठविदे रइदे श्रणसिट्ठे बलिपाहुडदे पाहुडदे घट्टिदे मुच्छिदे श्रइमत्तभोयणाए इत्थ मे जो कोई गोयरिस्स श्रइचारो श्रणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।५।।

पडिक्कमामि भंते ! सुमणिंदियाए विराहणाए इत्थि-विप्परियासियाए दिट्ठिविप्परियासियाए मणविप्परियासियाए वचिविप्परियासि आए कायविप्परियासियाए भोयणविप्परिया-सियाए उच्च आए सुमणदंसणविप्परियासि आए पुव्वरए पुव्व-खेलिए णाणाचितासु विसोतियासु इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।६।।

पडिक्कमामि भंते ! इत्थीकहाए अत्थकहाए भत्तकहाए रायकहाए चोरकहाए वेरकहाए परपासंडकहाए देसकहाए भास-कहाए अकहाए विकहाए णिट्ठुल्लकपाए परपेसुण्णकहाए कंद-प्पियाए कुक्कुच्चिहाए डंबरियाए मोक्खरियाए अप्पपसंसणदाए परपरिवादणदाए परदुगंछणदाए परपीडाकराए सावज्जाणु-मोयणियाए इत्थ मे जो कोई देवसीओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।७।।

पडिक्कमामि भंते ! अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे इहलोय सण्णाए परलोयसण्णाए आहारसण्णाए भयसण्णाए मुहुणसण्णाए परिग्गह-सण्णाए कोहसल्लाए माणसल्लाए मायसल्लाए लोहसल्लाए पेम्मसल्लाए पिवासल्लाए णियाणसल्लाए मिच्छादंसणसल्लाए कोहकसाए माणकसाए मायकसाए लोहकसाए किण्हलेस्सपरि-णामे णीललेस्सपरिणामे काउलेस्सपरिणामे आरम्भपरिणामे परिग्गहपरिणामे पडि आहिलासपरिणामे मिच्छादंसणपरिणामे असंजमपरिणामे पावजोगपरिणामे कायसुहाहिलासपरिणामे सद्देसु रूवेसु गन्धेसु रसेसु फासेसु काइयाहिकरणियाए पदोसियाए परिदावणियाए पाणाइवाइयासु इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।८।

पडिक्कमामि भंते ! एक्के भावे अणाचारे, बेसु राय

दासेसु, तीसु दंडेसु, तीसु गुत्तीसु, तीसु गारवेसु, चउसु कसाएसु, चउसु सण्णासु, पंचसु महव्वएसु, पंचसु समिदीसु, छसु जीवणिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु भएसु, अट्ठसु मएसु, णवसु बभचेरगुत्तीसु, दसविहेसु समणधम्मेसु, एयारसविहेसु उवासयपडिमासु, वारसविहेसु भिक्खुपडिमासु, तेरसविहेसु किरियाट्ठाणेसु, चउदसविहेसु भूदगामेसु, पण्णरसविहेसु पमायठ्ठाणेसु, सोलस विहेसु पवयणेसु, सत्तारसविहेसु असंजमेसु अठ्ठारसविहेसु, असंपराएसु, एक्कवीसाए सबलेसु, बावीसाए परीसहेसु, तेवीसाए सुद्दयडज्झाणेसु, चउवीसाए अरहतेसु, पणवीसाए किरियट्ठाणेसु छव्वीसाए पुढवीसु, सत्तावीसाए अणगारगुणेसु, अठ्ठावीसाए आयारकप्पेसु, एउणतीसाए पावसुत्तपसंगेसु, तीसाए मोहणीठाणेसु, एक्कत्तिसाए कम्मविवाएसु, बत्तीसाए जिणोवसेएसु, तेत्तीसाए अच्चासणदाए, सखेवेण जीवाण अच्चासणदाए, अजीवाण अच्चासणदाए, णाणस्स अच्चासणदाए, दंसणस्य अच्चासणदाए, चरित्तस्य अच्चासणदाए, तवस्य अच्चासणदाए, वीरियस्य अच्चासणदाए, त सव्वं पुव्वं दुच्चरियं गरहामि, आगामेसिएसु पच्चुपण्ण इक्कतं पडिक्कमामि, अणागयं पच्चक्खामि, अगरहियं गरहामि, अणिंदियं णिंदामि, अणालोचियं आलोचेमि, आराहणमब्भुट्ठेमि, विराहणं पडिक्कमामि इत्थ मे जो कोई देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥६॥

इच्छामि भंते ! इमं निगंथं पावयणं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेगइयं सामाइयं ससुद्धं सल्लघट्टाणं सल्लघत्ताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्ग खंत्तिमग्गं मुत्तिमग्गं पमुत्तिमग्गं मोक्खमग्गं पमोक्खमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं सव्वदुक्खपरिहाणिमग्गं सुचरियपरिणिव्वाणमग्गं अवित्तह अवि संति पवयणं उत्तमं तं

सद्दहामि तं पत्तियामि त रोचेमि तं फासेमि इदोत्तरं अण्ण णत्थि ण भूदं (ण भवं) ण भविस्सदी णाणेण वा दंसणेण वा चरित्तेण वा सत्तेण व इदो जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंत्ति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति पडिवियाणंति समणोमि संजदोमि उवरदोमि उवसंतोमि उवहिणियडिमाणमायमोस-मिच्छणाण मिच्छदंसण मिच्छचरित्तं च पठिविरदोमि, सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्तं च रोचेमि ज जिणवरेहि पण्णत्तं, इत्थ मे जो कोई देवसियो (राईयो) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१०॥

पडिक्कमामि भंते ! सव्वस्य सव्वकालियाए इरियासमिदीए भासासमिदीए एसणासमिदीए आदाणनिक्खेवणसमिदिए उच्चा-रपस्सवणखेलसिंहाणयवियडिपइट्ठावणिसमिदीए मणगुत्तीए वचिगुत्तीए कायगुत्तीए पाणादिवादादो वेरमणाए मुसावादादो वेरमणाए अदिण्णदाणादो वेरमणाए मेहुणादो वेरमणाए परिग्गहादो वेरमणाए राईभोयणदो वेरमणाए सव्वविराहणाए सव्वधम्मअइ-क्कमणदाए सव्वमिच्छाचरियाए इत्थ मे जो कोई देवसियो (राईओ) अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥११॥

इच्छामि भंते ! वीरभत्तिकाउस्सग्गो जो मे देवसिओ (राईओ) अइचारो अणाचारो अभोगो अणाभोगो काइओ वाइओ माणसिओ दुच्चितीओ दुब्भासिओ दुप्परिणामीओ दुस्समिणोओ णाणे दंसणे चरित्ते सुत्ते सामाइए, पंचण्हं महव्व-याणं पंचण्हं समिदीणं तिण्हं गुत्तीणं, छण्हं, जीवणिकायाणं, छण्हं आवासयाणं विराहणाए अट्ठविहस्स कम्मस्स णिग्घादणाए अण्णहा उस्सासिएण वा णिस्सासिएण वा उम्मिसिएण वा णि-म्मिसिएण खासिएण वा छिंकिएण वा जंभाइएण वा सुहुमेहिं अंग-चलाचलेहिं दिट्ठिचलाचलेहिं एदेहिं, सव्वेहिं असमाहिपत्तेहिं

आयारेहिं जाव अरहंताणं भयवंताण पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

वदसमिदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
ऐदे खलु मूलगुणा समणाणं जिरवरेहि पण्णत्ता।
ऐत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावभं होहु मज्णं।

अथ सर्वातिचारविशुद्धयर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां कृत-दोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दनास्तवसमेतं निष्ठितकरणवीरभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम्

(इति प्रतिज्ञाप्य)

दिवसे १०८ रात्रौ च ५४ उछ्वासेषु णमो अरहताण इत्यादि दडक पठित्वा कायोत्सर्ग कुर्यात्, पश्चात् थोस्सामीत्यादि चतुर्विंशतिस्तव पठेत्

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्
पर्यायानपि भूतभाविभवतः नि् सदा ंदा।
जानीते युगपत् प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्युते।
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय नमः ॥१॥
वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य वीरं तपो
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो हे वीर ! भद्रं त्वयि ॥२॥
ये वीरमादौ प्रणमंति नित्यं ध्यानस्थिताः संयमयोगयुक्ताः।
ते वीतशोका हि भवंति लोके संसारदुर्गं विषमं तरंति ॥३॥

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कंधबंधो
यमनियमतपोभिर्वर्धितः शीलशाखः।

समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रबालो
गुणकुसुमसुगंधिः सत्तपश्चित्त पत्रः ॥४॥
ि सुखफलदायी यो ाछाययोद्यः
शुभजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः।
दुरितरि ापं प्रापयन्नंतभावं
स भवविभहान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः ॥५॥
चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंचभेदं पंचमचारित्रलाभाय ॥६॥
धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय ॥७॥
धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥८॥

अ चलिका

इच्छामि भंते! पडिक्कमणादिचारमालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त- -वीरियाचारेसु जमणियम-संजम-सील-मूलुत्तरगुणेसु सव्वमईचारं सावज्जजोगं पडिविरदोमि असंखेज्ज-लोगअज्झवसाठाणाणि अप्पसत्थजोगसण्णाणिंदियकसायगारव-किरियासु मणवयणकायकर णदुप्पणिहाणाणि परिचिंतियाणि किण्हणीलकाउलेस्साओ विकहापलिकुंचिएण उम्मगहस्सरदिअर-दिसोयभयदुगंछवेयणविज्जंभजंभाइयाणि अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणा-माणि परिणामदाणि अणिहुदकरचरणमणवयकायकरणेण अि -त्तबहुलपरायणेण अपडिपुण्णेण वासरक्खरावयपरिसंघायपडिव-त्तिए वा अच्छाकरिदं मिच्छा मेलिदं आमेलिदं वा मेलिदं वा अण्णहादिण्णं अण्णहापडिच्छदं आवासएसु परिहीणदाए कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणु मणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ।।१।।
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ।।२।।
छेदोवट्ठवणं होदु मज्झं

अथ सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं देवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इति प्रतिज्ञाप्य)

णमो अरहंताणं इत्यादि (दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्) थोस्सामीत्यादि (चतुर्विंशतिस्तवं पठेत्) ।

चउवीसं तित्थयरे उसहाइवीरपच्छिमे वंदे ।
सव्वे सगणगणहरे सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।१।।

ये लोकेष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवांतर्गताः ।
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चंद्रार्कतेजोधिकाः ।।
ये साध्विद्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रण[illegible]त्वार्[illegible]ाः ।
देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम् ।।२।।
तान् नाभेयं देवपूज्यं जिनवरम[illegible]ोकप्रदीपम् ।
[illegible] संभवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ।।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगंधम् ।
क्षांतं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चंद्रनामानमीडे ।।३।।
विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं ।
श्रेयान्सं शीलकोषं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं ।।

मुक्तं दांतेंद्रियाश्वं विमलमृषिपति सिंहसैन्यं मुनीन्द्रं ।
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शांति शरण्यम् ।।४।।
कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रवणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं ।
मल्लि विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् ।।
देवेंद्राच्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवांतम् ।
पार्श्वं नागेंद्रवंद्यं शरणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या ।।५।।

अ चलिका

इच्छामि भन्ते ! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सगो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाण संपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरस-हियाणं चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिमउडम-त्थयमहिदाणं बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगू-ढाणं थुइसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहिमरणं जिनगुणसम्पत्ती होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ।।१।।
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तं हं ।।२।।

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

अथ सर्वातिचारविशुद्धयर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां श्रीसिद्धभक्ति-प्रतिक्रमणभक्ति-निष्ठितकरणवीरभक्ति-चतुर्विंशति-तीर्थंकरभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकदोषविशुद्धयर्थं आत्मपवित्रीकर-णार्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इति विज्ञाप्य)

णमो अरहंताणं इत्यादि दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात् थोस्सामीत्यादि स्तवं पठेत् ।

[पूर्वोक्ता समाधिभक्तिं पठेत्]

अथेष्ट प्रार्थना

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेपवर्गः ॥१॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥२॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमहु णाणदेव ! य मज्झवि दुक्ख ं कुणउ ॥३॥

आलोचना

इच्छामि भंते ! समाहिभत्ति काउस्सग्गो ो तस्सालोचेउं, रयणत्तयपरूवपरमप्पज्झाणलक्खणसमाहिभत्तीए । णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

इति दैवसिक-रात्रिक-प्रतिक्रमणम् समाप्तम् ।

ाि ादि- ि ण ्

[शिष्यसधर्माण पाक्षिकादिप्रतिक्रमे लघ्वीभि सिद्ध-
श्रुताचार्यभक्तिभिराचार्य वन्देरन]

नमोऽस्तु आचार्यवन्दनायां प्रतिष्ठापनसिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

[जाप्य ६]

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ।।२।।
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ।।२।।

कोटी ं द्वादश चैव कोटयो लक्षाण्यशीतित्र्यधिकानि चैव ।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि ।।१।।
अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहिं सिरसा ।।२।।

नमोऽस्तु आचार्यवन्दनायां प्रतिनिष्ठापनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

[जाप्य ६]

श्रुतजलधिपारगेभ्यः स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः ।
सुचरिततपोनिधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः ।।१।।
छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसंदरिसे ।
सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिये सदा वन्दे ।।२।।
गुरुभत्तिसंजमेण य तरंति संसारसायरं घोरं ।
छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावंति ।।३।।

ये नित्यं व्रतमन्त्रहोमनिरता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः ।
षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रियाः साधवः ॥
शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चन्द्रार्कतेजोधिकाः ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणंतु मां साधवः ॥४॥

गुरवः पांतु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥५॥

(तत इष्टदेवतानमस्कारपूर्वक, "समता सर्वभूतेषु" इत्यादि पठित्वा गणी शिष्यसधर्मगणयुक्त, "सिद्धानुद्धूतकर्म" इत्यादिका गुर्वीं सिद्धभक्ति साचलिका, "येनेंद्रान्" इत्यादिका च चारित्रभक्ति वृहदालोचनासहिता अर्हंद्भट्टारकस्याग्रे कुर्यात् । सैषा सूरे शिष्यसधर्मणा च साधारणी क्रिया ।)

नमः श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकाना यद्विद्या दर्पणायते ॥१॥

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ॥२॥

सर्वातिचारविशुद्धयर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं –सिद्धभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम्–

(णमो अरहंताण इत्यादिदंडक पठित्वा कायोत्सर्ग कृत्वा थोस्सामि इत्यादिक विधाय सिद्धानुद्धूतकर्म इत्यादिसिद्धभक्ति साचलिका पठेत् ।)

सिद्धभक्ति

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान् ।
वन्दे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः ।।

सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणोच्छादिदोषापहारात् ।
योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥१॥
नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः ।
अस्त्यात्माऽनादिबद्धः स्वकृतजफलभुक्तत्क्षयान्मोक्षभागी ॥
ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा ।
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥२॥
स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या ।
सम्पद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततयाव्यंजिताचिन्त्यसारैः ॥
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुख महावीर्यसम्यक्त्वलब्धिः ।
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥३॥
जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन्वितन्वन् ।
धुन्वन्ध्वांतं नितांतं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभा ॥
कुर्वन्सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा ।
आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥४॥
छिंदन् शेषानशेषान्निगलवलकलीस्तैरनंतस्वभावैः ।
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ॥
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावैः ।
रूर्ध्वंव्रज्यस्वभावात्सम यमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेग्र्ये ॥५॥
अन्याकाराप्तिहेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ॥
क्षुत्तृष्णाश्वासकामज्वरमरणजरानिष्टयोगप्रमोह ।
व्यापत्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥६॥
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालं ।
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निष्प्रतिद्वन्द्वभावम् ।

अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममभितं शाश्वतं सर्वकालम् ।।
उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ।।७।।
नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या ।
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्न हि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ।।
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद् ।
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ।।८।।
तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि- ।
चर्यासिद्धाः समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।।
भूता भव्या भ ः सकलजगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ।।९।।

म चलिका

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं, अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्झयम्मि पइट्ठियाणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, वंदामि, पूजेमि, णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं हिमरणं जिणगुणसम्पत्ती होउ मज्झं ।

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थ आलोचनाचारित्रभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम्—

(इच्युच्चार्य "णमो अरहताण" इत्यादि दडक पठित्वा कायमुत्सृज्य "थोस्सामि" इत्यादि दण्डकमधीत्य "येनेन्द्रान्" इत्यादि चारित्रभक्ति सालोचना पठेत्—

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान् ।
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुंगोत्तमाङ्गान्नतान् ।।

स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा ।
वन्दे पंचतयं तमद्य निगदन्नाचारमभ्यर्चितम् ।।१।।
अर्थव्यंजनतद्द्वयाविकलताकालोपधाप्रश्रयाः ।
स्वाचार्याद्यपह्नवो बहुमतिश्चेत्यष्टधा व्याहृतम् ।।
श्रीमज्ज्ञातिकुलेंदुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽञ्जसा ।
ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम् ।।२।।
शंकादृष्टिविमोहकांक्षणविधिव्यावृत्तिसन्नद्धतां ।
वात्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं धर्मोपबृंहक्रियाम् ।।
शक्त्या शासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनम् ।
वन्दे दर्शनगोचरं सुचरितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ।।३।।
एकांते शयनोपवेशनकृतिः सन्तापनं तानवम् ।
संख्यावृत्तिनिबंधनामनशनं विष्वाणमर्द्धोदरम् ।।
त्यागं चेन्द्रियदंतिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम् ।
षोढा बाह्यमहं स्तुवे शिवगतिप्राप्त्यभ्युपायं तपः ।।४।।
स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः सम्प्रत्यवस्थापनं ।
ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ वृद्धे च बाले यतौ ।।
कायोत्सर्जनसत्क्रिया विनय इत्येवं तपः षड्विधं ।
वन्देऽभ्यन्तरमन्तरंगबलवद्विद्वेषिविध्वंसनम् ।।५।।
सम्यग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते ।
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्नाद्यते ।।
या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा लघ्वी भवोदन्वतो ।
वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं वंदे सतामर्चितम् ।।६।।
तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयः ।
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ।।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृष्टं परैः ।
आचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ।।७।।

आचारं सहपञ्चभेदमुदितं तीर्थं परं मङ्गलं ।
निर्ग्रंथानपि सच्चरित्रमहतो वंदे समग्रान्यतीन् ।।
आत्माधीनसुखोदयामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनीम् ।
इच्छन्केवलदर्शनावगमनप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ।।८।।

अज्ञानाद्यदवीवृतं नियमिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा ।
तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं चैनो निराकुर्वति ।।
वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिनयत्यद्भुतं ।
तन्मिथ्या गुरु दुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदतो निंदितम् ।।९।।

संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः ।
प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शान्तैनसः प्राणिनः ।।
मोक्षस्यैवकृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तराम् ।
आरोहन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेन्द्रमोजस्विनः ।।१०।।

आलोचना

इच्छामि भंते ! अट्ठमियम्मि आलोचेउं, अट्ठण्हं दिवसाणं अट्ठण्हं राईणं अब्भंतरादो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! पक्खियम्मि आलोचेउं, पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरसण्हं राईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! चाउमासि म्मि आलोचेउं, चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं वीसुत्तरसयदिवसाणं वीसुत्तरसय-राईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! संवच्छरियम्मि आलोचेउं, बारसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्हं छावट्ठिसयदिवसाण ति

छावठ्ठिसयराईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चिरित्तायारो चेदि ।

तत्थ णाणायारो, काले, विणए, उवहाणे, बहुमाणे, तहेव अणिण्हवणे, विंजण-अत्थ-तदूभये चेदि णाणायारो अठ्ठविहो परिहाविदो, से अक्खरहीणं वा, सरहीणं वा, पदहीणं वा, विंजणहीणं वा, अत्थहीणं वा, गंथहीणं वा, थएसु वा, थुईसुवा अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोगद्दारेसु वा, अकाले सज्झाओ कदो वा कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिणदो, काले वा परिहाविदो, अच्छाकारिदं, मिच्छा मेलिदं, आमेलिद, वामेलिदं, अण्णहादिण्णं, अण्णहा पडिच्छिदं, आवासएसु परिहीणदाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।१।।

दसणायारो अठ्ठविहो, णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढदिठ्ठि य, उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा चेदि । अठ्ठविहो परिहाविदो, संकाए कंखाए विदिगिंछाए अण्णदिठ्ठीपसंसणदाए परपाखण्डपसंसणदाए अणायदणसेयणदाए अवच्छल्लदाए अप्पहावणदाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।२।।

तवायारो बारसविहो, अब्भंतरो छव्विहो बाहिरो छव्विहो, चेदि तत्थ बाहिरो अणसणं आमोदरियं वित्तिपरिसंखा रसपरिच्चाओ सरीरपरिच्चाओ विवित्तसयणासणं चेदि । तत्थ अब्भंतरो पायच्छित्तं विणओ वेज्जावच्चं सज्झाओ झाणं विउस्सग्गो चेदि । अब्भतरं बाहिरं बारसविहं तवोकम्मं ण कदं णिसण्णेण, पडिक्कंतं, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।३।।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वरवीरियपरिक्कमेण जहुत्तमाणेण बलेण वीरियेण परिक्कमेण णिगूहियं तवोकम्मं ण कदं णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।४।।

चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वदाणि, पंच समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि । तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं । से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता, हरिया, बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तस्स उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासांखेज्जा, कुक्खिकिमिशंखखुल्लय-वराडय-अक्ख-रिठ्ठ - गंडवाल-संबुक्क-सिप्पिपुलविकाइया तेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुन्थु-देहिय-विछय-गोभिंद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंसम -मक्खिय-पयंग-कीड-भमर-महुयरि-गोमवि इया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइया पोदाइया जराइया रसाइया ससेदिमा सम्मुच्छिया उब्भेदिमा उववादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सासु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

आहावरे दुव्वे महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा राएण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पमादेण वा पेम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केणवि कारणेण जादेण वा सव्वो मुसावादो भासिओ भासाविओ भासिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

आहावरे तव्वे महव्वदे अदिण्णदाणादो वेरमणं, से गामे वा णयरे वा खेडे वा कव्वडे वा मडंवे वा मंडले वा पट्टणे वा दोणमुहे वा घोसे वा आसमे वा सहाए वा संवाहे वा सण्णिवेसे वा तिणं वा कट्ठं वा वियडिं वा मणिं वा एवमाइयं अदत्तं गिण्हियं गेण्हावियं गेण्हिज्जंतं समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥३॥

आहावरे चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, से देविएसु वा माणुसिएसु वा तेरिच्छिएसु वा अचेयणिएसु वा मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु, मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु, मणुण्णामणुण्णेसु गंधेसु, मणुण्णामणुण्णेसु रसेसु, मणुण्णामणुण्णेसु फासेसु चक्खिदियपरिणामे सोदिंदियपरिणामे घाणिंदियपरिणामे जिब्भिंदियपरिणामे फासिंदियपरिणामे णोइंदियपरिणामे अगुत्तेण अगुत्तिदिएण णवविहं बंभचरियं ण रक्खियं ण रक्खावियं ण रक्खिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

आहावरे पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, सो वि परिग्गहो दुविहो, अब्भतरो बाहिरो चेदि, तत्थ अब्भंतरो परिग्गहो णाणावरणीयं दंसणावरणीयं वेयणीयं मोहणीयं आउग्गं णामं गोदं अंतरायं चेदि अट्ठविहो, तत्थ बाहिरो परिग्गहो उवयरणभंड–फलह-पीढ-कमंडलु-संथार-सेज्जउवसेज्ज-भत्त-पाणादिभेएण अणेयविहो, एदेण परिग्गहेण अट्ठविहं कम्मरयं बद्धं बद्धावियं

चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वदारिण, पंच समिदोश्रो, तिगुत्तोश्रो चेदि । तत्थ पढम महव्वदं पाणा-दिवादादो वेरमणं । से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असखे-ज्जासखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदि-काइया जीवा अणंताणंता, हरिया, बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तस्स उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासांखेज्जा, कुक्खिकिमिशंख-खुल्लय-वराडय-अ -रिठ्ठ - गंडवाल-संबुक्क-सिप्पिपुलविकाइया तेसिं उद्दावणं, परिदावणं, विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुन्थु-देहिय-विंछय-गोभिंद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दं सय-मक्खिय-पयंग-कीड-भमर-महुयरि-गोमक्खि इया, तेसिं उद्दावणं परिदा-वणं, विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा सम-णुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पंचिंदिया जीवा ंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइया पोदाइया जराइया रसाइया ससेदिमा सम्मुच्छिया उब्भेदिमा उववादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सांसु, एदेसिं उद्दावणं परिदा-वणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा सम-णुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

आहावरे दुव्वे महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा राएण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पमादेण वा पेम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केणवि कारणेण जादेण वा सव्वो मुसावादो भासिओ भासाविओ भासिज्जंतो वि समणु मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।२।।

आहावरे तव्वे महव्वदे अदिण्णदाणादो वेरमण, से गामे वा णयरे वा खेडे वा कव्वडे वा मडंवे वा मंडले वा पट्टणे वा दोण-मुहे वा घोसे वा आसमे वा सहाए वा संवाहे वा सण्णिवेसे वा तिणं वा कट्ठं वा वियडि वा मणि वा एवमाइयं अदत्तं गिण्हियं गेण्हावियं गेण्हिज्जंतं समणु मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।३।।

आहावरे चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, से देविएसु वा माणुसिएसु वा तेरिच्छिएसु वा अचेयणिएसु वा मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु, मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु, मणुण्णा-मणुण्णेसु गंधेसु, मणुण्णामणुण्णेसु रसेसु, मणुण्णामणुण्णेसु फासेसु चक्खिदियपरिणामे सोदिदियपरिणामे घाणिदियपरिणामे जिब्भि-दियपरिणामे फासिंदियपरिणामे णोइंदियपरिणामे अगुत्तेण अगुत्तिदिएण णवविहं बंभचरियं ण रक्खियं ण रक्खावियं ण रक्खिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।४।।

आहावरे पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, सो वि परि-ग्गहो दुविहो, अब्भंतरो बाहिरो चेदि, तत्थ अब्भंतरो परिग्गहो णाणावरणीयं दंसणावरणीयं वेयणीयं मोहणीय आउग्गं णामं गोदं अंतरायं चेदि अट्ठविहो, तत्थ बाहिरो परिग्गहो उवयरण-भंड-फलह-पीढ-कमंडलु-संथार-सेज्जउवसेज्ज-भत्त-पाणादिभेएण अणेयविहो, एदेण परिग्गहेण अट्ठविहं कम्मरयं बद्धं बद्धावियं

बद्धज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।५।।

आहावरे छट्ठे अणुव्वदे राइभोयणादो वेरमणं, से असणं पाणं खाइयं रसाइयं चेदि चउव्विहो आहारो, से तित्तो वा कडुओ वा कसाइलो वा अमिलो वा महुरो वां लवणो वा दुच्चिंतिओ दुब्भासिओ दुप्परिणामिओ दुस्सिमिणिओ रत्तीए भुत्तो भुंजवियो भुज्जियंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।६।।

पंचसमिदीओ ईरियासमिदी भासासमिदी एसणासमिदी आदावणणिक्खेवणासमिदी उच्चारपस्सवणखेलसिंहाणयवियडि-पइट्ठावणासमिदी चेदि । तत्थ पुरियासमिदी पुव्वुत्तरदक्खिणप-च्छिमचउदिसिविदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा दट्ठव्वा डव-डवचरियाए पमाददोसेण पाणभूद जीव सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।।६।।

तत्थ भासासमिदी कक्कसा कडुया परुसा णिट्ठुरा परको-हिणी मज्झंकिसा अइमाणिणी अणयंकरा छेयंकरा भूयाण वहं-करा चेदि दसविहा भासा भासाविया भासिज्जंतो पि समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।७।।

तत्थ एसणासमिदी आहाकम्मेण वा पच्छाकम्मेण वा पुरा-कम्मेण वा उद्दिट्ठयडेण वा णिद्दिट्ठयडेण वा कीडयडेण वा सा-इया रसाइया सइंगाला सधूमिया अइगिद्धीए अग्गिव छण्हं जीव-णिकायाणं विराहणं काऊण अपरिसुद्धं भिक्खं अण्णं पाणं आहारादियं आहारियं आहाराविय आहारिज्जंतं पि समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।८।।

तत्थ आदावणणिक्खेवणसमिदी चक्कलं वा फलहं वा पोथयं वा कमंडलं वा वियडिं वा मणिं वा एवमाइयं उवयरणं अप्पडि-लेहिऊण गेण्हंतेण वा ठवतेण वा पाण-भूद-जीव-सत्ताणं उवघादो

कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।९।।

तत्थ उच्चार-पस्सवण-खेल-सिहाणय-वियडिपइट्ठावणिया समिदी रत्तीए वा वियाले वा अचक्खुविसए अवत्थंडिले अब्भोवयासे सणिद्धे सवीए सहरिए एवमाइएसु अप्पासुगट्ठणेसु पइट्ठावतेण पाण-भूद-जीव-सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।१०।।

तिण्णि गुत्तीओ, मणगुत्तीओ वचिगुत्तीओ कायगुत्तीओ चेदि तत्थ मणगुत्ती अट्ठे झाणे रुद्दे झाणे इहलोयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए एवमाइयासु जा मणगुत्ती ण रक्खिया ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।११।।

तत्थ वचिगुत्ती इत्थिकहाए अत्थकहाए भत्तकहाए रायकहाए चोरकहाए वेरकहाए परपासंडकहाए एवमाइयासु जा वचिगुत्तो ण रक्खि । ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।१२।।

तत्थ कायगुत्ती चितकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा कट्ठकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा एवमाइयासु जा कायगुत्ती ण रक्खिया ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।१३।।

णवसु बंभचेरगुत्तीसु, चउसु सण्णासु, चउसु पच्चएसु, दोसु अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामेसु, तीसु अप्पसत्थसंकिलेसपरिणामेसु, मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्तेसु, चउसु उवसग्गेसु, पंचसु चरित्तेसु, छसु जीवणिकाएसु, छसु आसएसु, सत्तेसु भएसु, अट्ठसु सुद्धीसु (णवसु बंभचेरगुत्तीसु) दससु समणधम्मेसु, दससु मुंडेसु, बारसेसु संजमेसु, वावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठारससीलसहस्सेसु, चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु, मूलगुणेसु,

उत्तरगुणेसु, अठ्ठमयम्मि पक्खियम्मि चउमासियम्मि संवच्छरियम्मि अइक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो जो तं पडिक्कमामि मए पडिक्कंतं, तस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुमइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

(केवलमाचार्यो "णमो अरहंताणं" इत्यादि पचपदान्युच्चार्य कायोत्सर्ग कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादि भणित्वा 'तवसिद्धे' इत्यादिगाथा साञ्चलिका पठित्वा, पुन प्रागुक्तविधि कृत्वा "प्रावृट्काले सविद्युत्" इत्यादिका योगिभक्ति साचलिका पठित्वा "इच्छामि भते ! चरित्तायारो तेरसविहो" इत्यादि दण्डक-पञ्चकमधीत्य तथा "वदसमिदिंदिय" इत्यादिक "छेदोवट्ठावणं होदु मज्झ" इत्यन्त त्रि पठित्वा स्वदोषान् देवस्याग्रे आलोचयेत् । दोषानुसारेण प्रायश्चित्त च गृहीत्वा "पचमहाव्रत" इत्यादि पाठ त्रिर्भणित्वा योग्यशिष्यादे प्रायश्चित्त निवेद्य देवाय गुरुर्भक्ति दद्यात् । तन पुन आचार्ययुक्ता शिष्यसधर्माण सूरेरग्रे इममेव पाठ पठित्वा प्रतिक्रान्तिस्तुति कुर्यु । तद्यथा)

नमोऽस्तु सर्वातिचारविशुद्धयर्थं सिद्धभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम् ।

("णमो अरहंताणं" इत्यादि पचपदान्युच्चार्य कायोत्सर्ग कृत्वा थोस्सा-मीत्यादि भणित्वा–)

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥१॥

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥२॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालो-चेउं, सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमज्झयम्मि पइठ्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाण अतीताणागदवट्टमाण-कालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

नमोऽस्तु सर्वातिचारविशुद्धयर्थमालोचनायोगिभक्ति-कायोत्सर्ग करोम्यहम्—

("णमो अरहंताणं" इत्यादि पचपदान्युच्चार्य, कायोत्सर्गं कृत्वा थोस्मासीति पठित्वा—)

प्रावृट्काले सवि(द्यु)त्प्रपतितसलिले वृक्षमूलाधिवासाः ।
हेमन्ते रात्रिमध्ये प्रतिविगतभयाः काष्ठवत्त्यक्तदेहाः ।।
ग्रीष्मे सूर्यांशुतप्ता गिरिशिखरगताः स्थानकूटांतरस्थाः ।
ते मे धर्मं प्रदद्युर्मुनिगणवृषभा मोक्षनिःश्रेणिभूताः ।।१।।
गिम्हे गिरिसिहरत्था वरिसायाले रुक्खमूलरयणीसु ।
सिसिरे बाहिरसयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं ।।२।।
गिरिकन्दरदुर्गेषु ये वसन्ति दिगंबराः ।
पाणिपात्रपुटाहारास्ते याति परमां गतिम् ।।३।।

इच्छामि भंते ! योगिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालो-चेउं, ढाइज्जदीवदोसमुद्दे सु पण्णारसकम्मभूमिसु आदावण-रुक्खमूलअब्भोवासठाणमोणवीरासणेक्कपासकुक्कु डासणचउछ-पक्खखवणादिजोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

(आलोचना)

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वदाणि पंचसमिदीओ तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमण से पुढवीकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासखेज्जा कुक्खिकिमिसंख-खुल्लग-वराडय-अक्ख-रिठ्ठ-गंडवाल-सबुक्क-सिप्पि-पुलविकाइया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

तेइंदिया जीवा असखेज्जासंखेज्जा कुन्थु-द्दे हियचिच्छिय गोभिद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलिया, एदेसि उद्दावण परिदावण उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥३॥

चउरिंदिया जीवा असखेज्जासंखेज्जा दंसमसयमक्खिय-पयंगकीडभमरमहुयरगोमक्खिया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा ˙ ाइया पोदाइया संसेदिया सम्मुच्छिमा उब्भेदिमा उववादिमा अवि चउरासीदिज णिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघाद

कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।।५।।

वदसदिंदिदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाण ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्त च ।।१।।
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ।।२।।
छेदोवट्ठावणं होउ मज्झ ।।३।।

प्रायश्चित्तशोधनरसपरित्यागा क्रियते ।

पंचमहाव्रत-पंचसमिति-पंचेन्द्रियरोध-लोच-षडावश्यक-क्रियादयोऽष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्य-संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशविध चारित्रं, द्वादशविध तपश्चेति सकलसम्पूर्ण अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वक दृढव्रत सुव्रतं समारूढ ते मे भवतु ।।३।।

नमोऽस्तु निष्ठापनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्हम्—

(६ जाप्य)

श्रुतजलधिपारगेभ्यः स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः ।
सुचरिततपोनिधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः ।।१।।
छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसंदरिसे ।
सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिए सदा वंदे ।।२।।
गुरुभत्तिसंजमेण य तरन्ति संसारसायरं घोरं ।
छिण्णंति अठ्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावेंति ।।३।।

ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनि रता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः ।
षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रियासाधवः ।।
शीलप्रवणा गुणप्रहरणाश्चन्द्रार्कतेजोऽधिका ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणन्तु मां साधवः ।।४।।
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगम्भीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ।।५।।

इच्छामि भंते ! पक्खियम्मि आलोचेउं, पंचमहव्वदाणि तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदिण्णदाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्गहादो वेरमणं, छठ्ठं अणुव्वदं राईभोयणादो वेरमणं, तिसु गुत्तीसु णाणेसु दंसणेसु चरित्तेसु बावीसाए परीसहेसु पणवीसाए भावणासु पणवीसाए किरियासु अठ्ठारसशीलसहस्सेसु चउरासीदिगुणसय-सहस्सेसु बारसण्हं संजमाणं बारसण्हं णं बारसण्हं अंगाणं तेरसण्हं चरित्ताणं चउदसण्हं पुव्वाणं एयारसण्हं पडिमाणं दसविहमुंडाणं दसविहसमणधम्माणं दसविहधम्मज्भाणाणं णवण्हं बंभचेरगुत्तीण णवण्हं णोकसायाणं सोलसण्हं कसायाणं अट्ठणं कम्माणं अठ्ठण्हं पउयणमाउयाणं सत्तण्हं भयाणं सत्तविहसंसाराणं छण्हं जीवणि-कायाणं छण्हं आवासयाणं पंचण्हं इंदियाणं पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं समिदीणं पंचण्हं चरित्ताणं चउण्हं सण्णाणं चउण्हं पच्च-याणं चउण्हं उवसग्गाणं मूलगुणाणं उत्तरगुणाणं अठ्ठण्हं सुद्धीणं दिठ्ठियाए पुठ्ठियाए पदोसियाए परिदावणियाए से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रायेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण णा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा एदेसिं अच्चासण-

दाए तिण्हं दंण्डाणं तिण्हं लेस्साणं तिण्हं गारवाणं तिण्हं अप्प-सत्थसंकिलेसपरिणामाणं दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणं मिच्छणाण-मिच्छदंसण-मिच्छचरित्ताणं मिच्छत्तपाउग्गं असंजम-पाउग्गं कसायपाउग्गं जोगपाउग्गं अप्पपाउग्गसेवणदाए पाउग्ग-गरहणदाए इत्थ मे जो कोई वि पक्खियम्मि चउमासियम्मि संवच्छरियम्मि अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो आभोगो अणा-भोगो तस्स भंते ! पडिक्कमामि पडिक्कमंतस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडियमरणं वीरयमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं।

पञ्चमहाव्रतपञ्चसमितिपञ्चेंद्रियरोधलोचषडावश्यक-क्रियादयोऽष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौच-संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः अष्टा-दशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलसम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

प्रतिक्रमणभक्तिः

सर्वातिचारविशुद्धयर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणायां पूर्वाचार्यानु-क्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं प्रतिक्रमणभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्—

(इत्युच्चार्य "णमो अरहंताण" इत्यादि दण्डक पठित्वा कायोत्सर्ग ससूरय विदध्यु)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारिलोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा। सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु जाव अरहंताणं भयवंताणं आदियराणं तित्थयराणं जिणाणं जिणोत्तमाणं केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं परिणिव्वुदाणं अंतयडाणं पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसगाणं, धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्ठीणं देवाहिदेवाणं णाणाणं दंसणाणं चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

करेमि भंते! सामायियं सव्वसावज्जजोगं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचसा काएण ण करेमि ण कारेमि कीरंतं ण समणुमण्णामि, तस्स भंते! अइचारं पच्चक्खामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

सप्तविंशत्युच्छ्वासेषु ९ जाप्य

(यथोक्तपरिकर्मान्तर आचार्य "थोस्सामि" इत्यादि डण्डक गणधरवलय च पठित्वा प्रतिक्रमणदण्डकान् पठेत्। शिष्य

सधर्माणस्तु तावत्कालं कायोत्सर्गेण तिष्ठंतः प्रतिक्रमणदण्डकान् शृणयुः)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे ।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे ।।१।।
लोयसुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वन्दे ।
अरहंते कित्तिस्से चोवीसं चेव केवलिणो ।।२।।
उसहमजियं च वन्दे संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपाहं जिणं च चंदप्पहं वन्दे ।।३।।
सुविंहि च पुप्फयंतं सीयलसेयं च वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि ।।४।।
कुंथुं च जिणवरिंदं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं ।
वन्दामि रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ।।५।।
एवं मए अभित्थुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चोवीसे पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ।।६।।
कत्तिय वन्दिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ।
आरोग्गणाणलाहं दितु समाहिं च मे बोहिं ।।७।।
चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहिं य पयासंता ।
सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।८।।

गणधरवलय

जिनान् जितारातिगणान् गरिष्ठान्
देशावधीन् सर्वपरावधींश्च ।
सत्कोष्ठबीजादिपदानुसारीन्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।१।।

संभिन्नश्रोत्रान्वितसन्मुनींद्रान्
प्रत्येकसम्बोधितबुद्धधर्मान् ।
स्वयंप्रबुद्धांश्च विमुक्तिमार्गान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।२।।

द्विधा मनःपर्ययचित्प्रयुक्तान्
द्विपंचसप्तद्वयपूर्वसक्तान् ।
अष्टाङ्गनैमित्तिकशास्त्रदक्षान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।३।।

विकुर्वणाख्यर्द्धिमहाप्रभावान्
विद्याधरांश्चारणर्द्धिप्राप्तान् ।
श्रितान्नित्यखगामिनश्च
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।४।।

आशीर्विषान् दृष्टिविषान्मुनीन्द्रा–
नुग्रातिदीप्तोत्तमतप्तान् ।
महातिघोरप्रतपः प्रसक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।५।।

ान् सुरैर्घोरगुणांश्च लोके
पूज्यान् बुधैर्घोरपराक्रमांश्च ।
घोरादिसंसद्गुणब्रह्मयुक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।६।।

आमर्द्धिखेलर्द्धि प्रजल्लविट्प्र–
सर्वर्द्धिप्राप्तांश्च व्यथादिहंतॄन् ।
मनोवचः क ोपयुक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ।।७।।

सत्क्षीरसर्पिर्मधुरामृतर्द्धीन्
यतीन् वराक्षीणमहानसांश्च ।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्प्रपूज्यान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥८॥

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्
श्रीवर्द्धमानर्द्धिविबुद्धिदक्षान् ।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरानृषीन्द्रान्
स्तुवे गणेशानपि तदगुणाप्त्यै ॥९॥

नृसुरखचरसेव्या विश्वधगुणसमुद्रा
विविधगुणसमुद्रा मारमातङ्गसिंहाः
भवजलनिधिपोता वन्दिता मे दिशन्तु
मुनिगणसकलान् श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रान् ॥१०॥

प्रतिक्रमणदण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहिजिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं णमो संभिण्णसोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमो चउदसपुव्वीणं, णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासगामीणं, णमो आसीविसाणं, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दिव्व तवाणं,

संभिन्नश्रोत्रान्वितसन्मुनींद्रान्
प्रत्येकसम्बोधितबुद्धधर्मान् ।
स्वयंप्रबुद्धांश्च विमुक्तिमार्गान्
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥२॥

द्विधा मनःपर्ययचित्प्रयुक्तान्
द्विपंचसप्तद्वयपूर्वसक्तान् ।
अष्टाङ्गनैमित्तिकशास्त्रदक्षान्
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥३॥

विकुर्वणाख्यर्द्धिमहाप्रभावान्
विद्याधरांश्चारणर्द्धिप्राप्तान् ।
श्रितान्नित्यखगामिनश्च
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥४॥

आशीर्विषान् दृष्टिविषान्मुनीन्द्रा–
नुग्रातिदीप्तोत्तमतप्तान् ।
महातिघोरप्रतपः प्रसक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥५॥

न् सुरैर्घोरगुणांश्च लोके
पूज्यान् बुधैर्घोरपराक्रमांश्च ।
घोरादिसंसद्‌गुणब्रह्मयुक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥६॥

आमर्द्धिखेलर्द्धि प्रजल्लविट्प्र–
सर्वर्द्धिप्राप्तांश्च व्यथादिहंतॄन् ।
मनोवचः क पयुक्तान्
स्तुवे गणेशानपि तद्‌गुणाप्त्यै ॥७॥

सत्क्षीरसर्पिर्मधुरामृतर्द्धीन्
यतीन् वराक्षीणमहानसाश्च ।
प्रवर्धमानास्त्रिजगत्प्रपूज्यान्
स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥८॥
सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्
श्रीवर्द्धमानर्द्धिविबुद्धिदक्षान् ।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरानृषींद्रान्
स्तुवे गणेशानपि तदगुणाप्त्यै ॥९॥
नृसुरखचरसेव्या विश्वधगुणसमुद्रा
विविधगुणसमुद्रा मारमातङ्गसिंहाः
भवजलनिधिपोता वन्दिता मे दिशन्तु
मुनिगणसकलान् श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रान् ॥१०॥

प्रतिक्रमणदण्डक

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहिजिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं णमो संभिण्णसोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमो चउदसपुव्वीणं, णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताण, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासगामीणं, णमो आसीविसाण, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्त तवाणं,

णमो तत्ततवाणं, णमो महातवाणं, णमो घोरतवाणं, णमो घोर-गुणाणं, णमो घोरपरक्कमाणं, णमो घोरगुणबंभयारीणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताणं, णमो जल्लोस-हिपत्ताणं, णमो विप्पोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणबलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अमियसवीणं, णमो अक्खीणमहाणसाणं, णमो वड्ढमाणाणं, णमो सिद्धायदणाणं, णमो भववदो महदिमहावीरवड्ढमाणबुद्धरिसीणो चेदि ।

जस्संतियं धम्मपहं णियच्छे तस्संतियं वेणइयं पउंजे ।
काएण वाचा मणसावि णिच्चं सक्कारए तं सिरपंचमेण ।।१।।

सुदं मे आउस्संतो ! इह खलु समणेण भयवदो महदिमहा-वीरेण महाकस्सवेण सव्वण्हुणा सव्वलोगदरिसिणा सदेवासुर-माणुसस्स लोयस्स आगदिगदिचवणोववादं बन्धं मोक्खं इड्ढि ठिदिं जुदिं अणुभागं तक्कं कलं मणोमाणसियं भूतं कयं पडि-सेवियं आदिकम्मं अरुहकम्मं सव्वलोए सव्वजीवे सव्वभावे सव्वं समं जाणंता पस्साता विहरमाणेण समणाणं पंचमहव्वदाणि राईभोयणवेरमणछट्ठाणि सभावणाणि समाउगपदाणि सउत्तर-पदाणि सम्मं धम्मं उवदेसिदाणि । तं जहा—

पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, विदिए महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, तिदिए महव्वदे अदिण्णदाणादो वेरमणं चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, छठ्ठे अणुव्वदे राइभोयणादो वेरमणं चेदि ।

तत्थ पढमे महव्वदे सव्वं भन्ते ! पाणादिवादं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से एइंदिया वा,

बेइंदिया वा, तेइन्दिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, पुढविकाइए वा आउकाइए वा तेउकाइए वा वाउकाइए वा वणप्फदिकाइए वा तसकाइए वा अण्डाइए वा पोदाइए वा जराइए वा रसाइए वा ससेदिमे वा सम्मुच्छिमे उब्भेदिमे वा उववादिमे वा तसे वा थावरे वा बादरे वा सुहुमे वा पाणे वा भूदे वा जीवे वा सत्ते वा पज्जत्ते वा अपज्जत्ते वा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, णेव सयं पणादिवादिज्ज णो अण्णेहिं पाणे अदिवादावेज्ज अण्णेहि पाणे अदिवादिज्जंतो वि ण समणुमणेज्ज तस्स भन्ते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विच्चण भन्ते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं पाणे अदिवादिदे अण्णेहिं पाणे अदिवादाविदे अण्णेहिं पाणे अदिवादिज्जते वि समणुमण्णिदे तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पावयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्स-परिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवबंभचेर-गुत्तस्स नियतिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासवस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा अण्णाणेण वा अदंसणेण वा अविरिएण वा असंयमेण वा असमणेण वा अणाहिगमणेण वा अभिमंसिदाएण वा अवोहिदाएण वा रागेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पेम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केण विकारणेण जादेण वा आलसदाए कम्म-भारिगदाए कम्मगुरुगदाए कम्मदुच्चरिदाए कम्मपुरुक्कडदाए तिगारवगुरुगदाए अबहुसुददाए अविदिदपरमट्ठदाए तं सव्वं पुव्वं

दुच्चरियं गरिहामि आगमेसिंच, अपच्चक्खियं, पच्चक्खामि, अणालोचियं आलोचेमि, अणिंदियं णिंदामि, अगरहियं गरहामि, अपडिक्कंतं पडिक्कमामि, निराहणं वोस्सरामि आराहणं अब्भुठ्ठेमि, अण्णाणं वोस्सरामि सण्णाण अब्भुठ्ठेमि, कुदंसणं वोस्सरामि सम्मदंसण अब्भुठ्ठेमि, कुचरियं वोस्सरामि सुचरियं अब्भुठ्ठेमि, कुतवं वोस्सरामि सुतवं अब्भुठ्ठेमि, अकरणिज्जं वोस्सरामि करणिज्जं अब्भुठ्ठेमि, अकिरियं वोस्सरामि किरियं अब्भुठ्ठेमि, पाणादिवादं वोस्सरामि अभयदाणं अब्भुठ्ठेमि, मोसं वोस्सरामि सच्चं अब्भुठ्ठेमि, अदत्तादाणं वोस्सरामि, दिण्णंकप्पणिज्जं अब्भुठ्ठेमि, ॱभे वोस्सरामि बंभचरियं अब्भुठ्ठेमि, परिग्गहं वोस्सरामि अपरिग्गहं अब्भुठ्ठेमि, राईभोयणं वोस्सरामि दिवाभोयणमेगभत्तं पच्चुप्पणं फासुगं अब्भुठ्ठेमि, अट्टरुद्दज्झाणं वोस्सरामि धम्मसुक्कज्झाणं अब्भुठ्ठेमि, किण्हणीलकाउलेस्सं वोस्सरामि तेउपम्मसुक्कलेस्सं अब्भुठ्ठेमि, आरम्भं वोस्सरामि अणारम्भं अब्भुठ्ठेमि, असंजमं वोस्सरामि संजमं अब्भुठ्ठेमि, सग्गंथं वोस्सरामि णिग्गंथं अब्भुठ्ठेमि, सचेलं वोस्सरामि अचेलं अब्भुठ्ठेमि, अलोचं वोस्सरामि लोचं अब्भुठ्ठेमि, ण्हाणं वोस्सरामि अण्हाणं अब्भुठ्ठेमि, अखिदिसयणं वोस्सरामि खिदिसयणं अब्भुठ्ठेमि, दंतवणं वोस्सरामि अदंतवणं अब्भुठ्ठेमि, अट्ठिदिभोयणं वोस्सरामि ठिदिभोयणमेगभत्तं अब्भुठ्ठेमि, अपाणिपत्तं वोस्सरामि पाणिपत्तं अब्भुठ्ठेमि, कोहं वोस्सरामि खंतिं अब्भुठ्ठेमि, माणं वोस्सरामि मद्दवं अब्भुठ्ठेमि, मायं वोस्सरामि अज्जवं अब्भुठ्ठेमि, लोहं वोस्सरामि ॱोसं अब्भुठ्ठेमि, अतवं वोस्सरामि दुवालविहतवोकम्मं अब्भुठ्ठेमि, मिच्छत्तं परिवज्जामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि, ॱीलं परिवज्जामि सुसीलं उवसंपज्जामि, ससल्लं परिवज्जामि णिस्सल्लं उवसंपज्जामि, अविणयं

परिवज्जामि विणयं उवसंपज्जामि, अणाचारं परिवज्जामि आचार उवसंपज्जामि, उम्मग्गं परिवज्जामि जिणमग्ग उवसंपज्जामि, अखंति परिवज्जामि खंति उवसंपज्जामि, अगुत्ति परिवज्जामि गुत्ति उवसंपज्जामि, अमुत्ति परिवज्जामि सुमुत्ति उवसंपज्जामि असमाहिं परिवज्जामि सुसमाहिं उवसंपज्जामि, ममत्ति परिवज्जामि णिम्ममत्ति उवसंपज्जामि, अभावियं भावेमि भावियं ण भावेमि, इमं णिग्गंथं पव्वयणं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेगाइयं सामाइयं ससुद्धं सल्लघट्टाणं सल्लघत्ताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्गं खंतिमग्गं मुत्तिमग्गं पमुत्तिमग्गं मोक्खमग्गं पमोक्खमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं सव्वदुक्खपरिहाणिमग्गं सुचरियपरिणिव्वाणमग्गं जत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुंचंति परिणिव्वाणयंति सव्व दुक्खाणमंतं करेंति तं सद्दहामि तं पत्तियामि तं रोचेमि तं फासेमि, इदो उत्तर अण्णं णत्थि ण भूदं ण भवं ण भविस्सदि,णाणेण वा दंसणेण वा चरित्तेण वा सुत्तेण वा सीलेण वा गुणेण वा तवेण वा णियमेण वा वदेण वा विहारेण वा आलएण वा अज्जवेण वा लाहवेण वा अण्णेण वा वीरिएण वा समणोमि संजदोमि उवरदोमि उवसंतोमि उवधिणियडि-माण-माया-मोस-मूरण-मिच्छाणाण-मिच्छादंसण मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मदंसण सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चाउम्मासिय-संवच्छरिय-इरियावहिकेसलोचाइचारस्स संथारादिचारस्स पंथादिचारस्स सव्वादिचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि।

पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दढव्वदं होदु, णित्थारयं पारयं

तारयं आहाहियं चावि ते मे भवतु ।

प्रथमं महाव्रतं सर्वेषा धारिणा सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ।।३।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, ण मो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।१।।

आहावरे विदिए महव्वदे सव्वं भंते ! मुसावादं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रायेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केणवि कारणेण जादेण वा णेव सयं मोसं भासिज्जतं पि ण समणुमणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं मोसं भासियं अण्णेहिं मोसं भासावियं अण्णेहिं मोसं भासिज्जंत पि समणुमण्णिदं इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तणस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्य अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचाकलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसगस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स.. .... । सम्मणाण–सम्मदंसण सम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं-पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चउमासिय-सवच्छरिय इरियावहिकेसलोचाइचारस्स पंथादिचारस्स सव्वातिचारस्स उत्तमठ्ठस्स सम्मचरित्तं च

— "से कोहेण वा" इत्यारम्य "उवविरणियडिमाणमायामोसमूरणमिच्छाणाणमिच्छादसणमिच्छाचारित्त च पडिविरदोमि" इत्यन्त पाठोऽपि पठनीयोऽत्रेति ।

रोचेमि, बिदिए महव्वदे मुसावादादो वेरमणं उवठ्ठाणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंत-क्खियं सिद्धसक्खियं सासुसक्खिया अप्पसक्खिया परसक्खिया देवतासक्खियं उत्तमठ्ठम्मि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दढव्वद होदु, णित्थारयं पारयं तारयं आरासियं चावि ते मे भवतु ।

द्वितीयं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ।।३।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूण ।।४।।

आधावरे तदिये महव्वदे सव्वं भंते ! अदत्तादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण से देसे वा गामे वा णगरे वा खेडे वा कव्वडे वा मडवे वा मडले वा पट्टणे वा दोण-मुहे वा घोसे वा आसणे वा सहाए वा संवाहे वा सण्णिवेसे वा तिणं वा कठ्ठं वा वियडिं वा मणिं वा खेत्ते वा खले वा जले वा थले वा पहे वा उप्पहे वा रण्णे वा अरण्णे वा णठ्ठं वा पडिदं वा अपडिदं वा सुणिहिदं वा दुण्णिहिदं वा अप्पं वा बहुं वा अणुग्रं वा थूल वा सचित्त वा अचित्तं वा सज्झत्थं वा बहित्थं वा अवि दंतंतरसोहणमित्तं पि णेव सया अदत्तं गेण्हिज्जं णो अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविज्जा अण्णेहि अदत्तं गेण्हिज्जंतं पि ण समणुमणिज्ज, तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं बोस्सरामि पुव्विचरणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं अदत्तं गेण्हिदं अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविदं अण्णेहिं अदत्तं गेण्हिज्जत्तं पि समणुम-ण्णिदो, तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अठ्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स

चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स ....सम्मणाण–सम्मदंसण–सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहि पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय-राइय–पक्खिय–चउमासिय–संवच्छरियइरियावहिकेसलोचाइचा-रस्स संथारादिचारस्स पंथादिचारस्स सव्वाइचारस्स उत्तमठ्ठ-स्स सम्मचरित्तं रोचेमि । तदिए महव्वदे अदत्तादाणादो वेरमणं उवठ्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरि-साणुचिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पस-क्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमठ्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दढव्वदं होदु, णित्थारयं पारय तारयं अराहियं चावि ते मे भवतु ।।३।।

तृतीयं महा ं सर्वेषां धारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढ ं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ।।४।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।१।।

आधावरे चउत्थे महव्वदे सव्व भंते ! अबंभं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा व ि । काएण से देविएसु वा माणुसिएसु वा तिरिच्छिएसु वा अचेयणिएसु वा कठ्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लयकम्मेसु वा सिल्लाकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा भेदकम्मेसु वा भंडकम्मेसु वा धादुकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा हत्थसंघट्टणदाए पादसंघट्टणदाए पुग्गलसंघट्टणदाए मणुण्णामणुण्णेसु सद्दे सु मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु मणुण्णामणुण्णेसु गंधेसु मणुण्णामणुण्णेसु रसेसु मणुण्णामणुण्णेसु फासेसु सोदिंदियपरिणामे चक्खिंदियपरि-

णामे घाणिंदियपरिणामे जिब्भिंदियपरिणामे फासिंदियपरिणामे णोइंदियपरिणामे अगुत्तेण अगुत्तिदिएण णेव सयं अबंभ सेविज्ज णो अण्णेहिं अबभं सेवाविज्ज णो अण्णेहिं अबंभ सेविज्जतं पि समणु मणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोमस्सरामि पुव्विचरणं भंते ! जंपि मए रागस्स वा दोसस्स वा वसंगदेण सयं अबंभं सेवियं अण्णेहिं अबंभं सेवावियं अण्णेहिं अबंभं सेविज्जंतं पि समणु मण्णिदं तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अठ्ठारससीलसयस्सहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स.................सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय राइय–पक्खिय–चउमासिय–संवच्छरिय–इरियावहि–केसलोचाइचारस्स संथारादिचारस्स पंथादिचारस्स सव्वादिचारस्स उत्तमठ्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि। चउत्थे महव्वदे अबंभादो वेरमणं उवठ्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमठ्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दिढव्वदं होदु णित्थारयं पारयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु ॥३॥

चतुर्थं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूण ॥५॥

आधावरे पंचमे महव्वदे सव्वं भंते ! दुविहं परिग्गहं पच्चक्खामि तिविहेण मणसा वचिया काएण । सो परिग्गहो दुविहो अब्भितरो बाहिरो चेदि । तत्थ अब्भितरं परिग्गहं—

मिच्छत्तवेयराया तहेव हस्सादियाय छद्दोसा ।
चत्तारि तह कसाया चउदस अब्भंतरं गंथा ॥१॥

तत्थ बाहिरं परिग्गहं, से हिरण्णं वा सुव्वणं वा धणं वा खेत्तं वा ं वा वत्थं वा पवत्थं वा कोसं वा कुठारं वा पुरं वा अंतउरं वा बलं वा वाहणं वा सयडं वा जाडवं वा जपाणं वा जुगं वा गद्दियं वा रहं वा सदणं वा सिवियं वा दासीदासगोमहिसिगवेडयं मणिमोत्तियसंखसिप्पिपवालयं मणिभाजणं वा सुवण्णभाजणं वा रजतभाजणं वा कंसभाजणं वा लोहभाजणं वा तंबभाजणं वा ं जं वा बोंडजं वा रो ं वा ं वा वम्मजं वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा सचित्तं वा अचित्तं वा अमुत्थं वा वहित्थं वा अवि वालग्गकोडिमित्तंपि णेव सयं असमणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्ज णो अण्णेहिं मणपाउग्गं परिहग्गहं गेण्हाविज्ज णो अण्णेहिं असमणपउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्जंतं पि समणुमणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचरणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण ं मणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्जं, अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गेण्हावि ं, अण्णेहिं असमणपउग्गं परिग्गहं गेण्हिज्जंतं पि समणुमण्णिदं, तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक स्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स । स्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसि णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स

परिचागफलस्स उवसमपहाणस्य खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स..............सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चउमासिय-संवच्छरियावहि-केसलोचाइचारस्स संथाराइचारस्स पंथाइचारस्स सव्वाइचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं रोचेमि। पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं होदु, णित्थारयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु ॥३॥

पंचमं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणा सम्यक्त्वपूर्वक दृढव्रत सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

णमो, अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो, आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

आधावरे छट्ठे अणुव्वदे सव भंते! राईभोयणं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से असणं वा पाणं वा खादियं वासादियं वा कडुयं वा कसायं वा आमिलं वा महुरं वा लवणं वा अलवणं वा सचित्तं वा अचित्तं वा तं सव्वं चउव्विहं आहारं णेव सयं रत्तिं भुंजिज्ज णो अण्णेहिं रत्तिं भुंज्जाविज्ज णो अण्णेहि भुंजिज्जंतं पि समणुमणिज्ज, तस्स भंते! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विच्चणं भंते! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण चउव्विहो आहारो सयं रत्तिं भुत्तो अण्णेहिं रत्तिं भुंजाविदो अण्णेहिं रत्तिं भुंजिज्जंतो वि समणुमण्णिदो, तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स

अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उपसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धमग्गपज्जवसाहणस्स..... .... सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय–चउमासिय–संवच्छरिय – इरियावहिकेसलोचाइयारस्स संस्थारादिचारस्स पंथादिचारस्स सव्वाइचारस उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि, छट्ठे अणुव्वदे राईभोयणादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमठ्ठम्हि इदं मे अणुव्वदं सुव्वदं दिढव्वदं होदु णित्थारयं पारयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु ।।३।।

अण सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं तं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ।।३।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।३।।

चूलियन्तु पवक्खामि भावणा पंचविसदी ।
पंच पंच अणुण्णादा एक्केक्कह्मि महव्वदे ।।१।।

मणगुत्तो वचिगुत्तो इरिया-कायसंयदो ।
एसणासमिदिसंजुत्तो पढमं वदमस्सिदो ।।२।।

अकोहणो अलोहो य भयहस्सविवज्जिदो ।
अणुवीचिभासकुसलो विदियं वदमस्सिदो ।।३।।

अदेहणं भावणं चावि उग्गहं य परिग्गहे ।
सं ो भत्तपाणेसु तिदियं वदमस्सिदो ।।४।।

इत्थिकहा इत्थिसंसग्गहासखेडपलोयणे ।
णियमम्मि ट्ठिदो णियत्तो य चउत्थं वदमस्सिदो ॥५॥

सचित्ताचित्तदव्वेसु बज्झंब्भंतरेसु य ।
परिग्गहादो विरदो पंचमं वदमस्सिदो ॥६॥

धिदिमन्तो ाजुत्तो झाणजोगपरिट्ठिदो ।
परीसहाणउरं देंतो उत्तमं वदमस्सिदो ॥७॥

जो सारो सव्वसारेसु सो सारो एस गोयम ! ।
सारं झाणंति णामेण सव्वं बुद्धेंहि देसिदं ॥८॥

इच्चेदाणि पंचमहव्वदाणि राईभोयणादो वेरमणं-छट्ठाणि सभावणाणि समाउग्गपदाणि सउत्तरपदाणि सम्मं धम्मं अणुपालइत्ता णा भयवंता णिग्गंथादोओण सिज्झंति वुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति परि-विज्जाणंति । तं जहा—

पाणादिवादं चहि मोसगं च अदत्तमेहुणपरिग्गहं च ।
वदाणि सम्मं अणुपालइत्ता णिव्वाण मग्गं विरदा
उवेंति ॥१॥

जाणि काणि विसल्लाणि गरहिदाणि जिणसासणे ।
ताणि सव्वाणि वोसरित्ता णिसल्लो विहरदे सया मुणी ॥२॥

उप्पण्णाणुप्पण्णा माया अणुपुव्वं णिहंतव्वा ।
आलोयण पडिकमणं णिंदणगरहणदाए ॥३॥

अब्भुट्ठिदेकरणदाएअब्भुट्ठिदेदुक्कड़णिराकरणदाए ।
भवं भावपडिक्कमणं सेसा पुण दव्वदो भणिदा ॥४॥

एसो पडिकमणविही पण्णत्तो जिणवरेंहि सव्वेंहि ।
संजमतवट्ठिदाणं णिग्गंथाण महरिसीणं ॥५॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं भवे एत्थ ।
तं खमउ णाणदेवय ! देउ समाहिं च बोहिं च ॥६॥
काऊण णमोक्कारं अरहंताण तदेव सिद्धाणं ।
आइरिय-उवज्झायाण लोयम्मि य सव्वसाहूण ॥७॥

इच्छामि भंते ! पडिक्कममिदं, सुत्तस्स मूलपदाणं उत्तरपदाणमच्चासणदाए । तं जहा—

णमोक्कारपदे अरहंतपदे सिद्धपदे आइरियपदे उवज्झाय पदे साहुपदे मंगलपदे लोगोत्तमपदे सरणपदे सामाइयपदे चउबीसतित्थयरपदे वंदणपदे पडिक्कमणपदे पच्चक्खाणपदे काउसग्गपदे असीहियपदे निसीहियपदे अंगंगेसु पुव्वगेसु पइण्णएसु पाहुडेसु पाहुडपाहुणेसु कदकम्मेसु वा भूदकम्मेसु वा णाणस्य अइक्कमणदाए तवस्स अइक्कमणदाए वीरियस्स अइक्कमणदाए, से अक्खरहीणं वा पदहीणं वा सरहीणं वा वंजणहीणं वा अत्थहीणं वा गन्थहीणं वा थएसु वा अट्ठक्खाणेसु वा अणियोगेसु वा अणियोगद्दारेसु वा जे भावा पण्णत्ता अरहंतेहिं भयवंतेहिं तित्थयरेहिं आदिपरेहिं तिलोगणाहेहिं तिलोगबुद्धेहिं-तिलोग-दरसीहिं ते सद्दहामि ते पत्तियामि ते रोचेमि ते फासेमि, ते सद्दहंतस्स ते पत्तयन्तस्स ते रोचयन्तस्स ते फ -

जो मए देवसि ो राईओ पक्खिओ संवच्छरिओ अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो अकाले सज्झाओ कओ, काले वा परिहाविदो अत्थाकारिदं मिच्छामेलिदं अण्णहादिण्णं अण्णहापडिच्छदं आवसएसु पडिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

अह पडिवदाए विदिए तदिए चउत्थीए पंचमीए छट्ठीए सत्तमीए अट्ठमीए णवमीए दसमीए एयारसीए बारसीए तेरसीए चउद्दसीए पुण्णमासीए पण्णरसंदिवसाणं पण्णरसराईणं,

चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं वीसुत्तरसयदिवसाणं बीसुत्तर-सयराईणं, बारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्हं छाव-ट्ठिसयदिवसाणं तिण्हं छावट्ठिसयराईणं पंचवरिसादो परदो अब्भिंतरदो वा दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणं तिण्हं अप्प-सत्थसंकिलेसपरिणामाणं तिण्हं दण्डाणं तिण्हं लेस्साण तिण्हं गुत्तीणं तिण्हं सल्लाणं चउण्हं सण्णाणं चउण्हं कसायाणं चउण्हं उवसग्गाणं पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं इन्दियाणं पंचण्हं समिदीणं पंचण्हं चरित्ताणं छण्हं आवासयाणं सत्तण्हं भयाणं सत्तविहंसंसाराणं अट्ठण्हं मयाणं अट्ठण्हं सुद्धीणं अट्ठण्हं कम्माणं अट्ठण्हं पवयणमाउयाणं णवण्हं बंभचेरगुत्तीणं णवण्हं णोकसायाणं दसविहमुण्डाणं दसविहसमणधम्माणं बारसण्हं संजमाणं बारसण्हं तवाणं बारसण्हं अंगाणं तेरसण्हं किरियाणं चउदसण्हं पुव्वाण्हं पण्णरसण्हं पमायाणं सोलसण्हं कसायाणं पणवीसाए किरियासु पणवीसाए भावणासु बावीसाए परीसहेसु उट्ठारस सीलसहस्सेसु चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु मूल-गुणेसु उत्तरगुणेसु अदिक्कम्मो वदिक्कम्मो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोस्सरामि जाव अरहंताणं, भयवंताणं णमोक्कारं करेमि पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्च-रियं वोस्सरामि ।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

पढमं ताव सुदं मे आउस्संतो ! इह खलु समणेण भयवदा महदिमहावीरेण महाकस्सवेण सव्वण्हणाणेण सव्वलोय-दरसिणा सावयाणं सावियाणं खुड्डयाणं खुड्डीयाणं कारणेण पंचाणुव्वदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि चत्तारि सि खावदाणि

बारसविहं गिहत्थधम्मं सम्मं उवदेसियाणि तत्थ इमाणि पंचाणुव्वदाणि पढमे अणुव्वदे थूलयडे पाणादिवादो वेरमणं, विदिए अणुव्वदे थूलयडे मुसावादादो वेरमणं तदिए अणुव्वदे थूलयडे अदत्तादाणादो वेरमणं, चउत्थे अणुव्वदे थूलयडे सदारसंतोसपरदारागमणवेरमणं कस्स य पुणु सव्वदो विरदी, पंचमे अणुव्वदे थूलयडे इच्छाकदपरिमाणं चेदि, इच्चेदाणि पंच अणुव्वदाणि ।

तत्थ इमाणि तिण्णि गुणव्वदाणि, तत्थ पढमे गुणव्वदे दिसिविदिसि पच्चक्खाणं, विदिए गुणव्वदे विविधअणत्थदण्डादो वेरमणं, तदिये गुणव्वदे भोगोपभोगपरिसंखाणं चेदि, इच्चेदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि ।

तत्थ इमाणि चत्तारि सिक्खावदाणि, तत्थ प ` सामाइयं, विदिए पोसहोवासयं, तदिए अतिथिसंविभागो, चउत्थे ि खावदे पच्छिमसल्लेहणामरणं, तिदियं अब्भोवस्साणं चेदि ।

से अभिमदजीवाजीव–उवलद्धपुण्णपाव–आसवसंवरणिज्जरबंधमोक्खमहिकुसले धम्माणुरायरत्तो पि माणुरागरत्तो अट्ठिमज्जाणुरायरत्तो मुच्छिदट्ठे विहिदट्ठे गिहिदट्ठे पालिदट्ठे सेविदट्ठे इणमेव णिग्गंथपवयणे अणुत्तरे सेअट्ठे सेवणुट्ठे ।

णिस्संकिय णिक्कं‍ि णिव्विदिगिछी य अमूढदिट्ठी य ।
उवगूहणट्ठिदिकरणं वच्छल्लपहावणा य ते अट्ठ ॥१॥

सव्वेदाणि पंचाणुव्वदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि चत्तारि ि ावदाणि बारसविहं गिहत्थधम्ममणुपालइत्तादंसण, वय सामाइय पोसह सचित्त राइभत्तेय बंभारंभपरिग्गहअणुमणमुद्दिट्ठदेशविरदो य ॥१॥

महुमंसमज्जजूआ वेसादिविवज्जणासीलो ।
पंचाणुव्वयजुत्तो सत्तेंहि सिक्खावएहिं संपुण्णो ।।२।।

जो एदाइं वदाइं धरेइ सावया सवियाओ वा खुड्डय खुड्डियाओ वा अट्ठदहभवणवासियवाणविंतरजोइसियसोहम्मी-साणदेवीओ वदिक्कमित्तउवरिमअण्णदरमहड्ढियासु देवेंसु उववज्जंति ।

तं जहा—सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदबंभबंभुत्तर-लांतवकापिट्ठसुक्कमहासुक्कसतारसहस्सारआणतपाणतआरण—अच्चुतकप्पेसु उववज्जंति ।

अडयंबरसत्थधरा कडयंगदबद्धनउडकयसोहा ।
भासुरवरबोहिधरा देवा य महड्ढिया होंति ।।१।।

उक्कस्सेण दोतिण्णिभवगहणाणि जहण्णे सत्तट्ठभवगहणाणि तदो सुमणुसुत्तादो सुदेवत्तं सुदेवत्तादो सुमाणुसत्तं तदो साइहत्था पच्छा णिग्गंथा होऊण सिज्झंति बुज्झंति मुंचति परिणिव्वाणयंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति । जाव अरहंताणं भयवंताणं णमोकारं करेमि पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

(अनतर साधव "थोस्सामि" इत्यादि दण्डक पठित्वा सूरिणा सहिता "वदसमिदिंदिरोधो" इत्यादिक चाधीत्य वीरस्तुतिं कुर्युं)



वीरभक्तिः

सर्वातिचारविशुद्धयर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं निष्ठितकरणवीरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

इत्युच्चार्य, "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं यथोक्तानुच्छ्वासान् ३०० कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादि दण्डकं पठित्वा "चंद्रप्रभं चंद्रमरीचिगौरं" इत्यादि स्वयंभुवं "यः सर्वाणि चराचराणि" इत्यादि वीरभक्तिं सांचलिकां पठित्वा "वदसमिदिंदियरोधो" इत्यादिकं पठेयुः। तद्यथा—

चंद्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कांतम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं, जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥१॥

यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेषभिन्नं, तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहु मानसं च, ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥२॥

स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता, वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा, गजा यथा केसरिणो निनादैः ॥३॥

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः, पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः।
अनंतधामाक्षरविश्वचक्षुः, समस्तदुःखक्षयशासनश्च ॥४॥

स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां, विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः।
व्याक्रोशवाङ्न्यायमयूखमालः, पूयात्पवित्रो भगवान्मनो मे ॥५॥

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्
पर्यायानपि भूतभाविभवतः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत्प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः ॥१॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधा संश्रिता
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुल वीरस्य वीरं तपो
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो हे वीर! भद्रं त्वयि ॥२॥

ये वीरमादौ प्रणमंति नित्यं, ध्यानस्थिताः सयमयोगयुक्ताः।
ते वीतशोका हि भवंति लोके संसारदुर्गं विषमं तरंति ॥३॥

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कन्धबन्धो
यमनियमपयोभिर्वधितः शीलशाखः।
समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो
गुणकुसुमसुगन्धिः सत्तपश्चित्रपत्रः ॥४॥
शिवसुखफलदायी यो दयाछाययौघः
शुभजनपथिकाना खेदनोदे समर्थः।
दुरितरविजतापं प्रापयन्नंतभावं
स भवविभवहान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः ॥५॥

चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंचभेदं पंचमचारित्रलाभाय ॥६॥

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मा पालय ॥७॥
धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥८॥

अञ्चलिका

इच्छामि भंते! पडिक्कमणादिचारमालोचेउं, सम्मणाण-

सम्मदंसरण-सम्मचरित्त-तव-वीरियाचारेसु यम-नियम संजमशील मूलुत्तरगुरणेसु सव्वमईचारं सावज्जजोगं पडिविरदोमि असंखेज्ज-लोगअज्झवसाणठाणाणि अप्पसत्थजोगसण्णाणिंदियकसाय-गारवकिरियासु मणवयणकायकरणदुप्पणिहाणि परिचिंतियाणि किण्हणीलकाउलेस्साओ विकहापलिकुचिएण उम्मगहस्सरदि-अरदिसोयभयदुगंछवेयणविज्जंभजंभाईआणि अट्टरुद्दसंकिलेसपरि-णामाणि परिणामिदाणि अणिहदकरचरणमणवयणकाय-करणेण अक्खित्तबहुलयरायणेण अपडिपुण्णेण वा सक्खरावय-सघायपडिवत्तिएण अच्छाकारिदं मिच्छामेलिदं आमेलिदं वामेलिदं अण्णहादिण्णं अण्णहापडिच्छदं आवसएसु परिहीणदाए कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइयारादो णियत्तो हं ॥२॥

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

ांरि ुर्विं शति ुति :

(शाति स्तुति)

ातिचारविशुद्ध्यर्थं पाक्षिकप्रति णि ायां पूर्वाचार्या-नुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं शान्ति-चतुर्विशतितीर्थंकरभक्तिकायोत्सर्ग करोम्हम् ।

इत्युच्चार्य "णमो अरहताण" इत्यादि दडक पठित्वा कायमुत्सृज्य "थोस्सामि" इत्यादि दडकमधीत्य शातिकीर्तना "विधाय रक्षा" इत्यादिका चतुर्विशतिकीर्तना च "चउवीस तित्थयरे" इत्यादिका साचलिका "वदसमिदिंदिय-रोधो" इत्यादिक च ससूरय सयता पठेयु । तद्यथा—

विधाय रक्षां परतः प्रजाना राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः ।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शांतिर्मुनिर्दयामूर्तिरिवाघशांतिम् ॥१॥

चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम् ।
समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ॥२॥

राजश्रिया राजसु राजसिंहो, रराज यो राजसुभोगतंत्रः ।
आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो, देवासुरोदारसभे रराज ॥३॥

यस्मिन्नभूद्राजनि राजचक्रं, मुनौ दयादीधितिधर्मचक्रम् ।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलिदेवचक्रं, ध्यानोन्मुखे ध्वंसिकृतान्तचक्रम् ॥४॥

स्वदोषशान्त्याविहितात्मशान्तिः, शांतेर्विधाता शरणं गतानाम् ।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशांत्यै, शांतिर्जिनो मे भगवाञ्छरण्यः ॥५॥

(चतुर्विंशतिस्तुति)

चउवीसे तित्थयरे उसहाइवीरपच्छिमे वंदे ।
सव्वेसिं गुणगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥

ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवान्तर्गता
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोऽधिका ।
ये साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिताः
तान्देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम् ॥१॥

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं
सर्वज्ञं सम्भवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगन्धं
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चन्द्रनामानमीडे ॥२॥

विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं
श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं ।

मुक्तं दांतेंद्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीद्रं
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शांतिं शरण्यम् ।।४।।
कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रमरणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगरणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् ।
देवेंद्राच्यँ नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तं
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शररणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या ।।५।।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते ! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कग्रो तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लारणसंपण्णणं अट्ठमहापाडिहेरसहिदाण चउतीसातिसयविसेससंजुत्तारणं बत्तीसदेविंदमरिणमउढमत्थयमहिदारणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसिमुणि-जइ-अरणगारोवगूढाणं थुइसहस्सरिणलयाण उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं रिणच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि रणमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिरणगुरणसम्पति होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो अवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयरणमेयभत्तं च ।।१।।
एदे खलु मूलगुरणा समणाणं जिरणवरेहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो रिणयत्तो हं ।।२।।
छेदोवट्ठावरणं होदु मज्झं ।

...हदा ... भक्ति :

(...)

...तिचारविशु...
करोम्यहम्—

अत्रापि "रणमो ...
"थोस्सामि" इत्यादि दण्ड...

सिद्धगुणस्तुतिनिरतानुद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान्मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥

मुनिमाहात्म्यविशेषाज्जिनशासनसत्प्रदीपभासुरमूर्तीन् ।
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो बद्धरजोविपुलमूलघातनकुशलान् ॥२॥

गुणमणिविरचितवपुषः षड्द्रव्यविनिश्चितस्य धातॄन्सततम् ।
रहितप्रमादचर्यान्दर्शनशुद्धान् गणस्य संतुष्टिकरान् ॥३॥

मोहच्छिदुग्रतपसः प्रशस्तपरिशुद्धहृदयशोभनव्यवहारान् ।
प्रासुकनिलयाननघानाशाविध्वंसिचेतसो हतकुपथान् ॥४॥

धारितविलसन्मुडान्वर्जितबहुदण्डपिंडमंडलनिकरान् ।
सकलपरीषहजयिनः क्रियाभिरनिशं प्रमादतः परिरहितान् ॥५॥

अचलान् व्यपेतनिद्रान् स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्याहीनान् ।
विधिनानाश्रितवासानलिप्तदेहान्विनिर्जितेंद्रियकरिणः ॥६॥

अतुलानुत्कुटिकासान्विविक्तचित्तानखंडितस्वाध्यायान् ।
दक्षिणभावसमग्रान् व्यपगतमदरागलोभशठमात्सर्यान् ॥७॥

भिन्नार्तरौद्रपक्षान् संभावितधर्मशुक्लनिर्मलहृदयान् ।
नित्यं पिनद्धकुगतीन् पुण्यान् गण्योदयान् विलीनगारवचर्यान् ॥८॥

तरुमूलयोगयुक्तानवकाशातापयोगरागसनाथान् ।
बहुजनहितकरचर्यानभयाननघान्महानुभावविधानान् ॥९॥

ईदृशगुणसंपन्नान्युष्मान् भक्त्या विशालया स्थिरयोगान् ।
विधिनानारतामग्रयान् मुकुलीकृतहस्तकमलशोभितशिरसा ॥१०॥

अभिनौमि सकलकलुषप्रभवोदयजन्मजरामरणबंधनमुक्तान् ।
शिवमचलमनघमक्षयमव्याहतमुक्तिसौख्यमस्त्विति सततम् ॥११॥

लघु ारित्रालो ना

इच्छामि भंते ! चारित्तायारो तेरसविहो, परिहाविदो पंचमहव्वदाणि, पंच समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि । तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणफ्फदिकाइया जीवा अणंता, हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा,कुक्खि-किमी-संख-खुल्लय-वराडय- रिट्ठ-वाल-संबुक्क-सिप्पि - पुलविकाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुंथु-द्देहिय-विंछिय-गोभिंद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिया जीवा खेज्जासंखेज्जा, दंसमसयमक्खिपयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छिआइया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिक्छा मे दुक्कडं ।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, ाइया-पोदाइया-जराइया-रसाइया-संसेदिमा - सम्मुच्छिमा-उब्भेदिमा- उव्वादिमा अवि उरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं

विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो व समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

इच्छामि भन्ते! आइरियभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

मध्याचार्यभक्तिः

(बृहदालोचनासहिता)

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं बृहदालोचनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इत्युच्चार्य "णमो अरहताण" इत्यादि दडक पठित्वा कायोत्सर्गं कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादि दडकमधीत्य "देसकुल जाइसुद्धा" इत्यादिका मध्याचार्यनुति "इच्छामि भते! पक्खियम्मि" "आलोचेउ पण्णरसण्ह दिवसाण" इत्यादि वृहदालोचना च ससूरय साधव पठेयु ।)

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगलमत्थु मे णिच्चं ॥१॥

लघु ारित्रालो ना

इच्छामि भंते ! चारित्तायारो तेरसविहो, परिहाविदो पंचमहव्वदाणि, पंच समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंता, हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा,कुक्खि-किमी-संख-खुल्लय-वराडय- ख रिठ्ठ-वाल-संबुक्क-सिप्पि - पुलविकाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुंथु-द्दे हिय-विंछिय-गोंभिद-गोजुव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंसमसयमक्खिपयंग-कीड-भमर-महुयर-गोमच्छिआइया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणु-मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, ाइया-पोदाइया-जराइया-रसाइया-संसेदिमा - सम्मुच्छिमा-उब्भेदिमा- उव्वादिमा अविचउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं

विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो व समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

इच्छामि भन्ते! आइरियभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्भायाण तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहिमरणं जिणगुणसम्पति होउ मज्भं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावण होदु मज्भं ।

ध्याचा भवि :

(बृहदालोचनासहिता)

सर्वातिचारविशुद्धयर्थं बृहदालोचनाचार्यभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहम् ।

(इत्युच्चार्य "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडक पठित्वा कायोत्सर्गं कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादि दंडकमधीत्य "देसकुल जाइसुद्धा" इत्यादिका मध्याचार्यनुति "इच्छामि भंते! पक्खियम्मि" "आलोचेउ पण्णरसण्हं दिवसाणं" इत्यादि बृहदालोचना च ससूरय साधव पठेयु ।)

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगलमत्थु मे णिच्चं ॥१॥

सगपरसमयविदूण्हं आगमहेदूहिं चाविजाणित्ता ।
सुसमत्था जिणवयणे विणये सत्ताणुरूवेण ॥२॥

बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरे य खमणसंजुत्ता ।
वट्टावयगा अण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता ॥३॥

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठाविया पुणो अण्णे ।
अज्झावयगुणणिलये साहुगुणेणावि संजुत्ता ॥४॥

उत्तमखमाए पुढवी पसण्णभावेण अच्छ जलसरिसा ।
कम्मिंधणदहण दो अगणी वाऊ असंगादो ॥५॥

गयणमिवणिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा ।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥६॥

संसारकारणे पुण बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं ।
णिव्वाणस्स हु मग्गो लद्धो तुम्हं पसाएण ॥७॥

अविसुद्धलेस्सरहिया विसुद्धलेस्साहि परिणदा सुद्धा ।
रुद्दट्टे पुण चत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥८॥

उग्गहईहावायाधारणगुणसंपदेहि संजुत्ता ।
सुत्तत्थभावणाए भा णेहिं मि ॥९॥

तुम्हं गुणगणसंथुदि णमाणेण जो वुत्तो ।
देउ मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं ॥१०॥

हदालो ।

इच्छामि भन्ते ! पक्खियम्मि आलोचेउं, पण्णरसण्णं दिवसाणं पण्णरसण्हं राईणं अब्भिंतरदो पंचविहो रो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चारित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! चउमासियम्मि आलोचेउं, चउण्हं मासाणं अठ्ठण्हं पक्खाण्हं वीसुत्तरसयदिवसाणं वीसुत्तरसयराईण अब्भिं-तरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! संवच्छरियं आलोचेउं, वारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्णिछावट्ठिसयदिवसाणं तिण्णिछावट्ठिस-यराईणं अब्भितरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

तत्थ णाणायारो काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे, वंजण अत्थ तदुभये चेदि, तत्थ णाणायारो अठ्ठविहो परिहाविदो से अक्खरहीणं वा सरहीणं वा वंजणहीणं वा पदहीणं वा अत्थहीणं वा गंथहीणं वा थएसु वा थुएसु वा अठ्ठ-क्खाणेसु वा अणियोगेसु वा अणियोगद्दारेसु वा अकाले सज्झाओ कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो काले वा परिहा-विदो अत्थाकारिदं वा मिच्छामेलिदं वा आमेलिदं वा वामेलिदं अण्णहादिण्णं अण्णहापडिच्छिदं आवासएसु परिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

दंसणायारो अठ्ठविहो-णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्वि-दिगिंछा अमूढदिठ्ठीय । उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल पहावणा चेदि ॥१॥ अट्ठविहो परिहाविदो संकाए कंखाए विदिगिंछाए अण्णदिठ्ठिपसंसणदाए परपाखंड पसंसणदाए अणायदणसेवण-दाए अवच्छल्लदाए अप्पहावणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तावायारो बारसविहो, अब्भंतरो छव्विहो बाहिरो छव्विहो चेदि, तत्थ बाहिरो अणसणं आमोदरियं वित्तिपरिसंखा रसपरि-च्चाओ सरीरपरिच्चाओ विवित्तसयणासणं चेदि, तत्थ अब्भंतरो

पायच्छित्तं विणओ वेज्जावच्चं सज्झाओ झाणं विउस्सग्गो चेदि। अब्भंतर बाहिरं बारसविहं तवोकम्मं ण कदं णिसण्णेण पडिक्कंतं
मिच्छा मे दुक्कडं।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वरवीरियपरिक्कमेण जहुत्तमाणेण बलेण वीरिएण परिक्कमेण णिगूहियं तवोकम्मं ण कयं णिसण्णेण पढिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो पंचमहव्वदाणि पंचसमिदीओ तिगुत्तिओ चेदि। तत्थ ` महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं। से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता हरिया, बीया, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खि–किमि ˙ –
-वराडय- ख-रिटठ-गंडवाल-संवुक्क--सिप्पिपुलविकाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघातो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा ण‌ु मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुंथु-देहिय-विंछिय-गोभिंद गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समण‌ु मण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंसमसयपयंग-कीड-भमर-गोमच्छिया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा ण‌ु मण्णिदो मिच्छा मे दुक ˙।

छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसंदरिसे ।
सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिए सदा वंदे ॥४॥
गुरुभत्तिसंजमेण य तरंति संसारसायरं घोरं ।
छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावेंति ॥५॥
ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः
षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रिया साधवः ।
शीलप्रावरणाः गुणप्रहरणाश्चंद्रार्कतेजोधिकाः
मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणन्तु मां साधवः ॥६॥

आलोचना

इच्छामि भंते । आइरियभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण–सम्मदंसण–सम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयिरियाणं, आयारादिसुदणाणोवबेहियाणं उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थपमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवठ्ठावणं होदु मज्झं ।

समाधिभत्तिः

सर्वातिचारविशुद्धयर्थं सिद्ध–चरित्र–प्रति ण–निष्ठित-करणवीर - शांतिचतुर्विशतितीर्थंकर - चारित्रालोचनाचार्यबृहदा-लोचनाचार्य - क्षुल्लकालोचनाचार्यभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकत्वा-दिदोषविशुद्धयर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

दी ा लादे ाः

अर्थात्

किस नक्षत्र मे दीक्षा लेने से क्या होता है

(आचार्य महावीर कीर्तिजी की डायरी से)

(१) अश्विनीनक्षत्रे दीक्षितः आचार्यो भवति पञ्चपुरुषाणां दीक्षादायको मिष्ठान्नभुक्तः अपमृत्युद्वयमविना चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि जीवति ।

(२) भरणीनक्षत्रे दीि ो अनशनादितपः कारकः गुरु को, भ्रष्टो भूत्वा पुनर्व्रतं स्वीकृत्य द्विषष्ठी वर्षाणि जीवति ।

(३) रोहिण्यां दीक्षितः मिष्ठान्नभोक्ता, विदेशपरिभ्रमणशीलः, अपमृत्युद्वयेनवंचितः भ्रष्टो भूत्वा, पुनः स्वीकृत्य सप्तति वर्षाणि जीवति ।

(४) मृगशिरे दीि ः आचार्यो ति द्वाविंशति पुरुषाणां दीक्षादा ः समस्तसंघाधारो भूत्वा सप्तति वर्षाणि जीवति । (उत्तमातिउत्तम)

(५) आर्द्रायां दीि ो जितेन्द्रिया द्वाषष्ठी वर्षाणि जीवति । (मध्यम)

(६) पुनर्वसुदीक्षिता पञ्चवर्षाण्यन्तरं तपश्चुत्वा भ्रष्टो भूत्वा पुनर्व्रतं स्वीकृत्य तिसरणामा ाणां दीक्षादायकः सप्तति वर्षाणि जीवति ।

(७) पुष्यनक्षत्रे दीि ः तपः कृत्वा, आचार्यः पञ्चपुरुषाणां दीक्षा ः, मेधावी विंशति (शत) ाणि जीवति । (उत्तमातिउत्तम)

(८) मघायां दीक्षितः प्रशस्ताचाखान् विनीतः षष्ठ वर्षाणि जीवति । (मध्यम)

(९) आश्लेषायां दीक्षितो विदेशगामी दुखितः गुरुविनीता, व्रततपश्च्युतोभूत्वाषष्टी वर्षाण्यन्तरं सर्पदंष्ट्रो म्रियते ।

(१०) पूर्वाफाल्गुनीयां दीक्षितः पंचदशपुरुषाणां दीक्षादायकः व्रतभ्रष्टो भूत्वा पुनः स्वीकृत्य नवति वर्षाणि जीवति ।

(११) उत्तराफाल्गुनीयां दीक्षितः आचार्यः अशीति वर्षाणि जीवति, मधुराहारभोजी ।

(१२) हस्तायां दीक्षित आचार्यः पञ्चस्त्रीणां पञ्चपुरुषाणां दीक्षागुरु भूत्वा शत वर्षाणि जीवति ।

(१३) स्वातौ दीक्षितः षष्ठि वर्षाणि जीवति ।

(१४) चित्राया दीक्षितोऽशीति वर्षाणि जीवति एके आयात्ति-दिक्षां ।

(१५) विशाखायां दीक्षितः तपश्चुत्वा अशीति वर्षाणि जीवति ।

(१६) अनुराधा दीक्षितः आचार्यः सप्ततिपुरुषाणां दीक्षागुरु भूत्वा नवति वर्षाणि जीवति मिष्ठान्नभोजि । आर्यिका. (उत्तम)

(१७) ज्येष्ठाया दीक्षितः एकाग्री उग्रतपस्वी षट्पञ्चाशत् वर्षाणि जीवति । (मध्यम)

(१८) मूले दीक्षितो मिष्ठान्नभोक्ता अपमृत्युत्रयच्युतो भूत्वा नवति वर्षाणि जीवति ।

(१९) पूर्वाषाढायां दीक्षितः उपसर्गत्रय सहिष्णु तपच्युत्वा पुनः व्रतं स्वीकृत्य अशीति वर्षाणि जीवति ।

(२०) उत्तराषाढायां दीक्षितो तपश्च्युत्वा अतिरोगोत्दषाप-

मृत्युतोभूत्वा स्त्रीद्वय पुरुषपंचकं च दीक्षियित्वा षष्ठि
ाणि जीवति ।

(२१) श्रावणे दीक्षितः द्वादश पुरुषाणां गुरु, मिष्ठान्नभोक्ता, विशत्युत्तरा शतवर्षाणि जीविति । आर्यिका.
(उतमातिउत्तम)

(२२) धनिष्ठायां दीक्षितः आचार्यः अशीति वर्षाणि जीवति ।
(उत्तम, मध्यम)

(२३) शततारे दीक्षितः पञ्च २ पुरुषाणां दीक्षा गुरू । नवति २ वर्षाणि जीवनि ।

(२४) पूर्वाभाद्रपदो दीि : द्वादश पुरुषाणां दीक्षा गुरू । ीति वर्षाणि जीवति । (मध्यम)

(२५) उत्तराभाद्रपदे दीि : मिष्ठान्नभोजी द्वादश पुरुषाणा–मार्यकाणां गुरुः । अशीति ाणि जीवति । आर्यिका.
(मध्यम)

(२६) रेवत्यां दीि ो मिष्ठान्नभोजी आचार्यो भूत्वा विंशति वर्षाणि जीवति । (उत्तम)

(२७) कृतिकायां दीि : आचार्यः पञ्च पुरुषाणां दीक्षा-दायकः भ्रष्ट वान्, षण्णवति वर्षाणि जीवति ।

नोटः—जिस नक्षत्र के आगे 'आर्यिका' शब्द लिखा है उस नक्षत्र मे आर्यिका दीक्षा, क्षुल्लिकादीक्षा और मुनि, क्षुल्लक दीक्षा आदि दीक्षा हो ी है । ये न स्त्री, पुरुष दोनो के लिए हैं ।

इति



दी । का सामान

गंदोधक और दही थोड़ा-सा, भस्म– १ नारियल, कपूर २ तोला, केशर १० ग्राम, गोमय–थोडा-सा (जिसको इष्ट हो तो लेवे, नहीं तो नहीं), सुपारी ५ ठोस, नारियल की काचली– अगर क्षुल्लक दीक्षा हो तो ११ और मुनि दीक्षा हो तो १३, चावल– ५ किलो, कपड़ा–१ गज, पीच्छी १, कमण्डलु–१, शास्त्र–१, दूर्वा । अगर क्षुल्लिका दीक्षा हो तो १६ हाथ की दो साड़ी २।। गज के दो दुपट्टा, अगर आर्यिका दीक्षा हो तो १६ हाथ की दो साड़ी । अगर क्षुल्लक दीक्षा हो तो दो लंगोटी २ सदर (दुपट्टा) खंडवस्त्र व भोजन करने के लिए एक कटोरा, द्राक्षी सूखी ५०० ग्राम, लोग–५० ग्राम, इलायची ५० ग्राम, खारेक–५०० ग्राम, खड़ी हल्दी–५०० ग्राम, सुपारी–५०० ग्राम ।

उपकारी के प्रति कृतज्ञता

अवसर पर जो उपकार किया जाता है वह देखने से छोटा भले ही हो, किन्तु जगत मे सबसे भारी है, क्योकि प्रत्युपकार की प्राप्ति की इच्छा बिना जो उपकार किया जाता है वह सागर से भी बडा है अत उपकारी के प्रति उपकृत की कृतज्ञता की सीमा, किए हुए उपकार पर अवलम्बित नहीं है, उसका मूल्याकन तो उपकृत की योग्यता पर निर्भर है ।

दी । हू र् लि

मासः	चै. वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ. फा. एतन्मासेषु शुभम् नाधिमासे ।
नक्षत्राः	आश्वि. रो. उ. ३ चि. रे. ऽनु. पुष्य. स्वाति. पुन. मू. श्र. ध. श. एषुसत् ।
वासराः	सू. चं. बु. वृ. शु. एषामह्निभद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम् ।
तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१२।एतासु तिथिश्रेष्ठं कृष्णेवा-वत्पञ्चमीं ।
शुद्धलग्न	२।३।४।५।६।७।६।१२ एतद्धूरयाङ्गेषुचन्द्रतारानु-कुलेसति शुभम् ।
लग्न	लग्नात ३।६।११ एषुपापैः १।४।५।७।६।१० एषुशुभैश्चोत्तमम् ।
शुद्धिश्च	अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागेचोत्तंम् । गुरु-शुक्रयोरुदये श्रे ।

	लग्न	
ज. चर	उ. स्थिर	म. द्विस्वभाव
मेष	वृषभ	मिथुन
	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धनु
मकर	कुम्भ	मीन

इन लग्नों मे दीक्षा कभी नहीं देना चाहिए जघन्य	स्थिर लग्न में दीक्षा देना उत्तम है	इन लग्नों में दीक्षा देना मध्यम है

दीक्षा-न त्राणि

प्रणम्य शिरसा वीरं जिनेन्द्रममलव्रतम् ।
दीक्षा ऋक्षाणि वक्ष्यन्ते सतां शुभ फलाप्तये ।।१।।
भरण्युत्तरफाल्गुन्यौमघाचित्रा विशाखिकाः ।
पूर्वाभाद्रपदा भानि रेवती मुनि-दीक्षणे ।।२।।
रोहिणी चोत्तराषाढा उत्त राभाद्रपत्त था ।
स्वातिः कृतिकया सार्धं वर्ज्यते मुनिदीक्षणे ।।३।।
आश्विनी-पूर्वाफाल्गुन्या हस्तस्वात्यनुराधिकाः ।
मूलं तथोत्त राषाढा श्रवणः शत भिषक्तथा ।।४।।
उत्त राभाद्रपच्चापि दशेति विशदाशयाः ।
आर्यिकाणां व्रते योग्यन्युषन्ति शुभहेतवः ।।५।।
भरण्यां कृत्तिकायां च पुष्ये श्लेषार्द्रयोस्तथा ।
पुनर्वसौ च नो दद्यु रार्यिकाव्रतमुत्तमाः ।।६।।
पूर्वाभाद्रपदा मूलं धनिष्ठा च विशाखिका ।
श्रवणश्चेषु दीक्षन्ते क्षुल्लका शल्यवर्जिताः ।।७।।

इति दीक्षानक्षत्रपटलम्

ी ग्रहण-क्रि

सिद्धयोगीवृहद्भक्तिपूर्वकं लिङ्गमर्प्यताम् ।
लुञ्चाख्यानाग्न्यपिच्छात्म क्षम्यतां सिद्धभक्तितः ।।

अथ दीक्षाग्रहणक्रियायां सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोमि—
('सिद्धानुद्धूत' आदि)

अथ दीक्षाग्रहणक्रियायां........योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोमि—

('थोस्सामि गुणधराणं' इत्यादि जातिजरारोग इत्यादि वा) अनन्तरं लोचकरणं, नामकरणं, नाग्न्य प्रदानं, पिच्छ प्रदानं च अथ दीक्षा निष्ठापन क्रियायां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोमि ।

दी ादानोत्तर र्त्तव्य

समितीन्द्रियरोधाः पंच पृथक् क्षितिशयोरदाघर्षः ।
स्थिति सकृदशने लुञ्चावश्यक षट्के विचेलताऽस्नानम् ।।
इत्यष्टा ति मूलगुणान् निक्षिप्य दीक्षिते ।
संक्षेपेण सशीलादीन् गणी कुर्यात्प्रति ।।

लो –ि या

लोचो द्वित्रिचतुर्मासैर्वरो मध्योऽधमः क्रमात् ।
लघु प्राग्भक्तिभिः कार्यः सोपवास-प्रति मः ।।

अथ लोच प्रतिष्ठापन ि यां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोमि–

('तव सिद्धे' इत्यादि)

अथ लोचप्रतिष्ठापन ि यां योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोमि अनन्तरं स्वस्तेन परस्तेनापि वा लोचः कार्यः ।

अथ लोचनिष्ठापनक्रियायां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोमि (तव सिद्धे इत्यादि) अनन्तरं प्रतिक्रमणं कर्तव्यम् ।

बृहद (मुनि) दीक्षा विधि

दीक्षकः पूर्वदिने भोजनसमये भाजनादितिरस्कारविधि विधाय आहारं गृहीत्वा चैत्यालये आगच्छेत् । ततो बृहत्प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापने सिद्धयोगभक्ति पठित्वा गुरुपार्श्वे प्रत्याख्यानं सोपवासं गृहीत्वा, आचार्य-शान्ति-समाधि भक्तिः पठित्वा गुरवेः प्रणामं कुर्यात् ।

भावार्थ–दीक्षा के पहले दिन दीक्षा लेनेवाला भोजन के समय पात्रादिक की त्याग विधि करके और आहार ग्रहण करके, अर्थात् दीक्षा के पहले दिन दीक्षा लेने वाला पात्रादिक में भोजन नहीं करके, कर-पात्र में आहार करके चैत्यालय मे आवे, फिर बृहत्प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापन मे सिद्ध योग भक्ति को पढ़कर गुरु के पास मे चार प्रकार के आहार का त्याग करके उपवास ग्रहण करें । फिर आचार्य-शांति-समाधि भक्ति का पाठ पढ़कर गुरु को प्रणाम करे ।

अथ-दीक्षादाने दीक्षादातृजनः शांतिकगणधरवलय पूजादिकं यथाशक्ति कारयेत् । अथ दीक्षक स्नानादिकं कारयित्वा यथायोग्यालङ्कारयुक्तं महामहोत्सवेन चैत्यालये समानयेत् । स देवशास्त्रगुरूणां पूजां विधाय वैराग्यभावना परः सर्वैः सह क्षमां कृत्वा गुरोरग्रे तिष्ठेत् । ततो गुरोरग्रे संघस्याग्रे च दीक्षायै याचां कृत्वा तदाज्ञया सौभाग्यवतीस्त्रीविहिता स्वस्तिकोपरि श्वेतवस्त्रं प्रच्छाद्य तत्र पूर्वदिशाभिमुखः पर्यंकासनं कृत्वा आसने गुरोश्चोत्तराभिमुखो भूत्वा (१ संघाष्टकं संघं) च परिपृच्छाय लोचं कुर्यात् ।

भावार्थ-दीक्षा के कुछ दिन पहले दीक्षा दिलवाने वाले दाता एव गणधरवलय तथा किसी विधान की पूजा

यथाशक्ति करावें, फिर दीक्षा के दिन दीक्षा लेने वाले सज्जन को दाता ने घर स्नानादिक कराकर यथायोग्य सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाकर बड़े समारोह के साथ गाजे-बाजे से मन्दिर में लावे और वह आनन्दपूर्वक देव-शास्त्र गुरु सिद्धादिक की पूजन समारोह के साथ करके वैराग्य भावना में तत्पर वह दी गृहस्थ एवं ने कुटुम्बिजनो से । करावे, व स्वयं । कर के गुरुदेव के सामने बैठ जावे, तदनन्तर संघ के सामने गुरु महाराज से दीक्षा की याचना करके गुरु की आज्ञा से सौभाग्यवती स्त्री द्वारा जहाँ पर ठोस जमीन हो उस पर ये गये चा के स्वस्तिक पर श्वेत वस्त्र डालकर उस पर पूर्वाभिमुख ासन से जावे और गुरु महाराज उत्तराभिमुख जावें फिर दीक्षा लेनेवाला गुरु महाराज से पूछकर केशलुंच करे ।

शांति

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशांतिनाथाय शांति राय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय रक्तक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षा ामर विना ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं-ह्रः असि-आउसा-अमुकस्य ....(यहां 'अमुकस्य' शब्द के स्थान पर दीक्षा लेनेवाले का नाम लेवें) शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

इत्यनेन मन्त्रेण गन्धोदकादिकं त्रिवारं मंत्रयित्वा शिरसि निक्षिपेत् । शांति त्रेण गन्धोदकं त्रिपरिषिच्य मस्तकं वामहस्तेन स्पृशेत् ।

भावार्थ—इस शांति मंत्र को बोलते हुए आचार्य तीन बार दीक्ष के मर पर गन्धो डालें और बायें हाथ से दी के मस्तक को स्पर्श करें ।

र्द्धमान ंत्र

ॐ नमो भयवदो बड्ढमाणस्य रिसहस्सचक्कं जलत गच्छई आयासं पायासं लोयाणं भूयाणं जये वा, विदादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा मोहेण वा, सव्वजीव सत्ताणं अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा ।

॥ इति वर्द्धमान मत्र ॥

ततोदध्यक्षत गोमय दुर्वाकुरान् मस्तके वर्द्धमानमंत्रेण निक्षिपेत् ।

भावार्थ–इस वर्द्धमान मंत्र को बोलकर आचार्य दधि अक्षत गोमय भस्म दूब अंकुर दीक्षक के मस्तक पर डालें ।

ंत्र

ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रयपवित्रीकृतोत्तमागाय ज्योतिर्मयाय मतिश्रुतावधीमनःपर्ययकेवलज्ञानाय 'अ सि आ उ सा स्वाहा इदं मंत्रं पठित्वा भस्मपात्रं गृहीत्वा कर्पूरमिश्रितं भस्मं शिरसि निक्षिप्य निम्नमत्रं उच्चार्य प्रथमं केशोत्पाटनं कुर्यात् ।

भावार्थ–इस ऊपर के मंत्र को पढ़कर भस्मपात्र हाथ मे लेते हुए आचार्य कपूर मिली भस्म दीक्षक के सिर पर डालकर निम्न मंत्र बोलकर मस्तक के पहले स्थान का केश लुंच करें ।

ॐ ह्री श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा ।

पुनः ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो नमः ।

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रूं पाठकेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्यो नमः ।

इत्युच्चरन् गुरुः स्वहस्तेन पंचबारं केशान् उत्पाटयेत् ।

इस प्रकार बोलते हुए अपने हाथो से पाँच बार दीक्षक के केशो का उत्पाटन करके निम्न पाठ पढ़े ।

यथाशक्ति करावें, फिर दीक्षा के दिन दीक्षा लेने वाले सज्जन को दाता अपने घर स्नानादिक कराकर यथायोग्य सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाकर बड़े समारोह के साथ गाजे-बाजे से मन्दिर मे लावे और वह आनन्दपूर्वक देव-शास्त्र गुरु सिद्धादिक की पूजन समारोह के साथ करके वैराग्य भावना में तत्पर वह दी
गृहस्थ एवं अपने कुटुम्बिजनो से क्षमा करावे, व स्वयं ा कर के गुरुदेव के सामने बैठ जावे, तदनन्तर संघ के सामने गुरु महाराज से दीक्षा की याचना करके गुरु की आज्ञा से सौभाग्यवती स्त्री द्वारा जहाँ पर ठोस जमीन हो उस पर ये गये चावल के स्वस्तिक पर श्वेत वस्त्र डालकर उस पर पूर्वाभिमुख ासन से जावे और गुरु महाराज उत्तराभिमुख जावें फिर दीक्षा लेनेवाला गुरु महाराज से पूछकर केशलुंच करे ।

शांति

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय रक्तक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि-आउसा-अमुकस्य ....(यहां 'अमुकस्य' शब्द के स्थान पर दीक्षा लेनेवाले का नाम लेवें) शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।

इत्यनेन मन्त्रेण गन्धोदकादिकं त्रिवारं मंत्रयित्वा शिरसि निक्षितेत् । शांतिमंत्रेण गन्धोदकं त्रिपरिषिच्य मस्तकं वामहस्तेन स्पृशेत् ।

भावार्थ–इस शांति मंत्र को बोलते हुए आचार्य तीन बार दीि के मर पर गन्धोदक डालें और बायें हाथ से दी के मस्तक को स्पर्श करें ।

र्द्ध मान मंत्र

ॐ नमो भयवदो बड्ढमाणस्य रिसहस्सचक्कं जलतं गच्छई आयासं पायासं लोयाण भूयाणं जये वा, विदादे वा, थभणे वा, रणंगणे वा मोहेण वा, सव्वजीव सत्ताणं अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

॥ इति वर्द्धमान मंत्र ॥

ततोदध्यक्षत गोमय दुर्वाकुरान् मस्तके वर्द्धमानमंत्रेण निक्षिपेत्।

भावार्थ—इस वर्द्धमान मंत्र को बोलकर आचार्य दधि अक्षत गोमय भस्म दूब अंकुर दीक्षक के मस्तक पर डालें।

ंत्र

ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रयपवित्रीकृतोत्तमांगाय ज्योतिर्मयाय मतिश्रुतावधीमन.पर्ययकेवलज्ञानाय 'अ सि आ उ सा स्वाहा इद मंत्रं पठित्वा भस्मपात्रं गृहीत्वा कर्पूरमिश्रितं भस्मं शिरसि निक्षिप्य निम्नमंत्रं उच्चार्य प्रथमं केशोत्पाटनं कुर्यात्।

भावार्थ—इस ऊपर के मंत्र को पढकर भस्मपात्र हाथ मे लेते हुए आचार्य कपूर मिली भस्म दीक्षक के सिर पर डालकर निम्न मत्र बोलकर मस्तक के पहले स्थान का केश लुंच करें।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा।

पुनः ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो नमः।
ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः।
ॐ ह्रूं पाठकेभ्यो नमः।
ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्यो नमः।

इत्युच्चरन् गुरुः स्वहस्तेन पंचबारं केशान् उत्पाटयेत्।

इस प्रकार बोलते हुए अपने हाथो से पाँच बार दीक्षक के केशो का उत्पाटन करके निम्न पाठ पढ़े।

वृहद्दीक्षाया लोचनिष्ठापनक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेरण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा वन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्ति कयोत्सर्ग करोम्यहं । इति पंचवारं महामंत्रं जपेत् ।

लघुसिद्ध भक्ति

इच्छामि भंते ! सिद्धभक्ति काउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणारण-सम्मदंसरण-सम्मचारित्त जुत्तारणं अट्ठविहकम्मविप्प-मुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उढ्ढलोय मज्झम्मि पयट्ठियाणं तव-सिद्धाणं रणयसिद्धाण संजमसिद्धाणं अतीतारणागदवट्टमारणकालत्तय-सिद्धाण सव्वसिद्धाणं सयारिणच्चकाल अंचेमि पूजेमि वंदामि रणमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहि-मरणं जिरणगुरणसंपत्ति होउ मज्झं ।।इति।।

ततः शीर्ष प्रक्षाल्य गुरुभक्ति कृत्वा वस्त्राभरणं यज्ञोपवीता-दिकं परित्यज्य तत्रैवावस्थाय याचयेत् ।

भावार्थ–दीक्षा लेने वाला दीक्षार्थी अपने सिर को धोकर गुरुभक्ति पढ़कर वस्त्राभूषरण यज्ञोपवीतादिक का त्याग करके उसी अवस्था के लिए गुरु महाराज को हाथ जोड़कर दीक्षा की याचना करे ।

ततो गुरु शिरसि श्रीकारं लिखित्वा—
फिर गुरु महाराज दीक्षा लेने वाले दीक्षार्थी के सिर पर श्रीकार लिखकर निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप्य देवे ।

मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा ह्रीं स्वाहा ।।१०।।

ततो गुरुस्तस्यांजलौ केशर कर्पूर श्रीखंडेन श्रीकारं कुर्यात्—

भावार्थ–अर्थात् गुरु महाराज उस शिष्य की दोनो हाथों की अंजुली में केशर कर्पूर आदिक से बने हुए श्री खंड द्वारा

श्रीकार लिखे ।

फिर – श्रीकारस्यचतुर्दिक्षु—

रयणत्तय[2] च वन्दे चउवीसजिणं[24] तहा वन्दे ।

पंचगुरूणं[4] वन्दे चारणजुगलं[2] तहा वन्दे ।।

इति पठन् अंकान् लिखेत् पूर्वे ३, दक्षिणे २४, पश्चिमे ५, उत्तरे १ । लिखित्वा—

सम्यग्दर्शनाय नमः, सम्यग्ज्ञानाय नमः, सम्यक्चारित्राय नमः । इति पठन् तन्दुलैरञ्जलि पूरयेत् तदुपरि नालिकेल पूगीफलं च धृत्वा सिद्धचारित्तयोगिभक्ति पठित्वा व्रतादिकं दध्यात् ।

भावार्थ – श्री लिखकर उसके चारो तरफ ऊपर लिखी हुई गाथा बोलकर पूर्व मे ३, दक्षिण मे २४, पश्चिम मे ५, उत्तर में १ अंकों को लिखकर 'सम्यग्दर्शनाय नमः' इत्यादि बोलकर शिष्य की अंजुलि मे चावल भरकर ऊपर नारियल सुपारी धरकर समय हो तो पूरी सिद्ध चरित्र योगि भक्ति पढ़कर व्रत देवें, नहीं तो लघु भक्तियाँ पढ़ें ।

वदसमिदिंदिय रोधो लोचो आवसयमचेल मण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयमत्तं च ।।१।।

पंच महाव्रत पंच समिति पंचेन्द्रियरोध लोचषडावश्यकक्रियादयोऽष्टाविंशति मूलगुणाः उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिक धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलं सम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं समारुढं ते मे भवतु ।

अर्थात्—यह उपरोक्त पाठ तीन बार पढ़ कर शिष्यो को व्रतो की व्याख्या समझाकर व्रत देवें और शांति भक्ति का पाठ पढ़ें ।

ा दि श्लो

श्लोक–धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते ।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ।।

इति आशीःश्लोकं पठित्वा अंजलिस्थतंडुलादिकं दात्रे प्रदेयम् ।

अर्थात्–दीक्षा लेने वाला सज्जन अपने हाथ मे रखे हुए तंडुल नारियल सुपारी वगैरह उपरोक्त आशीर्वादात्मक श्लोक बोलकर दातार को देवे ।

ो श ं स ारारो ण

सम्यग्दर्शनसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१।।
सम्यग्ज्ञानसंस्कार इह ुनौ स्फुरतु ।।२।।
सम्यक्चारित्रसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।३।।
बाह्याभ्यन्तरतपःसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।४।।
चतुरंगवीर्यसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।५।।
अष्ट मातृमंडल संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।६।।
शुद्ध्यष्टकोष्टंसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।७।।
अशेषपरीषहजयसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।८।।
त्रियोगासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।९।।
त्रिकरणासंयमनिवृत्तिशी तासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१०।।

अयं दशासंयमनिवृतिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।११।।
अयं चतुःसंज्ञानिग्रहशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१२।।
अयं पंचेन्द्रियजयशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१३।।
अयं दशधर्मधारणशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१४।।
अयं अष्टादशसहस्त्रशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१५।।
अयं चतुरशीतित्रक्षणसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१६।।

इति प्रत्येकमुच्चार्यं शिरसि लवंग पुष्पाणि क्षिपेत् ।

अर्थात्—इन प्रत्येक मंत्र को बोलते हुए आचार्य दीक्षक के मस्तक पर पुष्पादि क्षेपण करके संस्कार करें। फिर निम्न मंत्र पढकर दीक्षक के मस्तक पर पुनः पुष्प डाले ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ परम हंसाय परमेष्ठिने हंस हंस हं ह्रां ह्रं ह्रौं ह्रीं ह्रें हः जिनाय नमः जिनं स्थापयामि संवौषट् ।।

थ गु विलि

स्वस्ति श्रीवीरनिर्वाणसंवत्सर २४...... ......मासानां मासोत्तमे.. ...... मासे..........पक्षे .. . .. तिथौ.........
वासरे मूलसंघे सरस्वतीगच्छे सेनगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्य-परम्परायां ....(फिर जो गुरु की परम्परा है उसे बोले)

थोपकरण दान

पिच्छिकादान

ॐ णमो अरहंताणं। भो अन्तेवासिन् ! षड्जीवनिकाय-रक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं पिच्छोपकरणं गृहाण गृहणा

इति पिच्छिकादान

ी दि श्लो

श्लोक–धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते ।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ।।

इति आशीःश्लोकं पठित्वा अंजलिस्थतडुलादिकं दात्रे प्रदेयम् ।

अर्थात्–दीक्षा लेने वाला सज्जन अपने हाथ मे रखे हुए तंडुल नारियल सुपारी वगैरह उपरोक्त आशीर्वादात्मक श्लोक बोलकर दातार को देवे ।

ो श ं स ारारो ण ्

सम्यग्दर्शनसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१।।
सम्यग्ज्ञानसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।२।।
्चारित्रसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।३।।
अयं बाह्याभ्यन्तरतपःसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।४।।
चतुरंगवीर्यसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।५।।
अष्ट मातृमंडल संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।६।।
शुद्ध्यष्टकोष्टंसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।७।।
अशेषपरीषहज कार इह मुनौ स्फुरतु ।।८।।
त्रियोगासंयमनिवृत्तिशी ासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।९।।
त्रिकरणासंयमनिवृत्तिशी ासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१०।।

अयं दशासंयमनिवृतिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।११।।
अयं चतुःसंज्ञानिग्रहशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१२।।
अयं पंचेन्द्रियजयशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१३।।
अयं दशधर्मधारणशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१४।।
अयं अष्टादशसहस्त्रशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१५।।
अयं चतुरशीतित्रक्षणसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।।१६।।

इति प्रत्येकमुच्चार्य शिरसि लवग पुष्पाणि क्षिपेत् ।

अर्थात्–इन प्रत्येक मंत्र को बोलते हुए आचार्य दीक्षक के मस्तक पर पुष्पादि क्षेपण करके संस्कार करें । फिर निम्न मंत्र पढकर दीक्षक के मस्तक पर पुनः पुष्प डाले ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । ॐ परम हंसाय परमेष्ठिने हंस हंस हं ह्रां ह्रं ह्रौं ह्रों ह्रं हः जिनाय नमः जिनं स्थापयामि संवौषट् ।।

अथ गुर्वावलि

स्वस्ति श्रीवीरनिर्वाणसंवत्सर २४ ....मासानां मासोत्तमे ...... मासे..... ..पक्षे..... ...तिथौ...... . वासरे मूलसंघे सरस्वतीगच्छे सेनगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्य-परम्परायां ....(फिर जो गुरु की परम्परा है उसे बोले)

थोपकरण प्रदान

पिच्छिकादान

ॐ णमो अरहंताणं । भो अन्तेवासिन् ! षड्जीवनिकाय-रक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं पिच्छोपकरणं गृहाण गृहणा

इति पिच्छिकादान

शास्त्रदान

ॐ णमो अरहंताणं, मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानाय द्वादशांगश्रुताय नमः। भो अन्तेवासिन्! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाण

॥ इति शास्त्रदानम् ॥

शौचोपकरणं (कमण्डलु)

ॐ णमो अरहंताणं, रत्नत्रयपवित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यन्तर–मलशुद्धाय नमः। भो अन्तेवासिन्! इदं शौचोपकरणं गृहाण गृहाण।

(गुरु महाराज बांये हाथ से कमण्डलु दान देवें।)

॥ इति कमण्डलुदानम् ॥

लघु माधि भ :

इच्छामि भंते समाहिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं रयणत्तयपरूपवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्च–कालं अंचेमि, पूजेमि, वन्दामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति कम्मक्खओ होउ मज्झं।

ततो नवदीक्षितो मुनिर्गुरुभक्त्या गुरुं प्रणम्य अन्यान् मुनीन् प्रणम्योपविशति। यावद्व्रतारोपणं न भवति तावदन्ये मुनयः प्रतिवन्दनां न ददंति।

ततो दातृ प्रमुखाः जनाः उत्तमफलानि अग्रे निधाय तस्मै नमोऽस्तु तवेति प्रणामं कुर्वन्ति।

भावार्थ—समाधि भक्ति पढ़ने के बाद नवदीक्षित मुनि गुरुभक्ति से गुरुदेव को प्रणाम (नमस्कार) करके अन्य मुनियों को भी नमस्कार करके बैठ जावे। तक व्रतों का आरोपण नहीं होवे, तब तक दूसरे मुनिवृन्द प्रतिवन्दना नहीं करें, इसके

बाद दाता प्रधान मनुष्य उत्तम फलो को आगे रखकर उन नव-दीक्षित मुनिराज को नमोस्तु करें।

ततस्तत्पक्षे द्वितीयपक्षे वा सुमुहूर्ते व्रतारोपण कुर्यात्। तदा रत्नत्रयपूजां विधाय पाक्षिकप्रतिक्रमणपाठः पठनीयः। तत्र पाक्षिकनियमग्रहणसमयात्पूर्वं यदा 'वदसमिदिंदिय' इत्यादि पठ्यते तदा पूर्ववत् व्रतादि दद्यात्। नियमग्रहणसमये यथायोग्यं एकं तपो दद्यात्। (पल्यविधानादिकं) दातृ प्रभृतिः श्रावकेभ्योपि एकं एकं तपो दद्यात्। ततोऽन्ये मुनयः प्रतिवंदना ददंति।

शुद्धि ुक्त रणे विधिः

त्रयोदशसु पंचसु त्रिषु वा कच्चोलिकासु लवंग–एला–पूगी–फलादिकं निक्षिप्य ताः कच्चोलिकाः गुरोरग्रे स्थापयेत्। मुख-शुद्धि मुक्तकरणं पाठक्रियायामित्याद्युच्चार्य सिद्धयोग-आचार्य-शान्ति-समाधिभक्ति विधाय ततः पश्चान्मुखशुद्धिं गृह्णीयात्।

क्षुल्ल दीक्षाविधिः

अथ लघुदीक्षाया सिद्ध-योगि-शाति-समाधिभक्ति. पठेत्। 'ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं २१ अथवा १०८ बारं दीयते।

च वि स्तारेण लघुदी ा वि धिः

अथ लघुदीक्षा नेतृजनः पुरुष. स्त्री वा दाता संस्थापयति। यथायोग्यमलंकृतं कृत्वा चैत्यालये समानयेत्। देवं वंदित्वा, सर्वैः सह क्षमा कृत्वा चैत्यालये समानयेत्। देवं वंदित्वा, सर्वैः सह क्षमां कृत्वा गुरोरग्रे च दीक्षां याचयित्वा तदाज्ञया सौभाग्यवती-स्त्रीविहितस्वस्तिकोपरि श्वेतवस्त्रं प्रच्छाद्य तत्र पूर्वाभिमुख.

पर्यंकासने गुरुश्चोत्तराभिमुखः संघाष्टं संघं पृच्छ्य च परिपृच्छ्य लोचं .... ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्म-षाय दिव्यतेजोमूर्तये शांतिनाथाय शांतिकाराय सर्वविघ्न-प्रणाशकाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय 'ओ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा अमुकस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा' अनेन मंत्रेण गंधोदकादिकं त्रिबारं शिरसि निक्षिपेत् । शांतिमंत्रेण गंधोदकं त्रिबारं परिसिच्य वाम हस्तेन स्पृशेत् । ततो दध्यक्षत-गोमयतद्भस्म दूर्वांकुरान् मस्तकं वर्धमानमंत्रेण निक्षिपेत् । ॐ भयवदो वड्ढमाणस्सेत्यादि वर्धमानमंत्रः पूर्वकथितः । लोचा-दिविधिं महा विधाय सिद्धभक्तिं योगभक्तिं पठित्वा व्रतं दद्यात् ।

दंसणवयेत्यादि बारत्रयं पठित्वा व्याख्यां विधाय च गुर्वावलीं पठेत् । ततः संयमाद्युपकरणं दद्यात् ।

ॐ णमो अरहंताणं । भो क्षुल्लक (आर्य-ऐलक-क्षुल्लके वा) षड्जीवनिकायरक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं पिच्छोपकरणं गृहाण गृहाण इत्यादि पूर्ववत्कमण्डलु ज्ञानोपकरणादिकं च मंत्रं पठित्वा दद्यात् ।

इति लघुदीक्षा विधान समाप्तम्

ोपाध्ाय दी ादा विधि:

सुमुहूर्ते दाता गणधरवलयार्चनं द्वादशांगश्रुता च कारयेत् । ततः श्रीखण्डादीनां छटादिकं दत्वा तण्डुलैः स्वस्ति कृत्वा तदुपरि पट्टकं संस्थाप्य तत्र पूर्वाभिमुखं तमुपाध्यायपदं योग्यं मुनिमासयेत् । अथोपाध्यायपदस्थापनक्रियायां पूर्वाचार्येत्या-

द्युच्चार्य सिद्धश्रुतभक्ति पठेत् । तत्र आह्वानादि मंत्रानुच्चार्य शिरसि लवंग पुष्पाक्षतं क्षिपेत् । तद्यथा "ओ ह्रौं उवज्झायाण उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि एहि, संवौषट् आह्वानन स्थापनं सन्निधिकरणं ।" ततश्च ओ ह्रौं णमो उवज्झायाण उपाध्याय परमेष्ठिने नमः" मंत्रं सहेदुंना चदनेन शिरसि न्यसेत् । ततश्च शातिसमाधिभक्तिः पठेत् । ततः स उपाध्यायो गुरुभक्ति दत्वा प्रणम्य दात्रे आशिषं दद्यादिति—

इत्युपाध्यायपदस्थापन विधि

थ ा ार्यपदस्थापनवि धिः

सुमुहूर्ते दाता शांतिकं गणधरवलयार्चनं च यथाशक्ति कारयेत् । ततः श्रीखण्डादीना छटादिकं कृत्वा आचार्यपद योग्यं मुनिमासयेत् । आचार्यपद-प्रतिष्ठापन-क्रियायां इत्याद्युच्चार्य भक्ति पठेत् । "ओ ह्रूं परम सुरभिद्रव्यसंदर्भ परिमलगर्भ-तीर्थाम्बु सम्पूर्णसुवर्णकलशपंचकतोयेन परिषेचयामीति स्वाहा" इति पठित्वा कलशपंचकतोयेन पादौ परिषेचयेत् । ततः पंडिताचार्यो "निर्वेदसौष्ठी इत्यादि महर्षिस्तवन पठन् पादौ समंतात्परामृश्य गुणारोपणं कुर्यात् ।

ततश्च ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं धर्माचार्याधिपतये नमः" अनेन मंत्रेण सहेन्दुना चंदनेन पादयोर्द्वयोस्तिलकं दद्यात् । ततः शांतिसमाधिभक्तिं कृत्वा गुरुभक्त्या गुरुं प्रणम्योपविशति । ततः उपासकास्तस्य पादयोरष्टतयिमिष्टि कुर्वन्ति । यतयश्च गुरुभक्ति दत्वा प्रणमन्ति । स उपासकेभ्यः आशीर्वादं दद्यात् ।

इत्याचार्यपददान विधि

ॐ ह्रां ह्रा श्री अर्हं हं सः आचार्याय नमः ।

आचार्यवचनमंत्रः अन्यश्च—

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं हं सः आचार्याय नमः । आचार्यमंत्रः

॥ इति ॥

र्षायोग–स्थापना

अथ-वर्षा योग प्रतिष्ठापनक्रियायां सिद्धभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहं । "णमो अरहंताण" इत्यादि दंडक कायोत्सर्ग व थोस्सामि स्तव पढ़े । सिद्धानुद्धूतेत्यादि सिद्धभक्ति पढ़ें ।

अथ- र्षायोगप्रतिष्ठानक्रियायां योगभक्तिकायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद् दंडकादि करके जाति जरोरु रोग मरणा इत्यादि योगिभक्ति को पढ़े ।

पुनः चतुर्दिशाओ मे मुख करके अथवा भावो से ही पूर्वदिक् वन्दना करें । पूर्व दिक् चैत्यालय वंदना ।

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहं ।।

'स्वयंभुवा' आदि और 'यस्य प्रभावात्' आदि स्वयंभूस्तोत्र में ऋषभनाथ स्तोत्र और अजितनाथ स्तोत्र पढ़ें ।

अथ- र्षायोग प्रतिष्ठापनक्रियायां चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं । णमो अरहंताणं इत्यादि दंडकादि करके

वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ।।

अवनितल गतानां कृत्रिमाकत्रिमाणा
वन भवन गतानां दिव्य वैमानिकानां ।
इह मनुज कृतानां देव राजार्चितानां
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ।।२।।

जंबूधातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवां-
श्चन्द्राम्भोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभाजिनाः ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्ट कर्मेन्धना
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ।।३।।

श्री मन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबु वृक्षे।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर रुचके कुंडले मानुषांके ।।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके।
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ।।
द्वौ कुन्देन्दुतुषारहारधवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ।
द्वौबंधूकसमप्रभौ जिन ौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषा षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा-
स्ते सञ्ज्ञान दिवाकरा सुरनुताः सिद्धि प्रयच्छन्तु नः ।।५।।

अ चलिका

इच्छामि भंते ! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय-तिरिलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासिए-वाण-वितर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदन्ति णमंस्संति अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि-लाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति पूर्वदिक् वन्दना

थ दक्षिणदि चैत ाल ना

यावंति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहं ।।

'त्वं शंभवः' आदि 'गुणाभिनन्दादभिनंदो' आदि स्वयंभू स्तोत्र मे शंभवनाथ और अभिनंदननाथ स्तोत्र पढ़ें ।

अथ-वर्षायोग-प्रतिष्ठापन-क्रियायां चैत्यभक्ति-कायोत्सर्ग

करोम्यहं । पूर्ववत् दंडकादि करके कायोत्सर्ग व थोस्सामि स्तव पढ़े ।

पुनः वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु इत्यादि तथा जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं पर्यंत पढ़ें ।

पशि मदि चै दना

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ।।

'अन्वर्थ :' आदि 'पद्म प्रभः पद्मपलाशलेश्यः' आदि स्वयंभूस्तोत्र मे सुमतिजिनस्तोत्र और पद्मप्रभजिनस्तोत्र पढ़ें ।

अथ-वर्षायोग प्रतिष्ठापन-क्रियायां-चैत्यभक्ति-कायोत्सर्ग करोम्यहम् । पूर्ववद् दंडकादि करके 'वर्षेषु वर्षान्तर' इत्यादि पढ़ें ।

त्तरदिक् चै ना

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नामाम्यहं ।

'स्वास्थ्य यदात्यतिकमेष' आदि 'चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगोरं' आदि स्वयंभूस्तोत्र मे सुपार्श्वजिनस्तोत्रम् और चन्द्रप्रभस्तोत्र पढ़ें ।

अथ यियोग प्रतिष्ठापन-क्रियायां चैत्यभक्ति-कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके " षु वर्षान्तर" इत्यादि भक्ति को पढ़ें ।

इति चतुर्दिग्वन्दना

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रियायां.......... .पंचगुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके 'श्रीमदमरेन्द्रमुकुट' इत्यादि पंच महागुरुभक्ति को पढ़ें ।

अथ वर्षा योग प्रतिष्ठान क्रियायां .... शांति भक्ति

कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके 'न स्नेहाच्छरणं प्रयांति' इत्यादि शांतिभक्ति पुनः सर्व दोष शुद्धयर्थं समाधिभक्ति करनी चाहिये ।

इसी प्रकार वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रियायां.........शांति-भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके 'न स्नेहाच्छरणं प्रयांति' इत्यादि शांतिभक्ति पुनः सर्व दोष शुद्धयर्थं समाधिभक्ति करनी चाहिये ।

इसी प्रकार वर्षायोगनिष्ठापन मे भी अन्तर केवल इतना है कि "वर्षा योग प्रतिष्ठापन के स्थान पर वर्षायोगनिष्ठापन पाठ का उच्चारण करें ।

मासं वासोऽन्यदैकत्र योग क्षेत्रं शुचौ व्रजेत् ।
मार्गेऽतीते त्यजेच्चार्थं वशादपि न लंघयेत् ।।
नभश्चतुर्थी तद्याने कृष्णां शुक्लोर्ज पंचमी ।
यावन्न गच्छेच्छेदे कथं चिच्छेदमाचरेत् ।।६६।।

अर्थ-चतुर्मास के अतिरिक्त मुनि गुण किसी एक नगरादि स्थानो में एक महीने तक ठहर सकते हैं । आषाढ़ के महीने में वह श्रमण संघ वर्षायोग को चला जावे । और मगसिर का महीना बीतते ही उस वर्षायोग स्थान को छोड देवे । यदि आषाढ के महीने मे वर्षा योग स्थान मे न पहुँच सके तो कारण वश भी श्रावण वदी चतुर्थी का उलंघन न करें ।

तथा कार्तिक शुक्ला पंचमी के पहले प्रयोजन वश भी उस स्थान को छोड़कर स्थानांतर न करे यदि कदाचित् दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण यथोक्त प्रयोग समय का उलंघन करे तो प्रायश्चित ग्रहण करे ।

तथा बारह योजन के अन्तर्गत किसी साधु की समाधि का प्रसंग हो तो जा भी सकते हैं ।

करोम्यहं । पूर्ववत् दंडकादि करके कायोत्सर्ग व थोस्सामि स्तव पढे ।

पुनः वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु इत्यादि तथा जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं पर्यंत पढें ।

पश्चिम दिक् चैत्य वंदना

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ।।

'अन्वर्थ ं :' आदि 'पद्म प्रभ· पद्मपलाशलेश्यः' आदि स्वयंभूस्तोत्र में सुमतिजिनस्तोत्र और प्रभजिनस्तोत्र पढ़ें।

अथ-वर्षायोग प्रतिष्ठापन–क्रियायां–चैत्यभक्ति–कायोत्सर्गं करोम्यहम् । पूर्ववद् दंडकादि करके 'वर्षेषु वर्षान्तर' इत्यादि पढ़ें ।

उत्तर दिक् चैत्य वंदना

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नामाम्यहं ।

'स्वास्थ्य यदात्यतिकमेष' आदि 'चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगोरं' आदि स्वयंभूस्तोत्र में सुपार्श्वजिनस्तोत्रम् और चन्द्रप्रभस्तोत्र पढें ।

अथ योग प्रतिष्ठापन–क्रियायां चैत्यभक्ति–कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके " षु न्तिर" इत्यादि भक्ति को पढ़ें ।

इति चतुर्दिग्वन्दना

अथ वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रियायां..... . . . .पंचगुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं । पूर्ववद्दंडकादि करके 'श्रीमदमरेन्द्रमुकुट' इत्यादि पंच महागुरुभक्ति को पढ़ें ।

अथ वर्षा योग प्रतिष्ठान क्रियायां .... शांति भक्ति

कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद् डकादि करके 'न स्नेहाच्छरणं प्रयाति' इत्यादि शांतिभक्ति पुनः सर्व दोष शुद्धयर्थं समाधिभक्ति करनी चाहिये ।

इसी प्रकार वर्षायोग प्रतिष्ठापन क्रियायां... .....शाति-भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहं । पूर्ववद् डकादि करके'न स्नेहाच्छरणं प्रयांति' इत्यादि शांतिभक्ति पुनः सर्व दोष शुद्धयर्थ समाधिभक्ति करनी चाहिये ।

इसी प्रकार वर्षायोगनिष्ठापन मे भी अन्तर केवल इतना है कि "वर्षा योग प्रतिष्ठापन के स्थान पर वर्षायोगनिष्ठापन पाठ का उच्चारण करें ।

मासं वासोऽन्यदैकत्र योग क्षेत्रं शुचौ व्रजेत् ।
मार्गेऽतीते त्यजेच्चार्थं वशादपि न लंघयेत् ।।
नभश्चतुर्थी तद्याने कृष्णां शुक्लोर्ज पंचमी ।
यावन्न गच्छेच्छेदे कथं चिच्छेदमाचरेत् ।।६६।।

अर्थ-चतुर्मास के अतिरिक्त मुनि गुण किसी एक नगरादि स्थानो में एक महीने तक ठहर सकते हैं । आषाढ के महीने में वह श्रमण संघ वर्षायोग को चला जावे । और मगसिर का महीना बीतते ही उस वर्षायोग स्थान को छोड देवे । यदि आषाढ़ के महीने मे वर्षा योग स्थान मे न पहुँच सके तो कारण वश भी श्रावण वदी चतुर्थी का उलंघन न करें ।

तथा कार्तिक शुक्ला पंचमी के पहले प्रयोजन वश भी उस स्थान को छोड़कर स्थानांतर न करे यदि कदाचित् दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण यथोक्त प्रयोग समय का उलंघन करे तो प्रायश्चित ग्रहण करे ।

तथा बारह योजन के अन्तर्गत किसी साधु की समाधि का प्रसंग हो तो जा भी सकते हैं ।

श्री रस ।र ।

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते
श्रीचन्द्रिकाकलित–निर्मल–शुभ्रवस्त्रे ।
कामार्थदायि–कलहंस–समाधिरुढे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।१।।

देवासुरेन्द्रनतमौलिमणिप्ररोचिः
श्रीमंजरी निविड़-रंजित पाद पद्मे ।
नीलालाके प्रमद-हस्तिसमानयाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।२।।

केयूर–हार–मणि–कुंडल-मुद्रिकाद्यैः
सर्वांग–भूषण–नरेन्द्र–मुनीन्द्रवंद्ये ।
नाना सुरत्नवरनिर्मलमौलियुक्ते
वागीश्वरि प्रतिदिनं रक्ष देवि ।।३।।

मंजीरकोत्कनककंकणी णीनां
काचयाश्च झंकृतरवेण विराजमाने ।
वारिनिधिसंततिव ाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं रक्ष देवि ।।४।।

कंकेलि–पल्लव–विनिंदित–पाणियुग्मे
पद्मासने ि – ान तवत्रे ।
जैनेन्द्रवक्त्र–भवदिव्य–समस्तभावे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।५।।

अर्द्धेन्दुमंडितजटा–ललितस्वरूपे
शास्त्र ाशिनि तकलाधिनाथे ।

चिन्मुद्रिका जपसरामय पुस्तकांके
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।६।।

डिंडीरपिडहिमशङ्ख सिताभ्रहारे
पूर्णेन्दुबिंबरुचिशोभित दिव्यगात्रे ।
चांचल्यमानमृगशावललाटनेत्रे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।।७।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नतकामरूपे
नित्यं फणीन्द्र गरुडाधिप किंनरेन्द्रैः ।
विद्याधरेन्द्रसुरयक्षसमस्तवृन्दैः
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।

सरस्वत्या प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति मानवाः ।
तस्मान्निश्चलभावेन पूजनीया सरस्वती ।।१।।
श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्ना भारती बहुभाषिणी ।
ानतिमिरं हन्ति विद्याबहुविकासिनी ।।२।।
सरस्वती मया दृष्टा दिव्यकमललोचना ।
हंसस्कन्धसमारूढ़ा वीणापुस्तकधारिणी ।।३।।
प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती ।
तृतीयं शारदा देवि चतुर्थं हंसगामिनी ।।४।।
पंचमं विदुषां माता वागीश्वरि तथा ।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं अष्टमं ब्रह्मचारिणी ।।५।।
नवमं च जगन्माता दशमं ब्राहिणी तथा ।
एकादशं तु ब्रह्माणी द्वादशं वरदा भवेत् ।।६।।
वाणी त्रयोदशं नाम भाषा चैव चतुर्दशम् ।
पंचदशं तु श्रुतदेवी षोडशं गोर्निगद्यते ।।७।।

श्री रस ास्तो

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते
श्रीचन्द्रिकाकलित—निर्मल—शुभ्रवस्त्रे ।
कामार्थदायि—कलहंस—समाधिरुढे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥१॥

देवासुरेन्द्रनतमौलिमणिप्ररोचिः
श्रीमंजरी निविड़-रंजित पाद पद्ये ।
नीलालाके प्रमद-हस्तिसमानयाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥२॥

केयूर—हार—मणि—कुंडल-मुद्रिकाद्यैः
सर्वांग—भूषण—नरेन्द्र—मुनीन्द्रवंद्ये ।
नाना सुरत्नवरः लमौलियुक्ते
वागीश्वरि प्रतिदिनं रक्ष देवि ॥३॥

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां
काचयाश्च झंकृतरवेण विराजमाने ।
सद्धर्म वारिनिधिसंततिवर्धमाने
वागीश्वरि प्रतिदिनं रक्ष देवि ॥४॥

कंकेलि—पल्लव—विनिंदित—पाणियुग्मे
पद्मासने ि —पद्मसमान तवत्रे ।
जैनेन्द्रवक्त्र—भवदिव्य—समस्तभावे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥५॥

अर्द्धेन्दुमंडित ा—ललितस्वरूपे
शास्त्र ाशिनि कलाधिनाथे ।

चिन्मुद्रिका जपसरामय पुस्तकाके
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥६॥

डिंडीरपिंडहिमशङ्खसिताभ्रहारे
पूर्णेन्दुबिंबरुचिशोभित दिव्यगात्रे ।
चांचल्यमानमृगशावललाटनेत्रे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥७॥

पूज्ये पवित्रकरणोन्नतकामरूपे
नित्यं फणीन्द्र गरुडाधिप किं नरेन्द्रैः ।
विद्याधरेन्द्रसुरयक्षसमस्तवृन्दैः
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ।

सरस्वत्या प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति मानवाः ।
तस्मान्निश्चलभावेन पूजनीया सरस्वती ॥१॥
श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्ना भारती बहुभाषिणी ।
अज्ञानतिमिरं हन्ति विद्याबहुविकासिनी ॥२॥
सरस्वती मया दृष्टा दिव्यकमललोचना ।
हंसस्कन्धसमारूढा वीणापुस्तकधारिणी ॥३॥
प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती ।
तृतीयं शारदा देवि चतुर्थं हंसगामिनी ॥४॥
पंचमं विदुषां माता वागीश्वरि तथा ।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं अष्टमं ब्रह्मचारिणी ॥५॥
नवमं च जगन्माता दशमं ब्राह्मिणी तथा ।
एकादशं तु ब्रह्माणी द्वादशं वरदा भवेत् ॥६॥
वाणी त्रयोदशं नाम भाषा चैव चतुर्दशम् ।
पंचदशं तु श्रुतदेवी षोडशं गौर्निगद्यते ॥७॥

एतानि श्रु तनामानि प्रातरुत्थाय च प ॑ ।
तस्य संतुष्यति माता शारदा वरदा भवेत् ॥८॥
सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरुपिणी ।
विद्यारंभं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥९॥

श्री भट्टाऽकलंक प्रणीतं

स रूप म ोधन

मुक्ताऽमुक्तैकरूपो यः कर्मभिः संविदादिना ।
अ ं परमात्मानं ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ॥१॥
सोऽस्त्यात्मा सोपयोगोऽयं क्रमाद्धेतुफलावहः ।
यो ग्राह्योऽग्राह्यनाद्यन्तः स्थित्युत्पत्तिव्ययात्मकः ॥२॥
प्रमेयत्वादिभिर्धर्मैरचिदात्मा चिदात्मक. ।
ज्ञानदर्शनतः तस्मात् चेतनाचेतनात्मकः ॥३॥
ाद्भिन्नो न चाभिन्नो भिन्नाभिन्नः कथंचन ।
ज्ञानं पूर्वापरीभूतं सोऽयमात्मेति कीर्त्तितः ॥४॥
स्वदेहप्रमितश्चायं ज्ञानमात्रोऽपि नैव सः ।
ततः ं यं विश्वव्यापी न था ॥५॥
नानाज्ञानस्वभावत्वादेकोऽनेकोऽपि नैव सः ।
ै कस्वभावत्वादेकानेकात्मको भवेत् ॥६॥
नाऽवक्तव्यः स पाद्यैः निर्वाच्यः परभा ः ।
तस्मान्नैकांततो वाच्यो नापि वाचामगोचरः ॥७॥
स स्याद्विधिनिषेधात्मा स्वधर्मपरध ोः ।
समूर्तिर्बोधमूर्तित्वादमूर्तिश्च विपर्ययात् ॥८॥

इत्याद्यनेककर्मत्वं बंधमोक्षौ तयोः फलम् ।
आत्मा स्वीकुरुते तत्तत्कारणैः स्वयमेव तु ॥९॥

कर्ता यः कर्मणां भोक्ता तत्फलाना स एव तु ।
बहिरन्तरुपायाभ्यां तेषा मुक्तत्वमेव हि ॥१०॥

सद्दृष्टिज्ञानचारित्रमुपायः स्वात्मलब्धये ।
तत्त्वे याथात्म्य संस्थित्यमात्मनो दर्शनं मतम् ॥११॥

यथावद्वस्तुनिर्णीतिः सम्यग्ज्ञानं प्रदीपवत् ।
तत्स्वार्थव्यवसायात्म कथञ्चित्प्रमितेः पृथक् ॥१२॥

दर्शनज्ञानपर्यायेषूत्तरोत्तरभाविषु ।
स्थिरमालंबनं यद्वा माध्यस्थ्यं सुखदुःखयोः ॥१३॥

ज्ञाता ऽहमेकोऽहं सुखे दुःखे न चापरः ।
इतीदं भावनादार्ढ्यं चारित्रमथवापरम् ॥१४॥

तदेतन्मूलहेतोः स्यात्कारणं सहकारकम् ।
तद्बाह्यं देशकालादि तपश्च बहिरंगकम् ॥१५॥

इतीदं सर्वमालोच्य सौस्थ्ये दौःस्थ्ये च शक्तितः ।
आत्मानं भावयेन्नित्यं रागद्वेषविवर्जितम् ॥१६॥

कषायैं रञ्जितं चेतस्तत्त्वं नैवावगाहते ।
नीली रक्तेऽम्बरे रागो दुराधेयो हि कौंकुमः ॥१७॥

ततस्त्वं दोषनिर्मुक्त्यै निर्मोहो भव सर्वतः ।
उदासीनत्वमाश्रित्य तत्त्वचिंतापरो भव ॥१८॥

हेयोपादेयतत्त्वस्य स्थितिं विज्ञाय हेयतः ।
निरालम्बो भवान्यस्मादुपेये सावलम्बनः ॥१९॥

स्व परं चेति वस्तुत्वं वस्तुरूपेण भावय ।
उपेक्षा भावनोत्कर्ष-पर्यन्ते शिवमाप्नुहि ॥२०॥

मोक्षेऽपि यस्य नाकांक्षा स मोक्षमधिगच्छति ।
इत्युक्तत्वाद्धितान्वेषी कांक्षा न क्वापि योजयेत् ।।२१।।

सोऽपि च स्वात्मनिष्ठत्वात्सुलभां यदि चिन्त्यते ।
आत्माधीने सुखे तात यत्नं किं न करिष्यसि ।।२२।।

स्वं परं विद्धि तत्रापि व्यामोहं छिन्धि किन्त्विमम् ।
अनाकुलस्वसंवेद्ये स्वरूपे तिष्ठ केवले ।।२३।।

स्वः स्वं स्वेन स्थितं स्वस्मै स्वस्मात्स्वस्याविनश्वरे ।
स्वस्मिन् ध्यात्वा लभेत्स्वेस्थमानंदममृतं पदम् ।।२४।।

इति स्वतत्त्वं परिभाव्यवाङ्मयं
य एतदाख्याति श्रृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसम्पदं,
स्वरूपसंबोधन पंचविंशति ।।२५।।

(इति)

श्री पार्श्वनाथ-स्तोत्र

श्री पार्श्वं पातु वो नित्यं जिनः परम शंकरः ।
नाथः परमशक्तिश्च शरण्यं :।।१।।

सार्वो विश्वंभरः स्वामी सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
–सत्त्वहितो योगी श्रीकरः परमार्थदः ।।२।।

देव देवः परमसिद्धि ानंदमयः शिवः ।
परमात्मा परमब्रह्म परमः परमेश्वरः ।।३।।

ाथः सुरज्येष्ठो भूतेशः पुरुषो : ।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मेशः श्रीनिवासः शुभार्णवः ।।४।।

सर्वज्ञः सर्वदेवेशः सर्वदः सर्वदासमः ।
सर्वात्मा सर्वदर्शी च सर्वव्यापी जगद्गुरुः ।।५।।

तत्त्वमूर्तिः परो दिव्यः परब्रह्म प्रकाशकः ।
परमेन्दुः परप्राप्यः परमामृतसिद्धिदः ।।६।।

अजस्सनातनः शंभुरीश्वरश्च सदाशिवः ।
विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा क्षेत्राधीशः शुभप्रभः ।।७।।

साकारश्च निराकारः सकलो निश्चलो मतः ।
निर्ममो निर्विकारश्च निर्विकल्पो निरामयः ।।८।।

अजरश्चाऽरुजोऽनंत एकानेकः शिवात्मकः ।
अलक्षश्चाऽप्रमेयश्च ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ।।९।।

ओंकारः प्रकृतिर्व्यक्तो व्यक्तरूपः श्रीमयः ।
ब्रह्मद्वय ाशात्मा निर्भयः परमाक्षरः ।।१०।।

दिव्यतेजोमयः शांतः परमात्ममयो : ।
आद्यो ज्योतिः परेशानः परमेष्ठी परं पुमान् ।।११।।

शुद्ध–स्फटिकसंकाशः स्वयंभूः परमाकृतिः ।
व्योमाकारश्चरमश्च लोकालोकप्रकाशकः ।।१२।।

ज्ञानात्मा परमानंदः प्राणरूढमवस्थितः ।
मनःसाध्यो मनोध्येयो मनोदृश्यः परात्परः ।।१३।।

तीर्थमयो नित्यः सर्वदेवमयः प्रभुः ।
भगवान् सर्वतत्त्वज्ञः शिवः श्री सौख्यदायकः ।।१४।।

इति श्रीपार्श्वनाथस्य सर्वज्ञस्य सद्गुरोः ।
दिव्यमष्टोतरं नाम शतमत्र प्रकीर्तितम् ।।१५।।

पवित्रं परम ध्येयं परमानंददायकम् ।
भुक्तिमुक्ति–प्रदातारं पठता मंगलप्र ।।१६।।

मोक्षेऽपि यस्य नाकांक्षा स मोक्षमधिगच्छति ।
इत्युक्तत्वाद्धितान्वेषी कांक्षा न क्वापि योजयेत् ॥२१॥

सोऽपि च स्वात्मनिष्ठत्वात्सुलभां यदि चिन्त्यते ।
आत्माधीने सुखे तात यत्नं किं न करिष्यसि ॥२२॥

स्वं परं विद्धि तत्रापि व्यामोहं छिन्धि किन्त्विमम् ।
अनाकुलस्वसंवेद्ये स्वरूपे तिष्ठ केवले ॥२३॥

स्वः स्वं स्वेन स्थितं स्वस्मै स्वस्मात्स्वस्याविनश्वरे ।
स्वस्मिन् ध्यात्वा लभेत्स्वेस्थमानंदममृतं पदम् ॥२४॥

इति स्वतत्त्वं परिभाव्यवाङ्मयं
य एतदाख्याति शृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसम्पदं,
स्वरूपसंबोधन [illegible] विंशति ॥२५॥

(इति)

[illegible]ा [illegible]श [illegible]नाथ-स्तोत्र [illegible]

श्री पार्श्वं पातु वो नित्यं जिनः परम शंकरः ।
नाथः परमश[illegible] शरण्यं [illegible]ा [illegible]: ॥१॥

सार्वो विश्वंभरः स्वामी सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
[illegible]–सत्त्वहितो योगी श्रीकरः परमार्थदः ॥२॥

देव देवः परमसिद्ध[illegible] [illegible]ानंदमयः [illegible]: ।
परमात्मा परमब्रह्म परमः परमेश्वरः ॥३॥

[illegible]ाथः सुरज्येष्ठो भूतेशः पुरुषोत्तमः ।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मेशः श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥४॥

श्री पार्श्वं मंत्रराजं तु चिंतामणिगुणप्रदम् ।
शांति पुष्टिकरं नित्यं क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ।।२८।।

ऋद्धि-सिद्धि-महाबुद्धि धृतिकीर्तिसुकांतिदम् ।
मृत्यु जयं शिवात्मानं जगदानंददं जिनम् ।।२९।।

सर्वकल्याण पूर्णोयं जरामृत्युविवर्जितं ।
अणिमाद्धि महासिद्धिर्लक्षजाप्येन चाप्नुयात् ।।३०।।

प्राणायाम मनोमंत्रं योगाद मृतमात्मनि ।
स्वात्मानं शिवं ध्यात्वा स्वस्मिन् सिद्धयंति जंतवः ।।३१।।

हर्षदः कामदश्चेति रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ।
पातु नः परमानंदः तत्क्षणं संस्तुतो जिनः ।।३२।।

तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं सर्वमांगल्यसिद्धिदम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं नित्यां प्राप्नोति स श्रियम् ।।३३।।

।। इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ।।

———

श्री प्रद्मप्रभदेवविरचि

श्री श नाथ-स तोत्र

लक्ष्मीर्महस्तुल्यसती सती सती प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।
जरारुजाजन्महता हता हता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।

अर्च्चेयमाद्यं सुमना मनामना यः सर्वदेशो भुवि नाविना विना ।
समस्त विज्ञानमयो मयोमयो पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।

विनेष्ट जन्तोः शरणं रणं रणं क्षमादितो यः कमठं मठं ।
नरामरारामक्रमं पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।

श्री मत्परमकल्याणं सिद्धिदं श्रेयसे स्तुमः ।
पार्श्वनाथो हि श्रीमान् सो भगवान् परमः शिवः ।।१७।।

धरणेन्द्रफणाच्छत्रालंकृतो वः श्रियं प्रभुः ।
दद्यात्पद्मावती देव्या समाधिष्ठित–शासनः ।।१८।।

ध्यायेत्कमल मध्यस्थं श्रीपार्श्वं जगदीश्वरम् ।
ओं ह्रीं अर्हं समायुक्तं केवलज्ञानभास्करम् ।।१९।।

पद्मावत्यान्वितं वामे धरणेन्द्रेण दक्षिणे ।
कमलाष्टदलस्थेन मंत्रराजेन संयुतम् ।।२०।।

अष्टपत्रस्थितपंचनमस्कारैः तथा त्रिभिः ।
ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं धर्मार्थकाममोक्षदम् ।।२१।।

षोडशदलारूढ–विद्यादेवीभिरावृतम् ।
चतुर्विंशति पत्रस्थं जिनमातृसमावृतम् ।।२२।।

मायावेष्टत्रयाग्रस्थं क्रोंकार सहितं प्रभुं ।
नवग्रहा देवं दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् ।।२३।।

(ओं प्र) चतुः कोणेषु मंत्राद्यैः चतुर्वर्गान्वितैर्जिनम् ।
चतुरष्टादश द्वीति द्विधा कं संज्ञकैर्यु ।।२४।।

दिक्षु र युक्तेन विदिक्षु लांकितेन च ।
चतुरस्त्रेण विज्ञांकं कृतित्वेन प्रतिष्ठितम् ।।२५।।

श्री पार्श्वनाथमित्येवं यः समाराधयेज्जिनम् ।
पापविनिर्मुक्तं लभ्यते श्रीः सुखप्रदम् ।।२६।।

जिनेशः पूजितो भक्त्या संस्तुतः प्रणतोऽथवा ।
ध्यात्वा स्तुयेत्क्षणं चापि सिद्धिस्तेषां महोदया ।।२७।।

श्री पार्श्वं मंत्रराजं तु चिंतामणिगुणप्रदम् ।
शांति पुष्टिकरं नित्यं क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥२८॥

ऋद्धि-सिद्धि-महाबुद्धि धृतिकीर्तिसुकांतिदम् ।
मृत्युं जयं शिवात्मानं जगदानंदतं जिनम् ॥२९॥

सर्वकल्याण पूर्णेयं जरामृत्युविवर्जितं ।
अणिमार्द्धि महासिद्धिर्लक्षजाप्येन चाप्नुयात् ॥३०॥

प्राणायाम मनोमंत्रं योगाद मृतमात्मनि ।
स्वात्मानं शिवं ध्यात्वा स्वस्मिन् सिद्धयंति जंतवः ॥३१॥

हर्षदः कामदश्चेति रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ।
पातु नः परमानंदः तत्क्षणं संस्तुतो जिनः ॥३२॥

तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं सर्वमांगल्यसिद्धिदम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं नित्यां प्राप्नोति स श्रियम् ॥३३॥

॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

श्री प्रद्मप्रभदेवविरचि

श्री ाश ना -स ो

लक्ष्मीर्महस्तुल्यसती सती सती प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।
जरारुजाजन्महता हता हता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ॥

अर्च्चेयमाद्यं सुमना मनामना यः सर्वदेशो भुवि नाविना विना ।
समस्त विज्ञानमयो मयोमयो पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ॥

विनेष्ट जन्तोः शरणं रणं रणं क्षमादितो यः कमठं मठं ।
नरामरारामक्रमं क्रमं क्रमं पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ॥

अज्ञानसत्काम लतालतालता यदीयसद्भावनता नता नता ।
निर्वाणसौख्यं सुगता गता गता पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।
विवादिता शेषविधिर्विधिर्विधिर्बभूव सर्प्याविहरी हरी हरी ।
त्रिज्ञानसज्ञानहरोहरोहरो पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।
यद्विश्वलोकैकगुरुं गुरुं गुरं विराजिता येन वरं वरं वरं ।
तमाल नीलांगभरं भरं भरं पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।
संरक्षितो दिग्भुवनं वनं वनं विराजिता येषु दिवै दिवै दिवैः ।
पादद्वये नूतसुरासुराः सुराः पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।
रराज नित्यं सकला कला कला ममारतृष्णो वृजिनो जिनो ि ो ।
संहारपूज्यं भा सभा सभा पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।

व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौशले
विख्यातो भुवि पद्मनन्दि मुनिपस्तत्वस्य कोषं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं पठति यः संस्तूयसा लभ्यते
श्री पद्मप्रभदेव-निर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मंगलम् ।।

इति श्री पद्मप्रभदेवविरचित पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम्

ि न्ता िण पाश ना ो

ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणि युते ।
ह्रीं धरणेन्द्र-वैरोच्या पद्मावती युता यते ।।१।।
शान्ति-तुष्टि महापुष्टि धृति-कीर्ति-विधापिते ।
ॐ ह्रीं द्विड्व्याल वेताल सर्वाधि-व्याधि-नाशिनो ।।२।।
जिताख्या विजयाख्या पराजितयान्वितः ।
दिशापालैर्ग्रहैर्यक्षैः विद्यादेवीभिरन्वितः ।।३।।
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथ ताम् ।
चतुःषष्ठि सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्रचामरैः ।।४।।

श्रीशंखेश्वरमण्डनपार्श्वजिन प्रणतकल्पतरुकल्प ।
चूरय दुष्टव्रातं पूरय मे वांछितं नाथ ।।५।।

।। इति चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

नि ार पाश नाथ स्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं प्रगे ।
धरणेन्द्रा पद्मावति सहिताय सदा श्रिये ।।१।।
अट्ठे मट्ठे तथा छुद्रे विघटे क्षुद्रमेवहि ।
क्षुद्रास्त्मभय स्तम्भय स्वाहान्तैरेभिरक्षरम् ।।२।।
पद्माष्टकदलोपेतं मायांक-जिन लाक्षितम् ।
पत्र-मध्यान्तरालेषु पत्रोपरि यथाक्रमम् ।।३।।
अष्टौ अष्टौ तथा चाष्टौ विन्यस्ताक्षर-मंडले ।
तथाष्टशत जापेन 'ज्वरभैकान्तरादिकम् ।।४।।
रिपु चोर महीपाल शाकिनी भूत सम्भवाः ।
मरण्यं देहजां भीतिं हन्ति बद्धं भुजादिषु ।।५।।
पुष्पमालां जपित्वा च मंत्रेणाष्ट-शताधिकम् ।
प्रक्षिप्ता पोत कंठेषु भूत स्वम्भपदं भयम् ।।६।।
गुग्गुलस्य गुटीनां च शतमष्टोत्तराहुतम् ।
दुष्टमुच्चाटयेत सद्यः शान्ति च कुरुते गृहे ।।७।।
श्री पार्श्व जिन सिंहस्य, नील वर्णस्य संस्तवान् ।
लभन्ते श्रेयसं सिद्धि प्रकुर्वन् बांक्षितैः सह ।।८।।
श्री-अश्वसेन-कुल-पंकज-भास्करस्य
पद्मावति-धररिण-राजनि सेवितस्य ।
वामांगजस्य पदमेस्तवाल्लभन्ते
भव्याश्रियं शुभगतमपि, बांधितानि ।।९।।

।। इति चिन्तामरिण पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

उप गहर-पाश नाथ-स तोत्र

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विसन्निनासं मंगल कल्लाण आवासं ।।
विसहर फुलिंग मंतं कंठे धारइ जो सया मणुओं ।
तस्सगहरोग मारीछु ट्ठ जरा जंति उवसामं ।।
चिट्ठउदूरे मंतो तुझपणामोवि बहुफलो होइ ।
नरतिरिए सुवि जीवा पावंति न दुक्खदोग ।।
तुहसम्मते लद्धे चिंतामणि कप्पपाय बब्भहिए ।
पावंति अविग्घेण जीवा अयरामरं ठाणं ।।
इह संथुओ महायस भतिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
तादेवदिज्जवोहिं भवे भवे पास जिणचंद ।।

।। इति ।।

चन स्तोत्र

चद्रप्रभु प्रभाधीशं चन्द्रशेखर चन्द्रनम् ।
चन्द्र लक्ष्म्याकं चान्द्राकं चन्द्र बीज नमोस्तु ते ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन भु श्रीं ह्रीं श्रीं कुरुकुरु स्वाहा ।
इष्टसिद्धी महाऋद्धि तुष्टि पुष्टि कुरु ।।
द्वा सहस्र जपतो वांछितार्थ फलप्रदः ।
महतं त्रिसंध्यं तः सर्वाति व्याधि ना ।।
सुरासुरेन्द्र सहितः श्री पाण्डव नृपस्तुतः ।
श्री चन्द्रप्रभा तीर्थेशश्रियं चन्द्रो ज्वलां कुरु ।।
श्री चन्द्रप्रभु विधेयं र ि ।
भवाब्धि व्याधि ि ायिनी मेव रक्षदा ।।

।। इति ।।

वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्म रक्षाकरं मंत्र पंजरं सस्मराम्यहम् ।।
ॐ णमो अर्हंरताणं शिर स्कन्ध शिरसंस्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुख पटंवरम् ।।
ॐ णमो आइरियाणं अंग रक्षाति सायिणीम् ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दढम् ।।
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमोयारो शिववज्रमयी तले ।।
सव्वपावप्पणासणो शिवज्रो वज्रमयो मही ।
मंगलाणं च सव्वेंसि खातिरागादि खातका ।।
स्वाहा पंच पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम् ।
वज्रो परिवज्रमयं ज्ञेयं विधानं देहरक्षणे ।।
महाप्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्धृत्ता कथितापूर्व सूरिभिः ।।
यश्चैवं कुरुते रक्षा परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य तस्माद् भयं व्याधिराधि श्चापिकदापि न ।।

।। इति ।।

वह पुरुष धन्य है जिसने गम्भीरतापूर्वक स्वाध्याय किया है और सत्य को पा लिया है । वह ऐसे मार्ग पर चलेगा जिससे उसे इस ससार मे नही आना पडेगा ।

उप गहर-पाश्र्व ना -स्तो

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विसन्निनासं मंगल कल्लाण आवासं ॥
विसहर फुलिंग मंतं कंठे धारइ जो सया मणुओ ।
तस्सगहरोग मारीछुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥
चिट्ठउदूरे मंतो तुझपणामोवि बहुफलो होइ ।
नरतिरिए सुवि जीवा पावंति न दुक्खदोग ॥
तुहसम्मते लद्धे चिंतामणि कप्पपाय बब्भहिए ।
पावति अविग्घेण जीवा अयरामरं ठाणं ॥
इह संथुओ महायस भतिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
तादेवदिज्जवोहिं भवे भवे पास जिणचंद ॥

॥ इति ॥

चन् भस्तोत्र

च भु प्रभाधीशं चन्द्रशेखर चन्द्रनम् ।
चन्द्र लक्ष्म्याकं चान्द्राकं चन्द्र बीज नमोस्तु ते ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन् भु श्रीं ह्रीं श्रीं कुरुकुरु स्वाहा ।
इष्टसिद्धी महाऋद्धि तुष्टि पुष्टि कुरु ॥
द्वा सहस्र ो वांछितार्थ : ।
महतं त्रिसंध्यं तः सर्वाति व्याधि ना ॥
सुरासुरेन्द्र सहितः श्री पाण्डव नृपस्तुतः ।
श्री चन्द्रप्रभा तीर्थेशश्रियं चन्दो कुरु ॥
श्री चन्द्रप्रभु विधेयं स ि ।
भवाब्धि व्याधि विध्वंसदायिनी मेव रक्षदा ॥

॥ इति ॥

वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्म रक्षाकरं मंत्र पंजर सस्मराम्यहम् ।।
ॐ णमो अर्हंरताणं शिर स्कन्ध शिरसंस्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुख पटंवरम् ।।
ॐ णमो आइरियाणं अग रक्षाति सायिणीम् ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दढम् ।।
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमोयारो शिववज्रमयी तले ।।
सव्वपावप्पणासणो शिवज्रो वज्रमयो मही ।
मंगलाणं च सव्वेंसि खातिरागादि खातका ।।
स्वाहा पंच पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम् ।
वज्रो परिवज्रमयं ज्ञेयं विधानं देहरक्षणे ।।
महाप्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्धृत्ता कथितापूर्वं सूरिभिः ।।
यश्चैवं कुरुते रक्षा परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य तस्माद् भयं व्याधिराधि श्चापिकदापि न ।।

।। इति ।।

वह पुरुष धन्य है जिसने गम्भीरतापूर्वक स्वाध्याय किया है और सत्य को पा लिया है । वह ऐसे मार्ग पर चलेगा जिससे उसे इस ससार मे नही आना पडेगा ।

वं विघ्नविनाशकं श्रीपार्श्वनाथ

मन्त्रात्मकस्तोत्रम्

श्रीमद्देवेन्द्रवृन्दारकमुकुटमणिज्योतिषां चक्रबालै– ।
र्व्यालीढं पादपीठं शठकमठकृतोपद्रवैर्बाधितस्य ।।
लोकालोकावभासिस्फुरदुरुविमलज्ञानसद्दीप्रदीपः ।
प्रध्वस्तध्वांतजालः स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोऽत्र नित्यं ।।१।।

ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लौ ह्लः भास्वन्मरकतमणि भाक्रातमूर्ते हि वं मं ।
हं सं तं बीजमन्त्रैः कृतसकलजगत्क्षेमरक्षोरुवक्षः ।।
क्षां क्षीं क्षूं क्षे समस्तक्षितितलमहितज्योतिरुद्योतितार्थः ।
क्षैं क्षो क्षः क्षी बीजात्मकसकलतनुर्नः सदा पार्श्वनाथः ।।२।।

ह्लीकारं रेफयुक्तं र र र र र र रं देव सं सं प्रयुक्तम् ।
ह्ली क्लीं क्लूं द्रां द्री सरेफं वियदमल कलापं
चकोद्भासि हूं हूं ।
धूं धूं धूं धूम्रवर्णैरखिलमिहजगन्मेविधेह्यामुवश्यं ।
वौषट्मन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व मा रक्ष नित्यम् ।।३।।

आं क्रो ह्लीं सर्ववश्यम कुरु कुरु सरसं क्रामण तिष्ठ तिष्ठ ।
क्ष्रूं ह्लूँ ह्लूँ रक्ष रक्ष प्रबल बलमहाभैरवारातिभीतेः ।।
द्रां द्री द्रूं द्रावयेति द्रव हन हन फट् फट् वषड् भिन्दि२ ।
स्वाहामन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व मां रक्ष नित्यम् ।।४।।

हं सः क्ष्वीं क्ष्वीं सहंसः कुवलयकलितैरर्चितांगबीजप्रसूनै ।
भं वं ह्वं पक्षि हं हं हर हर हर हूं पक्षिपः पक्षिकोपं ।।
वं भ हं सं भः वं सः सर सर सर सूं सः सुधाबीजमन्त्रं ।
स्त्रायस्वस्थावरादिप्रबलविषमुखहारिभिः पार्श्वनाथ ।।५।।

क्ष्मा क्ष्मी क्ष्मूं क्ष्मौ क्ष्मः एतैरहिपतिविनुतैर्मन्त्रबीजैश्चनित्यं ।
हाहाकारोग्रनादैर्ज्वलदनलशिखा   कल्प   दीर्घोर्ध्वकेशैः ।।
पिंगाक्षैर्लोलजिह्वैर्विषमविषधरालकृतैस्तीक्ष्णदंष्ट्रै   ।
भूतैः   प्रेतैः   पिशाचैरनघकृतमहोपद्रवाद्रक्ष   रक्ष ।।६।।

ॐ ह्रौं ह्रः शाकिनीना सपदि हरमदं भिन्धिशुद्धैर्द्धबुद्धैः ।
ग्लो क्षमंठं दिव्यजिह्वागतिमतिकुपितं स्तंभन सविधेहि ।।
फट् फट् सर्पारिरोग ग्रहमरणभयोच्चाटन चैव पार्श्वं ।
त्रायस्वाशेषदोषादमरनरवरैर्नुतपादारविन्दः   ।।७।।

स्फ्रां स्फ्री स्फ्रूं स्फ्रौ स्फ्रः एवं प्रबल बल फलं मन्त्रबीजं
जिनेन्द्रम् ।
रा री रुं रौ रः एभिः परमतरहितं पार्श्वदेवाधिदेवम् ।।
क्रां क्रीं क्रूं क्रो क्रः एतैः जजजजज जरा जर्जरीकृत्यदेहम् ।
धूं धूं धूं धूम्रवर्णं दुरितविरहितं पार्श्वं मां रक्ष नित्यम् ।।८।।

ह्रींकारे चन्द्रमध्ये बहिरपि बलये षोडशं वर्णं पूर्णम् ।
बाह्ये ठंकार वेष्टयं बसुदलसहितं मूलमंत्रेण युक्तम् ।।
साक्षात् त्रैलोक्यवश्यं सकल सुखकर सर्वरोगं प्रणाशम् ।
स्वादेतद् यंत्ररूपं   परमपदमिदं पातु मा   पार्श्वनाथः ।।६।।

इत्थ मंत्राक्षरोत्थ   बचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
विद्वेषोच्चाटनस्तम्भजनवशकृत्पापरोगापनोदि   ।।
प्रोत्सर्पज्जंगमस्थावरविषमविषध्वंसनं   चायुर्दीर्घं ।
आरोग्यैश्वर्ययुक्तः स्मरति पठति यः स्तौति तस्येष्ट सिद्धिः ।।१०।।

।। इति श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।



ेि घ्नविनाशकं श्रीपाश र्वनाथ

न्त्रात्मकस्तोत्र

श्रीमद्देवेन्द्रवृन्दारकमुकुटमणिज्योतिषां चक्रबालै– ।
र्व्यालीढं पादपीठं शठकमठकृतोपद्रवैर्बाधितस्य ॥
लोकालोकावभासिस्फुरदुरुविमलज्ञानसद्दीप्रदीपः ।
प्रध्वस्तध्वांतजालः स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोऽत्र नित्यं ॥१॥

ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लौं ह्लः भास्वन्मरकतमणि भाक्रांतमूर्ते हि वं मं ।
हं सं तं बीजमन्त्रैः कृतसकलजगत्क्षेमरक्षोरुवक्षः ॥
क्षां क्षीं क्षूं क्षें समस्तक्षितितलमहितज्योतिरुद्योतितार्थः ।
क्षैं क्षौं क्षः क्षीं बीजात्मकसकलतनुर्नः सदा पार्श्वनाथः ॥२॥

ह्लीकारं रेफयुक्तं र र र र र र रं देव सं सं प्रयुक्तम् ।
ह्लीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं सरेफं वियदमल कलापं चक्रोद्भासि हूं हूं ।
धूं धूं धूं धूम्रवर्णैरखिलमिहजगन्मेविधेह्यामुवश्यं ।
वौषट्मन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व मां रक्ष नित्यम् ॥३॥

आं क्रों ह्रीं सर्ववश्यम कुरु कुरु सरसं कामणं तिष्ठ तिष्ठ ।
क्षूं ह्लूं ह्लूं रक्ष रक्ष प्रबल बलमहाभैरवारातिभीतेः ॥
द्रां द्रीं द्रूं द्रावयेति द्रव हन हन फट् फट् वषड् भिन्दि२ ।
स्वाहामन्त्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व मां रक्ष नित्यम् ॥४॥

हं सः क्ष्वीं क्ष्वीं सहंसः कुवलयकलितैरर्चितांगबीजप्रसूनै. ।
झ वं ह्वं पक्षि हं हं हर हर हर हूं पक्षिपः पक्षिकोपं ॥
वं झं हं सं भः वं सः सर सर सर सूं सः सुधाबीजमन्त्रं ।
स्त्रायस्वस्थावरादिप्रबलविषमुखहारिभिः पार्श्वनाथ ॥५॥

श्रानन्दस :

देवाधिदेवं जितभावजं तं देवाधिपैरन्वितपादपद्मम् ।
नत्वा जिनेन्द्रं शिवसौख्यसिद्धयै स्तोष्ये पवित्रं कलिकुण्डयंत्रम् ।।
पूजां प्रकुर्वंति नरास्तु भक्त्या यन्त्रस्य ये श्रीकलिकुण्डनाम्नः ।
तेषां नराणामिह सर्वविघ्ना नश्यंत्यवश्यं भुवितत्प्रसादात् ।।
चित्तांबुजे ये स्वगुरुपदेशाद्ध्यायंति नित्यं कलिकुंडयंत्रम् ।
सिंहादयो दुष्टमृगास्तु लोके पीडा न कुर्वन्ति नृणां च तेषाम् ।।
युक्तया स्तुवंतः कलिकुंडयंत्रं सर्वोरुदोषाहदुत्तमं तम् ।
मोक्षानघ श्रीवर चारु सौख्यप्राप्तिस्तु तेषां भवतीह सत्यम् ।।
यंत्रस्य चिंता हृदयेऽस्ति यस्या सद्धर्मवक्ता व्रतशीलयुक्ताः ।
वंध्यापि सत्पुत्रवती भवेत्सा लोके क्रमात्स्वर्गसुखं प्रयाति ।।
स्मरन्ति यंत्रस्य विधानतो ये नरा अहिंसादिगुणप्रयुक्ताः ।
ज्वरग्रहण्यादिरुजोऽत्र तेषां प्रयांति नाशं कलिकुंडयंत्रात् ।।
सुरासुरेशैरपि सेव्यमानं समस्तदोषोज्झितबीजजालम् ।
यंत्रं नरा ये कलिकुण्डमेतन्नित्यं भजंत्यत्रभयं तेषाम् ।।
सर्पाग्नितोयादि विषादि विघ्ना यांति क्षयं यस्य वरप्रसादम् ।
तच्छ्रीजिनेद्रस्य सरोजजातं नित्यं नमः श्री कलिकुण्डयंत्रम् ।।

त्रिभुवनजनताया सारभूरीप्सितं यद्
बुधततिनुतविद्यानन्दसुरोडितं यः ।
तदिह पठति भव्यः सर्वदा स्तोत्रमेत-
च्छिवपदमनघं संप्राप्यते देव देवः ।।

प्रोद्यत्सन्मणिनागनायकफणाटोपोल्लसन्मंडपं
सद्भक्तया नमदिद्रमौलिमणिभिर्भास्वत्पदाभोरुहम् ।
प्रोन्मीलन्नवनीरक्षदिपटलीशंकासमुत्पादकं
ध्यायेच्छ्रूरी श्रीकलिकुण्डदंडविलसच्चडोग्रपार्श्वप्रभुम् ।अर्घ्यं।

।। इति ।।

श्री जैनरक्षा स्तोत्रम्

श्रीजिनं भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लादकारकम्
जैनरक्षामहं वक्ष्ये देहिनां देहरक्षकम् ॥१॥
ॐ ह्रीं आदीश्वरः पातु शिरसि सर्वदा मम ।
ॐ ह्री श्री अजितो देवो भालं रक्षतु सर्वदा ॥१॥
नेत्रयोः रक्षको भूयात् ॐ श्रां क्रौं सम्भवो जिनाः ।
रक्षेद् घ्राणेन्द्रिये ॐ ह्री श्री क्ली ब्लूं अभिनन्दनः ॥३॥
सुजिह्वे सुमुखे पातु सुमतिः प्रणवान्वितः ।
कर्णयोः पातु ॐ ह्री श्री रक्तः पद्मप्रभः प्रभुः ॥४॥
सुपार्श्वः सप्तमः पातु ग्रीवामां ह्री श्रियाश्रितः ।
पातु चन्द्रप्रभः श्री ह्री क्रौं (क्रो) पूर्वस्कन्धयोर्मम ॥५॥
सुविधिः शीतलो नाथो रक्षको करपंकजे ।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं युतौ कामं चिदानन्दमयो शुभौ ॥६॥
श्रेयांसो वासुपूज्यश्च हृदये सदयं सदा ।
भूयाद् रक्षाकरो बारं बारं श्री प्रणवान्वितः ॥७॥
विमलोऽनन्तनाथश्च मायाबीजसमन्वितौ ।
उदरे सुन्दरे शश्वद् रक्षायाः कारकौ मतौ ॥८॥
श्री धर्मशान्तिनाथौ च नाभिपंकेरुहे सताम् ।
ॐ ह्री श्रीं क्लीं हं संयुक्तौ पुनः पातां पुनः पुनः ॥९॥
श्री कुन्थु-अरनाथौ तु सुगुरु सुकटीतटे ।
भवेतामवकौ भूरि ॐ ह्रीं क्ली सहितौ जिनौ ॥१०॥
मे पातां चारु जंघायां श्री मल्लिमुनिसुव्रतौ ।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ततो ह्रः ब्लूं क्लीं श्रीं युक्तौ कृपाकरौ॥११॥
यत्नतो रक्षकौ जानू श्री नमिनेमिनाथकौ ।
राजराजीमतीमुक्तौ प्रणवाक्षरपूर्वकौ ॥१२॥

श्री पार्श्वेशमहावीरौ पातां मां ह्री सुमानदौ ।
ॐ ह्री श्री च तथा भूं क्ली ह्लां ह्लः श्रां श्रः युतौ जिनौ।१३।
रक्षाकरा यथास्थाने भवन्तु जिननायकाः ।
कर्मक्षयकरा ध्याता भीतानां भयवारकाः ।।१४।।
जैनरक्षां लिखित्वेमां मस्तके यस्तु धारयेत् ।
रविवद् दीप्यते लोके श्रीमान् विश्वप्रियो भवेत् ।।१५।।
तस्योग्ररोगवेतालाः शाकिनीभूतराक्षसाः ।
एते दोषा न इष्यन्ते रक्षकाश्च भवन्त्यमी ।।१६।।
अग्निसर्पभयोत्पाता भूपालाश्चोर विग्रहाः ।
एते दोषा प्रणश्यन्ति रक्षकाश्च भवन्त्यमी ।।१७।।
जैनरक्षामिमां भक्त्या प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
इच्छितान् लभते कामान् सम्पदश्च पदे पदे ।।१८।।
श्रावणे शुक्लगेऽष्टम्यां प्रारभ्य स्तोत्रमुत्तमम् ।
अभिषेकं जिनेन्द्राणां कुर्याच्च दि ष्टकम् ।।१९।।
ब्रह्मचर्यं विधातव्यमेकभुक्तं तथैव च ।
शुचिता शुभ्रवस्त्रेण वालंकारेण शोभनम् ।।२०।।
नरो वापि तथा नारी शुद्धभावयुतोऽपि सन् ।
दिनं दिनं तथा कुर्यात् जाप्यं सर्वार्थसिद्धये ।।२१।।
एकाया तु विधातव्यम् उद्यापनमहोत्सवम् ।
पूजाविधिसमायुक्तं कर्तव्यं सज्जनैर्जनैः ।।२२।।

।। इति जैन रक्षा स्तोत्रम् ।।



आचार्य श्रीमदुमास्वामिविरचित

तत्वार्थसूत्रम्

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्ज्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥ नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥ तदिन्द्रि-यानिन्द्रिय निमित्तम् ॥१४॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥ बहुबहुविधक्षिप्राऽनिःसृताऽनुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥ न चक्षुरनिन्द्रिय-भ्याम् ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्या तद्विशेषः ॥२४॥ विशुद्धिक्षेत्र-स्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥२५॥ मतिश्रुतयो र्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रुपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनन्त-भागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुता-वधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धे-रुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥३३॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्याय ॥१॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शनदानलाभ-

श्री पार्श्वेशमहावीरौ पातां मां ह्रौ सुमानदौ ।
ॐ ह्रीं श्रीं च तथा भूं क्लीं ह्रां ह्रः श्रां श्रः युतौ जिनौ।१३।
रक्षाकरा यथास्थाने भवन्तु जिननायकाः ।
कर्मक्षयकरा ध्याता भीतानां भयवारकाः ।।१४।।
जैनरक्षां लिखित्वेमां मस्तके यस्तु धारयेत् ।
रविवद् दीप्यते लोके श्रीमान् विश्वप्रियो भवेत् ।।१५।।
तस्योग्ररोगवेतालाः शाकिनीभूतराक्षसाः ।
एते दोषा न दृश्यन्ते रक्षकाश्च भवन्त्यमी ।।१६।।
अग्निसर्पभयोत्पाता भूपालाश्चोर विग्रहाः ।
एते दोषा प्रणश्यन्ति रक्षकाश्च भवन्त्यमी ।।१७।।
जैनरक्षामिमां भक्त्या प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
इच्छितान् लभते कामान् सम्पदश्च पदे पदे ।।१८।।
श्रावणे शुक्लगेऽष्टम्यां प्रारभ्य स्तोत्रमुत्तमम् ।
अभिषेकं जिनेन्द्राणां कुर्याच्च दिवसाष्टकम् ।।१९।।
ब्रह्मचर्यं विधातव्यमेकभुक्तं तथैव च ।
शुचिता शुभ्रवस्त्रेण वालंकारेण शोभनम् ।।२०।।
नरो वापि तथा नारी शुद्धभावयुतोऽपि सन् ।
दिनं दिनं तथा कुर्यात् जाप्यं सर्वार्थसिद्धये ।।२१।।
एकायां तु विधातव्यम् उद्यापनमहोत्सवम् ।
पूजाविधिसमायुक्तं कर्तव्यं सज्जनैर्जनैः ।।२२।।

।। इति जैन रक्षा स्तोत्रम् ।।



शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रि-वेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनप-वर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्याय समाप्त ॥२॥

रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयोघनाम्बु वाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्प-ञ्चविंशति पञ्चदश दशत्रिपञ्चोनैक नरकशतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याऽऽशुभतरलेश्यापरिणामदेह-वेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरित दुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टा-सुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदश-सप्तदश द्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वं पूर्वं परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम-वन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणोवर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुन-तपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छ केशरि-महापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजन सहस्रायामस्तदर्द्ध विष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदा पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक परिषत्काः ॥१९॥

भोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रि-त्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धलेश्याश्चतुस्त्र्ये-कैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणम् ॥८॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्काऽमनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्र-सस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पंचेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः-श्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैक वृद्धानि ॥२३॥ संज्ञि : समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणी गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एक समयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥३०॥ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ॥३१॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥ देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥ औदारिक वैक्रियिकाहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥ प्रदेश-तोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ॥३८॥ अनन्तगुणे परे ॥३९॥ अप्रतिघाते ॥४०॥ अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥ सर्वस्य ॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥४३॥ निरुपभोग-मन्त्यम् ॥४४॥ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजसमपि ॥४८॥

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४६॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोतमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्याय समाप्त ॥२॥

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयोघनाम्बु वाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिशत्पञ्चविंशति पञ्चदश दशत्रिपञ्चोनैक नरकशतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याऽऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरित दुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदश द्वाविंशतित्रयस्त्रिशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वं पूर्वं परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्त्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणीवर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिच्छ केशरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजन सहस्रायामस्तदर्द्धं विष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजन पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदा पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक परिषत्काः ॥१९॥

भोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रि-त्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धलेश्याश्चतुस्त्र्ये-कैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणम् ॥८॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्काऽमनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्र-सस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पंचेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः-श्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैक वृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणी गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एक समयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥३०॥ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ॥३१॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥ देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥ औदारिक वैक्रियिकाहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥ प्रदेश-तोऽसंख्येयगुणं प्राक ात् ॥३८॥ अनन्तगुणे परे ॥३९॥ अप्रतिघाते ॥४०॥ अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥ सर्वस्य ॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥४३॥ निरुपभोग-मन्त्यम् ॥४४॥ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजसमपि ॥४८॥

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥२॥

रत्नशर्कराबालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयोघनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशति पञ्चदश दशत्रिपञ्चोनैक नरकशतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याऽऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरित दुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदश द्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वं पूर्वं परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणोवर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छ केशरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजन सहस्रायामस्तदर्द्ध विष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजन पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदा पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक परिषत्काः ॥१९॥

गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारी नरकान्तासुवर्णरुप्यकूलारक्ता रक्तोदाः सरितस्तन्यमध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगा. ॥२१॥ शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दशनदीसहस्त्रपरिवृत्तागङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥ भरतः षड्विशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ता ॥२५॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥ भरतैरावतयो वृंद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हेमवतकहारिवर्षक दैवकुरवकाः ॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥ आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिति परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति श्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्याय ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यंताः ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंश पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ॥५॥ पूर्वयो र्द्वीन्द्राः ॥६॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥८॥ परेऽप्रवीचाराः ॥९॥ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधि द्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥ बहिरवस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्मैशानसानत्कुमार – माहेद्र – ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठशुक्र-महाशुक्र–शतारसहस्रारेष्वानत – प्राणतयोराररणा–च्युतयोर्नवसु–ग्रैवेयिकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥ स्थितिप्रभावसुखद्युति लेश्या विशुद्धीन्द्रियावधि विषयतोऽधिकाः ॥२०॥ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥२१॥ पीत पद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयिकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणा सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२९॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ॥३१॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयिकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपमधिकम् ॥३३॥ परतः परतः पूर्वा पूर्वान्तरा ॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशवर्ष सहस्राणि प्रथमायाम ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यन्तराणां च ॥३८॥ परा पल्योपमधिकम् ॥३९॥ ज्योतिष्काणा च ॥४०॥ तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥ लौकातिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याय ॥४॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।।१।। द्रव्याणि ।।२।। जीवाश्च ।।३।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।४।। रूपिणः पुद्गलाः ।।५।। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।६।। निष्क्रियाणि च ।।७।। असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।८।। आकाशस्यानंताः ।।९।। संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।१०।। नाणोः ।।११।। लोकाकाशेऽवगाहः ।।१२।। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।१३।। एक-प्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।१४।। असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।१५।। प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।१६।। गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।१७।। आकाशस्यावगाहः ।।१८।। शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ।।१९।। सुख-दुःख जीवितमरणोपग्रहाश्च ।।२०।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।२१।। वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।।२२।। स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।।२३।। शब्दबन्धसौक्ष्म्य-स्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छाया तपोद्योतवन्तश्च ।।२४।। अणवः स्कन्धाश्च ।।२५।। भेदसङ्घातेभ्यः उत्पद्यन्ते ।।२६।। भेदादणुः ।।२७।। भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ।।२८।। सद्द्रव्यलक्षणम् ।।२९।। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।३०।। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।३१।। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।३२।। स्निग्धरूक्षत्वाद्-बन्धः ।।३३।। न जघन्यगुणनाम् ।।३४।। गुण साम्ये सदृशानाम् ।।३५।। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।।३६।। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।।३७।। गुणपर्ययवद् द्रव्यम् ।।३८।। कालश्च ।।३९।। सोऽनन्तसमयः ।।४०।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।४१।। तद्भावः परिणामः ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पचमोऽध्याय ।।५।।

कायवाङ्मन.कर्म योगः ।।१।। स आस्रव ।।२।। शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ।।३।। सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्या-

पथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रिया. पञ्चचतुःपञ्चपञ्च-विंशति संख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञात भावाधि-करणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥ अधिकरणं जीवाऽजीवा. ॥७॥ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोग-निसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥९॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्स-र्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥ दुःख-शोक-तापाक्रन्दन–वध–परिदेवनान्यात्म–परोभयस्थान्य–सद्वेद्यस्य ॥११॥ भूत–व्रत्यनुकम्पादान–सराग–संयमादि–योगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥ मायातैर्यं-ग्योनस्य ॥१६॥ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥स्वभाव-मार्दवं च ॥१८॥ निःशील व्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥ सराग-संयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य॥२०॥सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रताविसम्वादनं चाशुभस्य नाम्नाः ॥२२॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रते-ष्वनतिचारोऽभीक्ष्ण–ज्ञानोपयोग–संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य बहुश्रुतप्रवचनभक्तिराव-श्यकापरिहाणिमार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनिंदाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गो-त्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्याय ॥६॥

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥ देश-सर्वतोऽणुमहतो ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥

वाड्.मनोगुप्तीर्यादान––निक्षेपरण––समित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ।।४।। क्रोधलोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषण च पञ्च ।।५।। शून्यागार-विमोचितावास-परोपरोधाकररण–भैक्ष्य शुद्धि-सधर्माऽविसवांदाः पञ्च ।।६।। स्त्री–राग–कथा–श्रवरण-तन्मनोहराङ्गनिरीक्षरण-पूर्वरतानुस्मररणवृष्येष्ट––रस––स्वशरीर संस्कार–त्यागाः पञ्च ।।७।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय-विषय–रागद्वेष वर्जनानि पञ्च ।।८।। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।।९।। दुःखमेव वा ।।१०।। मैत्री-प्रमोद–करुण्यमाध्यस्थानि च सत्व–गुरणाधिकक्लिश्यमानाऽविनेयेषु ।।११।। जगत्काय–स्वभावौ वा संवेग–वैराग्यार्थम् ।।१२।। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपरणं हिंसा ।।१३।। असदभिधानमनृतम् ।।१४।। अदत्तादानं स्तेयम् ।।१५।। मैथुनमब्रह्म ।।१६।। मूर्च्छा परिग्रहः ।।१७।। निःशल्यो ।। ।।१८।। अगार्यनगारश्च ।।१९।। अणुव्रतोऽगारी ।।२०।। दिग्देशा-नर्थदण्ड-विरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग–परिभोग–परिमा-रणातिथिसम्विभागव्रतसम्पन्नश्च ।।२१।। मररणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।२२।। शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टि प्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः।।२३।।व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्।२४। बन्ध–वधच्छेदातिभारारोपरणान्नपान-निरोधाः ।।२५।। मिथ्योपदे-शरहोभ्याख्यान–कूट–लेख–क्रियान्यासापहार–साकार–मन्त्रभेदाः ।।२६।। स्तेन-प्रयोग-तदाहृतादान–विरुद्ध–राज्यातिक्रमहीनाधिक मानोन्मान–प्रतिरूपक-व्यवहाराः ।।२७।। पर-विवाह-कररणे त्वरिका-परिगृहीतागमनानङ्ग-क्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ।।२८।। क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य–सुवर्ण-धन-धान्य–दासीदास–कुप्य प्रमाणाति-क्रमाः।।२९।।ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यति म-क्षेत्र–वृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।।३०।। आनयन-प्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।।३१।। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकररणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।।३२।। योगदुष्प्ररिणधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।।३३।।

अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादान–संस्तरोपक्रमणानादर—स्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्तसम्बन्धसंमिश्राभिषवदुः पक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्त निक्षेपापिधान–परव्यपदेश मात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुराग–सुखानुबन्धनिदानानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्याय ॥७॥

मिथ्यादर्शनाऽविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥ पञ्चनवद्वय-ष्टाविंशति चतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥५॥ मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलानाम् ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषाय-वेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्य–कषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुं नपुंसकवेदा अनंतानुबन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन - विकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धन–संघात-संस्थान—संहनन स्पर्शरसगन्ध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वास–विहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभग सुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्ति स्थिरादेययशःकीर्ति सेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥१३॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटयः परा स्थिति ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नाम-

गोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥ नाम गोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नाम प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥ अतो-ऽन्यत्पापम् ॥२६॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्याय ॥८॥

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परीषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जव सत्य शौच संयम तपस्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्या-स्रव–संवर-निर्जरा–लोक–बोधिदुर्लभ–धर्म स्वाख्यात–तत्त्वानुचि-न्तनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवन-निर्जरार्थपरिषोढव्याः परिषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासा–शीतोष्णदंशमशक—नाग्न्यारति–स्त्रीचर्या–निषद्या–शय्याक्रोश-वधयाचनाऽलाभ-रोगतृण—स्पर्शमल-सत्कार पुरस्कार–प्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसाम्परायच्छद्मस्थ वीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादर साम्प-राये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शन मोहान्तराय योरदर्शनालाभो ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या-क्रोशयाचनासत्कार पुरस्काराः ॥१५॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥१७॥ सामयिक–च्छेदोपस्थापना-परिहारविशुद्धिसूक्ष्म–साम्पराय–यथाख्यातमिति-चारित्रम् ॥१८॥ अनशनावमौदर्यवृत्ति परिसंख्यानरस परित्याग विविक्त-शय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्त

विनय वैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥ नव चतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥ आलोचना-प्रतिक्रमणतदुभय--विवेक---व्युत्सर्ग---तपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुल--सङ्घसाधुमनोज्ञानाम् ॥२४॥ वाचना-पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आर्त्त रौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्त्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तासंयतानाम् ॥३४॥ हिंसा-नृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्वावितर्कसूक्ष्म क्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥ त्र्येकयोगकाय-योगायोगानाम् ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥४२॥ वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थ-व्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्त-वियोजक-दर्शन--मोहक्षपकोप--शमकोपशान्तमोह--क्षपकक्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थ-लिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतःसाध्याः ॥४७॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्याय ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।।१।। बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ।।२।। औपशमिकादिभव्यत्वानां च ।।३।। अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।।४।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छन्त्यालोकान्ततात् ।।५।। पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद् बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणा-माच्च ।।६।। आविद्धकुलालच द् व्यपगतलेपालाबुवद् ऐरण्ड-बी द् अग्निशिखावच्च ।।७।। धर्मास्तिकायाभावात् ।।८।।
` कालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानाऽवगाहना-न्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ।।९।।

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं, व्यञ्जनसन्धिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।

ध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवै ।।

कोटी द्वा चेव कोट्यो, लक्षाण्यशीतित्र्यधिकानि चैव ।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेते तु श्रुतं पञ्चपदं नमामि ।।१।।

अरिहन्त भासियत्थं गणहरदेवेहि गंथिय सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवयं सिरसा ।।२।।

।। इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ।।१०।।



जिन लोगो को अपनी कीर्ति की इच्छा है वे अपने राई के समान छोटे-छोटे दोशो को भी वृक्ष के बराबर समझें और स्वय को दुर्गुणो से बचाने मे सदा सचेत रहे, क्योंकि वे (दुर्गुण) ऐसे शत्रु हैं, जो हमारा सर्वनाश कर डालेंगे ।

श्रीमन्माणिक्यनन्दिविरचितानि

परीक्षामु ूत्राणि

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्य्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्ल्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥१॥

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम् ॥१॥ हिताहित-प्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ॥२॥ तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥ अनिश्चितोऽपूर्वार्थः ॥४॥ दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक् ॥५॥ स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥६॥ अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥७॥ घटमहमात्मना वेद्मि ॥८॥ कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः ॥९॥ शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत् ॥१०॥ को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥११॥ प्रदीपवत् ॥१२॥ तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥१३॥

इति प्रमाणस्य स्वरूपोद्देश प्रथम ॥१॥

तद्द्वेधा ॥१॥ प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥२॥ विशदं प्रत्यक्षम् ॥३॥प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥४॥ इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकम् ॥५॥नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥६॥ तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च ॥७॥ अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥८॥ स्वावरणक्षयोपशमलक्षण योग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति॥९॥ कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः ॥१०॥ सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् ॥११॥ सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबन्धसम्भवात् ॥१२॥

इति प्रत्येक्षोद्देश द्वितीय ॥२॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥१॥ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञान-दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छन्त्यालोकान्तलात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद् बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणा-माच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद् व्यपगतलेपालाबुवद् ऐरण्ड-बीजवद् अग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानाऽवगाहना-न्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं, व्यञ्जनसन्धिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवै ॥

कोटीशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतित्र्यधिकानि चैव ।
पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेते तु श्रुतं पञ्चपदं नमामि ॥१॥

अरिहन्त भासियत्थं गणहरदेवेहि गंथियं सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमदोवयं सिरसा ॥२॥

॥ इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ॥१०॥



जिन लोगो को अपनी कीर्ति की इच्छा है वे अपने राई के समान छोटे-छोटे दोशो को भी वृक्ष के बराबर समझें और स्वय को दुर्गुणो से बचाने मे सदा सचेत रहे, क्योकि वे (दुर्गुण) ऐसे शत्रु हैं, जो हमारा सर्वनाश कर डालेंगे ।

श्रीमन्माणिक्यनन्दिविरचितानि

परीक्षामु ूत्राणि

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्य्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्ल्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥१॥

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम् ॥१॥ हिताहित-प्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ॥२॥ तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥ अनिश्चितोऽपूर्वार्थः ॥४॥ दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक् ॥५॥ स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥६॥ अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥७॥ घटमहमात्मना वेद्मि ॥८॥ कर्मवत्कर्तृ करणक्रियाप्रतीतेः ॥९॥ शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत् ॥१०॥ को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥११॥ प्रदीपवत् ॥१२॥ तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥१३॥

इति प्रमाणस्य स्वरूपोद्देश प्रथम ॥१॥

तद्द्वेधा ॥१॥ प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥२॥ विशदं प्रत्यक्षम् ॥३॥प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥४॥ इन्द्रियानिन्द्रयनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकम् ॥५॥नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥६॥ तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च ॥७॥ अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥८॥ स्वावरणक्षयोपशमलक्षण योग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति॥९॥ कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः ॥१०॥ सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् ॥११॥ सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबन्धसम्भवात् ॥१२॥

इति प्रत्येक्षोद्देश द्वितीय ॥२॥

परोक्षमितरत्॥१॥ प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञान-तर्कानुमानागमभेदं ॥२॥ संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ॥३॥ स देवदत्तो यथा ॥४॥ दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥५॥यथा स एवायं देवदत्तः गोसदृशो गवयः गोविलक्षणो महिष इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ॥६॥ उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः॥७॥ इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ॥८॥ साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम्॥९॥ यथाग्नावेवधूमस्तदा-भावे न भवत्येवेति च ॥१०॥ साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ॥११॥ सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ॥१२॥ सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ॥१३॥ पूर्वोत्तर-चारिणोः कार्य्यकारणयोश्च क्रमभावः ॥१४॥ तर्कात्तन्निर्णयः ॥१५॥ इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यं ॥१६॥ सन्दिग्धविपर्य्यस्ता-व्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम्॥१७॥ अनिष्टाध्य-क्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनम् ॥१८॥ न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः॥१९॥प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥२०॥ साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी ॥२१॥पक्ष इति यावत् ॥२२॥ प्रसिद्धो धर्मी ॥२३॥ विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये ॥२४॥ अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् ॥२५॥ प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता साध्या।२६। अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा ॥२७॥ व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ॥२८॥ अन्यथा तदघटनात् ॥२९॥ साध्यधर्म्माधारसन्देहा-पनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ॥३०॥ साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् ॥३१॥ को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति ॥३२॥ एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् ॥३३॥ न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्गं तत्र यथोक्त-हेतोरेव व्यापारात् ॥३४॥ तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे

बाधकाप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः।।३५।।व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्तरापेक्षणात् ।३६। नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः।३७।तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने सन्देहयति।।३८।। कुतोन्यथोपनयनिगमने।३९। न च ते तदङ्गे, साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ।।४०।। समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात् ।।४१।। बालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ।।४२।। दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् ।।४३।। साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः ।।४४।। साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः ।।४५।। हेतोरुपसंहार उपनयः ।।४६।। प्रतिज्ञायास्तु निगमनं ।।४७।। तदनुमानं द्वेधा ।।४८।। स्वार्थपरार्थभेदात् ।।४९।। स्वार्थमुक्तलक्षणम् ।।५०।। परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ।।५१।। तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात् ।।५२।। स हेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ।।५३।। उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ।।५४।। अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्यकार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ।।५५।। रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेव किञ्चित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबन्धकारणान्तरावैकल्ये ।।५६।। न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ।।५७।। भाव्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ।।५८।। तद्व्यापाराश्रित हि तद्भावभावित्वम्।५९।सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ।।६०।। परिणामी शब्दः कृतकत्वाद्य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वन्ध्यास्तनन्धयः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामी ।।६१।

परोक्षमितरत्॥१॥ प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञान-तर्कानुमानागमभेदं ॥२॥ संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ॥३॥ स देवदत्तो यथा ॥४॥ दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥५॥यथा स एवायं देवदत्तः गोसदृशो गवयः गोविलक्षणो महिष इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ॥६॥ उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः॥७॥ इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ॥८॥ साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् ॥९॥ यथाग्नावेवधूमस्तदा-भावे न भवत्येवेति च ॥१०॥ साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ॥११॥ सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ॥१२॥ सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ॥१३॥ पूर्वोत्तर-चारिणोः कार्य्यकारणयोश्च क्रमभावः ॥१४॥ तर्कात्तन्निर्णयः ॥१५॥ इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यं ॥१६॥ सन्दिग्धविपर्य्यस्ता-व्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम्॥१७॥ अनिष्टाध्य-क्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनम् ॥१८॥ न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः ॥१९॥प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥२०॥ साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी ॥२१॥पक्ष इति यावत् ॥२२॥ प्रसिद्धो धर्मी ॥२३॥ विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये ॥२४॥ अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् ॥२५॥ प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता साध्या।२६। अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा ॥२७॥ व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ॥२८॥ अन्यथा तदघटनात् ॥२९॥ साध्यधर्म्माधारसन्देहा-पनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ॥३०॥ साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् ॥३१॥ को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति ॥३२॥ एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् ॥३३॥ न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्गं तत्र यथोक्त-हेतोरेव व्यापारात् ॥३४॥ तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे

बाधकाप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः॥३५॥व्यक्तिरूपं च निदर्शन सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्तरापेक्षणात् ।३६। नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः।३७।तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने सन्देहयति॥३८॥ कुतोन्यथोपनयनिगमने।३९। न च ते तदङ्गे, साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ॥४०॥ समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात् ॥४१॥ बालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ॥४२॥ दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयतिरेकभेदात् ॥४३॥ साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः ॥४४॥ साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः ॥४५॥ हेतोरुपसंहार उपनयः ॥४६॥ प्रतिज्ञायास्तु निगमनं ॥४७॥ तदनुमानं द्वेधा ॥४८॥ स्वार्थपरार्थभेदात् ॥४९॥ स्वार्थमुक्तलक्षणम् ॥५०॥ परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ॥५१॥ तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात् ॥५२॥ स हेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ॥५३॥ उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ॥५४॥ अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्यकार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ॥५५॥ रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेव किञ्चित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबन्धकारणान्तरावैकल्ये ॥५६॥ न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ॥५७॥ भाव्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ॥५८॥ तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम्।५९।सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ॥६०॥ परिणामी शब्दः कृतकत्वाद्य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परिणामी स न कृ दृष्टो यथा वन्ध्यास्तनन्धयः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामी ॥६

अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्यवहारादेः ।।६२।। अस्त्यत्रच्छाया छत्रात् ।।६३।। उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात् ।।६४।। उद्गाद्भरणिः प्राक् तत एव ।।६५।। अस्त्यत्र मातुलिङ्गे रूपं रसात् ।।६६।। विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा ।।६७।। नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् ।।६८।। नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् ।।६९।। नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् ।।७०।। नोदेष्यति मूहूर्त्तान्ते शकटं रेवत्युदयात् ।।७१।। नोदगाद्भरणि मूहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् ।।७२।। नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् ।।७३।। अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारण-पूर्वोत्तरसहचरानुपलम्भभेदात् ।।७४।। नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुपलब्धेः ।।७५।। नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः।।७६।। नास्त्यत्रा-प्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धेः ।।७७।। नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः ।।७८।। न भविष्यति मूहूर्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः नोद्गाद्भरणिर्मुहूर्तात्प्राक्तत एव ।।७९।। नास्त्यत्र समतुमायामुन्नामो नामानुपलब्धेः ।।८०।। विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्ध-कार्यकारणस्वभावानुपलब्धि भेदात् ।।८१।। यथास्मिन्प्राणिनि व्याधि विशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः ।।८२।। अस्त्यत्रदेहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ।।८३।। अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्व-रूपानुपलब्धेः ।।८४।। परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् ।।८५।। अभूदत्र ` शिवकः स्थासात् ।।८६।। कार्यकार्यमवि-रुद्धकार्योपलब्धौ ।।८७।। नास्त्यत्र गृहायां मृगक्रीडनं मृगारिसं-शब्दनात्, कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा।।८८।। व्युत्प-न्नप्रयो गस्तु तथोपपत्त्याऽन्यथानुपपत्त्यैव वा।८९।अग्निमानयं देश-स्तथैव धूमवत्वोपपत्तेर्धूमवत्वान्यथानुपपत्तेर्वा।९०। हेतुप्रयोगे हि यथा व्याप्तिग्रहणं विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधा-र्यते ।।९१।। तावता च साध्यसिद्धिः ।।९२।। तेन पक्षस्तदाधार-सूचनायोक्तः ।।९३।। आप्तवचनादि निबन्धनमर्थज्ञानमागमः

।।६४।। सहजयोग्यतासङ्केतवशाद्धि शब्दादयो वस्तुप्रतिपत्ति-हेतवः ।।६५।। यथा मेर्वादयः सन्ति ।।६६।।

इति परोक्षप्रपञ्चस्तृतीय समुद्देश· ।।३।।

सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ।।१।। अनुवृत्तव्यावृत्त-प्रत्ययगोचरत्वात्पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थितिलक्षण-परि-णामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ।।२।। सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्ध्वता-भेदात् ।।३।। सदृशपरिणामस्तिर्यक् खण्डमुण्डादिषु गोत्ववत् ।।४।। परापरविवर्त्तव्यापिद्रव्यमूर्ध्वता मृदिवस्थासादिषु ।।५।। विशेषश्च ।।६।। पर्यायव्यतिरेकभेदात् ।।७।। एकस्मिन्द्रव्ये क्रम-भाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्षविषादादिवत् ।।८।। अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् ।।९।।

इति प्रमाणस्य विषयसमुद्देशश्चतुर्थं ।।४।।

अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् ।।१।। प्रमाणाद-भिन्नं भिन्नं च ।।२।। यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहा-त्यादत्त उपेक्षते चेति प्रतीतेः ।।३।।

इति प्रमाणस्य फलसमुद्देश ।।५।।

ततोऽन्यत्तदाभासम् ।।१।। अस्वसंविदित-गृहीतार्थ-दर्शन-संशयादयः प्रमाणाभासाः ।।२।। स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात् ।।३।। पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत् ।।४।। चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च ।।५।। अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद् धूमदर्शनाद् वह्निविज्ञानवत् ।।६।। वैशद्येऽपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् ।।७।। अतस्मिंस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा ।।८।। सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभि-ज्ञानाभासम् ।।९।। असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावांस्तत्पुत्रः स श्याम इति यथा ।।१०।। इदमनुमानाभासम् ।।११।। तत्रानिष्टादिः

पक्षाभासः ॥१२॥ अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ॥१३॥ सिद्धः श्रावणः शब्दः ॥१४॥ बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः ॥१५॥ तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वाज्जलवत् ॥१६॥ अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ॥१७॥ प्रेत्यासुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् ॥१८॥ शुचि नरशिरः कपालं प्राण्यङ्गत्वाच्छङ्खशुक्तिवत् ॥१९॥ माता मे वन्ध्या पुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात् ॥२०॥ हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिञ्चित्कराः ॥२१॥ असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ॥२२॥ अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दश्चाक्षुषत्वात् ॥२३॥ स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ॥२४॥ अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ॥२५॥ तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् ॥२६॥ सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥२७॥ तेनाज्ञातत्वात् ॥२८॥ विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥२९॥ विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकाः ॥३०॥ निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ॥३१॥ आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ॥३२॥ शङ्कितवृत्तिस्तु नास्ति [illegible] वक्तृवात् ॥३३॥ सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाऽविरोधात् ॥३४॥ सिद्धे प्रत्यक्षादि बाधिते च साध्ये हेतुरकिञ्चित्करः ॥३५॥ सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वात् ॥३६॥ किञ्चिदकरणात् ॥३७॥ यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किञ्चित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥३८॥ लक्षण एवासौ दोषो व्युत्पन्नप्रयोगस्य प[illegible]षेणैव दुष्टत्वात् ॥३९॥ दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥४०॥ अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटवत् ॥४१॥ विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्त्तम् ॥४२॥ विद्युदादिनाऽतिप्रसङ्गात् ॥४३॥ व्यतिरेकेऽसिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत्

॥४४॥ विपरीत व्यतिरेकश्च यन्नामूर्त्तं तन्नापौरुषेयम् ॥४५॥ बालप्रयोगाभासः पञ्चावयवेषु कियद्धीनता ॥४६॥ अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वात् यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥४७॥ धूमवांश्चायम् ॥४८॥ तस्मादग्निमान् धूमवांश्चायम् ॥४९॥ स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ॥५०॥ रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् ॥५१॥ यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः सन्ति धावध्वं माणवकाः ॥५२॥ अङ्गुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च ॥५३॥ विसंवादात् ॥५४॥ प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादिसंख्याभासम् ॥५५॥ लौकायतिकस्य प्रत्यक्षः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥५६॥ सौगतसांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ॥५७॥ अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् ॥५८॥ तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वमप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् ॥५९॥ प्रतिभासभेदस्य च भेदकत्वात् ॥६०॥ विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम् ॥६१॥ तथा प्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च ॥६२॥ समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् ॥६३॥ परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् ॥६४॥ स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् ॥६५॥ फलाभासं प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥६६॥ अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥६७॥ व्यावृत्त्याऽपि न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्त्याऽफलत्वप्रसंगात् ॥६८॥ प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥६९॥ तस्माद्वास्तवो भेदः ॥७०॥ भेदे त्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः ॥७१॥ समवायेऽतिप्रसङ्गः ॥७२॥ प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च ॥७३॥ सम्भवदन्यद्विचारणीयम् ॥७४॥

पक्षाभासः ॥१२॥ अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ॥१३॥ सिद्धः श्रावणः शब्दः ॥१४॥ बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः ॥१५॥ तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथाऽनुष्णोऽग्निद्रव्यत्वाज्जलवत् ॥१६॥ अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ॥१७॥ प्रेत्यासुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् ॥१८॥ शुचि नरशिरः कपालं प्राण्यङ्गत्वाच्छङ्खशुक्तिवत् ॥१९॥ माता मे वन्ध्या पुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात् ॥२०॥ हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिञ्चित्कराः ॥२१॥ असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ॥२२॥ अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दश्चाक्षुषत्वात् ॥२३॥ स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ॥२४॥ अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ॥२५॥ तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् ॥२६॥ सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥२७॥ तेनाज्ञातत्वात् ॥२८॥ विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥२९॥ विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकाः ॥३०॥ निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ॥३१॥ आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ॥३२॥ शङ्कितवृत्तिस्तु नास्ति ॑ ो वक्तृत्वात् ॥३३॥ सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाऽविरोधात् ॥३४॥ सिद्धे प्रत्यक्षादि बाधिते च साध्ये हेतुरकिञ्चित्करः ॥३५॥ सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वात् ॥३६॥ किञ्चिदकरणात् ॥३७॥ यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किञ्चित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥३८॥ लक्षण एवासौ दोषो व्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् ॥३९॥ दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥४०॥ अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटवत् ॥४१॥ विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्त्तम् ॥४२॥ विद्युदादिनाऽतिप्रसङ्गात् ॥४३॥ व्यतिरेकेऽसिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत्

॥४४॥ विपरीत व्यतिरेकश्च यन्नामूर्त्तं तन्नापौरुषेयम् ॥४५॥ बालप्रयोगाभासः पञ्चावयवेषु कियद्धीनता ॥४६॥ अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वात् यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥४७॥ धूमवांश्चायम् ॥४८॥ तस्मादग्निमान् धूमवांश्चायम् ॥४९॥ स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ॥५०॥ रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् ॥५१॥ यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः सन्ति धावध्वं माणवकाः ॥५२॥ अङ्गुल्यग्रे हस्तियूथसतमास्ते इति च ॥५३॥ विसंवादात् ॥५४॥ प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादिसंख्याभासम् ॥५५॥ लौकायतिकस्य प्रत्यक्षः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्धयादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥५६॥ सौगत–सांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ॥५७॥ अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् ॥५८॥ तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वमप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् ॥५९॥ ऽतिभासभेदस्य च भेदकत्वात् ॥६०॥ विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम् ॥६१॥ तथा प्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च ॥६२॥ समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् ॥६३॥ परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् ॥६४॥ स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् ॥६५॥ फलाभासं प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥६६॥ अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥६७॥ व्यावृत्याऽपि न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्याऽफलत्वप्रसंगात् ॥६८॥ प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥६९॥ तस्माद्वास्तवो भेदः ॥७०॥ भेदे त्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः ॥७१॥ समवायेऽतिप्रसङ्गः ॥७२॥ प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च ॥७३॥ सम्भवदन्यद्विचारणीयम् ॥७४॥

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः ।
संविदे मादृशो बालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ।।

इति प्रमाणस्याभासोद्देश षष्ठ ।।६।।

इति परीक्षामुखसूत्राणि समाप्तानि

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्राचार्यविरचितो

रत्न रण – ा ाचारः

(अथ प्रथमोऽध्यायः)

मङ्गलाचरणम्

नमः श्री वर्द्धमानाय निर्द्धूतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते ।।१।।

धर्मोपदेशप्रतिज्ञा

देशयामि समीचीनं धर्मं कर्मनिवर्हणम् ।
संसारदुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे ।।२।।

धर्मस्य लक्षणम्

सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वरा विदुः ।
यदीय प्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धतिः ।।३।।

सम्यग्दर्शन लक्षणम्

श्रद्धानं परमार्थानामाप्तागमतपोभृताम् ।
त्रिमूढापोढमष्टाङ्गं सम्यग्दर्शनमस्मयम् ।।४।।

आप्तलक्षणम्

आप्तेनोच्छिन्नदोषेण सर्वज्ञेनागमेशिना ।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्तता भवेत् ।।५।।

वीतरागकथनम्

क्षुत्पिपासाजरातङ्क—जन्मान्तक भयस्मयाः ।
न रागद्वेषमोहाश्च यस्याप्तः सः प्रकीर्त्यते ।।६।।

हितोपदेशिन कथनम्

परमेष्ठी परंज्योतिर्विरागो विमलः कृती ।
सर्वज्ञोऽनादिमध्यान्तः सार्वः शास्तोपलाल्यते ।।७।।

अनात्मार्थं विना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितम् ।
ध्वनन् शिल्पिकरस्पर्शान्मुरजः किमपेक्षते ।।८।।

शास्त्रलक्षणम्

आप्तोपज्ञमनुल्लंघ्यमदृष्टेष्ट विरोधकम् ।
तत्वोपदेशकृत्सार्वं शास्त्रं कापथघट्टनम् ।।९।।

गुरुलक्षणम्

विषयाशावशातीतो निराम्भोऽपरिग्रहः ।
ज्ञानध्यानतपोरक्तस्तपस्वी सः प्रशस्यते ।।१०।।

सम्यक्त्वस्याष्टाङ्गानि

१ नि शाङ्किताङ्गम्

इदमेवेदृशमेव तत्त्वं नान्यत्र चान्यथा ।
इत्यकम्पायसाम्भोवत्सन्मार्गेऽसंशया रुचि ।।११।।

२ नि कांक्षिताङ्गम्

कर्मपरवशे सान्ते दुःखैरन्तरितोदये ।
पापबीजे सुखेऽनास्था श्रद्धानाकांक्षणा स्मृता ।।१२।।

३ निर्विचिकित्सिताङ्गम्

स्वभावतोऽशुचौ काये रत्नत्रयपवित्रिते ।
निर्जुगुप्सा गुणप्रीतिर्मता निर्विचिकित्सिता ।।१३।।

४ अमूढदृष्ट यङ्गम्

कापथे पथि दुःखानां कापथस्थेऽप्यसम्मतिः ।
असम्पृक्तिरनुत्कीर्तिरमूढ़ा दृष्टिरुच्यते ॥१४॥

५ उपगूहनाङ्गम्

स्वयं शुद्धस्य मार्गस्य बालाशक्तजनाश्रयाम् ।
वाच्यतां यत्प्रमार्जन्ति तद्वदन्त्युपगूहनम् ॥१५॥

६ स्थितिकरणाङ्गम्

दर्शनाच्चरणाद्वापि चलतां धर्मवत्सलैः ।
प्रत्यवस्थापनं प्राज्ञैः स्थितिकरणमुच्यते ॥१६॥

७ वात्सल्याङ्गम्

स्वयूथ्यान्प्रति सद्भावसनाथाऽपेतकैतवा ।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्यमभिलप्यते ॥१७॥

८ प्रभावनाङ्गम्

अज्ञानतिमिरव्याप्तिमपाकृत्य यथायथम् ।
जिनशासनमाहात्म्यप्रकाशः स्यात्प्रभावना ॥१८॥

अष्टाङ्गधारिनामानि

तावदञ्जनचौरोऽङ्गे ततोऽनन्तमती स्मृता ।
उद्दायनस्तृतीयेऽपि तुरीये रेवती मता ॥१९॥
ततो जिनेन्द्रभक्तोऽन्यो वारिषेणस्ततः परः ।
विष्णुश्च वज्रनामा च शेषयोर्लक्षतां गतौ ॥२०॥

अङ्गहीन दर्शस्य व्यर्थत्वम्

नाङ्गहीनमलं छेत्तुं दर्शनं जन्मसन्ततिम् ।
न हि मन्त्रोऽक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनाम् ॥२१॥

लोकमूढता

आपगासागरस्नानमुच्चयः सिकताश्मनाम् ।
गिरिपातोऽग्निपातश्च लोकमूढं निगद्यते ॥२२॥

देवमूढता

वरोपलिप्सयाशावान् रागद्वेषमलीमसः ।
देवता यदुपासीत देवतामूढमुच्यते ॥२३॥

गुरुमूढता

सग्रन्थारम्भहिंसानां संसारावर्तवर्तिनाम् ।
पाखण्डिनां पुरस्कारो ज्ञेयं पाखण्डिमोहनम् ॥२४॥

अष्टमदनामानि

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपो वपुः ।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मयाः ॥२५॥

मदस्यानिष्टत्वम्

स्मयेन योऽन्यानत्येति धर्मस्थान् गर्विताशयः ।
सोऽत्येति धर्ममात्मीयं न धर्मो धार्मिकैर्विना ॥२६॥
यदि पापनिरोधोऽन्यसम्पदा किं प्रयोजनम् ।
अथ पापा ोऽस्त्यन्य सम्पदा किं प्रयोजनम् ॥२७॥

सम्यग्दर्शनमहिमा

सम्यग्दर्शनसम्प पि मातङ्गदेहजम् ।
देवा देवं विदुर्भस्मगूढाङ्गारान्तरौजसम् ॥२८॥
श्वापि देवोऽपि देवः श्वा जायते धर्मकिल्बिषात् ।
कापि नाम भवेदन्या सम्पद्धर्माच्छरीरिणाम् ॥२९॥
भयाशास्नेहलोभाच्च कुदेवागमलिङ्गिनाम् ।
प्रणामं विनयं चैव न कुर्युः शुद्धदृष्टयः ॥३०॥
दर्शनं ज्ञानचारित्रात्साधिमानमुपाश्नुते ।
दर्शनं कर्णधारं तन्मोक्षमार्गे प्रचक्षते ॥३१॥
विद्यावृत्तस्य संभूतिस्थितिवृद्धिफलोदयाः ।
न सन्त्यसति सम्यक्त्वे बीजाभावे तरोरिव ॥३२॥

गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान् ।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोहो मोहिनो मुनेः ।।३३।।
न सम्यक्त्वसमं किञ्चित् त्रैलोक्ये त्रिजगत्यपि ।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम् ।।३४।।

सम्यग्दृष्टेरनुत्पत्तिस्थानानि

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारकतिर्यङ्–नपुंसक–स्त्रीत्वानि ।
दुष्कुलविकृताल्पायुर्दरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिकाः ।।३५।।
ओजस्तेजोविद्या-वीर्ययशोवृद्धि विजय विभवसनाथाः ।
महाकुला महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शनपूताः ।।३६।।
अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टिविशिष्टाः प्रकृष्टशोभाजुष्टाः ।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्ताः स्वर्गे ।।३७।।
नवनिधिसप्तद्वयरत्नाधीशः सर्व-भूमि-पतयश्चक्रम् ।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलिशेखरचरणाः ।।३८।।
अमरासुरनरपतिभिर्यमधरपतिभिश्च नूतपादाम्भोजा ।
दृष्ट्या सुनिश्चितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरण्या ।।३९।।
शि जररुजमक्षयमव्याबाधं विशोकभयशङ्कम् ।
काष्टागतसुख ा विभवं विमलं भजन्ति दर्शनशरणाः ।।४०।।

देवेन्द्र चक्रमहिमानममेयमानम्
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्र शिरोऽर्चनीयम् ।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकं
लब्ध्वा शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्यः ।।४१।।

(अथ द्वितीयोऽध्याय)

सम्यग्ज्ञानस्य लक्षणम्

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात् ।
निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ।।४२।।

प्रथमानुयोगकथनम्

प्रथमानुयोगमर्थाख्यानं चरितं पुराणमपि पुण्यम् ।
बोधिसमाधिनिधानं बोधति बोधः समीचीनः ।।४३।।

करणानुयोगकथनम्

लोकालोकविभक्तेः युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च ।
आदर्शमिव तथामतिरवैति करणानुयोगं च ।।४४।।

चरणानुयोगकथनम्

गृहमेध्यनगाराणां चारित्रोत्पत्तिवृद्धिरक्षाङ्गम् ।
चरणानुयोगसमयं सम्यग्ज्ञानं विजानाति ।।४५।।

द्रव्यानुयोगकथनम्

जीवाजीवसुतत्त्वे पुण्यापुण्ये च बन्धमोक्षौ च ।
द्रव्यानुयोगदीपः श्रुतविद्यालोकमातनुते ।।४६।।

(अथ तृतीयोऽध्यायः)

चारित्रस्यावश्यकता

मोहतिमिरापहरणे दर्शनलाभादवाप्त-संज्ञानः ।
रागद्वेष निवृत्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः ।।४७।।
रागद्वेषनिवृत्तेर्हिंसादि निर्वतना कृता भवति ।
अनपेक्षितार्थवृत्तिः कः पुरुषः सेवते नृपतीन् ।।४८।।

चारित्रकथनम्

हिंसानृतचौर्येभ्यो मैथुनसेवापरिग्रहाभ्यां च ।
पापप्रणालिकाभ्यो विरतिः संज्ञस्य चारित्रम् ।।४९।।

चारित्रभेदो

सकलं विकलं चरणं तत्सकलं सर्वसङ्गविरतानाम् ।
अनगाराणां विकलं सागाराणां ससङ्गानाम् ।।५०।।

विकल (गृहस्थ) चारित्रभेदा

गृहिणां त्रेधा तिष्ठत्यणुगुणशिक्षाव्रतात्मकं चरणम् ।
पञ्चत्रिचतुर्भेदं त्रयं यथासंख्यमाख्यातम् ।।५१।।

गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान् ।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोहो मोहिनो मुनेः ॥३३॥
न सम्यक्त्वसमं किञ्चित् त्रैलोक्ये त्रिजगत्यपि ।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम् ॥३४॥

सम्यग्दृष्टेरनुत्पत्तिस्थानानि

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारकतिर्यङ्-नपुंसक-स्त्रीत्वानि ।
दुष्कुलविकृताल्पायुदरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिकाः ॥३५॥
ओजस्तेजोविद्या-वीर्ययशोवृद्धि विजय विभवसनाथाः ।
महाकुला महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शनपूताः ॥३६॥
अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टिविशिष्टाः प्रकृष्टशोभाजुष्टाः ।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्ताः स्वर्गे ॥३७॥
नवनिधिसप्तद्वयरत्नाधीशः सर्व-भूमि-पतयश्चक्रम् ।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलिशेखरचरणाः ॥३८॥
अमरासुरनरपतिभिर्यमधरपतिभिश्च नूतपादाम्भोजा ।
दृष्ट्या सुनिश्चितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरण्या ॥३९॥
शिवमजररुजमक्षयमव्याबाधं विशोकभयशङ्कम् ।
काष्टागतसुख[illegible] विभवं विमलं भजन्ति दर्शनशरणाः ॥४०॥

देवेन्द्र चक्रमहिमानममेयमानम्
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्र शिरोऽर्चनीयम् ।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकं
लब्ध्वा शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्यः ॥४१॥

(अथ द्वितीयोऽध्याय)

सम्यग्ज्ञानस्य लक्षणम्

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात् ।
निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ॥४२॥

प्रथमानुयोगकथनम्

प्रथमानुयोगमर्थाख्यानं चरितं पुराणमपि पुण्यम् ।
बोधिसमाधिनिधानं बोधति बोधः समीचीनः ॥४३॥

करणानुयोगकथनम्

लोकालोकविभक्तेः युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीना च ।
आदर्शमिव तथामतिरवैति करणानुयोगं च ॥४४॥

चरणानुयोगकथनम्

गृहमेध्यनगाराणां चारित्रोत्पत्तिवृद्धिरक्षाङ्गम् ।
चरणानुयोगसमयं सम्यग्ज्ञानं विजानाति ॥४५॥

द्रव्यानुयोगकथनम्

जीवाजीवसुतत्त्वे पुण्यापुण्ये च बन्धमोक्षौ च ।
द्रव्यानुयोगदीपः श्रुतविद्यालोकमातनुते ॥४६॥

(अथ तृतीयोऽध्यायः)

चारित्रस्यावश्यकता

मोहतिमिरापहरणे दर्शनलाभादवाप्त-संज्ञानः ।
रागद्वेष निवृत्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः ॥४७॥
रागद्वेषनिवृत्तेर्हिंसादि निर्वतना कृता भवति ।
अनपेक्षितार्थवृत्तिः कः पुरुषः सेवते नृपतीन् ॥४८॥

चारित्रकथनम्

हिंसानृतचौर्येभ्यो मैथुनसेवापरिग्रहाभ्यां च ।
पापप्रणालिकाभ्यो विरतिः संज्ञस्य चारित्रम् ॥४९॥

चारित्रभेदौ

सकलं विकलं चरणं तत्सकलं सर्वसङ्गविरतानाम् ।
अनगाराणां विकलं सागाराणां ससङ्गानाम् ॥५०॥

विकल (गृहस्थ) चारित्रभेदा

गृहिणां त्रेधा तिष्ठत्यणुगुणशिक्षाव्रतात्मकं चरणम् ।
पञ्चत्रिचतुर्भेदं त्रयं यथासंख्यमाख्यातम् ॥५१॥

गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान् ।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोहो मोहिनो मुनेः ॥३३॥
न सम्यक्त्वसमं किञ्चित् त्रैलोक्ये त्रिजगत्यपि ।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम् ॥३४॥

सम्यग्दृष्टेरनुत्पत्तिस्थानानि

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारकतिर्यङ्-नपुंसक-स्त्रीत्वानि ।
दुष्कुलविकृताल्पायुदरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्यव्रतिकाः ॥३५॥
ओजस्तेजोविद्या-वीर्ययशोवृद्धि विजय विभवसनाथाः ।
महाकुला महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शनपूताः ॥३६॥
अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टिविशिष्टाः प्रकृष्टशोभाजुष्टाः ।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्ताः स्वर्गे ॥३७॥
नवनिधिसप्तद्वयरत्नाधीशः सर्व-भूमि-पतयश्चक्रम् ।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलिशेखरचरणाः ॥३८॥
अमरासुरनरपतिभिर्यमधरपतिभिश्च नूतपादाम्भोजा ।
दृष्ट्या सुनिश्चितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरण्या ॥३९॥
शिवमजररुजमक्षयमव्याबाधं विशोकभयशङ्कम् ।
काष्टागतसुखरि । विभवं विमलं भजन्ति दर्शनशरणाः ॥४०॥

देवेन्द्र चक्रमहिमानममेयमानम्
राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्र शिरोऽर्चनीयम् ।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकं
लब्ध्वा शिवं च जिनभक्तिरुपैति भव्यः ॥४१॥

(अथ द्वितीयोऽध्याय)

सम्यग्ज्ञानस्य लक्षणम्

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात् ।
निःसन्देहं वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिनः ॥४२॥

ब्रह्मचर्याणुव्रतस्य पञ्चातिचारा

अन्यविवाहाकरणानङ्गक्रीडाविटत्वविपुलतृषाः ।
इत्वरिकागमनं चास्मरस्य पञ्च व्यतीचारा ॥६०॥

परिमित परिग्रहाणुव्रतम्

धनधान्यादिग्रन्थं परिमाय ततोऽधिकेषु निस्पृहता ।
परिमित–परिग्रहः स्यादिच्छा परिमाणनामापि ॥६१॥

परिमितपरिग्रहाणुव्रतस्य पञ्चातिचारा

अतिवाहनातिसंग्रहविस्मयलोभातिभारवहनानि ।
परिमितपरिग्रहस्य च विक्षेपाः पञ्च कथ्यन्ते ॥६२॥

पञ्चाणुव्रत फलम्

पञ्चाणुव्रतनिधयो निरतिक्रमणाः फलन्ति सुरलोकम् ।
यत्रावधिरष्टगुणा दिव्यशरीरं च लभ्यन्ते ॥६३॥

पञ्चाणुव्रत प्रसिद्धाना नामानि

मातङ्गो धनदेवश्च वारिषेणस्ततः परः ।
नीली जयश्च सम्प्राप्ताः पूजातिशयमुत्तमम् ॥६४॥

हिंसादिपञ्चपापेसु प्रसिद्धाना नामानि

धनश्रीसत्यघोषौ च तापसारक्षकावपि ।
उपाख्येयास्तथा श्मश्रु नवनीतो यथाक्रमम् ॥६५॥

गृहमेधिनामष्टौ मूलगुणा

मद्य–मास–मधु–त्यागैः सहाणुव्रत–पञ्चकम् ।
अष्टौ मूलगुणानाहुर्गृहिणां श्रमणोत्तमाः ॥६६॥

त्रीणि गुणव्रतानि

दिग्व्रतमनर्थदण्डव्रतं च भोगोपभोगपरिमाणम् ।
अनुबृंहणाद् गुणानामाख्यान्ति गुणव्रतान्यार्याः ॥६७॥

अणुव्रतम्

प्राणातिपातवितथव्याहारस्तेयकाममूर्च्छेभ्यः ।
स्थूलेभ्यः पापेभ्यो व्युपरमणमणुव्रतं भवति ॥५२॥

अहिंसाणुव्रतम्

संकल्पात्कृतकारितमननाद्योगत्रयस्य चरसत्वान् ।
न हिनस्ति यत्तदाहुः स्थूलवधाद्विरमणं निपुणाः ॥५३॥

अहिंसाणुव्रतस्य पञ्चातीचारा

छेदनबन्धनपीडनमतिभारारोपणं व्यतीचाराः ।
आहारवारणापि च स्थूलवधाद् व्युपरतेः पञ्च ॥५४॥

सत्याणुव्रतम्

स्थूलमलीकं न वदति न परान् वादयति सत्यमपि विपदे ।
यत्तद्वदन्ति सन्तः स्थूलमृषावाद वैरमणम् ॥५५॥

सत्याणुव्रतस्य पञ्चातिचारा

परिवावरहोभ्याख्या पैशून्यं कूटलेखकरणं च ।
न्यासापहारितापि च व्यति मः पञ्च सत्यस्य ॥५६॥

अचौर्याणुव्रतम्

निहितं वा पतितं दा सुविस्मृतं वा परस विसृष्टम् ।
न हरति यन्न च दत्ते तदकृषचौर्यादुपारमणम् ॥५७॥

अचौर्याणुव्रतस्य पचातीचारा

चौरप्रयोग चौरार्थादान विलोप सदृश सन्मिश्राः ।
हीनाधिकविनिमानं पञ्चास्तेये व्यतीपाताः ॥५८॥

ब्रह्मचर्याणुव्रतम्

न तु परदारान् गच्छति न परान् गमयति च पापभीतेर्यत् ।
सा परदारनिवृत्तिः स्वदारसन्तोष नामापि ॥५९॥

ब्रह्मचर्याणुव्रतस्य पञ्चातिचारा

अन्यविवाहाकरणानङ्गक्रीडाविटत्वविपुलतृषाः ।
इत्वरिकागमनं चास्मरस्य पञ्च व्यतीचारा ॥६०॥

परिमित परिग्रहाणुव्रतम्

धनधान्यादिग्रन्थं परिमाय ततोऽधिकेषु निस्पृहता ।
परिमित–परिग्रहः स्यादिच्छा परिमाणनामापि ॥६१॥

परिमितपरिग्रहाणुव्रतस्य पञ्चातिचारा

अतिवाहनातिसंग्रहविस्मयलोभातिभारवहनानि ।
परिमितपरिग्रहस्य च विक्षेपाः पञ्च कथ्यन्ते ॥६२॥

पञ्चाणुव्रत फलम्

पञ्चाणुव्रतनिधयो निरतिक्रमणाः फलन्ति सुरलोकम् ।
यत्रावधिरष्टगुणा दिव्यशरीरं च लभ्यन्ते ॥६३॥

पञ्चाणुव्रत प्रसिद्धाना नामानि

मातङ्गो धनदेवश्च वारिषेणस्ततः परः ।
नीली जयश्च सम्प्राप्ताः पूजातिशयमुत्तमम् ॥६४॥

हिंसादिपञ्चपापेसु प्रसिद्धाना नामानि

धनश्रीसत्यघोषौ च तापसारक्षकावपि ।
उपाख्येयास्तथा श्मश्रु नवनीतो यथाक्रमम् ॥६५॥

गृहमेधिनामष्टौ मूलगुणा

मद्य–मांस–मधु–त्यागैः सहाणुव्रत–पञ्चकम् ।
अष्टौ मूलगुणानाहुर्गृहिणां श्रमणोत्तमाः ॥६६॥

त्रीणि गुणव्रतानि

दिग्व्रतमनर्थदण्डव्रतं च भोगोपभोगपरिमाणम् ।
अनुबृंहणाद् गुणानामाख्यान्ति गुणव्रतान्यार्याः ॥६७॥

दिग्व्रतम्

दिग्वलयं परिगणितं कृत्वाऽतोऽहं बहिर्न यास्यामि ।
इति सङ्कल्पो दिग्व्रतमामृत्यणु पापविनिवृत्त्यै ॥६८॥

दिग्व्रतस्य मर्यादा

मकराकरसरिदटवीगिरिजनपदयोजनानि मर्यादाः ।
प्राहुर्दिशां दशानां प्रतिसंहारे प्रसिद्धानि ॥६९॥

दिग्व्रतस्य माहात्म्यम्

धेर्बहिरणुपापप्रतिविरतेर्दिग्व्रतानि धारयताम् ।
पञ्चमहाव्रतपरिणतिमणुव्रतानि प्रपद्यन्ते ॥७०॥
प्रत्याख्यानतनुत्वान्मन्दतराश्चरणमोहपरिणामाः ।
सत्वेन दुःखधारा महा य प्रकल्प्यन्ते ॥७१॥

महाव्रतलक्षणम्

पञ्चानां पापानां हिंसादीनां मनोवचःकायैः ।
कृतकारितानुमोदैस्त्यागस्तु महा महताम् ॥७२॥

दिग्व्रतस्यातिचारा

ऊर्ध्वाधस्तात्तिर्यग्व्यतिपाताः क्षेत्रवृद्धिरवधीनाम् ।
विस्मरणं दिग्विरतेरत्याशाः पञ्च मन्यन्ते ॥७३॥

अनर्थदण्डव्रतम्

अभ्यन्तरं दिगवधेरपार्थिकेभ्यः सपापयोगेभ्यः ।
विरमणमनर्थदण्ड च विदु धराग्रण्यः ॥७४॥

अनर्थदण्डस्य भेदा

पापोपदेश हिंसादानापध्यानदुःश्रुतीः पञ्च ।
प्राहुः प्रमादचर्यामनर्थदण्डानदण्डधराः ॥७५॥

पापोपदेश

तिर्यक्क्लेषवणिज्या हिंसारम्भप्रलम्भनादीनाम् ।
कथाप्रसङ्गप्रसवः स्मर्तव्यः पाप–उपदेशः ॥७६॥

हिंसादानम्

परशुकृपाणखनित्रज्वलनायुधशृङ्गशृङ्खलादीनाम् ।
वधहेतूनां दानं हिंसादानं ब्रुवन्ति बुधाः ॥७७॥

अपध्यानम्

बधबन्धच्छेदादेर्द्वेषाद्रागाच्च परकलत्रादेः ।
आध्यानमपध्यानं शासति जिनशासने विशदाः ॥७८॥

दुःश्रुति

आरम्भसङ्गसाहसमिथ्यात्वद्वेषरागमदमदनैः ।
चेतः कलुषयतां श्रुतिरवधीनां दुःश्रुतिर्भवति ॥७९॥

प्रमादचर्य्या

क्षितिसलिलदहनपवनारम्भं विफलं वनस्पतिच्छेदम् ।
सरणं सारणमपि च प्रमादचर्या प्रभाषन्ते ॥८०॥

अनर्थदण्डव्रतस्यातिचारा

कन्दर्पं कौत्कुच्यं मौखर्यमतिप्रसाधनं पञ्च ।
असमीक्ष्य चाधिकरणं व्यतीतयोऽनर्थदण्डकृद्विरतेः ॥८१॥

भोगोपभोग परिमाणव्रतम्

अक्षार्थानां परिसंख्यानं भोगोपभोगपरिमाणम् ।
अर्थवतामप्यवधौ रागरतीनां तनूकृतये ॥८२॥

भोगोपभोगभेदौ

भुक्त्वा परिहातव्यो भोगो भुक्त्वा पुनश्च भोक्तव्यः ।
उपभोगोऽशनवसनप्रभृतिपञ्चेन्द्रियो विषयः ॥८३॥

मधु-मांस-मद्यनिषेध

त्रसहतिपरिहरणार्थं क्षौद्रं पिशितं प्रमादपरिहृतये ।
मद्यं च वर्जनीयं जिनचरणौ शरणमुपयातैः ॥८४॥

अल्पफल–बहुविघात–निषेध

अल्पफलबहुविघातान्मूलकमार्द्राणि शृङ्गवेराणि ।
नवनीतनिम्बकुसुमं कैतकमित्येवमवहेयम् ॥८५॥

यदनिष्टं तद्व्रतयेद्यच्चानुपसेव्यमेतदपि जह्यात् ।
अभिसन्धिकृताविरतिर्विषयाद्योग्याद्व्रतं भवति ॥८६॥

यमनियमकथनम्

नियमो यमश्च विहितौ द्वेधा भोगोपभोगसंहारे ।
नियमः परिमितिकालो यावज्जीवं यमो ध्रियते ॥८७॥

नियमविधि

भोजनवाहनशयनस्नानपवित्राङ्गरागकुसुमेषु ।
ताम्बूलवसनभूषणमन्मथसङ्गीतगीतेषु ॥८८॥

अद्य दिवा रजनीं वा पक्षो मासस्तथर्तु रयनं वा ।
इतिकालपरिच्छित्या प्रत्याख्यानं भवेन्नियमः (युग्मं) ॥८९॥

भोगोपभोग परिमाणव्रतातिचाराः

विषयविषतोऽनुपेक्षानुस्मृतिरति लौल्यमतितृषानुभवो ।
भोगोपभोगपरमाव्यति मा: पञ्च कथ्यन्ते ॥९०॥

– चत्वारि शिक्षाव्रतानि

देशावकाशिकं वा सामयिकं प्रोषधोपवासो वा ।
वैय्यावृत्यं शिक्षाव्रतानि चत्वारि शिष्टानि ॥९१॥

देशावकाशिक-शिक्षाव्रतम्

देश ाशिकं स्यात्कालपरिच्छेदनेन देशस्य ।
प्रत्यह व्रतानां प्रतिसंहारो विशालस्य ॥९२॥

देशावकाशिकव्रतस्य क्षेत्रमर्यादा

गृहहारिग्रामाणां क्षेत्रनदीदावयोजनानां च ।
देशावकाशिकस्य स्मरन्ति सीम्नां तपोवृद्धाः ॥९३॥

देशावकाशिकव्रतस्य कालमर्यादा

संवत्सरमृतुरयनं मासचतुर्मासपक्षमृक्षं च ।
देशावकाशिकस्य प्राहुः कालावधिं प्राज्ञाः ।।९४।।

देशावकाशिकव्रतस्य सार्थकता

सीमान्तानां परतः स्थूलेतरपञ्चपापसंत्यागात् ।
देशावकाशिकेन च महाव्रतानि प्रसाध्यन्ते ।।९५।।

देशावकाशिकव्रतस्य पञ्चातिचारा

प्रेषणशब्दानयनं रूपाभिव्यक्तिपुद्गलक्षेपौ ।
देशावकाशिकस्य व्यपदिश्यन्तेऽत्ययाः पञ्च ।।९६।।

सामायिकशिक्षाव्रतम्

आसमयमुक्तिमुक्तं पञ्चाघानामशेषभावेन ।
सर्वत्र च सामयिकाः सामयिकं नाम शंसन्ति ।।९७।।

सामायिकविधि

मूर्धरुहमुष्टिवासोबन्धं पर्यङ्कबन्धनं चापि ।
स्थानमुपवेशनं वा समयं जानन्ति समयज्ञाः ।।९८।।

एकान्ते सामयिकं निर्व्याक्षेपे वनेषु वास्तुषु च ।
चैत्यालयेषु वापि च परिचेतव्यं प्रसन्नधिया ।।९९।।

व्यापारवैमनस्याद्विनिवृत्त्यामन्तरात्मविनिवृत्त्या ।
सामयिकं बध्नीयादुपवासे चैकभुक्ते वा ।।१००।।

सामयिकं प्रतिदिवसं यथावदप्यनलसेन चेतव्यम् ।
व्रतपञ्चकपरिपूरणकारणमवधानयुक्तेन ।।१०१।।

सामयिकशिक्षाव्रतस्य सार्थकता

सामयिके सारम्भाः परिग्रहा नैव सन्ति सर्वेऽपि ।
चेलोपसृष्टमुनिरिव गृही तदा याति यतिभावम् ।।१०२।।

सामायिके परीषहसहनम्

शीतोष्णदंशमशकपरिषहमुपसर्गमपि च मौनधराः ।
सामयिकं प्रतिपन्ना अधिकुर्वीरन्नचलयोगाः ॥१०३॥

सामायिके किं विचार्यं

अशरणमशुभमनित्यं दुःखमनात्मानमावसामि भवम् ।
मोक्षस्तद्विपरीतात्मेति ध्यायन्तु सामयिके ॥१०४॥

सामायिकस्य पचातिचारा

वाक्कायमानसानां दुःप्रणिधानान्यनादरास्मरणे ।
सामयिकस्यातिगमा व्यज्यन्ते पञ्चभावेन ॥१०५॥

प्रोषधोपवासशिक्षाव्रतम्

पर्वण्यष्टम्यां च ज्ञातव्यः प्रोषधोपवासस्तु ।
चतुरभ्यवहार्याणां प्रत्याख्यानं सदिच्छाभिः ॥१०६॥

प्रोषधोपवासे किं त्याज्य

पञ्चानां पापानामलंक्रियारम्भगन्धपुष्पाणाम् ।
स्नानाञ्जननस्यानामुपवासे परिहृतिं कुर्यात् ॥१०७॥

उपवासे किं कर्त्तव्य

धर्मामृतं सतृष्णः श्रवणाभ्यां पिवतु पाययेद्वान्यान् ।
ज्ञानध्यानपरो वा भवतूपवसन्नतन्द्रालुः ॥१०८॥

प्रोषधोपवास

चतुराहारविसर्जनमुपवासः प्रोषधः सकृद्भुक्तिः ।
स प्रोषधोपवासो यदुपोष्यारम्भमाचरति ॥१०९॥

प्रोषधोपवासस्य पञ्चातिचारा

ग्रहणविसर्गास्तरणान्यदृष्टमृष्टान्यनादरास्मरणे ।
यत्प्रोषधोपवासे व्यतिलङ्घनपञ्चकं तदि ॥११०॥

वैयावृत्य शिक्षाव्रतम्

दानं वैयावृत्यं धर्माय तपोधनाय गुणनिधये ।
अनपेक्षितोपचारोपक्रियमगृहाय विभवेन ॥१११॥

पुनश्च

व्यापत्तिव्यपनोदः पदयोः संवाहनं च गुणरागात् ।
वैयावृत्यं यावानुपग्रहोऽन्योऽपि संयमिनाम् ॥११२॥

पुनश्च

नवपुण्यैः प्रतिपत्ति सप्तगुणसमाहितेन शुद्धेन ।
अपसूनारम्भाणामार्याणामिष्यते दानम् ॥११३॥

दानफलम्

गृहकर्मणापि निचितं कर्म विमार्ष्टि खलु गृहविमुक्तानाम् ।
अतिथीनां प्रतिपूजा रुधिरमलं धावते वारि ॥११४॥
उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात्पूजा ।
भक्तेः सुन्दररूपं स्तवनात्कीर्तिस्तपोनिधिषु ॥११५॥
क्षितिगतमिव वटबीजं पात्रगतं दानमल्पमपि काले ।
फलतिच्छायाविभवं बहुफलमिष्टं शरीरभृताम् ॥११६॥

दानभेदा

आहारौषधयोरप्युपकरणावासयोश्च दानेन ।
वैयावृत्यं ब्रुवते चतुरात्मत्वेन चतुरस्रा ॥११७॥

दानफलस्य प्रसिद्धभोक्तार

श्रीषेणवृषभसेने कौण्डेशः शूकरश्च दृष्टान्ताः ।
वैयावृत्यस्यैते चतुर्विकल्पस्य मन्तव्याः ॥११८॥

वैयावृत्ये (दाने) जिनपूजाविधाम्

देवाधिदेवचरणे परिचरणं सर्वदुःख निर्हरणम् ।
कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम् ॥११९॥

पूजाया फलस्य दृष्टान्त

अर्हच्चरणसपर्या-महानुभावं महात्मनामवदत् ।
भेकः प्रमोदमत्तः कुसुमेनैकेन राजगृहे ॥१२०॥

वैयावृत्यस्य पञ्चातिचारा

हरितपिधाननिधाने ह्यनादरास्मरणमत्सरत्वानि ।
ावृत्यस्यैते व्यतिक्रमाः पञ्च कथ्यन्ते ॥१२१॥

सल्लेखना लक्षणम्

उप दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निः ीकारे ।
धर्माय तनुविमो ाहुः सल्लेखनामार्याः ॥१२२॥

सल्लेखनाया आवश्यकता

अन्तःक्रियाधिकरणं तपः फलं लदर्शिनः स्तुवते ।
तस्माद्यावद्विभवं ाधिमरणे तितव्यम् ॥१२३॥

समाधिमरणस्य विधि

स्नेहं वैरं सङ्गं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः ।
स्व परिजनमपि च क्षांत्वा क्षमयेत्प्रियैर्वचनैः ॥१२४॥

आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च तिव्याजम् ।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थासि निश्शेषम् ॥१२५॥

शोकं भयम क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा ।
सत्त्वोत्साहमुदीर्य च मनः द्यं श्रुतैरमृतैः ॥१२६॥

आहारं परिहाप्य क्र ः स्निग्धं वि द्धयेत्पानम् ।
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥१२७॥

खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या ।
पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥१२८॥

सल्लेखनाया पञ्चातिचारा

जीवितमरणाशंसे भयमित्रस्मृतिनिदाननामानः ।
सल्लेखनातिचारा पञ्च जिनेन्द्रैः समादिष्टाः ॥१२६॥

सल्लेखनाया फलम्

निःश्रेयसमभ्युदयं निस्तीरं दुस्तरं सुखाम्बुनिधिम् ।
निःपिबति पीतधर्मा सर्वैर्दुःखैरनालीढः ॥१३०॥

मोक्षकथनम्

जन्मजरामयमरणैः शोकैर्दुःखैर्भयैश्च परिमुक्तम् ।
निर्वाणं शुद्धसुखं निःश्रेयसमिष्यते नित्यम् ॥१३१॥

विद्यादर्शनशक्तिस्वास्थ्य प्रह्लादतृप्तिशुद्धियुजः ।
निरतिशया निरवधयो निःश्रेयसमावसन्ति सुखम् ॥१३२॥

काले कल्पशतेऽपि च गते शिवानां न विक्रिया लक्ष्या ।
उत्पातोऽपि यदि स्यात्त्रिलोकसम्भ्रान्तिकरणपटुः ॥१३३॥

निःश्रेयसमधिपन्नास्त्रैलोक्यशिखामणिश्रियं दधते ।
निष्कीटकालिकाच्छविचामीकरभासुरात्मानः ॥१३४॥

पूजार्थाज्ञैश्वर्यैर्बलपरिजनकामभोगभूयिष्ठैः ।
अतिशयितभुवनमद्भुतमभ्युदयं फलति सद्धर्मः ॥१३५॥

श्रावकास्यैकादश प्रतिमा

श्रावकपदानि देवैरेकादश देशितानि येषु खलु ।
स्वगुणाः पूर्वगुणैः सह सतिष्ठन्ते क्रमविवृद्धाः ॥१३६॥

१ दार्शनिक

सम्यग्दर्शनशुद्धः संसारशरीरभोगनिर्विण्णः ।
पञ्चगुरुचरणशरणो दार्शनिकस्तत्त्वपथगृह्यः ॥१३७॥

२ व्रतिक

निरतिक्रमणमणुव्रतपञ्चकमपि शीलसप्तकं चापि ।
धारयते निःशल्यो योऽसौ व्रतिनां मतो व्रतिकः ॥१३८॥

३ सामयिक

चतुरावर्तत्रितयश्चतुः प्रणामस्थितो यथाजातः ।
सामयिको द्वि द्यस्त्रियोगशुद्धि न्ध्यमभिवन्दी ॥१३६॥

४ प्रोषधनियमविधायी

पर्वदिनेषु चतुर्ष्वपि मासे मासे स्वशक्तिमनिगुह्य ।
प्रोषधनियमविधायी प्रणधिपरः प्रोषधानशनः ॥१४०॥

५ सचित्तविरत

मूलफलशाकशाखाशरीरकन्दप्रसूनबीजानि ।
नामानि योऽत्ति सोऽयं सचित्तविरतो दयामूर्तिः ॥१४१॥

६ रात्रिभुक्तित्यागी

अन्नं पानं लेयं नाश्नाति यो विभावर्याम् ।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः ॥१४२॥

७ ब्रह्मचारी

जं मलयोनिं गलन्मलं पूतगन्धिबीभत्सम् ।
पश्यन्नङ्गमनङ्गाद्विरमति यो ब्रह्मचारी सः ॥१४३॥

८ आरम्भत्यागी

सेवाकृ ज्यप्रमुखादारम्भतो व्युपारमति ।
प्राणातिपातहेतोर्योऽसावारम्भविनिवृत्तः ॥१४४॥

९ परिचित्तपरिग्रहत्यागी

बाह्ये षु दशसु वस्तुषु ममत्वमुत्सृज्य निर्ममत्वरतः ।
स्वस्थः सन्तोषपरः परि रिग्रहाद्विरतः ॥१४५॥

१० अनुमतित्यागी

अनुमतिरारम्भे वा परिग्रहे वैहिकेषु कर्मसु वा ।
नास्ति खलु यस्य समधीरनुमतिविरतः स मन्तव्यः ।।१४६।।

११ उत्कृष्ट श्रावक

गृहतो मुनिवनमित्वा गुरूपकण्ठे व्रतानि परिगृह्य ।
भैक्ष्याशनस्तपस्यन्नुत्कृष्टश्चेलखण्डधरः ।।१४७।।

श्रेष्ठज्ञातुर्लक्षणम्

पापमरातिर्धर्मो बन्धुर्जीवस्य चेति निश्चिन्वन् ।
समयं यदि जानीते श्रेयो ज्ञाता ध्रुवं भवति ।।१४८।।

उपसहार

येन स्वयं वीतकलङ्कविद्या दृष्टिः क्रियारत्नकरण्डभावम् ।
नीतस्तमायाति पतीच्छयेव सर्वार्थसिद्धिस्त्रिषु विष्ठपेषु ।।१४९।।

अन्तमङ्गलम्

सुखयतु सुखभूमिः कामिनं कामिनीव
सुतमिव जननी मां शुद्धशीला भुनक्तु ।
कुलमिव गुणभूषा कन्यका संपुनीता-
ज्जिनपतिपदपद्मप्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः ।।१५०।।



धर्मात्माओ के उपदेश एक दृढ लाठी के समान है,
क्योकि जो उनके अनुसार कार्य करते हैं,
उन्हे वे गिरने से बचाते हैं ।

श्रीमदमृतचन्द्रसूरिविरचित:

पुरु ार्थसि द्धु पाय:

तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्तपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥१॥
परमागमस्य बीजं निषिद्धजात्यन्धसिन्धुरविधानम् ।
सकलनयविलसितानां विरोधमथनं नमाम्यनेकान्तम् ॥२॥
लोकत्रयैकनेत्रं निरूप्य परमागमं प्रयत्नेन ।
अस्माभिरुपोद्ध्रियते विदुषां पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम् ॥३॥
मुख्योपचारविवरणनिरस्तदुस्तरविनेयदुर्बोधाः ।
व्यवहारनिश्चयज्ञाः प्रवर्तयन्ते जगति तीर्थम् ॥४॥
निश्चयमिह भूतार्थं व्यवहारं वर्णयन्त्यभूतार्थम् ।
भूतार्थबोधविमुखः प्रायः सर्वोऽपि संसारः ॥५॥
अबुधस्य बोधनार्थं मुनीश्वरा देशयन्त्यभूतार्थम् ।
व्यवहारमेव केवलमवैति यस्तस्य देशना नास्ति ॥६॥
माणवक एव सिंहो यथा भवत्यनवगीतसिंहस्य ।
व्यवहार एव हि तथा निश्चयतां यात्यनिश्चयज्ञस्य ॥७॥
व्यवहारनिश्चयौ यः प्रबुध्य तत्त्वेन भवति मध्यस्थः ।
प्राप्नोति देशनायाः स एव फलमविकलं शिष्यः ॥८॥
अस्ति पुरुषश्चिदात्मा विवर्जितः स्पर्शगन्धरसवर्णैः ।
गुणपर्ययसमवेतः समाहितः समुदयव्ययध्रौव्यैः ॥९॥
परिणममाणो नित्यं ज्ञानविवर्तैरनादिसन्तत्या ।
परिणामानां स्वेषां स भवति कर्त्ता च भोक्ता च ॥१०॥
सर्वविवर्त्तोत्तीर्णं यदा स चैतन्यमचलमाप्नोति ।
भवति तदा कृतकृत्यः सम्यक्पुरुषार्थसिद्धिमापन्नः ॥११॥

जीवकृतं परिणामं निमित्तमात्रं प्रपद्य पुनरन्ये ।
स्वयमेव परिणमन्तेऽत्र पुद्गलाः कर्मभावेन ॥१२॥

परिणममानस्य चितश्चिदात्मकैः स्वयमपि स्वकैर्भावैः ।
भवति हि निमित्तमात्रं पौद्गलिकं कर्म तस्यापि ॥१३॥

एवमयं कर्मकृतैर्भावैरसमाहितोऽपि युक्त इव ।
प्रतिभाति बालिशानां प्रतिभासः स खलु भवबीजम् ॥१४॥

विपरीताभिनिवेशं निरस्य सम्यग्व्यवस्य निजतत्त्वम् ।
यत्तस्मादविचलनं स एव पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम् ॥१५॥

अनुसरतां पदमेतत्करंबिताचारनित्यनिरभिमुखा ।
एकान्तविरतिरूपा भवति मुनीनामलौकिकी वृत्तिः ॥१६॥

बहुशः समस्तविरतिं प्रदर्शितां यो न जातु गृह्णाति ।
तस्यैकदेशविरतिः कथनीयानेन बीजेन ॥१७॥

यो यतिधर्ममकथयन्नुपदिशति गृहस्थधर्ममल्पमतिः ।
तस्य भगवत्प्रवचने प्रदर्शितं निग्रहस्थानम् ॥१८॥

अक्रमकथनेन यतः प्रोत्सहमानोऽतिदूरमपि शिष्यः ।
अपदेऽपि संप्रतृप्तः प्रतारितो भवति तेन दुर्मतिना ॥१९॥

एवं सम्यग्दर्शनबोधचरित्रत्रयात्मको नित्यम् ।
तस्यापि मोक्षमार्गो भवति निषेव्यो यथाशक्ति ॥२०॥

तत्रादौ सम्यक्त्वं समुपाश्रयणीयमखिलयत्नेन ।
तस्मिन्सत्येव यतो भवति ज्ञानं चरित्रं च ॥२१॥

जीवाजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्तव्यम् ।
श्रद्धानं विपरीताऽभिनिवेशविविक्तमात्मरूपं तत् ॥२२॥

सकलमनेकान्तात्मकमिदमुक्तं वस्तुजातमखिलज्ञैः ।
किमु सत्यमसत्यं वा न जातु शङ्केति कर्तव्या ॥२३॥

इह जन्मनि विभवादीनमुत्र चक्रित्वकेशवत्वादीन् ।
एकान्तवाददूषितपरसमयानपि च नाकांक्षेत् ॥२४॥

क्षुत्तृष्णाशीतोष्णप्रभृतिषु नानाविधेषु भावेषु ।
द्रव्येषु पुरीषादिषु विचिकित्सा नैव करणीया ॥२५॥

श्रीमदमृतचन्द्रसूरिविरचितः

पुरु ार्थसि द्ध् ुपायः

तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्तपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ॥१॥
परमागमस्य बीजं निषिद्धजात्यन्धसिन्धुरविधानम् ।
सकलनयविलसितानां विरोधमथनं नमाम्यनेकान्तम् ॥२॥
लोकत्रयैकनेत्रं निरूप्य परमागमं प्रयत्नेन ।
अस्माभिरुपोद्ध्रियते विदुषां पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम् ॥३॥
मुख्योपचारविवरणनिरस्तदुस्तरविनेयदुर्बोधाः ।
व्यवहारनिश्चयज्ञाः प्रवर्तयन्ते जगति तीर्थम् ॥४॥
निश्चयमिह भूतार्थं व्यवहारं वर्णयन्त्यभूतार्थम् ।
भूतार्थबोधविमुखः प्रायः सर्वोऽपि संसारः ॥५॥
अबुधस्य बोधनार्थं मुनीश्वरा देशयन्त्यभूतार्थम् ।
व्यवहारमेव केवलमवैति यस्तस्य देशना नास्ति ॥६॥
माणवक एव सिंहो यथा भवत्यनवगीतसिंहस्य ।
व्यवहार एव हि तथा निश्चयतां यात्यनिश्चयज्ञस्य ॥७॥
व्यवहारनिश्चयौ यः प्रबुध्य तत्त्वेन भवति मध्यस्थः ।
प्राप्नोति देशनायाः स एव फलमविकलं शिष्यः ॥८॥
अस्ति पुरुषश्चिदात्मा विवर्जितः स्पर्शगन्धरसवर्णैः ।
गुणपर्ययसमवेतः समाहितः समुदयव्ययध्रौव्यैः ॥९॥
परिणममाणो नित्यं ज्ञानविवर्तैरनादिसन्तत्या ।
परिणामाना स्वेषां स भवति कर्त्ता च भोक्ता च ॥१०॥
सर्वविवर्त्तोत्तीर्णं यदा स चैतन्यमचलमाप्नोति ।
भवति तदा कृतकृत्यः सम्यक्पुरुषार्थसिद्धिमापन्नः ॥११॥

जीवकृतं परिणामं निमित्तमात्रं प्रपद्य पुनरन्ये ।
स्वयमेव परिणमन्तेऽत्र पुद्गलाः कर्मभावेन ।।१२।।

परिणममानस्य चितश्चिदात्मकैः स्वयमपि स्वकैर्भावैः ।
भवति हि निमित्तमात्रं पौद्गलिकं कर्म तस्यापि ।।१३।।

एवमयं कर्मकृतैर्भावैरसमाहितोऽपि युक्त इव ।
प्रतिभाति बालिशानां प्रतिभासः स खलु भवबीजम् ।।१४।।

विपरीताभिनिवेशं निरस्य सम्यग्व्यवस्य निजतत्त्वम् ।
यत्तस्मादविचलनं स एव पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽयम् ।।१५।।

अनुसरतां पदमेतत्करंबिताचारनित्यनिरभिमुखा ।
एकान्तविरतिरूपा भवति मुनीनामलौकिकी वृत्तिः ।।१६।।

बहुशः समस्तविरतिं प्रदर्शितां यो न जातु गृह्णाति ।
तस्यैकदेशविरतिः कथनीयानेन बीजेन ।।१७।।

यो यतिधर्ममकथयन्नुपदिशति गृहस्थधर्ममल्पमतिः ।
तस्य भगवत्प्रवचने प्रदर्शितं निग्रहस्थानम् ।।१८।।

अक्रमकथनेन यतः प्रोत्सहमानोऽतिदूरमपि शिष्यः ।
अपदेऽपि संप्रतृप्तः प्रतारितो भवति तेन दुर्मतिना ।।१९।।

एवं सम्यग्दर्शनबोधचरित्रत्रयात्मको नित्यम् ।
तस्यापि मोक्षमार्गो भवति निषेव्यो यथाशक्ति ।।२०।।

तत्रादौ सम्यक्त्वं समुपाश्रयणीयमखिलयत्नेन ।
तस्मिन्सत्येव यतो भवति ज्ञानं चरित्रं च ।।२१।।

जीवाजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्तव्यम् ।
श्रद्धानं विपरीताऽभिनिवेशविविक्तमात्मरूपं तत् ।।२२।।

सकलमनेकान्तात्मकमिदमुक्तं वस्तुजातमखिलज्ञैः ।
किमु सत्यमसत्यं वा न जातु शङ्केति कर्तव्या ।।२३।।

इह जन्मनि विभवादीनमुत्र चक्रित्वकेशवत्वादीन् ।
एकान्तवाददूषितपरसमयानपि च नाकांक्षेत् ।।२४।।

क्षुत्तृष्णाशीतोष्णप्रभृतिषु नानाविधेषु भावेषु ।
द्रव्येषु पुरीषादिषु विचिकित्सा नैव करणीया ।।२५।।

लोके शास्त्राभासे याभासे च देवताभासे ।
नित्यमपि तत्त्वरुचिना कर्तव्यममूढ़दृष्टित्व ॥२६॥
धर्मोऽभिवर्द्धनीयः त्मनो मार्दवादिभावनया ।
परदोषनिगूहनमपि विधेयमुपबृंहणगुणार्थम् ॥२७॥
कामक्रोधमदादिषु चलयितुमुदितेषु वर्त्मनो न्यायात् ।
श्रुतमात्मनः परस्य च युक्त्वा स्थितिकरणमपि कार्यम् ॥२८॥
अनवरतमहिंसायां शिवसुखलक्ष्मीनिबन्धने ।
षि च सधर्मिषु परमं वात्सल्यमालम्ब्यम् ॥२९॥
आत्मा प्रभावनीयो रत्नत्रयतेजसा तमेव ।
दानतपोजिनपूजाविद्यातिशयैश्च जिनधर्मः ॥३०॥
इत्याश्रितसम्यक्त्वैः सम्यग्ज्ञानं निरूप्य यत्नेन ।
आम्नाययुक्तियोगैः समुपास्यं नित्यमात्महितैः ॥३१॥
पृथगाराधनमिष्टं दर्शनसहभाविनोऽपि बोधस्य ।
लक्षणभेदेन यतो नानात्वं सम्भवत्यनयोः ॥३२॥
सम्यग्ज्ञानं कार्यं त्वं कारणं वदन्ति जिनाः ।
ज्ञानाराधनमिष्टं सम्यक्त्वानन्तरं तस्मात् ॥३३॥
कारणकार्यविधानं समकालं जायमानयोरपि हि ।
दीपप्रकाशयोरिव सम्यक्त्वज्ञानयोः सुघटम् ॥३४॥
कर्तव्योऽध्यवसायः सदनेकान्तात्मकेषु तत्त्वेषु ।
सं विपर्ययानध्यवसायविविक्तमात्मरूपं तत् ॥३५॥
ग्रंथोर्थोभयपूर्णं काले विनयेन सोपधानं च ।
बहुमानेन समन्वितमनिह्नवं ज्ञानमाराध ॥३६॥
विगलितदर्शनमोहैः समंजसज्ञानविदिततत्त्वार्थैः ।
नित्यमपि निःप्रकम्पैः सम्यक् चारित्रमालम्ब्यम् ॥३७॥
न हि सम्यग्व्यपदेशं चरित्रमज्ञानपूर्वकं लभते ।
ज्ञानानन्तरमुक्तं चारित्राराधनं तस्मात् ॥३८॥

चारित्रं भवति यतः समस्तसावद्ययोगपरिहरणात् ।
सकलकषायविमुक्तं विशदमुदासीनमात्मरूपं तत् ।।३९।।
हिंसातोऽनृतवचनात्स्तेयादब्रह्मतः परिग्रहतः ।
कात्स्न्यैंकदेशविरतेश्चारित्रं जायते द्विविधम् ।।४०।।
निरतः कात्स्न्यंनिवृत्तौ भवति यतिः समयसार भूतोऽयम् ।
या त्वेकदेश-विरतिर्निरतस्तस्यामुपासको भवति ।।४१।।
आत्मपरिणामहिंसनहेतुत्वात्सर्वमेव हिंसैतत् ।
अनृतवचनादिकेवलमुदाहृतं शिष्यबोधाय ।।४२।।
यत्खलु कषाय योगात्प्राणानां द्रव्यभावरूपाणाम् ।
व्यपरोपणस्य करणं सुनिश्चिता भवति सा हिंसा ।।४३।।
अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति ।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः ।।४४।।
युक्ताचरणस्य ो रागाद्यावेशमन्तरेणापि ।
न हि भवति जातु हिसा प्राणव्यपरोपणादेव ।।४५।।
व्युथानावस्थायां रागादीना वशप्रवृत्तायाम् ।
म्रियतां जीवो मा वा धावत्यग्रे ध्रुव हिंसा ।।४६।।
यस्मात यः हन्त्यात्मा प्रथममात्मनात्मानम् ।
पश्चाज्जायेत न वा हिंसा प्राण्यन्तराणं तु ।।४७।।
हिंसाया अविरमणं हिंसा परिणमनमपि भवति हिंसा ।
तस्मात्प्रमत्तयोगे प्राणव्यपरोपणं नित्यम् ।।४८।।
सूक्ष्मापि न खलु हिंसा परवस्तुनिबन्धना भवति पुंसः ।
हिंसायतननिवृत्तिः परिणामविशुद्धये तदपि कार्या ।।४९।।
निश्चयमबुध्यमानो यो निश्चयतस्तमेव संश्रयते ।
नाशयति करणचरणं स बहिः करणालसो बालः ।।५०।।
अविधायापि हि हिंसा हिंसाफलभाजनं भवत्येकः ।
कृत्वाप्यपरो हिंसां हिंसाफलभाजनं न स्यात् ।।५१।।

एकस्याल्पा हिंसा ददाति काले फलमनल्पम् ।
अन्यस्य महाहिंसा स्वल्पफला भवति परिपाके ॥५२॥
एकस्य सैव तीव्रं दिशति फलं सैव मन्दमन्यस्य ।
व्रजति सहकारिणोरपि हिंसा वैचित्र्यमत्र फलकाले ॥५३॥
प्रागेव फलति हिंसा क्रियमाणा फलति फलति च कृतापि ।
आरभ्य कर्तुमकृताऽपि फलति हिंसानुभावेन ॥५४॥
एकः करोति हिंसां भवन्ति फलभागिनो बहवः ।
बहवो विदधति हिंसां हिंसाफलभुग्भवत्येकः ॥५५॥
कस्यापि दिशति हिंसा हिंसाफलमेकमेव फलकाले ।
अन्यस्य सैव हिंसा दिशत्यहिंसाफलं विपुलम् ॥५६॥
हिंसाफलमपरस्य तु ददात्यहिंसा तु परिणामे ।
इतरस्य पुनर्हिंसा दिशत्यहिंसाफलं नान्यत् ॥५७॥
इति विविधभङ्गगहने सुदुस्तरे मार्ग.. ष्टीनाम् ।
गुरवो भवन्ति शरणं प्रबुद्धनयच ञ्चाराः ॥५८॥
अत्यन्त नि धारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम् ।
यति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम् ॥५९॥
ध्य हिंस्यहिंसकहिंसाहिंसाफलानि तत्त्वेन ।
नित्यमवगूहमानैर्निजशक्त्या त्यज्यतां हिंसा ॥६०॥
मद्यं मांसं क्षौद्रं पञ्चोदुम्बरफलानि यत्नेन ।
हिंसाव्युपरतिकामैर्मोक्तव्यानि प्रथममेव ॥६१॥
मद्यं मोहयति मनो मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मम् ।
विस्मृतधर्मा जीवो हिंसामविशङ्कमाचरति ॥६२॥
रसजानां च बहूनां जीवानां योनिरिष्यते मद्यम् ।
मद्यं भजतां तेषा हिंसा संजायतेऽवश्यम् ॥६३॥
अभिमानभयजुगुप्साहास्यारतिशोककामकोपाद्याः ।
हिंसायाः पर्यायाः सर्वेऽपि च सरकसन्निहिताः ॥६४॥

न विना प्राणिविघातान्मांसस्योत्पत्तिरिष्यते यस्मात् ।
मांसं भजतस्तस्मात्प्रसरत्यनिवारिता हिंसा ॥६५॥
यदपि किल भवति मांसं स्वयमेव मृतस्य महिषवृषभादेः ।
तत्रापि भवति हिंसा तदाश्रित निगोदनिर्मथनात् ॥६६॥
आमास्वपि पक्वास्वपि विपच्यमानासु मांसपेशीषु ।
सातत्येनोत्पादस्तज्जातीनां निगोतानाम् ॥६७॥
आमां वा पक्वां वा खादति यः स्पृशति वा पिशितपेशीम् ।
स निहन्ति सततनिचितं पिण्डं बहुजीवकोटीनाम् ॥६८॥
मधुशकलमपि प्रायो मधुकरहिंसात्मकं भवति लोके ।
भजति मधु ्र श्रीको यः स भवति हिंसकोऽत्यन्तम् ॥६९॥
स्वयमेव विगलितं यो गृह्णीयाद्वा छलेन मधुगोलात् ।
तत्रापि भवति हिंसा तदाश्रयप्राणिनां घातात् ॥७०॥
मधु मद्यं नवनीतं पिशितं च महाविकृतयस्ताः ।
वल्भ्यन्ते न व्रतिना तद्वर्णा जन्तवस्तत्र ॥७१॥
योनिरुदुम्बरयुग्मं प्लक्षन्यग्रोधपिप्पलफलानि ।
त्रसजीवानां तस्मात्तेषां तद्भक्षणे हिंसा ॥७२॥
यानि तु पुनर्भवेयुः कालोच्छिन्नत्रसानि शुष्काणि ।
भजतस्तान्यपि हिंसा विशिष्टरागादिरूपा स्यात् ॥७३॥
अष्टावनिष्टदुस्तरदुरिता यतनान्यमूनि परिवर्ज्य ।
जिनधर्मदेशनाया भवन्ति पात्राणि शुद्धधियः ॥७४॥
धर्ममहिंसारूपं संशृण्वन्तोऽपि ये परित्यक्तुम् ।
स्थावरहिंसामसहास्त्रसहिंसा तेऽपि मुञ्चन्तु ॥७५॥
कृतकारितानुमननैर्वाक्कायमनोभिरिष्यते नवधा ।
औत्सर्गिकी निवृत्तिर्विचित्ररूपापवादिकी त्वेषा ॥७६॥
स्तोकैकेन्द्रियघाताद् गृहिणां सम्पन्नयोग्यविषयाणाम् ।
शेषस्थावरमारणविरमणमपि भवति करणीयम् ॥७७॥

अमृतत्वहेतुभूतं परममहिंसारसायनं लब्ध्वा ।
अवलोक्य बालिशानामसमञ्जसमाकुलैर्न भवितव्यम् ।।७८।।
सूक्ष्मो भगवान् धर्मो धर्मार्थं हिंसने न दोषोऽस्ति ।
इति धर्ममुग्धहृदयैर्न जातु भूत्वा शरीरिणो हिंस्याः ।।७९।।
धर्मो हि देवताभ्यः प्रभवति ताभ्यः प्रदेयमिव सर्वम् ।
इति दुर्विवेककलितां धिषणां न प्राप्य देहिनो हिंस्याः।।८०।।
पूज्यनिमित्तं घाते छागादीनां न कोऽपि दोषोऽस्ति ।
इति संप्रधार्य कार्यं नाऽतिथये सत्त्वसंज्ञपनम् ।।८१।।
बहुसत्त्वघातजनितादशनाद्वरमेकसत्त्वघातोत्थम् ।
इत्याकलय्य कार्यं न महासत्त्वस्य हिंसनं जातु ।।८२।।
रक्षा भवति बहूनामेकस्यैवास्य जीवहरणेन ।
इति मत्वा कर्तव्यं न हिंसनं हिंस्रसत्त्वानाम् ।।८३।।
बहुसत्त्व घातिनोऽमी जीवन्त उपार्जयन्ति गुरुपापम् ।
इत्यनुकम्पां कृत्वा न हिंसनीया- शरीरिणो हिंस्राः ।।८४।।
बहुदुःखाः संज्ञपिताः प्रयान्ति त्वचिरेण दुःखविच्छित्तिम् ।
इति वासनाकृपाणीमादाय न दुःखिनोऽपि हन्तव्याः।।८५।।
कृच्छ्रेण सुखावाप्तिर्भवन्ति सुखिनो हताः सुखिन एव ।
इति तर्कमण्डलाग्रः सुखिनां घाताय नादेयः ।।८६।।
उपलब्धिसुगति ।धनसमाधिसारस्य भूयसोऽभ्यासात् ।
स्वगुरोः शिष्येण शिरो न कर्तनीयं सुधर्ममभिलषता ।।८७।।
धनलवपिपासितानां विनेयविश्वासनाय दर्शयताम् ।
झटिति घटचटकमोक्षं श्रद्धेयं नैव खारपटिकानाम् ।।८८।।
दृष्ट्वा परं पुरस्तादशनाय क्षामकुक्षिमायान्तम् ।
निजमांसदानरभसादालभनीयो न चात्मापि ।।८९।।
को नाम विशति मोहं नयभङ्गविशारदानुपास्य गुरून् ।
विदितजिनमतरहस्यः श्रयन्नहिंसां विशुद्धमतिः ।।९०।।

यदिदं प्रमादयोगादसदभिधानं विधीयते किमपि ।
तदनृतमपि विज्ञेयं तद्भेदाः सन्ति चत्वारः ॥९१॥
स्वक्षेत्रकालभावैः सदपि हि यस्मिन्निषिध्यते वस्तु ।
तत्प्रथममसत्यं स्यान्नास्ति यथा देवदत्तोऽत्र ॥९२॥
असदपि हि वस्तुरूपं यत्र परक्षेत्रकालभावैस्तैः ।
उद्भाव्यते द्वितीय तदनृतमस्मिन्यथास्ति घटः ॥९३॥
वस्तु सदपि स्वरूपात्पररूपेणाभिधीयते यस्मिन् ।
अनृतमिदं च तृतीयं विज्ञेयं गौरिति यथाश्वः ॥९४॥
गर्हितमवद्यसयुतमप्रियमपि भवति वचनरूपं यत् ।
सामान्येन त्रेधा मतमिदमनृतं तुरीयं तु ॥९५॥
पैशुन्यहासगर्भं कर्कशमसमञ्जस प्रलपितं च ।
अन्यदपि यदुत्सूत्रं तत्सर्वं गर्हित गदितम् ॥९६॥
छेदनभेदनमारणकर्षणवाणिज्यचौर्यवचनादि ।
तत्सावद्यं यस्मात्प्राणिवधाद्याः प्रवर्तन्ते ॥९७॥
अरतिकरं भीतिकर खेदकर वैरशोककलहकरम् ।
यदपरमपि तापकरं परस्य तत्सर्वमप्रियं ज्ञेयम् ॥९८॥
सर्वस्मिन्नप्यस्मिन् प्रमत्तयोगैकहेतुकथनं यत् ।
अनृतवचनेऽपि तस्मान्नियत हिंसा समवसरति ॥९९॥
हेतौ प्रमत्तयोगे निर्दिष्टे सकलवितथवचनानाम् ।
हेयानुष्ठानादेरनुवदन भवति नासत्यम् ॥१००॥
भोगोपभोगसाधनमात्रं सावद्यमक्षमा मोक्तुम् ।
ये तेऽपि शेषमनृतं समस्तमपि नित्यमेव मुञ्चन्तु ॥१०१॥
अवितीर्णस्य ग्रहणं परिग्रहस्य प्रमत्तयोगाद्यत् ।
तत्प्रत्येयं स्तेयं सैव च हिंसा वधस्य हेतुत्वात् ॥१०२॥
अर्था नाम य एते प्राणा एते बहिश्चराः पुंसाम् ।
हरति स तस्य प्राणान् यो यस्य जनो हरत्यर्थान् ॥१०३॥

हिंसायाः स्तेयस्य च नाव्याप्तिः सुघट एव सा यस्मात् ।
ग्रहणे प्रमत्तयोगो द्रव्यस्य स्वीकृतस्यान्यैः ॥१०४॥
नातिव्याप्तिश्च तयोः प्रमत्तयोगैककारणविरोधात् ।
अपि कर्मानुग्रहणे नीरागाणामविद्यमानत्वात् ॥१०५॥
असमर्था ये कर्तुं निपानतोयादिहरणविनिवृत्तिम् ।
तैरपि समस्तमपरं नित्यमदत्तं परित्याज्यम् ॥१०६॥
यद्वेदरागयोगान्मैथुनमभिधीयते तदब्रह्म ।
अवतरति तत्र हिंसा वधस्य सर्वत्र सद्भावात् ॥१०७॥
हिंस्यन्ते तिलनाल्या तप्तायसि विनिहिते तिला यद्वत् ।
बहवो जीवा योनौ हिंस्यन्ते मैथुने तद्वत् ॥१०८॥
यदपि क्रियते किंचिन्मदनोद्रेकादनङ्गरमणादि ।
तत्रापि भवति हिंसा रागाद्युत्पत्ति तन्त्रत्वात् ॥१०९॥
ये निज कलत्रमात्रं परिहर्तुं शक्नुवन्ति न हि मोहात् ।
निःशेषशेषयोषिन्निषेवणं तैरपि न कार्यम् ॥११०॥
या मूर्च्छा नामेयं विज्ञातव्य. परिग्रहो ह्येषः ।
मोहोदयादुदीर्णो मूर्च्छा तु ममत्वपरिणामः ॥१११॥
मूर्च्छालक्षणकरणात्सुघटा व्याप्तिः परिग्रहत्वस्य ।
सग्रन्थो मूर्च्छावान् विनापि किल शेषसंगेभ्यः ॥११२॥
यद्येवं भवति तदा परिग्रहो न खलु कोऽपि बहिरङ्गः ।
भवति नितरां यतोऽसौ धत्ते मूर्च्छानिमित्तत्वम् ॥११३॥
एवमतिव्याप्तिः स्यात्परिग्रहस्येति चेद्भवेन्नैवम् ।
यस्मादकषायाणां कर्मग्रहणे न मूर्च्छास्ति ॥११४॥
अति संक्षेपाद् द्विविधः स भवेदाभ्यन्तरश्च बाह्यश्च ।
प्रथमश्चतुर्दशविधो भवति द्विविधो द्वितीयस्तु ॥११५॥
मिथ्यात्ववेदरागास्तथैव हास्यादयश्च षड्दोषाः ।
चत्वारश्च क ाश्चतुर्दशाभ्यन्तरा ग्रन्थाः ॥११६॥

अथ निश्चित्तसचित्तौ बाह्यस्य परिग्रहस्य भेदौ द्वौ ।
नैषः कदापि सङ्गः सर्वोऽप्यतिवर्तते हिंसा ॥११७॥
उभयपरिग्रहवर्जनमाचार्याः सूचयन्त्यहिंसेति ।
द्विविधपरिग्रहवहनं हिंसेति जिनप्रवचनज्ञाः ॥११८॥
हिंसा पर्यायत्वात्सिद्धा हिंसान्तरङ्गसङ्गेषु ।
बहिरङ्गेषु तु नियतं प्रयातु मूर्च्छैव हिंसात्वम् ॥११९॥
एवं न विशेषः स्यादुन्दररिपुहरिणशावकादीनाम् ।
नैवं भवति विशेषस्तेषां मूर्च्छाविशेषेण ॥१२०॥
हरित तृणाङ्कुर चारिणि मन्दा मृगशावके
भवति मूर्च्छा ।
उन्दरनिकरोन्माथिनि मार्जारे सैव जायते तीव्रा ॥१२१॥
निर्बाधं संसिद्ध्येत्कार्यविशेषो हि कारणविशेषात् ।
औषधस्य खण्डयोरिव माधुर्यं प्रीतिभेद इव ॥१२२॥
माधुर्यप्रीतिः किल दुग्धे मन्दैव मन्दमाधुर्ये ।
सैवोत्कटमाधुर्ये खण्डे व्यपदिश्यते तीव्रा ॥१२३॥
तत्वार्थाऽश्रद्धाने निर्युक्तं प्रथममेव मिथ्यात्वम् ।
सम्यग्दर्शनचौराः प्रथमकषायाश्च चत्वारः ॥१२४॥
प्रविहाय च द्वितीयान् देशचरित्रस्य सम्मुखायाताः ।
नियतं ते हि कषाया देशचरित्रं निरुध्यन्ति ॥१२५॥
निजशक्त्या शेषाणां सर्वेषामन्तरङ्गसंगानाम् ।
कर्तव्यः परिहारो मार्दवशौचादिभावनया ॥१२६॥
बहिरङ्गादपि सगाद्यस्मात्प्रभवत्यसंयमोऽनुचितः ।
परिवर्जयेदशेषं तमचित्तं वा सचित्तं वा ॥१२७॥
योऽपि न शक्तस्त्युक्तुं धनधान्यमनुष्यवास्तुवित्तादि ।
सोऽपि तनूकरणीयो निवृत्तिरूपं यतस्तत्त्वम् ॥१२८॥

रात्रौ भुञ्जानानां यस्मादनिवारिता भवति हिंसा ।
हिंसाविरतैस्तस्मात्त्यक्तव्या रात्रिभुक्तिरपि ।।१२९।।
रागाद्युदयपरत्वादनिवृत्तिर्नातिवर्तते हिंसाम् ।
रात्रिं दिवमाहरतः कथं हि हिंसा न सम्भवति ? ।।१३०।।
यद्येवं तर्हि दिवा कर्तव्यो भोजनस्य परिहारः ।
भोक्तव्यं तु निशायां नेत्थं नित्यं भवति हिंसा ।।१३१।।
नैवं वासरभुक्तेर्भवति हि रागोऽधिको रजनिभुक्तौ ।
अन्नकवलस्य भुक्तेः भुक्ताविव मांसकवलस्य ।।१३२।।
अर्कालोकेन विना भुञ्जानः परिहरेत्कथं हिंसाम् ।
अपि बोधितः प्रदीपे भोज्यजुषां सूक्ष्मजन्तूनाम् ।।१३३।।
किं वा बहुप्रलपितैरिति सिद्धं यो मनोवचनकायैः ।
परिहरति रात्रिभुक्तिं सततमहिंसां स पालयति ।।१३४।।
इत्यत्र त्रितयात्मनि मार्गे मोक्षस्य ये स्वहितकामा ।
अनुपरतं प्रयतन्ते प्रयान्ति ते मुक्तिमचिरेण ।।१३५।।
परिधय इव नगराणि व्रतानि किल पालयन्ति शीलानि ।
पालनाय तस्माच्छीलान्यपि पालनीयानि ।।१३६।।
प्रविधाय सुप्रसिद्धैर्मर्यादां सर्वतोऽप्यभिज्ञानैः ।
प्राच्यादिभ्यो दिग्भ्यः कर्तव्या विरतिरविचलिता ।।१३७।।
इति नियमितदिग्भागे प्रवर्तते यो बहिस्तस्याः ।
सकलासंयमविरहाद्भवत्यहिंसाव्रतं पूर्णम् ।।१३८।।
तत्रापि च परिमाणं ग्रामापणभवनपाटकादीनाम् ।
प्रविधाय नियतकालं करणीयं विरमणं देशात् ।।१३९।।
इति विरतौ बहुदेशात्तदुत्थहिंसाविशेषपरिहारात् ।
तत्कालं विमलमतिः श्रयत्यहिंसां विशेषेण ।।१४०।।
पापर्द्धिजयपराजयसंगरपरदारगमनचौर्याद्याः ।
न कदाचनापि चिन्त्याः पापफलं केवलं यस्मात् ।।१४१।।

विद्यावाणिज्यमषीकृषिसेवाशिल्पजीविनां पुंसाम् ।
पापोपदेशदानं कदाचिदपि नैव वक्तव्यम् ॥१४२॥
भूखननवृक्षमोटनशाड्वलदलनाम्बुसेचनादीनि ।
निःकारणं न कुर्याद्दलफलकुसुमोच्चयानपि च ॥१४३॥
असिधेनुविषहुताशनलाङ्गलकरवालकार्मुकादीनाम् ।
वितरणमुपकरणानां हिंसायाः परिहरेद्यत्नात् ॥१४४॥
रागादिवर्धनानां दुष्टकथानामबोधबहुलानाम् ।
न कदाचन कुर्वीत श्रवणार्जनशिक्षणादीनि ॥१४५॥
सर्वानर्थप्रथमं मथनं शौचस्य सद्म मायायाः ।
दूरात्परिहरणीयं चौर्यासत्यास्पदं द्यूतम् ॥१४६॥
एवं विधमपरमपि ज्ञात्वा मुञ्चत्यनर्थदण्डं यः ।
तस्यानिशमनवद्यं विजयमहिंसाव्रतं लभते ॥१४७॥
रागद्वेषत्यागान्निखिलद्रव्येषु साम्यमवलम्ब्य ।
तत्त्वोपलब्धिमूलं बहुशः सामायिकं कार्यम् ॥१४८॥
रजनीदिवयोरन्ते तदवश्यं भावनीयमविचलितम् ।
इतरत्र पुनः समये न कृतं दोषाय तद्गुणाय कृतम् ॥१४९॥
सामायिकश्रितानां समस्तसावद्ययोगपरिहारात् ।
भवति महाव्रतमेषामुदयेऽपि चरित्रमोहस्य ॥१५०॥
सामयिकसंस्कारं प्रतिदिनमारोपितं स्थिरीकर्तुम् ।
पक्षार्धयोर्द्वयोरपि कर्तव्योऽवश्यमुपवासः ॥१५१॥
मुक्तसमस्तारम्भः प्रोषधदिनपूर्ववासरस्यार्धे ।
उपवासं गृह्णीयान्ममत्वमपहाय देहादौ ॥१५२॥
श्रित्वा विविक्तवसतिं समस्तसावद्ययोगमपनीय ।
सर्वेन्द्रियार्थविरतः कायमनोवचनगुप्तिभिस्तिष्ठेत् ॥१५३॥
धर्मध्यानाशक्तो वासरमतिवाह्य विहितसान्ध्यविधिः ।
शुचि संस्तरे त्रियामां गमयेत्स्वाध्याय जितनिद्रः ॥१५४॥

विधिना दातृगुणवता द्रव्यविशेषस्य जातरूपाय।
स्वपरानुग्रहहेतोः कर्त्तव्योऽवश्यमतिथये भागः ॥१६७॥
संग्रहमुच्चस्थानं पादोदकमर्चनं प्रणामं च।
वाक्कायमनःशुद्धिरेषणशुद्धिश्च विधिमाहुः ॥१६८॥
ऐहिकफलानपेक्षा क्षान्तिर्निष्कपटतानसूयत्वम्।
अविषादित्वमुदित्वे निरहङ्कारित्वमिति हि दातृगुणाः ॥१६९॥
रागद्वेषाऽसंयममदुःखभयादिकं न यत्कुरुते।
द्रव्य तदेव देयं सुतपःस्वाध्यायवृद्धिकरम् ॥१७०॥
पात्रं त्रिभेदमुक्तं संयोगो मोक्षकारणगुणानाम्।
अविरतसम्यग्दृष्टिर्विरताविरतश्च सकलविरतश्च ॥१७१॥
हिंसायाः पर्यायो लोभोऽत्र निरस्यते यतो दाने।
तस्मादतिथिवितरणं हिंसाव्युपरमणमेवेष्टम् ॥१७२॥
गृहमागताय गुणिने मधुकरवृत्या परान्नपीडयते।
वितरति यो नाऽतिथये स कथं न हि लोभवान् भवति ॥१७३॥
कृतमात्मार्थं मुनये ददाति भक्तिमिति भावितस्त्यागः।
अरतिविषादविमुक्तः शिथिलितलोभो भवत्यहिंसैव ॥१७४॥
इयमेकैव समर्था धर्मस्वं मे मया समं नेतुम्।
सततमिति भावनीया पश्चिमसल्लेखना भक्त्या ॥१७५॥
मरणान्तेऽवश्यमहं विधिना सल्लेखनां करिष्यामि।
इति भावनापरिणतो नागतमपि पालयेदिदं शीलम् ॥१७६॥
मरणेऽवश्यं भाविनि कषायसल्लेखनातनूकरणमात्रे।
रागादिमन्तरेण व्याप्रियमाणस्य नात्मघातोऽस्ति ॥१७७॥
कषायाविष्टः कुम्भकजलधूमकेतुविषशस्त्रैः।
[illegible]यति प्राणान् तस्य स्यात्सत्यमात्मवधः ॥१७८॥

नीयन्तेऽत्र कषाया हिंसाया हेतवो यतस्तनुताम् ।
सल्लेखनामपि ततः प्राहुरहिंसा प्रसिद्ध्यर्थम् ॥१७९॥

इति यो रक्षार्थं सततं पालयति सकलशीलानि ।
वरयति पतिं वरेव स्वयमेव तमुत्सुका शिवपदश्रीः ॥१८०॥

अतिचाराः सम्यक्त्वे व्रतेषु शीलेषु पञ्चपञ्चेति ।
सप्ततिरमी यथोदितशुद्धिप्रतिबन्धिनो हेयाः ॥१८१॥

शङ्का तथैव कांक्षा विचिकित्सा संस्तवोऽन्यदृष्टीनाम् ।
मनसा च तत्प्रशंसा सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥१८२॥

छेदनताडनबन्धा भारस्यारोपणं समधिकस्य ।
पानान्नयोश्च रोधः पञ्चाऽहिंसा स्येति ॥१८३॥

मिथ्योपदेशदानं रहसोऽभ्याख्यानकूटलेखकृती ।
न्यासापहारवचनं साकारकमन्त्रभेदश्च ॥१८४॥

प्रतिरूपव्यवहारः स्तेननियोगस्तदाहृतादानम् ।
राजविरोधातिक्रमहीनाधिकमानकरणे च ॥१८५॥

स्मरतीव्राभिनिवेशानङ्गक्रीडान्यपरिणमनकरणम् ।
अपरिगृहीतेतरयोर्गमने चेत्वरिकयोः पञ्च ॥१८६॥

वास्तु-क्षेत्राष्टापद-हिरण्य-धनधान्य-दासदासीनाम् ।
कुप्यस्य भेदयोरपि परिणामाति ः पञ्च ॥१८७॥

ऊर्ध्वमधस्तात्तिर्यग्व्यतिक्रमाः क्षेत्रवृद्धिराधानम् ।
स्मृत्यन्तरस्य गदिताः पञ्चेति प्रथमशीलस्य ॥१८८॥

प्रेष्यस्य संप्रयोजनमानयनं शब्दरूपविनिपातौ ।
क्षेपोऽपि पुद्गलानां द्विती ीलस्य पञ्चेति ॥१८९॥

कन्दर्पः कौत्कुच्यं भोगानर्थक्यमपि च मौखर्य्यम् ।
असमीक्षिताधिकरणं तृतीयशीलस्य पञ्चेति ॥१९०॥

वचनमनःकायानां दुःप्रणिधानं त्वनादरश्चैव ।
स्मृत्यनुपस्थानयुताः पञ्चेति चतुर्थशीलस्य ॥१९१॥

अनवेक्षिताप्रमार्जितमादानं संस्तरस्तथोत्सर्गः ।
स्मृत्यनुपस्थानमनादरश्च पञ्चोपवासस्य ॥१९२॥

आहारो हि सचित्तः सचित्तमिश्रः सचित्तसम्बन्धः ।
दुःपक्वोऽभिषवोऽपि च पञ्चामी षष्टशीलस्य ॥१९३॥

परदातृव्यपदेशः सचित्तनिक्षेपतत्पिधाने च ।
कालस्यातिक्रमणं मात्सर्यं चेत्यतिथिदाने ॥१९४॥

जीवितमरणाशंसे सुहृदनुरागः सुखानुबन्धश्च ।
सनिदानः पञ्चैते भवन्ति सल्लेखनाकाले ॥१९५॥

इत्येतानतिचारानपरानपि संप्रतर्क्य परिवर्ज्य ।
सम्यक्त्व तशीलैरमलैः पुरुषार्थसिद्धिमेत्यचिरात् ॥१९६॥

चारित्रान्तर्भावात् तपोऽपि मोक्षाङ्गमागमे गदितम् ।
अनिगूहित निजवीर्यैस्तदपि निषेव्यं समाहितस्वान्तैः ॥१९७॥

अनशनमवमौदर्यं विविक्तशय्यासनं रसत्यागः ।
कायक्लेशो वृत्तेः संख्या च निषेव्यमिति तपो बाह्यम् ॥१९८॥

विनयो वैयावृत्त्यं प्रायश्चित्त तथैव चोत्सर्गः ।
स्वाध्यायोऽथ ध्यानं भवति निषेव्यं तपोऽन्तरङ्गमिति ॥१९९॥

जिनपुङ्गवप्रवचने मुनीश्वराणां यदुक्तमाचरणम् ।
सुनिरूप्य निजां पदवीं शक्तिं च निषेव्यमेतदपि ॥२००॥

इदमावश्यकषट्कं समतास्तववन्दनाप्रतिक्रमणम् ।
प्रत्याख्यानं वपुषो व्युत्सर्गश्चेति कर्तव्यम् ॥२०१॥

सम्यग्दण्डो वपुषः सम्यग्दण्डस्तथा च वचनस्य ।
मनसः सम्यग्दण्डो गुप्तित्रितयं समनुगम्यम् ॥२०२॥

नीयन्तेऽत्र कषाया हिंसाया हेतवो यतस्तनुताम् ।
सल्लेखनामपि ततः प्राहुरहिंसा प्रसिद्ध्यर्थम् ।।१७९।।

इति यो रक्षार्थं सततं पालयति सकलशीलानि ।
वरयति पतिं वरेव स्वयमेव तमुत्सुका शिवपदश्रीः ।।१८०।।

अतिचाराः सम्यक्त्वे व्रतेषु शीलेषु पञ्चपञ्चेति ।
सप्ततिरमी यथोदितशुद्धिप्रतिबन्धिनो हेयाः ।।१८१।।

शङ्का तथैव कांक्षा विचिकित्सा संस्तवोऽन्यदृष्टीनाम् ।
मनसा च तत्प्रशंसा सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।१८२।।

छेदनताडनबन्धा भारस्यारोपणं समधिकस्य ।
पानान्नयोश्च रोधः पञ्चाऽहिंसा व्रतस्येति ।।१८३।।

मिथ्योपदेशदानं रहसोऽभ्याख्यानकूटलेखकृती ।
न्यासापहारवचनं साकारकमन्त्रभेदश्च ।।१८४।।

प्रतिरूपव्यवहारः स्तेननियोगस्तदाहृतादानम् ।
राजविरोधातिक्रमहीनाधिकमानकरणे च ।।१८५।।

स्मरतीव्राभिनिवेशानङ्गक्रीडान्यपरिणयनकरणम् ।
अपरिगृहीतेतरयोर्गमने चेत्वरिकयोः पञ्च ।।१८६।।

वास्तु–क्षेत्राष्टापद–हिरण्य–धनधान्य–दासदासीनाम् ।
कुप्यस्य भेदयोरपि परिणामाति ः पञ्च ।।१८७।।

ऊर्ध्वमधस्तात्तिर्यग्व्यतिक्रमाः क्षेत्रवृद्धिराधानम् ।
स्मृत्यन्तरस्य गदिताः पञ्चेति प्रथमशीलस्य ।।१८८।।

प्रेष्यस्य संप्रयोजनमानयनं शब्दरूपविनिपातौ ।
क्षेपोऽपि पुद्गलानां द्वितीयशीलस्य पञ्चेति ।।१८९।।

कन्दर्पः कौत्कुच्यं भोगानर्थक्यमपि च मौखर्यम् ।
असमीक्षिताधिकरणं तृतीयशीलस्य पञ्चेति ।।१९०।।

वचनमनःकायानां दुःप्रणिधानं त्वनादरश्चैव ।
स्मृत्यनुपस्थानयुताः पञ्चेति चतुर्थशीलस्य ।।१९१।।

अनवेक्षिताप्रमार्जितमादानं संस्तरस्तथोत्सर्गः ।
स्मृत्यनुपस्थानमनादरश्च पञ्चोपवासस्य ।।१९२।।

आहारो हि सचित्तः सचित्तमिश्रः सचित्तसम्बन्धः ।
दुःपक्वोऽभिषवोऽपि च पञ्चामी षष्टशीलस्य ।।१९३।।

परदातृव्यपदेशः सचित्तनिक्षेपतत्पिधाने च ।
कालस्यातिक्रमणं मात्सर्यं चेत्यतिथिदाने ।।१९४।।

जीवितमरणाशंसे सुहृदनुरागः सुखानुबन्धश्च ।
सनिदानः पञ्चैते भवन्ति सल्लेखनाकाले ।।१९५।।

इत्येतानतिचारानपरानपि संप्रतर्क्य परिवर्ज्य ।
सम्यक्त्वव्रतशीलैरमलैः पुरुषार्थसिद्धिमेत्यचिरात् ।।१९६।।

चारित्रान्तर्भावात् तपोऽपि मोक्षाङ्गमागमे गदितम् ।
अनिगूहित निजवीर्यैस्तदपि निषेव्यं समाहितस्वान्तैः ।।१९७।।

अनशनमवमौदर्यं विविक्तशय्यासनं रसत्यागः ।
कायक्लेशो वृत्तेः संख्या च निषेव्यमिति तपो बाह्यम् ।।१९८।।

विनयो वैयावृत्त्यं प्रायश्चित्तं तथैव चोत्सर्गः ।
स्वाध्यायोऽथ ध्यानं भवति निषेव्यं तपोऽन्तरङ्गमिति ।।१९९।।

जिनपुङ्गवप्रवचने मुनीश्वराणां यदुक्तमाचरणम् ।
सुनिरूप्य निजां पदवीं शक्तिं च निषेव्यमेतदपि ।।२००।।

इदमावश्यकषट्कं समतास्तववन्दनाप्रतिक्रमणम् ।
प्रत्याख्यानं वपुषो व्युत्सर्गश्चेति कर्तव्यम् ।।२०१।।

सम्यग्दण्डो वपुषः सम्यग्दण्डस्तथा च वचनस्य ।
मनसः सम्यग्दण्डो गुप्तित्रितयं समनुगम्यम् ।।२०२।।

सम्यग्गमनागमनं सम्यग्भाषा तथैषणा सम्यक् ।
सम्यग्ग्रहनिक्षेपौ व्युत्सर्गः सम्यगिति समितिः ।।२०३।।

धर्मः सेव्यः क्षान्तिः मृदुत्वमृजुता च शौचमथ सत्यम् ।
आकिञ्चन्यं ब्रह्म त्यागश्च तपश्च संयमश्चेति ।।२०४।।

अध्रुवमशरणमेकत्वमन्यताशौचमास्रवो जन्म ।
लोक बोधिसंवरनिर्जराः सततमनुप्रेक्ष्याः ।।२०५।।

क्षुत्तृष्णा हिममुष्णं नग्नत्वं याचनारतिरलाभः ।
दंशो ादीनामाक्रोशो व्याधिदुःखमङ्गमलम् ।।२०६।।

स्प तृणादीना ानमदर्शनं तथा ।
सत्कारपुरस्कारः शय्या ि वधो निषद्या स्त्री ।।२०७।।

द्वाविंशतिरप्येते परिषोढव्याः परीषहाः तम् ।
संक्लेशमुक्तमनसा संक्लेशनिमित्तभीतेन ।।२०८।।

इति रत्नत्रयमेतत्प्रतिसमयं विकलमपि गृहस्थेन ।
परिपालनीयमनिशं निरत्ययां मुक्तिमभिलषता ।।२०९।।

बद्धोद्यमेन नित्यं लब्ध्वा समयं च बोधिलाभस्य ।
पदमवल मुनीनां कर्तव्यं सपदि परिपूर्णम् ।।२१०।।

भावयतो रत्नत्रयमस्ति कर्मबन्धो यः ।
सविपक्षकृतोऽवश्यं मोक्षोपायो न बन्धनोपायः ।।२११।।

येनांशेन सुदृष्टिस्तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति ।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति ।।२१२।।

येनांशेन ज्ञानं तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति ।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति ।।२१३।।

येनांशेन चरित्रं तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति ।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति ।।२१४।।

योगात्प्रदेशबन्धः स्थितिबन्धो भवति चः कषायात्तु ।
दर्शनबोधचरित्रं न योगरूपं कषायरूपं च ।।२१५।।
दर्शनमात्मविनिश्चितिरात्मपरिज्ञानमिष्यते बोधः ।
स्थितिरात्मनि चारित्रं कुत एतेभ्यो भवति बन्धः ।।२१६।।
सम्यक्त्वचरित्राभ्यां तीर्थकराहारकर्मणो बन्धः ।
योऽप्युपदिष्टः समये न नयविदां सोऽपि दोषाय ।।२१७।।
सति सम्यक्त्वचरित्रे तीर्थकराहारबन्धकौ भवतः ।
योगकषायौ नासति तत्पुनरस्मिन्नुदासीनम् ।।२१८।।
ननु कथमेवं सिद्ध्यतु देवायुःप्रभृतिसत्प्रकृतिबन्धः ।
सकलजनसुप्रसिद्धो रत्नत्रयधारिणां मुनिवराणाम् ।।२१९।।
रत्नत्रयमिह हेतुर्निर्वाणस्यैव भवति नान्यस्य ।
आस्रवति यत्तु पुण्यं शुभोपयोगोऽयमपराधः ।।२२०।।
एकस्मिन्समवायादत्यन्तविरुद्धकार्ययोरपि हि ।
इह दहति घृतमिति यथा व्यवहारस्तादृशोऽपि रूढिमितः ।।२२१।।
सम्यक्त्वचरित्रबोधलक्षणो मोक्षमार्ग इत्येषः ।
मुख्योपचाररूपः प्रापयति परं पदं पुरुषम् ।।२२२।।
नित्यमपि निरुपलेपः स्वरूपसमवस्थितो निरुपघातः ।
गगनमिव परमपुरुषः परमपदे स्फुरति विशदतमः ।।२२३।।
कृतकृत्यः परमपदे परमात्मा सकलविषयविषयात्मा ।
परमानन्दनिमग्नो ज्ञानमयो नन्दति सदैव ।।२२४।।
एकेनाकर्षन्ती श्लथयन्ती वस्तुतत्त्वमितरेण ।
अन्तेन जयति जैनीनीतिर्मन्थाननेत्रमिव गोपी ।।२२५।।
वर्णैः कृतानि चित्रैः पदानि तु पदैः कृतानि वाक्यानि ।
वाक्यैः कृतं पवित्रं शास्त्रमिदं न पुनरस्माभिः ।।२२६।।

।। इति श्रीमदमृतचन्द्रसूरीणा कृति पुरुषार्थसिद्ध्युपायोऽपरमाम
जिनप्रवचनरहस्यकोश समाप्त ।।

श्रीगुणभद्राचार्यविरचितम्

ात ानुशा न ्

मङ्गलाचरणम्

लक्ष्मीनिवासनिलयं विलीनविलयं निधाय हृदि वीरम् ।
आत्मानुशासनमहं वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम् ॥१॥
दुःखाद्बिभेषि नितरामभिवाञ्छसि सुखमतोऽहमप्यात्मन् ।
दुःखापहारि सुखकरमनुशास्मि तवानुमतमेव ॥२॥
यद्यपि कदाचिदस्मिन् विपाकमधुरं तदात्वकटु किंचित् ।
त्वं तस्मान्मा भैषीर्यथातुरो भेषजादुग्रात् ॥३॥
जना घनाश्च वाचालाः सुलभाः स्युर्वृथोत्थिताः ।
दुर्लभा ह्यन्तरार्द्रास्ते जगदभ्युज्जिहीर्षवः ॥४॥
प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदयः प्रव्यक्तलोकस्थितिः
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः ।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनोहारी परानिन्दया
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधिः प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः ॥५॥

श्रुतमविकलं शुद्धा वृत्तिः परप्रतिबोधने
परिणतिरुरुद्योगो मार्गप्रवर्त्तनसद्विधौ ।
बुधनुतिरनुत्सेको लोकज्ञता मृदुताऽस्पृहा
यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम् ॥६॥

भव्यः किं कुशलं ममेति विमृशन् दुःखाद् भृशं भीतिमान्
सौख्येषी श्रवणादिबुद्धिविभवः श्रुत्वा विचार्य स्फुटम् ।
करं दयागुणमयं युक्त्यागमाभ्यां स्थितं
गृह्णन् धर्मकथां श्रुतावधिकृतः शास्यो निरस्ताग्रहः ॥७॥
पापाद् दुःखं धर्मात्सुखमिति सर्वजनसुप्रसिद्धमिदम् ।
तस्माद्विहाय पापं चरतु सुखार्थी सदा धर्मम् ॥८॥

सर्वः प्रेप्सति सत्सुखाप्तिमचिरात् सा सर्वकर्मक्षयात्
सद्वृत्तात्स च तच्च बोधनियतं सोऽप्यागमात् स श्रुतेः ।
सा चाप्तात् स च सर्वदोषरहितो रागादयस्तेऽप्यतः
तं युक्त्या सुविचार्य सर्वसुखदं सन्तः श्रयन्तु श्रियै ।।६।।
श्रद्धानं द्विविधं त्रिधा दशविधं मौढ्याद्यपोढं सदा
संवेगादिविवर्धितं भवहरं त्र्यज्ञानशुद्धिप्रदम् ।
निश्चिन्वन् नव-सप्त-तत्वमचलप्रासादमारोहतां
सोपानं प्रथमं विनेयविदुषामाद्येयमाराधना ।।१०।।

आज्ञामार्गसमुद्भवमुपदेशात्सूत्रबीजसंक्षेपात् ।
विस्तारार्थाभ्यां भवमवपरमावादिगाढे च ।।११।।

आज्ञासम्यक्त्वमुक्तं यदुत विरुचितं वीतरागाज्ञयैव
त्यक्तग्रन्थप्रपञ्चं शिवममृतपथं श्रद्दधन्मोहशान्तेः ।
मार्गश्रद्धानमाहुः पुरुषवरपुराणोपदेशोपजाता
या संज्ञानागमाब्धिप्रसृतिभिरुपदेशादिरादेशिदृष्टिः ।।१२।।
आकर्ण्याचारसूत्रं मुनिचरणविधेः सूचनं श्रद्दधानः
सूक्तासौ सूत्रदृष्टिर्दुरधिगमगतेरर्थसार्थस्य बीजैः ।
कैश्चिज्जातोपलब्धेरसमशमवशाद्बीजदृष्टिः पदार्थान्
संक्षेपेणैव बुद्ध्वा रुचिमुपगतवान् साधुसंक्षेपदृष्टिः ।।१३।।
यः श्रुत्वा द्वादशाङ्गीं कृतरुचिरथ तं विद्धि विस्तारदृष्टिं
संजातार्थात्कुतश्चित् प्रवचनवचनान्यन्तरेणार्थदृष्टिः ।
दृष्टिः साङ्गाङ्गबाह्यप्रवचनमवगाह्योत्थिता यावगाढा
कैवल्यालोकितार्थे रुचिरिह परमावादिगाढेतिरूढा ।।१४।।
शमबोधवृत्ततपसां पाषाणस्येव गौरवं पुंसः ।
पूज्यं महामणेरिव तदेव सम्यक्त्वसंयुक्तम् ।।१५।।
मिथ्यात्वाऽऽतङ्कवतो हिताहितप्राप्त्यनाप्तिमुग्धस्य ।
बालस्येव तवेयं सुकुमारैव क्रिया क्रियते ।।१६।।

विषयवि प्राशनोत्थितमोहज्वरजनिततीव्रतृष्णस्य ।
निःशक्तिकस्य भवतः प्रायः पेयाद्युपक्रमः श्रेयान् ॥१७॥
सुखि स्य दुःखितस्य च संसारे धर्म एव तव कार्यः ।
सुखितस्य तदभिवृद्ध्यै दुःखभुजस्तदुपघाताय ॥१८॥
धर्मारामतरूणां फलानि सर्वेन्द्रियार्थसौख्यानि ।
संरक्ष्य तांस्ततस्तान्युच्चिनुयैस्तैरुपायैस्त्वम् ॥१९॥
धर्मः सुखस्यहेतुर्हेतुर्न विरोधकः स्वकार्यस्य ।
तस्मात्सुखभङ्गभिया माभूर्धर्मस्य विमुखस्त्वम् ॥२०॥
धर्मादवाप्तविभवो धर्मं प्रतिपाल्य भोगमनुभवतु ।
बीजा प्तधान्यः कृषीवलस्तस्य बीजमि ॥२१॥
संकल्प्यं कल्पवृक्षस्य चिन्त्यं चिन्तामणेरपि ।
असंकल्प्यमसंचिन्त्यं फलं दिवाप्यते ॥२२॥
परिणाममेव कारणमाहुः खलु पुण्यपापयोः प्राज्ञाः ।
तस्मात् पापापचयः पुण्योप श्च सुविधेयः ॥२३॥
कृत्वा धर्मविघातं विषयसुखान्यनुभवन्ति ये मोहात् ।
आच्छिद्य तरून् ात् फलानि गृह्णन्ति ते पापाः ॥२४॥
त्वहेतुकर्तृत्वानुमतैः स्मरणचरणवचननेषु ।
यः थाभिगम्यः स कथ धर्मो न ाह्यः ॥२५॥

धर्मो वसेन्मनसि यावदलं स ता
हन्ता न हन्तुरपि पश्य गतेऽथ तस्मिन् ।
दृष्टा परस्परहतिर्जनकात्मजानां
रक्षा ततोऽस्य जगतः खलु धर्म एव ॥२६॥

न सुखानुभवात् पापं पापं तद्धेतुघातकारम्भात् ।
नाजीर्णं मिष्टान्नान्नु तन्मात्राद्यति मणात् ॥२७॥

अप्येतन्मृगयादिकं यदि तव प्रत्यक्षदुःखास्पदं
पापैराचरितं पुरातिभयदं सौख्याय संकल्पतः ।
संकल्पं तमनुज्झितेन्द्रियसुखैरासेविते धीधनैः
धर्म्ये कर्मणि किं करोति न भवाँल्लोकद्वयश्रेयसि ॥२८॥

भीतमूर्तीर्गतत्राणा निर्दोषा देहवित्तिकाः ।
दन्तलग्नतृणा घ्नन्ति मृगीरन्येषु का कथा ॥२९॥

पैशुन्यदैन्यदम्भस्तेयानृतपातकादिपरिहारात् ।
लोकद्वयहितमर्जय धर्मार्थयशःसुखाऽऽयार्थम् ॥३०॥

पुण्यं कुरुष्व कृतपुण्यमनीदृशोऽपि
नोपद्रवोऽभिभवति प्रभवेच्च भूत्यै ।
संतापयन् जगदशेषमशीतरश्मिः
पद्मेषु पश्य विदधाति विकाशलक्ष्मीम् ॥३१॥

नेता यत्र बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं सुराः सैनिका.
स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः खलु हरेरैरावणो वारणः ।
इत्याश्चर्यबलान्वितोऽपि बलिभिद्भग्नः परैः सङ्गरे
तद्व्यक्तं ननु दैवमेव शरणं धिग्धिग्वृथा पौरुषम् ॥३२॥

भर्तारः कुलपर्वता इव भुवो मोहं विहाय स्वयं
रत्नानां निधयः पयोधय इव व्यावृत्तवित्तस्पृहाः ।
स्पृष्टाः कैरपि नो नभो विभुतया विश्वस्य विश्रान्तये
सन्त्यद्यापि चिरन्तनान्तिकचराः सन्तः कियन्तोऽप्यमी ॥३३॥

पिता पुत्रं पुत्रः पितरमभिसंधाय बहुधा
विमोहादीहेते सुखलवमवाप्तुं नृपपदम् ।
अहो मुग्धो लोको मृतिजननदंष्ट्रान्तरगतो
न पश्यत्यश्रान्तं तनुमपहरन्तं यमममुम् ॥३४॥

अन्धादयं महानन्धो विषयान्धीकृतेक्षणः ।
चक्षुषान्धो न जानाति विषयान्धो न केनचित् ॥३५॥

आशागर्तः प्रतिप्राणि यस्मिन् विश्वमणूपमम् ।
कस्य किं कियदायाति वृथा वो विषयैषिता ।।३६।।
आयुः-श्रीवपुरादिकं यदि भवेत्पुण्यं पुरोपार्जितं
स्यात् सर्वं न भवेन्न तच्च नितरामायासितेऽप्यात्मनि ।
इत्यार्याः सुविचार्य कार्यकुशलाः कार्येऽत्र मन्दोद्यमाः
द्रागागामिभवार्थमेव सततं प्रीत्या यतन्तेतराम् ।।३७।।
कः स्वादो विषयेष्वसौ कटुविषप्रख्येष्वलं दुःखिना
यानन्वेष्टुमिव त्वयाऽशुचिकृतं येनाभिमानामृतम् ।
आः ज्ञातं करणैर्मनः प्रणिधिभिः पित्तज्वराविष्टवत्
कष्टं रागरसैः सुधीस्त्वमपि सन् व्यत्यासितास्वादनः ।।३८।।
अनिवृत्तेर्जगत्सर्वं मुखादवशिनष्टि यत् ।
तत्तस्याऽशक्तितो भोक्तुं वितनोर्भानुसोमवत् ।।३९।।
साम्राज्यं कथमप्यवाप्य सुचिरात्संसारसारं पुनः
तत्त्यक्त्वैव यदि क्षितीश्वरवराः प्राप्ताः श्रियं शाश्वतीम् ।
त्वं प्रागेवपरिग्रहान् परिहर त्याज्यान् गृहीत्वापि ते
मा भूर्भौतिकमोदकव्यतिकरं सपाद्य हास्यास्पदम् ।।४०।।
धर्मंमयं क्वचित्क्वचिदपि प्रायेण पापात्मकं
क्वाप्येतद् द्वयवत्करोति चरितं ।घनानामपि ।
तस्मादेष तदन्धरज्जुवलनं स्नानं गजस्याथवा
मत्तोन्मत्तविचेष्टितं न हि हितो गेहाश्रमः सर्वथा ।।४१।।
कृष्ट्वोप्त्वा नृपतीन्निषेव्य बहुशो भ्रांत्वा वनेम्भोनिधौ
किं क्लिश्नासि सुखार्थमत्र सुचिरं हा कष्टमज्ञानतः ।
तैलं त्वं सिकतासु यन्मृगयसे वाञ्छेद्विषाज्जीवितुं
नन्वाशाग्रहनिग्रहात्तव सुखं न ज्ञातमेतत् त्वया ।।४२।।
आशाहुताशनग्रस्तवस्तूच्चैर्वंशजां जनाः ।
हा किलैत्य सुखच्छायां दुःखघर्मापनोदिनः ।।४३।।

खातेऽभ्यासजलाशयाऽजनि शिला प्रारब्धनिर्वाहिणा
भूयोऽभेदि रसातलावधि ततः कृच्छ्रात्सुतुच्छं किल ।
क्षारं वार्युदगात्तदप्युपहतं पूतिकृमिश्रेणिभिः
शुष्कं तच्च पिपासितोस्य सहसा कष्टं विधेश्चेष्टितम् ।।४४।।

शुद्धैर्धनैर्विवर्धन्ते सतामपि न संपदः ।
न हि स्वच्छाम्बुभिः पूर्णाः कदाचिदपि सिन्धवः ।।४५।।

स धर्मो यत्र नाऽधर्मस्तत्सुखं यत्र नाऽसुखम् ।
तज्ज्ञानं यत्र नाऽज्ञानं सा गतिर्यत्र नाऽऽगतिः ।।४६।।

वार्तादिभिर्विषयलोलविचारशून्यः
क्लिश्नासि यन्मुहुरिहार्थपरिग्रहार्थम् ।
तच्चेष्टितं यदि सकृत्परलोकबुद्ध्या
न प्राप्यते ननु पुनर्जननादिदुःखम् ।।४७।।

संकल्प्येदमनिष्टमिष्टमिदमित्यज्ञातयाथात्म्यको
बाह्ये वस्तुनि किं वृथैव गमयस्यासज्य कालं मुहुः ।
अन्तः शान्तिमुपैहि यावददयप्राप्तान्तकप्रस्फुर-
ज्ज्वालाभीषणजाठरानलमुखे भस्मीभवेन्नो भवान् ।।४८।।

आयातोऽस्यतिदूरमङ्ग परवानाशासरित्प्रेरितः
किं नावैषि ननु त्वमेव नितरामेना तरीतुं क्षमः ।
स्वातन्त्र्यं व्रज यासि तीरमचिरान्नो चेद् दुरन्तान्तक-
ग्राहव्याप्तगभीरवक्त्रविषमे मध्ये भवाब्धेर्भवेः ।।४९।।

आस्वाद्याद्य यदुज्झितं विषयिभिर्व्यावृत्तकौतूहलै-
स्तद् भूयोऽप्यविकुत्सयन्नभिलषत्यप्राप्तपूर्वं यथा ।
जन्तो किं तव शान्तिरस्ति न भवान् यावद् दुराशामिमा-
मंहःसंहतिवीरवैरिपृतनाश्रीवैजयन्तीं हरेत् ।।५०।।

भङ्क्त्वा भाविभवांश्च भोगिविषमान्भोगान्बुभुक्षुर्भृशं
मृत्वापि स्वयमस्तभीतिकरुणः सर्वाञ्जिघांसुर्मुधा ।
यद्यत्साधुविगर्हितं हतमतिस्तस्यैव धिक् कामुकः
कामक्रोधमहाग्रहाहितमनाः किं किं न कुर्याज्जनः ॥५१॥
श्वो यस्याजनि यः स एव दिवसो ह्यस्तस्य संपद्यते
स्थैर्यं नाम न कस्यचिज्जगदिदं कालानिलोन्मूलितम् ।
भ्रातर्भ्रान्तिमपास्य पश्यसितरां प्रत्यक्षमक्ष्णोर्न किं
येनात्रैव मुहुर्मुहुर्बहुतरं बद्धस्पृहो भ्राम्यसि ॥५२॥
संसारे नरकादिषु स्मृतिपथेप्युद्वेगकारिण्यलं
दुःखानि प्रतिसेवितानि भवता तान्येवमेवासताम् ।
तत्तावत् स्मरसि स्मरस्मितशितापाङ्गैरनङ्गायुधैः
वामानां हिमदग्धमुग्धतरुवद्यत्प्राप्तवान्निर्धनः ॥५३॥
उत्पन्नोऽस्यतिदोषधातुमलवद्देहोऽसि कोपादिमान्
साधिव्याधिरसि प्रहीणचरितोऽस्य स्यात्मनो वञ्चकः ।
मृत्युव्यात्तमुखान्तरोऽसि जरसा ग्रस्तोऽसि जन्मिन् वृथा
किं मत्तोऽस्यसि किं हितारिरहिते कि वासिबद्धस्पृहः ॥५४॥
उग्रग्रीष्मकठोर किरणस्फूर्जद्गभस्तिप्रभैः
संतप्तः सकलेन्द्रियैरयमहो संवृद्धतृष्णो जनः ।
प्याभिमतं विवेकविमुखः पापप्रयासा कुल–
स्तोयोपान्तदुरन्तकर्दमगतक्षीणोक्षवत् क्लिश्यते ॥५५॥
लब्धेन्धनो ज्वलत्यग्निः प्रशाम्यति निरिन्धनः ।
ज्वलत्युभयथाप्युच्चैरहो मोहाग्निरुत्कटः ॥५६॥
किं मर्माण्यभिदन्न भीकरतरो दुःकर्म गर्मुद्गणः
किं दुःखज्वलनावलीविलसितैर्नालेढि देहश्चिरम् ।
किं गर्ज्जद्यमतूरभैरवरवान्नाकर्णयन्निर्णयन्
येनायं न जहाति मोहविहितां निद्रामभद्रा जनः ॥५७॥

तादात्म्यं तनुभिः सदानुभवनं पाकस्य दुःकर्मणो
व्यापारः समयं प्रति प्रकृतिभिर्गाढं स्वयं बन्धनम् ।
निद्रा विश्रमणं मृतेः प्रतिभयं शश्वन्मृतिश्च ध्रुवं
जन्मिन् जन्मनि ते तथापि रमसे तत्रैव चित्रं महत् ॥५८॥

अस्थिस्थूलतुलाकलापघटितं नद्धं शिरास्नायुभि–
श्चर्माच्छादितमस्त्रसान्द्रं पिशितैर्लिप्तं सुगुप्तं खलैः ।
कर्मारातिभिरायुरुच्चनिगलालग्नं शरीरालयं
कारागारमवेहि ते हतमते प्रीतिं वृथा मा कृथाः ॥५९॥

शरणमशरणं वो बन्धवो बन्धमूलं
चिरपरिचितदारा द्वारमापद्गृहाणाम् ।
विपरिमृशत पुत्राः शत्रवः सर्वमेतत्
त्यजत भजत धर्मं निर्मलं शर्मकामाः ॥६०॥

तत्कृत्यं किमिहेन्धनैरिव धनैराशाग्निसंधुक्षणैः
संबन्धेन किमङ्ग शश्वदशुभैः संबन्धिभिर्बन्धुभिः ।
किं मोहाहिमहाबिलेन सदृशा देहेन गेहेन वा
देहिन् याहि सुखाय ते सममसुं मा गाः प्रमादं मुधा ॥६१॥

आदावेव महाबलैरविचलं पट्टेन बद्धा स्वयं
रक्षाध्यक्षभुजासि पञ्जरवृता सामन्तसंरक्षिता ।
लक्ष्मीर्दीपशिखोपमा क्षितिमतां हा पश्यतां नश्यति
प्रायः पातितचामरानिलहतेवान्यत्र काऽऽशा नृणाम् ॥६२॥

दीप्तोभयाग्रवातारिदारूदरगकीटवत् ।
जन्ममृत्युसमाश्लिष्टे शरीरे वत सीदसि ॥६३॥

नेत्रादीश्वरचोदितः सकलुषो रूपादिविश्वाय किं
प्रेष्यः सीदसि कुत्सितव्यतिकरैरंहांस्यलं बृंहयन् ।
नीत्वा तानि भुजिष्यतामकलुषो विश्वं विसृज्यात्मवा-
नात्मानं धिनु सत्सुखी धुतरजाः सद्वृत्तिभिर्निर्वृतः ॥६४॥

भङ्क्त्वा भाविभवांश्च भोगिविषमान्भोगान्बुभुक्षुर्भृशं
मृत्वापि स्वयमस्तभीतिकरुणः सर्वाङ्गिजघांसुर्मुधा ।
यद्यत्साधुविगर्हितं हतमतिस्तस्यैव धिक् कामुकः
कामक्रोधमहाग्रहाहितमनाः किं किं न कुर्याज्जनः ॥५१॥

श्वो यस्याजनि यः स एव दिवसो ह्यस्तस्य संपद्यते
स्थैर्यं नाम न कस्यचिज्जगदिदं कालानिलोन्मूलितम् ।
भ्रातर्भ्रान्तिमपास्य पश्यसितरां प्रत्यक्षमक्ष्णोर्न किं
येनात्रैव मुहुर्मुहुर्बहुतरं बद्धस्पृहो भ्राम्यसि ॥५२॥

संसारे नरकादिषु स्मृतिपथेप्युद्वेगकारिण्यलं
दुःखानि प्रतिसेवितानि भवता तान्येवमेवासताम् ।
तत्तावत् स्मरसि स्मरस्मितशितापाङ्गैरनङ्गायुधैः
वामानां हिमदग्धमुग्धतरुवद्यत्प्राप्तवान्निर्धनः ॥५३॥

उत्पन्नोऽस्यतिदोषधातुमलवद्देहोऽसि कोपादिमान्
साधिव्याधिरसि प्रहीणचरितोऽस्य स्यात्मनो वञ्चकः ।
मृत्युव्यात्तमुखान्तरोऽसि जरसा ग्रस्तोऽसि जन्मिन् वृथा
किं मत्तोऽस्यसि किं हितारिरहिते किं वाहि बद्धस्पृहः ॥५४॥

उग्रग्रीष्मकठोरघर्मकिरणस्फूर्जद्गभस्तिप्रभैः
संतप्तः सकलेन्द्रियैरयमहो संवृद्धतृष्णो जनः ।
प्याभिमतं विवेकविमुखः पापप्रयासा कुल-
स्तोयोपान्तदुरन्तकर्दमगतक्षीणोक्षवत् क्लिश्यते ॥५५॥

लब्धेन्धनो ज्वलत्यग्निः प्रशाम्यति निरिन्धनः ।
ज्वलत्युभयथाप्युच्चैरहो मोहाग्निरुत्कटः ॥५६॥

किं मर्माण्यभिदन्न भीकरतरो दुःकर्म गर्मुद्गणः
किं दुःखज्वलनावलीविलसितैर्नालेढि देहश्चिरम् ।
किं गर्ज्जद्यमतूरभैरवरवान्नाकर्णयन्निर्णयन्
येनाय न जहाति मोहविहितां निद्रामभद्रां जनः ॥५७॥

तादात्म्यं तनुभिः सदानुभवनं पाकस्य दुःकर्मणो
व्यापारः समयं प्रति प्रकृतिभिर्गाढं स्वयं बन्धनम् ।
निद्रा विश्रमणं मृतेः प्रतिभयं शश्वन्मृतिश्च ध्रुवं
जन्मिन् जन्मनि ते तथापि रमसे तत्रैव चित्रं महत् ।।५८।।
अस्थिस्थूलतुलाकलापघटितं नद्धं शिरास्नायुभि-
श्चर्माच्छादितमस्रसान्द्र पिशितैर्लिप्तं सुगुप्तं खलैः ।
कर्मारातिभिरायुरुच्चनिगलालग्नं शरीरालयं
कारागारमवेहि ते हतमते प्रीतिं वृथा मा कृथाः ।।५९।।
शरणमशरणं वो बन्धवो बन्धमूलं
चिरपरिचितदारा द्वारमापद्गृहाणाम् ।
विपरिमृशत पुत्राः शत्रवः सर्वमेतत्
त्यजत भजत धर्मं निर्मलं शर्मकामाः ।।६०।।
तत्कृत्यं किमिहेन्धनैरिव धनैराशाग्निसंधुक्षणैः
संबन्धेन किमङ्ग शश्वदशुभैः संबन्धिभिर्बन्धुभिः ।
किं मोहाहिमहाबिलेन सदृशा देहेन गेहेन वा
देहिन् याहि सुखाय ते सममयुं मा गाः प्रमाद मुधा ।।६१।।
आदावेव महाबलैरविचलं पट्टेन बद्धा स्वयं
रक्षाध्यक्षभुजासि पञ्जरवृता सामन्तसंरक्षिता ।
लक्ष्मीर्दीपशिखोपमा क्षितिमतां हा पश्यतां नश्यति
प्रायः पातितचामरानिलहतेवान्यत्र काऽऽशा नृणाम् ।।६२।।
दीप्तोभयाग्रवातारिदारूदरगकीटवत् ।
जन्ममृत्युसमाश्लिष्टे शरीरे वत सीदसि ।।६३।।
नेत्रादीश्वरचोदितः सकलुषो रूपादिविश्वाय किं
प्रेष्यः सीदसि कुत्सितव्यतिकरैरंहास्यलं बृंहयन् ।
नीत्वा तानि भुजिष्यतामकलुषो विश्वं विसृज्यात्मवा-
नात्मानं धिनु सत्सुखी धुतरजाः सद्वृत्तिभिर्निर्वृतः ।।६४।।

अर्थिनो धनमप्राप्य धनिनोऽप्यवितृप्तिः ।
कष्टं सर्वेऽपि सीदन्ति परमेको मुनिः सुखी ॥६५॥
परायत्तात् सुखाद् दुःख स्वायत्तं केवलं वरम् ।
अन्यथा सुखिनामानः कथमासंस्तपस्विनः ॥६६॥
यदेतत्स्वच्छन्दं विहरणमकार्पण्यमशनं
सहार्य्यैः संवासः श्रुतमुपशमैकश्रमफलम् ।
मनो मन्दस्यन्दं बहिरपि चिरायाति विमृशन्
न जाने कस्येयं परिणतिरुदारस्य तपसः ॥६७॥
विरतिरतुला शास्त्रे चिन्ता तथा करुणापरा
मतिरपि सदैकान्तध्वान्तप्रपञ्चविभेदिनी ।
अनशनतपश्चर्या चान्ते यथोक्तविधानतो
भवति महतां नाल्पस्येदं फलं तपसो विधेः ॥६८॥
उपायकोटिदूरक्षे स्वतस्तत इतोऽन्यतः ।
सर्वतः पतनःप्राये काये कोऽयं तवाग्रहः ॥६९॥
अवश्यं नश्वरैरेभिरायुःकायादिभिर्यदि ।
शाश्वतं पदमायाति मुधा यातमवेहि ते ॥७०॥
गन्तुमुच्छ्वासनिःश्वासैरभ्यस्यत्येष संततम् ।
लोकः पृथग (गि)-तो वाञ्छत्यात्मानमजरामरम् ॥७१॥
गलत्यायुः प्रायः प्रकटितघटीयन्त्रसलिलं
खलः कायोऽप्यायुर्गतिमनुपतत्येष सततम् ।
किमस्यान्यैरन्यैर्द्वयमयमिदं जीवितमिह
स्थितो भ्रान्त्या नावि स्वमिव मनुते स्थास्नुमपधीः ॥७२॥
उच्छ्वासः खेदजन्यत्वाद् दुःखमेषोऽत्र जीवितम् ।
तद्विरामो भवेन्मृत्युर्नृणां भण कुतः सुखम् ॥७३॥
जन्मतालद्रुमाज्जन्तु फलानि प्रच्युतान्यधः ।
अप्राप्य मृत्युभूभागमन्तरे स्यु कियच्चिरम् ॥७४॥

क्षितिजलधिभिः संख्यातीतैर्बहिः पवनैस्त्रिभिः
परिवृतमतः खे नाधस्तात्खलासुरनारकान् ।
उपरि दिविजान् मध्ये कृत्वा नरान् विधिमन्त्रिणा
पतिरपि नृणां त्राता नैको ह्यलङ्घ्यतमोऽन्तकः ॥७५॥
अविज्ञातस्थानो व्यपगततनुः पापमलिनः
खलो राहुर्भास्वद्दशशतकराक्रान्तभुवनम् ।
स्फुरन्तं भास्वन्तं किल गिलति हा कष्टमपरः
परिप्राप्ते काले विलसति विधौ को हि बलवान् ॥७६॥
उत्पाद्य मोहमद विह्वलमेव विश्वं
वेधाः स्वयं गतघृणाष्टकवद्यथेष्टम् ।
संसारभीकरमहागहनान्तराले
हन्ता निवारयितुमत्र हि कः समर्थः ॥७७॥
कदा कथं कुतः कस्मिन्नित्यतर्क्यः खलोऽन्तकः ।
प्राप्नोत्येव किमित्याध्वं यतध्वं श्रेयसे बुधाः ॥७८॥
असामवायिकं मृत्योरेकमालोक्य कंचन ।
देशं काल विधिं हेतुं निश्चिन्ताः सन्तु जन्तव. ॥७९॥
अपिहितमहाघोरद्वारं न किं नरकापदा-
मुपकृतवतो भूयः किं तेन चेदमपाकरोत् ।
कुशलविलयज्वालाजाले कलत्रकलेवरे
कथमिव भवानत्र प्रीतः पृथग्जनदुर्लभे ॥८०॥
व्यापत्पर्वमयं विरामविरसं मूलेऽप्यभोग्योचितं
विष्वक्क्षुत्क्षतपातकुष्टकुथिताद्युग्रामयैश्छिद्रितम् ।
मानुष्यं घुणभक्षितेक्षुसदृशं नाम्नैकरम्यं पुनः
निःसारं परलोकबीजमचिरात्कृत्वेह सारी कुरु ॥८१॥
प्रसुप्तो मरणाशङ्कां प्रबुद्धो जीवितोत्सवम् ।
प्रत्यहं जनयन्नेष तिष्ठेत् काये कियच्चिरम् ॥८२॥

सत्यं वदात्र यदि जन्मनि बन्धुकृत्य-
माप्तं त्वया किमपि बन्धुजनाद्धितार्थम् ।
एतावदेव परमस्ति मृतस्य पश्चात्
संभूयकायमहितं तव भस्मयन्ति ॥८३॥

जन्मसंतानसंपादि विवाहादिविधायिनः ।
स्वाः परेऽस्य सकृत्प्राणहारिणो न परे परे ॥८४॥

धनेरेन्धनसंभारं प्रक्षिप्याशाहुताशने ।
ज्वलन्तं मन्यते भ्रान्तः शान्तं संधुक्षणे क्षणे ॥८५॥

पलितच्छलेन देहान्निर्गच्छतिशुद्धिरेव तव बुद्धेः ।
कथमिव परलोकार्थं जरी वराकस्तदा स्मरति ॥८६॥

इष्टार्थोद्यदनाशितं भवसुखक्षाराम्भसि प्रस्फुरन्-
नानामानसदुःखवाडवशिखा संदीपिताभ्यन्तरे ।
मृत्यूत्पत्तिजरातरङ्गचपले संसारघोरार्णवे
मोहग्राहविदारितास्य विवराद्दूरे चरा दुर्लभाः ॥८७॥

अव्युच्छिन्नैः सुखपरिकरैर्लालिता लोलरम्यैः
श्यामाङ्गीनां नयनकमलैरर्चि[illegible] यौवनान्तम् ।
धन्योऽसि त्वं यदि तनुरियं लब्धबोधेर्मृगीभि-
र्दग्धारण्ये स्थलकमलिनी शङ्कयालोक्यते ते ॥८८॥

बाल्ये वेत्सि न किंचिदप्य परिपूर्णाङ्गो हितं वाहितं
कामान्धः खलु कामिनीद्रुमघने भ्राम्यन् वने यौवने ।
मध्ये वृद्धतृषार्जितुं वसुपशुः क्लिश्नासि कृष्यादिभि-
र्वृद्धो वाद्र्धमृतः क्व जन्मफलिते धर्मो भवेन्निर्मलः ॥८९॥

बाल्येऽस्मिन् यदनेन ते विरचितं स्मर्तुं च तन्नोचि[illegible]
मध्ये चापि धनार्जनव्यतिकरैस्तन्नास्तियन्नापितः ।
वार्द्धक्येऽप्यभिभूत दन्तदलनाद्याचेष्टितं निष्ठुरं
पश्याद्यापि विधेर्वशेन चलितुं वाञ्छस्यहो दुर्मते ॥९०॥

अश्रोत्रीव तिरस्कृतापरतिरस्कारश्रुतीनां श्रुतिः
चक्षुर्वीक्षितुमक्षमं तव दशां दूष्यामिवान्ध्यं गतम् ।
भीत्येवाभिमुखान्तकादतितरां कायोऽप्ययं कम्पते
निष्कम्पस्त्वमहो प्रदीप्तभवनेऽप्यासे(स्से)जराजर्जरे ॥९१॥

अतिपरिचितेष्ववज्ञा नवे भवेत् प्रीतिरिति हि जनवादः ।
तं किमिति मृषा कुरुषे दोषासक्तो गुणेष्वरतः ॥९२॥

हंसैर्न भुक्तमतिकर्कशमम्भसापि
नो संगतं दिनविकासि सरोजमित्थम् ।
नालोकितं मधुकरेण मृतं वृथैव
प्रायः कुतो व्यसनिनो स्वहिते विवेकः ॥९३॥

प्रज्ञैव दुर्लभा सुष्ठु दुर्लभा सान्यजन्मनि ।
तां प्राप्य ये प्रमाद्यन्ते ते शोच्याः खलु धीमताम् ॥९४॥

लोकाधिपाः क्षितिभुजो भुवि येन जाताः
तस्मिन् विधौ सति हि सर्वजनप्रसिद्धे ।
शोच्यं तदेव यदमी स्पृहणीय वीर्या-
स्तेषां बुधाश्च वत किंकरतां प्रयान्ति ॥९५॥

यस्मिन्नस्ति स भूभृतो धृतमहावंशाः प्रदेशः परः
प्रज्ञापारमिताधृतोन्नतिधनाः मूर्ध्ना ध्रियन्ते श्रियै ।
भूयांस्तस्य भुजङ्गदुर्गमतमो मार्गो निराशस्ततो
व्यक्तं वक्तुमयुक्तमार्यमहतां सर्वार्थसाक्षात्कृतः ॥९६॥

शरीरेऽस्मिन् सर्वाशुचिनि बहुदुःखेऽपि निवसन्
व्यरंसीन्नो नैव प्रथयति जनः प्रीतिमधिकाम् ।
इदम् दृष्ट्वाप्यस्माद्विरमयितुमेनं च यतते
यतिर्याताख्यानैः परहितरतिं पश्य महतः ॥९७॥

इत्थं तथेति बहुना किमुदीरितेन
भूयस्त्वयैव ननु जन्मनि भुक्तमुक्तम् ।
एतावदेव कथितं तव संकलय्य
सर्वापदां पदमिदं जननं जनानाम् ॥९८॥

अन्तर्वान्तं वदनविवरे क्षुत्तृषार्त्तः प्रतीच्छन्
कर्मायत्तः सुचिरमुदरावस्करे वृद्धगृद्ध्या ।
निष्पन्दात्मा कृमिसहचरो जन्मनि क्लेशभीतो
मन्ये जन्मिन्नपि च मरणात्तन्निमित्ताद्बिभेषि ॥९९॥

अजाकृपाणीयमनुष्ठितं त्वया विकल्पमुग्धेन भवादितः पुरा ।
यदत्र किंचित्सुखरूपमाप्यते तदार्य विद्धचन्धकवर्तकीयकम्॥१००

हा कष्टमिष्टवनिताभिरकाण्ड एव
चण्डो विखण्डयति पण्डितमानिनोऽपि ।
पश्याद्भुतं तदपि धीरतया सहन्ते
दग्धुं तपोऽग्निभिरमुं न समुत्सहन्ते॥१०१॥

अर्थिभ्यस्तृणवद्विचिन्त्य विषयान् कश्चिच्छ्रियं दत्तवान्
पापां तामवितर्पिणीं विगणयन्नादात् परस्त्यक्तवान् ।
प्रागेवाकुशलां विमृश्य सुभगोऽप्यन्यो न पर्य्यग्रहीत्
एते ते विदितोत्तरोत्तरवराः सर्वोत्तमास्त्यागिनः ॥१०२॥

विरज्य संपदः सन्तस्त्यजन्ति किमिहाद्भुतम् ।
मा वमीत् किं जुगुप्सावान् सुभुक्तमपि भोजनम् ॥१०३॥

श्रियं त्यजन् जडः शोकं विस्मयं सात्त्विकं सताम् ।
करोति तत्त्वविच्चित्रं न शोकं न च विस्मयम् ॥१०४॥

विमृश्योच्चैर्गर्भात् प्रभृति मृतिपर्यन्तमखिलं
मुधाप्येतत्क्लेशाशुचिभयनिकाराघबहुलम् ।
बुधैस्त्याज्यं त्यागाद्यदि भवति मुक्तिश्च जडधीः
स कस्त्यक्तुं नालं खलजनसमायोगसदृशम् ॥१०५॥

कुबोध रागादि विचेष्टितैः फलं
त्वयापि भूयो जननादिलक्षणम् ।
प्रतीहि भव्यप्रतिलोमवर्त्तिभिः
ध्रुवं फलं प्राप्स्यसि तद्विलक्षणम् ।।१०६।।

दयादमत्यागसमाधिसंततेः पथि प्रयाहि प्रगुण प्रयत्नवान् ।
नयत्यवश्यं वचसामगोचर विकल्पदूरं परमं किमप्यसौ ।१०७।

विज्ञाननिहतमोहं कुटौ प्रवेशो विशुद्धकायमिव ।
त्यागः परिग्रहाणामवश्यमजरामरं कुरुते ।।१०८।।

अभुक्त्वापि परित्यागात् स्वोच्छिष्टं विश्वमासितम् ।
येन चित्रं नमस्तस्मै कौमारब्रह्मचारिणे ।।१०९।।

अकिंचनोऽहमित्यास्स्व त्रैलोक्याधिपतिर्भवेः ।
योगिगम्यं तव प्रोक्तं रहस्यं परमात्मनः ।।११०।।

दुर्लभमशुद्धमपसुखमविदितमृतिसमयमल्पपरमायुः
मानुष्यमिहैवतपोमुक्तिस्तपसैव तत्तपः कार्यम् ।।१११।।

आराध्यो भगवान् जगत्त्रयगुरुर्वृत्तिः सतां सम्मता
क्लेशस्तच्चरणस्मृतिः क्षतिरपि प्रप्रक्षयः कर्मणाम् ।
साध्यं सिद्धिसुखं कियान् परिमितः कालो मनः साधनं
सम्यक् चेतसि चिन्तयन्तु विधुरं किं वा समाधौ बुधाः ।११२।

द्रविणपवनप्राध्मातानां सुखं किमिहेक्ष्यते
किमपि किमयं कामव्याधः खलीकुरुते खलः ।
चरणमपि किं स्प्रष्टुं शक्ताः पराभवपासवो
वदत तपसोऽप्यन्यन्मान्य समीहितसाधनम् ।।११३।।

इहैव सहजान् रिपून् विजयते प्रकोपादिकान्
गुणाः परिणमन्ति यानसुभिरप्ययं वाञ्छति ।
पुरश्च पुरुषार्थसिद्धिरचिरात्स्वयं यायिनी
नरो न रमते कथं तपसि तापसंहारिणी ।।११४।।

तपोवल्यां देहः समुपचितपुण्यार्जितफलः
शृलाट्वग्रे यस्य प्रसव इव कालेन गलितः ।
व्यशुष्यच्चायुष्यं सलिलमिव संरक्षितपयः
स धन्यः संन्यासाहुतभुजि समाधानचरमम् ।।११५।।
अमी प्ररूढवैराग्यास्तनुमप्यनुपाल्य यत्
तपस्यन्ति चिरं तद्धि ज्ञातं ज्ञानस्य वैभवम् ।।११६।।
क्षणार्धमपि देहेन साहचर्यं सहेत कः ।
यदि प्रकोष्ठमादाय न स्याद्बोधो निरोधकः ।।११७।।
समस्तं साम्राज्यं तृणमिव परित्यज्य भगवान्
तपस्यन् निर्म्माणः क्षुधित इव दीनः परगृहान् ।
किलाटेद्भिक्षार्थी स्वयमलभमानोऽपि सुचिरं
न सोढव्यं किं वा परमिह परैः कार्यवशतः ।।११८।।
पुरा गर्भादिन्द्रो मुकुलितकरः किंकर इव
स्वयं स्रष्टा सृष्टेः पतिरथ निधीनां निजसुतः ।
क्षुधित्वा षण्मासान् स किल पुरुरप्याट जगती-
महो केनाप्यस्मिन् विलसितमलङ्घ्यं हतविधेः ।।११९।।
प्राक् प्रकाशप्रधानः स्यात् प्रदीप इव संयमी ।
पश्चात्तापप्रकाशाभ्यां भास्वानिव हि भासताम् ।।१२०।।
भूत्वा दीपोपमो धीमान् ज्ञानचारित्रभास्वरः ।
स्वमन्यं भासयत्येष प्रोद्वमत्कर्म (न कर्म) कज्जलम् ।१२१।
अशुभाच्छुभमायातः शुद्धः स्यादयमागमात् ।
रवेरप्राप्तसंध्यस्य तमसो न समुद्गमः ।।१२२।।
विधूततमसो रागस्तपःश्रुतनिबन्धनः ।
संध्याराग इवार्कस्य जन्तोरभ्युदयाय सः ।।१२३।।
विहाय व्याप्तमालोकं पुरस्कृत्य पुनस्तमः ।
रविवद्रागमागच्छन् पातालतलमृच्छति ।।१२४।।

ज्ञानं यत्र पुरःसरं सहचरी लज्जा तपः सम्बलं
चारित्रं शिविका निवेशनभुवः स्वर्गो गुणा रक्षकाः ।
पन्थाश्च प्रगुणं शमाम्बुबहुलश्छाया दयाभावना
यानं तं मुनिमापयेदभिमतं स्थानं विना विप्लवैः ॥१२५॥

मिथ्यादृष्टिवि ान् वदन्ति फणिनो दृष्टं तदा सुस्फुटं
यासामर्धविलोकनैरपि जगद् दह्यते सर्वतः ।
तास्त्वय्येव विलोमवर्तिनि भृश भ्राम्यन्ति बद्धक्रुधः
स्त्रीरूपेण विषं हि केवलमतस्तद्गोचरं मा स्म गाः ॥१२६॥

क्रुद्धाः प्राणहरा भवन्ति भुजगा दंष्ट्वैव काले क्वचित्
तेषामौषधयश्च सन्ति बहवः सद्यो विषव्युच्छिदः ।
हन्युः स्त्रीभुजगाः पुरेह च मुहुः क्रुद्धाः प्रसन्नास्तथा
योगीन्द्रानपि तान् निरौषधविषा दृष्टाश्च
दृष्ट्वापि च ॥१२७॥

एतामुत्तमनायिकामभिजनावर्ज्यां जगत्प्रेयसीं
मुक्तिश्रीललना गुणप्रणयिनीं गन्तुं तवेच्छा यदि ।
तां त्वं संस्कुरु वर्जयान्यवनितावार्तामपि प्रस्फुटं
तस्यामेव रतिं तनुष्व नितरां प्रायेण सेर्ष्याः स्त्रियः ॥१२८॥

वचनसलिलैर्हासस्वच्छैस्तरङ्गसुखोदरैः
वदनकमलैर्बाह्ये रम्याः स्त्रियः सरसीसमाः ।
इह हि बहवः प्रास्तप्रज्ञास्तटेऽपि पिपासवो
विषयविषमग्राहग्रस्ताः पुनर्न समुद्गताः ॥१२९॥

पापिष्ठैर्जगतीविधीतमभितः प्रज्वाल्य रागानलं
क्रुद्धैरिन्द्रिय लुब्धकैर्भयपदैः संत्रासिताः सर्वतः ।
हन्तैते शरणैषिणो जनमृगाः स्त्रीछद्मना निर्मितं
घातस्थानमुपाश्रयन्ति मदनव्याधाधिपस्याकुलाः ॥१३०॥

तपोवल्यां देहः समुपचितपुण्यार्जितफलः
श्लाट्वग्रे यस्य प्रसव इव कालेन गलितः ।
व्यशुष्यच्चायुष्यं सलिलमिव संरक्षितपयः
स धन्यः संन्यासाहुतभुजि समाधानचरमम् ॥११५॥
अमी प्ररूढवैराग्यास्तनुमप्यनुपाल्य यत्
तपस्यन्ति चिरं तद्धि ज्ञातं ज्ञानस्य वैभवम् ॥११६॥
क्षणार्धमपि देहेन साहचर्यं सहेत कः ।
यदि प्रकोष्ठमादाय न स्याद्बोधो निरोधकः ॥११७॥
समस्तं साम्राज्यं तृणमिव परित्यज्य भगवान्
तपस्यन् निर्माणः क्षुधित इव दीनः परगृहान् ।
किलाटेद्भिक्षार्थी स्वयमलभमानोऽपि सुचिरं
न सोढव्यं किं वा परमिह परैः कार्यवशतः ॥११८॥
पुरा गर्भादिन्द्रो मुकुलितकरः किंकर इव
स्वयं स्रष्टा सृष्टेः पतिरथ निधीनां निजसुतः ।
क्षुधित्वा षण्मासान् स किल पुरुरप्याट जगती-
महो केनाप्यस्मिन् विलसितमलङ्घ्यं हतविधेः ॥११९॥
प्राक् प्रकाशप्रधानः स्यात् प्रदीप इव मी ।
पश्चात्तापप्रकाशाभ्या भास्वानिव हि भासताम् ॥१२०॥
भूत्वा दीपोपमो धीमान् ज्ञानचारित्रभास्वरः ।
स्वमन्यं भासयत्येष प्रोद्वमत्कर्म (न कर्म) कज्जलम् ।१२१।
अशुभाच्छुभमायातः शुद्धः स्यादयमागमात् ।
रवेरप्राप्तसंध्यस्य तमसो न समुद्गमः ॥१२२॥
विधूततमसो रागस्तपःश्रुतनिबन्धनः ।
संध्याराग इवार्कस्य जन्तोरभ्युदयाय सः ॥१२३॥
विहाय व्याप्तमालोकं पुरस्कृत्य पुनस्तमः ।
रविवद्रागमागच्छन् पातालतलमृच्छति ॥१२४॥

ज्ञानं यत्र पुरःसरं सहचरी लज्जा तपः सम्बलं
चारित्रं शिविका निवेशनभुवः स्वर्गो गुणा रक्षकाः ।
पन्थाश्च प्रगुणं शमाम्बुबहुलश्छाया दयाभावना
यानं तं मुनिमापयेदभिमतं स्थानं विना विप्लवैः ॥१२५॥

मिथ्यादृष्टिविषान् वदन्ति फणिनो दृष्टं तदासुस्फुटं
यासामर्धविलोकनैरपि जगद्दह्यते सर्वतः ।
तास्त्वय्येव विलोमवर्तिनि भृशं भ्राम्यन्ति बद्धक्रुधः
स्त्रीरूपेण विषं हि केवलमतस्तद्गोचरं मा स्म गाः ॥१२६॥

क्रुद्धाः प्राणहरा भवन्ति भुजगा दंष्ट्वैव काले क्वचित्
तेषामौषधयश्च सन्ति बहवः सद्यो विषव्युच्छिदः ।
हन्युः स्त्रीभुजगाः पुरेह च मुहुः क्रुद्धाः प्रसन्नास्तथा
योगीन्द्रानपि तान् निरौषधविषा दृष्टाश्च
दृष्ट्वापि च ॥१२७॥

एतामुत्तमनायिकामभिजनावर्ज्या जगत्प्रेयसी
मुक्तिश्रीललनां गुणप्रणयिनीं गन्तुं तवेच्छा यदि ।
तां त्वं संस्कुरु वर्जयान्यवनितावार्तामपि प्रस्फुटं
तस्यामेव रतिं तनुष्व नितरां प्रायेण सेर्ष्याः स्त्रियः ॥१२८॥

वचनसलिलैर्हासस्वच्छैस्तरङ्गसुखोदरैः
वदनकमलैर्बाह्ये रम्याः स्त्रियः सरसीसमाः ।
इह हि बहवः प्रास्तप्रज्ञास्तटेऽपि पिपासवो
विषयविषमग्राहग्रस्ताः पुनर्न समुद्गताः ॥१२९॥

पापिष्ठैर्जगतीविधीतमभितः प्रज्वाल्य रागानलं
क्रुद्धैरिन्द्रिय लुब्धकैर्भयपदैः संत्रासिताः सर्वतः ।
हन्तैते शरणैषिणो जनमृगाः स्त्रीछद्मना निर्मितं
घातस्थानमुपाश्रयन्ति मदनव्याधाधिपस्याकुलाः ॥१३०॥

अपत्रप तपोऽग्निना भय जुगुप्सयोरास्पदं
शरीरमिदमर्धदग्धशववन्न किं पश्यसि ।
वृथा व्रजसि किं रतिं ननु न भीषयस्यातुरो
निसर्गतरलाः स्त्रियस्तदिह ताः स्फुटं बिभ्यति ॥१३१॥

उत्तुङ्गसंगतकुचाचलदुर्गदूर–
माराद्वलित्रयसरिद्विषमावतारम् ।
रोमावलीकुसृतिमार्गमनङ्गमूढाः
कान्ताकटीविवरमेत्य न केऽत्र खिन्नाः ॥१३२॥

वर्चोगृहं विषयिणां मदनायुधस्य
नाडीव्रणं विषमनिर्वृतिपर्वतस्य ।
प्रच्छन्नपादुकमनङ्गमहाहिरन्ध्र–
माहुर्बुधाः जघनरन्ध्रमदः सुदत्याः ॥१३३॥

अध्यास्यापि तपोवनं वत परे नारीकटीकोटरे
व्याकृष्टा ि यैः पतन्ति करिणः कूटावपाते यथा ।
प्रोचे प्रीतिकरी जनस्य जननीं प्राग्जन्मभूमिं च यो
व्यक्तं तस्य दुरात्मनो दुरुदितैर्मन्ये जगद्वञ्चितम् ॥१३४॥

कण्ठस्थः कालकूटोऽपि शम्भोः किमपि नाकरोत्
सोपि दन्दह्यते स्त्रीभिः स्त्रियो हि विषमं विषम् ॥१३५॥

तव युवतिशरीरे सर्वदोषैकपात्रे
रतिरमृतमयूखाद्यर्थसाधर्म्यतश्चेत् ।
ननु शुचिषु शुभेषु प्रीतिरेष्वेव साध्वी
मदनमधुमदान्धे प्रायशः को विवेकः ॥१३६॥

प्रियामनुभवत्स्वयं भवति कातरं केवलं
परेष्वनुभवत्सु तां विषयिषु स्फुटं ह्लादते ।
मनो ननु नपुंसकं त्विति न शब्दतश्चार्थतः
सुधी कथमनेन भयथा पुमान् जीयते ॥१३७॥

राज्यं सौजन्ययुक्तं श्रुतवदुरुतपः पूज्यमत्रापि यस्मात्
त्यक्त्वा राज्यं तपस्यन्नलघुरतिलघुः स्यात्तपः प्रोह्यराज्यम् ।
राज्यात्तस्मात्प्रपूज्यं तप इति मनसालोच्य धीमानुदग्रं
कुर्य्यादार्य्यः समग्रं प्रभवभयहरं सत्तपः पापभीरुः ॥१३८॥

पुरः शिरसि धार्यन्ते पुष्पाणि विबुधैरपि ।
पश्चात्पादोपि नास्प्राक्षीत् किं न कुर्य्याद् गुणक्षतिः ॥१३९॥

हे चन्द्रमः किमिति लाञ्छनवानभूस्त्वं
तद्वान् भवेः किमिति तन्मय एव नाभूः ।
किं ज्योत्स्नया मलमलं तव घोषयन्त्या
स्वर्भानुवन्ननु तथा सति नासि लक्ष्यः ॥१४०॥

विकाशयन्ति भव्यस्य मनोमुकुलमंशवः ।
रवेरिवारविन्दस्य कठोराश्च गुरूक्तयः ॥१४१॥

दोषान् कांश्चन तान् प्रवर्त्तकतया प्रच्छाद्य गच्छत्ययं
सार्द्धं तैः सहसा म्रियेद्यदि गुरुः पश्चात् करोत्येष किम् ।
तस्मान्मे न गुरुर्गुरुर्गुरुतरान् कृत्वा लघूंश्च स्फुटम्
ब्रूते यः सततं समीक्ष्य निपुणं सोऽयं खलः सद्गुरुः ॥१४२॥

लोकद्वयहितं वक्तुं श्रोतुञ्च सुलभाः पुरा ।
दुर्लभाः कर्त्तुमद्यत्वे वक्तुं श्रोतुं च दुर्लभाः ॥१४३॥

गुणागुणविवेकिभिर्विहितमप्यलं दूषणं
भवेत्सदुपदेशवन्मतिमतामतिप्रीतये ।
कृतं किमपि धाष्ट्र्यतः स्तवनमप्यतीर्थोषितैः
न तोषयति तन्मनांसि खलु कष्टमज्ञानता ॥१४४॥

त्यक्तहेत्वन्तरापेक्षौ गुणदोषनिबन्धनौ ।
यस्यादानपरित्यागौ स एव विदुषां वरः ॥१४५॥

हितं हित्वाऽहिते स्थित्वा दुर्धीर्दुःखायसे भृशम् ।
विपर्य्यये तयोरेधि त्वं सुखायिष्यसे सुधीः ॥१४६॥

इमे दोषास्तेषां प्रभवनममीभ्यो नियमितो
गुणाश्चैते तेषामपि भवनमेतेभ्य इति यः ।
त्यजंस्त्याज्यान् हेतून् झटिति हितहेतून् प्रतिभजन्
स विद्वान् सद्वृत्तः स हि स हि निधिः सौख्ययशसोः ॥१४७॥

साधारणौ सकलजन्तुषु वृद्धिनाशौ
जन्मान्तरार्जितशुभाशुभकर्मयोगात् ।
धीमान्स यः सुगतिसाधनवृद्धिनाश-
स्तद्व्यत्ययाद्विगतधीरपरोऽभ्यधायि ॥१४८॥

कलौ दण्डो नीतिः स च नृपतिभिस्ते नृपतयो ।
नयन्त्यर्थार्थं तं न च धनमदोऽस्त्याश्रमवताम् ।
नतानामाचार्या न हि नतिरताः साधुचरिता-
स्तपस्थेषु श्रीमन्मणय इव जाताः प्रविरलाः ॥१४९॥

एते ते मुनिमानिनः कवलिताः कान्तकटाक्षेक्षणै-
रङ्गालग्नशरावसन्नहरिणप्रख्या भ्रमन्त्याकुलाः ।
सन्धर्त्तुं विषयाटवीस्थलतले स्वान्क्वाप्यहो न ।
मा व्राजीन्मरुदाहताभ्रचपलैः ˙ गंमेभिर्भवान् ॥१५०॥

गेहं गुहा परिदधासि ि ाे विहाय
संयानमिष्टमशनं तपसोऽभिवृद्धिः ।
प्राप्तागमार्थं तव सन्ति गुणाः कलत्र-
मप्रार्थ्यवृत्तिरसि याति वृथैव याञ्चाम् ॥१५१॥

परमाणोः परं नाल्पं नभसो न महत्परम् ।
इति ब्रुवन् किमद्राक्षीि ाै दीनाभिमानिनौ ॥१५२॥

याचितुर्गौरवं दातुर्मन्ये संक्रान्तमन्यथा ।
तदवस्थौ कथं स्यातामेतौ गुरुलघू तदा ॥१५३॥

अधो ि क्षवो यान्ति यान्त्यूर्ध्वमि ः ।
इति स्पष्टं वदन्तौ वा नामोन्नामौ तुलान्तयोः ॥१५४॥

सस्वमाशासते सर्वं न स्वं तत्सर्वतर्पि यत् ।
अर्थिवैमुख्यसंपादिसस्वत्वान्निःस्वता वरम् ॥१५५॥
आशाखनिरतीवाभूदगाधा निधिभिश्च या ।
सापि येन समीभूता तत्ते मानधनं धनम् ॥१५६॥
आशाखनिरगाधेयमधः कृतजगत्त्रया ।
उत्सर्प्योत्सर्प्य तत्रस्थानहो सद्भिः समीकृता ॥१५७॥
विहितविधिना देहस्थित्यै तपांस्युपबृंहय-
न्नशनमपरैर्भक्त्या दत्तं क्वचित् कियदिच्छति ।
तदपि नितरां लज्जाहेतुः किलास्य महात्मनः
कथमयमहो गृह्णात्यन्यान्परिग्रहदुर्ग्रहान् ॥१५८॥
दातारो गृहचारिणः किल धनं देयं तदत्राशनं
गृह्णन्तः स्वशरीरतोऽपि विरताः सर्वोपकारेच्छया ।
लज्जैवैव मनस्विनां ननु पुनः कृत्वा कथं तत्फलं
रागद्वेषवशीभवन्ति तदिदं चक्रेश्वरत्वं कलेः ॥१५९॥
आमृष्टं सहजं तव त्रिजगतीबोधाधिपत्यं तथा
सौख्यं चात्मसमुद्भवं विनिहतं निर्मूलतः कर्मणा ।
दैन्यात्तद्विहितैस्त्वमिन्द्रियसुखैः सन्तृप्यसे निस्त्रपः
स त्वं यश्चिरयातनाकदशनैर्बद्धस्थितिस्तुष्यसि ॥१६०॥
तृष्णा भोगेषु चेद्भिक्षो सहस्वाल्पं स्वरेव ते ।
प्रतीक्ष्य पाकं किं पीत्वा पेयां भुक्तिं विनाशयेः ॥१६१॥
निर्धनत्वं धनं येषां मृत्युरेव हि जीवितम् ।
किं करोति विधिस्तेषां सतां ज्ञानैकचक्षुषाम् ॥१६२॥
जीविताशा धनाशा च येषां तेषां विधिर्विधिः ।
किं करोति विधिस्तेषां येषामाशा निराशता ॥१६३॥
परां कोटिं समारूढौ द्वावेव स्तुतिनिन्दयोः ।
यस्त्यजेत्तपसे चक्रं यस्तपो विषयाशया ॥१६४॥

इमे दोषास्तेषां प्रभवनममीभ्यो नियमि तो
गुणाश्चैते तेषामपि भवनमेतेभ्य इति यः ।
त्यजंस्त्याज्यान् हेतून् झटिति हितहेतून् प्रतिभजन्
स विद्वान् सद्वृत्तः स हि स हि निधिः सौख्ययशसोः ॥१४७॥

साधारणौ सकलजन्तुषु वृद्धिनाशौ
जन्मान्तरार्जितशुभाशुभकर्मयोगात् ।
धीमान्स यः सुगतिसाधनवृद्धिनाश-
स्तद्व्यत्ययाद्विगतधीरपरोऽभ्यधायि ॥१४८॥

कलौ दण्डो नीतिः स च नृपतिभिस्ते नृपतयो ।
नयन्त्यर्थार्थं तं न च धनमदोऽस्त्याश्रमवताम् ।
नतानामाचार्या न हि नतिरताः साधुचरिता-
स्तपस्थेषु श्रीमन्मणय इव ाः प्रविरलाः ॥१४९॥

एते ते मुनिमानिनः कवलिताः कान्तकटाक्षेक्षणै-
रङ्गालग्नशरावसन्नहरिणप्रख्या भ्रमन्त्याकुलाः ।
सन्धत्तुं विषयाटवीस्थलतले स्वान्क्वाप्यहो न ।
मा व्राजीन्मरुदाहताभ्रचपलैः गंमेभिर्भवान् ॥१५०॥

गेहं गुहा परिदधासि ि ो विहाय
संयानमिष्टम तपसोऽभिवृद्धिः ।
प्राप्तागमार्थं सन्ति गुणाः कलत्र-
मप्रार्थ्यवृत्तिरसि याति वृथैव याञ्चाम् ॥१५१॥

परमाणोः परं नाल्पं नभसो न महत्परम् ।
इति ब्रुवन् किमद्राक्षीति ौ दीनाभिमानिनौ ॥१५२॥

याचितुर्गौरवं दातुर्मन्ये संक्रान्तमन्यथा ।
तदवस्थौ कथं स्यातामेतौ गुरुलघू तदा ॥१५३॥

अधो जिघृक्षवो यान्ति यान्त्यूर्ध्वमजि ः ।
इति स्पष्टं वदन्तौ वा नामोन्नामौ तुलान्तयोः ॥१५४॥

सस्वमाशासते सर्वं न स्वं तत्सर्वतर्पि यत् ।
अर्थिवैमुख्यसंपादिसस्वत्वान्निःस्वता वरम् ॥१५५॥
आशाखनिरतीवाभूदगाधा निधिभिश्च या ।
सापि येन समीभूता तत्ते मानधनं धनम् ॥१५६॥
आशाखनिरगाधेयमधः कृतजगत्त्रया ।
उत्सर्प्योत्सर्प्य तत्रस्थानहो सद्भिः समीकृता ॥१५७॥
विहितविधिना देहस्थित्यै तपांस्युपबृंहय-
न्नशनमपरैर्भक्त्या दत्तं क्वचित् कियदिच्छति ।
तदपि नितरां लज्जाहेतुः किलास्य महात्मनः
कथमयमहो गृह्णात्यन्यान्परिग्रहदुर्ग्रहान् ॥१५८॥
दातारो गृहचारिणः किल धन देय तदत्राशनं
गृह्णन्तः स्वशरीरतोऽपि विरताः सर्वोपकारेच्छया ।
लज्जैषैव मनस्विनां ननु पुनः कृत्वा कथं तत्फलं
रागद्वेषवशीभवन्ति तदिदं चक्रेश्वरत्व कलेः ॥१५९॥
आमृष्टं सहजं तव त्रिजगतीबोधाधिपत्य तथा
सौख्यं चात्मसमुद्भवं विनिहत निर्मूलतः कर्मणा ।
दैन्यात्तद्विहितैस्त्वमिन्द्रियसुखैः सन्तृप्यसे निस्त्रपः
स त्वं यश्चिरयातनाकदशनैर्बद्धस्थितिस्तुष्यसि ॥१६०॥
तृष्णा भोगेषु चेद्भिक्षो सहस्वाल्प स्वरेव ते ।
प्रतीक्ष्य पाक किं पीत्वा पेया भुक्ति विनाशये: ॥१६१॥
निर्धनत्वं धनं येषा मृत्युरेव हि जीवितम् ।
किं करोति विधिस्तेषा सतां ज्ञानैकचक्षुषाम् ॥१६२॥
जीविताशा धनाशा च येषा तेषां विधिर्विधिः ।
किं करोति विधिस्तेषां येषामाशा निराशता ॥१६३॥
परां कोटिं समारूढौ द्वावेव स्तुतिनिन्दयोः ।
यस्त्यजेत्तपसे चक्रं यस्तपोविषयाशया ॥१६४॥

इमे दोषास्तेषां प्रभवनममीभ्यो नियमितो
गुणाश्चैते तेषामपि भवनमेतेभ्य इति यः।
त्यजंस्त्याज्यान् हेतून् झटिति हितहेतून् प्रतिभजन्
स विद्वान् सद्वृत्तः स हि स हि निधिः सौख्ययशसोः ।।१४७।।

साधारणौ सकलजन्तुषु वृद्धिनाशौ
जन्मान्तरार्जितशुभाशुभकर्मयोगात् ।
धीमान्स यः सुगतिसाधनवृद्धिनाश-
स्तद्व्यत्ययाद्विगतधीरपरोऽभ्यधायि ।।१४८।।

कलौ दण्डो नीतिः स च नृपतिभिस्ते नृपतयो।
नयन्त्यर्थार्थं तं न च धन तोऽस्त्याश्रमवताम्।
नतानामाचार्या न हि नतिरताः साधुचरिता-
स्तपस्थेषु श्रीमन्मरणय इव जाताः प्रविरलाः ।।१४९।।

एते ते मुनिमानिनः कवलिताः कान्तकटाक्षेक्षणै-
रङ्गालग्नशरावसन्नहरिणप्रख्या भ्रमन्त्याकुलाः।
सन्धत्तुं विषयाटवीस्थलतले स्वान्क्वाप्यहो न ।
मा व्राजीन्मरुदाहताभ्रचपलैः गंमेभिर्भवान् ।।१५०।।

गेहं गुहा परिदधासि दिशो विहाय
संयानमिष्टम तपसोऽभिवृद्धिः।
प्राप्तागमार्थ सन्ति गुणाः कलत्र-
मप्रार्थ्यवृत्तिरसि यासि वृथैव याञ्चाम् ।।१५१।।

परमाणोः परं नाल्पं नभसो न महत्परम्।
इति ब्रुवन् किमद्राक्षीन्निमौ दीनाभिमानिनौ ।।१५२।।

याचितुर्गौरवं दातुर्मन्ये संक्रान्तमन्यथा।
तदवस्थौ कथं स्यातामेतौ गुरुलघू तदा ।।१५३।।

अधो जिघृक्षवो यान्ति यान्त्यूर्ध्वमजि :।
इति स्पष्टं वदन्तौ वा नामोन्नामौ तुलान्तयोः ।।१५४।।

सस्वमाशासते सर्वं न स्वं तत्सर्वतापि यत् ।
अर्थिवैमुख्यसंपादिसस्वत्वान्निःस्वता वरम् ।।१५५।।
आशाखनिरतीवाभूदगाधा निधिभिश्च या ।
सापि येन समीभूता तत्ते मानधनं धनम् ।।१५६।।
आशाखनिरगाधेयमधः कृतजगत्त्रया ।
उत्सर्प्योत्सर्प्य तत्रस्थानहो सद्भिः समीकृता ।।१५७।।
विहितविधिना देहस्थित्यै तपास्युपबृंहय-
न्नशनमपरैर्भक्त्या दत्तं क्वचित् कियदिच्छति ।
तदपि नितरां लज्जाहेतुः किलास्य महात्मनः
कथमयमहो गृह्णात्यन्यान्परिग्रहदुर्ग्रहान् ।।१५८।।
दातारो गृहचारिणः किल धन देयं तदत्राशन
गृह्णन्तः स्वशरीरतोऽपि विरताः सर्वोपकारेच्छया ।
लज्जैषैव मनस्विनां ननु पुनः कृत्वा कथं तत्फलं
रागद्वेषवशीभवन्ति तदिदं चक्रेश्वरत्वं कलेः ।।१५९।।
आमृष्टं सहजं तव त्रिजगतीबोधाधिपत्यं तथा
सौख्यं चात्मसमुद्भवं विनिहतं निर्मूलतः कर्मणा ।
दैन्यात्तद्विहितैस्त्वमिन्द्रियसुखैः सन्तृप्यसे निस्त्रपः
स त्वं यश्चिरयातनाकदशनैर्बद्धस्थितिस्तुष्यसि ।।१६०।।
तृष्णा भोगेषु चेद्भिक्षो सहस्वाल्पं स्वरेव ते ।
प्रतीक्ष्य पाकं किं पीत्वा पेया भुक्तिं विनाशयेः ।।१६१।।
निर्धनत्वं धनं येषां मृत्युरेव हि जीवितम् ।
किं करोति विधिस्तेषां सतां ज्ञानैकचक्षुषाम् ।।१६२।।
जीविताशा धनाशा च येषां तेषां विधिर्विधिः ।
किं करोति विधिस्तेषां येषामाशा निराशता ।।१६३।।
परां कोटिं समारूढौ द्वावेव स्तुतिनिन्दयोः ।
यस्त्यजेत्तपसे चक्रं यस्तपोविषयाशया ।।१६४।।

त्यजतु तपसे चक्रं चक्री यतस्तपसः फलं
सुखमनुपमं स्वोप्तं (त्थं) नित्यं ततो न तदद्भुतम् ।
इदमिह महच्चित्रं यत्तद्विषं विषयात्मकं
पुनरपि सुधीस्त्यक्तं भोक्तुं जहाति महत्तपः ।।१६५।।

शय्यातलादपि तु कोऽपि भय प्रपाता-
तुङ्गात्तत. खलु विलोक्य किलात्मपीड़ाम् ।
चित्रं त्रिलोकशिखरादपि दूरतुङ्गा-
द्धीमान्स्वयं न तपसः पतनाद्बिभेति ।।१६५।।

विशुद्ध्यति दुराचारः सर्वोऽपि तपसा ध्रुवम् ।
करोति मलिनं तच्च किल सर्वाधरोऽपरः ।।१६७।।

सन्त्येव कौतुकशतानि जगत्सु किन्तु
विस्मापकं तदलमेतदिह द्वयं नः ।
पीत्वामृतं यदि वमन्ति विसृष्टपुण्याः
संप्राप्य संयमनिधिं यदि च त्यजन्ति ।।१६८।।

इह विनिहितबह्वारम्भबाह्योरुशत्रो-
रुपचितनिजशक्तेर्नापर. कोप्यपायः ।
अशनशयनयानस्थानदत्तावधानः
कुरु तव परिरक्षामान्तरान् हन्तुकामः ।।१६९।।

अनेकान्तात्मार्थप्रसवफलभारातिविनते
वचः पर्णाकीर्णे विपुलनयशाखाशतयुते ।
समुत्तुङ्गे सम्यक् प्रततमतिमूले प्रतिदिनं
श्रुतस्कन्धे धीमान् रमयतु मनोमर्कटममुम् ।।१७०।।

तदेव तदतद्रूपं प्राप्नुवन्न विरंस्यति ।
इति विश्वमनाद्यन्तं चिन्तयेद्विश्ववित्सदा ।।१७१।।

एकमेकक्षणे सिद्धं ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मकम् ।
अबाधितान्येतत्प्रत्ययान्यथानुपपत्तितः ।।१७२।।

न स्थास्नु न क्षणविनाशि न बोधमात्रं
नाभावमप्रतिहतप्रतिभासरोधात् ।
तत्त्वं प्रतिक्षणभवत्तदतत्स्वरूप-
माद्यन्तहीनमखिलं च तथा यथैकम् ॥१७३॥
ज्ञानस्वभावः स्यादात्मा स्वभावावाप्तिरच्युतिः ।
तस्मादच्युतिमाकांक्षन् भावयेज् ज्ञानभावनाम् ॥१७४॥
ज्ञानमेव फल ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनश्वरम् ।
अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते ॥१७५॥
शास्त्राग्नौ मणिवद्भव्यो विशुद्धो भाति निर्वृतः ।
अङ्गारवत् खलो दीप्तो मली वा भस्म वा भवेत् ॥१७६॥
मुहुः प्रसार्य्य सज्ज्ञान पश्यन् भावान् यथास्थितान् ।
प्रीत्यप्रीती निराकृत्य ध्यायेदध्यात्मविन्मुनिः ॥१७७॥
वेष्टनोद्वेष्टने यावत् तावद् भ्रान्तिर्भवार्णवे ।
आवृत्तिपरिवृत्ताभ्यां जन्तोर्मन्थानुकारिण. ॥१७८॥
मुच्यमानेन पाशेन भ्रान्तिर्बन्धश्च मन्थवत् ।
जन्तोस्तथासौ मोक्तव्यो येनाभ्रान्तिरबन्धनम् ॥१७९॥
रागद्वेषकृताभ्यां जन्तोर्बन्धः प्रवृत्त्यवृत्तिभ्याम् ।
तत्त्वज्ञानकृताभ्या ताभ्यामेवेक्ष्यते मोक्षः ॥१८०॥
द्वेषानुरागबुद्धिर्गुणदोषकृता करोति खलु पापम् ।
तद्विपरीता पुण्यं तदुभयरहिता तयोर्मोक्षम् ॥१८१॥
मोहबीजाद्रतिद्वेषौ बीजान् मूलाङ्कुराविव ।
तस्माज्ज्ञानाग्निना दाह्यं तदेतौ निर्दिधिक्षुणा ॥१८२॥
पुराणो ग्रहदोषोत्थो गम्भीरः सगतिः सरुक् ।
त्यागजात्यादिना मोहव्रणः शुद्धयति रोहति ॥१८३॥
सुहृदः सुखयन्तः स्युर्दुःखयन्तो यदि द्विषः ।
सुहृदोऽपि कथं शोच्या द्विषो दुःखयितुं मृताः ॥१८४॥

अपरमरणे मत्वात्मीयानलङ्घ्यतमे रुदन् ।
विलपतितरां स्वस्मिन् मृत्यौ तथास्य जडात्मनः ।।
विभयमरणे भूयः साध्यं यशः परजन्म वा ।
कथमिति सुधीः शोकं कुर्य्यान्मृतेऽपि न केनचित् ।।१८५।।
हानेः शोकस्ततो दुःखं लाभाद्रागस्ततः सुखम् ।
तेन हानावशोकः सन् सुखी स्यात् सर्वदा सुधीः ।।१८६।।
सुखी सुखमिहान्यत्र दुःखी दुःखं समश्नुते ।
सुखं सकलसंन्यासो दुःखं तस्य विपर्य्ययः ।।१८७।।
मृत्योर्मृत्यवन्तरप्राप्तिरुत्पत्तिरिह देहिनाम् ।
तव प्रमुदितान्मन्ये पाश्चात्ये पक्षपातिनः ।।१८८।।
अधीत्य सकलं श्रुतं चिरमुपास्य घोरं तपो
यदीच्छसि फलं तयोरिह हि लाभपूजादिकम् ।
छिनत्सि सुतपस्तरोः त्वमेव शून्याशयः ।
कथं समुपलप्स्यसे सुरसमस्य पक्वं फलम् ।।१८९।।
तथा श्रुतमधीत्य शश्वदिहलोकपंक्तिं विना
शरीरमपि शोषय प्रथितकायसंक्लेशनैः ।
कषायविषयद्विषो विजयसे यथा दुर्जयान्
शमं हि फलमामनन्ति मुनयस्तपः शास्त्रयोः ।।१९०।।
दृष्ट्वा जनं व्रजसि किं विषयाभिलाषं
स्वल्पोप्यसौ तव महज्जनयत्यनर्थम् ।
स्नेहाद्युपक्रमजुषो हि यथातुरस्य
दोषो निषिद्धचरणं न तथेतरस्य ।।१९१।।
अहितविहितप्रीतिः प्रीतं कलत्रमपि
सकृदपकृतं श्रुत्वा यो जहाति जनोप्ययम् ।
स्वहितनिरतः साक्षाद्दोषं समीक्ष्य भवे भवे
विषयविषवद्ग्रासाभ्यासं कथं कुरुते बुधः ।।१९२।।

आत्मन्नात्मविलोपनात्मचरितैरासीद्दुरात्मा चिरं
स्वात्मास्याः सकलात्मनीनचरितैरात्मीकृतैरात्मनः ।
आत्मेत्या परमात्मतां प्रतिपतन्प्रत्यात्मविद्यात्मकः
स्वात्मोऽत्थात्मसुखो निषीदसि लसन्नध्यात्ममध्यात्मना ॥१९३॥

अनेन सुचिरं पुरा त्वमिह दासवद्वाहित–
स्ततोऽनशनसामिभक्तरसवर्जनादिक्रमैः ।
क्रमेण विलयावधिस्थिरतपोविशेषैरिदं
कदर्थय शरीरकं रिपुमिवाद्य हस्तागतम् ॥१९४॥

आदौ तनोर्जननमत्र हतेन्द्रियाणि
काङ्क्षन्ति तानि वि यान् विषयाश्च मानः ।
हानिप्रयासभयपापकुयोनिदाः स्यु-
र्मूलं ततस्तनुरनर्थपरम्पराणाम् ॥१९५॥

शरीरमपि पुष्णन्ति सेवन्ते विषयानपि ।
नास्त्यहो दुष्करं नृणां विषाद्वाञ्छन्ति जीवितम् ॥१९६॥

इतस्ततश्च त्रस्यन्तो विभावर्य्यां यथा मृगाः ।
वनाद्विशन्त्युपग्रामं कलौ कष्टं तपस्विनः ॥१९७॥

वरं गार्हस्थ्यमेवाद्य तपसो भाविजन्मनः ।
सुस्त्रीकटाक्षलुण्टाकैः लुप्तवैराग्यसंपदः ॥१९८॥

स्वार्थभ्रशं त्वमविगणयंस्त्यक्तलज्जाभिमानः
संप्राप्तोऽस्मिन् परिभवशतैर्दुःखमेतत्कलत्रम् ।
नान्वेति त्वां पदमपि पदाद्विप्रलुब्धोऽसि भूयः
सख्यं साधो यदि मतिमान्माग्रहीर्विग्रहेण ॥१९९॥

न कोऽप्यन्योऽन्येन व्रजति समवाय गुणवता
गुणी केनापि त्वं समुपगतवान् रूपिभिरसौ ।

न ते रूपं ते यानुपव्रजसि तेषां गतमति-
स्ततश्छेद्यो भेद्यो भवसि भवदुःखे भववने ॥२००॥
माता जातिः पिता मृत्युराधिव्याधी सहोद्गतौ ।
प्रान्ते जन्तोर्जरा मित्रं तथाप्याशा शरीरके ॥२०१॥
शुद्धोऽप्यशेषविषयावगमोऽप्यमूर्तोऽ-
प्यात्मन् त्वमप्यतितरामशुचीकृतोऽसि ।
मूर्त्तं सदाऽशुचि विचेतनमन्यदत्र
किं वा न दूषयति धिग्धिगिदं शरीरम् ॥२०२॥
हा हतोऽसितरा जन्तो येनास्मिस्तव सांप्रतम् ।
ज्ञानं कायाऽशुचिज्ञानं तत्त्यागः किल साहसम् ॥२०३॥
अपि रोगादिभिर्वृद्धैर्न मुनिः खेदमृच्छति ।
उडुपस्थस्य कः क्षोभः प्रवृद्धेऽपि नदीजले ॥२०४॥
जातामयः प्रतिविधाय तनौ वसेद्वा
नो चेत्तनुं त्यजतु वा द्वितयी गतिः स्यात् ।
लग्नाग्निमावसति वह्निमपोह्य गेहं
निर्हाय वा व्रजति तत्र सुधीः किमास्ते ॥२०५॥
शिरस्थं भारमुत्तार्य्य स्कन्धे कृत्वा सुयत्नतः ।
शरीरस्थेन भारेण अज्ञानी मन्यते सुखम् ॥२०६॥
यावदस्ति प्रतीकारस्तावत्कुर्यात् प्रतिक्रियाम् ।
तथाप्यनुपशान्तानामनुद्वेगः प्रतिक्रिया ॥२०७॥
यदा यदा भवेज्जन्मो त्यक्त्वा मुक्तो भविष्यति ।
शरीरमेव तत्त्याज्यं किं शेषैः क्षुद्रकल्पनैः ॥२०८॥
नयत्सर्वाशुचिप्रायं शरीरमपि पूज्यताम् ।
सोऽप्यात्मा येन न स्पृश्यो दुश्चरित्रं धिगस्तु तत् ॥२०९॥
रसादिराद्यो भागः स्यात् ज्ञानावृत्यादिरन्वितः ।
ज्ञानादयस्तृतीयस्तु संसार्येवं त्रयात्मकः ॥२१०॥

भागत्रयमिदं नित्यमात्मानं बन्धवर्त्तिनम् ।
भागद्वयात् पृथक्कर्त्तुं यो जानाति स तत्त्ववित् ॥२११॥

करोतु न चिरं घोरं तपः क्लेशासहो भवान् ।
चित्तसाध्यान् कषायारीन्न जयेद्यत्तदज्ञता ॥२१२॥

हृदयसरसि यावन्निर्मलेऽप्यत्यगाधे
वसति खलु कषायग्राहचक्रं समन्तात् ।
श्रयति गुणगणोऽयं तन्न तावद्विशङ्कं
समदमयमशेषैस्तान् विजेतुं यतस्व ॥२१३॥

हित्वा हेतुफले किलात्र सुधियस्ता सिद्धिमामुत्रिकी
वाञ्छन्तः स्वयमेव साधनतया शंसन्ति शान्तं मनः ।
तेषामाखुबिडालिकेति तदिदं धिग्धिक्कलेः प्राभवं
येनैतेऽपि फलद्वयप्रलयनाद्दूरं विपर्य्यासिताः ॥२१४॥

उद्युक्तस्त्वं तपस्यस्यधिकमभिभवंस्त्वामगच्छन्कषायाः
प्राभूद्बोधोऽप्यगाधो जलमिव जलधौ किन्तु दुर्लक्ष्यमन्यैः ।
निर्व्यूढेऽपि प्रवाहे सलिलमिव मनाग्निम्नदेशेष्ववश्यं
मात्सर्य्यन्ते तुल्यैर्भवति परवशाद्दुर्जयं तज्जहीहि ॥२१५॥

चित्तस्थमप्यनवबुध्य हरेण जाड्या
क्रुद्ध्वा बहिः किमपि दग्धमनङ्गबुद्ध्या ।
घोरामवाप स हि तेन कृतामवस्थां
क्रोधोदयाद्भवति कस्य न कार्य्यहानिः ॥२१६॥

चक्रं विहाय निजदक्षिणबाहुसंस्थं
यत्प्राव्रजन्ननु तदैव स तेन मुक्तः ।
क्लेशं तमाप किल बाहुबली चिराय
मानो मनागपि हतिं महतीं करोति ॥२१७॥

सत्यं वाचि मतौ श्रुतं हृदि दया शौर्य्यं भुजे विक्रमो
लक्ष्मीर्दानमनूनमर्थिनिचये मार्गे गतिर्निर्वृते ।

येषां प्रागजनीह तेऽपि निरहङ्कारा: श्रुतेर्गोचरा-
श्चित्रं संप्रति लेशतोऽपि न गुणास्तेषां तथाप्युद्धता. ॥२१८॥
वसति भुवि समस्तं सापि संधारितान्तै-
रुदरमुपनिविष्टा सा च ते चापरस्य।
तदपि किल परेषां ज्ञानकोणे निलीनं
वहति कथमहिन्यो गर्वमात्माधिकेषु ॥२१९॥
यशो मारीचीयं कनकमृगमायामलिनितं
हतोऽश्वत्थामोक्त्या प्रणयिलघुरासीद्यमसुत:।
सकृष्ण: कृष्णोऽभूत्कपटबटुवेषेणनितरा-
मपिच्छद्माल्यं तद्विषमिव हि दुग्धस्य महत: ॥२२०॥
भेयं मायामहागर्तान्मिथ्याघनतमोमयात्।
यस्मिन् लीना न लक्ष्यन्ते क्रोधादिवि ाहय: ॥२२१॥
प्रच्छन्नकर्म मम कोऽपि न वेत्ति धीमान्
ध्वंसं गुणस्य महतोऽपि हि मेति मंस्था:।
कामं गिलन् धवलदीधितिधौतदाहो
गूढोऽप्यबोधि न विधु: सविधुन्तुद: कै: ॥२२२॥
वनचरभयाद्धावन् देवाल्यताकुलबालधि:
किल जडतया लोलो बालव्रजे विचलं स्थित:।
बत स चमरस्तेन प्राणैरपि प्रवियोजित:
परिणततृषा प्रायेणैवविधा हि विपत्तय: ॥२२३॥
विषयविरति: संगत्याग: कषायविनिग्रह:
शमयमदमास्तत्त्वाभ्यासस्तपश्चरणोद्यम:।
नियमितमनोवृत्तिर्भक्तिर्जिनेषु दयालुता
भवति कृतिन. संसाराब्धेस्तटे निकटे सति ॥२२४॥
यमनियमनितान्त: शान्तबाह्यान्तरात्मा
परिणमितसमाधि: सर्वसत्त्वानुकम्पी।

विहितहितमिताशी क्लेशजालं समूलं
दहति निहतनिद्रो निश्चिताध्यात्मसारः ॥२२५॥

समधिगतसमस्ताः सर्वसावद्यदूराः
स्वहितनिहितचित्ताः शान्तसर्वप्रचाराः ।
स्वपरसफलजल्पाः सर्वसंकल्पमुक्ताः
कथमिह न विमुक्तेर्भाजनं ते विमुक्ताः ॥२२६॥

दासत्वं विषयप्रभोर्गतवतामात्मापि येषां पर-
स्तेषां भो गुणदोषशून्यमनसां किं तत्पुनर्नश्यति ।
भेत्तव्यं भवतैव यस्य भुवनप्रद्योति रत्नत्रयं
भ्राम्यन्तीन्द्रियतस्कराश्च परितस्त्वं तन्मुहुर्जागृहि ॥२२७॥

रम्येषु वस्तुवनितादिषु वीतमोहो
मुह्येद्वृथा किमिति संयमसाधनेषु ।
धीमान् किमामयभयात्परिहृत्य भुक्तिं
पीत्वौषधं व्रजति जातुचिदप्यजीर्णम् ॥२२८॥

तपः श्रुतमिति द्वयं बहिरुदीर्य्य रूढं यथा
कृषीफलमिवालये समुपनीयते स्वात्मनि ।
कृषीवल इवोज्झितं करणचोरव्याधादिभि-
स्तदा हि मनुते यतिः स्वकृतकृत्यतां धीरधीः ॥२२९॥

दृष्टार्थस्य न मे किमप्ययमिति ज्ञानावलेपादमुं
नोपेक्षस्व जगत्त्रयैकडमरं निःशेषयाशाविषम् ।
पश्याम्भोनिधिमप्यगाधसलिलं चावाद्यते वाडवः
क्रोडीभूतविपक्षकस्य जगति प्रायेण शान्तिः कुतः ॥२३०॥

स्नेहानुबद्धहृदयो ज्ञानचरित्रान्वितोऽपि न श्लाघ्यः ।
दीप इवापादयिता कज्जलमलिनस्य कार्य्यस्य ॥२३१॥

येषा प्रागजनीह तेऽपि निरहङ्काराः श्रुतेर्गोचरा-
श्चित्रं संप्रति लेशतोऽपि न गुणास्तेषां तथाप्युद्धताः ।।२१८।।

वसति भुवि समस्तं सापि संधारितान्तै-
रुदरमुपनिविष्टा सा च ते चापरस्य ।
तदपि किल परेषां ज्ञानकोणे निलीनं
वहति कथमहिन्यो गर्वमात्माधिकेषु ।।२१९।।

यशो मारीचीयं कनकमृगमायामलिनितं
हतोऽश्वत्थामोक्त्या प्रणयिलघुरासीद्यमसुतः ।
सकृष्णः कृष्णोऽभूत्कपटबटुवेषेणनितरा-
मपिच्छद्माल्यं तद्विषमिव हि दुग्धस्य महतः ।।२२०।।

भेय मायामहागर्तान्मिथ्याघनतमोमयात् ।
यस्मिन् लीना न लक्ष्यन्ते क्रोधादिविषमाहयः ।।२२१।।

प्रच्छन्नकर्म मम कोऽपि न वेत्ति धीमान्
ध्वंस गुणस्य महतोऽपि हि मेति मंस्थाः ।
कामं गिलन् धवलदीधितिधौतदाहो
गूढोऽप्यबोधि न विधुः सविधुन्तुदः कैः ।।२२२।।

वनचरभयाद्धावन् देवाल्यताकुलबालधिः
किल जडतया लोलो बालव्रजे विचलं स्थितः ।
बत स चमरस्तेन प्राणैरपि प्रवियोजितः
परिणततृषां प्रायेणैवंविधा हि विपत्तयः ।।२२३।।

विषयविरतिः संगत्यागः कषायविनिग्रहः
शमयमदमास्तत्त्वाभ्यासस्तपश्चरणोद्यमः ।
नियमितमनोवृत्तिर्भक्तिर्जिनेषु दयालुता
भवति कृतिनः संसाराब्धेस्तटे निकटे सति ।।२२४।।

यमनियमनितान्तः शान्तबाह्यान्तरात्मा
परिणमितसमाधिः सर्वसत्त्वानुकम्पी ।

विहितहितमिताशी क्लेशजालं समूलं
दहति निहतनिद्रो निश्चिताध्यात्मसार. ॥२२५॥

समधिगतसमस्ताः सर्वसावद्यदूराः
स्वहितनिहितचित्ताः शान्तसर्वप्रचाराः ।
स्वपरसफलजल्पाः सर्वसंकल्पमुक्ताः
कथमिह न विमुक्तेर्भाजनं ते विमुक्ताः ॥२२६॥

दासत्वं विषयप्रभोर्गतवतामात्मापि येषां पर-
स्तेषां भो गुणदोषशून्यमनसां किं तत्पुनर्नश्यति ।
भेत्तव्यं भवतैव यस्य भुवनप्रद्योति रत्नत्रयं
भ्राम्यन्तीन्द्रियतस्कराश्च परितस्त्वं तन्मुहुर्जागृहि ॥२२७॥

रम्येषु वस्तुवनितादिषु वीतमोहो
मुह्येद्वृथा किमिति संयमसाधनेषु ।
धीमान् किमामयभयात्परिहृत्य भुक्तिं
पीत्वौषधं व्रजति जातुचिदप्यजीर्णम् ॥२२८॥

तपः श्रुतमिति द्वयं बहिरुदीर्य्य रूढं यथा
कृषीफलमिवालये समुपनीयते स्वात्मनि ।
कृषीवल इवोज्झित करणचोरव्याधादिभि-
स्तदा हि मनुते यतिः स्वकृतकृत्यतां धीरधीः ॥२२९॥

दृष्टार्थस्य न मे किमप्ययमिति ज्ञानावलेपादमुं
नोपेक्षस्व जगत्त्रयैकडमरं निःशेषयाशाविषम् ।
पश्याम्भोनिधिमप्यगाधसलिलं चावाद्यते वाडवः
क्रोडीभूतविपक्षकस्य जगति प्रायेण शान्तिः कुतः ॥२३०॥

स्नेहानुबद्धहृदयो ज्ञानचरित्रान्वितोऽपि न श्लाघ्यः ।
दीप इवापादयिता कज्जलमलिनस्य कार्य्यस्य ॥२३१॥

येषां प्रागजनीह तेऽपि निरहङ्काराः श्रुतेर्गोचरा-
श्चित्रं संप्रति लेशतोऽपि न गुणास्तेषां तथाप्युद्धता. ॥२१८॥

वसति भुवि समस्तं सापि संधारितान्तै-
रुदरमुपनिविष्टा सा च ते चापरस्य।
तदपि किल परेषां ज्ञानकोणे निलीनं
वहति कथमहिन्यो गर्वमात्माधिकेषु ॥२१९॥

यशो मारीचीयं कनकमृगमायामलिनितं
हतोऽश्वत्थामोक्त्या प्रणयिलघुरासीद्यमसुतः।
सकृष्णः कृष्णोऽभूत्कपटबटुवेषेणनितरा-
मपिच्छद्मात्यं तद्विषमिव हि दुग्धस्य महतः ॥२२०॥

भेयं मायामहागर्तान्मिथ्याघनतमोमयात्।
यस्मिन् लीना न लक्ष्यन्ते क्रोधादिविषमाहयः ॥२२१॥

प्रच्छन्नकर्म मम कोऽपि न वेत्ति धीमान्
ध्वंसं गुणस्य महतोऽपि हि मेति मस्थाः।
कामं गिलन् धवलदीधितिधौतदाहो
गूढोऽप्यबोधि न विधुः सविधुन्तुदः कैः ॥२२२॥

रभयाद्धावन् देवाल्यताकुलबालधिः
किल जडतया लोलो बालव्रजे विचलं स्थितः।
बत स चमरस्तेन प्राणैरपि प्रवियोजितः
परिणततृषा प्रायेणैवंविधा हि विपत्तयः ॥२२३॥

विषयविरतिः संगत्यागः कषायविनिग्रहः
शमयमदमास्तत्त्वाभ्यासस्तपश्चरणोद्यमः।
नियमितमनोवृत्तिर्भक्तिर्जिनेषु दयालुता
भवति कृतिनः संसाराब्धेस्तटे निकटे सति ॥२२४॥

यमनियमनितान्तः शान्तबाह्यान्तरात्मा
परिणमितसमाधिः सर्वसत्त्वानुकम्पी।

विहितहितमिताशी क्लेशजालं समूलं
दहति निहतनिद्रो निश्चिताध्यात्मसार ॥२२५॥

समधिगतसमस्ताः सर्वसावद्यदूराः
स्वहितनिहितचित्ता. शान्तसर्वप्रचाराः ।
स्वपरसफलजल्पाः सर्वसंकल्पमुक्ताः
कथमिह न विमुक्तेर्भाजनं ते विमुक्ताः ॥२२६॥

दासत्वं विषयप्रभोर्गतवतामात्मापि येषा पर-
स्तेषां भो गुणदोषशून्यमनसां किं तत्पुनर्नश्यति ।
भेत्तव्यं भवतैव यस्य भुवनप्रद्योति रत्नत्रयं
भ्राम्यन्तीन्द्रियतस्कराश्च परितस्त्वं तन्मुहुर्जागृहि ॥२२७॥

रम्येषु वस्तुवनितादिषु वीतमोहो
मुह्येद्वृथा किमिति संयमसाधनेषु ।
धीमान् किमामयभयात्परिहृत्य भुक्तिं
पीत्वौषधं व्रजति जातुचिदप्यजीर्णम् ॥२२८॥

तपः श्रुतमिति द्वयं बहिरुदीर्य्य रूढं यथा
कृषीफलमिवालये समुपनीयते स्वात्मनि ।
कृषीवल इवोज्झितं करणचोरव्याधादिभि-
स्तदा हि मनुते यतिः स्वकृतकृत्यतां धीरधीः ॥२२९॥

दृष्टार्थस्य न मे किमप्ययमिति ज्ञानावलेपादमुं
नोपेक्षस्व जगत्त्रयैकडमरं निःशेषयाशाविषम् ।
पश्याम्भोनिधिमप्यगाधसलिलं चावाद्यते वाडवः
क्रोडीभूतविपक्षकस्य जगति प्रायेण शान्तिः कुतः ॥२३०॥

स्नेहानुबद्धहृदयो ज्ञानचरित्रान्वितोऽपि न श्लाघ्यः ।
दीप इवापादयिता कज्जलमलिनस्य कार्य्यस्य ॥२३१॥

रतेररतिमायातः पुनारतिमुपागतः ।
तृतीयं पदमप्राप्य बालिशो वत सीदसि ॥२३२॥

तावद्दुःखाग्नितप्तात्माऽयःपिण्ड इव सीदसि ।
निर्वासिनिर्वृताम्भोधौ यावत्त्वं न निमज्जसि ॥२३३॥

मंक्षुमोक्षं सुसम्यक्त्व सत्यंकारस्वसात्कृतम् ।
ज्ञानचारित्रसाकल्यमूलेन स्वकरे कुरु ॥२३४॥

अशेषमद्वैतमभोग्यभोग्यं
निर्वृत्तिवृत्त्योः परमार्थकोट्याम् ।
अभोग्यभोग्यात्मविकल्पबुद्ध्या
निवृत्तिमभ्यस्यतु मोक्षकाङ्क्षी ॥२३५॥

निर्वृतिं भावयेद्यावन्निवर्त्यं तदभावतः ।
न वृत्तिर्न निवृत्तिश्च तदेवपदमव्ययम् ॥२३६॥

रागद्वेषौ प्रवृत्तिः स्यान्निवृत्तिस्तन्निषेधनम् ।
तौ च बाह्यार्थसम्बद्धौ तस्मात्तांश्च परित्यजेत् ॥२३७॥

भावयामि भवाऽऽवर्त्ते भावनाः प्रागभाविताः ।
भावये भाविता नेति भवाभावाय भावनाः ॥२३८॥

शुभाशुभे पुण्यपापे सुखदुःखे च षट्त्रयं ।
हितमाद्यमनुष्ठेयं शेषत्रयमथाहितम् ॥२३९॥

तत्राप्याद्यं परित्याज्य शेषौ न स्तः स्वतः स्वयम् ।
शुभं च शुद्धे त्यक्त्वान्ते प्राप्नोति परमं पदम् ॥२४०॥

अस्त्यात्मास्तमितादिबन्धनगतस्तद्बन्धनान्यास्रवै-
स्ते क्रोधादिकृताः प्रमादजनिताः क्रोधादयस्ते तु ।
मिथ्यात्वोपचितात् स एव समलः कालादिलब्धौ क्वचित्
सम्यक्त्वव्रतद ाऽकलुषतायोगैः न्मुच्यते ॥२४१॥

ममेदमहमस्येति प्रीतिरीतिरिवोत्थिता ।
क्षेत्रे क्षेत्रीयते यावत्तावत् काशा तपःफले ॥२४२॥

मामन्यमन्यं मां मत्त्वा भ्रान्तो भ्रान्तौ भवार्णवे ।
नान्योऽहमहमेवाहमन्योऽन्योऽन्योऽहमस्मि न ॥२४३॥

बन्धो जन्मनि येन येन निबिडं निष्पादितो वस्तुना
बाह्यार्थैकरतेः पुरा परिणतप्रज्ञात्मनः साम्प्रतम् ।
तत्तन्निधनाय साधनमभूद्वैराग्यकाष्ठास्पृशो
दुर्बोध हि तदन्यदेव विदुषामप्राकृतं कौशलम् ॥२४४॥

अधिकः क्वचिदाश्लेषः क्वचिद्धीनः क्वचित्समः ।
क्वचिद्विश्लेष एवाय बन्धमोक्षक्रमो मत. ॥२४५॥

यस्य पुण्यं च पापं च निष्फलं गलति स्वयम् ।
स योगी तस्य निर्वाण न तस्य पुनरास्रवः ॥२४६॥

महातपस्तडागस्य संभृतस्य गुणाम्भसा ।
मर्य्यादापालिबन्धेऽल्पामप्युपेक्षिष्ट मा क्षतिम् ॥२४७॥

दृढगुप्तिकपाटसंवृतिर्धृतिभित्तिर्मतिपादसंभृतिः ।
यतिरल्पमपि प्रपद्य रन्ध्रं कुटिलैर्विक्रियते गृहाकृतिः ॥२४८॥

स्वान्दोषान्हन्तुमुद्युक्तः तपोभिरतिदुर्द्धरैः ।
तानेव पोषयत्यज्ञः परदोषकथाशनैः ॥२४९॥

दोषः सर्वगुणाकरस्य महतो दैवानुरोधात्क्वचि-
द्यातो यद्यपि चन्द्रलाञ्छनममस्तं द्रष्टुमन्धोऽप्यलम् ।
दृष्टाप्नोति न तावदस्य पदवीमिन्दोः कलङ्कं जग-
द्विश्वं पश्यति तत्प्रभाप्रकटितं किं कोऽप्यगात्तत्पदम् ॥२५०॥

यद्यदाचरितं पूर्वं तत्तदज्ञानचेष्टितम् ।
उत्तरोत्तरविज्ञानाद्योगिनः प्रतिभासते ॥२५१॥

अपि सुतपसामाशावल्लीशिखा तरुणायते
भवति हि मनोमूले यावन्ममत्वजलार्द्रता।
इति कृतधियः कृच्छ्रारम्भैश्चरन्ति निरन्तरं
चिरपरिचिते देहेऽप्यस्मिन्नतीव गतस्पृहाः ॥२५२॥

क्षीरनीरवदभेदरूपतस्तिष्ठतोरपि च देहदेहिनोः।
भेद एव यदि भेदवत्स्वलं बाह्यवस्तुषु वदात्र का कथा
॥२५३॥

तप्तोऽहं देहसंयोगाज्जलं वाऽनलसंगमात्।
इह देहं परित्यज्य शीतीभूताः शिवैषिणः ॥२५४॥

अनादिचयसंबद्धो महामोहो हृदि स्थितः।
सम्यग्योगेन यैर्वान्तस्तेषामूर्ध्वं विशुद्धयति ॥२५५॥

एकैश्वर्य्यमिहैकतामभिमतावाप्तिं शरीरच्युतिं
दुःखं दुष्कृतनिष्कृतिं सुखमलं संसारसौख्योज्झनम्।
सर्वत्यागमहोत्सवव्यतिकरं प्राणव्ययं पश्यताम्
किं तद्यन्न सुखाय तेन सुखिनः सत्यं सदा साधवः ॥२५६॥

आकृष्योग्रतपोबलैरुदयगो (गं) पुच्छं यदानीयते
तत्कर्म स्वयमागतं यदि विदः को नाम खेदस्ततः।
यातव्यो विजिगीषुणा यदि भवेदारम्भकोऽरिः स्वयं
वृद्धिः प्रत्युत नेतुरप्रतिहता तद्विग्रहे कः क्षयः ॥२५७॥

एकाकित्वप्रतिज्ञाः सकलमपि समुत्सृज्य सर्वं सहत्वात्
भ्रान्त्याचिन्त्याः सहायं तनुमिव सहसालोच्य किंचित्सलज्जाः।
सज्जीभूताः स्वकार्य्ये तदपगमविधिं बद्धपल्यङ्कबन्धा
ध्यायन्ति ध्वस्तमोहा गिरिगहनगुहागुह्यगेहे नृसिंहाः ॥२५८॥

येषां भूषणमङ्गसंगतरजः स्थानं शिलायास्तलम्
शय्या शर्करिला मही सुविहितं गेहं गुहा द्वीपिनम्।

आत्मात्मीयविकल्पवीतमतयस्त्रुट्यत्तमोग्रन्थय-
स्ते नो ज्ञानधना मनांसि पुनता मुक्तिस्पृहा निस्पृहाः ॥२५९॥

दूरारूढतपोऽनुभावजनितज्योतिः समुत्सर्पणै-
रन्तस्तत्त्वमदः कथं कथमपि प्राप्य प्रसादं गताः।
विश्रब्धं हरिणी विलोलनयनैरापीयमाना वने
धन्यास्ते गमयन्त्यचिन्त्यचरितैर्धीराश्चिरं वासरान् ॥२६०॥

येषां बुद्धिरलक्ष्यमाणभिदयोराशात्मनोरन्तरं
गत्वोच्चैरविधाय भेदमनयोरारान्न विश्राम्यति।
यैरन्तर्विनिवेशिताः शमधनैर्बाढं बहिर्व्याप्तयः
तेषां नोऽत्र पवित्रयन्तु परमाः पादोत्थिताः पांशवः ॥२६१॥

यत्प्राग्जन्मनि संचितं तनुभृता कर्माशुभं वा शुभं
तद्दैवं तदुदीरणादनुभवन् दुःखं सुखं वागतम्।
कुर्याद्यः शुभमेव सोऽप्यभिमतो यस्तूभयोच्छित्तये
सर्वारम्भपरिग्रहपरित्यागी स वन्द्यः सताम् ॥२६२॥

सुखं दुःखं वा स्यादिह विहितकर्मोदयवशात्
कुतः प्रीतिस्तापः कुत इति विकल्पाद्यदि भवेत्।
उदासीनस्तस्य प्रगलितपुराणं न हि नवं
समास्कन्दत्येषः स्फुरति सुविदग्धो मणिरिव ॥२६३॥

सकलविमलबोधो देहगेहे विनिर्यन्
ज्वलन इव स काष्ठं निष्ठुरं भस्मयित्वा।
पुनरपि तदभावे प्रज्वलत्युज्वलः सन्
भवति हि यतिवृत्तं सर्वथाश्चर्यभूमिः ॥२६४॥

गुणी गुणमयस्तस्य नाशस्तन्नाश इष्यते।
अतएव हि निर्वाणं शून्यमन्यैर्विकल्पितम् ॥२६५॥

अजातोऽनश्वरोऽमूर्त्तः कर्ता भोक्ता सुखी बुधः ।
देहमात्रो मलैर्मुक्तो गत्वोर्ध्वमचलः प्रभुः ।।२६६।।

स्वाधीन्याद्दुःखमप्यासीत्सुखं यदि तपस्विनाम् ।
स्वाधीनसुखसम्पन्ना न सिद्धाः सुखिनः कथम् ।।२६७।।

इति कतिपयवाचां गोचरीकृत्य कृत्यं
　　चरितमुचितमुच्चैश्चेतसां चित्तरम्यम् ।
इदमविकलमन्तः सन्ततं चिन्तयन्तः
　　सपदि विपदपेतामाश्रयन्तु श्रियं ते ।।२६८।।

जिनसेनाचार्य्यपादस्मरणाधीनचेतसाम् ।
गुणभद्रभदन्तानां कृतिरात्मानुशासनम् ।।२६९।।

ऋषभो नाभिसूनुर्यो भूयात्स भविकाय वः ।
यज्ज्ञानसरसि विश्वं सरोजमिव भासते ।।२७०।।

इति श्रीगुणभद्रभदन्तकृतमात्मानुशासनम् ।

जल के श्रोत को तुम जितना खोदोगे उतना ही अधिक पानी निकलेगा । ठीक उसी प्रकार तुम जितना ही अधिक सीखोगे उतनी ही तुम्हारी विद्या मे वृद्धि होगी । अत ,यद्यपि तुम्हे गुरु या शिक्षक के सामने उतना ही अपमानित और नीचा बनना पडे, जितना कि एक भिक्षुक को धनवान के समक्ष बनना पडता है, तथापि तुम विद्या सीखो क्योकि मनुष्यो मे अधम वे ही है जो विद्या सीखने से विमुख होते हैं ।

श्रीमत्पूज्यपादस्वामिविरचितं

माधिशतकम्

सिद्ध जिनेंद्रमलमप्रतिमप्रबोध
निर्वाणमार्गममल विबुधेन्द्रवन्द्यम् ।
ससारसागरसमुत्तरणप्रपोत
वक्ष्ये समाधिशतक प्रणिपत्य वीरम् ॥१॥

येनात्माऽबुध्यतात्मैव परत्वेनैव चापरम् ।
अक्षयानन्तबोधाय तस्मै सिद्धात्मने नमः ॥१॥

जयन्ति यस्यावदतोऽपि भारती-
विभूतयस्तीर्थंकृतोऽप्यनीहितुः ।
शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे
जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः ॥२॥

श्रुतेन लिङ्गेन यथात्मशक्ति
समाहितान्तःकरणेन सम्यक् ।
समीक्ष्य कैवल्यसुखस्पृहाणां
विविक्तमात्मानमथाभिधास्ये ॥३॥

बहिरन्तः परश्चेति त्रिधात्मा सर्वदेहिषु ।
उपेयात्तत्र परमं मध्योपायाद्बहिस्त्यजेत् ॥४॥

बहिरात्मा शरीरादौ जातात्मभ्रान्तिरान्तरः ।
चित्तदोषात्मविभ्रान्तिः परमात्मातिनिर्मलः ॥५॥

निर्मलः केवलः सिद्धो विविक्तः प्रभुरक्षयः ।
परमेष्ठी परात्मेति परमात्मेश्वरो जिनः ॥६॥

बहिरात्मेन्द्रियद्वारैरात्मज्ञानपराङ्मुखः ।
स्फुरितश्चात्मनो देहमात्मत्वेनाध्यवस्यति ॥७॥

नरदेहस्थमात्मानमविद्वान्मन्यते नरम् ।
तिर्यञ्चं तिर्यगङ्गस्थं सुराङ्गस्थं सुरं तथा ॥८॥
नारकं नारकाङ्गस्थं न स्वयं तत्त्वतस्तथा ।
अनन्तानन्तधीशक्तिः स्वसंवेद्योऽचलस्थितिः ॥९॥
स्वदेहसदृशं दृष्ट्वा परदेहमचेतनम् ।
परात्माधिष्ठतं मूढः परत्वेनाध्यवस्यति ॥१०॥
स्वपराध्यवसायेन देहेष्वविदितात्मनाम् ।
वर्त्तते विभ्रमः पुंसां पुत्रभार्यादिगोचरः ॥११॥
अविद्यासंज्ञितस्तस्मात्संस्कारो जायते दृढः ।
येन लोकोऽङ्गमेव स्वं पुनरप्यभिमन्यते ॥१२॥
देहे स्वबुद्धिरात्मानं युनक्त्येतेन नि ात् ।
स्वात्मन्येवात्मधीस्तस्माद्वियोजयति देहिनम् ॥१३॥
देहेष्वात्मधिया जाताः पुत्रभार्यादिकल्पनाः ।
सम्पत्तिमात्मनस्ताभिर्मन्यते हा हतं जगत् ॥१४॥
मूलं संसारदुःखस्य देह एवात्मधीस्ततः ।
त्यक्त्वैनां प्रविशेदन्तर्बहिरव्यावृतेन्द्रियः ॥१५॥
मत्तश्च्युत्वेन्द्रियद्वारैः पतितो ि येष्वहम् ।
तान्प्रपद्याहमिति मां पुरवेद न तत्त्वतः ॥१६॥
एवं त्यक्त्वा बहिर्वाचं त्यजेदन्तरशेषतः ।
एष योगः समासेन प्रदीपः परमात्मनः ॥१७॥
यन्मया दृश्यते रूपं तन्न जानाति था ।
जा दृश्यते रूपं ततः केन ोम्यहम् ॥१८॥
यत्परैः प्रतिपाद्योऽहं यत्परान्प्रतिपादये ।
उन्मत्तचेष्टितं तन्मे यदहं निर्विकल्पकः ॥१९॥
यदग्राह्यं न गृह्णाति गृहीतं नापि मुञ्चति ।
जानाति सर्वथा तत्स्वसंवे स्म्यहम् ॥२०॥

उत्पन्नपुरुषभ्रान्तेः स्थाणौ यद्वद्विचेष्टितम् ।
तद्वन्मे चेष्टितं पूर्वं देहादिष्वात्मविभ्रमात् ॥२१॥

यथासौ चेष्टते स्थाणौ निवृत्ते पुरुषाग्रहे ।
तथाचेष्टोऽस्मि देहादौ विनिवृत्तात्मविभ्रमः ॥२२॥

येनात्मनाऽनुभूयेऽहमात्मनैवात्मनात्मनि ।
सोऽहं न तन्न सा नासौ नैको न द्वौ न वा बहु. ॥२३॥

यदभावे सुषुप्तोऽहं यद्भावे व्युत्थितः पुनः ।
अतीन्द्रियमनिर्देश्यं तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम् ॥२४॥

क्षीयन्तेऽत्रैव रागाद्यास्तत्त्वतो मां प्रपश्यतः ।
बोधात्मानं ततः कश्चिन्न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥२५॥

मामपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ।
मां प्रपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥२६॥

त्यक्त्वैव बहिरात्मानमन्तरात्मव्यवस्थितः ।
भावयेत्परमात्मानं सर्वसङ्कल्पवर्जितम् ॥२७॥

सोऽहमित्यात्तसंस्कारस्तस्मिन् भावनया पुनः ।
तत्रैव दृढसंस्काराल्लभते ह्यात्मनि स्थितम् ॥२८॥

मूढात्मा यत्र विश्वस्तस्ततो नान्यद्भयास्पदम् ।
यतो भीतस्ततो नान्यदभयस्थानमात्मनः ॥२९॥

सर्वेन्द्रियाणि संयम्य स्तिमितेनान्तरात्मना ।
यत्क्षणं पश्यतो भाति तत्तत्त्वं परमात्मना ॥३०॥

यः परात्मा स एवाहं योऽहं स परमस्ततः ।
अहमेव मयोपास्यो नान्यः कश्चिदिति स्थितिः ॥३१॥

प्राच्याव्य विषयेभ्योऽहं मां मयैव मयि स्थितम् ।
बोधात्मानं प्रपन्नोऽस्मि परमानन्दनिर्वृतिम् ॥३२॥

यो न वेत्ति परं देहादेवमात्मानमव्ययम् ।
लभते न स निर्वाणं तप्त्वापि परमं तपः ॥३३॥

नरदेहस्थमात्मानमविद्वान्मन्यते नरम् ।
तिर्यञ्चं तिर्यगङ्गस्थं सुराङ्गस्थं सुरं तथा ॥८॥
नारकं नारकाङ्गस्थं न स्वयं तत्त्वतस्तथा ।
अनन्तानन्तधीशक्तिः स्वसंवेद्योऽचलस्थितिः ॥९॥
स्वदेहसदृशं दृष्ट्वा परदेहमचेतनम् ।
परात्माधिष्ठतं मूढः परत्वेनाध्यवस्यति ॥१०॥
स्वपराध्यवसायेन देहेष्वविदितात्मनाम् ।
वर्त्तते विभ्रमः पुंसां पुत्रभार्यादिगोचरः ॥११॥
अविद्यासंज्ञितस्तस्मात्संस्कारो जायते दृढः ।
येन लोकोऽङ्गमेव स्वं पुनरप्यभिमन्यते ॥१२॥
देहे स्वबुद्धिरात्मानं युनक्त्येतेन निश्चयात् ।
स्वात्मन्येवात्मधीस्तस्माद्वियोजयति देहिनम् ॥१३॥
देहेष्वात्मधिया जाताः पुत्रभार्यादिकल्पनाः ।
सम्पत्तिमात्मनस्ताभिर्मन्यते हा हतं जगत् ॥१४॥
मूलं संसारदुःखस्य देह एवात्मधीस्ततः ।
त्यक्त्वैनां प्रविशेदन्तर्बहिरव्यावृतेन्द्रियः ॥१५॥
मत्तश्च्युत्वेन्द्रियद्वारैः पतितो विषयेष्वहम् ।
तान्प्रपद्याहमिति मां पुरवेद न तत्त्वतः ॥१६॥
एवं त्यक्त्वा बहिर्वाचं त्यजेदन्तरशेषतः ।
एष योगः समासेन प्रदीपः परमात्मनः ॥१७॥
यन्मया दृश्यते रूपं तन्न जानाति सर्वथा ।
जानन्न दृश्यते रूपं ततः केन ब्रवीम्यहम् ॥१८॥
यत्परैः प्रतिपाद्योऽहं यत्परान्प्रतिपादये ।
उन्मत्तचेष्टितं तन्मे यदहं निर्विकल्पकः ॥१९॥
यदग्राह्यं न गृह्णाति गृहीतं नापि मुञ्चति ।
जानाति सर्वथा सर्वं तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम् ॥२०॥

उत्पन्नपुरुषभ्रान्तेः स्थाणौ यद्वद्विचेष्टितम् ।
तद्वन्मे चेष्टितं पूर्वं देहादिष्वात्मविभ्रमात् ॥२१॥
यथासौ चेष्टते स्थाणौ निवृत्ते पुरुषाग्रहे ।
तथाचेष्टोऽस्मि देहादौ विनिवृत्तात्मविभ्रमः ॥२२॥
येनात्मनाऽनुभूयेऽहमात्मनैवात्मनात्मनि ।
सोऽहं न तन्न सा नासौ नैको न द्वौ न वा बहुः ॥२३॥
यदभावे सुषुप्तोऽहं यद्भावे व्युत्थितः पुनः ।
अतीन्द्रियमनिर्देश्यं तत्स्वसंवेद्यमस्म्यहम् ॥२४॥
क्षीयन्तेऽत्रैव रागाद्यास्तत्त्वतो मां प्रपश्यतः ।
बोधात्मानं : कश्चिन्न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥२५॥
मामपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ।
मा प्रपश्यन्नयं लोको न मे शत्रुर्न च प्रियः ॥२६॥
त्यक्त्वैव बहिरात्मानमन्तरात्मव्यवस्थितः ।
भावयेत्परमात्मानं सर्वसङ्कल्पवर्जितम् ॥२७॥
सोऽहमित्यात्तसंस्कारस्तस्मिन् भावनया पुनः ।
तत्रैव दृढसंस्काराल्लभते ह्यात्मनि स्थितम् ॥२८॥
मूढात्मा यत्र विश्वस्तस्ततो नान्यद्भयास्प ।
यतो भीतस्ततो नान्यदभयस्थानमात्मनः ॥२९॥
सर्वेन्द्रियाणि स्य स्तिमितेनान्तरात्मना ।
यत्क्षणं पश्यतो भाति तत्तत्त्व परमात्मना ॥३०॥
यः परात्मा स एवाहं योऽहं स परमस्ततः ।
अहमेव मयोपास्यो नान्यः कश्चिदिति स्थितिः ॥३१॥
प्राच्याव्य विषयेभ्योऽहं मां मयैव मयि सि ।
बोधात्मान प्रपन्नोऽस्मि परमानन्दनिर्वृ ति ॥३२॥
यो न वेत्ति परं देहादेवमात्मानमव्ययम् ।
लभते न स निर्वाणं तप्त्वापि परमं तपः ॥३३॥

आत्मदेहान्तरज्ञानजनिताह्लादनिर्वृतः ।
तपसा दुष्कृतं घोरं भुञ्जानोऽपि न खिद्यते ।।३४।।
रागद्वेषादिकल्लोलैरलोलं यन्मनोजलम् ।
स पश्यत्यात्मनस्तत्त्वं तत्तत्त्वं नेतरो जनः ।।३५।।
अविक्षिप्तं मनस्तत्त्वं विक्षिप्तं भ्रान्तिरात्मनः ।
धारयेत्तदविक्षिप्तं विक्षिप्तं नाश्रयेत्ततः ।।३६।।
अविद्याभ्याससंस्कारैरवशं क्षिप्यते मनः ।
तदेव ज्ञानसंस्कारैः स्वतस्तत्त्वेऽवतिष्ठते ।।३७।।
अपमानादयस्तस्य विक्षेपो यस्य चेतसः ।
नापमानादयस्तस्य न क्षेपो यस्य चेतसः ।।३८।।
यदा मोहात्प्रजायेते रागद्वेषौ तपस्विनः ।
तदैव भावयेत्स्वस्थमात्मानं शाम्यतः क्षणात् ।।३९।।
यत्र काये मुनेः प्रेम ततः प्रच्याव्य देहिनम् ।
बुद्ध्या तदुत्तमे काये योजयेत्प्रेम नश्यति ।।४०।।
आत्मविभ्रमजं दुःखमात्मज्ञानात्प्रशाम्यति ।
नायतास्तत्र निर्वान्ति कृत्वापि परमं तपः ।।४१।।
शुभं शरीरं दिव्यांश्च विषयानभिवाञ्छति ।
उत्पन्नात्ममतिर्देहे तत्त्वज्ञानी ततश्च्युतिम् ।।४२।।
परत्राहंमतिः स्वस्माच्च्युतो बध्नात्यसंशयम् ।
स्वस्मिन्नहंमतिश्च्युत्वा परस्मान्मुच्यते बुधः ।।४३।।
दृश्यमानमिदं मूढस्त्रिलिङ्गमवबुध्यते ।
इदमित्यवबुद्धस्तु निष्पन्नं शब्दवर्जितम् ।।४४।।
जानन्नप्यात्मनस्तत्त्वं विविक्तं भावयन्नपि ।
पूर्वविभ्रमसंस्काराद्भ्रान्तिं भूयोऽपि गच्छति ।।४५।।
अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यं चेतनं ततः ।
क्व रुष्यामि क्व तुष्यामि मध्यस्थोऽहं भवाम्यतः ।।४६।।

त्यागादाने बहिर्मूढः करोत्यध्यात्ममात्मवित् ।
नान्तर्बहिरुपादानं त्यागो निष्ठितात्मनः ॥४७॥
युञ्जीत मनसात्मानं वाक्कायाभ्यां वियोजयेत् ।
मनसा व्यवहारं तु त्यजेद्वाक्काययोजितम् ॥४८॥
जगद्देहात्मदृष्टीना विश्वासो रम्यमेव वा ।
आत्मन्येवात्मदृष्टीनां क्व विश्वास. क्व वा रतिः ॥४९॥
आत्मज्ञानात्परं कार्यं न बुद्धौ धारयेच्चिरम् ।
कुर्यादर्थवशात्किञ्चिद्वाक्कायाभ्यामतत्परः ॥५०॥
यत्पश्यामीन्द्रियैस्तन्मे नास्ति यन्नियतेन्द्रियः ।
अन्तः पश्यामि सानन्दं तदस्तु ज्योतिरुत्तमम् ॥५१॥
सुखमारब्धयोगस्य बहिर्दुःखमथात्मनि ।
बहिरेवासुखं सौख्यमध्यात्मं भावितात्मनः ॥५२॥
तद्ब्रूयात्तत्परान्पृच्छेत्तदिच्छेत्तत्परो भवेत् ।
येनाविद्यामयं रूपं त्यक्त्वा विद्यामयं व्रजेत् ॥५३॥
शरीरे वाचि चात्मानं संधत्ते वाक्शरीरयोः ।
भ्रान्तोऽभ्रान्तः पुनस्तत्त्व पृथगेषां विबुध्यते ॥५४॥
न तदस्तीन्द्रियार्थेषु यत् क्षेमङ्करमात्मनः ।
तथापि रमते बालस्तत्रैवाज्ञानभावनात् ॥५५॥
चिरं सुषुप्तास्तमसि मूढात्मानः कुयोनिषु ।
अनात्मीयात्मभूतेषु ममाहमिति जाग्रति ॥५६॥
पश्येन्निरन्तरं देहमात्मनो नात्मचेतसा ।
अपरात्मधियान्येषामात्मतत्त्वे व्यवस्थितः ॥५७॥
अज्ञापितं न जानन्ति यथा मां ज्ञापितं तथा ।
मूढात्मानस्ततस्तेषां वृथा मे ज्ञापनश्रमः ॥५८॥
यद्बोधयितुमिच्छामि तन्नाहं यदहं पुनः ।
ग्राह्यं तदपि नान्यस्य तत्किमन्यस्य बोधये ॥५९॥

बहिस्तुष्यति मूढात्मा पिहितज्योतिरन्तरे ।
तुष्यत्यन्तः प्रबुद्धात्मा बहिर्व्यावृत्तकौतुकः ॥६०॥
न जानन्ति शरीराणि सुखदुःखान्यबुद्धयः ।
निग्रहानुग्रहधियं तथाप्यत्रैव कुर्वते ॥६१॥
स्वबुद्धया यावद्गृह्णीयात् कायवाक्चेतसां त्र ।
संसारस्तावदेतेषां भेदाभ्यासे तु निर्वृतिः ॥६२॥
घने वस्त्रे यथात्मानं न घनं मन्यते तथा ।
घने स्वदेहेऽप्यात्मानं न घनं मन्यते बुधः ॥६३॥
जीर्णे वस्त्रे यथात्मानं न जीर्णं मन्यते तथा ।
जीर्णे स्वदेहेऽप्यात्मानं न जीर्णं मन्यते बुधः ॥६४॥
नष्टे वस्त्रे यथात्मानं न नष्टं मन्यते तथा ।
नष्टे स्वदेहेऽप्यात्मानं न नष्टं मन्यते बुधः ॥६५॥
रक्ते वस्त्रे यथात्मानं न रक्तं मन्यते तथा ।
रक्ते स्वदेहेऽप्यात्मानं न रक्तं मन्यते बुधः ॥६६॥
यस्य सस्पन्दमाभाति निष्पन्देन समं जगत् ।
अप्रज्ञमक्रियाभोगं स समं याति नेतरः ॥६७॥
शरीरकञ्चुकेनात्मा संवृतो ज्ञाननिग्रहः ।
नात्मानं बुध्यते तस्माद् भ्रमत्यतिचिरं भवे ॥६८॥
प्रविशद्गलतां व्यूहे देहेऽणूनां समाकृतौ ।
स्थितिभ्रान्त्या प्रपद्यन्ते तमात्मानमबुद्धयः ॥६९॥
गौराः स्थूल. कृशो वाहमित्यङ्गेनाविशेषयन्‌ ।
आत्मान धारयेन्नित्य केवलं ज्ञप्तिविग्रहम् ॥७०॥
मुक्तिरेकान्तिकी तस्य चित्ते यस्याचला धृतिः ।
तस्य नैकान्तिकी मुक्तिर्यस्य नास्त्यचला धृतिः ॥७१॥
जनेभ्यो वाक् ततः स्पन्दो मनसश्चित्तविभ्रमाः ।
भवन्ति तस्मात्संसर्गं जनैर्योगी ततस्त्यजेत् ॥७२॥

ग्रामोऽरण्यमिति द्वेधा निवासोऽनात्मदर्शिनाम् ।
दृष्टात्मनां निवासस्तु विविक्तात्मैव निश्चलः ॥७३॥
देहान्तरगतेबीजं देहेऽस्मिन्नात्मभावना ।
बीजं विदेहनिष्पत्तेरात्मन्येवात्मभावना ॥७४॥
नयत्यात्मानमात्मैव जन्म निर्वाणमेव वा ।
गुरुरात्मात्मनस्तस्मान्नान्योऽस्ति परमार्थतः ॥७५॥
दृढात्मबुद्धिर्देहादावुत्पश्यन्नाशमात्मनः ।
मित्रादिभिर्वियोगं च बिभेति मरणाद्भृशम् ॥७६॥
आत्मन्येवात्मधीरन्यां शरीरगतिमात्मनः ।
मन्यते निर्भयं त्यक्त्वा वस्त्रं वस्त्रान्तरग्रहम् ॥७७॥
व्यवहारे सुषुप्तो यः स जागर्त्यात्मगोचरे ।
जागर्त्ति व्यवहारेऽस्मिन् सुषुप्तश्चात्मगोचरे ॥७८॥
आत्मानमन्तरे दृष्ट्वा दृष्ट्वा देहादिकं बहिः ।
तयोरन्तरविज्ञानादभ्यासादच्युतो भवेत् ॥७९॥
पूर्वं दृष्टात्मतत्त्वस्याविभात्युन्मत्तवज्जगत् ।
स्वभ्यस्तात्मधियः पश्चात्काष्ठपाषाणरूपवत् ॥८०॥
शृण्वन्नप्यन्यतः कामं वदन्नपि कलेवरात् ।
नात्मानं भावयेद्भिन्नं यावत्तावन्न मोक्षभाक् ॥८१॥
तथैव भावयेद् देहाद्व्यावृत्यात्मानमात्मनि ।
यथा न पुनरात्मानं देहे स्वप्नेऽपि योजयेत् ॥८२॥
अपुण्यमव्रतैः पुण्यं व्रतैर्मोक्षस्तयोर्व्ययः ।
अव्रतानीव मोक्षार्थी व्रतान्यपि ततस्त्यजेत् ॥८३॥
अव्रतानि परित्यज्य व्रतेषु परिनिष्ठितः ।
त्यजेत्तान्यपि सम्प्राप्य परमं पदमात्मनः ॥८४॥
यदन्तर्जल्पसंपृक्तमुत्प्रेक्षाजालमात्मनः ।
मूलं दुःखस्य तन्नाशे शिष्टमिष्टं परं पदम् ॥८५॥

अव्रती व्रतमादाय व्रती ज्ञानपरायणः ।
परात्मज्ञानसम्पन्नः स्वयमेव परो भवेत् ॥८६॥
लिङ्गं देहाश्रितं दृष्टं देह एवात्मनो भवः ।
न मुच्यन्ते भवात्तस्मादेते लिङ्गकृताग्रहाः ॥८७॥
जातिर्देहाश्रिता दृष्टा देह एवात्मनो भवः ।
न मुच्यन्ते भवात्तस्मादेते जातिकृताग्रहाः ॥८८॥
जातिलिङ्गविकल्पेन येषां च समयाग्रहः ।
तेऽपि न प्राप्नुवन्त्येव परमं पदमात्मनः ॥८९॥
यत्त्यागाय निवर्त्तन्ते भोगेभ्यो यदवाप्तये ।
प्रीतिं तत्रैव कुर्वन्ति द्वेषमन्यत्र मोहिनः ॥९०॥
अनन्तरज्ञः संधत्ते दृष्टिं पंगुर्यथान्धके ।
संयोगाद् दृष्टिमङ्गेऽपि संधत्ते तद्वदात्मनः ॥९१॥
दृष्टिभेदो यथा दृष्टिं पंगुरन्धेन योजयेत् ।
तथा न योजयेद्देहे दृष्टात्मा दृष्टिमात्मनः ॥९२॥
सुप्तोन्मत्ताद्यवस्थैव विभ्रमो नात्मदर्शिनाम् ।
विभ्रमः क्षीणदोषस्य सर्वावस्थात्मदर्शिनः ॥९३॥
विदिताशेषशास्त्रोऽपि न जाग्रदपि मुच्यते ।
देहात्मदृष्टिर्ज्ञातात्मा सुप्तोन्मत्तोऽपि मुच्यते ॥९४॥
यत्रैवाहितधीः पुंसः श्रद्धा तत्रैव जायते ।
यत्रैव जायते श्रद्धा चित्तं तत्रैव लीयते ॥९५॥
यत्रैवाहितधीः पुंसः श्रद्धा तस्मान्निवर्त्तते ।
यस्मान्निवर्त्तते श्रद्धा कुतश्चित्तस्य तल्लयः ॥९६॥
भिन्नात्मानमुपास्यात्मा परो भवति तादृशः ।
वर्त्तिर्दीपं यथोपास्य भिन्ना भवति तादृशी ॥९७॥
उपास्यात्मानमेवात्मा जायते परमोऽथ वा ।
मथित्वात्मानमात्मैव जायतेऽग्निर्यथा तरुः ॥९८॥

इतीदं भावयेन्नित्यमवाचागोचरं पदम् ।
स्वत एव तदाप्नोति यतो नावर्तते पुनः ॥९९॥

अयत्नसाध्यं निर्वाणं चित्तत्त्वं भूतजं यदि ।
अन्यथा योगतस्तस्मान्न दुःखं योगिनां क्वचित् ॥१००॥

स्वप्ने दृष्टे विनष्टेऽपि न नाशोऽस्ति यथात्मनः ।
तथा जागरदृष्टेऽपि विपर्यासाविशेषतः ॥१०१॥

अदुःख भावितं ज्ञानं क्षीयते दुःखसन्निधौ ।
तस्माद्यथाबलं दुःखैरात्मानं भावयेन्मुनिः ॥१०२॥

प्रयत्नादात्मनो वायुरिच्छाद्वेषप्रवर्तितात् ।
वायोः शरीरयन्त्राणि वर्त्तन्ते स्वेषु कर्मसु ॥१०३॥

तान्यात्मनि समारोप्य साक्षाण्यास्ते सुखं जडः ।
त्यक्त्वारोपं पुनर्विद्वान् प्राप्नोति परमं पदम् ॥१०४॥

मुक्त्वा परत्र परबुद्धिमहंधियं च
संसारदुःखजननी जननाद्विमुक्तः ।
ज्योतिर्मयं सुखमुपैति परात्मनिष्ठ–
स्तन्मार्गमेतदधिगम्य समाधितन्त्रम् ॥१०५॥

प्रशस्ति

येनात्मा बहिरन्तरुत्तमभिदा त्रेधा विवृत्यादि ते
मोक्षोऽनन्तचतुष्टयामलवपुः सद्ध्यानतः कीर्तितः ।
जीयात्सोऽत्र जिनः समस्तविषयः श्रीपादपूज्योऽमलो
भव्यानन्दकरः समाधिशतकः श्रीमत्प्रभेन्दुः प्रभुः ॥१०६॥

इति श्रीमत्पूज्यपादस्वामिविरचित समाधिशतक समाप्तम् ।



श्रीविद्यानन्दिस्वामिविरचि   त

ा॰ परी   ा

प्रबुद्धाशे   स्वार्थ-बोधदीधितिमालिने   ।
नमः   श्रीजिनचन्द्राय   मोहध्वान्तप्रभेदिने ॥१॥

श्रेयोमार्गस्य संसिद्धिः प्रसादात्परमेष्ठिनः ।
इत्याहुस्तद्गुणस्तोत्रं शास्त्रादौ मुनिपुङ्गवाः ॥२॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥३॥

इत्यसाधारणं प्रोक्तं विशेषणमशेषतः ।
परसङ्कल्पिताप्तानां व्यवच्छेदप्रसिद्धये ॥४॥

अन्ययोगव्यवच्छेदान्निश्चिते हि महात्मनि ।
तस्योपदे   ामर्थ्यादनुष्ठानं प्रतिष्ठितम् ॥५॥

तत्रासिद्धं मुनीन्द्रस्य भेत्तृत्वं कर्मभूभृताम् ।
ये वदन्ति विपर्यासात्तान्प्रत्येवं   क्ष्महे ॥६॥

प्रसिद्धः   ं   त्वज्ञस्तेषां तावत्प्रमाणतः ।
सदा विध्वस्त-निःशेषबाधकात्स्वसुखादिवत् ॥७॥

ज्ञाता यो विश्वतत्त्वानां स भेत्ता कर्मभूभृताम् ।
भवत्येवान्यथा तस्य   ि   तत्त्वज्ञता कुतः ॥८॥

नास्पृष्टः कर्म्मभिः शश्वद्विश्वदृश्वास्ति कश्चन ।
तस्यानुपायसिद्धस्य   ंथानुपपत्तितः ॥९॥

प्रणीतिर्मोक्षमार्गस्य न विनाऽनादिसिद्धतः ।
ं   दिति तत्सिद्धिर्न परीक्षासहा स हि ॥१०॥

प्रणेता मोक्षमार्गस्य नाऽशरीरोऽन्यमुक्तवत् ।
सशरीरस्तु नाकर्म्मा सम्भवत्यज्ञजन्तुवत् ॥११॥

न चेच्छाशक्तिरीशस्य कर्म्माभावेऽपि युज्यते ।
तदिच्छा वाऽनभिव्यक्ता क्रियाहेतुः कुतोऽज्ञवत् ॥१२॥

ज्ञानशक्त्यैव निःशेषकार्योत्पत्तौ प्रभुः किल ।
सदेश्वर इति ख्यानेऽनुमानमनिदर्शनम् ॥१३॥

समीहामन्तरेणापि यथा वक्ति जिनेश्वरः ।
तथेश्वरोऽपि कार्य्याणि कुर्य्यादित्यप्यपेशलम् ॥१४॥

सति धर्म्मविशेषे हि तीर्थकृत्त्वसमाह्वये ।
ब्रूयाज्जिनेश्वरो मार्गं न ज्ञानादेव केवलात् ॥१५॥

सिद्धस्यापास्तनिःशेषकर्म्मणो वागसम्भवात् ।
विना तीर्थकरत्वेन नाम्ना नार्थोपदेशिता ॥१६॥

तथा धर्म्मविशेषोऽस्य योगश्च यदि शाश्वतः ।
तदेश्वरस्य देहोऽस्तु योग्यन्तरवदुत्तमः ॥१७॥

निग्रहानुग्रहौ देहं स्वं निर्म्मायान्यदेहिनाम् ।
करोतीश्वर इत्येतन्न परीक्षाक्षमं वचः ॥१८॥

देहान्तराद्विना तावत्स्वदेहं जनयेद्यदि ।
तदा प्रकृतकार्य्येऽपि देहाधानमनर्थकम् ॥१९॥

देहान्तरात्स्वदेहस्य विधाने चानवस्थितिः ।
तथा च प्रकृतं कार्य्यं कुर्य्यादीशो न जातुचित् ॥२०॥

स्वयं देहाविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता ।
कार्य्यत्वादेः प्रयुक्तस्य हेतोरीश्वरसाधने ॥२१॥

यथानीशाः स्वदेहस्य कर्त्ता देहान्तरान्मतः ।
पूर्वस्मादित्यनादित्वान्नानवस्था प्रसज्यते ॥२२॥

श्रीविद्यानन्दिस्वामिविरचिता

ाप्तपरीक्षा

प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ-बोधदीधितिमालिने ।
नमः श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वान्तप्रभेदिने ॥१॥

श्रेयोमार्गस्य संसिद्धिः प्रसादात्परमेष्ठिनः ।
इत्याहुस्तद्गुणस्तोत्रं शास्त्रादौ मुनिपुङ्गवाः ॥२॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥३॥

इत्यसाधारणं प्रोक्तं विशेषणमशेषतः ।
परसङ्कल्पिताप्तानां व्यवच्छेदप्रसिद्धये ॥४॥

अन्ययोगव्यवच्छेदान्निश्चिते हि महात्मनि ।
तस्योपदेशसामर्थ्यादनुष्ठानं प्रतिष्ठितम् ॥५॥

तत्रासिद्धं मुनीन्द्रस्य भेत्तृत्वं कर्मभूभृताम् ।
ये वदन्ति विपर्यासात्तान्प्रत्येवं प्रचक्ष्महे ॥६॥

प्रसिद्धः सर्वतत्त्वज्ञस्तेषां तावत्प्रमाणतः ।
सदा विध्वस्त-निःशेषबाधकात्स्वसुखादिवत् ॥७॥

ज्ञाता यो विश्वतत्त्वानां स भेत्ता कर्मभूभृताम् ।
भवत्येवान्यथा तस्य विश्वतत्त्वज्ञता कुतः ॥८॥

नास्पृष्टः कर्म्मभिः शश्वद्विश्वदृश्वास्ति कश्चन ।
तस्यानुपायसिद्धस्य सर्वथानुपपत्तितः ॥९॥

प्रणीतिर्मोक्षमार्गस्य न
सर्वज्ञादिति तत्सिद्धिर्न

प्रणेता मोक्षमार्गस्य नाऽशरीरोऽन्यमुक्तवत् ।
सशरीरस्तु नाकर्म्मा सम्भवत्यज्ञजन्तुवत् ॥११॥
न चेच्छाशक्तिरीशस्य कर्म्माभावेऽपि युज्यते ।
तदिच्छा वाऽनभिव्यक्ता क्रियाहेतुः कुतोऽज्ञवत् ॥१२॥
ज्ञानशक्त्यैव निःशेषकार्योत्पत्तौ प्रभुः किल ।
सदेश्वर इति ख्यानेऽनुमानमनिदर्शनम् ॥१३॥
समीहामन्तरेणापि यथा वक्ति जिनेश्वरः ।
तथेश्वरोऽपि कार्य्याणि कुर्य्यादित्यप्यपेशलम् ॥१४॥
सति धर्म्मविशेषे हि तीर्थंकृत्त्वसमाह्वये ।
ब्रूयाज्जिनेश्वरो मार्गं न ज्ञानादेव केवलात् ॥१५॥
सिद्धस्यापास्तनिःशेषकर्म्मणो वागसम्भवात् ।
विना तीर्थंकरत्वेन नाम्ना नार्थोपदेशिता ॥१६॥
तथा धर्म्मविशेषोऽस्य योगश्च यदि शाश्वतः ।
तदेश्वरस्य देहोऽस्तु योग्यन्तरवदुत्तमः ॥१७॥
निग्रहानुग्रहौ देहं स्वं निर्म्मायान्यदेहिनाम् ।
करोतीश्वर इत्येतन्न परीक्षाक्षमं वचः ॥१८॥
देहान्तराद्विना तावत्स्वदेहं जनयेद्यदि ।
तदा प्रकृतकार्य्येऽपि देहाधानमनर्थकम् ॥१९॥
देहान्तरात्स्वदेहस्य विधाने चानवस्थितिः ।
तथा च प्रकृतं कार्य्यं कुर्य्यादीशो न जातुचित् ॥२०॥
स्वयं देहाविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता ।
कार्य्यत्वादेः प्रयुक्तस्य हेतोरीश्वरसाधने ॥२१॥
यथानीशाः स्वदेहस्य कर्त्ता देहान्तरान्मतः ।
पूर्वस्मादित्यनादित्वान्नानवस्था प्रसज्यते ॥२२॥

तथेशस्यापि पूर्वास्माद्देहाद्देहान्तरोद्भवात् ।
नानवस्थेति यो ब्रूयात्तस्यानीशत्वमीशितुः ॥२३॥

अनीशः कर्म्मदेहेनाऽनादिसन्तानवर्तिना ।
यथैव हि म्मानिस्तद्वन्न कथमीश्वरः ॥२४॥

ततो नेशस्य देहोऽस्ति प्रोक्तदोषानुषङ्गतः ।
नापि धर्म्मविशेषोऽस्य देहाभावे विरोधतः ॥२५॥

येनेच्छामन्तरेणापि तस्य कार्ये प्रवर्तनम् ।
जिनेन्द्रवद् घटेतेति नोदाहरणसम्भवः ॥२६॥

ज्ञानमीशस्य नित्यं चेदशरीरस्य न :।
कार्य्याणा माद्धेतोः कार्यक्रमविरोधतः ॥२७॥

तद्बोधस्य प्रमाणत्वे फलाभावः प्रसज्यते ।
ततः फलावबोधस्याऽनित्यस्येष्टौ मतिक्षतिः ॥२८॥

फलत्वे तस्य नित्यत्वं न स्यान्मानात्समुद्भवात् ।
ततोऽनुद्भवने तस्य फलत्वं प्रतिहन्यते ॥२९॥

अनित्यत्वे तु तज्ज्ञानस्यानेन व्यभिचारिता ।
कार्यत्वादेर्महेशेनाकरणेऽस्य स्वबुद्धितः ॥३०॥

बुद्ध्यन्तरेण तद्बुद्धेः करणे चानवस्थितिः ।
नाऽनादिसन्ततिर्युक्ता कर्म्मसन्तानतो विना ॥३१॥

अव्यापि च यदि ज्ञानमीश्वरस्य तदा कथम् ।
सकृत्सर्वत्र कार्य्याणामुत्पत्तिर्घटते ततः ॥३२॥

यद्येकत्र स्थितं देशे ज्ञानं सर्वत्र कार्यकृत् ।
तदा सर्वत्र कार्याणां सकृत्किन्न समुद्भवः ॥३३॥

कारणान्तरवैकल्यात् तथानुत्पत्तिरित्यपि ।
कार्याणामीश्वरज्ञानाऽहेतुकत्वं प्रसाधयेत् ॥३४॥

सर्वत्र सर्वदा तस्य व्यतिरेकाऽप्रसिद्धितः ।
अन्वयस्यापि सन्देहात्कार्य्यं तद्धेतुकं कथम् ॥३५॥

एतेनैवेश्वरज्ञानं व्यापि नित्यमपाकृतम् ।
तस्येशवत्सदा कार्य्यक्रमहेतुत्वहानितः ॥३६॥

अस्वसंविदितं ज्ञानमीश्वरस्य यदीष्यते ।
तदा सर्वज्ञता न स्यात् स्वज्ञानस्याप्रवेदनात् ॥३७॥

ज्ञानान्तरेण तद्वित्तौ तस्याप्यन्येन वेदनम् ।
वेदनेन भवेदेवमनवस्था महीयसी ॥३८॥

गत्वा सुदूरमप्येवं स्वसंविदितवेदने ।
इष्यमाणे महेशस्य प्रथमं तादृगस्तु वः ॥३९॥

तत्स्वार्थव्यवसायात्मज्ञानं भिन्नं महेश्वरात् ।
कथं तस्येति निर्देश्यमाकाशादि वदञ्जसा ॥४०॥

समवायेन तस्यापि तद्भिन्नस्य कुतो गतिः ।
इहेदमिति विज्ञानादबाध्याद्व्यभिचारितम् ॥४१॥

इह कुण्डे दधीत्यादि विज्ञानेनास्तविद्विषा ।
साध्ये सम्बन्धमात्रे तु परेषां सिद्धसाधनम् ॥४२॥

सत्यामयुतसिद्धौ चेन्नेदं साधु विशेषणम् ।
शास्त्रीयायुतसिद्धत्वविरहात् समवायिनोः ॥४३॥

द्रव्यं स्वावयवाधारं गुणो द्रव्याश्रयो मतः ।
लौकिक्ययुतसिद्धिस्तु भवेद् दुग्धाम्भसोरपि ॥४४॥

पृथगाश्रयवृत्तित्वं युतसिद्धिर्न चानयोः ।
सास्तीशस्य विभुत्वेन परद्रव्याश्रितिच्युतेः ॥४५॥

ज्ञानस्यापीश्वरादन्यद्रव्यवृत्तित्वहानितः ।
इति येऽपि समादध्युस्तांश्च पर्य्यनुयुंज्महे ॥४६॥

विभुद्रव्यविशेषाणामन्याश्रयविवेकतः ।
युतसिद्धिः कथं नु स्यादेकद्रव्यगुणादिषु ॥४७॥

समवायः ज्येताऽयुतसिद्धौ परस्परम् ।
तेषां तद्द्वितयासत्त्वे स्याद्व्याघातो दुरुत्तरः ॥४८॥

युतप्रत्ययहेतुत्वा सिद्धिरितीरणे ।
विभुद्रव्यगुणादीनां युतसिद्धिः समागता ॥४९॥

ततो नायुतसिद्धिः स्यादित्यसिद्धं विशेषणम् ।
हेतोर्विप ाविद्व्यवच्छेदं न साधयेत् ॥५०॥

सिद्धेऽपि समवायस्य समवायिषु नात् ।
इहेदमिति संवित्तेः साधनं व्यभिचारि तत् ॥५१॥

समवायान्तराद्वृत्तौ ायस्य तत्त्वतः ।
समवायिषु तस्यापि परस्मादित्यनिष्ठतिः ॥५२॥

तद्बाधास्तीत्यबाधत्वं नाम नेह विशेषणम् ।
हेतोः सिद्धमनेकान्तो यतोऽनेनेति ये विदुः ॥५३॥

तेषामिहेति विज्ञानाद्विशेषण-विशेष ।
समवायस्य तद्वत्सु तत् एव न सिद्ध्यति ॥५४॥

विशेषण-विशेष्यत्वसम्बन्धोऽप्यन्यतो यदि ।
स्वसम्बन्धिषु तदा बाधानवस्थितिः ॥५५॥

विशेषण - विशेष्यत्वप्रत्ययादवगम्यते ।
विशेषण-विशेष्यत्वमित्यप्येतेन दूषितम् ॥५६॥

तस्यानन्त्यात्प्रपत्तृणामाकांक्षा तोऽपि वा ।
न दोष इति चेदेवं समवायादिनापि किम् ॥५७॥

गुणादिद्रव्ययोर्भिन्नद्रव्ययोश्च परस्परम् ।
विशेषण-विशेष्यत्वसम्बन्धोऽस्तु निरंकुशः ॥५८॥

संयोगः समवायो वा तद्विशेषोऽस्त्वनेकधा ।
स्वातन्त्र्ये समवायस्य सर्वथैक्ये च दोषतः ॥५९॥
स्वतन्त्रस्य कथं तावदाश्रितत्वं स्वयं मतम् ।
तस्याश्रितत्ववचने स्वातन्त्र्यं प्रतिहन्यते ॥६०॥
समवायिषु सत्स्वेव समवायस्य वेदनात् ।
आश्रितत्वे दिगादीनां मूर्त्तद्रव्याश्रितिर्न किम् ॥६१॥
कथं चानाश्रितः सिद्ध्येत्सम्बन्धः सर्वथा क्वचित् ।
स्वसम्बन्धिषु येनातः सम्भवेन्नियमस्थितिः ॥६२॥
एक एव च सर्वत्र समवायो यदीष्यते ।
तदा महेश्वरे ज्ञानं समवैति न खे कथम् ॥६३॥
इहेति प्रत्ययोऽप्येष शङ्करे न तु खादिषु ।
इति भेदः कथं सिद्ध्येन्नियामकमपश्यतः ॥६४॥
न चाचेतनता तत्र सम्भाव्येत नियामिका ।
शम्भावपि तदास्थानात्खादेस्तद्विशेषतः ॥६५॥
नेशो ज्ञाता न चाज्ञाता स्वयं ज्ञानस्य केवलम् ।
समवायात्सदा ज्ञाता यद्यात्मैव स किं स्वतः ॥६६॥
नायमात्मा न चानात्मा स्वात्मत्वसमवायतः ।
सदात्मैवेति चेदेवं द्रव्यमेव स्वतोऽसिधत् ॥६७॥
नेशो द्रव्यं न चाद्रव्यं द्रव्यत्वसमवायतः ।
सर्वदा द्रव्यमेवेति यदि सन्नेव स स्वतः ॥६८॥
न स्वतः सदसन्नापि सत्त्वेन समवायतः ।
सन्नेव शश्वदित्युक्तौ व्याघातः केन वार्यते ॥६९॥
स्वरूपेणासतः सत्त्वसमवाये च खाम्बुजे ।
स स्यात्किन्न विशेषस्याभावात्तस्य ततोऽञ्जसा ॥७०॥

स्वरूपेणासतः सत्त्वसमवायेऽपि सर्वदा ।
सामान्यादौ भवेत्सत्त्वसमवायोऽविशेषतः ॥७१॥

स्वतः सतो यथा सत्त्वसमवायस्तथास्तु सः ।
द्रव्यत्वात्मत्वबोद्धृत्व समवायोऽपि तत्त्वतः ॥७२॥

द्रव्यस्यैवात्मनो बोद्धुः स्वयं सिद्धस्य सर्वदा ।
न हि स्वतोऽतथाभूतस्तथात्वसमवायभाक् ॥७३॥

स्वयं ज्ञत्वे च सिद्धेऽस्य महेशस्य निरर्थकम् ।
ज्ञानस्य समवायेन ज्ञत्वस्य परिकल्पनम् ॥७४॥

तत्स्वार्थव्यवसायात्मज्ञानतादात्म्यमृच्छतः ।
कथंचिदीश्वरस्यास्ति जिनेशत्वमसंशयम् ॥७५॥

स एव मोक्षमार्गस्य प्रणेता व्यवतिष्ठते ।
सदेहः सर्वविन्नष्टमोहो धर्म्मविशेषभाक् ॥७६॥

ज्ञानादन्यस्तु निर्देहः सदेहो वा न युज्यते ।
शिवः कर्त्तोपदेशस्य सोऽभेत्ता कर्म्मभूताम् ॥७७॥

एतेनैव प्रतिव्यूढः कपिलोऽप्युपदे ः ।
ज्ञानादर्थान्तरत्वस्याविशेषात्सर्वथा स्वतः ॥७८॥

ज्ञानससर्गतो ज्ञत्वमज्ञस्यापि न तत्त्वतः ।
व्योमवच्चेतनस्यापि नोपपद्येत मु ॥७९॥

प्रधानं ज्ञत्वतो मोक्षमार्गस्यास्तूपदेश ।
तस्यैव विश्ववेदित्वाद्भेत्तृत्वात्कर्म्मभूभृताम् ॥८०॥

इत्यसम्भाव्यमेवास्याऽचेतनत्वात्परादिवत् ।
तदसम्भवतो नूनमन्यथा निष्फलः पुमान् ॥८१॥

भोक्तात्मा चेत्स एवास्तु कर्त्ता तदविरोधतः ।
विरोधे तु तयोर्भोक्तुः स्याद्भुजौ कर्तृता कथम् ॥८२॥

प्रधानं मोक्षमार्गस्य प्रणेतृ स्तूयते पुमान् ।
मुमुक्षुभिरिति ब्रूयात्कोऽन्योऽकिंचित्करात्मनः ॥८३॥

सुगतोऽपि न निर्वाणमार्गस्य प्रतिपादकः ।
विश्वतत्त्वज्ञताऽपायात्तत्त्वतः कपिलादिवत् ॥८४॥

संवृत्या विश्वतत्त्वज्ञः श्रेयोमार्गोपदेश्यपि ।
बुद्धो वन्द्यो न तु स्वप्नस्तादृगित्यज्ञचेष्टितम् ॥८५॥

यत्तु संवेदनाद्वैतं पुरुषाद्वैतवन्न तत् ।
सिद्धयेत्स्वतोऽन्यतो वापि प्रमाणात्स्वेष्टहानितः ॥८६॥

सोऽर्हन्नेव मुनीन्द्राणां वन्द्यः समवतिष्ठते ।
तत्सद्भावे प्रमाणस्य निर्बाध्यस्य विनिश्चयात् ॥८७॥

ततोऽन्तरिततत्त्वानि प्रत्यक्षाण्यर्हतोऽञ्जसा ।
प्रमेयत्वाद्यथास्मादृक् प्रत्यक्षार्थाः सुनिश्चिताः ॥८८॥

हेतोर्न व्यभिचारोऽत्र दूरार्थैर्मन्दरादिभिः ।
सूक्ष्मैर्वा परमाण्वाद्यैस्तेषां पक्षीकृतत्वतः ॥८९॥

तत्त्वान्यन्तरितानीह देशकालस्वभावतः ।
धर्म्मादीनि हि साध्यन्ते प्रत्यक्षाणि जिनेशिनः ॥९०॥

न चास्मादृक्समक्षाणामेवमर्हत्समक्षता ।
न सिद्धयेदिति मन्तव्यमविवादाद्द्वयोरपि ॥९१॥

न चासिद्धं प्रमेयत्वं कार्त्स्न्यतो भागतोऽपि वा ।
सर्वथाप्यप्रमेयस्य पदार्थस्याव्यवस्थितेः ॥९२॥

यदि षड्भिः प्रमाणैः स्यात्सर्वज्ञः केन वार्यते ।
इति ब्रुवन्नशेषार्थप्रमेयत्वमिहेच्छति ॥९३॥

चोदनातश्च निःशेषपदार्थज्ञानसम्भवे ।
सिद्धमन्तरितार्थानां प्रमेयत्वं समक्षवत् ॥९४॥

र्हतः समक्षं प्रमेयं बहिर्गतः ।
मिथ्यैकान्तो यथेत्येवं व्यतिरेकोऽपि निश्चितः ॥९५॥

सुनिि न्वयाद्धेतोः प्रसिद्धव्यतिरे : ।
ज्ञाताऽर्हन् विश्वतत्त्वानामेवं सिद्ध्येदबाधितः ॥९६॥

प्रत्य परिच्छिन्दत्त्रिकालं भुवनत्रयम् ।
रहितं विश्वतत्त्वज्ञैर्न हि तद्बाधकं भवेत् ॥९७॥

नाऽनुमानोपमानाऽर्थापत्त्याऽऽगमबलादपि ।
विश्वज्ञाभावसंसिद्धिस्तेषां सद्विषयत्वतः ॥९८॥

नार्हन्निःशेषतत्त्वज्ञो वक्तृत्व–पुरुषत्वतः ।
ब्रह्मादिवदिति प्रोक्तमनुमानं न बाधकम् ॥९९॥

हेतोरस्य विपक्षेण विरोधाभावनिश्च ात् ।
वक्तृत्वादेः र्षेऽपि ज्ञानानिर्ह्रासिसिद्धितः ॥१००॥

नोपमानमशेषाणां नृणामनुपलम्भतः ।
उपमानोपमेयानां तद्बाधकमसम्भवात् ॥१०१॥

नार्थापत्तिरसर्वज्ञं जगत्साधयितुं । ।
क्षीणत्वादन्यथाभावाऽभावात्तत्तदबाधिका ॥१०२॥

नागमोऽपौरुषेयोऽस्ति सर्वज्ञाभाव साधनः ।
तस्य कार्य्ये प्रमाणत्वादन्यथानिष्टसिद्धितः ॥१०३॥

पौरुषेयो णीतो नास्य बाधकः ।
तत्र तस्याऽप्रमाणत्वाद्धर्मादाविव तत्त्वतः ॥१०४॥

अभावोऽपि प्रमाणं ते निषेध्याधारवेदने ।
निषेध्यस्मरणे च स्यान्नास्तिताज्ञानमञ्जसा ॥१०५॥

न चाशेषजगज्ज्ञानं कुतश्चिदुपपद्यते ।
नापि सर्वज्ञसंवित्तिः पूर्वं तत्स्मरणं कुतः ॥१०६॥

येनाऽशेषजगत्यस्य सर्वज्ञस्य निषेधनम् ।
परोपगमतस्तस्य निषेधे स्वेष्टबाधनम् ॥१०७॥

मिथ्यैकान्तनिषेधस्तु युक्तोऽनेकान्तसिद्धितः ।
नाऽसर्वज्ञजगत्सिद्धेः सर्वज्ञप्रतिषेधनम् ॥१०८॥

एवं सिद्धः सुनिर्णीतोऽसम्भवद्बाधकत्वतः ।
सुखवद्विश्वतत्त्वज्ञः सोऽर्हन्नेव भवानिह ॥१०९॥

स कर्म्मभूभृतां भेत्ता तद्विपक्षप्रकर्षतः ।
यथा शीतस्य भेत्तेह कश्चिदुष्णप्रकर्षतः ॥११०॥

तेषामागमिनां तावद्विपक्षः संवरो मतः ।
तपसा सञ्चितानान्तु निर्ज्जरा कर्म्मभूभृताम् ॥१११॥

तत्प्रकर्षः पुनः सिद्धः परमः परमात्मनि ।
तारतम्यविशेषस्य सिद्धेरुष्णप्रकर्षवत् ॥११२॥

कर्म्माणि द्विविधान्यत्र द्रव्यभावविकल्पतः ।
द्रव्यकर्म्माणि जीवस्य पुद्गलात्मान्यनेकधा ॥११३॥

भावकर्म्माणि चैतन्यविवर्त्तात्मानि भान्ति नुः ।
क्रोधादीनि स्ववेद्यानि कथञ्चिच्चिदभेदतः ॥११४॥

तत्स्कन्धराशयः प्रोक्ता भूभृतोऽत्र समाधितः ।
जीवाद्विश्लेषणं भेदः सन्तानात्यन्तसंक्षयः ॥११५॥

स्वात्मलाभस्ततो मोक्षः कृत्स्नकर्म्मक्षयान्मतः ।
निर्ज्जरासंवराभ्यां तु सर्वसद्वादिनामिह ॥११६॥

नास्तिकानान्तु नैवास्ति प्रमाणं तन्निराकृतौ ।
प्रलापमात्रकं तेषां नावधेयं महात्मनाम् ॥११७॥

मार्गो मोक्षस्य वै सम्यग्दर्शनादित्रयात्मकः ।
विशेषेण प्रपत्तव्यो नान्यथा तद्विरोधतः ।।११८।।

प्रणेता मोक्षमार्गस्याऽबाध्यमानस्य सर्वथा ।
साक्षाद्य एव स ज्ञेयो विश्वतत्त्वज्ञताश्रयः ।।११६।।

वीतनिःशेषदोषोऽतः प्रवन्द्योऽर्हन् गुणाम्बुधिः ।
तद्गुणप्राप्तये सद्भिरिति संक्षेपतोऽन्वयः ।।१२०।।

मोहाक्रान्तान्न भवति गुरो मोक्षमार्गप्रणीति-
र्नर्ते तस्याः सकलकलुषध्वंसजा स्वात्मलब्धिः ।
तस्मै वन्द्यः परमगुरुरिह क्षीणमोहस्त्वमर्हन्
साक्षात्कुर्वन्नमलकमिवाशेषतत्त्वानि नाथ ।।१२१।।

न्यक्षेणाप्तपरीक्षा प्रतिपक्षं क्षपयितुं क्षमा साक्षात् ।
प्रेक्षावतामभीक्ष्णं विमोक्षलक्ष्मीः क्षणाय संलक्ष्या ।।१२२।।

श्रीमत्तत्वार्थशास्त्राद्भुतसलिलनिधेरिद्धरत्नोद्भवस्य
प्रोत्थानारम्भकाले सकलमलभिदे शास्त्रकारैः कृतं यत् ।
स्तोत्रं तीर्थोपमानं प्रथितपृथुपथं स्वामिमीमांसितं तद्
विद्यानन्दैः स्वशक्त्या कथमपि कथितं सत्यवाक्यार्थसिद्ध्यै ।।१२३।।

इति तत्वार्थशास्त्रादौ मुनीन्द्रस्तोत्रगोचरा ।
प्रणीताप्तपरीक्षेयं कुविवादनिवृत्तये ।।१४।।

इत्याप्तपरीक्षा समाप्ता

निस्सन्देह जिन लोगो ने ध्यान और धारणा के द्वारा सत्य को पा लिया है, उन्हे आगे होने वाले भवो का विचार करने की आवश्यकता नही है ।

श्रीसमन्तभद्रस्वामिविरचिता

आप्त मी मां सा

देवागमन-भोयान-चामरादि-विभूतयः ।
मायाविष्वपि दृश्यन्ते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

अध्यात्मं बहिरप्येष विग्रहादिमहोदयः ।
दिव्यः सत्यो दिवौकस्स्वप्यस्ति रागादिमत्सु सः ॥२॥

तीर्थंकृत्समयानां च परस्परविरोधतः ।
सर्वेषामाप्तता नास्ति कश्चिदेव भवेद् गुरुः ॥३॥

दोषावरणयोर्हानिर्निःशेषाऽस्त्यतिशायनात् ।
क्वचिद्यथा स्वहेतुभ्यो बहिरन्तर्मलक्षयः ॥४॥

सूक्ष्मान्तरितदूरार्थाः प्रत्यक्षाः कस्यचिद्यथा ।
अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरिति सर्वज्ञसंस्थितिः ॥५॥

स त्वमेवासि निर्दोषो युक्तिशास्त्राऽविरोधिवाक् ।
अविरोधो यदिष्टं ते प्रसिद्धेन न बाध्यते ॥६॥

त्वन्मतामृतबाह्यानां सर्वथैकान्तवादिनाम् ।
आप्ताभिमानदग्धानां स्वेष्टं दृष्टेन बाध्यते ॥७॥

कुशलाकुशलं कर्म परलोकश्च न क्वचित् ।
एकान्तग्रहरक्तेषु नाथ ! स्वपरवैरिषु ॥८॥

भावैकान्ते पदार्थानामभावानामपह्नवात् ।
सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम् ॥९॥

कार्यद्रव्यमनादि स्यात्प्रागभावस्य निह्नवे ।
प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत् ॥१०॥

मार्गो मोक्षस्य वै सम्यग्दर्शनादित्रयात्मकः ।
विशेषेरण प्रपत्तव्यो नान्यथा तद्विरोधतः ।।११८।।

प्रणेता मोक्षमार्गस्याऽबाध्यमानस्य सर्वथा ।
साक्षाद्य एव स ज्ञेयो विश्वतत्त्वज्ञताश्रयः ।।११९।।

वीतनिःशेषदोषोऽतः प्रवन्द्योऽर्हन् गुणाम्बुधिः ।
तद्गुणप्राप्तये सद्भिरिति संक्षेपतोऽन्वयः ।।१२०।।

मोहाक्रान्तान्न भवति गुरो मोक्षमार्गप्रणीति-
र्नर्ते तस्याः सकलकलुषध्वंसजा स्वात्मलब्धिः ।
तस्मै वन्द्यः परमगुरुरिह क्षीणमोहस्त्वमर्हन्
साक्षात्कुर्वन्नमलकमिवाशेषतत्त्वानि नाथ ।।१२१।।

न्यक्षेणाप्तपरीक्षा प्रतिपक्षं क्षपयितुं क्षमा साक्षात् ।
प्रेक्षावतामभीक्ष्णं विमोक्षलक्ष्मीः क्षणाय संलक्ष्या ।।१२२।।

श्रीमत्तत्वार्थशास्त्राद्भुत्सलिलनिधेरिद्धरत्नोद्भवस्य
प्रोत्थानारम्भकाले सकलमलभिदे शास्त्रकारैः कृतं यत् ।
स्तोत्रं तीर्थोपमानं प्रथितपृथुपथं स्वामिमीमांसितं तद्
विद्यानन्दैः स्वशक्त्या कथमपि कथितं सत्यवाक्यार्थसिद्ध्यै ।।१२३।।

इति तत्वार्थशास्त्रादौ मुनीन्द्रस्तोत्रगोचरा ।
प्रणीताप्तपरी [illegible] कुविवादनिवृत्तये ।।१४।।

इत्याप्तपरीक्षा समाप्ता

निस्सन्देह जिन लोगो ने ध्यान और धारण के द्वारा सत्य को पा लिया है, उन्हे आगे होने वाले भवो का विचार करने की आवश्यकता नही है ।

श्रीसमन्तभद्रस्वामिविरचिता

ा मीमां ा

देवागमन–भोयान–चामरादि–विभूतयः ।
मायाविष्वपि दृश्यन्ते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

अध्यात्मं बहिरप्येष विग्रहादिमहोदयः ।
दिव्यः सत्यो दिवौकस्स्वप्यस्ति रागादिमत्सु सः ॥२॥

तीर्थकृत्समयानां च परस्परविरोधतः ।
सर्वेषामाप्तता नास्ति कश्चिदेव भवेद् गुरुः ॥३॥

दोषावरणयोर्हानिर्निःशेषाऽस्त्यतिशायनात् ।
क्वचिद्यथा स्वहेतुभ्यो बहिरन्तर्मलक्षयः ॥४॥

सूक्ष्मान्तरितदूरार्थाः प्रत्यक्षाः कस्यचिद्यथा ।
अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरिति सर्वज्ञसंस्थितिः ॥५॥

स त्वमेवासि निर्दोषो युक्तिशास्त्राऽविरोधिवाक् ।
अविरोधो यदिष्टं ते प्रसिद्धेन न बाध्यते ॥६॥

त्वन्मतामृतबाह्यानां सर्वथैकान्तवादिनाम् ।
आप्ताभिमानदग्धानां स्वेष्टं दृष्टेन बाध्यते ॥७॥

कुशलाकुशलं कर्म परलोकश्च न क्वचित् ।
एकान्तग्रहरक्तेषु नाथ ! स्वपरवैरिषु ॥८॥

भावैकान्ते पदार्थानामभावानामपह्नवात् ।
सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम् ॥९॥

कार्यद्रव्यमनादि स्यात्प्रागभावस्य निह्नवे ।
प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत् ॥१०॥

सर्वात्मकं तदेकं स्यादन्यापोहव्यति मे ।
अन्यत्र समवायेन व्यपदिश्येत ॑था ।।११।।

अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापह्नववादिनाम् ।
बोधवाक्यं प्रमाणं न केन साधनदूषणम् ।।१२।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।।
ाच्यतैकान्त्येऽप्युक्तिर्नाऽवाच्यमिति युज्यते ।।१३।।

कथञ्चित्ते सदेवेष्टं कथञ्चिदसदेव तत् ।
तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न ॑था ।।१४।।

सदेव सर्वं को नेच्छेत् स्वरूपादिचतुष्टयात् ।
असदेव विपर्यासान्न चेन्न व्यतिष्ठते ।।१५।।

क्रमार्पितद्वयाद् द्वैतं सहावाच्यमशक्तितः ।
अवक्तव्योत्तराः शेषास्त्रयो भङ्गाः स्वहेतुतः ।।१६।।

अस्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि ।
विशेषणत्वात्साधर्म्यं यथा भेदविवक्षया ।।१७।।

नास्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि ।
विशेषणत्वाद्वैधर्म्यं यथाऽभेदविवक्षया ।।१८।।

विधेयप्रतिषेध्यात्मा विशेष्यः शब्दगोचरः ।
साध्यधर्मो यथा हेतुरहेतुश्चाप्यपेक्षया ।।१९।।

शेषभङ्गाश्च नेतव्या यथोक्तनययोगतः ।
न च कश्चिद्विरोधोऽस्ति मुनीन्द्र तव शासने ।।२०।।

एवं विधिनिषेधाभ्यामनवस्थितमर्थकृत् ।
नेति चेन्न यथाकार्यं बहिरन्तरुपाधिभिः ।।२१।।

धर्मे धर्मेऽन्य एवार्थो धर्मिणोऽनन्तधर्मणः ।
अङ्गित्वेऽन्यतमान्तस्य शेषान्तानां तदङ्गता ।।२२।।

एकानेकविकल्पादावुत्तरत्रापि योजयेत् ।
प्रक्रियां भङ्गिनीमेनां नयैर्नयविशारदः ॥२३॥

अद्वैतैकान्तपक्षेऽपि दृष्टो भेदो विरुध्यते ।
कारकाणां [illegible]याश्च नैकं स्वस्मात्प्रजायते ॥२४॥

कर्म[illegible] फलद्वैतं लोकद्वैतं च नो भवेत् ।
[illegible]द्वयं न स्यात् बन्धमोक्षद्वयं तथा ॥२५॥

हेतोरद्वैतसिद्धिश्चेद् द्वैतं स्याद्धेतु साध्ययोः ।
हेतुना चेद्विना सिद्धिर्द्वैतं वाङ्मात्रतो न किम् ॥२६॥

अद्वैतं न विना द्वैतादहेतुरिव हेतुना ।
संज्ञिनः प्रतिषेधो न प्रतिषेध्यादृते क्वचि[illegible] ॥२७॥

पृथक्त्वैकान्तपक्षेऽपि पृथक्त्वादपृथक्तु तौ ।
पृथक्त्वे न पृथक्त्वं स्यादनेकस्थो ह्यसौ गुणः ॥२८॥

सन्तानः समुदायश्च साधर्म्यं च निरङ्कुशः ।
प्रेत्यभावश्च तत्सर्वं न स्यादेकत्वनिह्नवे ॥२९॥

सदात्मना च भिन्नं चेत् ज्ञानं ज्ञेयाद् द्विधाऽप्यसत् ।
ज्ञानाभावे कथं ज्ञेयं बहिरन्तश्च ते द्विषाम् ॥३०॥

सामान्यार्था गिरोऽन्येषां विशेषो नाभिलप्यते ।
सामान्याभावतस्तेषां मृषैव सकला गिरः ॥३१॥

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥३२॥

अनपेक्षे पृथक्त्वैक्ये ह्यवस्तुद्वयहेतुतः ।
तदेवैक्यं पृथक्त्वं च स्वभेदैः साधनं यथा ॥३३॥

सत्सामान्यात्तु सर्वैक्यं पृथक् द्रव्यादिभेदतः ।
भेदाभेदविवक्षायामसाधारणहेतुवत् ॥३४॥

सर्वात्मकं तदेकं स्याद्न्यापोहव्यतिक्रमे ।
अन्यत्र समवायेन व्यपदिश्येत सर्वथा ॥११॥
अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापह्नववादिनाम् ।
बोधवाक्यं प्रमाणं न केन साधनदूषणम् ॥१२॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ॥
अवाच्यतैकान्त्येऽप्युक्तिर्नाऽवाच्यमिति युज्यते ॥१३॥
कथञ्चित्ते सदेवेष्टं कथञ्चिदसदेव तत् ।
तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न सर्वथा ॥१४॥
सदेव सर्वं को नेच्छेत् स्वरूपादिचतुष्टयात् ।
असदेव विपर्यासान्न चेन्न व्यतिष्ठते ॥१५॥
क्रमार्पितद्वयाद् द्वैतं सहावाच्यमशक्तितः ।
अवक्तव्योत्तराः शेषास्त्रयो भङ्गाः स्वहेतुतः ॥१६॥
अस्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि ।
विशेषणत्वात्साधर्म्यं यथा भेदविवक्षया ॥१७॥
नास्तित्वं प्रतिषेध्येनाऽविनाभाव्येकधर्मिणि ।
विशेषणत्वाद्वैधर्म्यं यथाऽभेदविवक्षया ॥१८॥
विधेयप्रतिषेध्यात्मा विशेष्यः शब्दगोचरः ।
साध्यधर्मो यथा हेतुरहेतुश्चाप्यपेक्षया ॥१९॥
शेषभङ्गाश्च नेतव्या यथोक्तनययोगतः ।
न च कश्चिद्विरोधोऽस्ति मुनीन्द्र तव शासने ॥२०॥
एवं विधिनिषेधाभ्यामनवस्थितमर्थकृत् ।
नेति चेन्न यथाकार्यं बहिरन्तरुपाधिभिः ॥२१॥
धर्मे धर्मेऽन्य एवार्थो धर्मिणोऽनन्तधर्मणः ।
अङ्गित्वेऽन्यतमान्तस्य शेषान्तानां तदङ्गता ॥२२॥

एकानेकविकल्पादावुत्तरत्रापि योजयेत् ।
प्रक्रियां भङ्गिनीमेनां नयैर्नयविशारदः ॥२३॥

अद्वैतैकान्तपक्षेऽपि दृष्टो भेदो विरुध्यते ।
कारकाणां क्रियायाश्च नैकं स्वस्मात्प्रजायते ॥२४॥

कर्मद्वैतं फलद्वैतं लोकद्वैतं च नो भवेत् ।
विद्याऽविद्याद्वयं न स्यात् बन्धमोक्षद्वयं तथा ॥२५॥

हेतोरद्वैतसिद्धिश्चेद् द्वैतं स्याद्धेतु साध्ययोः ।
हेतुना चेद्विना सिद्धिर्द्वैतं वाङ्मात्रतो न किम् ॥२६॥

अद्वैतं न विना द्वैतादहेतुरिव हेतुना ।
संज्ञिनः प्रतिषेधो न प्रतिषेध्यादृते क्वचित् ॥२७॥

पृथक्त्वैकान्तपक्षेऽपि पृथक्त्वादपृथक्तु तौ ।
पृथक्त्वे न पृथक्त्वं स्यादनेकस्थो ह्यसौ गुणः ॥२८॥

सन्तानः समुदायश्च साधर्म्यं च निरङ्कुशः ।
प्रेत्यभावश्च तत्सर्वं न स्यादेकत्वनिह्नवे ॥२९॥

सदात्मना च भिन्नं चेत् ज्ञानं ज्ञेयाद् द्विधाऽप्यसत् ।
ज्ञानाभावे कथं ज्ञेयं बहिरन्तश्च ते द्विषाम् ॥३०॥

सामान्यार्था गिरोऽन्येषां विशेषो नाभिलप्यते ।
सामान्याभावतस्तेषां मृषैव सकला गिरः ॥३१॥

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥३२॥

अनपेक्षे पृथक्त्वैक्ये ह्यवस्तुद्वयहेतुतः ।
तदेवैक्यं पृथक्त्वं च स्वभेदैः साधनं यथा ॥३३॥

सत्सामान्यात्तु सर्वैक्यं पृथक् द्रव्यादिभेदतः ।
भेदाभेदविवक्षायामसाधारणहेतुवत् ॥३४॥

विवक्षा चाऽवि क्षा च विशेष्येऽनन्तधर्मिणि ।
ो विशेषणस्यात्र ना स्तैस्तदर्थिभिः ।।३५।।
प्रमाणगोचरौ सन्तौ भेदाभेदौ न संवृती ।
तावेकत्राविरुद्धौ ते गुणमुख्यवि ा ।।३६।।
नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि विक्रिया नोपपद्यते ।
प्रागेव कारकाभावः क्व प्रमाणं तत्फलम् ।।३७।।
प्रमाणकारकैर्व्यक्तं व्यक्तं चेदिन्द्रियार्थ ् ।
ते च नित्ये विकार्यं किं साधोस्ते शासनाद्बहिः ।।३८।।
यदि सत्सर्वथा कार्यं पुंवन्नोत्पत्तुमर्हति ।
परिणामप्रक्लृप्तिश्च नित्यत्वैकान्तबाधिनी ।।३९।।
पुण्यपापक्रिया न स्यात् प्रेत्यभावः फलं कुतः ।
बन्धमोक्षौ च तेषां न येषां त्वं नासि नायकः ।।४०।।
क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि प्रेत्यभावाद्यसम्भवः ।
प्रत्यभिज्ञाद्यभावान्न कार्यारम्भः कुतः फलम् ।।४१।।
यद्यसत्सर्वथा कार्यं तन्माजनि खपुष्प ् ।
मोपादाननियामोभून्माऽऽश्वासः कार्यजन्मनि।।४२।।
न हेतुफलभावादिरन्यभावादनन्वयात् ।
सन्तानान्तरवन्नैकः सन्तानस्तद्वतः पृथक् ।।४३।।
अन्येष्वनन्यशब्दोऽयं संवृतिर्न मृषा कथम् ।
मुख्यार्थः संवृतिर्नास्ति विना मुख्यान्न संवृत्तिः ।।४४।।
चतुष्कोटेर्विकल्पस्य सर्वान्तेषूक्त्योगतः ।
तत्त्वान्यत्वमवाच्यं च तयोः सन्तानतद्वतोः ।।४५।।
अवक्तव्यचतुष्कोटिविकल्पोऽपि न कथ्यताम् ।
असर्वान्तमवस्तु स्यादविशेष्यविशेषणम् ।।४६।।
द्रव्याद्यन्तरभावेन निषेधः संज्ञिनः सतः ।
असद्भेदो न भावस्तु स्थानं विधिनिषेधयोः ।।४७।।

अवस्त्वनभिलाप्यं स्यात् सर्वान्तैः परिवर्जितम् ।
वस्त्वेवावस्तुतां याति प्रक्रियाया विपर्ययात् ॥४८॥
सर्वान्ताश्चेदवक्तव्यास्तेषां किं वचनं पुनः ।
संवृतिश्चेन्मृषैवैषा परमार्थविपर्ययात् ॥४९॥
अशक्यत्वादवाच्यं किमभावात्किमबोधतः ।
आद्यन्तोक्तिद्वयं न स्यात् किं व्याजेनोच्यतां स्फुटम् ॥५०॥
हिनस्त्यनभिसन्धातृ न हिनस्त्यभिसन्धिमत् ।
बध्यते तद्द्वयापेतं चित्तं बद्धं न मुच्यते ॥५१॥
अहेतुकत्वान्नाशस्य हिंसाहेतुर्न हिंसकः ।
चित्तसन्ततिनाशश्च मोक्षो नाष्टाङ्गहेतुकः ॥५२॥
विरूपकार्यारम्भाय यदि हेतुसमागमः ।
आश्रयिभ्यामनन्योऽसावविशेषादयुक्तवत् ॥५३॥
स्कन्धाः सन्ततयश्चैव संवृतित्वादसंस्कृताः ।
स्थित्युत्पत्तिव्ययास्तेषां न स्युः खरविषाणवत् ॥५४॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥५५॥
नित्यं तत् प्रत्यभिज्ञानान्नाकस्मात्तदविच्छिदा ।
क्षणिकं कालभेदात्ते बुद्ध्यसञ्चरदोषतः ॥५६॥
न सामान्यात्मनोदेति न व्येति व्यक्तमन्वयात् ।
व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत् ॥५७॥
कार्योत्पादः क्षयो हेतोर्नियमाल्लक्षणात्पृथक् ।
न तौ जात्याद्यवस्थानादनपेक्षाः खपुष्पवत् ॥५८॥
घटमौलिसुवर्णार्थी नाशोत्पादस्थितिष्वयम् ।
शोकप्रमोदमाध्यस्थ्यं जनो याति सहेतुकम् ॥५९॥
पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः ।
अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम् ॥६०॥

कार्यकारणनानात्वं गुणगुण्यन्यताऽपि च ।
सामान्यतद्वदन्यत्वं चैकान्तेन यदीष्यते ॥६१॥
एकस्यानेकवृत्तिर्न भागाभावाद बहूनि वा ।
भागित्वाद्वाऽस्य नैकत्वं दोषो वृत्तेरनार्हते ॥६२॥
देशकालविशेषेऽपि स्याद् वृत्तिर्युतसिद्धवत् ।
समानदेशता न स्यात् मूर्तकारणकार्ययोः ॥६३॥
आश्रयाश्रयिभावान्न स्वातन्त्र्यं समवायिनाम् ।
इत्ययुक्तः स सम्बन्धो न युक्तः वायिभिः ॥६४॥
सामान्यं समवायश्चाप्येकैकत्र समाप्तितः ।
अन्तरेणाश्रयं न स्यान्नाशोत्पादिषु को विधिः ॥६५॥
सर्वथाऽनभिसम्बन्धः सामान्यसमवाययोः ।
ताभ्यामर्थो न सम्बद्धस्तानि त्रीणि खपुष्पवत् ॥६६॥
न्यतैकान्तेऽणूनां सङ्घातेऽपि विभागवत् ।
हतत्वं स्याद्भूतचतुष्कं भ्रान्तिरेव सा ॥६७॥
कार्यभ्रान्तेरणुभ्रान्तिः कार्यलिङ्गं हि कारणम् ।
उभयाभावतस्तत्स्थं गुणजातीतरच्च न ॥६८॥
एकत्वेऽन्यतराभावः शेषाभावोऽविनाभुवः ।
द्वित्वसंख्याविरोधश्च संवृत्तिश्चेन्मृषैव सा ॥६९॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥७०॥
द्रव्यपर्याययोरैक्यं तयोरव्यतिरेकतः ।
परिणामविशेषाच्च शक्तिमच्छक्तिभावतः ॥७१॥
संज्ञासंख्याविशेषाच्च स्वलक्षणविशेषतः ।
प्रयोजनादिभेदाच्च तन्नानात्वं न सर्वथा ॥७२॥
यद्यापेक्षिकसिद्धिः स्यान्न द्वयं व्यवतिष्ठते ।
अनापेक्षिकसिद्धौ च न सामान्यविशेषता ॥७३॥

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥७४॥
धर्मधर्म्यविनाभावः सिद्धयत्यन्योऽन्यवी ा ।
न स्वरूपं स्वतो ह्य तत् कारकज्ञापकाङ्गवत् ॥७५॥
सिद्धं चेद्धेतुतः सर्वं न प्रत्यक्षादितो गतिः ।
सिद्धं चेदागमात्सर्वं विरुद्धार्थमतान्यपि ॥७६॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते॥७७॥
वक्तर्यनाप्ते यद्धेतोः साध्यं तद्धेतुसाधितम् ।
आप्ते वक्तरि तद्वाक्यात् साध्यमागमसाधितम् ॥७८॥
अन्तरङ्गार्थतैकान्ते बुद्धिवाक्यं मृषाऽखिलम् ।
प्रमाणाभासमेवातस्तत्प्रमाणादृते कथम् ॥७९॥
साध्यसाधनविज्ञप्तेर्यदि विज्ञप्तिमात्रता ।
न साध्यं न च हेतुश्च प्रतिज्ञाहेतुदोषतः ॥८०॥
बहिरङ्गार्थतैकान्ते प्रमाणाभासनिह्नवात् ।
सर्वेषां कार्यसिद्धिः स्याद्विरुद्धार्थाभिधायिनाम् ॥८१॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥८२॥
भावप्रमेयापेक्षायां प्रमाणाभासनिह्नवः ।
बहिः प्रमेयापेक्षायां प्रमाणं तन्निभं च ते ॥८३॥
जीवशब्दः सबाह्यार्थः संज्ञात्वाद्धेतुशब्दवत् ।
मायादिभ्रान्तिसंज्ञाश्च मायाद्यैः स्वैः प्रमोक्तिवत् ।८४।
बुद्धिशब्दार्थसंज्ञास्तास्तिस्रो बुद्धयादिवाचिकाः ।
तुल्या बुद्धयादिबोधाश्च त्रयस्तत्प्रतिबिम्बकाः ॥८५॥
वक्तृश्रोतृप्रमातृणां वाक्यबोधप्रमाः पृथक् ।
भ्रान्तावेव प्रमाभ्रान्तौ बाह्यार्थौ तादृशेतरौ ॥८६॥

बुद्धिशब्दप्रमाणत्वं वाक्यबोधप्रमाः पृथक् ।
सत्यानृतव्यवस्थैवं युज्यतेऽर्थाप्त्यनाप्तिषु ।।८७।।

दैवादेवार्थसिद्धिश्चेद्दैवं पौरुषतः कथम् ।
दैवतश्चेदनिर्मोक्ष. पौरुषं निष्फलं भवेत् ।।८८।।

पौरुषादेव सिद्धिश्चेत् पौरुषं दैवतः कथम् ।
पौरुषाच्चेदमोक्षं स्यात् सर्वप्राणिषु पौरुषम् ।।८९।।

विरोधान्नोभयैकात्म्य स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
ाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ।।९०।।

अबुद्धिपूर्वापेक्षायामिष्टानिष्ट स्वदैवतः ।
बुद्धिपूर्वव्यपेक्षायामिष्टानिष्टं स्वपौरुषात् ।।९१।।

पापं ध्रुवं परे दुःखात् पुण्यं च सुखतो यदि ।
अचेतनाकषायौ च बध्येयातां निमित्ततः ।।९२।।

पुण्यं ध्रुवं स्वतो दुःखात्पापं च सुखतो यदि ।
वीतरागो मुनिर्विद्वांस्ताभ्या युञ्ज्यन्निमित्ततः ।।९३।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ।।९४।।

विशुद्धिसक्लेशाङ्गं चेत् स्वपरस्थ सुखासुखम् ।
पुण्यपापास्रवौ युक्तौ न चेद्वयर्थस्तवार्हतः ।।९५।।

अज्ञानाच्चेद्ध्रुवो बन्धो ज्ञेयानन्त्यान्न केवली ।
ज्ञानस्तोकाद्विमोक्षश्चेदज्ञानाद् बहुतोऽन्यथा ।।९६।।

विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ।।९७।।

अज्ञानान्मोहतो बन्धो नाज्ञानाद्वीतमोहतः ।
ज्ञानस्तोकाच्च मोक्षः स्यादमोहान्मोहितोऽन्यथा ।।९८।।

कामादिप्रभवश्चित्रः कर्मबन्धानुरूपतः ।
तच्च कर्म स्वहेतुभ्यो जीवास्ते शुद्धयशुद्धितः ॥९९॥

शुद्धयशुद्धी पुनः शक्ती ते पाक्यापाक्यशक्तिवत् ।
साद्यनादी तयोर्व्यक्ती स्वभावोऽतर्कगोचरः ॥१००॥

तत्त्वज्ञानं प्रमाणं ते युगपत्सर्वभासनम् ।
क्रमभावि च यज्ज्ञानं स्याद्वादनयसंस्कृतम् ॥१०१॥

उपेक्षा फलमाद्यस्य शेषस्यादानहानधीः ।
पूर्वं वाऽज्ञाननाशो वा सर्वस्यास्य स्वगोचरे ॥१०२॥

वाक्येष्वनेकान्तद्योती गम्यम्प्रतिविशेषकः ।
स्यान्निपातोऽर्थयोगित्वात्तव केवलिनामपि ॥१०३॥

स्याद्वादः सर्वथैकान्तत्यागात्किंवृत्त चिद्विधिः ।
सप्तभङ्गनयापेक्षो हेयादेयविशेषकः ॥१०४॥

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने ।
भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्त्वन्यतमं भवेत् ॥१०५॥

सधर्मणैव साध्यस्य साधर्म्यादविरोधतः ।
स्याद्वादप्रविभक्तार्थविशेषव्यञ्जको नयः ॥१०६॥

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः ।
अविभ्राट् भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा ॥१०७॥

मिथ्यासमूहो मिथ्या चेन्न मिथ्यैकान्ततास्ति नः ।
निरपेक्षा नया मिथ्या सापेक्षा वस्तु तेऽर्थकृत ॥१०८॥

नियम्यतेऽर्थो वाक्येन विधिना वारणेन वा ।
तथाऽन्यथा च सोऽवश्यमविशेष्यत्वमन्यथा ॥१०९॥

तदतद्वस्तु वागेषा तदेवेत्यनुशासति ।
न सत्या स्यान्मृषावाक्यैः कथं तत्त्वार्थदेशना ॥११०॥

वाक्स्वभावोऽन्यवागर्थप्रतिषेधनिरङ्कुशः ।
आह च स्वार्थसामान्यं तादृग्वाच्यं खपुष्पवत् ॥१११॥

सामान्यवाग्विशेषे चेन्न शब्दार्थो मृषा हि सा ।
अभिप्रेतविशेषाप्तेः स्यात्कारः सत्यलाञ्छनः ॥११२॥

विधेयमीप्सितार्थाङ्गं प्रतिषेध्याविरोधि यत् ।
तथैवादेयहेयत्वमिति स्याद्वादसंस्थितिः ॥११३॥

इतीयमाप्तमीमांसा विहिता हितमिच्छता ।
सम्यङ्-मिथ्योपदेशार्थविशेषप्रतिपत्तये ॥११४॥

जयति जगति क्लेशावेशप्रपञ्च हिमांशुमान्
विहतविषमैकान्तध्वान्तप्रमाणनयांशुमान् ।
यतिपतिरजो यस्याधृष्टान्मताम्बुनिधेर्लवान्
स्वमतमतयस्तीर्थ्या नाना परे समुपासते ॥११५॥

इति श्री आप्तमीमासा समाप्ता



सदाचार

जिस मनुष्य का आचरण पवित्र है सभी उसकी वन्दना करते हैं। सदाचारी पुरुष का समाज मे सन्मान होता है, किन्तु जो लोग सदाचाररूप सन्मार्ग से च्युत हो जाते हैं अपकीर्त्ति और अपमान ही उनके भाग्य मे रह जाते हैं। सदाचार सुख-सम्पत्ति का बीज होता है, किन्तु दुष्ट प्रवृति असीम आपत्तियो की जननी है, अत अपने आचरण की पूरी देख-रेख रखना हमारा परम कर्त्तव्य है।

अथ समन्तभद्र स्वामिविरचितं

ु र ुशा न ्

कीर्त्या महत्या भुवि वर्द्धमानं त्वा वर्द्धमानं स्तुतिगोचरत्वम् ।
निनीषवः स्मो वयमद्य वीरं विशीर्णदोषाशयपाशबन्धम् ॥१॥

याथात्म्यमुल्लङ्घ्य गुणोदयाख्या लोके स्तुतिर्भूरिगुणोदधेस्ते ।
अणिष्ठमप्यंशमशक्नुवन्तो वक्तुं जिन त्वां किमिव स्तुयाम ॥२॥

तथापि वैयात्यमुपेत्य भक्त्या स्तोताऽस्मि ते शक्त्यनुरूपवाक्यः ।
इष्टे प्रमेयेऽपि यथास्वशक्ति किन्नोत्सहन्ते पुरुषाः क्रियाभिः ॥३॥

त्वं शुद्धि शक्त्योरुदयस्य काष्ठां तुलाव्यतीतां जिन शान्तिरूपाम् ।
अवापिथ ब्रह्मपथस्य नेता महानितीयत्प्रतिवक्तुमीशाः ॥४॥

कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनानयो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मीप्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः ॥५॥

दयादमत्यागसमाधिनिष्ठं नयप्रमाणप्रकृताञ्जसार्थम् ।
अधृष्यमन्यैरखिलैः प्रावादैर्जिन त्वदीयं मतमद्वितीयम् ॥६॥

अभेदभेदात्मकमर्थतत्त्वं तव स्वतन्त्रान्यतरत् खपुष्पम् ।
अवृत्तिमत्त्वात्समवायवृत्तेः संसर्गहानेः सकलार्थहानिः ॥७॥

भावेषु नित्येषु विकारहानेर्न कारकव्यापृतकार्ययुक्तिः ।
न बन्धभोगौ न च तद्विमोक्षः समन्तदोषं मतमन्यदीयम् ॥८॥

अहेतुकत्वं प्रथितः स्वभावस्तस्मिन् क्रियाकारकविभ्रमः स्यात् ।
आबालसिद्धेर्विविधार्थसिद्धिर्वादान्तरं किं तदसूयतां ते ॥९॥

येषामवक्तव्यमिहात्मतत्त्वं देहादनन्यत्वपृथक्त्वक्लृप्तेः ।
तेषां ज्ञतत्त्वेऽनवधार्यतत्त्वे का बन्धमोक्षस्थितिरप्रमेये ॥१०॥

वाक्स्वभावोऽन्यवागर्थप्रतिषेधनिरङ्कुशः ।
आह च स्वार्थसामान्यं तादृग्वाच्यं खपुष्पवत् ॥१११॥

सामान्यवाग्विशेषे चेन्न शब्दार्थो मृषा हि सा ।
अभिप्रेतविशेषाप्तेः स्यात्कारः सत्यलाञ्छनः ॥११२॥

विधेयमीप्सितार्थाङ्गं प्रतिषेध्याविरोधि यत् ।
तथैवादेयहेयत्वमिति स्याद्वादसंस्थितिः ॥११३॥

इतीयमाप्तमीमांसा विहिता हितमिच्छता ।
सम्यङ्-मिथ्योपदेशार्थविशेषप्रतिपत्तये ॥११४॥

जयति जगति क्लेशावेशप्रपञ्च हिमांशुमान्
विहतविषमैकान्तध्वान्तप्रमाणनयांशुमान् ।
यतिपतिरजो यस्याधृष्टान्मताम्बुनिधेर्लवान्
स्वमतमतयस्तीर्थ्या नाना परे समुपासते ॥११५॥

इति श्री आप्तमीमासा समाप्ता



सदाचार

जिस मनुष्य का आचरण पवित्र है सभी उसकी वन्दना करते हैं। सदाचारी पुरुष का समाज मे सन्मान होता है, किन्तु जो लोग सदाचाररूप सन्मार्ग से च्युत हो जाते हैं अपकीर्त्ति और अपमान ही उनके भाग्य मे रह जाते हैं। सदाचार सुख-सम्पत्ति का वीज होता है, किन्तु दुष्ट प्रवृति असीम आपत्तियो की जननी है, अत अपने आचरण की पूरी देख-रेख रखना हमारा परम कर्त्तव्य है।

अथ समन्तभद्र स्वामिविरचितं

्रनुान्

कीर्त्या महत्या भुवि वर्द्धमानं त्वां वर्द्धमानं स्तुतिगोचरत्वम् ।
निनीषवः स्मो वयमद्य वीरं विशीर्णदोषाशयपाशबन्धम् ॥१॥

याथात्म्यमुल्लङ्घ्य गुणोदयाख्या लोके स्तुतिर्भूरिगुणोदधेस्ते ।
अणिष्ठमप्यंशमशक्नुवन्तो तुं जिन त्वां किमिव स्तुयाम ॥२॥

तथापि वैयात्यमुपेत्य भक्त्या स्तोताऽस्मि ते शक्त्यनुरूपवाक्यः ।
इष्टे प्रमेयेऽपि यथास्वशक्ति किन्नोत्सहन्ते पुरुषाः ि ाभिः ॥३॥

त्वं शुद्धि शक्त्योरुदयस्य काष्ठां तुलाव्यतीतां जिन शान्तिरूपाम् ।
अवापिथ ब्रह्मपथस्य नेता महानितीयत्प्रतिवक्तुमीशाः ॥४॥

कालः कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतुः प्रवक्तुर्वचनानयो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मीप्रभुत्वशक्तेरपवादहेतुः ॥५॥

दयादमत्यागसमाधिनिष्ठं नयप्रमाणप्रकृताञ्जसार्थम् ।
अधृष्यमन्यैरखिलैः प्रावादैर्जिन त्वदीयं मतमद्वितीयम् ॥६॥

अभेदभेदात्मकमर्थतत्त्वं तव स्वतन्त्रान्यतरत् खपुष्पम् ।
अवृत्तिमत्त्वात्समवायवृत्तेः संसर्गहानेः सकलार्थहानिः ॥७॥

भावेषु नित्येषु विकारहानेर्न कारकव्यापृतकार्ययुक्तिः ।
न बन्धभोगौ न च तद्विमोक्षः समन्तदोषं मतमन्यदीयम् ॥८॥

अहेतुकत्वं प्रथितः स्वभावस्तस्मिन् क्रियाकारकविभ्रमः स्यात् ।
आबालसिद्धेर्विविधार्थसिद्धिर्वादान्तरं किं तदसूयतां ते ॥९॥

येषामवक्तव्यमिहात्मतत्त्वं देहादनन्यत्वपृथक्त्वक्लृप्तेः ।
तेषां ज्ञतत्त्वेऽनवधार्यतत्त्वे का बन्धमोक्षस्थितिरप्रमेये ॥१०॥

हेतुर्न दृष्टोऽत्र न वाऽप्यदृष्टो योऽयं प्रवादः क्षणिकात्मवादः ।
न ध्वस्तमन्यत्र भवेद्द्वितीये संतानभिन्ने नहि वासनाऽस्ति ।।११।।

तथा न तत्कारणकार्यभावा निरन्वयाः केन समानरूपाः ।
असत् खपुष्पं नहि हेत्वपेक्षं दृष्टं न सिद्धयत्युभयोरसिद्धम् ।।१२।।

नैवास्ति हेतुः क्षणिकात्मवादे न सन्नसन्वा विभवादकस्मात् ।
नाशोदयैकक्षणता च दुष्टा सन्तानभिन्नक्षणयोरभावात् ।।१३।।

कृत प्रणाशाकृतकर्मभोगौ स्याताम् असंचेतितकर्म च स्यात् ।
आकस्मिकेऽर्थे प्रलयस्वभावो मार्गो न युक्तो वधकश्च न
स्यात् ।।१४।।

न बन्धमोक्षौ क्षणिकैकसंस्थौ न संवृतिः साऽपि मृषास्वभावा ।
मुख्यादृते गौणविधिर्न दृष्टो विभ्रान्तदृष्टिस्तवः दृष्टितोऽन्या ।।१५।।

प्रतिक्षणं भङ्गिषु तत्पृथक्त्वान्न मातृघाती स्वपतिः स्वजाया ।
दत्तग्रहो नाधिगतस्मृतिर्न न क्त्वार्थसत्यं न कुलं न जातिः ।।१६।।

न शास्तृशिष्यादिविधिव्यवस्था विकल्पबुद्धिर्वितथाऽखिलाचेत् ।
अतत्त्वतत्त्वादिविकल्पमोहे निमज्जतां वीतविकल्पधीः का ।।१७।।

अनर्थिका साधनसाध्यधीश्चेद्विज्ञानमात्रस्य न हेतुसिद्धिः ।
अथार्थवत्त्व व्यभिचारदोषो न योगिगम्यं परवादि सिद्धम् ।।१८।।

तत्वं विशुद्धं सकलैर्विकल्पैर्विश्वाभिलाषास्पदतामतीतम् ।
न स्वस्य वेद्यं न च तन्निगद्यं सुषुप्त्यवस्थं भवदुक्तिबाह्यम् ।।१९।।

मूकात्म संवेद्यवयात्मवेद्यं तन्म्लिष्टभाषाप्रतिमप्रलापम् ।
अनङ्गसंज्ञं तदवेद्यमन्यैः स्यात्त्वद्-द्विषां वाच्यमवाच्यतत्त्वम् ।।२०।।

अशासदञ्जांसि वचांसि शास्ता शिष्याश्च शिष्टा वचनैर्न तेतैः ।
अहो इदं दुर्गतमं तमोऽन्यत् त्वया विना श्रायसमार्य किं तत् ।।२१।।

प्रत्यक्षबुद्धिः क्रमते न यत्र तल्लिङ्गगम्यं न तदर्थलिङ्गम् ।
वाचो न वा तद्विषयेण योगः का तद्गतिः कुष्टमशृण्वता ते ॥२२॥
रागाद्यविद्याऽनलदीपनं च विमोक्षविद्यामृतशासनं च ।
न भिद्यते संवृतिवादिवाक्यं भवत्प्रतीपं परमार्थशून्यम् ॥२३॥
विद्याप्रसूत्यै किल शील्यमाना भवत्यविद्या गुरुणोपदिष्टा ।
अहो त्वदीयोत्त्यनभिज्ञमोहो यज्जन्मने यत्तदजन्मने तत् ॥२४॥
अभावमात्रं परमार्थवृत्तेः सा संवृत्तिः सर्वविशेषशून्या ।
तस्या विशेषौ किल बन्धमोक्षौ हेत्वात्मनेति त्वदनाथवाक्यं ॥२५॥
व्यतीतसामान्यविशेषभावाद्विश्वाभिलापार्थविकल्पशून्यम् ।
खपुष्पवत् स्यादसदेव तत्त्वं प्रबुद्धतत्त्वाद्भवतः परेषाम् ॥२६॥
अतत्स्वभावेऽप्यनयोरुपायाद् गतिर्भवेत्तौ वचनीयगम्यौ ।
सम्बन्धिनौ चेन्न विरोधि दृष्टं वाच्यं यथार्थं न च दूषणं तत् ॥२७॥
उपेयतत्त्वानभिलाप्य तावदुपायतत्त्वानभिलाप्यता स्यात् ।
अशेषतत्त्वानभिलाप्यतायां द्विषां भवद्युक्त्यभिलाप्यतायाः ॥२८॥
अवाच्यमित्यत्र च वाच्यभावादवाच्यमेवेत्ययथाप्रतिज्ञम् ।
स्वरूपतश्चेत्पररूपवाचि स्वरूपवाचीति वचो विरुद्धम् ॥२९॥
सत्यानृतं वाप्यनृतानृतं वाप्यस्तीह किं वस्त्वतिशायनेन ।
युक्तं प्रतिद्वंद्व्यनुबन्धिमिश्रं न वस्तु तादृक्त्वदृते जिनेदृक् ॥३०॥
सहक्रमाद्वा विषयाल्पभूरिभेदेऽनृतं भेदि न चात्मभेदात् ।
आत्मान्तरं स्याद्भिदुरं समं च स्याच्चानृतात्मानभिलाप्यतां च ॥३१॥
न सच्च नासच्च न दृष्टमेकमात्मान्तरं सर्वनिषेधगम्यम् ।
दृष्टं विमिश्रं तदुपाधिभेदात् स्वप्नेऽपि नैतत्त्वदृषेः परेषाम् ॥३२॥
प्रत्यक्षनिर्देशवदप्यसिद्धमकल्पकं ज्ञापयितुं ह्यशक्यम् ।
विना च सिद्धेर्न च लक्षणार्थो न तावकद्वेषिणि वीर सत्यम् ॥३३॥
कालान्तरस्थे क्षणिके ध्रुवे वाऽपृथक्पृथक्त्वावचनीयतायां ।
विकारहानेर्न च कर्तृकार्ये वृथा श्रमोऽयं जिन विद्विषां ते ॥३४॥

मद्याङ्गवद्भूतसमागमे ज्ञः शक्त्यन्तरव्यक्तिरदैवसृष्टिः ।
इत्यात्मशिश्नोदरपुष्टितुष्टैर्निर्ह्रीभयैर्हा मृदवः प्रलब्धाः ॥३५॥

दृष्टेऽविशिष्टे जननादिहेतौ विशिष्टता का प्रतिसत्वमेषाम् ।
स्वभावतः किं न परस्य सिद्धिरतावकानामपि हा प्रपातः ॥३६॥

स्वच्छन्दवृत्तेर्जगतः स्वभावादुच्चैरनाचारपथेष्वदोषम् ।
निर्घुष्य दीक्षासममुक्तिमानास्त्वद्दृष्टिबाह्या विभ्रमन्ति ॥३७॥

प्रवृत्तिरक्तैः शमतुष्टिरिक्तैरुपेत्य हिंसाऽभ्युदयाङ्गनिष्ठा ।
प्रवृत्तितः शान्तिरपि प्ररूढं तमः परेषां तव सुप्रभातम् ॥३८॥

शीर्षोपहारादिभिरात्मदुःखैर्देवान्किलाराध्य सुखाभिगृद्धाः ।
सिद्ध्यन्ति दोषापचयानपेक्षा युक्तं च तेषां त्वमृषिर्न येषाम् ॥३९॥

स्तोत्रे युक्त्यनुशासने जिनपतेर्वीरस्य निःशेषतः
संप्राप्तस्य विशुद्धिशक्तिपदवीं काष्ठां परामाश्रितम् ।
निर्णीतं मतमद्वितीयममलं सं ाेऽपाकृतं
तद्बाह्यं वितथं मतं च सकलं सद्धीधनैर्बुध्यताम् ॥४०॥

सामान्यनिष्ठा विविधा विशेषा पदं विशेषान्तरपक्षपाति ।
अन्तर्विशेषान्तरवृत्तितोऽन्यत् सामान्यभावं नयते विशेषम् ॥४१॥

यदेवकारोपहितं पदं तदस्वार्थतः स्वार्थमवच्छिनत्ति ।
पर्यायसामान्यविशेषसर्वं पदार्थहानिश्च विरोधिवत्स्यात् ॥४२॥

अनुक्ततुल्यं यदनेवकारं व्यावृत्त्यभावान्नियमद्वयेऽपि ।
पर्यायभावेऽन्यतराप्रयोगस्तत्सर्वमन्यच्युतमात्महीनम् ॥४३॥

विरोधि चाऽभेद्यविशेषभावात् तद्द्योतनः स्याद्गुणतो-निपातः ।
विपाद्यसन्धिश्च तथाङ्गभावात् अवाच्यताश्रायसलोपहेतुः ॥४४॥

तथा प्रतिज्ञाशयतो प्रयोगः सामर्थ्यतो वा प्रतिषेधयुक्तिः ।
इति त्वदीया जिन नागदृष्टिः पराप्रधृष्या परधर्षिणी च ॥४५॥

विधिर्निषेधोऽनभिलाप्यता च त्रिरेकशस्त्रिर्द्विश एक एव ।
त्रयो विकल्पास्तव सप्तधामी स्याच्छब्दनेयाः सकलेऽर्थभेदे ॥४६॥
स्यादित्यपि स्याद्गुणमुख्यकल्पैकान्तो यथोपाधिविशेषवीक्ष्यः ।
तत्त्वं त्वनेकान्तमशेषरूपं द्विधाभवार्थं व्यवहारवत्त्वात् ॥४७॥
न द्रव्यपर्य्यायपृथग्व्यवस्था द्वैयात्म्यमेकार्पणया विरुद्धम् ।
धर्मश्च धर्मी च मिथस्त्रिधेमौ न सर्वथा तेऽभिमतौ विरुद्धौ ॥४८॥
दृष्टागमाभ्यामविरुद्धमर्थप्ररूपणं युक्त्यनुशासनं ते ।
प्रतिक्षणं स्थित्युदयव्ययात्मतत्त्वव्यवस्थं सदिहार्थरूपम् ॥४९॥
नानात्मताम प्रजहत्तदेकमेकात्मतामप्रजहच्च नाना ।
अङ्गाङ्गिभावात्तव वस्तु तद्यत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम् ॥५०॥
मिथोऽनपेक्षाः पुरुषार्थहेतुर्नांशा न चांशी पृथगस्ति तेभ्यः ।
परस्परेक्षाः पुरुषार्थहेतुर्दृष्टा नयास्तद्वदसि क्रियायां ॥५१॥
एकान्तधर्माभिनिवेशमूला रागादयोऽहंकृतिजा जनानाम् ।
एकान्तहानाच्च स यत्तदेव स्वाभाविकत्वाच्च समं मनस्ते ॥५२॥
प्रमुच्यते च प्रतिपक्षदूषी जिन त्वदीयैः पटुसिंहनादैः ।
एकस्य नानात्मतयाऽज्ञवृत्तेस्तौ बन्धमोक्षौ स्वमतादबाह्यौ ॥५३॥
आत्मान्तराभावसमानता न वागास्पदं स्वाश्रयभेदहीना ।
भावस्य सामान्यविशेषवत्त्वादैक्ये तयोरन्यतरन्निरात्म ॥५४॥
अमेयमाश्लिष्टममेयमेव भेदेऽपि तद्वृत्त्यपवृत्तिभावात् ।
वृत्तिश्च कृत्स्नांशविकल्पतो न मानं च नानन्तसमाश्रयस्य ॥५५॥
नानासदेकात्मसमाश्रयं चेदन्यत्वमद्विष्टमनात्मनोः क्व ।
विकल्पशून्यत्वमवस्तुनश्चेत्तस्मिन्नमेये क्व खलु प्रमाणम् ॥५६॥
व्यावृत्तिहीनान्वयतो न सिद्ध्येत् विपर्ययेऽप्यद्वितयेऽपि साध्यम् ।
अतद्व्युदासाभिनिवेशवादः पराभ्युपेतार्थविरोधवादः ॥५७॥
अनात्मनानात्मगतेरयुक्तिर्वस्तुन्ययुक्तेर्यदि पक्षसिद्धिः ।
अवस्तुयुक्तेः प्रतिपक्षसिद्धिर्न च स्वयं साधनरिक्तसिद्धिः ॥५८॥

निशापितस्तैः परशुः परघ्नः स्वमूर्ध्नि निर्भेदभयानभिज्ञैः ।
वैतण्डिकैर्यैः कुसृतिः प्रणीता मुने भवच्छासनदृक्प्रमूढैः ।।५९।।

भवत्यभावोऽपि च वस्तुधर्मो भावान्तरं भाववदर्हतस्ते ।
ीयते च व्यपदिश्यते च वस्तु व्यवस्थाङ्गममेयमन्यत् ।।६०।।

विशेषसामान्यविषक्तभेदविधिव्यवच्छेदविधायि वाक्यम् ।
अभेदबुद्धेरविशिष्टता स्याद्व्यावृत्तिबुद्धेश्च विशिष्टता ते ।।६१।।

सर्वान्त द्गुणमुख्यकल्पं सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षम् ।
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमि ं तवैव ।।६२।।

कामं द्विषन्नप्युपपत्तिचक्षुः समी ं ते समदृष्टिरिष्टम् ।
त्वयि ध्रुवं खण्डितमानशृङ्गो भवत्यभद्रोऽपि समन्तभद्रः ।।६३।।

न रागान्नः स्तोत्रं भवति भवपाशच्छिदि मुनौ
न चान्येषु द्वेषादपगुणकथाभ्यासखलता ।
किमु न्यायान्यायप्रकृतगुणदोषज्ञमनसां
हितान्वेषोपायस्तव गुणकथासङ्गगदितः ।।६४।।

इति स्तुत्यः स्तुत्यैस्त्रिदशमुनिमुख्यैः प्रणिहितैः
स्तुतः शक्त्या श्रेयः पदमधिगतस्त्वं जिन मया ।
महावीरो वीरो दुरितपरसेनाभिविजये
विधेया मे भक्तिः पथि भवता एवाप्रतिनिधौ ।।६५।।

स्थेयाज्जातजय प्रतिनिधि प्रोद्भूतभूरिप्रभु
प्रध्वस्ताखिलदुर्नयद्विषदिभ· सन्नीतिसामर्थ्यत ।
सन्मार्गस्त्रिविध कुमार्गमथनोऽर्हन्वीरनाथ श्रिये
शश्वत्संस्तुतिगोचरोऽनघाधियां श्रीसत्यवाक्याधिप· ।।१।।

श्रीमद्वीरजि रामलगुणस्तोत्रं परीक्षेक्षणै
त्स्वामिसमन्तभद्रगुरुभिस्तत्वं समीक्ष्याखिलं ।
प्रोक्तं युक्त्यनुशासनं विजयिभिः स्याद्वादमार्गानुगै-
र्विद्यानन्दबुधैरलङ्कृतमिदं श्रीसत्यवाक्याधिपं ।।२।।

इति श्रीसमन्तभद्रस्वामीविरचित युक्त्यनुशासन समाप्तम् ।

नयवि रण

सूत्रे नामादिनिक्षिप्ततत्त्वार्थाधिगमः स्थितः ।
कात्स्न्र्यतो देशतो वापि माणनयैरिह ॥१॥
प्रमाणं च नयाश्चेति द्वन्द्वे पूर्वनिपातनम् ।
कृतं प्रमाणशब्दस्याभ्यर्हितत्वेन बह्वचः ॥२॥
प्रमाणं सकलादेशि नयादभ्यर्हितं मतम् ।
विकलादेशिनस्तस्य वाचकोऽपि तथोच्यते ॥३॥
स्वार्थनिश्चायकत्वेन प्रमाणं नय इत्यसत् ।
स्वार्थैकदेशनिर्णीतिलक्षणो हि नयः स्मृतः ॥४॥
स्वार्थांशस्यापि वस्तुत्वे तत्परिच्छेदको नयः ।
प्रमाणमन्यथा मिथ्याज्ञानं प्राप्तः स इत्यसत् ॥५॥
नायं वस्तु न चावस्तु वस्त्वंशः कथ्यते यतः ।
नासमुद्रः समुद्रो वा समुद्रांशो यथोच्यते ॥६॥
तन्मात्रस्य समुद्रत्वे शेषांशस्यासमुद्रता ।
समुद्रबहुता वा स्यात्तत्वे क्वास्तु समुद्रवित् ॥७॥
तत्रांशिन्यपि निःशेषधर्माणां गुणता गतौ ।
द्रव्यार्थिकनयस्यैव व्यापारान्मुख्यरूपतः ॥८॥
धर्मिधर्मसमूहस्य प्राधान्यार्पणया विदः ।
प्रमाणत्वेन निर्णीतेः प्रमाणादपरो नयः ॥९॥
नाप्रमाणं प्रमाणं वा नयो ज्ञानात्मको मतः ।
स्यात्प्रमाणैकदेशस्तु सर्वथाप्यविरोधतः ॥१०॥
प्रमाणेन गृहीतस्य वस्तुनोऽशेऽविजानतः ।
सम्प्रत्ययनिमित्तत्वात्प्रमाणाच्चेन्नयोर्जि(र्चि)तः ॥११॥

नाशेषवस्तुनिर्णीतेः प्रमाणादेव कस्यचित् ।
तादृक्सामर्थ्यशून्यत्वात्सन्नयस्यास्ति सर्वथा ।।१२।।

मतेरवधितो वापि मन:पर्ययतोऽपि वा ।
ज्ञातस्यार्थस्य नाशेऽस्ति नयानां वर्त्तनं ननु ।।१३।।

निःशेषदेशकालार्था गोचरत्वविनिश्चयात् ।
तस्येति भाषित कैश्चिद्युक्तमेव तथेष्टित ।।१४।।

त्रिकालगोचराशेषपदार्थांशेषु वृत्तितः ।
केवलज्ञानमूलत्वमपि तेषा न युज्यते ।।१५।।

परोक्षपरतावृत्तेः स्पष्टत्वात्केवलस्य तु ।
श्रुतमूला नयाः सिद्धाः वक्ष्यमाणाः प्रमाणवत् ।।१६।।

निर्दिश्याधिगमोपाय प्रमाणमधुना नयान् ।
व्याख्यातुं नैगमेत्यादि प्राह संक्षेपतोऽखिलान् ।।१७।।

सामान्यादेशतस्तावदेक एव नयः स्थितः ।
स्याद्वादप्रविभक्तार्थविशेषव्यञ्जकात्मकः ।।१८।।

संक्षेपाद् द्वौ विशेषेण द्रव्यपर्यायगोचरौ ।
द्रव्यार्थो व्यवहारान्तः पर्यायार्थस्ततोऽपरः ।।१९।।

विस्तरेण तु सप्तैते विज्ञेया नैगमादयः ।
तथातिविस्तरेणैतद्भेदाः संख्यातविग्रहाः ।।२०।।

नयो नयौ नयाश्चेति वाक्यभेदेन योजिताः ।
नैगमादय इत्येवं सर्वसंख्याभिसूचनात् ।।२१।।

निरुक्त्या लक्षणं लक्ष्यं तत्सामान्यविशेषतः ।
नीयते गम्यते येन श्रुतार्थांशः स नो नयः ।।२२।।

तदंशौ द्रव्यपर्यायलक्षणौ सव्यपेक्षणौ ।
नीयते तुर्यकाभ्यां तु तौ नयाविति निश्चितौ ।।२३।।

गुणः पर्यय एवात्र सहभावी विभावितः।
इति तद्गोचरो नान्यस्तृतीयोऽस्ति गुणार्थकः ॥२४॥

प्रमाणगोचरार्थांशा नीयन्ते यैरनेकधा।
ते नया इति विख्याता ज्ञाता मूलनयद्वयात् ॥२५॥

द्रव्यपर्यायसामान्यविशेषपरिबोधकाः।
न मूलं नैगमादीना नयाश्चत्वार एव तु ॥२६॥

सामान्यस्य पृथक्त्वेन द्रव्यादनुपपत्तितः।
सादृश्यपरिणामस्य तथा व्यञ्जनपर्ययात् ॥२७॥

वैसादृश्यविवर्त्तस्य विशेषस्य च पर्यये।
अन्तर्भावाद्विभाव्येते द्वौ तन्मूलनयाविति ॥२८॥

नामादयोऽपि चत्वारस्तन्मूलं नेत्यतो गतम्।
द्रव्यक्षेत्रादयस्तेषां द्रव्यपर्यायगत्वतः ॥२९॥

भवान्विता न पञ्चैते स्कन्धा वा परिकीर्तिताः।
रूपादयो त एवेह तेऽपि हि द्रव्यपर्ययौ ॥३०॥

तथा द्रव्यगुणादीनां षोढात्वं न व्यवस्थितम्।
षट् स्युर्मूलनया येन द्रव्यपर्यायगा हि ते ॥३१॥

ये प्रमाणादयो भावाः प्रधानादय एव वा।
ते नैगमादिभेदानामर्थाना परनीतयः ॥३२॥

तत्र संकल्पमात्रस्य ग्राहको नैगमो नयः।
सोपाधिरित्यशुद्धस्य द्रव्यार्थस्याभिधानतः ॥३३॥

संकल्पो नैगमस्तत्र भवोऽयं तत्प्रयोजनः।
यथा प्रस्थादिसंकल्पस्तदभिप्राय इष्यते ॥३४॥

नन्वयं भाविनीं संज्ञां समाश्रित्योपचर्य्यते।
अप्रस्थादिषु तद्भावस्तन्डुलेष्वोदनादिवत् ॥३५॥

(॥१२॥

वापि मन.पर्ययतोऽपि वा ।
नांशेऽस्ति नयाना वर्त्तनं ननु ॥१३॥

नि:शेषदेशकालार्था गोचरत्वविनिश्चयात् ।
तस्येति भाषितं कैश्चिद्यु क्तमेव तथेष्टित ॥१४॥

त्रिकालगोचराशेषपदार्थाशेषु वृत्तित ।
केवलज्ञानमूलत्वमपि तेषा न युज्यते ॥१५॥

परोक्षपरतावृत्ते. स्पष्टत्वात्केवलस्य तु ।
श्रु तमूला नयाः सिद्धाः वक्ष्यमाणाः प्रमाणवत् ॥१६॥

निर्दिश्याधिगमोपाय प्रमाणमधुना नयान् ।
व्याख्यातु नैगमेत्यादि प्राह संक्षेपतोऽखिलान् ॥१७॥

सामान्यादेशतस्तावदेक एव नय. स्थितः ।
स्याद्वादप्रविभक्तार्थविशेषव्यञ्जकात्मकः ॥१८॥

सक्षेपाद् द्वौ विशेषेण द्रव्यपर्यायगोचरौ ।
द्रव्यार्थो व्यवहारान्तः पर्यायार्थस्ततोऽपरः ॥१९॥

विस्तरेण तु सप्तैते विज्ञेया नैगमादयः ।
तथातिविस्तरेणैतद्भेदाः सख्यातविग्रहाः ॥२०॥

नयो नयौ नयाश्चेति वाक्यभेदेन योजिताः ।
नैगमादय इत्येवं सर्वसंख्याभिसूचनात् ॥२१॥

निरुक्त्या लक्षणं लक्ष्यं तत्सामान्यविशेषतः ।
नीयते गम्यते येन श्रु तार्थांशः स नो नयः ॥२२॥

तदंशौ द्रव्यपर्यायलक्षणौ सव्यपेक्षणौ ।
नीयते तुर्यकाभ्यां तु तौ नयाविति निश्चितौ ॥२३॥

गुणः पर्यय एवात्र सहभावी विभावितः ।
इति तद्गोचरो नान्यस्तृतीयोऽस्ति गुणार्थकः ॥२४॥

प्रमाणगोचरार्थांशा नीयन्ते यैरनेकधा ।
ते नया इति विख्याता ज्ञाता मूलनयद्वयात् ॥२५॥

द्रव्यपर्यायसामान्यविशेषपरिबोधकाः ।
न मूलं नैगमादीना नयाश्चत्वार एव तु ॥२६॥

सामान्यस्य पृथक्त्वेन द्रव्यादनुपपत्तितः ।
सादृश्यपरिणामस्य तथा व्यञ्जनपर्ययात् ॥२७॥

वैसादृश्यविवर्त्तस्य विशेषस्य च पर्यये ।
अन्तर्भावाद्विभाव्येते द्वौ तन्मूलनयाविति ॥२८॥

नामादयोऽपि चत्वारस्तन्मूल नेत्यतो गतम् ।
द्रव्यक्षेत्रादयस्तेषां द्रव्यपर्यायगत्वतः ॥२९॥

भवान्विता न पञ्चैते स्कन्धा वा परिकीर्तिता ।
रूपादयो त एवेह तेऽपि हि द्रव्यपर्ययौ ॥३०॥

तथा द्रव्यगुणादीनां षोढात्वं न व्यवस्थितम् ।
षट् स्युर्मूलनया येन द्रव्यपर्यायगा हि ते ॥३१॥

ये प्रमाणादयो भावाः प्रधानादय एव वा ।
ते नैगमादिभेदानामर्थानां परनीतयः ॥३२॥

तत्र संकल्पमात्रस्य ग्राहको नैगमो नयः ।
सोपाधिरित्यशुद्धस्य द्रव्यार्थस्याभिधानतः ॥३३॥

संकल्पो नैगमस्तत्र भवोऽयं तत्प्रयोजनः ।
यथा प्रस्थादिसंकल्पस्तदभिप्राय इष्यते ॥३४॥

नन्वयं भाविनीं संज्ञां समाश्रित्योपचर्य्यते ।
अप्रस्थादिषु तद्भावस्तन्डुलेष्वोदनादिवत् ॥३५॥

इत्यसद् बहिरर्थेषु तथानध्यवसानतः ।
स्ववेद्यमानसंकल्पे सत्येवास्य ्त्तितः ॥३६॥
यद्वा नैकं गमो योऽत्र स सतां नैगमो मतः ।
धर्मयोर्धर्मिणोर्वापि विवक्षा धर्मधर्मिणोः ॥३७॥
प्रमाणात्मक एवायमुभयग्राहकत्वतः ।
इत्ययुक्तमिह ज्ञप्तेः प्रधानगुणभावतः ॥३८॥
प्राधान्येनोभयात्मानमर्थं गृह्णद्धि वेदनम् ।
प्रमाणं नान्यदित्येतत्प्रपञ्चेन निवेदितम् ॥३९॥
संग्रहे व्यवहारे वा नान्तर्भावनमीक्ष्यते ।
नैगमस्य तयोरेकवस्त्वंशप्रवणत्वतः ॥४०॥
नर्जुसूत्रादिषु प्रोक्तहेतोरेवेति षण्णयाः ।
संग्रहादय एवेह न वाच्याः प्रपरीक्षकैः ॥४१॥
सप्तैवैते तु युज्यन्ते नैगमस्य नयत्वतः ।
तस्य त्रिभेदताख्यानात्कैश्चिदुक्ता नया नव ॥४२॥
तत्र पर्यायगस्त्रेधा नैगमो द्रव्यगो द्विधा ।
द्रव्यपर्य्यायगः प्रोक्तश्चतुर्भेदो ध्रुवं बुधैः ॥४३॥
अर्थपर्याययोस्तावद् गुणमुख्यस्वभावतः ।
क्वचिद्वस्तुन्यभिप्रायः प्रतिपत्तुः प्रजायते ॥४४॥
यथा प्रतिक्षणध्वंसिसुखसंविच्छरीरिणि ।
इति सत्तार्थपर्यायो विशेषणतया गुणः ॥४५॥
संवेदनार्थपर्यायो विशेष्यत्वेन मुख्यताम् ।
प्रतिगच्छन्नभिप्रेतो नान्यथैवं वचो गतिः ॥४६॥
सर्वथा सुखसंवित्त्योर्नानात्वेऽभिमतिः पुनः ।
स्वाश्रयाच्चार्थपर्यायनैगमाभोऽप्रतीतितः ॥४७॥

कश्चिद्व्यञ्जनपर्यायौ विषयीकुरुतेऽञ्जसा ।
गुणप्रधानभावेन धर्मिण्येकत्र नैगमः ॥४८॥
सच्चैतन्यं न रीत्येवं सत्त्वस्य गुणभावतः ।
प्रधानभा ापि चैतन्यस्याभिसन्धितः ॥४९॥
तयोरत्यन्तभेदोक्तिरन्योऽन्यं स्वाश्रयादपि ।
ज्ञेयो व्यञ्जनपर्यायनैगमाभोऽविरोधतः ॥५०॥
अर्थव्यञ्जनपर्यायौ गोचरीकुरुते परः ।
धार्मिके सुखजीवत्वमित्येवमनुरोधतः ॥५१॥
भिन्ने तु सुखजीवत्वे योऽभिमन्येत था ।
सोऽर्थव्यञ्जनपर्यायनैगमाभास एव नः ॥५२॥
शुद्धं द्रव्यमशुद्धं च तथाभिप्रैति यो नयः ।
स तन्नैगम एवेह संग्रहव्यवहारजः ॥५३॥
स द्रव्यं वस्तु तथान्वयविि ात् ।
इत्येवमवगन्तव्यस्तद्भेदोक्तिस्तु दुर्नयः ॥५४॥
यस्तु पर्यायवद्द्रव्यं गुणवद्वेति निर्णयः ।
व्यवहारनयाज्जातः सोऽशुद्धद्रव्यनैगमः ॥५५॥
तद्भेदैकान्तवादस्तु तदाभासोऽनुमन्यते ।
तथोक्तेर्बहिरन्तश्च प्रत्यक्षादिविरो ः ॥५६॥
शुद्धद्रव्यार्थपर्यायनैगमोऽस्ति परो यथा ।
सत्सुखं क्षणिकं सिद्धं संसारेऽस्मिि ीरणम् ॥५७॥
सत्त्वं सुखार्थपर्यायाद्भिन्नमेवेति सन्मतिः ।
दुर्नीतिः स्यात्सबाधत्वादिति नीतिविदो विदुः ॥५८॥
क्षणमेकं सुखी जीवो विषयीति विनिश्चयः ।
विनिर्दिष्टोऽर्थपर्यायाशुद्धद्रव्यगनैगमः ॥५९॥

सुखजीवभिदोक्तिस्तु सर्वथा मानबाधिता ।
दुर्नीतिरेव बोद्धव्या शुद्धबोधैरसंशयम् ॥६०॥
गोचरीकुरुते शुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्ययौ ।
नैगमोऽन्यो यथासद्वित्सामान्यमिति निर्णयः ॥६१॥
विद्यते चापरोऽशुद्धद्रव्यव्यञ्जनपर्ययौ ।
अर्थीकरोति यः सोऽत्र नागुणीति निगद्यते ॥६२॥
भेदाभिसन्धिरत्यन्तं प्रतीतेरपलापकः ।
पूर्ववन्नैगमाभासः प्रत्येतव्यो तयोरपि ॥६३॥
नवधा नैगमस्यैव ख्याते पञ्चदशोदिताः ।
नया प्रतीतिमारूढा. संग्रहादिनयैः सह ॥६४॥
एकत्वेन विशेषाणां ग्रहणं संग्रहो नयः ।
सजातेरविरोधेन दृष्टेष्टाभ्यां कथंचन ॥६५॥
समेकीभावसम्यक्त्वे वर्तमानो हि गृह्यते ।
निरुक्त्या लक्षणं तस्य तथा सति विभाव्यते ॥६६॥
शुद्धद्रव्यमभिप्रेति सम्मात्रं संग्रह. पर. ।
स चाशेषविशेषेषु सदौदासीन्यभागिह ॥६७॥
निराकृतविशेषस्तु सत्ताद्वैतपरायणः ।
तदाभास समाख्यातः सद्भिर्दृष्टेष्टबाधनात् ॥६८॥
अभिन्नं व्यक्तभेदेभ्यः सर्वथा बहुधानकम् ।
महासामान्यमित्युक्तिः केषांचिद् दुर्नयस्तथा ॥६९॥
शब्दब्रह्मेति चान्येषां पुरुषाद्वैतमित्यपि ।
संवेदनाद्वयं वेति प्रायशोऽन्यत्र दर्शितम् ॥७०॥
द्रव्यत्वं सकलद्रव्यव्याप्यभिप्रेति चापरः ।
पर्यायत्वं च निःशेषपर्यायव्यापि संग्रहः ॥७१॥

तथैवावान्तरान्भेदान्संगृह्यैकत्वतो बहुः ।
वर्त्ततेऽयं नयः सम्यक् प्रतिपक्षा निराकृतिः ॥७२॥

स्वव्यक्त्यात्मकतैकान्तस्तदाभासोऽप्यनेकधा ।
ीति ाधितो बोध्यो निःशेषोऽप्यनया दिशा ॥७३॥

संग्रहेण गृहीतानामर्थानां विधिपूर्वकम् ।
योऽवहारो विभागः स्याद् व्यवहारनयः स नः ॥७४॥

स चानेकप्रकारः स्यादुत्तरः परसंग्रहात् ।
यत्सत्तद्द्रव्यपर्य्यायाविति प्रागृजुसूत्रतः ॥७५॥

कल्पनारोपितद्रव्यपर्यायप्रविभागभाक् ।
ाणाबाधितोऽन्यस्तु तदाभासोऽवसीयताम् ॥७६॥

ऋजुसूत्रः क्षणध्वंसि वस्तु सत्सूत्रयेदृजुः ।
प्राधान्येन गुणीभावाद्द्रव्यस्यानर्पणात्सतः ॥७७॥

निराकरोति यो द्रव्यं व्यवहारश्च सर्वथा ।
तदाभासोऽभिमन्तव्यः प्रतीतेरपलापतः ॥७८॥

कार्यकारणता नास्ति ग्राह्यग्राहकतापि वा ।
वाच्यवाचकता चेति क्वार्थसाधनदूषणम् ॥७९॥

लोकसंवृत्तिसत्यं च सत्य च परमार्थता ।
क्वैव सिद्ध्येद्यदाश्रित्य बौद्धाना धर्मदेशना ॥८०॥

सामानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता ।
साध्यसाधनभावो वा क्वाधाराधेयतापि च ॥८१॥

संयोगो विप्रयोगो वा क्रियाकारकसंस्थितिः ।
सादृश्यं वैसादृश्यं वा स्वसन्तानेतरस्थितिः ॥८२॥

समुदायः क्व प्रेत्यभावादिर्द्रव्यस्य निह्नवे ।
बन्धमोक्षव्यवस्था वा सर्वदेष्टा प्रसिद्धितः ॥८३॥

कालादिभेदतोऽर्थस्य भेदं यः प्रतिपादयेत् ।
सोऽत्र शब्दनयः शब्दप्रधानत्वादुदाहृतः ॥८४॥

विश्वदृश्वास्य भविता सूनुरित्येकमादृता ।
पदार्थं कालभेदेऽपि व्यहारानुरोधतः ॥८५॥

करोति क्रियते पुष्यस्तारकापोऽम्भ इत्यपि ।
कारकव्यक्तिसंख्यानां भेदोऽपि च परे जनाः ॥८६॥

एहि मन्ये रथेनेत्यादिकसाधनभिद्यपि ।
संतिष्ठेत प्रतिष्ठेतेत्याद्युपग्रहभेदने, ॥८७॥

श्रेयः परीक्षायामिति शब्दः प्रकाशयेत् ।
कालादिभेदनेऽप्यर्थभिदनेऽतिप्रसङ्गतः ॥८८॥

तथा कालादिनानात्वकल्पनं निष्प्रयोजनम् ।
सिद्धेः कालादिनैकेन कार्यस्येष्टस्य तत्त्वतः ॥८९॥

कालाद्यन्यतमस्यैव कल्पनं तैर्विधीयताम् ।
येषां कालादिभेदेऽपि पदार्थैकत्वनिश्चयः ॥९०॥

शब्दः कालादिभिभिन्नोऽभिन्नार्थप्रतिपादकः ।
कालादिभिन्नशब्दत्वात्तादृक् सिद्धान्यशब्दवत् ॥९१॥

पर्यायशब्दभेदेन भिन्नार्थस्याभिरोहणात् ।
नयः समभिरूढः स्यात्पूर्ववच्चास्य निर्णयः ॥९२॥

इन्द्रः पुरन्दरः इत्याद्या भिन्नगोचराः ।
शब्दा विभिन्नशब्दत्वाद्वारणशब्दवत् ॥९३॥

तत्क्रियापरिणामोऽर्थस्तथैवेति विनिश्चयात् ।
एवंभूतेन नीयेत क्रियान्तरपराङ्मुखः ॥९४॥

यो यत्क्रियार्थमाचष्टे नासावन्यत्क्रियां ध्वनिः ।
पठतीत्यादिशब्दानां पाठाद्यर्थप्रसंजनम् ॥९५॥

इत्यन्योऽन्यमपेक्षायां सन्तः शब्दादयो नयाः ।
निरपेक्षाः पुनस्ते स्युस्तदाभासा विरोधतः ॥९६॥
तत्रर्जुसूत्रपर्यन्ताश्चत्वारोऽर्थनया मताः ।
त्रयः शब्दनयाः शेषाः शब्दवाच्यार्थगोचराः ॥९७॥
पूर्वः पूर्वनयो भूमवि : कारणात्मकः ।
परः परः पुनः सूक्ष्मगोचरो हेतुमानिह ॥९८॥
सन्मात्रविषयत्वेन संग्रहस्य न युज्यते ।
महावि ता भावा–भावार्थान्नैगमान्नयात् ॥९९॥
यथाहि सति संकल्पस्तथैवासति विद्यते ।
तत्र प्रवर्त्तमानस्य नैगमस्य महार्थता ॥१००॥
सङ्ग्रहाद्व्यवहारोऽपि स्याद्विशेषावबोधकः ।
न भूमवि योऽशेषसत्समूहोपदर्शिनः ॥१०१॥
नर्जुसूत्रः प्रभूतार्थो मानार्थगोचरः ।
कालत्रितयवृत्त्यर्थगोचराद् व्यवहारतः ॥१०२॥
कालादिभेदतोऽप्यर्थमभिन्नमुपगच्छतः ।
नर्जुसूत्रान्महार्थोऽत्र शब्दस्तद्विपरीतवित् ॥१०३॥
शब्दात्पर्यायभेदेनाभिन्नमर्थमभीच्छतः ।
न स्यात्समभिरूढोऽपि महार्थस्तद्विपर्ययः ॥१०४॥
क्रियाभेदेऽपि चाभिन्नमर्थमभ्युपगच्छतः ।
नैवंभूतः प्रभूतार्थनयः समभिरूढतः ॥१०५॥
नैगमप्रातिकूल्येन सङ्ग्रहः संप्रवर्तते ।
ताभ्यां वाचामिहाभीष्टा सप्तभङ्गी विभागतः ॥१०६॥
नैगमव्यवहाराभ्यां विरुद्धाभ्यां तथैव सा ।
स्यान्नैगमर्जुसूत्राभ्या [illegible]भ्यामविगानतः ॥१०७॥

सशब्दान्नैगमादन्यायुक्तात्समभिरूढतः ।
सैवंभूताच्च सा ज्ञेया विधानप्रतिषेधगा ॥१०८॥
सङ्ग्रहादेशच्च शेषेण प्रतिपक्षेण गम्यताम् ।
तथैव व्यापिनी सप्तभङ्गी नयविदा मता ॥१०९॥
विशेषैरुत्तरैः सर्वैर्नयानामुदितात्मनाम् ।
परस्परविरुद्धार्थैः द्वन्द्ववृत्तिर्यथायथम् ॥११०॥
प्रत्येया प्रतिपर्यायमविरुद्धा तथैव सा ।
प्रमाणसप्तभङ्गी च तां विना नाभिवागतिः ॥१११॥
सर्वे शब्दनयास्तेन परार्थप्रतिपादने ।
स्वार्थप्रकाशने मातुरिमे ज्ञाननयाः स्थिताः ॥११२॥
तैर्नीयमानवस्त्वंशाः कथ्यन्तेऽर्थनयाश्च ते ।
त्रिधैव व्यवतिष्ठन्ते प्रधानगुणभावतः ॥११३॥
यत्र प्रवर्त्ततेऽर्थांशे नियमादुत्तरो नयः ।
पूर्वः पूर्वो नयस्तत्र वर्तमानो न वार्यते ॥११४॥
सहस्रेऽष्टशती यद्वत्तस्यां पञ्चशती मता ।
पूर्वसंख्योत्तरत्र स्यात्संख्यायामविरोधतः ॥११५॥
पूर्वत्र नोत्तरा संख्या यथा जातु प्रवर्त्तते ।
तथोत्तरनयः पूर्वनयार्थे सकले सदा ॥११६॥
नयार्थेषु प्रमाणस्य वृत्तिः सकलदेशिनः ।
भवेन्न तु प्रमाणार्थे नयानामखिलेऽञ्जसा ॥११७॥
संक्षेपेण नयास्तावद् व्याख्याताः सूत्रसूचिताः ।
तद्विशेषाः प्रपञ्चेन सञ्चिन्त्या नयचक्रतः ॥११८॥

शार्दूलविक्रीडितम्

बालानां हितकामिनामतिमहापापैः पुरोपार्जितै–
र्माहात्म्यात्तमसः स्वयं कलिबलात्प्रायो गुणद्वेषिभिः ।
न्यायोऽयं मलिनीकृतः कथमपि प्रक्षाल्यते नीयते
सम्यग्ज्ञानजलैर्वचोभिरमलं तत्रानुकम्पापरैः ॥११९॥

इति नयविवरण समाप्तम् ।

श्रीमदमृतचन्द्रसूरिविरचितम्

६ ात्म- ृ - लशम्

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे ॥१॥

अनन्तधर्मणस्तत्त्वं पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः ।
अनेकान्तमयी मूर्तिर्नित्यमेव प्रकाशताम् ॥२॥

परपरिणतिहेतोर्मोहनाम्नोऽनुभावा-
दविरतमनुभाव्यव्याप्तिकल्माषितायाः ।
मम परमविशुद्धिः शुद्धचिन्मात्रमूर्त्ते-
र्भवतु समयसारव्याख्ययैवानुभूतेः ॥३॥

उभयनयविरोधध्वंसिनि स्यात्पदाङ्के
जिनवचसि रमन्ते ये स्वयं वान्तमोहाः ।
सपदि समयसारं ते परं ज्योतिरुच्चै-
रनवमनयपक्षाऽक्षुण्णमीक्षन्त एव ॥४॥

व्यवहरणनयः स्याद्यद्यपि प्राक्पदव्या-
मिह निहितपदानां हन्त हस्तावलम्बः ।
तदपि परममर्थं चिच्चमत्कारमात्रं
परविरहितमन्तः पश्यतां नैष किञ्चित् ॥५॥

एकत्वे नियतस्य शुद्धनयतो व्याप्तुर्यदस्यात्मनः
पूर्णज्ञानघनस्य दर्शनमिह द्रव्यान्तरेभ्यः पृथक् ।
सम्यग्दर्शनमेतदेवनियमादात्मा च तावानयम्
तन्मुक्त्वानवतत्त्वसन्ततिमिमामात्मायमेकोऽस्तु नः ॥६॥

अतः शुद्धनयायत्तं प्रत्यग्ज्योतिश्चकास्ति तत् ।
नवतत्त्वगतत्वेऽपि यदेकत्वं न मुञ्चति ॥७॥

चिरमिति नवतत्त्वच्छन्नमुन्नीयमानं
कनकमिव निमग्नं वर्णमालाकलापे ।
अथ तविविक्तं मेकरूपं
प्रतिपदमिदमात्मज्योतिरुद्योतमानम् ॥८॥

उदयति न नयश्रीरस्तमेति णं
क्वचिदपि च न विद्मो याति निक्षेप ।
किमपरमभिदध्मो धाम्नि सर्वंकषेऽस्मि-
न्ननुभवमुपयाते भाति न द्वैतमेव ॥९॥

आत्मस्वभावं परभावभिन्नमापूर्णमाद्यन्तविमुक्तमेकम् ।
विलीनसङ्कल्पविकल्पजालं प्रकाशयन् शुद्धनयोऽभ्युदेति ॥१०॥

न हि विदधति बद्धस्पृष्टभावादयोऽमी
स्फुटमुपरितरन्तोऽप्येत्य यत्र प्रतिष्ठाम् ।
अनुभवतु तमेव द्योतमानं ात्
जगदपगतमोहीभूय सम्यक्स्वभावम् ॥११॥

भूतं भान्तमभूतमेव रभसान्निर्भिद्य बन्धं सुधी-
र्यद्यन्तः किल कोऽप्यहो कलयति व्याहत्य मोहं हठात् ।
आत्मात्मानुभवैकगम्यमहिमा व्यक्तोऽयमास्ते ध्रुवं
नित्यं कर्मकलङ्कपङ्कविकलो देवः स्वयं शा ः ॥१२॥

आत्मानुभूतिरिति शुद्धनयात्मिका या
ज्ञानानुभूतिरियमेव किलेति बुद्ध्वा ।
आत्मानमात्मनि निवेश्य सुनि.प्रकम्प-
मेकोऽस्ति नित्यमवबोधघनः समन्तात् ॥१३॥

ण्डितमनाकुलं ज्वलदनन्तमन्तर्बहि-
र्महः परममस्तु नः सहजमुद्विलासं सदा ।

चिदुच्छलननिर्भरं   सकलकालमालम्बते
    यदेकरसमुल्लसल्लवणखिल्यलीलायितम् ।।१४।।

एष ज्ञानघनो नित्यमात्मा सिद्धिमभीप्सुभिः ।
साध्यसाधकभावेन द्विधैकः समुपास्यताम् ।।१५।।

दर्शनज्ञानचारित्रैस्त्रित्वादेकत्वतः   स्वयम् ।
मेचकोऽमेचकश्चापि   त्मा   रणतः ।।१६।।

दर्शनज्ञानचारित्रैस्त्रिभिः   परिणतत्वतः ।
एकोऽपि त्रिस्वभावत्वाद्व्यवहारेण मेचकः ।।१७।।

परमार्थेन तु   व्यक्तज्ञातृत्वज्योतिषैककः ।
सर्वभावान्तरध्वंसिस्वभावत्वादमे :   ।।१८।।

आत्मनश्चिन्तयैवालं   मेचकामेचकत्वयोः ।
दर्शनज्ञानचारित्रैः साध्यसिद्धिर्न चान्यथा ।।१९।।

कथमपि समुपात्तत्रित्वमप्येकताया
    अपतितमिदमात्मज्योतिरुद्गच्छदच्छम् ।
मनुभवामोऽनन्तचैतन्यचिह्नं
    न खलु न खलु यस्मादन्यथा साध्यसिद्धिः ।।२०।।

कथमपि हि लभन्ते भेदविज्ञानमूला-
    मचलितमनुभूतिं ये स्वतो वान्यतो वा ।
प्रतिफलननिमग्नानन्तभावस्वभावै-
    र्मुकुरवदविकाराः संततं स्युस्त एव ।।२१।।

त्यजतु जगदिदानीं मोहमाजन्मलीढं
    रसयतु रसिकानां रोचनं ज्ञानमुद्यत् ।
इह कथमपि नात्माऽनात्मना साकमेकः
    किल कलयति काले क्वापि तादात्म्यवृत्तिम् ।।२२।।

अयि कथमपि मृत्वा तत्त्वकौतूहली सन्-
　　अनुभव भव मूर्त्तेः पार्श्ववर्त्ती मुहूर्तम् ।
पृथगथ विलसंतं स्वं समालोक्य येन
　　त्यजसि झगिति मूर्त्या साकमेकत्वमोहम् ।।२३।।

कान्त्यैव स्नपयन्ति ये दशदिशो धाम्ना निरुन्धन्ति ये
धामोद्दाममहस्विनां जनमनो मुष्णन्ति रूपेण ये ।
दिव्येन ध्वनिना सुखं श्रवणयोः साक्षात्क्षरन्तोऽमृतम्
वन्द्यास्तेऽष्टसहस्रलक्षणधरास्तीर्थेश्वराः सूरयः ।।२४।।

प्राकारकवलिताम्बरमुपवनराजीनिगीर्णभूमितलम् ।
पिबतीव हि नगरमिदं परिखावलयेन पातालम् ।।२५।।

नित्यमविकारसुस्थितसर्वांगमपूर्वसहजलावण्यम् ।
अक्षोभमिव समुद्रं जिनेन्द्ररूपं परं जयति ।।२६।।

एकत्वं व्यवहारतो न तु पुनः कायात्मनोर्निश्चया-
न्नुः स्तोत्रं व्यवहारतोऽस्ति वपुषः स्तुत्या न तत्तत्त्वतः ।
स्तोत्रं निश्चयतश्चितो भवति चित्स्तुत्यैव सैवं भवे-
　　त्तीर्थंकरस्तवोत्तरबलादेकत्वमात्माङ्गयोः ।।२७।।

इति परिचिततत्त्वैरात्मकायैकतायां
　　नयविभजनयुक्त्यात्यन्तमुच्छादितायाम् ।
अवतरति न बोधो बोधमेवाद्य कस्य
　　स्वरसरभसकृष्टः प्रस्फुटन्नेक एव ।।२८।।

अवतरति न यावद् वृत्तिमत्यन्तवेगा-
　　दनवमपरभावत्यागदृष्टान्तदृष्टिः ।
झटिति सकलभावैरन्यदीयैर्विमुक्ता
　　स्वयमियमनुभूतिस्तावदाविर्बभूव ।।२९।।

स ः स्वरसनिर्भरभावं-
चेतये स्वयमहं स्वमिहैकम् ।
नास्ति नास्ति मम कश्चन मोहः
शुद्धचिद्घनमहोनिधिरस्मि ॥३०॥

इति सति सह सर्वैरन्यभावैर्विवेके
स मयमुपयोगो बिभ्रदात्मानमेकम् ।
प्रकटितपरमार्थैर्दर्शनज्ञानवृत्तैः
कृतपरिणतिरात्माराम एव प्रवृत्तः ॥३१॥

मज्जन्तु निर्भरममी सममेव लोका
आलोकमुच्छलति शान्तरसे समस्ताः ।
आप्लाव्य विभ्रमतिरस्करिणीं भरेण
प्रोन्मग्न एष भगवानवबोधसिन्धुः ॥३२॥

इति रंगभूमिका ॥१॥

जीवाजीवविवेकपुष्कलदृशा प्रत्या त्पार्षदा-
नासंसारनिबद्धबन्धनविधिध्वंसाद्विशुद्धं स्फुटत् ।
आत्माराममनन्तधा हसाध्यक्षेण नित्योदि
धीरोदात्तमनाकुलं वि सति ज्ञानं मनो ह्लादयत् ॥१॥

विरम किमपरेणाकार्यकोलाहलेन
स्वयमपि निभृतः सन् पश्य षण्मासमेकम् ।
हृदयसरसि पुंसः पुद्गलाद्भिन्नधाम्नो
ननु किमनुपलब्धिर्भाति किं चोपलब्धिः ॥२॥

चिच्छक्तिव्याप्तसर्वस्वसारो जीव इयानयं ।
अतोऽतिरिक्ताः सर्वेऽपि भावाः पौद्गलिका अमी ॥३॥

सकलमपि विहायाह्नाय चिच्छक्तिरिक्तं
स्फुटतरमवगाह्य स्वं च चिच्छक्तिमात्रम् ।

इममुपरि तरन्तं चारु विश्वस्य साक्षात्
कलयतु परमात्मात्मानमात्मन्यनन्तम् ॥४॥

वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा
भिन्ना भावाः ं एवास्य पुंसः ।
तेनैवान्तस्तत्त्वतः पश्यतोऽमी
नो दृष्टाः स्युर्दृष्टमेकं परं स्यात् ॥५॥

निर्वर्त्यते येन यदत्र किंचित्
तदेव तत्स्यान्न कथंचनान्यत् ।
रुक्मेण निर्वृत्तमिहासिकोशं
पश्यन्ति रुक्मं न कथंचनासिम् ॥६॥

वर्णादिसामग्र्यमिदं विदन्तु
निर्माणमेकस्य हि पुद्गलस्य ।
ततोऽस्त्विदं पुद्गल एव नात्मा
यतः स विज्ञानघनस्ततोऽन्यः ॥७॥

घृतकुम्भाभिधानेऽपि कुम्भो घृतमयो न चेत् ।
जीवो वर्णादिमज्जीवो जल्पनेऽपि न तन्मयः ॥८॥

अनाद्यनन्तमचलं स्वसंवेद्यमिदं स्फुटम् ।
जीवः स्वयं तु चैतन्यमुच्चैश्चकचकायते ॥९॥

वर्णाद्यैः सहितस्तथा विरहितो द्वेधास्त्यजीवो यतो
नामूर्त्तत्वमुपास्य पश्यति जगज्जीवस्य तत्त्वं : ।
इत्यालोच्य विवेचकैः समुचितं नाव्याप्यतिव्यापि वा
व्यक्तं व्यञ्जितजीवतत्त्वमचलं चैतन्यमालम्ब्यताम् ॥१०॥

जीवादजीवमिति लक्षणतो विभिन्नं
ज्ञानी जनोऽनुभवति स्वयमुल्लसन्तम् ।

अज्ञानिनो निरवधिप्रविजृम्भितोऽयं
मोहस्तु तत्कथमहो बत नानटीति ॥११॥

अस्मिन्ननादिनि महत्यविवेकनाट्ये
वर्णादिमान्नटति पुद्गल एव नान्यः ।
रागादिपुद्गलविकारविरुद्धशुद्ध-
चैतन्यधातुमयमूर्तिरयं च जीवः ॥१२॥

इत्थं ज्ञानक्रकचकलनापाटनं नाटयित्वा
जीवाजीवौ स्फुटविघटनं नैव यावत्प्रयातः ।
विश्वं व्याप्य प्रसभविकसद्व्यक्तचिन्मात्रशक्त्या
ज्ञातृद्रव्यं स्वयमतिरसात्तावदुच्चैश्चकाशे ॥१३॥

इति जीवाजीवाधिकार ॥२॥

एकः कर्त्ता चिदहमिह मे कर्म कोपादयोऽमी
इत्यज्ञानां शमयदभितः कर्तृकर्मप्रवृत्तिम् ।
ज्ञानज्योतिः स्फुरति परमोदात्तमत्यन्तधीरं
साक्षात्कुर्वन्निरुपधिपृथग्द्रव्यनिर्भासि विश्वम् ॥१॥

परपरिणतिमुज्झत् खंडयद्भेदवादा-
निदमुदितमखण्डं ज्ञानमुच्चण्डमुच्चैः ।
ननु कथमवकाशः कर्तृकर्मप्रवृत्ते-
रिह भवति कथं वा पौद्गलः कर्मबन्धः ॥२॥

इत्येवं विरचय्य संप्रति परद्रव्यान्निवृत्तिं परां
स्वं विज्ञानघनस्वभावमभयादास्तिघ्नुवानः परम् ।
अज्ञानोत्थितकर्तृकर्मकलनात् क्लेशान्निवृत्तः स्वयं
ज्ञानीभूत इतश्चकास्ति जगतः साक्षी पुराणः पुमान् ॥३॥

व्याप्यव्यापकता तदात्मनि भवेन्नैवातदात्मन्यपि
व्याप्यव्यापकभावसम्भवमृते का कर्तृकर्मस्थितिः ।

इत्युद्दामविवेकघस्मरमहो भारेण भिन्दंस्तमो
ज्ञानीभूय तदा स एष लसितः कर्तृत्वशून्यः पुमान् ॥४॥

ज्ञानी जानन्नपीमा स्वपरपरिणतिं पुद्गलश्चाप्यजानन्
व्याप्तृव्याप्यत्वमन्तः कलयितुमसहौ नित्यमत्यन्तभेदात् ।
अज्ञानात्कर्तृकर्मभ्रममतिरनयोर्भाति ता याव-
द्विज्ञानार्चिश्चकास्ति क्रकचवददयं भेदमुत्पाद्य सद्यः ॥५॥

य. परिणमति स कर्ता यः परिणामो भवेत्तु तत्कर्म ।
या परिणतिः क्रिया सा त्रयमपि भिन्नं न वस्तुतया ॥६॥

एकः परिणमति सदा परिणामो जायते कस्य ।
एकस्य परिणतिः स्यादनेकमप्येकमेव : ॥७॥

नोभौ परिणमतः खलु परिणामो नोभयोः प्रजायेत ।
उभयोर्न परिणतिः स्याद्यदनेकमनेकमेव सदा ॥८॥

नैकस्य हि कर्तारौ द्वौ स्तो द्वे कर्मणी न चैकस्य ।
नैकस्य च क्रिये द्वे एकमनेकं यतो न स्यात् ॥९॥

आसंसारत एव धावति परं कुर्वेऽहमित्युच्चकै-
र्दुर्वारं ननु मोहिनामिह महाहङ्काररूपं तमः ।
तद्भूतार्थपरिग्रहेण विलयं यद्येकवारं व्रजेत्
तत्किं ज्ञानघनस्य बन्धनमहो भूयो भवेदात्मनः ॥१०॥

आत्मभावान्करोत्यात्मा परभावान्सदा परः ।
आत्मैव ह्यात्मनो भावाः परस्य पर एव ते ॥११॥

अज्ञानतस्तु सतृणाभ्यवहारकारी
ज्ञानं स्वयं किल भवन्नपि रज्यते यः ।
पीत्वा दधीक्षुमधुराम्लरसातिगृद्ध्या
गां दोग्धि दुग्धमिव नूनमसौ रसालम् ॥१२॥

अज्ञानान्मृगतृष्णिकां जलधिया धावन्ति पातुं मृगा
ात्तमसि द्रवन्ति भुजगाध्यासेन रज्जौ जनाः ।
ानाच्च विकल्प करणाद्वातोत्तरङ्गाब्धिवत्
शुद्धज्ञानमया अपि स्वयममी कर्त्रीभवन्त्याकुलाः ॥१३॥

ज्ञानाद्विवेचकतया तु परात्मनोर्यो
जानाति हंस इव वाःपयसोर्विशेषम् ।
चैतन्यधातुमचलं स ाधिरूढो
जानीत एव हि करोति न किञ्चनापि ॥१४॥

ज्ञानादेव ज्वलनपयसोरौष्ण्यशैत्यव्यवस्था
ज्ञानादेवोल्लसति लवणस्वादभेदव्युदासः ।
ज्ञानादेव स्वरसविकसन्नित्यचैतन्यधातोः
क्रोधादेश्च प्रभवति भिदा भिन्दती कर्तृभा ॥१५॥

ानं ज्ञानमप्येवं कुर्वन्नात्मानमञ्जसा ।
स्यात्कर्त्तात्मात्मभा परभावस्य न क्वचित् ॥१६॥

आत्मा ज्ञानं स्वयं ज्ञानं ज्ञानादन्यत्करोति किम् ।
परभावस्य कर्त्तात्मा मोहोऽयं व्यवहारिणाम् ॥१७॥

जीवः करोति यदि पुद्गल नैव
कस्तर्हि तत्कुरुत इत्यभिशङ्कयैव ।
एतर्हि तीव्ररयमोहनिबर्हणाय
संकीर्त्यते शृणुत पुद्गलकर्मकर्तृ ॥१८॥

स्थितेत्यविघ्ना खलु पुद्गलस्य
स्वभावभूता परिणामशक्तिः ।
तस्यां स्थितायां स करोति भावं
यमात्मनस्तस्य स एव कर्त्ता ॥१९॥

स्थितेति जीवस्य निरन्तराया
स्वभावभूता परिणामशक्तिः ।
तस्यां स्थितायां स करोति भावं
यं स्वस्य तस्यैव भवेत्स कर्ता ॥२०॥

ज्ञानमय एव भावः कुतो भवेद् ज्ञानिनो न पुनरन्यः ।
ज्ञानमयः सर्वः कुतोऽयमज्ञानिनो नान्यः ॥२१॥

ज्ञानिनो ज्ञाननिर्वृत्ताः सर्वे भावा भवन्ति हि ।
सर्वेऽप्यज्ञाननिर्वृत्ता भवन्त्यज्ञानिनस्तु ते ॥२२॥

अज्ञानमयभावानामज्ञानी व्याप्य भूमिकाः ।
कर्मनिमित्तानां भावानामेति हेतुताम् ॥२३॥

य एव मुक्त्वा नयपक्षपातं
स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यम् ।
विकल्पजालच्युतशान्तचित्ता-
स्त एव साक्षादमृतं पिबन्ति ॥२४॥

एकस्य बद्धो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥२५॥

एकस्य मूढो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥२६॥

एकस्य रक्तो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।

यस्तत्त्ववेदो च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥२७॥

एकस्य दुष्टो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदो च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥२८॥

एकस्य कर्त्ता न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतप ात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥२९॥

एकस्य भोक्ता न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं चिच्चिदेव ॥३०॥

एकस्य जीवो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति प ातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३१॥

एकस्य सूक्ष्मो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३२॥

एकस्य हेतुर्न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।

यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३३॥

एकस्य कार्यं न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३४॥

एकस्य चैको न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३५॥

एकस्य भावो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३६॥

एकस्य शान्तो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति प ातौ ।
त्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३७॥

एकस्य नित्यो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३८॥

एकस्य वाच्यो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।

यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥३९॥

एकस्य नाना न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥४०॥

एकस्य चेत्यो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्य खलु चिच्चिदेव ॥४१॥

एकस्य दृश्यो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥४२॥

एकस्य वेद्यो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥४३॥

एकस्य भातो न तथा परस्य
चिति द्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ ।
यस्तत्त्ववेदी च्युतपक्षपात-
स्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ॥४४॥

स्वेच्छासमुच्छलदनल्पविकल्पजाला-
मेवं व्यतीत्य महतीं नयपक्षकक्षाम् ।

अन्तर्बहिस्समरसैकरसस्वभावं
स्व भावमेकमुपयात्यनुभूतिमात्रम् ॥४५॥

इन्द्रजालमिदमेवमुच्छलत्-
पुष्कलोच्चलविकल्पवीचिभिः ।
यस्य विस्फुरणमेव तत्क्षणं
कृत्स्नमस्यति तदस्मि चिन्महः ॥४६॥

चित्स्वभावभरभावितभावा भावभावपरमार्थतयैकम् ।
बन्धपद्धतिमपास्य समस्ता चेतये समयसारमपारम् ॥४७॥

आक्रामन्नविकल्पभावमचलं पक्षैर्नयानां विना
सारो यः समयस्य भाति निभृतैरास्वाद्यमानः स्वयम् ।
विज्ञानैकरसः स एष भगवान् पुण्यः पुराणः पुमान्
ज्ञानं दर्शनमप्ययं किमथवा यत्किंचनैकोऽप्ययम् ॥४८॥

दूरं भूरिविकल्पजालगहने भ्राम्यन्निजौघाच्च्युतो
दूरादेव विवेकनिम्नगमनान्नीतो निजौघं बलात् ।
विज्ञानैकरसस्तदेकरसिनामात्मानमात्माहर-
न्नात्मन्येव सदा गतानुगततामायात्ययं तोयवत् ॥४९॥

विकल्पकः परं कर्ता विकल्पः कर्म केवलम् ।
न जातु कर्तृकर्मत्वं सविकल्पस्य नश्यति ॥५०॥

यः करोति स करोति केवलं
यस्तु वेत्ति स तु वेत्ति केवलम् ।
यः करोति न हि वेत्ति स क्वचित्
यस्तु वेत्ति न करोति स क्वचित् ॥५१॥

ज्ञप्तिः करोतौ न हि भासतेऽन्त-
र्ज्ञप्तौ करोतिश्च न भासतेऽन्तः ।

ज्ञप्तिः करोतिश्च ततो विभिन्ने
ज्ञाता न कर्तेति ततः स्थितं च ।।५२।।

कर्त्ता कर्मणि नास्ति नास्ति नियतं कर्मापि तत्कर्त्तरि
द्वन्द्वं विप्रतिषिध्यते यदि तदा का कर्तृकर्मस्थितिः ।
ज्ञाता ज्ञातरि कर्म कर्मणि सदा व्यक्तेति वस्तुस्थिति-
र्नेपथ्ये बत नानटीति रभसान्मोहस्तथाप्येष किम् ।।५३।।

कर्त्ता कर्त्ता भवति न यथा कर्म कर्मापि नैव
ज्ञानं ज्ञानं भवति च यथा पुद्गलः पुद्गलोऽपि ।
ज्ञानज्योतिर्ज्वलितमचलं व्यक्तमन्तस्तथोच्चै-
श्चिच्छक्तीनां निकरभरतोऽत्यन्तगम्भीरमेतत् ।।५४।।

इति कर्तृकर्माधिकार ।।३।।

तदथ कर्म शुभाशुभभेदतो द्वितयतां गतमैक्यमुपानयन् ।
ग्लपितनिर्भरमोहरजा अयं स्वयमुदेत्यवबोधसुधाप्लवः ।।१।।

एको दूरात्त्यजति मदिरां ब्राह्मणत्वाभिमाना-
दन्यः शूद्रः स्वयमहमिति स्नाति नित्यं तयैव ।
द्वावप्येतौ युगपदुदरान्निर्गतौ शूद्रिकायाः
शूद्रौ साक्षादथ च चरतो जातिभेदभ्रमेण ।।२।।

हेतुस्वभावानुभवाश्रयाणां सदाप्यभेदान्न हि कर्मभेद. ।
तद्बन्धमार्गाश्रितमेकमिष्टं स्वयं समस्तं खलु बन्धहेतुः ।।३।।

कर्म सर्वमपि सर्वविदो यद् बन्धसाधनमुशन्त्यविशेषात् ।
तेन सर्वमपि तत्प्रतिषिद्धं ज्ञानमेव विहितं शिवहेतुः ।।४।।

निषिद्धे सर्वस्मिन् सुकृतदुरिते कर्मणि किल
प्रवृत्ते नैष्कर्म्ये न खलु मुनयः सन्त्यशरणाः ।
तदा ज्ञाने ज्ञानं प्रतिचरितमेषां हि शरणं
स्वयं विन्दन्त्येते परमममृतं तत्र निरताः ।।५।।

यदेतद् ज्ञानात्मा ध्रुवमचलमाभाति भवनं
शिवस्यायं हेतुः स्वयमपि यतस्तच्छिव इति ।
अतोऽन्यद्बन्धस्य स्वयमति यतो बन्ध इति तत्
ततो ज्ञानात्मत्वं भवनमनुभूतिर्हि विहितम् ॥ ६ ॥

वृत्तं ज्ञानस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं ।
एकद्रव्यस्वभावत्वान्मोक्षहेतुस्तदेव तत् ॥ ७ ॥

वृत्तं कर्मस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं न हि ।
द्रव्यान्तरस्वभावत्वान्मोक्षहेतुर्न कर्म तत् ॥ ८ ॥

मोक्षहेतुतिरोधानाद् बन्धत्वात्स्वयमेव च ।
मोक्षहेतुतिरोधायिभावत्वात्तन्निषिध्यते ॥ ९ ॥

संन्यस्तव्यमिदं समस्तमपि तत्कर्मैव मोक्षार्थिना
संन्यस्ते सति तत्र का किल कथा पुण्यस्य पापस्य वा ।
सम्यक्त्वादिनिजस्वभावभवनान्मोक्षस्य हेतुर्भव-
न्नैष्कर्म्यप्रतिबद्धमुद्धतरसं ज्ञानं स्वय धावति ॥१०॥

यावत्पाकमुपैति कर्म विरतिर्ज्ञानस्य सम्यङ् न सा
कर्मज्ञानसमुच्चयोऽपि विहितस्तावन्न काचित्क्षतिः ।
किं त्वत्रापि समुल्लसत्यवसतो यत्कर्म बन्धाय
मोक्षाय स्थितमेकमेव परमं ज्ञानं विभक्तं स्वतः ॥११॥

मग्ना कर्मनयावलम्बनपरा ज्ञानं न जानन्ति यत्
मग्ना ज्ञानमयैषिणोऽपि यदतिस्वच्छन्दमन्दो ः ।
विश्वस्योपरि ते तरन्ति सतत ज्ञानं भवन्तः
ये कुर्वन्ति न कर्म जातु न वशं यान्ति प्रमा च ॥१२॥

भेदोन्मादं भ्रमरसभरान्नाटयत्पीतमोहं
मूलोन्मूलं सकलमपि तत्कर्म कृत्वा बलेन ॥

अथ महामदनिर्भरमन्थरं   ररङ्गपरागतमास्रवम् ।
अयमुदारगभीरमहोदयो जयति दुर्ज्जयबोधधनुर्द्धरः ।।१।।

भावो रागद्वेषमोहैर्विना यो जीवस्य स्याद् ज्ञाननिर्वृत्त एव ।
रुन्धन्सर्वान् द्रव्यकर्मा ौघानेषो भावः सर्वभावास्रवाणाम् ।।२।।

भावास्रवाभावमयं प्रपन्नो द्रव्यास्रवेभ्यः स्वत एव भिन्नः ।
ज्ञानी सदा ज्ञानमयैकभावो निरास्रवो ज्ञायक एक एव ।।३।।

सन्न्यस्यन्निजबुद्धिपूर्वमनिशं रागं समग्रं स्वयम्
वारंवारमबुद्धिपूर्वमपि तं जेतुं स्वशक्ति स्पृशन् ।
उच्छिन्दन् परवृत्तिमेव सकलां ज्ञानस्य पूर्णो भवन्ना-
त्मा नित्यनिरास्रवो भवति हि ज्ञानी यदा स्यात्तदा ।।४।।

सर्वस्यामेव   जीवन्त्यान्द्रव्यप्रत्ययसंततौ ।
कुतो निरा ो ज्ञानी नित्यमेवेति चेन्मतिः ।।५।।

विजहति न हि सत्तां प्रत्ययाः पूर्वबद्धाः
समयमनुसरन्तो यद्यपि द्रव्यरूपाः ।
तदपि   सकलरागद्वेषमोहव्युदासा-
दवतरति न जातु ज्ञानिनः कर्मबन्धः ।।६।।

रागद्वेषविमोहानां   ज्ञानिनो   यदसंभवः ।
तत एव न बन्धोऽस्य ते हि बन्धस्य कारणम् ।।७।।

अध्यास्य शुद्धनयमुद्धतबोधचिह्न-
मैकाग्र्यमेव कलयन्ति सदैव ये ते ।
रागादिमुक्तमनसः सततं भवन्तः
पश्यन्ति बन्धविधुरं समयस्य सारम् ।।८।।

प्रच्युत्य शुद्धनयतः पुनरेव ये तु
रागादियोगमुपयान्ति विमुक्तबोधाः ।
ते कर्मबन्धमिह बिभ्रति पूर्वबद्ध-
द्रव्यास्रवैः कृतविचित्रविकल्पजालम् ।।९।।

यदेतद् ज्ञानात्मा ध्रुवमचलमाभाति भवनं
शिवस्यायं हेतुः स्वयमपि यतस्तच्छिव इति ।
अतोऽन्यद्बन्धस्य स्वयमति यतो बन्ध इति तत्
ततो ज्ञानात्मत्वं भवनमनुभूतिर्हि विहितम् ।। ६ ।।

वृत्तं ज्ञानस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं । ।
एकद्रव्यस्वभावत्वान्मोक्षहेतुस्तदेव तत् ।। ७ ।।

वृत्तं कर्मस्वभावेन ज्ञानस्य भवनं न हि ।
द्रव्यान्तरस्वभावत्वान्मोक्षहेतुर्न कर्म तत् ।। ८ ।।

मोक्षहेतुतिरोधानाद् बन्धत्वात्स्वयमेव च ।
मोक्षहेतुतिरोधायिभावत्वात्तन्निषिध्यते ।। ९ ।।

संन्यस्तव्यमिदं समस्तमपि तत्कर्मैव मोक्षार्थिना
संन्यस्ते सति तत्र का किल कथा पुण्यस्य पापस्य वा ।
सम्यक्त्वादिनिजस्वभावभवनान्मोक्षस्य हेतुर्भव-
न्नैष्कर्मप्रतिबद्धमुद्धतरसं ज्ञानं स्वयं धावति ।।१०।।

यावत्पाकमुपैति कर्म विरतिर्ज्ञानस्य सम्यङ् न सा
कर्मज्ञानसमुच्चयोऽपि विहितस्तावन्न काचित्क्षतिः ।
किं त्वत्रापि समुल्लसत्यवसतो यत्कर्म बन्धाय तत्
मोक्षाय स्थितमेकमेव परमं ज्ञानं विभक्तं स्वतः ।।११।।

मग्ना. कर्मनयावलम्बनपरा ज्ञानं न जानन्ति यत्
मग्ना ज्ञामनयैषिणोऽपि यदतिस्वच्छन्दमन्दो ाः ।
विश्वस्योपरि ते तरन्ति सततं ज्ञानं भवन्तः स्वयं
ये कुर्वन्ति न कर्म जातु न वशं यान्ति प्रमा च ।।१२।।

भेदोन्मादं भ्रमरसभरान्नाटयत्पीतमोहं
मूलोन्मूलं सकलमपि तत्कर्म कृत्वा बलेन ।।

अथ महामदनिर्भरमन्थरं समररङ्गपरागतमास्रवम् ।
अयमुदारगभीरमहोदयो जयति दुर्ज्जयबोधधनुर्द्धरः ॥१॥

भावो रागद्वेषमोहैर्विना यो जीवस्य स्याद् ज्ञाननिर्वृत्त एव ।
रुन्धन्सर्वान् द्रव्यकर्मास्रवौघानेषो भावः सर्वभावास्रवाणाम् ॥२॥

भावास्रवाभावमयं प्रपन्नो द्रव्यास्रवेभ्यः स्वत एव भिन्नः ।
ज्ञानी सदा ज्ञानमयैकभावो निरास्रवो ज्ञायक एक एव ॥३॥

सन्न्यस्यन्निजबुद्धिपूर्वमनिशं रागं समग्रं स्वयम्
वारंवारमबुद्धिपूर्वमपि तं जेतुं स्वशक्तिं स्पृशन् ।
उच्छिन्दन् परवृत्तिमेव सकलां ज्ञानस्य पूर्णो भवन्ना-
त्मा नित्यनिरास्रवो भवति हि ज्ञानी यदा स्यात्तदा ॥४॥

सर्वस्यामेव जीवन्त्यान्द्रव्यप्रत्ययसंततौ ।
कुतो निरास्रवो ज्ञानी नित्यमेवेति चेन्मतिः ॥५॥

विजहति न हि सत्तां प्रत्ययाः पूर्वबद्धाः
समयमनुसरन्तो यद्यपि द्रव्यरूपाः ।
तदपि सकलरागद्वेषमोहव्युदासा-
दवतरति न जातु ज्ञानिनः कर्मबन्धः ॥६॥

रागद्वेषविमोहानां ज्ञानिनो यदसंभवः ।
तत एव न बन्धोऽस्य ते हि बन्धस्य कारणम् ॥७॥

अध्यास्य शुद्धनयमुद्धतबोधचिह्न-
मैकाग्र्यमेव कलयन्ति सदैव ये ते ।
रागादिमुक्तमनसः सततं भवन्तः
पश्यन्ति बन्धविधुरं समयस्य सारम् ॥८॥

प्रच्युत्य शुद्धनयतः पुनरेव ये तु
रागादियोगमुपयान्ति विमुक्तबोधाः ।
ते कर्मबन्धमिह बिभ्रति पूर्वबद्ध-
द्रव्यास्रवैः कृतविचित्रविकल्पजालम् ॥९॥

इदमेवात्र तात्पर्यं हेयः शुद्धनयो न हि ।
नास्ति बन्धस्तदत्यागात्तत्त्यागाद्बन्ध एव हि ॥१०॥

धीरोदारमहिम्न्यनादिनिधने बोधे निबध्नन्धृतिं
त्याज्यः शुद्धनयो न जातु कृतिभिः सर्वंकषः कर्मणाम् ।
तत्रस्थाः स्वमरीचिचक्रमचिरात्संहृत्य निर्यद्बहिः
पूर्णं ज्ञानघनौघमेकमचलं पश्यन्ति शान्तं महः ॥११॥

रागादीनां झगिति विगमात्सर्वतोऽप्यास्रवाणां
नित्योद्योतं किमपि परमं वस्तु सम्पश्यतोऽन्तः ।
स्फारस्फारैः स्वरसविसरैः प्लावयत्सर्वभावा-
नालोकान्तादचलमतुलं ज्ञानमुन्मग्नमेतत् ॥१२॥

इत्यास्रवो निष्क्रान्त ॥५॥

आसंसारविरोधिसंवरजयैकान्तावलिप्तास्रव-
न्यक्कारात्प्रतिलब्धनित्यविजयं सम्पादयत्संवरम् ।
व्यावृत्त पररूपतो नियमितं सम्यक् स्वरूपे स्फुर-
ज्ज्योतिश्चिन्मयमुज्ज्वलं निजरसप्राग्भारमुज्जृम्भते ॥१॥

चैद्रूप्य जडरूपतां च दधतोः कृत्वा विभागं द्वयो-
रन्तर्दारुणदारणेन परितो ज्ञानस्य रागस्य च ।
भेदज्ञानमुदेति निर्मलमिदं मोदध्वमध्यासिताः
शुद्धज्ञानघनौघमेकमधुना -- सन्तो द्वितीयच्युताः ॥२॥

यदि कथमपि धारावाहिना बोधनेन
ध्रुवमुपलभमानः शुद्धमात्मानमास्ते ।
तदयमुदयदात्मारामममात्मानमात्मा
परपरिणतिरोधाच्छुद्धमेवाभ्युपैति ॥३॥

सम्यग्दृष्टेर्भवति नियतं ज्ञानवैराग्यशक्तिः
स्वं वस्तुत्वं कलयितुमयं स्वान्यरूपाप्तिमुक्त्या ।
यस्माज् ज्ञात्वा व्यतिकरमिदं तत्त्वतः स्वं परं च
स्वस्मिन्नास्ते विरमति परात्सर्वतो रागयोगात् ॥४॥

सम्यग्दृष्टिः स्वयमयमहं जातु बन्धो न मे स्या-
दित्युत्तानोत्पुलकवदना रागिणोऽप्याचरन्तु ।
आलम्बन्तां समितिपरतां ते यतोऽद्यापि पापा
आत्मानात्मावगमविरहात्सन्ति सम्यक्त्वरिक्ताः ॥५॥

आसंसारात्प्रतिपदममी रागिणो नित्यमत्ताः
सुप्ता यस्मिन्नपदमपदं तद्विबुध्यध्वमन्धाः ।
एतैतेतः पदमिदमिदं यत्र चैतन्यधातुः
शुद्धः शुद्धः स्वरसभरतः स्थायिभावत्वमेति ॥६॥

एकमेव हि तत्स्वाद्यं विपदामपदं पदम् ।
अपदान्येव भासन्ते पदान्यन्यानि यत्पुरः ॥७॥

एकज्ञायकभावनिर्भरमहास्वादं समासादयन्
स्वादन्द्वन्द्वमयं विधातुमसहः स्वां वस्तुवृत्तिं विदन् ।
आत्मात्मानुभवानुभावविवशो भ्रस्यद्विशेषोदयं
सामान्यं कलयत्किलैष सकलं ज्ञानं नयत्येकताम् ॥८॥

अच्छाच्छाः स्वयमुच्छलन्ति यदिमाः संवेदनव्यक्तयो
निष्पीताखिलभावमण्डलरसप्राग्भारमत्ता इव ।
यस्याभिन्नरसः स एष भगवानेकोऽप्यनेकीभवन्
वल्गत्युत्कलिकाभिरद्भुतनिधिश्चैतन्यरत्नाकरः ॥९॥

क्लिश्यन्तां स्वयमेव दुष्करतरैर्मोक्षोन्मुखैः कर्म्मभिः
क्लिश्यन्तां च परे महाव्रततपोभारेण भग्नाश्चिरम् ।
साक्षान्मोक्ष इदं निरामयपदं संवेद्यमानं स्वयं
ज्ञानं ज्ञानगुणं विना कथमपि प्राप्तुं क्षमन्ते न हि ॥१०॥

पदमिदं ननु कर्मदुरासदं सहजबोधकलासुलभं किल ।
तत इदं निजबोधकलाबलात्कलयितुं यततां सततं जगत् ।११।
अचिन्त्यशक्तिः स्वयमेव देवश्चिन्मात्रचिन्तामणिरेष यस्मात् ।
सर्वार्थसिद्धात्मतया विधत्ते ज्ञानी किमन्यस्य परिग्रहेण ।।१२।।
इत्थं परिग्रहमपास्य समस्तमेव सामान्यतः स्वपरयोरविवेकहेतुम्।
अज्ञानमुज्झितुमना अधुना विशेषाद्भूयस्तमेव परिहर्त्तुमयं प्रवृत्तः
पूर्वबद्धनिजकर्म्मविपाकाद् ज्ञानिनो यदि भवत्युपयोगः ।
तद्भवत्वथ च रागवियोगान्नूनमेति न परिग्रहभावम् ।।१४।।
वेद्यवेदकविभावचलत्वाद्वेद्यते न खलु कांक्षितमेव ।
तेन काङ्क्षति न किञ्चन विद्वान् सर्वतोऽप्यतिविरक्तिमुपैति।१५।
ज्ञानिनो न हि परिग्रहभावं कर्मरागरसरिक्ततयैति ।
रङ्गयुक्तिरकषायितवस्त्रे स्वीकृतैव हि बहिर्लुठतीह ।।१६।।
ज्ञानवान् स्वरसतोऽपि यतः स्यात्सर्वरागरसवर्ज्जनशीलः ।
लिप्यते सकलकर्मभिरेषः कर्म्ममध्यपतितोऽपि ततो न ।।१७।।
यादृक् तादृगिहास्ति तस्य वशतो यस्य स्वभावो हि यः
कर्त्तुं नैष कथंचनापि हि परैरन्यादृशः शक्यते ।
अज्ञानं न कदाचनापि हि भवेत् ज्ञानं भवेत्सन्ततम्
ज्ञानिन् भुङ्क्ष्व परापराधजनितो नास्तीह बन्धस्तव ।।१८।।
ज्ञानिन् कर्म्म न जातु कर्तुमुचितं किञ्चित्तथाप्युच्यते
भुङ्क्षे हन्त न जातु मे यदि परं दुर्भुक्त एवासि भोः ।
बन्धः स्यादुपभोगतो यदि न तत्किं कामचारोऽस्ति ते
ज्ञानं सच्च सबन्धमेष्यपरथा स्वस्यापराधाद् ध्रुवम् ।।१९।।
कर्तारं स्वफलेन यत्किल बलात्कर्मैव नो योजयेत्
कुर्वाणः फललिप्सुरेव हि फलं प्राप्नोति यत्कर्मणः ।
ज्ञानं संस्तदपास्तरागरचनो नो बध्यते कर्मणा
कुर्वाणोऽपि हि कर्म तत्फलपरित्यागैकशीलो मुनिः ।।२०।।

त्यक्तं येन फलं स कर्म कुरुते नेति प्रतीमो
किन्त्वस्यापि कुतोऽपि किञ्चिदपि तत्कर्मावशेनापतेत् ।
तस्मिन्नापतिते त्वकम्पपरमज्ञानस्वभावे स्थितो
ज्ञानी किं कुरुतेऽथ किं न कुरुते कर्म्मेति जानाति कः ।।२१।।

सम्यग्दृष्टय एव साहसमिदं कर्तुं क्षमन्ते परं
यद्वज्रेऽपि पतत्यमी भयचलत्त्रैलोक्यमुक्ताध्वनि ।
सर्वामेव निसर्गनिर्भयतया शङ्का विहाय स्वयं
जानन्तः स्वमवध्यबोधवपुषं बोधाच्च्यवन्ते न हि ।।२२।।

लोकः शाश्वत एक एष सकलव्यक्तो विविक्तात्मन-
श्चिल्लोकं स्वयमेव केवलमयं यल्लोकयत्येककः ।
लोको यन्न तवापरस्तदपरस्तस्यास्ति तद्भीः कुतो
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ।।२३।।

ए˝ ˝ हि वेदना यदचलं ज्ञानं स्वयं वेद्यते
निर्भेदोदितवेद्यवेदकबलादेकं सदानाकुलैः ।
नैवान्यागतवेदनैव हि भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ।।२४।।

यत्सन्नाशमुपैति तन्न नियतं व्यक्तेति वस्तुस्थिति-
र्ज्ञानं सत्स्वयमेव तत्किल ततस्त्रातं किमस्यापरैः ।
अस्यात्राणमतो न किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो
निःशङ्कः सततं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ।।२५।।

स्वं रूपं किल वस्तुनोऽस्ति परमा गुप्तिः स्वरूपेण य-
च्छक्तः कोऽपि परः प्रवेष्टुमकृत ज्ञानं स्वरूपं च नुः ।
अस्यागुप्तिरतो न काचन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो
निःशङ्कः ˙ स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ।।२६।।

प्राणोच्छेदमुदाहरन्ति मरणं प्राणाः किलास्यात्मनो
ज्ञानं तत्स्वयमेव शाश्वततया नोच्छिद्यते जातुचित् ।
तस्यातो मरणं न किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो
निःशङ्कः तं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ॥२७॥
एकं ज्ञानमना न्तमचलं सिद्धं किलैतत्स्वतो
यावत्तावदिदं सदैव हि भवेन्नात्र द्वितीयोदयः ।
तन्नाकस्मिकमत्र किञ्चन भवेत्तद्भीः कुतो ज्ञानिनो
निःशङ्कः तं स्वयं स सहजं ज्ञानं सदा विन्दति ॥२८॥
टङ्कोत्कीर्णस्वरसनिि ानसर्वस्वभाजः
सम्यग्दृष्टेर्यदिह सकलं घ्नन्ति लक्ष्माणि कर्म ।
तत्तस्यास्मिन्पुनरपि मनाक् कर्म्मणो नास्ति बन्धः
पूर्वोपात्तं तदनुभ ो निश्चितं निर्ज्जरैव ॥२९॥
रुन्धन्बन्धं नवमिति निजैः सङ्गतोऽष्टाभिरङ्गैः
प्राग्बद्धं तु क्षयमुपनयन्निर्ज्जरोज्जृम्भणेन ।
सम्यग्दृष्टिः स्वयमतिरसादादिमध्यान्तमुक्तं
ज्ञानं भूत्वा नटति गगनाभोगरङ्गं विगाह्य ॥३०॥

इति निर्ज्जरा निष्क्रान्ता ॥७॥

रागोद्गारमहारसेन सकलं कृत्वा प्रमत्तं जगत्
क्रीडन्त रसभावनिर्भरमहानाट्येन बन्धं धुनत् ।
आनन्दामृतनित्यभोजिसहजावस्थां स्फुटन्नाटय-
द्धीरोदारमनाकुलं निरुपधिज्ञानं समुन्मज्जति ॥१॥
न कर्म्मबहुल जगन्न चलनात्मकं कर्म्म वा
न नैककरणानि वा न चिदचिद्वधो बन्धकृत् ।
यदैक्यमुपयोगभूः समुपयाति रागादिभिः
स एव किल केवलं भवति बन्धहेतुर्नृणाम् ॥२॥

लोकाः कर्म्म ततोऽस्तु सोऽस्तु च परिपस्न्दात्मकं कर्म्मतत्-
तान्यस्मिन् करणानि सन्तु चिदचिद्व्यापादनं चास्तु तत् ।
रागादीनुपयोगभूमिमनयद् ज्ञानं भवेत् केवलं
बन्धं नैव कुतोऽप्युपैत्ययमहो सम्यग्दृगात्मा ध्रुवं ।।३।।

तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिनां
तदायतनमेव सा किल निर्गला व्यावृतिः ।
अकामकृतकर्म्म तन्मतमकारणं ज्ञानिनां
द्वयं न हि विरुद्ध्यते किमु करोति जानाति च ।।४।।

जानाति यः स न करोति करोति यस्तु
जानात्ययं न खलु तत्किल कर्मरागः ।
रागं त्वबोधमयमध्यवसायमाहु-
र्मिथ्यादृशः स नियतं स च बन्धहेतुः ।।५।।

सर्वं सदैव नियतं भवति स्वकीय-
कर्मोदयान्मरणजीवितदुःखसौख्यम् ।
अज्ञानमेतदिह यस्तु परः परस्य
कुर्यात्पुमान् मरणजीवितदुःखसौख्यम् ।।६।।

अज्ञानमेतदधिगम्य परात्परस्य
पश्यन्ति ये मरणजीवितदुः ौख्यम् ।
कर्म्माण्यहंकृतिरसेन चिकीर्षवस्ते
मिथ्यादृशो नियतमात्महनो भवन्ति ।।७।।

मिथ्यादृष्टेः स एवास्य बन्धहेतुर्विपर्य्ययात् ।
य एवाध्यवसायोऽयमज्ञानात्माऽस्य दृश्यते ।।८।।

अनेनाध्यवसायेन निःफलेन विमोहितः ।
तत्किञ्चनापि नैवाऽस्ति नात्मात्मानं करोति यत् ।।९।।

विश्वाद्विभक्तोऽपि हि यत्प्रभावादात्मानमात्मा विदधाति विश्वम्।
मोहैककन्दोऽध्यवसाय एष नास्तीह येषां यतयस्त एव ।।१०।।

सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यं यदुक्तं जिनै-
स्तन्मन्ये व्यवहार एव निखिलोऽप्यन्याश्रयस्त्याजितः ।
सम्यग्निश्चयमेकमेव तदमी निःकम्पमाक्रम्य किं
शुद्धज्ञानघने महिम्नि न निजे बध्नन्ति संतो धृतिम् ॥११॥

रागादयो बन्धनिदानमुक्तास्ते शुद्धचिन्मात्रमहोऽतिरिक्ताः ।
आत्मा परो वा किमु तन्निमित्तमिति प्रणुन्नाः पुनरेवमाहुः॥१२॥

न जातुरागादिनिमित्तभावमात्मात्मनो याति यथार्ककान्तः ।
तस्मिन्निमित्तं परसङ्ग एव वस्तुस्वभावोऽयमुदेति तावत्॥१३॥

इति वस्तुस्वभावं स्वं ज्ञानी जानाति तेन सः ।
रागादीन्नात्मनः कुर्यान्नातो भवति कारकः ॥१४॥

इति वस्तुस्वभावं स्वं नाज्ञानी वेत्ति तेन सः ।
रागादीनात्मनः कुर्यादतो भवति कारकः ॥१५॥

इत्यालोच्य विवेच्य तत्किल परद्रव्यं समग्रं बलात्
तन्मूलां बहुभावसन्ततिमिमामुद्धर्तुकामः समम् ।
आत्मानं समुपैति निर्भरवहत्पूर्णैकसंविद्युतम्
येनोन्मूलितबन्ध एष भगवानात्माऽऽत्मनि स्फूर्जति ॥१६॥

रागादीनामुदयमदयं दारयत्कारणानां
कार्य्यं बन्धं त्रिविधमधुना सद्य एव प्रणुद्य ।
ज्ञानज्योतिः क्षपिततिमिरं साधु सन्नद्धमेत-
त्तद्वद्यद्वत्प्रसरमपरः कोऽपि नास्यावृणोति ॥१७॥

इति बन्धो निष्क्रान्तः ॥८॥

द्विधाकृत्य प्रज्ञाक्रकचदलनाद्बन्धपुरुषौ
नयन्मोक्षं साक्षात्पुरुषमुपलम्भैकनियतम् ।
इदानीमुन्मज्जत्सहजपरमानन्दसरसं
परं पूर्णं ज्ञानं कृतसकलकृत्यं विजयते ॥१॥

लोकाः कर्म्म ततोऽस्तु सोऽस्तु च परिपस्न्दात्मकं कर्म्मतत्-
तान्यस्मिन् करणानि सन्तु चिदचिद्व्यापादनं चास्तु तत् ।
रागादीनुपयोगभूमिमनयद् ज्ञानं भवेत् केवलं
बन्धं नैव कुतोऽप्युपैत्ययमहो सम्यग्दगात्मा ध्रुवं ॥३॥

तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिनां
तदायतनमेव सा किल निर्गला व्यावृतिः ।
अकामकृतकर्म्मं तन्मतमकारणं ज्ञानिनां
द्वयं न हि विरुद्धयते किमु करोति जानाति च ॥४॥

जानाति यः स न करोति करोति यस्तु
जानात्ययं न खलु तत्किल कर्मरागः ।
रागं त्वबोधमयमध्यवसायमाहु-
र्मिथ्यादृशः स नियतं स च बन्धहेतुः ॥५॥

सदैव नियतं भवति स्वकीय-
कर्मोदयान्मरणजीवितदुः ख्यम् ।
अज्ञानमेतदिह यत्तु परः परस्य
कुर्यात्पुमान् मरणजीवितदुःखसौख्यम् ॥६॥

अज्ञानमेतदधिगम्य परात्परस्य
पश्यन्ति ये मरणजीवितदुः ख्यम् ।
कर्म्माण्यहंकृतिरसेन चिकीर्षवस्ते
मिथ्यादृशो नियतमात्महनो भवन्ति ॥७॥

मिथ्यादृष्टेः स एवास्य बन्धहेतुर्विपर्य्ययात् ।
य एवाध्यवसायोऽयमज्ञानात्माऽस्य दृश्यते ॥८॥

अनेनाध्यवसायेन नि.फलेन विमोहितः ।
तत्किञ्चनापि नैवाऽस्ति नात्मात्मानं करोति यत् ॥९॥

विश्वाद्विभक्तोऽपि हि यत्प्रभावादात्मानमात्मा विदधाति विश्वम्।
मोहैककन्दोऽध्यवसाय एष नास्तीह येषां यतयस्त एव ॥१०॥

सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यं यदुक्तं जिनै-
स्तन्मन्ये व्यवहार एव निखिलोऽप्यन्याश्रयस्त्याजितः ।
सम्यग्निश्चयमेकमेव तदमी निःकम्पमाक्रम्य किं
शुद्धज्ञानघने महिम्नि न निजे बध्नन्ति संतो धृतिम् ॥११॥

रागादयो बन्धनिदानमुक्तास्ते शुद्धचिन्मात्रमहोऽतिरिक्ताः ।
आत्मा परो वा किमु तन्निमित्तमिति प्रणुन्नाः पुनरेवमाहुः॥१२॥

न जातुरागादिनिमित्तभावमात्मात्मनो याति यथार्ककान्तः ।
तस्मिन्निमित्तं परसङ्ग एव वस्तुस्वभावोऽयमुदेति तावत् ॥१३॥

इति वस्तुस्वभावं स्वं ज्ञानी जानाति तेन सः ।
रागादीन्नात्मनः कुर्यान्नातो भवति कारकः ॥१४॥

इति वस्तुस्वभावं स्वं नाज्ञानी वेत्ति तेन सः ।
रागादीनात्मनः कुर्यादतो भवति कारकः ॥१५॥

इत्यालोच्य विवेच्य तत्किल परद्रव्यं समग्रं बलात्
तन्मूलां बहुभावसन्ततिमिमामुद्धर्तुकामः समम् ।
आत्मानं समुपैति निर्भरवहत्पूर्णैकसंविद्युतम्
येनोन्मूलितबन्ध एष भगवानात्माऽऽत्मनि स्फूर्जति ॥१६॥

रागादीनामुदयमदयं दारयत्कारणानां
कार्य्यं बन्धं त्रिविधमधुना सद्य एव प्रणुद्य ।
ज्ञानज्योतिः क्षपिततिमिरं साधु सन्नद्धमेत-
त्तद्वद्यद्वत्प्रसरमपरः कोऽपि नास्यावृणोति ॥१७॥

इति बन्धो निष्क्रान्त ॥८॥

द्विधाकृत्य प्रज्ञाक्रकचदलनाद्बन्धपुरुषौ
नयन्मोक्षं साक्षात्पुरुषमुपलम्भैकनियतम् ।
इदानीमुन्मज्जत्सहजपरमानन्दसरसं
परं पूर्णं ज्ञानं कृतसकलकृत्यं विजयते ॥१

प्रज्ञाछेत्री शितेयं कथमपि निपुणैः पातिता सावधानैः
सूक्ष्मेऽन्तःसन्धिबन्धे निपतति रभसादात्मकर्मोभयस्य ।
आत्मानं मग्नमन्तःस्थिरविशदलसद्धाम्नि चैतन्यपूरे
बन्धं चाज्ञानभावे नियमितमभितः कुर्वती भिन्नभिन्नौ ।।२।।

भित्त्वा सर्वमपि स्वलक्षणबलाद्भेत्तुं हि तच्छक्यते
चिन्मुद्राङ्कितनिर्विभागमहिमा शुद्धश्चिदेवास्म्यहम् ।
भिद्यन्ते यदि कारकाणि यदि वा धर्मा गुणा वा यदि
भिद्यन्तां न भिदाऽस्ति काचन विभौ भावे विशुद्धे चिति।३।

अद्वैताऽपि हि चेतना जगति चेद् दृग्ज्ञप्तिरूपं त्यजे-
त्तत्सामान्यविशेषरूपविरहात्साऽस्तित्वमेव त्यजेत् ।
तत्त्यागे जडता चितोऽपि भवति व्याप्यो विना व्यापका-
दात्माचान्तमुपैति तेन नियता दृग्ज्ञप्तिरूपास्तु चित् ।।४।।

एकश्चितश्चिन्मय एव भावो भावाः परे ये किल ते परेषाम्।
ग्राह्यस्ततश्चिन्मय एव भावो भावाः परे सर्वत एव हेयाः।५।

सिद्धान्तोऽयमुदात्तचित्तचरितैर्मोक्षार्थिभिः सेव्यतां
शुद्धं चिन्मयमेकमेव परमं ज्योतिः सदैवास्म्यहम् ।
एते ये तु समुल्लसन्ति विबुधा भावाः पृथग्लक्षणा-
स्तेऽहं नाऽस्मि यतोऽत्र ते मम परद्रव्यं समग्रा अपि ।।६।।

परद्रव्यग्रहं कुर्वन् बद्ध्येतैवापराधवान् ।
बद्ध्येतानपराधो न स्वद्रव्ये संवृतो मुनिः ।।७।।

अनवरतमनन्तैर्बध्यते सापराधः
स्पृशति निरपराधो बन्धनं नैव जातु ।
नियतमयमशुद्धं स्वं भजन्सापराधो
भवति निरपराधः साधुशुद्धात्मसेवी ।।८।।

अतो हताः प्रमादिनो गताः सुखासीनतां
प्रलीनं चापलमुन्मूलितमालम्बनम्-
आत्मन्येवालानितं च चित्त-
मासंपूर्णविज्ञानघनोपलब्धेः ॥९॥

यत्र प्रतिक्रमणमेव विषं प्रणीतम्
तत्राप्रति मणमेव सुधा कुतः स्यात् ।
तत्किं प्रमाद्यति जनः प्रपतन्नधोऽधः
किं नोर्ध्वमूर्ध्वमधिरोहति निःप्रमादः॥१०॥

प्रमादकलितः कथं भवति शुद्धभावोऽलसः
कषायभरगौरवादलसता प्रमादो यतः ।
अतः स्वरसनिर्भरे नियमितः स्वभावे भवन्
मुनिः परमशुद्धतां व्रजति मुच्यते वाचिरात् ॥११॥

त्यक्त्वाऽशुद्धिविधायि तत्किल परद्रव्यं समग्रं स्वयं
स्वद्रव्ये रतिमेति यः स नियतं सर्वापराधच्युतः ।
बन्धध्वंसमुपेत्य नित्यमुदितः स्वज्योतिरच्छोच्छल-
च्चैतन्यामृतपूरपूर्णमहिमा शुद्धो भवन्मुच्यते ॥१२॥

बन्धच्छेदात्कलयदतुलं मोक्षमक्षय्यमेत-
न्नित्योद्योतस्फुटितसहजावस्थमेकान्तशुद्धम् ।
एकाकारस्वरसभरतोऽत्यन्तगम्भीरधीरं
पूर्णं ज्ञानं ज्वलितमचले स्वस्य लीनं महिम्नि॥१३॥

इति मोक्षो निष्क्रान्त ॥९॥

नीत्वा सम्यक् प्रलयमखिलान्कर्तृभोक्त्रादिभावान्
दूरीभूतः प्रतिपदमयं बन्धमोक्षप्रक्लृप्तेः ।
शुद्धः शुद्ध स्वरसविसरापूर्णपुण्याचलार्चि-
ष्टङ्कोत्कीर्णप्रकटमहिमा स्फूर्जति ज्ञानपुञ्जः ॥१॥

कर्त्तृत्वं न स्वभावोऽस्य चितो वेदयितृत्ववत् ।
अज्ञानादेव कर्त्ताऽयं तदभावादकारकः ॥२॥

अकर्ता जीवोऽयं स्थित इति विशुद्धः स्वर :
स्फुरच्चिज्ज्योतिर्भिश्छुरितभुवनाभोगभवनः ।
तथाप्यस्यासौ स्याद्यदिह किल बन्धः प्रकृतिभिः
स खल ानस्य स्फुरति महिमा कोऽपि गहनः ॥३॥

भोक्तृत्वं न स्वभावोऽस्य स्मृतः कर्त्तृत्ववच्चितः ।
अज्ञानादेव भोक्ताऽयं तदभावादवेदकः ॥४॥

अज्ञानी प्रकृतिस्वभावनिरतो नित्यं भवेद्वेदको
ज्ञानी तु प्रकृतिस्वभावविरतो नो जातुचिद्वेदकः ।
इत्येवं नियमं निरूप्य निपुणैरज्ञानिता त्यज्यतां
शुद्धैकात्ममये महस्यचलितैरासेव्यतां ज्ञानिता ॥५॥

ज्ञानी करोति न न वेदयते च कर्म
जानाति केवलमयं किल तत्स्वभावं ।
जानन्परं करणवेदनयोरभावा-
च्छुद्धस्वभावनियतः स हि मुक्त एव ॥६॥

ये तु कर्त्तारमात्मानं पश्यन्ति तमसा तताः ।
सामान्यजनवत्तेषा न मोक्षोऽपि मुमुक्षताम् ॥७॥

नास्ति सर्वोऽपि सम्बन्धः परद्रव्यात्मतत्त्वयोः ।
कर्त्तृकर्म्मत्वसम्बन्धाभावे तत्कर्त्तृता कुतः ॥८॥

एकस्य वस्तुन इहान्यतरेण सार्द्धं
सम्बन्ध एव सकलोऽपि यतो निषिद्धः ।
तत्कर्त्तृकर्म्मघटनाऽस्ति न वस्तुभेदे
पश्यन्त्वकर्तृ मुनयश्च जनाश्च तत्त्वम् ॥९॥

ये तु स्वभावनियमं कलयन्ति नेम-
मज्ञानमग्नमहसो बत ते वराकाः ।
कुर्वन्ति कर्म तत एव हि भावकर्म-
कर्त्ता स्वयं भवति चेतन एव नान्यः ॥१०॥

कार्यत्वादकृतं न कर्म न च तज्जीवप्रकृत्योर्द्वयो-
रन्यस्याः प्रकृतेः स्वकार्यफलभुग्भावानुषङ्गात्कृतिः ।
नैकस्याः प्रकृतेरचित्त्वलसनाज्जीवोऽस्य कर्त्ता ततो
जीवस्यैव च कर्म तच्चिदनुगं ज्ञाता न यत्पुद्गलः ॥११॥

कर्मैव प्रवितर्क्यकर्तृ हतकैः क्षिप्त्वात्मनः कर्तृतां
कर्त्तात्मैष कथंचिदित्यचलिता कैश्चिच्छ्रुतिः कोपिता ।
तेषामुद्धतमोहमुद्रितधियां बोधस्य संशुद्धये
स्याद्वादप्रतिबन्धलब्धविजया वस्तुस्थितिः स्तूयते ॥१२॥

माऽकर्त्तारममी स्पृशन्तु पुरुषं सांख्या इवाप्यार्हताः
कर्त्तारं कलयन्तु तं किल सदा भेदावबोधादधः ।
ऊर्ध्वं तूद्धतबोधधामनियतं प्रत्यक्षमेनं स्वयं
पश्यन्तु च्युतकर्तृभावमचलं ज्ञातारमेकं परम् ॥१३॥

क्षणिकमिदमिहैकः कल्पयित्वात्मतत्त्वं
निजमनसि विधत्ते कर्तृभोक्त्रोर्विभेदम् ।
अपहरति विमोहं तस्य नित्यामृतौघैः
स्वयमयमभिषिञ्चंश्चिच्चमत्कार एव ॥१४॥

वृत्त्यंशभेदतोऽत्यन्तं वृत्तिमन्नाशकल्पनात् ।
अन्यः करोति भुंङ्क्तेऽन्य इत्येकान्तश्चकास्तु मा ॥१५॥

आत्मानं परिशुद्धमीप्सुभिरतिव्याप्तिं प्रपद्यान्धकैः
कालोपाधिबलादशुद्धिमधिकां तत्रापि मत्वा परैः ।

चैतन्यं क्षणिकं प्रकल्प्य पृथुकैः शुद्धर्जु सूत्रे रतै-
रात्मा व्युज्भित एष हारवदहो निःसूत्रमुक्तेक्षिभिः ।।१६।।

कर्तुर्वेदयितुश्च युक्तिवशतो भेदोऽस्त्वभेदोऽपि वा
कर्त्ता वेदयिता च मा भवतु वा वस्त्वेव सञ्चिन्त्यताम् ।
प्रोता सूत्र इवात्मनीह निपुणैर्भेत्तुं न शक्या क्वचित्
चिच्चिन्तामणिमालिकेयमभितोऽप्येका चकास्त्वेव नः।।१७।।

व्यावहारिकदृशैव केवलं कर्तृ कर्म च विभिन्नमिष्यते ।
निश्चयेन यदि वस्तु चिन्त्यते कर्तृ कर्म च सदैकमिष्यते।।१८।।

ननु परिणाम एव किल कर्म विनिश्चयतः
स भवति नापरस्य परिणामिन एव भवेत् ।
न भवति कर्तृशून्यमिह कर्म न चैकतया
स्थितिरिह वस्तुनो भवतु कर्तृ तदेव ततः ।।१९।।

बहिर्लुठति यद्यपि स्फुटदनन्तशक्तिः स्वयं
तथाप्यपरवस्तुनो विशति नान्यवस्त्वन्तरम् ।
स्वभावनियतं यतः सकलमेव वस्त्विष्यते
स्वभावचलनाकुलः किमिह मोहितःक्लिश्यते ।।२०।।

वस्तु चैकमिह नान्यवस्तुनो येन तेन खलु वस्तु वस्तु तत् ।
निश्चयोऽयमपरोऽपरस्य कः किं करोति हि बहिर्लुठन्नपि ।।२१।।

यत्तु वस्तु कुरुतेऽन्यवस्तुनः किञ्चनापि परिणामिनः स्वयम् ।
व्यावहारिकदृशैव तन्मतं नान्यदस्ति किमपीह निश्चयात् ।।२२।।

शुद्धद्रव्यनिरूपणार्पितमतेस्तत्त्वं समुत्पश्यतो
नैकद्रव्यगतं चकास्ति किमपि द्रव्यान्तरं जातुचित् ।
ज्ञानं ज्ञेयमवैति यत्तु तदयं शुद्धस्वभावोदयः
किं द्रव्यान्तरचुम्बनाकुलधियस्तत्त्वाच्च्यवन्ते जनाः ।।२३।।

शुद्धद्रव्यस्वरसभवनात्किं स्वभावस्य शेष-
मन्यद्रव्यं भवति यदि वा तस्य किं स्यात्स्वभावः ।
ज्योत्स्नारूपं स्नपयति भुवं नैव तस्यास्ति भूमि
र्ज्ञानं ज्ञेयं कलयति सदा ज्ञेयमस्यास्ति नैव ।।२४।।

रागद्वेषद्वयमुदयते तावदेतन्न यावत्
ज्ञानं ज्ञानं भवति न पुनर्बोध्यतां याति बोध्यम् ।
ज्ञानं ज्ञानं भवतु तदिदं न्यक्कृताज्ञानभावं
भावाभावौ भवति तिरयन्येन पूर्णस्वभावः ।।२५।।

रागद्वेषाविह हि भवति ज्ञानमज्ञानभावा-
त्तौ वस्तुत्वप्रणिहितदृशा दृश्यमानौ न किञ्चित् ।
सम्यग्दृष्टिः क्षपयतु ततस्तत्त्वदृष्टया स्फुटन्तौ
ज्ञानज्योतिर्ज्वलति सहजं येन पूर्णाचलार्चिः ।।२६।।

रागद्वेषोत्पादकं तत्त्वदृष्ट्या
नान्यद्द्रव्यं वीक्ष्यते किञ्चनापि ।
सर्वद्रव्योत्पत्तिरन्तश्चकास्ति
व्यक्ताऽत्यन्तं स्वस्वभावेन यस्मात् ।।२७।।

यदिह भवति रागद्वेषदोषप्रसूतिः
कतरदपि परेषां दूषणं नास्ति तत्र ।
स्वयमयमपराधी तत्र सर्पत्यबोधो
भवतु विदितमस्तं यात्वबोधोऽस्मि बोधः ।।२८।।

रागजन्मनि निमित्ततां परद्रव्यमेव कलयन्ति ये तु ते ।
उत्तरन्ति न हि मोहवाहिनीं शुद्धबोधविधुरान्धबुद्धयः ।।२९।।

पूर्णैकाच्युतशुद्धबोधमहिमा बोद्धा न बोध्यादयं
यायात्कामपि विक्रियां तत इतो दीपः प्रकाश्यादिव ।

तद्वस्तुस्थितिबोधबन्धधिषणा एते किमज्ञानिनो
रागद्वेषमयीभवन्ति सहजां मुञ्चन्त्युदासीनताम् ॥३०॥

रागद्वेषविभावमुक्तमहसो नित्यं स्वभावस्पृशः
पूर्वागामिसमस्तकर्म्मविकला भिन्नास्तदात्वोदयात् ।
दूरारूढचरित्रवैभवबलाच्चञ्चच्चिदर्चिष्मयीं
विन्दन्ति स्वरसाभिषिक्तभुवनां ज्ञानस्य संचेतनाम् ॥३१॥

ज्ञानस्य संचेतनयैव नित्यं प्रकाशते ज्ञानमतीव शुद्धम् ।
अज्ञानसंचेतनया तु धावन् बोधस्य शुद्धिं निरुणद्धि बंधः॥३२॥

कृतकारितानुमननैस्त्रिकालविषयं मनोवचनकायैः ।
परिहृत्य कर्म सर्वं परमं नैष्कर्म्यमवलम्बे ॥३३॥

मोहाद्यदहमकार्षं समस्तमपि कर्म तत्प्रतिक्रम्य ।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निःकर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते ॥३४॥

मोहविलासविजृम्भितमिदमुदयत्कर्म सकलमालोच्य ।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निःकर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते ॥३५॥

प्रत्याख्यायभविष्यत्कर्म समस्तं निरस्तसम्मोहः ।
आत्मनि चैतन्यात्मनि निःकर्मणि नित्यमात्मना वर्त्ते ॥३६॥

समस्तमित्येवमपास्य कर्म त्रैकालिकं शुद्धनयावलम्बी ।
विलीनमोहो रहितं विकारैश्चिन्मात्रमात्मानमथाऽवलम्बे
॥३७॥

विगलन्तु कर्मविषतरुफलानि मम भुक्तिमन्तरेणैव ।
संचेतयेऽहमचलं चैतन्यात्मानमात्मानम् ॥३८॥

निःशेषकर्म्मफलसंन्यसनात्मनैवं
सर्वक्रियान्तरविहारनिवृत्तवृत्तेः ।
चैतन्यलक्ष्म भजतो भृशमात्मतत्त्वं
कालावलीयमचलस्य वहत्वनन्ता ॥३९॥

यः पूर्वभावकृतकर्म्मविषद्रुमाणां
भुङ्क्ते फलानि न खलु स्वत एव तृप्तः।
आपातकालरमणीयमुदर्करम्यं
निःकर्मशर्ममयमेति दशान्तरं सः ॥४०॥

अत्यन्तं भावयित्वा विरतमविरतं कर्मणस्तत्फलाच्च
प्रस्पष्टं नाटयित्वा प्रलयनमखिलाज्ञानसंचेतनायाः।
पूर्णं कृत्वा स्वभावं स्वरसपरिगतं ज्ञानसंचेतनां स्वां
सानन्दं नाटयन्तः प्रशमरसमितः सर्वकालं पिबन्तु ॥४१॥

इतः पदार्थप्रथनावगुण्ठनाद्विना कृतेरेकमनाकुलं ज्वलत्।
समस्तवस्तुव्यतिरेकनिश्चयाद्विवेचितं ज्ञानमिहावतिष्ठते
॥४२॥

अन्येभ्यो व्यतिरिक्तमात्मनियतं बिभ्रत् पृथक वस्तुता–
मादानोज्झनशून्यमेतदमलं ज्ञानं तथावस्थितम्।
मध्याद्यन्तविभागमुक्तसहजस्फारप्रभाभासुरः
शुद्धज्ञानघनो यथास्य महिमा नित्योदितस्तिष्ठति ॥४३॥

उन्मुक्तमुन्मोच्यमशेषतस्तत्तथात्तमादेयमशेषतस्तत्।
यदात्मनःसंहृतसर्वशक्तेः पूर्णस्य सन्धारणमात्मनीह ॥४४॥

व्यतिरिक्तं परद्रव्यादेवं ज्ञानमवस्थितम्।
कथमाहारकं तत्स्याद्येन देहोऽस्य शङ्कयते ॥४५॥

एवं ज्ञानस्य शुद्धस्य देह एव न विद्यते।
ततो देहमयं ज्ञातुर्न लिङ्गं मोक्षकारणम् ॥४६॥

दर्शनज्ञानचारित्रत्रयात्मा तत्त्वमात्मनः।
एक एव सदा सेव्यो मोक्षमार्गो मुमुक्षुणा ॥४७॥

एको मोक्षपथो य एष नियतो दृग्ज्ञप्तिवृत्त्यात्मक-
स्तत्रैव स्थितिमेति यस्तमनिशं ध्यायेच्च तं चेतसि।

तस्मिन्नेव निरन्तरं विहरति द्रव्यान्तराण्यस्पृशन् ।
सोऽवश्यं समयस्य सारमचिरान्नित्योदयं विन्दति ॥४८॥

ये त्वेनं परिहृत्य संवृतिपथप्रस्थापितेनात्मना
लिङ्गे द्रव्यमये वहन्ति ममतां तत्त्वावबोधच्युताः ।
नित्योद्योतमखण्डमेकमतुलालोकं स्वभावप्रभा-
प्राग्भारं समयस्य सारममलं नाद्यापि पश्यन्ति ते ॥४९॥

व्यवहारविमूढदृष्टयः परमार्थं कलयन्ति नो जनाः ।
तुषबोधविमुग्धबुद्धयः कलयन्तीह तुषं न तन्डुलम् ॥५०॥

द्रव्यलिङ्गममकारमीलितैर्दृश्यते समयसार एव न ।
द्रव्यलिङ्गमिह यत्किलान्यतो ज्ञानमेकमिदमेव हि स्वतः ॥५१॥

अलमलमतिजल्पैर्दुर्विकल्पैरनल्पै-
रयमिह परमार्थश्चिन्त्यतां नित्यमेकः ।
स्वरसविसरपूर्णज्ञानविस्फूर्त्तिमात्रा-
न्न खलु समयसारादुत्तरं किञ्चिदस्ति ॥५२॥

इदमेकं जगच्चक्षुरक्षयं याति पूर्णताम् ।
विज्ञानघनमानन्दमयमध्यक्षतां नयत् ॥५३॥

इतीदमात्मनस्तत्त्वं ज्ञानमात्रमवस्थितम् ।
अखण्डमेकमचलं स्वसंवेद्यमबाधितम् ॥५४॥

इति सर्वविशुद्धिज्ञानाधिकार ॥१०॥

अत्र स्याद्वादशुद्ध्यर्थं वस्तुतत्त्वव्यवस्थितिः ।
उपायोपेयभावश्च मनाग्भूयोऽपि चिन्त्यते ॥१॥

बाह्यार्थैः परिपीतमुज्झितनिजप्रव्यक्तिरिक्तीभव-
द्विश्रान्त पररूप एव परितो ज्ञानं पशोः सीदति ।
यत्तत्तत्तदिह स्वरूपत इति स्याद्वादिनस्तत्पुन-
र्दूरोन्मग्नघनस्वभावभरतः पूर्णं समुन्मज्जति ॥२॥

विश्वं ज्ञानमिति प्रतर्क्य सकलं ृवा स्वतत्त्वाशया
भूत्वा विश्वमयः पशुः पशुरिव स्वच्छन्दमाचेष्टते ।
यत्तत्तत्पररूपतो न तदिति स्याद्वाददर्शी पुन-
र्विश्वाद्भिन्नमविश्वविश्वघटितं तस्य स्वतत्त्वं स्पृशेत् ॥३॥

बाह्यार्थग्रहणस्वभावभरतो विष्वग्विचित्रोल्लसद्
ज्ञेयाकारविशीर्णशक्तिरभितस्त्रुट्यन्पशुर्नश्यति ।
एकद्रव्यतया सदाप्युदितया भेदभ्रमं ध्वंसयन्
नेकं ज्ञानमबाधितानुभवनं पश्यत्यनेकान्तवि ॥४॥

ज्ञेयाकारकलङ्कमेचकचिति प्रक्षालनं कल्पय-
न्नेकाकारचिकीर्षया स्फुटमपि ज्ञानं पशुर्नेच्छति ।
वैचित्र्येऽप्यविचित्रतामुपगतं ज्ञानं स्वतः क्षालितं
पर्यायैस्तवनेकतां परिमृशन्पश्यत्यनेकान्तवित् ॥५॥

प्रत्यक्षालिखितस्फुटस्थिरपरद्रव्यास्तितावञ्चितः
स्वद्रव्यानवलोकनेन परितः शून्यः पशुर्नश्यति ।
स्वद्रव्यास्तितया निरूप्य निपुणं सद्यः समुन्मज्जता
स्याद्वादी तु विशुद्धबोधमहसा पूर्णो भवन् जीवति ॥६॥

सर्वद्रव्यमयं प्रपद्य पुरुषं दुर्वासनावासि :
स्वद्रव्यभ्रमतः पशुः किल परद्रव्येषु विश्राम्यति ।
स्याद्वादी तु समस्तवस्तुषु परद्रव्यात्मना नास्तितां
जानन्निर्मलशुद्धबोधमहिमा स्वद्रव्यमेवाश्रयेत् ॥७॥

भिन्नक्षेत्रनिषण्णबोध्यनियतव्यापारनिष्ठः सदा
सीदत्येव बहिः पतन्तमभितः पश्यन्पुमांसं पशुः ।
स्वक्षेत्रास्तितया निरुद्धरभसः स्याद्वादवेदी पुन-
स्तिष्ठत्यात्मनिखातबोध्यनियतव्यापारशक्तिर्भवन् ॥८॥

स्वक्षेत्रस्थितये पृथग्विधपरक्षेत्रस्थितार्थोज्झना-
त्तुच्छीभूय पशुः प्रणश्यति चिदाकारान्सहार्थैर्वमन् ।
स्याद्वादी तु वसन् स्वधामनि परक्षेत्रे विदन्नास्तितां
त्यक्तार्थोऽपि न तुच्छतामनुभवत्याकारकर्षी परान् ॥९॥

पूर्वालम्बितबोध्यनाशसमये ज्ञानस्य नाशं विदन्
सीदत्येव न किञ्चनापि कलयन्नत्यन्ततुच्छः पशुः ।
अस्तित्वं निजकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुनः
पूर्णस्तिष्ठति बाह्यवस्तुषु मुहुर्भूत्वा विनश्यत्स्वपि ॥१०॥

अर्थालम्बनकाल एव कलयन् ज्ञानस्य सत्त्वं बहि-
र्ज्ञेयालम्बनलालसेन मनसा भ्राम्यन्पशुर्नश्यति ।
नास्तित्वं परकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुन-
स्तिष्ठत्यात्मनिखातनित्यसहजज्ञानैकपुञ्जीभवन् ॥११॥

विश्रान्तः परभावभावकलनान्नित्यं बहिर्वस्तुषु
नश्यत्येव पशुः स्वभावमहिमन्येकान्तनिश्चेतनः ।
सर्वस्मान्नियतस्वभावभवनज्ञानाद्विभक्तो भवन्
स्याद्वादी तु न नाशमेति सहजस्पष्टीकृतप्रत्ययः ॥१२॥

अध्यास्यात्मनि सर्वभावभवनं शुद्धस्वभावच्युतः
सर्वत्राप्यनिवारितो गतभयः स्वैरं पशुः क्रीडति ।
स्याद्वादी तु विशुद्ध एव लसति स्वस्य स्वभावं भरा-
दारूढः परभावभावविरहव्यालोकनिष्कम्पितः ॥१३॥

प्रादुर्भावविराममुद्रितवहद् ज्ञानांशनानात्मना
निर्ज्ञानात् क्षणभङ्गसङ्गपतितः प्रायः पशुर्नश्यति ।
स्याद्वादी तु चिदात्मना परिमृशंश्चिद्वस्तु नित्योदितं
टङ्कोत्कीर्णघनस्वभावमहिमज्ञानं भवन् जीवति ॥१४॥

टङ्कोत्कीर्णविशुद्धबोधविसराकारात्मतत्त्वाशया
वाञ्छत्युच्छलदच्छचित्परिणतेर्भिन्नं पशुः किञ्चन ।
ज्ञानं नित्यमनित्यतापरिगमेऽप्यासादयत्युज्वलं
स्याद्वादी तदनित्यतां परिमृशंश्चिद्वस्तु वृत्तिक्रमात् ॥१५॥

इत्यज्ञानविमूढानां ज्ञानमात्रं प्रसादयन् ।
आत्मतत्त्वमनेकान्तः स्वयमेवानुभूयते ॥१६॥

एवं तत्त्वव्यवस्थित्या स्वं व्यवस्थापयन्स्वयम् ।
अलङ्घ्यं शासनं जैनमनेकान्तो व्यवस्थितः ॥१७॥

इत्याद्यनेकनिजशक्तिसुनिर्भरोऽपि
यो ज्ञानमात्रमयतां न जहाति भावः ।
एवं क्रमाक्रमविवर्तिविवर्तचित्रं
तद्द्रव्यपर्ययमयं चिदिहास्ति वस्तु ॥१८॥

नैकान्तसङ्गतदृशा स्वयमेव वस्तु-
तत्त्वव्यवस्थितिमिति प्रविलोकयन्तः ।
स्याद्वादशुद्धिमधिकामधिगम्य सन्तो
ज्ञानीभवन्ति जिननीतिमलङ्घयन्तः ॥१९॥

ये ज्ञानमात्रनिजभावमयीमकम्पां
भूमिं श्रयन्ति कथमप्यपनीतमोहाः ।
ते साधकत्वमधिगम्य भवन्ति सिद्धाः
मूढास्त्वमूमनुपलभ्य परिभ्रमन्ति ॥२०॥

स्याद्वादकौशलसुनिश्चलसंयमाभ्यां
यो भावयत्यहरहः स्वमिहोपयुक्तः ।
ज्ञानक्रियानयपरस्परतीव्रमैत्री-
पात्रीकृतः श्रयति भूमिमिमां स एकः ॥२१॥

स्वक्षेत्रस्थितये पृथग्विधिपरक्षेत्रस्थितार्थोज्झना-
त्तुच्छीभूय पशुः प्रणश्यति चिदाकारात्सहार्थैर्वसन् ।
स्याद्वादी तु वसन् स्वधामनि परक्षेत्रे विदन्नास्तितां
त्यक्तार्थोऽपि न तुच्छतामनुभवत्याकारकर्षी परान् ।।९।।

पूर्वालम्बितबोध्यनाशसमये ज्ञानस्य नाशं विदन्
सीदत्येव न किञ्चनापि कलयन्नत्यन्ततुच्छः पशुः ।
अस्तित्वं निजकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुनः
पूर्णस्तिष्ठति बाह्यवस्तुषु मुहुर्भूत्वा विनश्यत्स्वपि ।।१०।।

अर्थालम्बनकाल एव कलयन् ज्ञानस्य सत्त्वं बहि-
र्ज्ञेयालम्बनलालसेन मनसा भ्राम्यन्पशुर्नश्यति ।
नास्तित्वं परकालतोऽस्य कलयन् स्याद्वादवेदी पुन-
स्तिष्ठत्यात्मनिखातनित्यसहजज्ञानैकपुञ्जीभवन् ।।११।।

विश्रान्तः परभावभावकलनान्नित्यं बहिर्वस्तुषु
नश्यत्येव पशुः स्वभावमहिमन्येकान्तनिश्चेतनः ।
सर्वस्मान्नियतस्वभावमभवन् ज्ञानाद्विभक्तो भवन्
स्याद्वादी तु न नाशमेति सहजस्पष्टीकृतप्रत्ययः ।।१२।।

अध्यास्यात्मनि सर्वभावभवनं शुद्धस्वभावच्युतः
सर्वत्राप्यनिवारितो गतभयः स्वैरं पशुः क्रीडति ।
स्याद्वादी तु विशुद्ध एव लसति स्वस्य स्वभावं भरा-
दारूढः परभावभावविरहव्यालोकनिष्कम्पितः ।।१३।।

प्रादुर्भावविरामसुद्रितवहद् ज्ञानांशनानात्मना
निर्ज्ञानात् क्षणभङ्गसङ्गपतितः प्रायः पशुर्नश्यति ।
स्याद्वादी तु चिदात्मना परिमृशंश्चिद्वस्तु नित्योदितं
टङ्कोत्कीर्णघनस्वभावमहिमज्ञानं भवन् जीवति ।।१४।।

टङ्कोत्कीर्णविशुद्धबोधविसराकारात्मतत्त्वाशया
वाञ्छत्युच्छलदच्छचित्परिणतेर्भिन्नं पशुः किञ्चन ।
ज्ञानं नित्यमनित्यतापरिगमेऽप्यासादयत्युज्वलं
स्याद्वादी तदनित्यतां परिमृशंश्चिद्वस्तु वृत्तिक्रमात् ।।१५।।

इत्यज्ञानविमूढानां ज्ञानमात्रं प्रसादयन् ।
आत्मतत्त्वमनेकान्तः स्वयमेवानुभूयते ।।१६।।

एवं तत्त्वव्यवस्थित्या स्वं व्यवस्थापयन्स्वयम् ।
अलङ्घ्यं शासनं जैनमनेकान्तो व्यवस्थितः ।।१७।।

इत्याद्यनेकनिजशक्तिसुनिर्भरोऽपि
यो ज्ञानमात्रमयतां न जहाति भावः ।
एव क्रमाक्रमविवर्तिविवर्तचित्रं
तद्द्रव्यपर्य्ययमय चिदिहास्ति वस्तु ।।१८।।

नैकान्तसङ्गतदृशा स्वयमेव वस्तु-
तत्त्वव्यवस्थितिमिति प्रविलोकयन्तः ।
स्याद्वादशुद्धिमधिकामधिगम्य सन्तो
ज्ञानीभवन्ति जिननीतिमलङ्घयन्तः ।।१९।।

ये ज्ञानमात्रनिजभावमयीमकम्पां
भूमिं श्रयन्ति कथमप्यपनीतमोहा. ।
ते साधकत्वमधिगम्य भवन्ति सिद्धाः
मूढात्वमूमनुपलभ्य परिभ्रमन्ति ।।२०।।

स्याद्वादकौशलसुनिश्चलसंयमाभ्यां
यो भावयत्यहरहः स्वमिहोपयुक्तः ।
ज्ञानक्रियानयपरस्परतीव्रमैत्री-
पात्रीकृतः श्रयति भूमिमिमां स एकः ।।२१।।

चित्पिण्डचण्डिमविलासिविकासहासः-
शुद्धः प्रकाशभरनिर्भरसुप्रभातः ।
आनन्दसुस्थितसदास्खलितैकरूप–
स्तस्यैव चायमुदयत्यचलार्चिरात्मा ॥२२॥

स्याद्वाददीपितलसन्महसि प्रकाशे
शुद्धस्वभावमहिमन्युदिते मयीति ।
किं बन्धमोक्षपथपातिभिरन्यभावै-
र्नित्योदयः परमयं स्फुरतु स्वभावः ॥२३॥

चित्रात्मशक्तिसमुदायमयोऽयमात्मा
सद्यः प्रणश्यति नयेक्षणखण्डयमानः ।
तस्मा ण्डमनिराकृतखण्डमेक-
मेकान्तशान्तमचलं चिदहं महोऽस्मि ॥२४॥

योऽयं भावो ज्ञानमात्रोऽहमस्मि ज्ञेयो ज्ञेयज्ञानमात्रः स नैव ।
ज्ञेयो ज्ञेयज्ञानकल्लोलवल्गद् ज्ञानज्ञेयज्ञातृवद्वस्तुमात्रः ॥२५॥

क्वचिल्लसति मेचकं क्वचिदमेचकामेचकं
क्वचित्पुनरमेचकं सहजमेव तत्त्वं मम ।
तथापि न विमोहयत्यमलमेधसां तन्मनः
परस्परसुसंहतप्रकटशक्तिचक्रं स्फुरत् ॥२६॥

इतो गतमनेकतां दधदितः सदाप्येकता-
मितः क्षणविभङ्गुरं ध्रुवमितः सदैवोदयात् ।
इतः परमविस्तृतं धृतमितः प्रदेशैर्निजै-
रहो सहजमात्मनस्तदिदमद्भुतं वैभवम् ॥२७॥

कषायकलिरेकतः स्खलति शान्तिरस्त्येकतो
भवोपहतिरेकतः स्पृशति मुक्तिरप्येकतः ।

जगत्त्रितयमेकतः स्फुरति चिच्चकास्त्येकतः
स्वभावमहिताऽऽत्मनो विजयतेऽद्भुताद्भुतः ।।२८।।

जयति सहजतेजःपुञ्जमज्जत्त्रिलोकी-
स्खलदखिलविकल्पोऽप्येक एव स्वरूपः ।
स्वरसविसरपूर्णाच्छिन्नतत्त्वोपलम्भः
प्रसभनियमितार्चिश्चिच्चमत्कार एषः ।।२९।।

अविचलितचिदात्मन्यात्मनात्मानलात्म-
न्यवरतनिमग्नं धारयद् ध्वस्तमोहम् ।
उदितममृतचन्द्रज्योतिरेतत्समन्ता-
ज्ज्वलतु विमलपूर्णं निःसपत्नस्वभावम् ।।३०।।

यस्माद्द्वैतमभूत्पुरा स्वपरयोर्भूतं यतोऽत्रान्तरं
रागद्वेषपरिग्रहे सति यतो जातं क्रियाकारकैः ।
भुञ्जाना चयतोऽनुभूतिरखिलं खिन्ना क्रियायाः फलं
तद्विज्ञानघनौघमग्नमधुना किञ्चिन्न किञ्चित्किल ।।३१।।

स्वशक्तिसंसूचितवस्तुतत्त्वैर्व्याख्या कृतेयं समयस्य शब्दैः ।
स्वरूपगुप्तस्य न किञ्चिदस्ति कर्त्तव्यमेवामृ न्द्रसूरेः ।।३२।।

इति अध्यात्माऽमृतकलशा समाप्ता ॥



अनजाने मनुष्य पर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुष पर सन्देह करना — ये दोनो बातें एक समान आपत्तियो की जननी है ।

सिरि कुन्दकुन्दाइरियकदं

समयपाहुडं

पू`रंग

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते ।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिद ।।१।।
जीवो चरित्तदंसणणाणट्ठिदो तं हि ससमयं जाण ।
पोग्गलकम्मपदेसट्ठिदं च तं जाण परसमयं ।।२।।
एयत्तणिच्छयगदो समओ सव्वत्थ सुंदरो लोए ।
बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होदि ।।३।।
सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबन्धकहा ।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स ।।४।।
तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण ।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्केज्ज छलं ण घेत्तव्वं ।।५।।
ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो ।
एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव ।।६।।
ववहारेणुवदिस्सदि णाणिस्स चरित्त दंसणं णाणं ।
ण वि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो ।।७।।
जह ण वि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा दु गाहेदुं ।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसणमसक्कं ।।८।।
जो हि सुदेणहिगच्छदि अप्पाणमिणं तु केवलं सुद्धं ।
त सुदकेवलिमिसिणो भणंति लोयप्पदीवयरा ।।९।।
जो सुदणाणं सव्वं जाणदि सुदकेवलिं तमाहु जिणा ।
णाणं अप्पा सव्वं जम्हा सुदकेवली तम्हा ।।१०।।

ववहारोऽभूदत्थो भूदत्थो देसिदो दु सुद्धरणश्रो ।
भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो ।।११।।

सुद्धो सुद्धादेसो णादव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदा पुरण जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे ।।१२।।

भूदत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य सम्मत्तं ।।१३।।

जो पस्सदि अप्पारणं अबद्धपुट्ठं अरणण्णयं रिणयदं ।
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धरणयं वियारणीहि ।।१४।।

जो पस्सदि अप्पारणं अबद्धपुट्ठं अरणण्णयं रिणयदं ।
अपदेस-संत-मज्भं पस्सदि जिरणसासरणं सव्वं ।।१५।।

दंसरणरणारणचरित्ताणि सेविदव्वारिण साहुरणा रिणच्चं ।
तारिण पुरण जारण तिण्णि वि अप्पारणं चेव रिणच्छयदो ।१६।

जह णाम को वि पुरिसो रायारणं जारिणऊरण सद्दहदि ।
तो तं अणुचरदि पुणो अत्थत्थीश्रो पयत्तेरण ।।१७।।

एवं हि जीवराया णादव्वो तह य सद्दहेदव्वो ।
अणुचरिदव्वो य पुणो सो चेव दु मोक्खकामेरण ।।१८।।

कम्मे णोकम्मम्हि य अहमिदि अहकं च कम्म णोकम्मं ।
जा एसा खलु बुद्धि अप्पडिबुद्धो हवदि ताव ।।१९।।

अहमेदं एदमहं अहमेदस्सम्हि अत्थि मम एदं ।
अण्णं जं परदव्वं सचित्ताचित्तमिस्सं वा ।।२०।।

आसि मम पुव्वमेदं अहमेदं चावि पुव्वकालम्हि ।
होहिदि पुणो वि मज्भं अहमेदं चावि होस्सामि ।।२१।।

एवं तु असब्भूदं आदवियप्पं करेदि संमूढो ।
भूदत्थं जाणंतो ण करेदि दु तं असंमूढो ।।२२।।

अण्णाणमोहिदमदी मज्झमिणं भणदि पोग्गलं दव्वं ।
बद्धमबद्धं च तहा जीवो बहुभावसंजुत्तो ॥२३॥

सव्वण्हुणाणदिट्ठो जीवो उवओगलक्खणो णिच्चं ।
कह सो पोग्गलदव्वीभूदो जं भणसि मज्झमिणं ॥२४॥

जदि सो पोग्गलदव्वीभूदो जीवत्तमागदं इदरं ।
तो सक्को वत्तुं जे मज्झमिणं पोग्गलं दव्वं ॥२५॥

जदि जीवो ण सरीरं तित्थयरायरियसंथुदी चेव ।
सव्वा वि हवदि मिच्छा तेण दु आदा हवदि देहो ॥२६॥

ववहारणओ भासदि जीवो देहो य हवदि खलु एक्को ।
ण दु णिच्छयस्स जीवो देहो य कदावि एक्कट्ठो ॥२७॥

इणमण्णं जीवादो देहं पोग्गलमयं थुणित्तु मुणी ।
मण्णदि हु संथुदो वंदिदो मए केवली भयवं ॥२८॥

तं णिच्छये ण जुज्जदि ण सरीरगुणा हि होंति केवलिणो ।
केवलिगुणो थुणदि जो सो तच्चं केवलिं थुणदि ॥२९॥

णयरम्मि वण्णिदे जह ण वि रण्णो वण्णणा कदा होदि ।
देहगुणे थुव्वंते ण केवलिगुणा थुदा होंति ॥३०॥

जो इंदिये जिणित्ता णाणसहावाधियं मुणदि आदं ।
तं खलु जिदिंदियं ते भणंति जे णिच्छिदा साहू ॥३१॥

जो मोहं तु जिणित्ता णाणसहावाधियं मुणदि आदं ।
तं जिदमोहं साहुं परमट्ठवियाणया बेंति ॥३२॥

जिदमोहस्स दु जइया खीणो मोहो हवेज्ज साहुस्स ।
तइया हु खीणमोहो भण्णदि सो णिच्छयविदूहिं ॥३३॥

सव्वे भावा जम्हा पच्चक्खादी परे त्ति णादूण ।
तम्हा पच्चक्खाणं णाणं णियमा मुणेदव्वं ॥३४॥

जह णाम को वि पुरिसो परदव्वमिणं ति जाणिदुं चयदि ।
तह सव्वे परभावे णादूण विमुञ्चदे णाणी ।।३५।।
णत्थि मम को वि मोहो बुज्झदि उवओग एव अहमेक्को ।
तं मोहणिम्ममत्तं समयस्स वियाणया बेंति ।।३६।।
णत्थि मम धम्म आदी बुज्झदि उवओग एव अहमेक्को ।
तं धम्मणिम्ममत्तं समयस्य वियाणया बेंति ।।३७।।
अहमेक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइओ सदारूवी ।
ण वि अत्थि मज्झ किंचि वि अण्णं परमाणुमेत्तं पि ।।३८।।

ी ी धिकार

अप्पाणमयाणंता ू ा दु परप्पवादिणो केई ।
जीवं अजझ णं कम्मं च तहा परूबेंति ।।३९।।
अवरे अज्झवसाणेसु तिव्वमंदाणुभागगं जीवं ।
मण्णति तहा अवरे णोकम्मं चावि जीवो त्ति ।।४०।।
कम्मस्सुदयं जीवं अवरे कम्माणुभागमिच्छंति ।
तिव्वत्तणमंदत्तण गुणेंहि जो सो हवदि जीवो ।।४१।।
जीवो कम्मं उहयं दोण्णि वि खलु केइ जीवमिच्छंति ।
अवरे संजोगेण दु कम्माणं जीवमिच्छति ।।४२।।
एवं विहा बहुविहा परमप्पाणं वदंति दुम्मेहा ।
ते ण परमट्ठवादी णिच्छयवादींहि णिद्दिट्ठा ।।४३।।
एदे सव्वे भावा पोग्गलदव्वपरिणामणिप्पण्णा ।
केवलिजिणेंहि भणिया कह ते जीवो त्ति वुच्चति ।।४४।।
अट्ठविहं पि य कम्मं सव्वं पोग्गलमयं जिणा बेंति ।
जस्स फलं तं वुच्चदि दुक्खं ति विपच्चमाणस्य ।।४५।।

ववहारस्स दरीसणमुवदेसो वण्णिदो जिणवरेंहि ।
जीवा एदे सव्वे अज्झवसाणादश्रो भावा ।।४६।।

राया खु णिग्गदो त्ति य एसो बलसमुदयस्स आदेसो ।
ववहारेण दु वुच्चदि तत्थेक्को णिग्गदो राया ।।४७।।

एमेव य ववहारो अज्झवसाणादिअण्णभावाणं ।
जीवो त्ति कदो सुत्ते तत्थेक्को णिच्छिदो जीवो ।।४८।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ।।४९।।

जीवस्य णत्थि वण्णो ण वि गधो ण वि रसो ण विय फासो ।
ण वि रूवं ण सरीरं ण वि संठाणं ण संहणणं ।।५०।।

जीवस्स णत्थि रागो ण वि दोसो णेव विज्जदे मोहो ।
णो पच्चया ण कम्मं णोकम्मं चावि से णत्थि ।।५१।।

जीवस्स णात्थि वग्गो ण वग्गणा णेव फड्ढया केई ।
णो अज्झप्पट्ठाणा णेव य अणुभागठाणा वा ।।५२।।

जीवस्स णत्थि केई जोगट्ठाणा ण बंधठाणा वा ।
णेव य उदयट्ठाणा ण मग्गणट्ठाणया केई ।।५३।।

णो ठिदि बंधट्ठाणा जीवस्स ण संकिलेसठाणा वा ।
णेव विसोहिट्ठाणा णो संजमलद्धिठाणा वा ।।५४।।

णेव य जीवट्ठाणा ण गुणट्ठाणा य अत्थि जीवस्स ।
जेण दु एदे सव्वे पोग्गलदव्वस्स परिणामा ।।५५।।

ववहारेण दु एदे जीवस्स हवंति वण्णमादीया ।
गुणठाणंता भावा ण दु केई णिच्छयणयस्स ।।५६।।

एदेहिं य संबंधो जहेव खीरोदयं मुणेदव्वो ।
ण य होंति तस्स ताणि दु उवओगगुणाधिगो जम्हा ।।५७।।

पंथे मुस्संतं पस्सिदूण लोगा भणंति ववहारी ।
मुस्सदि एसो पंथो ण य पंथो मुस्सदे कोई ॥५८॥

तह जीवे कम्माणं णोकम्माणं च पस्सिदुं वण्णं ।
जीवस्स एस वण्णो जिणेहिं ववहारदो उत्तो ॥५९॥

गंधरसफा वा देहो संठाणमाइया जे य ।
सव्वे ववहारस्स य णिच्छयदण्हू ववदिसंति ॥६०॥

तत्थ भवे जीवाणं संसारत्थाण होंति वण्णादि ।
संसारपमुक्काणं णत्थि हु वण्णादओ केई ॥६१॥

जीवो चेव हि एदे सव्वे भाव त्ति मण्णसे जदि हि ।
जीवस्साजीवस्स य णत्थि विसेसो दु दे कोई ॥६२॥

अह संसारत्थाणं जीवाणं तुज्झ होंति वण्णादी ।
तम्हा संसारत्था जीवा रूवित्तमावण्णा ॥६३॥

एवं पोग्गलदव्वं जीवो तहलक्खणेण मूढमदी ।
णिव्वाणमुवगदो वि य जीवत्तं पोग्गलो पत्तो ॥६४॥

एक्कं च दोण्णि तिण्णि य चत्तारि य पंच इंदिया जीवा ।
बादरपज्जत्तिदरा पयडीओ णामकम्मस्स ॥६५॥

एदाहि य णिव्वत्ता जीवट्ठाणा दु करणभूदाहिं ।
पयडीहिं पोग्गलमईहिं ताहिं किह भण्णदे जीवो ॥६६॥

पज्जत्तापज्जत्ता जे सुहुमा बादरा य जे जीवा ।
देहस्स जीवसण्णा सुत्ते ववहारदो उत्ता ॥६७॥

मोहणकम्मस्सुदया दु वण्णिदा जे इमे गुणट्ठाणा ।
ते किह हवंति जीवा जे णिच्चमचेदणा उत्ता ॥६८॥

ववहारस्स दरीसणमुवदेसो वण्णिदो जिणवरेहिं ।
जीवा एदे सव्वे अज्भवसाणादओ भावा ।।४६।।

राया खु णिग्गदो त्ति य एसो बलसमुदयस्स आदेसो ।
ववहारेण दु वुच्चदि तत्थेक्को णिग्गदो राया ।।४७।।

एमेव य ववहारो अज्भवसाणादिअण्णभावाणं ।
जीवो त्ति कदो सुत्ते तत्थेक्को णिच्छिदो जीवो ।।४८।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ।।४९।।

जीवस्य णत्थि वण्णो ण वि गंधो ण वि रसो ण विय फासो ।
ण वि रूवं ण सरीरं ण वि संठाणं ण संहणणं ।।५०।।

जीवस्स णत्थि रागो ण वि दोसो णेव विज्जदे मोहो ।
णो पच्चया ण कम्मं णोकम्मं चावि से णत्थि ।।५१।।

जीवस्स णात्थि वग्गो ण वग्गणा णेव फड्ढया केई ।
णो अज्भप्पट्ठाणा णेव य अणुभागठाणा वा ।।५२।।

जीवस्स णत्थि केई जोगट्ठाणा ण बंधठाणा वा ।
णेव य उदयट्ठाणा ण मग्गणट्ठाणया केई ।।५३।।

णो ठिदि बंधट्ठाणा जीवस्स ण संकिलेसठाणा वा ।
णेव विसोहिट्ठाणा णो संजमलद्धिठाणा वा ।।५४।।

णेव य जीवट्ठाणा ण गुणट्ठाणा य अत्थि जीवस्स ।
जेण दु एदे सव्वे पोग्गलदव्वस्स परिणामा ।।५५।।

ववहारेण दु एदे जीवस्स हवंति वण्णमादीया ।
गुणठाणंता भावा ण दु केई णिच्छयणयस्स ।।५६।।

एदेहिं य संबंधो जहेव खीरोदयं मुणेदव्वो ।
ण य होंति तस्स ताणि दु उवओगगुणाधिगो जम्हा ।।५७।।

पंथे मुस्संतं पस्सिदूरण लोगा भरणंति ववहारी।
मुस्सदि एसो पंथो रण य पंथो मुस्सदे कोई ॥५८॥

तह जीवे कम्मांणं रणोकम्मारणं च पस्सिदुं वण्णं।
जीवस्स एस वण्णो जिणेहिं ववहारदो उत्तो ॥५९॥

गंधरसफा वा देहो संठारणमाइया जे य।
सव्वे ववहारस्स य रिणच्छयदण्हू ववदिसंति ॥६०॥

तत्थ भवे जीवाणं संसारत्थाण होंति वण्णादि।
संसारपमुक्काणं रणत्थि हु वण्णादग्रो केई ॥६१॥

जीवो चेव हि एदे सव्वे भाव त्ति मण्णसे जदि हि।
जीवस्साजीवस्स य रणत्थि विसेसो दु दे कोई ॥६२॥

ग्रह संसारत्थारणं जीवाणं तुज्झ होंति वण्णादी।
तम्हा संसारत्था जीवा रूवित्तमावण्णा ॥६३॥

एवं पोग्गलदव्वं जीवो तहलक्खेरण मूढमदी।
रिणव्वारणमुवगदो वि य जीवत्तं पोग्गलो पत्तो ॥६४॥

एक्कं च दोण्णि तिण्णि य चत्तारि य पंच इंदिया जीवा।
बादरपज्जत्तिदरा पयडीग्रो रणामकम्मस्स ॥६५॥

एदाहि य रिणव्वत्ता जीवट्ठारणा दु करणभूदाहिं।
पयडीहिं पोग्गलमईहिं ताहिं किह भण्णदे जीवो ॥६६॥

पज्जत्तापज्जत्ता जे सुहुमा बादरा य जे जीवा।
देहस्स जीवसण्णा सुत्ते ववहारदो उत्ता ॥६७॥

मोहरणकम्मस्सुदया दु वण्णिदा जे इमे गुरणट्ठारणा।
ते किह हवंति जीवा जे णिच्चमचेदरणा उत्ता ॥६८॥

कर्त्ताक ́ धिकार

जाव ण वेदि विसेसंतर तु आदासवाण दोण्हं पि ।
अण्णाणी ताव दु सो कोहादिसु वट्टदे जीवो ।।६९।।

कोहादिसु वट्टं तस्य तस्य कम्मस्स संचओ होदि ।
जीवस्सेव बंधो भणिदो खलु सव्वदरिसीहिं ।।७०।।

जइया इमेण जीवेण अप्पणो आसवाण य तहेव ।
णाद होदि विसेसंतरं तु तइया ण बंधो से ।।७१।।

णादूण आसवाणं असुचित्तं च विवरीयभावं च ।
दुक्खस्स कारण त्ति य तदो णियत्ति कुणदि जीवो ।।७२।।

अहमेक्को खलु सुद्धो णिम्ममओ णाणदंसणसमग्गो ।
तम्हि ठिदो तच्चित्तो सव्वे एदे ́ णेमि ।।७३।।

जीवणिबद्धा एदे अधुव अणिच्चा तहा असरणा य ।
दुक्खा दुक्खफल त्ति य णादूण णिवत्तदे तेहिं ।।७४।।

कम्मस्स य परिणाम णोकम्मस्स य तहेव परिणामं ।
ण करेदि एयमादा जो जाणदि सो हवदि णाणी ।।७५।।

ण वि परिणमदि ण गिण्हदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए ।
णाणी जाणतो वि हु पोग्गलकम्मं अणेयविहं ।।७६।।

ण वि परिणमदि ण गिण्हदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए ।
णाणी जाणतो वि हु सगपरिणामं अणेयविहं ।।७७।।

ण वि परिणमदि ण गिण्हदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए ।
णाणी जाणतो वि हु पोग्गलकम्मप्फलमणंतं ।।७८।।

ण वि परिणमदि ण गिण्हदि उप्पज्जदि ण परदव्वपज्जाए ।
पोग्गलदव्व पि तहा परिणमदि सएहि भावेहि ।।७९।।

जीव परिणामहेदुं कम्मत्तं पोग्गला परिणमंति ।
पोग्गलकम्मणिमित्तं तहेव जीवो वि परिणमदि ।।८०।।

ण वि कुव्वदि कम्मगुणे जीवो कम्मं तहेव जीवगुणे ।
अण्णोण्णणिमित्तेण दु परिणामं जाण दोण्हं पि ।।८१।।

एदेण कारणेण दु कत्ता आदा सएण भावेण ।
पोग्गलकम्मकदाणं ण दु कत्ता सव्वभावाणं ।।८२।।

णिच्छयणयस्स एवं आदा अप्पाणमेव हि करेदि ।
वेदयदि पुणो तं चेव जाण अत्ता दु अत्ताणं ।।८३।।

ववहारस्स दु आदा पोग्गलकम्मं करेदि णेयविहं ।
तं चेव य वेदयदे पोग्गलकम्मं अणेयविहं ।।८४।।

जदि पोग्गलकम्ममिणं कुव्वदि तं चेव वेदयति आदा ।
दो किरियावदिरित्तो पसज्जदे सो जिणावमदं ।।८५।।

जम्हा दु अत्तभावं पोग्गलभावं च दो वि कुव्वंति ।
तेण दु मिच्छादिट्ठी दोकिरियावादिणो हुंति ।।८६।।

मिच्छत्तं पुण दुविहं जीवमजीवं तहेव अण्णाणं ।
अविरदि जोगो मोहो कोहादीया इमे भावा ।।८७।।

पोग्गलकम्मं मिच्छं जोगो अविरदि अणाणमज्जीवं ।
उवओगो अण्णाणं अविरदि मिच्छं च जीवो दु ।।८८।।

उवओगस्स अणाई परिणामा तिण्णि मोहजुत्तस्स ।
मिच्छत्तं अण्णाणं अविरदिभावो य णादव्वो ।।८९।।

एदेसु य उवओगो तिविहो सुद्धो णिरंजणो भावो ।
जं सो करेदि भावं उवओगो तस्स सो कत्ता ।।९०।।

जं कुणदि भावमादा कत्ता सो होदि तस्स भावस्स ।
कम्मत्तं परिणमदे तम्हि सयं पोग्गलं दव्वं ।।९१।।

परमप्पाणं कुव्वं अप्पाणं पि य परं करितो सो ।
अण्णाणमओ जीवो कम्माणं कारगो होदि ।।९२।।

परमप्पाणमकुव्वं अप्पाणं पि य परं अकुव्वंतो ।
सो णाणमओ जीवो कम्माणमकारगो होदि ।।९३।।

तिविहो एसुवओगो अप्पवियप्पं करेदि कोहोऽहं ।
कत्ता तस्सुवओगस्स होदि सो अत्तभावस्स ।।९४।।

तिविहो एसुवओगो अप्पवियप्पं करेदि धम्मादि ।
कत्ता तस्सुवओगस्स होदि सो अत्तभावस्स ।।९५।।

एवं पराणि दव्वाणि अप्पयं कुणदि मंदबुद्धीओ ।
अप्पाणं अवि य परं करेदि अण्णाणभावेण ।।९६।।

एदेण दु सो कत्ता आदा णिच्छयविदूहि परिकहिदो ।
एवं खलु जो जाणदि सो मुञ्चदि सव्वकत्तित्तं ।।९७।।

ववहारेण दु आदा करेदि घडपडरथादिदव्वाणि ।
करणाणि य कम्माणि य णोकम्माणीह विविहाणि ।।९८।।

जदि सो परदव्वाणि य करेज्ज णियमेण तम्मओ होज्ज ।
जम्हा ण तम्मओ तेण सो ण तेसिं हवदि कत्ता ।।९९।।

जीवो ण करेदि घडं णेव पडं णेव सेसगे दव्वे ।
जोगुवओगा उप्पादगा य तेसिं हवदि कत्ता ।।१००।।

जे पोग्गलदव्वाणं परिणामा होंति णाणआवरणा ।
ण करेदि ताणि आदा जो जाणदि सो हवदि णाणी ।।१०१।।

जं भावं सुहमसुहं करेदि आदा स तस्स खलु कत्ता ।
तं तस्स होदि कम्मं सो तस्स दु वेदगो अप्पा ।।१०२।।

जो जम्हि गुणे दव्वे सो अण्णम्हि दु ण संकमदि दव्वे ।
सो अण्णमसंकंतो किह तं परिणामए दव्वं ।।१०३।।

दव्वगुणस्स य आदा ण कुणदि पोग्गलमयम्हि कम्मम्हि ।
तं उभयमकुव्वंतो तम्हि कहं तस्स सो कत्ता ॥१०४॥

जीवम्हि हेदुभूदे बंधस्स दु पस्सिदूण परिणामं ।
जीवेण कदं कम्मं भण्णदि उवयारमेत्तेण ॥१०५॥

जोधेहिं कदे जुद्धे राएण कदं त्ति जंपदे लोगो ।
तह ववहारेण कदं णाणावरणादि जीवेण ॥१०६॥

उप्पादेदि करेदि य बंधदि परिणामएदि गिण्हदि य ।
आदा पोग्गलदव्वं ववहारणयस्स वत्तव्वं ॥१०७॥

जह राया ववहारा दोसगुणुप्पादगो त्ति आलविदो ।
तह जीवो ववहारा दव्वगुणुप्पादगो भणिदो ॥१०८॥

सामण्णपच्चया खलु चउरो भण्णंति बंधकत्तारो ।
मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य बोद्धव्वा ॥१०९॥

तेसिं पुणो वि य इमो भणिदो भेदो दु तेरसवियप्पो ।
मिच्छादिट्ठीआदी जाव सजोगिस्स चरमंतं ॥११०॥

एदे अचेदणा खलु पोग्गलकम्मुदयसंभवा जम्हा ।
ते जदि करेंति कम्मं ण वि तेसिं वेदगो आदा ॥१११॥

गुणसण्णिदा दु एदे कम्मं कुव्वंति पच्चया जम्हा ।
तम्हा जीवोऽकत्ता गुणा य कुव्वंति कम्माणि ॥११२॥

जह जीवस्स अणण्णुवओगो कोहो वि तह जदि अणण्णो ।
जीवस्साजीवस्स य एवमणण्णत्तमावण्णं ॥११३॥

एवमिह जो दु जीवो सो चेव दु णियमदो तहाऽजीवो ।
अयमेयत्ते दोसो पच्चयणोकम्मकम्माणं ॥११४॥

अह दे अण्णो कोहो अण्णुवओगप्पगो हवदि चेदा ।
जह कोहो तह पच्चय कम्म णोकम्ममवि अण्णं ॥११५॥

जीवे ण सयं बद्धं ण सयं परिणमदि कम्मभावेण ।
जदि पोग्गलदव्वमिणं अप्परिणामी तहा होदि।।११६।।
कम्मइयवग्गणासु य अपरिणमंतीसु कम्मभावेण ।
ंारस्स अभावो पसज्जदे संखसमओ वा ।।११७।।
जीवो परिणामयते पोग्गलदव्वाणि कम्मभावेण ।
ते मपरिणमंते कहं णु परिणामयदि चेदा ।।११८।।
अह सयमेव हि परिणमदि कम्भावेण पोग्गलं दव्वं ।
जीवो परिणामयदे कम्मं कम्मत्तमिदिमिच्छा ।।११९।।
णियमा कम्मपरिणदं कम्मं चिय होदि पोग्गलं दव्वं ।
तह तं णाणावरणाइपरिणदं मुणसु तच्चेव ।।१२०।।
ण सयं बद्धो कम्मे ण सयं परिणमदि कोहमादीहिं ।
जदि एस तुज्झ जीवो अप्परिणामी तदा होदि ।।१२१।।
अपरिणमंतम्हि सयं जीवो कोहादिएहिं भावेहि ।
ंारस्स अभावो पसज्जदे ं मओ वा ।।१२२।।
पोग्गलकम्मं कोहो जीव परिणामएदि कोहत्तं ।
तं सयमपरिणमंते किह परिणामयदि कोहत्तं ।।१२३।।
अह सयमप्पा परिणमदि कोहभावेण एस दे बुद्धी ।
कोहो परिणामयदे जीवं कोहत्तमिदि मिच्छा ।।१२४।।
कोहवजुत्तो कोहो माणवजुत्तो य माणमेवादा ।
माउवजुत्तो माया लोहुवजुत्तो हवदि लोहो ।।१२५।।
जं कुणदि भावमादा कत्ता सो होदि तस्स कम्मस्स ।
णाणिस्स दु णाणमओ अण्णाणमओ अणाणिस्य ।।१२६।।
अण्णाणमओ भावो अणाणिणो कुणदि तेण कम्माणि ।
णाणमओ णाणिस्स दु ण कुणदि तम्हा दु कम्माणि।१२७।
णाणमया भावादो णाणमओ चेव जायदे भावो ।
जम्हा तम्हा णाणिस्स सव्वे भावा हु णाणमया ।।१२८।।

अण्णाणमया भावा अण्णाणो चेव जायदे भावो ।
जम्हा तम्हा भावा अण्णाणमया अणाणिस्स ॥१२९॥
कणयमया भावादो जायंते कुंडलादयो भावा ।
अयमयया भावादो जह जायंते दु कडयादी ॥१३०॥
अण्णाणमया भावा अणाणिणो बहु विहा वि जायंते ।
णाणिस्स दु णाणमया सव्वे भावा तहा होंति ॥१३१॥
अण्णाणस्स दु उदओ जा जीवाणं अतच्चउवलद्धी ।
मिच्छत्तस्स दु उदओ जीवस्स असद्दहाणत्तं ॥१३२॥
उदओ असंजमस्स दु जं जीवाण हवेदि अविरमणं ।
जो दु कलुसोवओगो जीवाणं सो कसाउदओ ॥१३३॥
तं जाण जोगउदयं जो जीवाणं तु चिट्ठउच्छाहो ।
सोहण मसोहणं वा कादव्वो विरदि भावो वा ॥१३४॥
एदेसु हेदुभुदेसु कम्मइयवग्गणागदं जं तु ।
परिणमदे अट्ठविहं णाणावरणादि भावेहिं ॥१३५॥
तं खलु जीवाणिबद्धं कम्मइयवग्गणागदं जइया ।
तइया दु होदि हेदु जीवो परिणामभावाणं ॥१३६॥
जीवस्स दु कम्मेण य सह परिणामा दु होंति रागादि ।
एवं जीवो कम्मं च दो वि रागादिमावण्णा ॥१३७॥
एकस्स दु परिणामो जायदि जीवस्स रागमादीहिं ।
ता कम्मोदयहेदुहिं विणा जीवस्स परिणामो ॥१३८॥
जदि जीवेण सहच्चिय पोग्गलदव्वस्स कम्मपरिणामो ।
एवं पोग्गलजीवा हु दु वि कम्मत्तमावण्णा ॥१३९॥
एकस्स दु परिणामो पोग्गलदव्वस्स कम्मपरिणामो ।
ता जीवभावहेदुहि विणा कम्मस्स परिणामो ॥१४०॥
जीवे कम्मं बद्धं पुट्ठं चेदि ववहारणयभणिदं ।
सुद्धणयस्स दु जीवे अबद्धपुट्ठं हवदि कम्मं ॥१४१॥

कम्मं बद्धमबद्धं जीवे एदं तु जाण णयपक्खं ।
णयपक्खादिक्कंतो भण्णदि जो सो समयसारो ।।१४२।।
दोण्ह वि णयाण भणिदं जाणदि णवरि तु समयपडिबद्धो ।
ण दु णयपक्खं गिण्हदि किंचि वि णयपक्खपरिहीणो।१४३।
सम्मद्दंसणणाणं एसो लहदित्ति णवरि देसं ।
सव्वणयपक्खरहिदो भणिदो जो सो समयसारो ।।१४४।।

पुण -पाप धि ार

कम्ममसुहं कुसीलं सुहकम्मं चावि जाणह सुसीलं ।
किह तं होदि सुसीलं जं संसारं पवेसेदि ।।१४५।।
सोवण्णियं पि णियलं बंधदि कालायसं पि जह पुरिसं ।
बंधदि एवं जीवं सुहमसुहं वा कदं कम्मं ।।१४६।।
तम्हा दु कुसीलेहिं य रागं मा कुणह मा वा संसग्गं ।
साहीणो हि विणासो कुसील संसग्ग रागेण ।।१४७।।
जह णाम को वि पुरिसो कुच्छियसीलं जणं वियाणित्ता ।
वज्जेदि तेण समय ससग्ग रागकरणं च ।।१४८।।
एमेव कम्मपयडी सीलसहावं हि कुच्छिदं णादुं ।
वज्जंति परिहरंति य तं संसग्ग सहावरदा ।।१४९।।
रत्तो बंधयि कम्मं मुञ्चदि जीवो विरागसंपण्णो ।
एसो जिणोवदेशो तम्हा कम्मेसु मा रज्ज ।।१५०।।
परमट्ठो खलु समओ सुद्धो जो केवली मुणी णाणी ।
तम्हि ट्ठिदा सहावे मुणिणो पावंति णिव्वाणं ।।१५१।।
परमट्ठम्मि दु अठिदो जो कुणदि तवं वदं च धारयदि ।
तं सव्वं बालतवं बालवदं बेंति सव्वण्हू ।।१५२।।
वदणियमाणि धरंता सीलाणि तहा तव च कुव्वंता ।
परमट्ठबाहिरा जे णिव्वाणं ते ण विंदंति ।।१५३।।

परमट्ठबाहिरा जे ते अण्णाणेण पुण्णमिच्छंति ।
संसारगमणहेदुं वि मोक्खहेदुं अजाणंता ।।१५४।।

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं तेसिमधिगमो णाणं ।
रागादीपरिहरणं चरणं एसो दु मोक्खपहो ।।१५५।।

मोत्तूण णिच्छयट्ठं ववहारेण विदुसा पवट्ठंति ।
परमट्ठमस्सिदाण दु जदीण कम्मक्खओ होदि ।।१५६।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
मिच्छत्तमलोच्छण्णं तह सम्मत्तं खु णादव्वं ।।१५७।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
अण्णाणमलोच्छण्णं तह णाणं होदि णादव्वं ।।१५८।।

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
कसायमलोच्छण्णं तह चारित्तं पि णादव्वं ।।१५९।।

सो सव्वणाणदरिसी कम्मरयेण णियेणावच्छण्णो ।
संसारसमावण्णो ण विजाणदि सव्वदो सव्वं ।।१६०।।

सम्मत्तपडिणिबद्धं मिच्छत्तं जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो मिच्छादिट्ठि त्ति णादव्वो ।।१६१।।

णाणस्स पडिणिबद्धं अण्णाणं जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो अण्णाणी होदि णादव्वो ।।१६२।।

चारित्तपडिणिबद्धं कसायमिदि जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो अचरित्तो होदि णादव्वो ।।१६३।।

कम्मं बद्धमबद्धं जीवे एदं तु जाण णयपक्खं ।
णयपक्खादिक्कंतो भण्णदि जो सो समयसारो ।।१४२।।
दोण्ह वि णयाण भणिदं जाणदि णवरिं तु समयपडिबद्धो ।
ण दु णयपक्खं गिण्हदि किंचि वि णयपक्खपरिहीणो।१४३।
सम्मद्दंसणणाणं एसो लहदित्ति णवरि ववदेसं ।
सव्वणयपक्खरहिदो भणिदो जो सो समयसारो ।।१४४।।

पु० -पाप धि ार

कम्ममसुहं कुसीलं सुहकम्मं चावि जाणह सुसीलं ।
किह तं होदि सुसीलं जं संसारं पवेसेदि ।।१४५।।
सोवण्णियं पि णियलं बंधदि कालायसं पि जह पुरिसं ।
बंधदि एवं जीवं सुहमसुहं वा कदं कम्मं ।।१४६।।
तम्हा दु कुसीलेहिं य रागं मा कुणह मा वा संसग्गं ।
साहीणो हि विणासो कुसील संसग्ग रागेण ।।१४७।।
जह णाम को वि पुरिसो कुच्छियसीलं जणं वियाणित्ता ।
वज्जेदि तेण समयं ससग्ग रागकरणं च ।।१४८।।
एमेव कम्मपयडी सीलसहावं हि कुच्छिदं णादुं ।
वज्जंति परिहरंति य तं संसग्गं सहावरदा ।।१४९।।
रत्तो बधयि कम्मं मुञ्चदि जीवो विरागसंपण्णो ।
एसो जिणोवदेशो तम्हा कम्मेसु मा रज्ज ।।१५०।।
परमट्ठो खलु समम्रो सुद्धो जो केवली मुणी णाणी ।
तम्हि ट्ठिदा सहावे मुणिणो पावंति णिव्वाणं ।।१५१।।
परमट्ठम्मि दु अठिदो जो कुणदि तवं वदं च धारयदि ।
त सव्वं बालतवं बालवद बेंति सव्वण्हू ।।१५२।।
वदणियमाणि धरता सीलाणि तहा तवं च कुव्वंता ।
परमट्ठबाहिरा जे णिव्वाणं ते ण विंदंति ।।१५३।।

परमट्ठबाहिरा जे ते अण्णाणेण पुण्णमिच्छंति ।
संसारगमणहेदुं वि मोक्खहेदुं अजाणंता ॥१५४॥

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं तेसिमधिगमो णाणं ।
रागादीपरिहरणं चरणं एसो दु मोक्खपहो ॥१५५॥

मोत्तूण णिच्छयट्ठं ववहारेण विदुसा पवट्ठंति ।
परमट्ठमस्सिदाण दु जदीण कम्मक्खओ होदि ॥१५६॥

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
मिच्छत्तमलोच्छण्णं तह सम्मत्तं खु णादव्वं ॥१५७॥

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
अण्णाणमलोच्छण्णं तह णाणं होदि णादव्वं ॥१५८॥

वत्थस्स सेदभावो जह णासदि मलविमेलणाच्छण्णो ।
कसायमलोच्छण्णं तह चारित्तं पि णादव्वं ॥१५९॥

सो सव्वणाणदरिसी कम्मरयेण णियेणावच्छण्णो ।
संसारसमावण्णो ण विजाणदि सव्वदो सव्वं ॥१६०॥

सम्मत्तपडिणिबद्धं मिच्छत्तं जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो मिच्छादिट्ठि त्ति णादव्वो ॥१६१॥

णाणस्स पडिणिबद्धं अण्णाणं जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो अण्णाणी होदि णादव्वो ॥१६२॥

चारित्तपडिणिबद्धं कसायमिदि जिणवरेहिं परिकहिदं ।
तस्सोदयेण जीवो अचरित्तो होदि णादव्वो ॥१६३॥

ाश्रव धि ार

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य सण्णसण्णा दु ।
बहुविहभेदा जीवे तस्सेव अणण्णपरिणामा ।।१६४।।

णाणावरणादीयस्स ते दु कम्मस्स कारणं होंति ।
तेसिं पि होदि जीवो य रागदोसादिभावकरो ।।१६५।।

णत्थि दु आसवबन्धो सम्मादिट्ठिस्स आसवणिरोहो ।
संते पुव्वणिबद्धे जाणदि सो ते अबधंतो ।।१६६।।

भावो रागादिजुदो जीवेण कदो दु बंधगो भणिदो ।
रागादि विप्पमुक्को अबंधगो जाणगो णवरिर ।।१६७।।

पक्के फलम्मि पडिए जह ण फलं बज्झए पुणोविंटे ।
जीवस्स कम्मभावे पडिए ण पुणोदयमुवेदि ।।१६८।।

पुढवीपिंडसमाणा पुव्वणिबद्धा दु पच्चया तस्स ।
कम्मसरीरेण दु ते बुद्धा सव्वे वि णाणिस्स ।।१६९।।

चउविह अणेयभेयं बंधंते णाणदंसणगुणेहिं ।
समये समये जम्हा तेण अबंधो त्ति णाणी दु ।।१७०।।

जम्हा दु जहण्णादो णाणगुणादो पुणो वि परिणमदि ।
अण्णत्तं णाणगुणो तेण दु सो बंधगो भणिदो ।।१७१।।

दंसणणाणचरित्तं ज परिणमदे जहण्णभावेण ।
णाणी तेण दु बज्झदि पोग्गलकम्मेण विविहेण ।।१७२।।

सव्वे पुव्वणिबद्धा दु पच्चया संति सम्मदिट्ठिस्स ।
उवओगप्पाओगं बंधते कम्मभावेण ।।१७३।।

संता दु णिरुवभोज्जा बाला इत्थी जहेव पुरिसस्स ।
बधंति ते उवभोज्जे तरुणी इत्थी जह णरस्स ।।१७४।।

होदूण णिरुवभोज्जा तह बंधदि जह हवंति उवभोज्जा ।
सत्तट्ठविहा भूदा णाणावरणादिभावेहिं ।।१७५।।

एदेण कारणेण दु सम्मादिट्ठि अबंधगो भणिदो ।
आसवभावाभावे ण पच्चया बंधगा भणिदा ।।१७६।।

रागो दोसो मोहो य आ ा णत्थि सम्मदिट्ठिस्स ।
तम्हा आसवभावेण विणा हेदू ण पच्चया होंति ।।१७७।।

हेदू चदुव्वियप्पो अट्ठवियपप्पस्स कारणं हवदि ।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंति ।।१७८।।

जह पुरिसेणाहारो गहिदो परिणमदि सो अणेयविहं ।
मंसवसारुहिरादी भावे उदरग्गिसंजुत्तो ।।१७९।।

तह णाणिस्स दु पुव्वं जे बद्धा पच्चया बहुवियप्पं ।
बज्झंते कम्मं ते णयपरिहीणा दु ते जीवा ।।१८०।।

र धि ार

उवओगे उवओगो कोहादिसु णत्थि को वि उवओगो ।
कोहो कोहे चेव हि उवओगे णत्थि खलु कोहो ।।१८१।।

अट्ठवियप्पे कम्मे णोकम्मे चावि णत्थि उवओगो ।
उवओगम्हि य कम्मं णोकम्मं चावि णो अत्थि ।।१८२।।

एदं तु अविवरीद णाणं जइया दु होदि जीवस्स ।
तइया ण किंचि कुव्वदि भावं उवओगसुद्धप्पा ।।१८३।।

जह कणयमग्गितवियं पि कणयसहावं ण तं परिच्चयदि ।
तह कम्मोदयतविदो ण जहदि णाणी दु णाणित्त ।।१८४।।

एवं जाणदि णाणी अण्णाणी मुणदि रागमेवादं ।
अण्णाणतमोच्छण्णं आदसहावं अयाणंतो ॥१८५॥
सुद्धं तु वियाणंतो विसुद्धमेवप्पयं लहदि जीवो ।
जाणंतो दु असुद्धं असुद्धमेवप्पयं लहदि ॥१८६॥
अप्पाणमप्पणा रुंधिदूण दो पुण्ण पावजोगेसु ।
दंसणणाणम्हि ठिदो इच्छाविरदो य अण्णम्हि ॥१८७॥
जो सव्वसंगमुक्को झायदि अप्पाणमप्पणा अप्पा ।
ण वि कम्म णोकम्मं चेदा चिन्तेदि एयत्त ॥१८८॥
अप्पाणं झायंतो दंसणणाणमइओ अणण्णमओ ।
लहदि अचिरेण अप्पाणमेव सो कम्मविमुक्कं ॥१८९॥
तेसिं हेदु भणिदा अज्झवसाणाणि सव्वदरिसीहि ।
मिच्छत्तं अण्णाण अविरदिभावो य जोगो य ॥१९०॥
हेदुअभावे णियमा जायदि णाणिस्स आसवणिरोहो ।
आसवभावेण विणा जायदि कम्मस्स दु णिरोहो ॥१९१॥
कम्मस्साभावेण य णोकम्माणं पि जायदि णिरोहो ।
णोकम्मणिरोहेण य ससारणिरोहण होदि ॥१९२॥

———

नि ंरा ि ार

उवभोगमिन्दियेहिं दव्वाणमचेदणाणमिदराणं ।
जं कुणदि सम्मदिट्ठी तं सव्वं णिज्जरणिमित्तं ॥१९३॥
दव्वे उवभुज्जंते णियमा जायदि सुहं च दुक्खं वा ।
तं सुह‿ मुदिण्णं वेददि अध णिज्जरं जादि ॥१९४॥
जह विसमुवभुज्जन्तो वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि ।
पोग्गलकम्मस्सुदय तह भुञ्जदि णेव बज्झदे णाणी ॥१९५॥

जह मज्जं पिवमाणो अरदिभावेण ण मज्जदे पुरिसो ।
दव्वुवभोगे अरदो णाणी वि ण बज्झदे तहेण ।।१९६।।

सेवंतो वि ण सेवदि असेवमाणो वि सेवगो को वि ।
पगरण चेट्ठा कस्स वि ण य पायरणो त्ति सो होदि ।।१९७।।

उदयविवागो विविहो कम्माणं वण्णिदो जिणवरेहिं ।
ण दु ते मज्झ सहावा जाणभावो दु अहमेक्को ।।१९८।।

पोग्गलकम्मं रागो तस्स विवागोदओ हवदि एसो ।
ण दु एस मज्झ भावो जाणगभावो दु अहमेक्को ।।१९९।।

एवं सम्मादिट्ठी अप्पाणं मुणदि जाणगसहावं ।
उदयं कम्मविवागं च मुयदि तच्चं वियाणंतो ।।२००।।

परमाणुमेत्तयं पि हु रागादीणं तु विज्जदे जस्स ।
ण वि सो जाणदि अप्पाणयं तु सव्वागमधरो वि ।।२०१।।

अप्पाणमयाणंतो अणप्पयं चावि सो अयाणंतो ।
किह होदि सम्मदिट्ठी जीवाजीवे अयाणंतो ।।२०२।।

आदम्हि दव्वभावे अपदे मोत्तूण गिण्ह तह णियदं ।
थिरमेगमिमं भावं उवलब्भंतं सहावेण ।।२०३।।

आभिणिसुदोहिमणकेवलं च तं होदि एक्कमेव पदं ।
सो एसो परमट्ठो जं लहिदुं णिव्वुदिं जादि ।।२०४।।

णाण गुणेण विहीणा एदं तु पदं बहु वि ण लहंते ।
त गिण्ह णियदमेदं जदि इच्छसि कम्मपरिमोक्खं ।।२०५।।

एदम्हि रदो णिच्चं संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि ।
एदेण होहि तित्तो होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं ।।२०६।।

को णाम भणेज्ज बुहो परदव्वं मम इदं हवदि दव्वं ।
अप्पाणमप्पणो परिगहं तु णियदं वियाणंतो ।।२०७।।

मज्झं परिग्गहो जदि तदो अहमजीवदं तु गच्छेज्ज ।
णादेव अहं जम्हा तम्हा ण परिग्गहो मज्झं ॥२०८॥

छिज्जदु वा भिज्जदु वा णिज्जदु वा अहव जादु विप्पलयं ।
जम्हा तम्हा गच्छदु तहावि ण परिग्गहो मज्झं ॥२०९॥

अपरिग्गहो अणिच्छो भणादि णाणी य णेच्छदे धम्मं ।
अपरिग्गहो दु धम्मस्स जाणगो तेण सो होदि ॥२१०॥

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो णाणी य णेच्चदि * धम्मं ।
अपरिग्गहो * धम्मस्स जाणगो जेण सो होदि ॥२११॥

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो असणं च णेच्छदे णाणी ।
अपरिग्गहो दु असणस्स जाणगो तेण सो होदि ॥२१२॥

अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो पाणं च णेच्छदे णाणी ।
अपरिग्गहो दु णाणस्स जाणगो तेण सो होदि ॥२१३॥

एमादिए दु विविहे सव्वे भावे य णेच्छदे णाणी ।
जाणगभावो णियदो णिरालंबो दु सव्वत्थ ॥२१४॥

उप्पाण्णोदयभोगो वियोगबुद्धिए तस्स सो णिच्चं ।
कखामणागदस्स य उदयस्स ण कुव्वदे णाणी ॥२१५॥

जो वेददि वेदिज्जदि समये समये विणस्सदे उहयं ।
तं जाणगो दु णाणी उहयं पि ण कंखदि कयावि ॥२१६॥

बधुवभोगणिमित्ते अज्झवसाणोदयेसे णाणिस्स ।
संसारदेहविसयेसु णेव उप्पज्जदे रागो ॥२१७॥

णाणी रागप्पजहो हि सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो ।
णो लिप्पदि रजएण दु कद्दममज्झे जहा कणयं ॥२१८॥

अण्णाणी पुण रत्तो हि सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो ।
लिप्पदि कम्मरयेण दु कद्दममज्झे जहा लोहं ॥२१९॥

भुञ्जंतस्स वि विविहे सच्चित्ताचित्तमिस्सिए दव्वे ।
संखस्स सेदभावो ण वि सक्कदि किण्हगो कादुं ।।२२०।।

तह णाणिस्स दु विविहे सच्चित्ताचित्तमिस्सए दव्वे ।
भुञ्जंतस्स वि णाणं ण सक्कमण्णाणदं णेदुं ।।२२१।।

जइया स एव संखो सेदसहावं सयं पजहिदूण ।
गच्छेज्ज किण्हभावं तइया सुक्कत्तणं पजहे ।।२२२।।

तह णाणी वि हु जइया णाणसहावं तयं पजहिदूण ।
अण्णाणेण परिणदो तइया अण्णाणदं गच्छे ।।२२३।।

पुरिसो जह को वि इहं वित्तिणिमित्तं तु सेवदे रायं ।
तो सो वि देदि राया विविहे भोगे सुहुप्पादे ।।२२४।।

एमेव जीवपुरिसो कम्मरयं सेवदे सुहणिमित्तं ।
तो सो वि देदि कम्मो विविहे भोगे सुहुप्पादे ।।२२५।।

जह पुण सो च्चिय पुरिसो वित्तिणिमित्तं ण सेवदे रायं ।
तो सो ण देदि राया विविहे भोगे सुहुप्पादे ।।२२६।।

एमेव सम्मदिट्ठी विसयत्थं सेवदे ण कम्मरयं ।
तो सो ण देहि कम्मो विविहे भोगे सुहुप्पादे ।।२२७।।

सम्मादिट्ठी जीवा णिस्संका होंति णिब्भया तेण ।
सत्तभयविप्पमुक्का जम्हा तम्हा दु णिस्संका ।।२२८।।

जो चत्तारि वि पाये छिंददि ते कम्मबंधमोहकरे ।
सो णिस्संको चेदा सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ।।२२९।।

जो दु ण करेदि कंखं कम्मफले तह सव्वधम्मेसु ।
सो णिक्कंखो चेदा सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ।।२३०।।

जो ण करेदि दुगुच्छं चेदा सव्वेसिमेव धम्माणं ।
सो खलु णिव्विदिगिञ्छो सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ।।२३१।।

जो हवदि असम्मूढो चेदा सद्दिट्ठि सव्वभावेसु ।
सो खलु अमूढदिट्ठी सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥२३२॥
जो सिद्धभत्तिजुत्तो उवगूहणगो दु सव्वधम्माणं ।
सो उवगूहणकारी सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥२३३॥
उम्मग्गं गच्छंतं संग पि मग्गे ठवेदि जो चेदा ।
सो ठिदिकरणाजुत्तो सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥२३४॥
जो कुणदि वच्छलत्तं तिण्हं साहूण मोक्खमग्गम्मि ।
सो वच्छलभावजुदो सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥२३५॥
विज्जारहमारुढो मणोरहपहेसु भमइ जो चेदा ।
जो जिणणाणपहावी सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥२३६॥

ि ार

जह णाम को वि पुरिसो णेहब्भत्तो दु रेणुबहुलम्मि ।
ठाणम्मि ठाइदूण य करेहि सत्थेहिं वायामं ॥२३७॥
छिंददि भिंददि य तहा तालीतलकयलि पिंडीओ ।
सच्चित्ताचित्ताणं करेदि दव्वाणमुवघादं ॥२३८॥
उवघादं कुव्वंतस्स तस्स णाणाविहेहि करणेहिं ।
णिच्छयदो चिंत्तोज्ज हु किंपच्चयगो दु रयबंधो ॥२३९॥
जो सो दु णेहभावो तम्हि णरे तेण तस्स रयबंधो ।
णिच्छयदो विण्णेयं ण कायचेट्ठाहि सेसाहिं ॥२४०॥
एवं मिच्छादिट्ठी वट्टंतो बहुविहासु चिट्ठासु ।
रायादि उवओगे कुव्वंतो लिप्पदि रयेण ॥२४१॥

जह पुण सो चेव णरो णेहे सव्वम्हि अवणिय संते ।
रेणुबहुलम्मि ठाणे करेदि सत्थेहि वायामं ।।२४२।।

छिददि भिददि य तहा तालीतलकयलिवसपिडीओ ।
सच्चित्ताचित्ताणं करेदि दव्वाणमुवघादं ।।२४३।।

उवघादं कुव्वंतस्स तस्स णाणाविहेहि करणेहि ।
णिच्छयदो चिंतेज्ज दु किं पच्चयगो ण रयबंधो ।।२४४।।

जो सो दु णेहभावो तम्हि णरे तेण तस्स रयबंधो ।
णिच्छयदो विण्णेयं ण कायचेट्ठाहि सेसाहिं ।।२४५।।

एवं सम्मादिट्ठी वट्टंतो बहुविहेसु जोगेसु ।
अकरंतो उवओगे रागादी ण लिप्पदि रयेण ।।२४६।।

जो मण्णादि हिंसामि य हिंसिज्जामि य परेहिं सत्तेहिं ।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो ।।२४७।।

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं ।
आउं च ण हरसि तुमं कह ते मरणं कदं तेसिं ।।२४८।।

आउक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं ।
आउं ण हरंति तुहं किह ते मरणं कदं तेहिं ।।२४९।।

जो मण्णदि जीवेमि य जीविस्जामि य परेहिं सत्तेहिं ।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो ।।२५०।।

आउउदयेण जीवदि जीवो एवं भणंति सव्वण्हू ।
आउं च ण देसि तुमं कहं तए जीविदं कदं तेसिं ।।२५१।।

आउउदयेण जीवदि जीवो एवं भणंति सव्वण्हू ।
आउं ण दिंति तुहं कहं णु ते जीविदं कदं तेहिं ।।२५२।।

जो अप्पणा दु मण्णदि दुक्खिदसुहिदे करेमि सत्ते त्ति ।
सो मूढो अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीदो ।।२५३।।

कम्मोदयेण जीवा दुक्खिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे ।
कम्मं च ण देसि तुमं दुक्खिदसुहिदा कह कया ते ॥२५४॥

कम्मोदयेण जीवा दुक्खिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे ।
कम्मं च ण दिंति तुमं कदोसि किह दुक्खिदो तेहिं ॥२५५॥

कम्मोदयेण जीवा दुक्खिदसुहिदा हवंति जदि सव्वे ।
कम्मं च ण दिंति तुम किह सं सुहिदो कदो तेहिं ॥२५६॥

जो मरदि जो य दुहिदो जायदि कम्मोदयेण सो सव्वो ।
तम्हा दु महिदो दे दुहाविदो चेदि ण हु मिच्छा ॥२५७॥

जो ण मरदि ण य दुहिदो सो वि य कम्मोदयेण खलु जीवो ।
तम्हा ण मारिदो णो दुहाविदो चेदि ण हु मिच्छा ॥२५८॥

एसा दु जा मदी दे दुक्खिदसुहिदे करेमि सत्तेत्ति ।
एसा दे मूढमढी सुहासुहं बधदे कम्मं ॥२५९॥

दुक्खिदसुहिदे सत्ते करेमि जं एवमज्झवसिदं ते ।
तं पावबंधगं वा पुण्णस्स वा बंधगं होदि ॥२६०॥

मारिमि जीवावेमि य सत्तो जं एवमज्झवसिदं ते ।
तं पावबधगं वा पुण्णस्स व बंधगं होदि ॥२६१॥

अज्झवसिदेण बधो सत्तो मारेहि मा व मारेहि ।
एसो बंधसमासो जीवाणं णिच्छयणयस्य ॥२६२॥

एवमलिये अदत्ते अबंभचेरे परिग्गहे चेव ।
कीरदि अज्झवसाणं जं तेण दु बज्झदे पावं ॥२६३॥

तह वि य सच्चे दत्ते बम्हे अपग्गिहत्तणे चेव ।
कीरदि अज्झवसाणं जं तेण दु बज्झदे पुण्णं ॥२६४॥

वत्थुं पडुच्च त पुण अज्झवसाणं तु होदि जीवाणं ।
ण हि वत्थुदो दु बंधो अज्झवसाणेण बंधोत्थि ॥२६५॥

दुक्खिदसुहिदे जीवे करेमि बंधेमि तह विमोचेमि ।
जा एसा मूढमदी णिरत्थया सा हु दे मिच्छा ।।२६६।।

अज्झवसाणणिमित्तं जीवा बज्झंति कम्मणा जदि हि ।
मुच्चंति मोक्खमग्गे ठिदा य ता किं करेसि तुमं ।।२६७।।

सव्वे करेदि जीवो अज्झवसाणेण तिरियणेरइये ।
देवमणुवे य सव्वे पुण्णं पावं अणेयविहं ।।२६८।।

धम्माधम्मं च तहा जीवाजीवे अलोगलोगं च।
सव्वे करेदि जीवो अज्झवसाणेण अप्पाणं ।।२६९।।

एदाणि णत्थि जेसिं अज्झवसाणाणि एवमादीणि ।
ते असुहेण सुहेण य कम्मेण मुणी ण लिप्पंति ।।२७०।।

बुद्धी ववसाओ वि य अज्झवसाणं मदी य विण्णाणं ।
एक्कट्ठमेव सव्वं चित्तं भावो य परिणामो ।।२७१।।

एवं ववहारणओ पडिसिद्धो जाण णिच्छयणयेण ।
णिच्छयणयासिदा पुण मुणिणो पावंति णिव्वाणं ।।१७२।।

वदसमिदीगुत्तीओ सीलतवं जिणवरेहि पण्णत्तं ।
कुव्वंतो वि अभव्वो अण्णाणी मिच्छदिट्ठी दु ।।२७३।।

मोक्खं असद्दहंतो अभवियसत्तो दु जो अधीयेज्ज ।
पाठो ण करेदि गुणं असद्दहंतस्स णाणं तु ।।२७४।।

सद्दहदि य पत्तेदि य रोचेदि य तह पुणो वि फासेदि य ।
धम्मं भोगणिमित्तं ण हु सो कम्मक्खयणिमित्तं ।।२७५।।

आयारादी णाणं जीवादि दंसणं च विण्णेयं ।
छज्जीवणिकं च तहा भणदि चरित्तं तु ववहारो ।।२७६।।

आदा खु मज्झ णाणं आदा मे दंसणं चरित्रं च ।
आदा पच्चक्खाणं आदा मे संवरो जोगो ।।२७७।।

जह फलिहमणि विशुद्धो ण सयं परिणमदि रागमादीहिं ।
राइज्जदि अण्णेहिं दु सो रत्तादीहिं दव्वेहिं ।।१७८।।

एव णाणी सुद्धो ण सयं परिणमदि रागमादीहि ।
राइज्जदि अण्णेहि दु सो रत्तादीहिं दोसेहिं ।।२७९।।

ण वि रागदोसमोहं कुव्वदि णाणी कसायभावं वा ।
सयमप्पणो ण सो तेण कारगो तेसि भावाणं ।।१८०।।

रागम्हि य दोसम्हिय कसायकम्मेसु चेव जे भावा ।
तेहिं तु परिणमंतो रागादी बंधदि पुणो वि ।।२८१।।

रागम्हि य दोसम्हि य कसायकम्मेसु चेव जे भावा ।
तेहिं दु परिणमंतो रागादी बंधदे चेदा ।।२८२।।

अप्पडिकमण दुविहं अपच्चक्खाणं तहेव विण्णेयं ।
एदेणुवदेसेण दु अकारगो वण्णिदो चेदा ।।२८३।।

अप्पडिकमणं दुविहं दव्वे भावे अपच्चक्खाणं पि ।
एदेणुवदेसेण दु अकारगो वण्णिदो चेदा ।।२८४।।

जावं अप्पडिकमणं अपच्चक्खाणं च दव्वभावाणं ।
कुव्वदि आदा ताव कत्ता सो होदि णादव्वो ।।२८५।।

आधाकम्मादीया पोग्गलदव्वस्स जे इमे दोसा ।
किह ते कुव्वदि णाणी परदव्वगुणा दु जे णिच्चं ।।२८६।।

आधाकम्मं उद्देसियं च पोग्गलमयं इमं दव्वं ।
किह तं मम होदि कदं जं णिच्चमचेदण वुत्तं ।।२८७।।

ो ि ार

जह णाम को वि पुरिसो बंधणयम्हि चिरकालपडिबद्धो ।
तिव्वं मंदसहावं कालं च वियाणदे तस्स ॥२८८॥

जदि ण वि कुव्वदि छेदं ण मुच्चदे तेण बंधणवसो सं ।
कालेण दु बहुगेण वि ण सो णरो पावदि विमोक्खं ॥२८९॥

इय कम्मबंधणाणं पदेसपयडिट्ठिदीयअणुभागं ।
जाणंतो वि ण मुच्चदि मुच्चदि सो चेव जदि सुद्धो ॥२९०॥

जह बंधे चिंतंतो बंधणबद्धो ण पावदि वि ोक्खं ।
तह बंधे चिंतंतो जीवो वि ण पावदि विमोक्खं ॥२९१॥

जह बंधे छेत्तूण य बंधणबद्धो दु पावदि विमोक्खं ।
तह बधे छेत्तूण य जीवो संपावदि विमोक्खं ॥२९२॥

बंधाणं च सहावं वियाणिदु अप्पणो सहावं च ।
बंधेसु जो विरज्जदि सो कम्मविमोक्खणं कुणदि ॥२९३॥

जीवो बंधो य तहा छिज्जंति सलक्खणेहिं णियदेहिं ।
पण्णाछेदणएण दु छिण्णा णाणत्तमावण्णा ॥२९४॥

जीवो बंधो य तहा छिज्जंति सलक्खणेहिं णियदेहिं ।
बंधो छेदेदव्वो सुद्धो अप्पा य घेत्तव्वो ॥२९५॥

किह सो घिप्पदि अप्पा पण्णाए सो दु घिप्पदे अप्पा ।
जह पण्णाइ विभत्तो तह पण्णाएव घेत्तव्वो ॥२९६॥

पण्णाए घेत्तव्वो जो चेदा सो अहं तु णिच्छयदो ।
अवसेसा जे भावा ते मज्झ परे त्ति णादव्वा ॥२९७॥

पण्णाए घेत्तव्वो जो दट्ठा सो अहं तु णिच्छयदो ।
अवसेसा जे भावा ते मज्झ परे त्ति णादव्वा ॥२९८॥

पण्णाए घेत्तव्वो जो णादा सो श्रहं तु णिच्छयदो ।
श्रवसेसा जे भावा तु मज्झ परे त्ति णादव्वा ।।२९९।।

को णाम भणिज्ज बुहो णादुं सव्वे पराइए भावे ।
मज्झमिणं ति य वयणं जाणंतो श्रप्पयं सुद्धं ।।३००।।

थेयादी श्रवराहे कुव्वदि सो ससंकिनो होदि ।
मा बज्झेज्जं केण वि चोरो त्ति जणम्हि वियरंतो ।।३०१।।

जो ण कुणदि श्रवराहे सो णिस्संको दु जणवदे भमदि ।
ण वि तस्स बज्झिदुं जे चिंता उप्पज्जदि कयावि ।।३०२।।

एवंहि सावराहो बज्झामि श्रहं तु संकिदो चेदा ।
जइ पुण णिरावराहो णिस्संकोहं ण बज्झामि ।।३०३।।

संसिद्धिराधसिद्धं साधियमाराधियं च एयट्ठं ।
श्रवगदराधो जो खलु चेदा सो होदि श्रवराधो ।।३०४।।

जो पुण णिरावराधो चेदा णिस्संकिदो दु सो होदि ।
श्राराहणाइ णिच्चं वट्टेदि श्रहमिदि वियाणंतो ।।३०५।।

पडिकमणं पडिसरणं पडिहारो धारणा णियत्ती य ।
णिंदा गरहा सोही श्रट्ठविहो होदि विसकुंभो ।।३०६।।

श्रप्पडिकमण मप्पडिसरणंश्रप्परिहारो श्रधारणा चेव ।
श्रणियत्ती य श्रणिंदागरहासोही श्रमयकुंभो ।।३०७।।

विशुद्ध ान धि ार

दवियं जं उप्पज्जदि गुणेहिं तं तेहि जाणसु श्रणण्णं ।
जह कडयादीहिं दु पज्जएहिं कणयं श्रणण्णमिह ।।३०८।।

जीवस्साजीवस्स दु जे परिणामा दु देसिदा सुत्ते ।
तं जीवमजीवं वा तेहिमणण्णं वियाणेहि ।।३०९।।

ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो आदा ।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि ॥३१०॥

कम्मं पडुच्च कत्ता कत्तारं तह पडुच्च कम्माणि ।
उप्पज्जंति यणियमा सिद्धी दु ण दीसदे अण्णा ॥३११॥

चेदा दु पयडीअट्ठं उप्पज्जदि विणस्सदि ।
पयडी वि चेदयट्ठं उप्पज्जदि विणस्सदि ॥३१२॥

एवं बंधो उ दोण्हं पि अण्णोण्णप्पच्चया हवे ।
अप्पणो पयडीए य संसारो तेण जायदे ॥३१३॥

जा एस पयडीअट्ठं चेदाणेव विमुञ्चदि ।
अयाणयो हवे तावं मिच्छादिट्ठी जदो ॥३१४॥

जदा विमुञ्चदे चेदा कम्फलमणंतयं ।
तदा विमुत्तो हवदि जाणगो पस्सगो मुणी ॥३१५॥

अण्णाणी कम्मफलं पयडिसहावट्ठिदो दु वेदेदि ।
णाणी पुण कम्मफलं जाणदि उदिदं ण वेदेदि ॥३१६॥

ण मुयदि पयडिमभव्वो सुट्ठु वि अज्झाइदूण सत्थाणि ।
गुडदुद्धं पि पिबंता ण पण्णया णिव्विसा होंति ॥३१७॥

णिव्वेयसमावण्णो णाणी कम्मप्फलं वियाणादि ।
महुरं कडुयं बहुविहमवेदगो तेण सो होदि ॥३१८॥

ण वि कुव्वदि ण वि वेददि णाणी कम्माइं बहुपयाराइं ।
जाणदि पुण कम्मफलं बंधं पुण्णं च पावं च ॥३१९॥

दिट्ठी जहेव णाणं अकारयं तह अवेदयं चेव ।
जाणदि य बंधमोक्खं कम्मुदयं णिज्जरं चेव ॥३२०॥

लोयस्स कुणदि विण्हू सुरणारयतिरियमाणुसे सत्ते ।
समणाणं पि य अप्पा जदि कुव्वदि छव्विहे काए ॥३२१॥

लोगसमणाणमेयं सिद्धंतं जइ ण दीस्सदि विसेसो ।
लोगस्स कुणदि विण्हू समणाण वि अप्पओ कुणदि ॥३२२॥

एवं ण को वि मोक्खो दीसदि लोयसमणाणं दोण्हं पि ।
णिच्चं कुव्वंताणं सदेवमणुयासुरे लोए ॥३२३॥

ववहारभासिदेण दु परदव्वं मम भणंति अविदिदत्था ।
जाणंति णिच्छएण दु ण य मह परमाणुमित्तमवि किंचि ॥३२४॥

जह को वि णरो जपंदि अम्हंगामविसयणयररट्ठं ।
ण य होंति तस्स ताणि दु भणदि य मोहेण सो अप्पा ॥३२५॥

एमेव मिच्छदिट्ठी णाणी णीस्संसयं हवदि एसो ।
जो परदव्वं मम इदि जाणंतो अप्पयं कुणदि ॥३२६॥

तम्हा ण मे त्ति णच्चा दोण्हं विएदाण कत्तविवसायं ।
परदव्वे जाणंतो जाणेज्जो दिट्ठिरहिदाणं ॥३२७॥

मिच्छत्तं जदि पयडी मिच्छादिट्ठी करेदि अप्पाणं ।
तम्हा अचेदणा ते पयडी णणु कारगो पत्तो ॥३२८॥

अहवा एसो जीवो पोग्गलदव्वस्स कुणदि मिच्छत्तं ।
तम्हा पोग्गलदव्वं मिच्छादिट्ठी ण पुण जीवो ॥३२९॥

अह जीवो पयडी तह पोग्गलदव्व करेदि मिच्छत्तं ।
तम्हा दोहिं कदं तं दोण्णि वि भुंजति तस्स फलं ॥३३०॥

अह ण पयडी ण जीवो पोग्गलदव्वं करेदि मिच्छत्तं ।
तम्हा पोग्गलदव्वं मिच्छत्तं तं तु ण हु मिच्छा ॥३३१॥

कम्मेहिं दु अण्णाणी किज्जदि णाणी तहेव कम्मेहिं ।
कम्मेहिं सुहाविज्जदि जग्गाविज्जदि तहेव कम्मेहिं ॥३३२॥

कम्मेहिं सुवाविज्जवि दुक्खाविज्जदि तहेव कम्मेहिं ।
कम्मेहिं य मिच्छत्तं णिज्जदि असंजमं चेव ॥३३३॥

कम्मेहि भमाडिज्जदि उड्ढमहो चावि तिरियलोयं च ।
कम्मेहि चेव किज्जदि सुहासुहं जेत्तियं किंच ॥३३४॥

जम्हा कम्मं कुव्वदि कम्मं देदि हरदि त्ति जं किंचि ।
तम्हा उ सव्वेजीवा अकारगा होंति आवण्णा ॥३३५॥

पुरिसित्थियाहिलासी इत्थीकम्मं च पुरिसमहिलसदि ।
एसा आयरियपरंपरागदा एरिसी दु सुदी ॥३३६॥

तम्हा ण को वि जीवो अबंभचारी दु अम्ह उवदेसे ।
जम्हा कम्मं चेव हि कम्मं अहिलसदि इदि भणिदं ॥३३७॥

जम्हा घादेदि परं परेण घादिज्जदे य सा पयडी ।
एदेणत्थेण किर भण्णदि परघादणामेत्ति ॥३३८॥

तम्हा ण को वि जीवो वघादओ अत्थि अम्ह उवदेसे ।
जम्हा कम्मं चेव हि कम्मं घादेदि इदि भणिदं ॥३३९॥

एवं संखुवदेसं जे दु परुवेंति एरिसं समणा ।
तेसिं पयडी कुव्वदि अप्पा य अकारगा सव्वे ॥३४०॥

अहवा मण्णसि मज्झं अप्पा अप्पाणमप्पणो कुणदि ।
एसो मिच्छसहावो तुम्ह एयं मुणंतस्स ॥३४१॥

अप्पा णिच्चोऽसंखेज्जपदेसो देसिदो दु समयम्हि ।
ण वि सो सक्कदि तत्तो हीणो अहिओ य कादुं जे ॥३४२॥

जीवस्स जीवरूवं वित्थरदो जाण लोगमेत्तं खु ।
तत्तो सो किं हीणो अहिओ य कहं भणदि दव्वं ॥३४३॥

अह जाणगो दु भावो णाणसहावेण अच्छिइ दे त्ति मदं ।
तम्हा ण वि अप्पा अप्पयं तु सयमप्पणो कुणदि ॥३४४॥

केहिंचि दु पज्जएहिं विणस्सए णेव केहिं चि दु जीवो ।
जम्हा तम्हा कुव्वदि सो वा अण्णो व णेयंतो ॥३४

केहिचि दु पज्जएहि विरणस्सए णेव केहिचि दु जीवो ।
जम्हा तम्हा वेददि सो वा अण्णो व णेयंतो ॥३४६॥

जो चेव कुणदि सो चिय ण वेदगो जस्स एस सिद्धंतो ।
सो जीवो णादव्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो ॥३४७॥

अण्णो करेदि अण्णो परिभुंजदि जस्स एस सिद्धंतो ।
सो जीवो णादव्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो ॥३४८॥

जह सिप्पिओ दु कम्मं कुव्वदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो वि य कम्मं कुव्वदि ण य तम्मओ होदि ॥३४९॥

जह सिप्पिओ दु करणेहिं कुव्वदि ण सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो करणेहिं कुव्वदि ण य तम्मओ होदि ॥३५०॥

जह सिप्पिओ दु करणाणि गिण्हदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
जह जीवो करणाणि य गिण्हदि ण य तम्मओ होदि ॥३५१॥

जह सिप्पिओ दु कम्मफलं भुंजदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो कम्मफलं भुंजदि ण य तम्मओ होदि ॥३५२॥

एवं ववहारस्स दु वत्तव्वं दरिसणं समासेण ।
सुणु णिच्छयस्स वयणं परिणामकदं तु जं होदि ॥३५३॥

जह सिप्पिओ दु चेट्ठं कुव्वदि हवदि य तहा अणण्णो से ।
तह जीवो वि य कम्मं कुव्वदि हवदि य अणण्णो से ॥३५४॥

जह चेट्ठं कुव्वंतो दु सिप्पिओ णिच्चदुक्खिदो होदि ।
तत्तो सिया अणण्णो तह चेट्ठंतो दुही जीवो ॥३५५॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह जाणगो दु ण परस्स जाणगो जाणगो सो दु ॥३५६॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह गो दु ण परस्स पासगो पासगो सो दु ॥३५७॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह संजदो दु ण परस्स संजदो संजदो सो दु ।।३५८।।

जह सेडिया दु रण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह दंसरणं दु रण परस्स दंसरणं दंसरणं त तु ।।३५९।।

एवं तु रिणच्छयरणयस्स भारि ' रणारणदंसरण चरित्ते ।
सुणु ववहाररणयस्स य वत्तव्वं से समासेण ।।३६०।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं जाणदि रणादा वि सएण भावेण ।।३६१।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं पस्सदि जीवो वि सएण भावेण ।।३६२।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं विजहदि णादा वि सएण भावेण ।।३६३।।

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं सद्दहदि सम्मदिट्ठी सहावेण ।।३६४।।

एवं ववहारस्स दु विरिणच्छओ रणारणदंसणचरित्ते ।
भणिदो अण्णेसु वि पज्जएसु एमेव णादव्वो ।।३६५।।

दसंणरणारणचरित्तं किंचि वि रणत्थि दु अचेदणे विसए ।
तम्हा किं घादयदे चदेयिदा तेसु विसएसु ।।३६६।।

दंसरणरणारणचरितं किंचि वि रणत्थि दु अचेदणे कम्मे ।
तम्हा किं घादयदे चेदयिदा तम्हि कम्मम्हि ।।३६७।।

दंसरणरणाणचरित्तं किंचि वि रणत्थि दु अचेदणे काये ।
तम्हा किं घादयदे चेदयिदा तेसु कायेसु ।।३६८।।

णारणस्स दंसरणस्स य भणिदो घादो तहा चरित्तस्स ।
रण वि तम्हि को वि पोग्गलदव्वे घादो दु रिणद्दिट्ठो ।।३६९।।

जीवस्स जे गुणा केई णत्थि ते खलु परेसु दव्वेसु ।
तम्हा सम्मादिट्ठिस्स णत्थि रागो दु विसएसु ॥३७०॥
रागो दोसो मोहो जीवस्सेव य अणण्णपरिणामा ।
एदेण कारणेण दु सद्दादिसु णत्थि रागादी ॥३७१॥
अण्णदवियेण अण्णदवियस्स णो कीरदे गुणुप्पाओ ।
तम्हा दु सव्वदव्वा उप्पज्जंते सहावेण ॥३७२॥
णिंदिदसंथुदवयणाणि पोग्गला परिणमंति बहुगाणि ।
ताणि सुणिदूण रूसदि तूसदि य पुणो अहं भणिदो ॥३७३॥
पोग्गलदव्वं सद्दत्तपरिणदं तस्स जदि गुणो अण्णो ।
तम्हा ण तुमं भणिदो किंचि वि किं रूससि अबुद्धो ॥३७४॥
असुहो सुहो व सद्दो ण तं भणदि सुणसु मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं सोदविसयमागदं सद्दं ॥३७५॥
असुहं सुहं व रुवं ण तं भणदि पेच्छ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं चक्खुविसयमागदं रुवं ॥३७६॥
असुहो सुहो गंधो ण तं भणदि जिग्घ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं घाणविसयमागदं गंधं ॥३७७॥
असुहो सुहो व रसो ण तं भणदि रसय मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं रसणविसयमागदं तु रसं ॥३७८॥
असुहो सुहो व फासो ण तं भणदि फास मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं कायविसयमागदं फासं ॥३७९॥
असुहो सुहो व गुणो ण तं भणदि बुज्झ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं बुद्धिविसयमागदं तु गुणं ॥३८०॥
असुहं सुहं व दव्वं ण तं भणदि बुज्झ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं बुद्धिविसयमागदं दव्वं ॥३८१॥
एवं तु जाणिऊण उवसमं णेव गच्छदे मूढो ।
णिग्गहमणा परस्स य सयं च बुद्धिं सिवमपत्तो ॥३८२॥

केहिंचि दु पज्जएहिं विणस्सए णेव केहिंचि दु जीवो ।
जम्हा तम्हा वेददि सो वा अण्णो व णेयंतो ॥३४६॥

जो चेव कुणदि सो चिय ण वेदगो जस्स एस सिद्धंतो ।
सो जीवो णादव्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो ॥३४७॥

अण्णो करेदि अण्णो परिभुंजदि जस्स एस सिद्धंतो ।
सो जीवो णादव्वो मिच्छादिट्ठी अणारिहदो ॥३४८॥

जह सिप्पिओ दु कम्मं कुव्वदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो वि य कम्मं कुव्वदि ण य तम्मओ होदि ॥३४९॥

जह सिप्पिओ दु करणेहिं कुव्वदि ण सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो करणेहिं कुव्वदि ण य तम्मओ होदि ॥३५०॥

जह सिप्पिओ दु करणाणि गिण्हदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
जह जीवो करणाणि य गिण्हदि ण य तम्मओ होदि ॥३५१॥

जह सिप्पिओ दु कम्मफलं भुंजदि ण य सो दु तम्मओ होदि ।
तह जीवो कम्मफलं भुंजदि ण य तम्मओ होदि ॥३५२॥

एवं ववहारस्स दु वत्तव्वं दरिसणं समासेण ।
सुणु णिच्छयस्स वयण परिणामकदं तु जं होदि ॥३५३॥

जह सिप्पिओ दु चेट्ठं कुव्वदि हवदि य तहा अणण्णो से ।
तह जीवो वि य कम्मं कुव्वदि हवदि य अणण्णो से ॥३५४॥

जह चेट्ठं कुव्वंतो दु सिप्पिओ णिच्चदुक्खिदो होदि ।
तत्तो सिया अणण्णो तह चेट्ठंतो दुही जीवो ॥३५५॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह जाणगो दु ण परस्स जाणगो जाणगो सो दु ॥३५६॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह पासगो दु ण परस्स पासगो पासगो सो दु ॥३५७॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह संजदो दु ण परस्स संजदो संजदो सो दु ॥३५८॥

जह सेडिया दु ण परस्स सेडिया सेडिया य सा होदि ।
तह दंसणं दु ण परस्स दंसणं दंसणं त तु ॥३५९॥

एवं तु णिच्छयणयस्स भासि णाणदंसणचरित्ते ।
सुणु ववहारणय य वत्तव्वं से समासेण ॥३६०॥

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं जाणदि णादा वि सएण भावेण ॥३६१॥

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं पस्सदि जीवो वि सएण भावेण ॥३६२॥

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं विजहदि णादा वि सएण भावेण ॥३६३॥

जह परदव्वं सेडदि हु सेडिया अप्पणो सहावेण ।
तह परदव्वं सद्दहदि सम्मदिट्ठी सहावेण ॥३६४॥

एवं ववहारस्स दु विणिच्छओ णाणदंसणचरित्ते ।
भणिदो अण्णेसु वि पज्जएसु एमेव णादव्वो ॥३६५॥

दसंणणाणचरित्तं किंचि वि णत्थि दु अचेदणे विसए ।
तम्हा किं घादयदे चदेयिदा तेसु विसएसु ॥३६६॥

दंसणणाणचरित्तं किंचि वि णत्थि दु अचेदणे कम्मे ।
तम्हा किं घादयदे चेदयिदा तम्हि कम्मम्हि ॥३६७॥

दंसणणाणचरित्तं किंचि वि णत्थि दु अचेदणे काये ।
तम्हा किं घादयदे चेदयिदा तेसु कायेसु ॥३६८॥

णाणस्स दंसणस्स य भणिदो घादो तहा चरित्तस्स ।
ण वि तम्हि को वि पोग्गलदव्वे घादो दु णिद्दिट्ठो ॥३६९॥

जीवस्स जे गुणा केई णत्थि ते खलु परेसु दव्वेसु ।
तम्हा सम्मादिट्ठिस्स णत्थि रागो दु विसएसु ।।३७०।।
रागो दोसो मोहो जीवस्सेव य अणण्णपरिणामा ।
एदेण कारणेण दु सद्दादिसु णत्थि रागादी ।।३७१।।
अण्णदवियेण अण्णदवियस्स णो कीरदे गुणुप्पाओ ।
तम्हा दु सव्वदव्वा उप्पज्जंते सहावेण ।।३७२।।
णिंदिदसंथुदवयणाणि पोग्गला परिणमंति बहुगाणि ।
ताणि सुणिदूण रूसदि तूसदि य पुणो अहं भणिदो ।।३७३।।
पोग्गलदव्वं सद्दत्तपरिणदं तस्स जदि गुणो अण्णो ।
तम्हा ण तुमं भणिदो किंचि वि किं रूससि अबुद्धो ।।३७४।।
असुहो सुहो व सद्दो ण तं भणदि सुणसु मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं सोदविसय मागदं सद्दं ।।३७५।।
असुहं सुहं व रूवं ण तं भणदि पेच्छ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं चक्खुविसयमागदं रूवं ।।३७६।।
असुहो सुहो गंधो ण तं भणदि जिग्घ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं घाणविसयमागदं गंधं ।।३७७।।
असुहो सुहो व रसो ण तं भणदि रसय मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं रसणविसयमागदं तु रसं ।।३७८।।
असुहो सुहो व फासो ण तं भणदि फास मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं कायविसयमागदं फासं ।।३७९।।
असुहो सुहो व गुणो णं त भणदि बुज्झ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं बुद्धिविसयमागदं तु गुणं ।।३८०।।
असुहं सुहं व दव्वं ण तं भणदि बुज्झ मं ति सो चेव ।
ण य एदि विणिग्गहिदुं बुद्धिविसयमागदं दव्वं ।।३८१।।
एवं तु जाणिऊण उवसमं णेव गच्छदे मूढो ।
णिग्गहमणा परस्स य सयं च बुद्धिं सिवमपत्तो ।।३८२।।

कम्मं जं पुव्वकयं सुहासुहमणेयवित्थर विसेसं ।
तत्तो णियत्तदे अप्पयं तु जो सो पडिक्कमणं ।।३८३।।
कम्मं जं सुहमसुहं जम्हि य भावम्हि बज्झदि भविस्सं ।
तत्तो णियत्तदे जो सो पच्चक्खाणं हवदि चेदा ।।३८४।।
जं सुहमसुहमुदिण्णं संपडि य अणेयवित्थर विसेसं ।
तं दोसं जो चेददि सो खलु आलोयणं चेदा ।।३८५।।
णिच्चं पच्च णं, कुव्वदि णिच्चं पडिक्कमदिजोय ।
णिच्चं आलोचेयदि सो हु चरित्तं हवदि चेदा ।।३८६।।
वेदंतो कम्म अप्पाणं जो दु कुडदि कम्मफलं ।
सो तं पुणो वि बंधदि वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं ।।३८७।।
वेदंतो कम्मफलं मये कदं मुणदि जो दु कम्मफलं ।
सो तं पुणो वि बंधदि वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं ।।३८८।।
वेदंतो कम्मफलं सुहिदो दुहिदो य हवदि जो चेदा ।
सो तं पुणो वि बंधदि वीयं दुक्खस्स अट्ठविहं ।।३८९।।
सत्थं णाणं ण हवदि जम्हा सत्थं णयाणदे किंचि ।
म्हा अण्णं णाणं अण्णं सत्थं जिणा विंति ।।३९०।।
द्दो णाण ण हवदि जम्हा सद्दो ण याणदे किंचि ।
म्हा अण्णं णाणं अण्णं सद्द जिणा विंति ।।३९१।।
वं णाणं ण हवदि जम्हा रुव ण याणदे किंचि ।
म्हा अण्णं णाणं अण्णं रुवं जिणा विंति ।।३९२।।
ण्णो णाणं ण हवदि जम्हा वण्णो ण याणदे किंचि ।
म्हा अण्णं णाणं अण्णं वण्णं जिणा विंति ।।३९३।।
गंधो णाणं ण हवदि जम्हा गंधो ण याणदे किंचि ।
तम्हा अण्णं णाणं अण्णं गंधं जिणा विंति ।।३९४।।
ण रसो दु होदि णाण जम्हा दु रसो णया णदे किंचि ।
तम्हा अण्ण णाण रसं च अण्णं जिणा विंति ।।३९५।।

फासो ण हवदि णाणं जम्हा फासो ण याणदे किंचि ।
तम्हा अण्णं णाणं अण्णं फासं जिणा विंति ।।३९६।।
कम्मं णाणं ण हवदि जम्हा कम्मं ण याणदे किंचि ।
तम्हा अण्णं णाणं ं कम्मं जिणा विंति ।।३९७।।
धम्मो णाणं ण हवदि जम्हा धम्मो ण याणदे किंचि ।
तम्हा अण्ण णाणं अण्ण धम्मं जिणा विंति ।।३९८।।
णाणमधम्मो ण हवदि जम्हाधम्मो ण किंचि ।
तम्हा अण्णं णाणं अण्णमधम्मं जिणा विंति ।।३९९।।
कालो णाणं ण हवदि जम्हा कालो ण याणदे किंचि ।
तम्हा अण्णं णाणं अण्णं कालं जिणा विंति ।।४००।।
आ ं पि णाणं जम्हायासं ण याणदे किंचि ।
तम्हायासं अण्णं अण्णं णाणं जिणा विंति ।।४०१।।
णज्झ णं णाणं अज्जवसाणंअचेदणं जम्हा ।
तम्हा अण्णं णाणं अज्झवसाणं तहा अण्णं ।।४०२।।
जम्हा जाणदि णिच्चं तम्हा जीवो दु जाणगो णाणी ।
णाणं च जाणयादो अव्वदिरित्तं मुणेयव्वं ।।४०३।।
णाणं सम्मादिट्ठिं दु ं ं सुत्तमगंपुव्वगदं ।
धम्मा ं च तहा पव्वज्जं अब्भुवेंत्ति बुहा ।।४०४।।
जस्सामुत्तो ण हु सो आहारगो हवदि एवं ।
आहारो खलु मुत्तो जम्हा सो पोग्गलमओ दु ।।४०५।।
ण वि सक्कदि घेत्तुं जं ण विमोत्तुं चेव जं च जं परंद्दव्वं ।
सो को वि य तस्स गुणो पाओग्गियो विस्ससो वा वि।४०६।
तम्हा दु जो विसुद्धो चेदा सो णेय गिण्हदे किंचि ।
णेव विमुञ्चदि किंचि वि जीवाजीवाण दव्वाणं ।।४०७।।
पासंडीयलिंगाणि व गिहिलिंगाणि व बहुप्पयाराणि ।
ं वंदति मूढा लिंगमिणं मोक्खमग्गो त्ति ।।४०८।।

ण दु होदि मोक्खमग्गो लिंग जं देहणिम्ममा अरिहा ।
लिंगं मुइत्तु दंसणणाणचरित्ताणि सेवंति ।।४०९।।

ण वि एस मोक्खमग्गो पासंडीयगिहिमयाणि लिंगाणि ।
दंसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गं जिणा विंति ।।४१०।।

तम्हा जहित्तु लिंगे सागारणगारियेहिं वा गहिदे ।
दंसणणाणचरित्ते अप्पाणं जुञ्ज मोक्खपहे ।।४११।।

मोक्खपहे अप्पाणं ठवेहि चेदव झाहि झाहि तं चेय ।
तत्थेव विहर णिच्चं मा विहरसु अण्णदव्वेसु ।।४१२।।

पासंडीयलिंगेसु च गिहिलिंगेसु व बहुप्पयारेसु ।
कुव्वंति जे ममत्तिं तेहि ण णादं सारं ।।४१३।।

हारिओ पुण णओ दोण्णि वि लिंगाणि भणदि मोक्खपहे
णिच्छयणओ ण इच्छदि मोक्खपहे सव्वलिंगाणि ।।४१४।।

जो समयपाहुडमिणं पठिदूणं अत्थतच्चदो णादुं ।
अत्थे ठाही चेदा सो होही उत्तमं सोक्खं ।।४१५।।

।। इदि सिरिकुन्दकुन्दाइरियकद पाणीद समयपाहुड ।।



इच्छा कभी तृप्त नही होती, अत कोई मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओ का सर्वथा त्याग करदे तो जिस मार्ग से आने की वह आज्ञा देता है मुक्ति उसी मार्ग से आकर उससे मिलती है ।

श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो

पवयणसारो

ानतत्त्व-- पन

एस सुरासुरमणुसिदवंदिदं धोदघाइकम्ममलं ।
पणमामि वड्ढमाणं तित्थं धम्मस्स कत्तारं ॥१॥

सेसे पुण तित्थयरे ससव्वसिद्धे विसुद्धसब्भावे ।
समणे य णाणदंसणचरित्ततववीरियायारे ॥२॥

ते ते सव्वे समगं समगं पत्तेगमेव पत्तेगं ।
वंदामि य वट्टंते अरहंते माणुसे खेत्ते ॥३॥

किच्चा अरहंताणं सिद्धाणं तह णमो गणहराणं ।
अज्झावयवग्गाणं साहूणं चेव सव्वेसिं ॥४॥

तेसिं विसुद्धदंसणणाणपहाणासमं समासेज्ज ।
उपसंपयामि सम्मं जत्तो णिव्वाणसंपत्ती ॥५॥

संपज्जदि णिव्वाणं देवासुरमणुयरायविहवेहिं ।
जीवस्स चरित्तादो दंसणणाणप्पहाणादो ॥६॥

चारित्रं खलु धम्मो धम्मो जो सो समो त्ति णिद्दिट्ठो ।
मोहक्खोहविहीणो परिणामो अप्पणो हु ो ॥७॥

परिमदि जेण दव्वं तक्कालं तम्मयं त्ति पण्णत्त ।
तम्हा धम्मपरिणदो आदा धम्मो मुणेयव्वो ॥८॥

जीवो परिणमदि जदा सुहेण असुहेण वा सुहो असुहो ।
सुद्धेण तदा सुद्धो हवदि हि परिणामसब्भावो ॥९॥

णत्थि विणा परिणामं अत्थो अत्थं विणेह परिणामो ।
दव्वगुणपज्जयत्थो अत्थो अत्थित्तणिव्वत्तो ॥१०॥

धम्मेण परिणदप्पा अप्पा जदि सुद्धसंपयोगजुदो ।
पावदि णिव्वाणसुहं सुहोवजुत्तो व सग्गसुहं ॥११॥

असुहोदयेण आदा कुणरो तिरियो भवीय णेरइयो ।
दुक्खसहस्सेहिं सदा अभिद्दुदो भमदि अच्चंतं ॥१२॥

अइसयमादसमुत्थं विसयातीदं अणोवममणंतं ।
अव्वुच्छिण्णं च सुहं सुद्धुवओगप्पसिद्धाणं ॥१३॥

सुविदिदपयत्थसुत्तो संजमतवसंजुदो विगदरागो ।
समणो समसुहदुक्खो भणिदो सुद्धोवओगो त्ति ॥१४॥

उवओगविसुद्धो जो विगदावरणंतरायमोहरओ ।
भूदो सयमेवादा जादि परं णेयभूदाणं ॥१५॥

तह सो लद्धसहावो सव्वण्हू सव्वलोगपदिमहिदो ।
भूदो सयमेवादा हवदि सयंभु त्ति णिद्दिट्ठो ॥१६॥

भंगविहूणो य भवो संभवपरिवज्जिदो विणासो हि ।
विज्जदि तस्सेव पुणो ठिदिसंभवणासेसमवायो ॥१७॥

उप्पादो य विणासो विज्जदि सव्वस्स अट्ठजादस्स ।
पज्जाएण दु केणवि अट्ठो खलु होदि सब्भूदो ॥१८॥

तं सव्वट्ठवरिट्ठं इट्ठं अमरासुरप्पहाणेहिं ।
जे सद्दहंति जीवा तेसिं दुक्खाणि खीयंति ॥१९-१॥

पक्खीणघादिकम्मो अणंतवरवीरिओ अहियतेजो ।
जादो अणिंदिओ सो णाणं सोक्खं च परिणमदि ॥१९-२॥

सोक्खं वा पुण दुक्खं केवलणाणिस्स णत्थि देहगदं ।
जम्हा अदिंदियत्तं जादं जम्हा दु तं णेयं ॥२०॥

णत्थि परोक्खं किंचि वि समंत सव्वक्खगुणसमिद्धस्स ।
अक्खातीदस्स सदा सयमेव हि णाणजादस्स ॥२२॥

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं ।
णेयं लोयालोय तम्हा णाणं तु सव्वगय ॥२३॥

णाणप्पमाणमादा ण हवदि जस्सेह तस्स सो आदा ।
हीणो वा अहिओ वा णाणादो हवदि धुवमेव ॥२४॥

हीणो जदि सो आदा तण्णाणमचेदणं ण जाणादि ।
अहिओ वा णाणादो णाणेण विणा कहं णादि ॥२५॥ जुगलं

सव्वगदो जिणवसहो सव्वेदि य तग्गया जगदि अट्ठा ।
णाणमयादो य जिणो विसयादो तस्स ते भणिदा ॥२६॥

णाणं अप्प त्ति मदं वट्टदि णाणं विणा ण अप्पाणं ।
तम्हा णाणं अप्पा अप्पा णाणं व अण्णं वा ॥२७॥

णाणी णाणसहावो अट्ठा णेयप्पगा हि णाणिस्स ।
रुवाणि व चक्खूणं णेरण्णोण्णेसु वट्टंति ॥२८॥

ण पविट्ठो णाविट्ठो णाणी णेयेसु रुवमिव चक्खू ।
जाणदि वस्सदि णियदं अक्खातीदो जगमसेसं ॥२९॥

रयणमिह इंदणीलं दुद्धज्झसियं जहा सभासाए ।
अभिभूय तं पि दुद्ध वट्टदि तह णाणमट्ठेसु ॥३०॥

जदि ते ण संति अट्ठा णाणे णाणं ण होदि सव्वगयं ।
सव्वगयं वा णाण कहं ण णाणट्ठिया अट्ठा ॥३१॥

गेण्हदिणेव ण मुंचदि ण परं परिणमदि केवली भगवं ।
पेच्छदि समतदो सो जाणदि सव्व णिरवसेसं ॥३२॥

जो हि सुदेण विजाणदि अप्पाणं जाणणं सहावेण ।
तं सुयकेवलिमिसिणो भणंति लोगप्पदीवयरा ॥३३॥

सुत्तं जिणोवदिट्ठं पोग्गलदव्वप्पगेहिं वयणेहिं ।
तं जाणणा हि णाणं सुत्तस्स य जाणणा भणिया ।।३४।।

जो जाणदि सो णाणं ण हवदि णाणेण जाणगो आदा ।
णाणं परिणमदि सयं अट्ठा णाणट्ठिया सव्वे ।।३५।।

तम्हा णाणं जीवो णेयं दव्वं तिहा समक्खादं ।
दव्वं ति पुणो आदा परं च परिणामसंबद्धं ।।३६।।

तक्कालिगेव सव्वे सदसब्भूदा हि पज्जया तासिं ।
वट्टंते ते णाणे विसेसदो दव्वजादीणं ।।३७।।

जे णेव हि संजाया जे खलु णट्ठा भवीय पज्जाया ।
ते होंति असब्भूदा पज्जाया णाणपच्चक्खा ।।३८।।

जदि पच्चक्खमजादं पज्जाय पलयिदं च णाणस्स ।
ण हवदि वा तं णाणं दिव्वं ति हि के परुवेंति ।।३९।।

अत्थं अक्खणिवदिदं ईहापुव्वेहिं जे विजाणंति ।
तेसिं परोक्खभूदं णादुमसक्कं ति पण्णत्तं ।।४०।।

अपदेसं सपदेसं मुत्तममुत्तं च पज्जयमजादं ।
पलयं गदं च जाणदि तं णाणमदिंदियं भणियं ।।४१।।

परिणमदि णेयमट्ठं णादा जदि णेव खाइगं तस्स ।
णाणं ति तं जिणिंदा खवयंतं कम्ममेवुत्ता ।।४२।।

उदयगदा कम्मंसा जिणवरवसहेहिं णियदिणा भणिया ।
तेसु विमूढो रत्तो दुट्ठो वा बंधमणुभवदि ।।४३।।

ठाणणिसेज्जविहारा धम्मुवदेसो य णियदयो तेसिं ।
अरहंताणं काले मायाचारो व्व इत्थीणं ।।४४।।

पुण्णफला अरहंता तेसिं किरिया पुणो हि ओदइया ।
मोहादीहिं विरहिदा तम्हा सा खाइग त्ति मदा ।।४५।।

जदि सो सुहो व असुहो ण हवदि आदा सयं सहावेण ।
संसारो वि ण विज्जदि सव्वेसिं जीवकायाणं ॥४६॥

जं तक्कालियमिदरं जाणदि जुगवं समंतदो सव्वं ।
अत्थं विचित्तविसम तं णाणं खाइयं भणियं ॥४७॥

जो ण विजाणदि जुगवं अत्थे तिक्कालिगे तिहुवणत्थे ।
णादुं तस्स ण सक्कं सपज्जयं दव्वमेग वा ॥४८॥

दव्वं अणंतपज्जयमेगमणंताणि दव्वजादाणि ।
ण विजाणदि जदि जुगवं किध सो सव्वाणि जाणादि ॥४९॥

उप्पज्जदि जदि णाणं कमसो अट्ठे पडुच्च णाणिस्स ।
तं णेव हवदि णिच्चं ण खाइगं णेव सव्वगदं ॥५०॥

तिक्कालणिच्चविसमं सयलं सव्वत्थसंभवं चित्तं ।
जुगवं जाणदि जोण्हं अहो हि णाणस्स माहप्पं ॥५१॥

ण वि परिणमदि ण गेण्हदि उप्पज्जदि णेव तेसु अट्ठेसु ।
जाणण्णवि ते आदा अबंधगो तेण पण्णत्तो ॥५२–१॥

तस्स पमाइं लोगो देवासुरमणुअरापसंबधो ।
भत्तो करोदि णिच्चं उवजुत्तो तं तहा वि अहं ॥५२–२॥

अत्थि अमुत्तं मुत्तं अदिंदिया इंदियं च अत्थेसु ।
णाणं च तहा सोक्खं जं तेसु परं च तं णेयं ॥५३॥

जं पेच्छदो अमुत्तं मुत्तेसु अदिंदियं च पच्छण्ण ।
सयलं सगं च इदर त णाण हवदि पच्चक्खं ॥५४॥

जीवो सयं असुत्तो मुत्तिगदो तेण मुत्तिणा मुत्तं ।
ओगेण्हित्ता जोग्गं जाणदि वा तेण जाणादि ॥५५॥

फासो रसो य गधो वण्णो सद्दो य पुग्गला होंति ।
एं ते अक्खा जुगवं ते णेव गेण्हंति ॥५६॥

पर दव्वं ते अक्खा णेव सहावो त्ति अप्पणो अणिदा ।
उवलद्धं तेहि कधं पच्चक्खं अप्पणो होदि ॥५७॥

जं परदो विण्णाणं तं तु परोक्खं ति भणिदमट्ठेसु ।
जदि केवलेण णादं हवदि हि जीवेण पच्चक्खं ॥५८॥

जादं सयं समत्तं णाणमणंतत्थवित्थडं विमलं ।
रहिदं तु ओग्गहादिहि सुहं ति एगंतियं भणिदं ॥५९॥

जं केवलं ति णाणं तं सोक्खं परिणमं च सो चेव ।
खेदो तस्स ण भणिदो जम्हा घादी खयं जादा ॥६०॥

णाणं अत्थंतगयं लोयालोएसु वित्थडा दिट्ठी ।
णट्ठमणिदं सव्वं इट्ठं पुण जं तु तं लद्धं ॥६१॥

णो सद्दहंति सोक्खं सुहेसु परमं ति विगदघादीणं ।
सुणिदूण ते अभव्वा भव्वा वा तं पडिच्छंति ॥६२॥

मणुआसुरामरिंदा अहिद्दुदा इंदियेहिं सहजेहिं ।
असहंता तं दुक्खं रमंति विसएसु रम्मेसु ॥६३॥

जेसिं विसयेसु रदी तेसिं दुक्खं वियाण सब्भावं ।
जइ तं ण हि सब्भावं वावारो णत्थि विसयत्थं ॥६४॥

पप्पा इट्ठे वियसे फासेहिं समस्सिदे सहावेण ।
परिणममाणो अप्पा सयमेव सुहं ण हवदि देहो ॥६५॥

एगंतेण हि देहो सुहं ण देहिस्स कुणदि सग्गे वा ।
विसयवसेण दु सोक्खं दुक्खं वा हवदि सयमादा ॥६६॥

तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कायव्वं ।
तह सोक्खं सयमादा विसया किं तत्थ कुव्वंति ॥६७॥

सयमेव जहादिच्चो तेजो उण्हो य देवता णभसि ।
सिद्धो वि तहा णाणं सुहं च लोगे तहा देवो ॥६८-१॥

जदि सो सुहो व असुहो ण हवदि आदा सयं सहावेण ।
संसारो वि ण विज्जदि सव्वेसिं जीवकायाणं ॥४६॥

जं तक्कालियमिदरं जाणदि जुगवं समंतदो सव्वं ।
अत्थं विचित्तविसमं तं णाणं खाइयं भणियं ॥४७॥

जो ण विजाणदि जुगवं अत्थे तिक्कालिगे तिहुवणत्थे ।
णादुं तस्स ण सक्कं सपज्जयं दव्वमेगं वा ॥४८॥

दव्वं अणंतपज्जयमेगमणंताणि दव्वजादाणि ।
ण विजाणदि जदि जुगवं किध सो सव्वाणि जाणादि ॥४९॥

उप्पज्जदि जदि णाणं कमसो अट्ठे पडुच्च णाणिस्स ।
तं णेव हवदि णिच्चं ण खाइगं णेव सव्वगदं ॥५०॥

तिक्कालणिच्चविसमं सयलं सव्वत्थसंभवं चित्तं ।
जुगवं जाणदि जोण्हं अहो हि णाणस्स माहप्पं ॥५१॥

ण वि परिणमदि ण गेण्हदि उप्पज्जदि णेव तेसु अट्ठेसु ।
जाणण्णवि ते आदा अबंधगो तेण पण्णत्तो ॥५२–१॥

तस्स पमाइं लोगो देवासुरमणुअरायसंबधो ।
भत्तो करोदि णिच्चं उवजुत्तो तं तहा वि अह ॥५२–२॥

अत्थि अमुत्तं मुत्तं अदिंदियं इंदियं च अत्थेसु ।
णाणं च तहा सोक्खं जं तेसु परं च तं णेयं ॥५३॥

जं पेच्छदो अमुत्तं मुत्तेसु अदिंदियं च पच्छण्णं ।
सयलं सगं च इदरं तं णाणं हवदि पच्चक्खं ॥५४॥

जीवो सयं अमुत्तो मुत्तिगदो तेण मुत्तिणा मुत्तं ।
ओगेण्हित्ता जोग्गं जाणदि वा तेण जाणादि ॥५५॥

फासो रसो य गंधो वण्णो सद्दो य पुग्गला होंति ।
अक्खाणं ते अक्खा जुगवं ते णेव गेण्हंति ॥५६॥

परं दव्वं ते अक्खा णेव सहावो त्ति अप्पणो भणिदा ।
उवलद्धं तेहि कधं पच्चक्खं अप्पणो होदि ॥५७॥

जं परदो विण्णाणं तं तु परोक्खं ति भणिदमट्ठेसु ।
जदि केवलेण णादं हवदि हि जीवेण पच्चक्खं ॥५८॥

जादं सयं समत्तं णाणमणंतत्थवित्थडं विमलं ।
रहिदं तु ओग्गहादिहि सुहं ति एगंतियं भणिदं ॥५९॥

जं केवलं ति णाणं तं सोक्खं परिणमं च सो चेव ।
खेदो तस्स ण भणिदो जम्हा घादी खयं जादा ॥६०॥

णाणं अत्थंतगयं लोयालोएसु वित्थडा दिट्ठी ।
णट्ठमणिट्ठं सव्वं इट्ठं पुण जं तु तं लद्धं ॥६१॥

णो सद्दहंति सोक्खं सुहेसु परमं ति विगदघादीणं ।
सुणिदूण ते अभव्वा भव्वा वा तं पडिच्छंति ॥६२॥

मणुआसुरामरिंदा अहिद्दुदा इंदियेहिं सहजेहिं ।
असहंता तं दुक्खं रमंति विसएसु रम्मेसु ॥६३॥

जेसिं विसयेसु रदी तेसिं दुक्खं वियाण सब्भावं ।
जइ तं ण हि सब्भावं वावारो णत्थि विसयत्थं ॥६४॥

पप्पा इट्ठे विसये फासेहिं समस्सिदे सहावेण ।
परिणममाणो अप्पा सयमेव सुहं ण हवदि देहो ॥६५॥

एगंतेण हि देहो सुहं ण देहिस्स कुणदि सग्गे वा ।
विसयवसेण दु सोक्खं दुक्खं वा हवदि सयमादा ॥६६॥

तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कायव्वं ।
तह सोक्खं सयमादा विसया किं तत्थ कुव्वंति ॥६७॥

सयमेव जहादिच्चो तेजो उण्हो य देवता णभसि ।
सिद्धो वि तहा णाणं सुहं च लोगे तहा देवो ॥६८-१॥

तेजो दिट्ठी णाणं इड्ढी सोक्खं तहेव ईसरियं ।
तिहुवणपहाणदइयं माहप्पं जस्स सो अरिहो ॥६८–२॥
त गुणदो अधिगदरं अविच्छिदं मणुवदेवपदिभावं ।
अपुणब्भावणिबद्धं पणमामि पुणो पुणो सिद्धं ॥६८–३॥
देवदजदिगुरुपूजासु चेव दाणम्मि वा सुसीलेसु ।
उ ासादिसु रत्तो सुहोवओगप्पगो अप्पा ॥६९॥
जुत्तो सुहेण आदा तिरियो वा माणुसो व देवो वा ।
भूदो तावदि काल लहदि सुह इंदियं विविहं ॥७०॥
सोक्खं सहावसिद्धं णत्थि सुराणं पि सिद्धमुवदेसे ।
ते देहवेदणट्टा रमंति विसएसु रम्मेसु ॥७१॥
णरणारयतिरियसुरा भजति जदि देहसंभवं दुक्खं ।
किह सो सुहो व असुहो उ ोगो हवदि जीवाणं ॥७२॥
कुलिसाउहचक्कधरा सुहोवओगप्पगेहिं भोगेहिं ।
देहादीणं विद्धिं करति सुहिदा इवाभिरदा ॥७३॥
जदि संति हि पुण्णाणि य परिणामसमुब्भवाणि विविहाणि ।
जणयंति विसयतण्हं जीवाणं देवदंताणं ॥७४॥
ते पुण उदिण्ण तण्हा दुहिदा तण्हाहि विसयसोक्खाणि ।
इच्छंति अणुभवंति य आमरण दुक्खसतत्ता ॥७५॥
सपरं बाधासहिद विच्छिण बंधकारणं वि ं ।
ज इंदियेहि लद्धं ज सोक्ख दुक्खमेव तहा ॥७६॥
ण हि मण्णादि जो एवं णत्थि विसेसो त्ति पुण्णपावाणं ।
हिंडदि घोरमपारं संसारं मोहसंछण्णो ॥७७॥
एवं विदिदत्थो जो दव्वेसु ण रागमेदि दोस वा ।
उवओगविसुद्धो सो खवेदि देहुब्भवं दुक्खं ॥७८॥

चत्ता पावारंभं समुट्ठिदो वा सुहम्मि चरियम्हि ।
ण जहदि जदि मोहादी ण लहदि सो अप्पगं सुद्धं ।।७६/१।।

तव संजमप्पसिद्धो सुद्धो सग्गापवग्ग मग्ग करो ।
अमरासुरिंदमहिदो देवो सो लोयसिहरत्थो ।।७६/२।।

तं देवदेवदेवं जदिवरवसहं गुरुं तिलोयस्स ।
पणमंति जे मणुस्सा ते सोक्खं अक्खं अक्खयं जंति ।।७६/३।।

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं ।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं ।।८०।।

जीवो ववगदमोहो उवलद्धो तच्चमप्पणो सम्मं ।
जहदि जदि रागदोसे सो अप्पाणं लहदि सुद्धं ।।८१।।

सव्वे वि य अरहंता तेण विधाणेण खविदकम्मंसा ।
किच्चा तधोवदेसं णिव्वादा ते णमो तेसिं ।।८२/१।।

दंसणसुद्धा पुरिसा णाणपहाणा समग्गचरियत्था ।
पूजासक्काररिहा दाणस्य य हि ते णमो तेसिं ।।८२/२।।

दव्वादिएसु मूढो भावो जीवस्य हवदि मोहो त्ति ।
खुब्भदि तेणुच्छण्णो पप्पा रागं व दोसं वा ।।८३।।

मोहेण व रागेण व दोसेण व परिणदस्स जीवस्य ।
जायदि विविहो बंधो तम्हा ते संखवइदव्वा ।।८४।।

अट्ठे अजधागहणं करुणाभावो य तिरिएमणुएसु ।
विसएसु य प्पसंगो मोहस्सेदाणि लिंगाणि ।।८५।।

जिण सत्थादो अट्ठे पच्चक्खादीहिं बुज्झदो णियमा ।
खीयदि मोहोवचयो तम्हा सत्थ समधिदव्वं ।।८६।।

दव्वाणि गुणा तेसिं पज्जाया अट्ठसण्णया भणिया ।
तेसु गुणपज्जयाणं अप्पा दव्व त्ति उवदेशो ।।८७।।

जो मोहरागदोसे णिहणदि उवलब्भ जोण्हमुवदेसं ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण ॥८८॥
णाणप्पगमप्पाणं परं च दव्वत्तणाहिसंबद्धं ।
जाणदि जदि णिच्छयदो जो सो मोहक्खयं कुणदि ॥८९॥
तम्हा जिणमग्गादो गुणेहिं आदं मरं च दव्वेसु ।
अभिगच्छदु णिम्मोहं इच्छेदि जदि अप्पणो अप्पा ॥९०॥
सत्तासंबद्धे दे सविसेसे जो हि णेव सामण्णे ।
सद्दहदि ण सो समणो तत्तो धम्मो ण संभवदि ॥९१॥
जो णिहदमोहदिट्ठी आगमकुसलो विरागचरियम्हि ।
अब्भुट्ठिदो महप्पा धम्मो त्ति विसेसिदो समणो ॥९२/१॥
जो तं दिट्ठा तुट्ठो अब्भुट्ठित्ता करेदि सक्कारं ।
वदंणणमंसणादिहि तत्तो धम्ममादियदि ॥९२/२॥
तेण णरा व तिरिच्छा देविं वा माणुसिं गदिं पप्पा ।
विहविस्सरियेहिं सदा संपुण्णमणोरहा होंति ॥९२/३॥

तर - ापन

तम्हा तस्स णमाइं किच्चा णिच्चं पि तम्मणा होज्ज ।
वोच्छामि संगहादो परमट्ठविणिच्छयाधिगमं ॥९३/१॥
अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणि गुणप्पगाणि भणिदाणि ।
तेहिं पुणो पज्जाया पज्जयमूढा हि परसमया ॥९३/२॥
जो पज्जयेसु णिरदा जीवा परसङग त्ति णिद्दिट्ठा ।
आदसहावम्मि ठिदा ते सगसमया मुणेदव्वा ॥९४॥
अपरिच्चत्तसहावेणुप्पादव्वयधुवत्तसंबद्धं ।
गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति ॥९५॥

सब्भावो हि सहावो गुणेहि सह पज्जएहिं चित्तेहिं ।
दव्वस्स सव्वकालं उप्पादव्वयधुवत्तेहि ॥९६॥

इह विविहलक्खणाणं लक्खणमेगं सदित्ति सव्वगयं ।
उवदिसदा खलु धम्मं जिणवरवसहेण पण्णत्तं ॥९७॥

दव्वं सहावसिद्धं सदिति जिणा तच्चदो समक्खादा ।
सिद्धं तध आगमदो णेच्छदि जो सो हि परसमओ ॥९८॥

सदवट्ठिदं सहावे दव्वं दव्वस्स जो हि परिणामो ।
अत्थेसु सो सहावो ठिदिसंभवणाससबद्धो ॥९९॥

ण भवो भंगविहीणो भंगो वा णत्थि संभवविहीणो ।
उप्पादोवि य भंगो ण विणा धोव्वेण अत्थेण ॥१००॥

उप्पादट्ठिदिभंगा विज्जंते पज्जएसु पज्जाया ।
दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं ॥१०१॥

समवेदं खलु दव्वं संभवठिदिणाससण्णिदट्ठेहिं ।
एक्कम्मि चेव समये तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं ॥१०२॥

पाडुब्भवदि य अण्णो पज्जाओ पज्जओ वयदि अण्णो ।
दव्वस्स तं पि दव्वं णेव पणट्ठं ण उप्पण्णं ॥१०३॥

परिणमदि सयं दव्वं गुणदो य गुणंत्तरं सदविसिट्ठं ।
तम्हा गुणपज्जाया भणिया पुण दव्वमेव त्ति ॥१०४॥

ण हवदि जदि सद्दव्वं असद्धुवं हवदि तं कह दव्वं ।
हवदि पुणो अण्णं वा तम्हा दव्वं सयं सत्ता ॥१०५॥

पविभत्तपदेसत्तं पुधत्तमिदि सासणं हि वीरस्स ।
अण्णत्तमत्तब्भावो ण तब्भवं होदि कधमेगं ॥१०६॥

सद्दव्व सच्च गुणो सच्चेव य पज्जओ त्ति वित्थारो ।
जो खलु तस्स अभावो सो तदभावो अतब्भावो ॥१०७॥

जं दव्वं तं ण गुणो जोवि गुणो सो ण तच्चमत्थादो ।
एसो हि अतब्भावो णेव अभावो त्ति णिद्दिट्ठो ॥१०८॥

जो खलु दव्वसहावो परिणामो सो गुणो सदविसिट्ठो ।
सदवट्ठिदं सहावे दव्व त्ति जिणोवदेसोयं ॥१०९॥

णत्थि गुणो त्ति व कोई पज्जाओ त्तीह वा विणा दव्वं ।
दव्वत्तं पुण भावो तम्हा दव्वं सयं सत्ता ॥११०॥

एवंविहं सहावे दव्वं दव्वत्थपज्जयत्थेहिं ।
सदसब्भावणिबद्धं पादुब्भावं सदा लभदि ॥१११॥

जीवो भवं भविस्सदि णरोऽमरो वा परो भवीय पुणो ।
किं दव्वत्तं पजहदि ण जहं चयदि अण्णो कहं हवदि ॥११२॥

मणुवो ण हवदि देवो देवो वा माणुसो व सिद्धो वा ।
एवं अहोज्जमाणो अणण्णभावं कधं लहदि ॥११३॥

दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं तं पज्जयट्ठिएण पुणो ।
हवदि य अण्णमणण्णं तक्काले तम्मयत्तादो ॥११४॥

अत्थि त्ति य णत्थि त्ति य हवदि अवत्तव्वमिदि पुणो दव्वं ।
पज्जायेण दु केण वि तदुभयमदिट्ठमण्णं वा ॥११५॥

एसो त्ति णत्थि कोई ण णत्थि किरिया सहावणिव्वत्ता ।
करिया हि णत्थि अफला धम्मो जदि णिप्फलो परमो ॥११६॥

कम्मं णामसमक्खं सभावमध अप्पणो सहावेण ।
अभिभूय णरं तिरियं णेरइय वा सुरं कुणदि ॥११७॥

णरणारयतिरियसुरा जीवा खलु णामकम्मणिव्वत्ता ।
ण हि ते लद्धसहावा परिणममाणा सकम्माणि ॥११८॥

जायदि णेव ण णस्सदि खणभंगसमुब्भवे जणे कोई ।
जो हि भवो सो विलओ संभवविलय त्ति ते णाणा ॥११९॥

तम्हा दु णत्थि कोई सहावसमवट्ठिदो त्ति संसारे ।
संसारो पुण किरिया संसरमाणस्स दव्वस्स ॥१२०॥

आदा कम्ममलिमसो परिणामं लहदि कम्मसंजुत्तं ।
तत्तो सिलिसदि कम्मं तम्हा कम्मं तु परिणामो ॥१२१॥

परिणामो सयमादा सा पुण किरिय त्ति होदि जीवमया ।
किरिया कम्म त्ति मदा तम्हा कम्मस्स ण दु कत्ता ॥१२२॥

परिणमदि चेदणाए आदा पुण चेदणा तिधाभिमदा ।
सा पुण णाणे कम्मे फलम्मि वा कम्मणो भणिदा ॥१२३॥

णाणं अट्ठवियप्पो कम्मं जीवेण जं समारद्धं ।
तमणेगविधं भणिदं फलं ति सोक्खं व दुक्खं वा ॥१२४॥

अप्पा परिणामप्पा परिणामो णाणकम्मफलभावी ।
तम्हा णाणं कम्मं फलं च आदा मुणेदव्वो ॥१२५॥

कत्ता करणं कम्मं फलं च अप्प त्ति णिच्छिदो समणो ।
परिणमदि णेव अण्णं जदि अप्पाणं लहदि सुद्धं ॥१२६॥

दव्वं जीवमजीवं जीवो पुण चेदणोवओगमओ ।
पोग्गलदव्वप्पमुहं अचेदणं हवदि य अजीवं ॥१२७॥

पोग्गलजीवणिबद्धो धम्माधम्मत्थिकायकालड्ढो ।
वट्टदि आगासे जो लोगो सो सव्वकाले दु ॥१२८॥

उप्पादट्ठिदिभंगा पोग्गलजीवप्पगस्स लोगस्स ।
परिणामा जायंते संघादादो व भेदादो ॥१२९॥

लिंगेहिं जेहिं दव्वं जीवमजीवं च हवदि विण्णादं ।
तेऽतब्भावविसिट्ठा मुत्तामुत्ता गुणा णेया ॥१३०॥

मुत्ता इंदियगेज्झा पोग्गलदव्वप्पगा अणेगविधा ।
दव्वाणममुत्ताणं गुणा अमुत्ता मुणेदव्वा ॥१३१॥

वण्णरसगंधफासा विज्जंते पुग्गलस्स सुहुमादो ।
पुढवीपरियंतस्स य सद्दो सो पोग्गलो चित्तो ।।१३२।।
आगासस्सवगाहो धम्मद्दव्वस्स गमणहेदुत्तं ।
धम्मेदरदव्वस्स दु गुणो पुणो ठाणकारणदा ।।१३३।।
कालस्स वट्टणा से गुणोवओगो त्ति अप्पणो भणिदो ।
णेया संखेवादो गुणा हि मुत्तिप्पहीणाणं ।।१३४।।जुगलं।।
जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा पुणो य आगासं ।
सपदेसेहिं असखा णत्थि पदेस त्ति कालस्स ।।१३५/१।।
एदाणि पचदव्वाणि उज्झियकालं तु अत्थिकाय त्ति ।
भण्णते काया पुण बहुप्पदेसाण पचयत्तं ।।१३५/२।।
लोगालोगेसु णभो धम्माधम्मेहिं आददो लोगो ।
ऐसे पडुच्च कालो जीवा पुण पोग्गला सेसा ।।१३६।।
जध ते णभप्पदेसा तधप्पदेसा हवंति सेसाणं ।
अपदेसो परमाणु तेण पदेसुब्भवो भणिदो ।।१३७।।
समओ दु अप्पदेसो पदेसमेत्तस्स दव्वजादस्स ।
वदिवददो सो वट्टदि पदेसमागासदव्वस्स ।।१३८।।
वदिवददो तं देसं तस्सम समओ तदो परो पुव्वो ।
जो सो कालो समओ उप्पण्णपद्धंसी ।।१३९।।
आगासमणुणिविट्ठं आगासपदेससण्णया भणिदं ।
सव्वेंसि च अणूणं सक्कदि तं देदुमवगासं ।।१४०।।
एक्को व दुगे बहुगा संखातीदा तदो अणंता य ।
दव्वाणं च पदेसा संति हि समय त्ति कालस्स ।।१४१।।
उप्पादो पद्धंसो विज्जदि जदि जस्स एगसमयम्हि ।
समयस्स सो वि समओ सभावसमवट्ठिदो हवदि ।।१४२।।
एगम्हि संति समये संभवठिदिणाससण्णिदा अट्ठा ।
समयस्स सव्वकालं एस हि कालणुसब्भावो ।।१४३।।

जस्स ण संति पदेसा पदेसमेत्तं व तच्चदो णादुं ।
सुण्ण जाण तमत्थं अत्थंतरभूदमत्थीदो ॥१४४॥
सपदेसेहिं समग्गो लोगो अट्ठेहिं णिट्ठिदो णिच्चो ।
जो तं जाणदि जीवो पाणचदुक्केण संबद्धो ॥१४५॥
इंदियपाणो व तधा बलपाणो तह य आउपाणो य ।
आणप्पाणप्पाणो जीवाणं होंति पाणा ते ॥१४६/१॥
पंच वि इंदियपाणा मणवचिकाया य तिण्णि बलपाणा ।
आणप्पाणप्पाणो आउगपाणेण होंति दसपाणा ॥१४६ २॥
पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीवस्सदि जो हि जीविदो पुव्वं ।
सो जीवो पाणा पुण पोग्गलदव्वेहिं णिव्वत्ता ॥१४७॥
जीवो पाणणिबद्धो बद्धो मोहादिएहिं कम्मेहिं ।
उवभुंज कम्मफलं बज्झदि अण्णेहि कम्मेहिं ॥१४८॥
पाणाबाधं जीवो मोहपदेसेहिं कुणदि जीवाणं ।
जदि सो हवदि हि बंधो णाणावरणादिकम्मेहिं ॥१४९॥
आदा कम्ममलिमसो धरेदि पाणे पुणो पुणो अण्णे ।
ण चयदि जाव ममत्तिं देहपधाणेसु विसयेसु ॥१५०॥
जो इंदियादिविजई भवीय उवओगमप्पगं झादि ।
कम्मेहिं सो ण रंजदि किह तं पाणा अणुचरंति ॥१५१॥
अत्थित्तणिच्छिदस्स हि अत्थस्सत्थंतरम्हि संभूदो ।
अत्थो पज्जाओ सो संठाणादिप्पभेदेहिं ॥१५२॥
णरणारयतिरियसुरा संठाणादीहिं अण्णहा जादा ।
पज्जाया जीवाणं उदयादिहिं णामकम्मस्स ॥१५३॥
तं सब्भावणिबद्धं दव्वसहावं तिहा समक्खादं ।
जाणदि जो सवियप्पं ण मुहदि सो अण्णदवियम्हि ॥१५४॥
अप्पा उवओगप्पा उवओगो णाणदंसण भणिदो ।
सो वि सुहो असुहो वा उवओगो अप्पणो हवदि ॥१५५॥

उवओगो जदि हि सुहो पुण्णं जीवस्स संचय जादि ।
असुहो व तध पावं तेसिमभावे ण चयमत्थि ।।१५६।।

जो जाणादि जिणिंदे पेच्छदि सिद्धे तहेव अणगारे ।
जीवेसु साणुकंपो उवओगो सो सुहो तस्स ।।१५७।।

विसयकसायओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुट्ठगोट्ठि जुदो ।
उग्गो उमग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो ।।१५८।।

असुहोवओगरहिदो सुहोवजुत्तो ण अण्णदवियम्हि ।
होज्ज मज्जत्थोऽहं णाणप्पगमप्पगं झाए ।।१५९।।

णाहं देहो ण मणो ण चेव वाणी ण कारणं तेसिं ।
कत्ता ण ण कारयिदा अणुमंता चेव कत्तीणं ।।१६०।।

देहो य मणो वाणी पोग्गलदव्वप्पग त्ति णिद्दिट्ठा ।
पोग्गलदव्वं हि पुणो पिंडो परमाणुदव्वाणं ।।१६१।।

णाहं पोग्गलमइओ ण ते मया पोग्गला कया पिंडं ।
तम्हा हि ण देहोऽहं कत्ता वा तस्स देहस्स ।।१६२।।

अपदेशो परमाणु पदेसमेत्तो द सयमसद्दो जो ।
णिद्धो वा लुक्खो वा दुपदेसादित्तमणुभवदि ।।१६३।।

एगुत्तरमेगादी अणुस्स णिद्धत्तणं च लुक्खत्तं ।
परिणामादो भणिदं जाव अणंतत्तमणुभवदि ।।१६४।।

णिद्धा वा लुक्खा वा अणुपरिणामा समा व विसमा वा ।
समदो दुहाधिगा जदि बज्झन्ति हि आदिपरिहीणा ।।१६५।।

णिद्धत्तणेण दुगुणो चदुगुणणिद्धेण बंधमणुभवदि ।
लुक्खेण वा तिगुणिदो अणु बज्झदि पंचगुणजुत्तो ।।१६६।।

दुपदेसादी खंधा सुहुमा वा वादरा ससंठाणा ।
पुढविजलतेउवाऊ सगपरिणामेहिं जायन्ते ।।१६७।।

ओगाढगाढणिचिदो पुग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो ।
सुहुमेहि बादरेहि य अप्पाओग्गेहि जोग्गेहि ॥१६८॥

कम्मत्तणपाओग्गा खंधा जीवस्स परिणइं पप्पा ।
गच्छंति कम्मभावं ण हि ते जीवेण परिणमिदा ॥१६९॥

ते ते कम्मत्तगदा पोग्गलकाया पुणो वि जीवस्स ।
संजायंते देहा देहंतरसंकमं पप्पा ॥१७०॥

ओरालिओ य देहो वेउव्विओ य तेजसिओ ।
आहारय कम्मइओ पोग्गलदव्वप्पगा सव्वे ॥१७१॥

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥१७२॥

मुत्तो रूवादिगुणो बज्झदि फासेहिं अण्णमण्णेहिं ।
तव्विवरीदो अप्पा बज्झदि किध पोग्गलं कम्मं ॥१७३॥

रूवादिएहिं रहिदो पेच्छदि जाणादि रूवमादीणि ।
दव्वाणि गुणे य जधा तह बंधो तेण जाणीहि ॥१७४॥

उवओगमओ जीवो मुज्झदि रज्जेदि वा पदुस्सेदि ।
पप्पा विविधे विसये जो हि पुणोतेहिं सो बन्धो ॥१७५॥

भावेण जेण जीवो पेच्छदि जाणादि आगदं विसये ।
रज्जदि तेणेव पुणो बज्झदि कम्म त्ति उपदेशो ॥१७६॥

फासेहिं पोग्गलाणं बंधो जीवस्य रागमादीहिं ।
अण्णोण्णमवगाहो पुग्गलजीवप्पगो भणिदो ॥१७७॥

सपदेशो सो अप्पा तेसु पदेसेसु पोग्गला काया ।
पविसंति जहाजोग्गं चिट्ठंति हि जंति बज्झंति ॥१७८॥

रत्तो बंधदि कम्मं मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा ।
एसो बंधसमासो जीवाणं जाण णिच्छयदो ॥१७९॥

परिणामादो बंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो ।
असुहो मोहपदोसो सुहो व असुहो हवदि रागो ॥१८०॥

सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पावं त्ति भणिदमण्णेसु ।
परिणामो णण्णगदो दुक्खक्खयकारणं समये ॥१८१॥

भणिदा पुढविप्पमुहा जीवणिकायाध थावरा य तसा ।
अण्णाते जीवादो जीवो वि य तेहिंदो अण्णो ॥१८२॥

जो णवि जाणदि एवं परमप्पाणं सहावमासेज्ज ।
कीरदि अज्झवसाणं अहं ममेदं ति मोहादो ॥१८३॥

कुव्वं सभावमादा हवदि हि कत्ता सगस्स भावस्स ।
पोग्गलदव्वमयाणं ण दु कत्ता सव्वभावाणं ॥१८४॥

गेण्हदि णेव ण मुंचदि करेदि ण हि पोग्गलाणि कम्माणि ।
जीवो पोग्गलमज्झे वट्टण्णवि सव्वकालेसु ॥१८५॥

स इदाणिं कत्ता सं सगपरिणामस्स दव्वजादस्स ।
आदीयदे कदाइं विमुच्चदे कम्मधूलीहिं ॥१८६॥

परिणमदि जदा अप्पा सुहम्हि असुहम्हि रारादोसजुदो ।
तं पविसदि कम्मरयं णाणावरणादिभावेहिं ॥१८७/१॥

सुहपयडीण विसोही तिव्वो असुहाण संकिलेसम्मि ।
विवरीदो दु जहण्णो अणुभागो सव्वपडीण ॥१८७/२॥

सपदेसो सो अप्पा कसायिदो मोहरागदोसेहिं ।
कम्मरएहिं सिलिट्ठो बंधो त्ति परुविदो समये ॥१८८॥

एसो बं सो जीवाणं णिच्छयेण णिद्दिट्ठो ।
अरहतेहिं जदीणं ववहारो अण्णहा भणिदो ॥१८९॥

ण चयदि जो दु ममत्ति अहं ममेदं ति देहदविणेसु ।
सो सामण्णं चत्ता पडिवण्णो होदि उम्मग्गं ॥१९०॥

णाहं होमि परेसिं ण मे परे संति णाणमहमेक्को ।
इदि झायदि झाणे सो अप्पाणं हवदि झादा ॥१९१॥

एवं णाणप्पाणं दंसणभूदं अदिंदियमहत्थं ।
धुवमचलमणालंबं मण्णेऽहं अप्पगं सुद्धं ॥१९२॥

देहा वा दविणा वा सुहदुक्खा वाध सत्तुमित्तजणा ।
जीवस्स ण संति धुवा धुवोवओगप्पगो अप्पा ॥१९३॥

जो एवं जाणित्ता झादि परं अप्पगं विसुद्धप्पा ।
सागारोऽणगारो खवेदि सो मोहदुग्गंठिं ॥१९४॥

जो णिहदमोहगंठी रागपदोसे खवीय सामण्णे ।
होज्जं समसुहदुक्खो सो सोक्खं अक्खयं लहदि ॥१९५॥

जो खविदमोहकलुसो विसयविरत्तो मणो णिरुंभित्ता ।
समवट्ठिदो सहावे सो अप्पाणं हवदि झादा ॥१९६॥

णिहदघणघादिकम्मो पच्चक्खं सव्वभावतच्चण्हू ।
णेयंतगदो समणो झादि कमट्ठं असंदेहो ॥१९७॥

सव्वाबाधविजुत्तो समंतसव्वक्खसोक्खणाणड्ढो ।
भूदो अक्खातीदो झादि अणक्खो परं सोक्खं ॥१९८॥

एवं जिणा जिणिंदा सिद्धा मग्गं समुट्ठिदा समणा ।
जादा णमोत्थु तेसिं तस्स य णिव्वाणमग्गस्स ॥१९९॥

तम्हा तह जाणित्ता अप्पाणं जाणगं सभावेण ।
परिवज्जामि ममत्तिं उवट्ठिदो णिम्ममत्तम्हि ॥२००/१॥

दंसणसंसुद्धाणं समण्णाणोवजोगजुत्ताणं ।
अव्वाबाधरदाणं णमो णमो सिद्धसाहूणं ॥२००/२॥

卐卐卐

चरणानुयोगसूच चूलिका

एवं पणमिय सिद्धे जिणवरसहे पुणो पुणो समणे ।
पडिवज्जदु सामण्णं जदि इच्छदि दुक्खपरिमोक्खं ।।२०१।।

आपिच्छ बंधुवग्गं विमोचिदो गुरुकलत्तपुत्तेहिं ।
आसिज्ज णाणदंसणचरित्ततववीरियायारं ।।२०२।।

समणं गणिं गुणड्ढं कुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदरं ।
समणेहि तं पि पणदो पडिच्छ मं चेदि अणुगहिदो ।।२०३।।

णाहं होमि परेसिं ण मे परे णत्थि मज्झमिह किंचि ।
इदि णिच्छिदो जिदिंदो जादो जधजादरूवधरो ।।२०४।।

जधजादरूवजादं उप्पाडिदकेसमंसुगं सुद्धं ।
रहिदं हिंसादीदो अप्पडिकम्मं हवदि लिंगं ।।२०५।।

मुच्छारंभविजुत्तं जुत्तं उवजोगजोगसुद्धीहिं ।
लिंगं ण परावेक्खं अपुणब्भवकारणं जेण्हं ।।२०६।।

आदाय तं पि लिंगं गुरुणा परमेण तं णमंसित्ता ।
सोच्चा सवदं किरियं उवट्ठिदो होदि सो समणो ।।२०७।।

वदसमिदिंदियरोधो लोचावस्सयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेगभत्तं च ।।२०८।।

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
तेसु पमत्तो समणो छेदोवट्ठावगो होदि ।।२०९।।

लिंगग्गहणे तेसिं गुरु त्ति पव्वज्जदायगो होदि ।
छेदेसूवट्ठवगा सेसा णिज्जावगा समणा ।।२१०।।

पयदम्हि समारद्धे छेदो समणस्स कायचेट्ठम्हि ।
जायदि जदि तस्स पुणो आलोयणपुव्विया किरिया ।।२११।।

छेदुवजुत्तो समणो समणं ववहारिणं जिणमदम्हि ।
आसेज्जालोचित्ता उवदिट्ठं तेण कायव्वं ॥२१२॥

अधिवासे व विवासे छेदविहूणो भवीय सामण्णे ।
समणो विहरदु णिच्चं परिहरमाणो णिबंधाणि ॥२१३॥

चरदि णिबद्धो णिच्चं समणो णाणम्हि दंसणमुहम्हि ।
पयदो मूलगुणेसु य जो सो पडिपुण्णसामण्णो ॥२१४॥

भत्ते वा खमणे वा आवसधे वा पुणो विहारे वा ।
उवधिम्हि वा णिबद्धं णेच्छदि समणम्हि विकधम्हि ॥२१५॥

अपयत्ता वा चरिया सयणासणठाणचंकमादीसु ।
समणस्स सव्वकाले हिंसा सा संतयि त्ति मदा ॥२१६॥

मरदु व जियदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदस्स ॥२१७/१॥

उच्चालियम्हि पाय इरियासमिदस्स णिग्गमत्थाए ।
आबाधेज्ज कुलिंगं मरिज्ज तं जोगमासेज्ज ॥२१७/२॥

ण हि तस्स तण्णिमित्तो बंधो सुहुमो य देसिदो समये ।
मुच्छा परिग्गहो च्चिय अज्झप्पपमाणदो दिट्ठो ॥२१७/३॥

अयदाचारो समणो छस्सु वि कायेसु वधकरो त्ति मदो ।
चरदि जदं जदि णिच्चं कमलं व जले णिरुवलेवो ॥२१८॥

हवदि व ण हवदि बंधो मदम्हि जीवेऽध कायचेट्ठम्हि ।
बंधो धुवमुवधीदो इदि समणा छड्डिया सव्वं ॥२१९॥

ण हि णिरवेक्खो चागो ण हवदि भिक्खुस्स आसयविसुद्धी ।
अविसुद्धस्स य चित्ते कहं णु कम्मक्खओ विहिदो ॥२२०/१॥

गेण्हदि व चेलखंडं भायणमत्थि त्ति भणिदमिह सुत्ते ।
जदि सो चत्तालंबो हवदि कहं वा अणारंभो ॥२२०/२॥

चरणानुयोगसूचक चूलिका

एवं पणमिय सिद्धे जिणवरसहे पुणो पुणो समणे ।
पडिवज्जदु सामण्णं जदि इच्छदि दुक्खपरिमोक्खं ॥२०१॥

आपिच्छ बंधुवग्गं विमोचिदो गुरुकलत्तपुत्तेहिं ।
आसिज्ज णाणदंसणचरित्ततववीरियायारं ॥२०२॥

समणं गणिं गुणड्ढं कुलरूववयोविसिट्ठमिट्ठदरं ।
समणेहि तं पि पणदो पडिच्छ मं चेदि अणुगहिदो ॥२०३॥

णाहं होमि परेसिं ण मे परे णत्थि मज्झमिह किंचि ।
इदि णिच्छिदो जिदिंदो जादो जधजादरूवधरो ॥२०४॥

जधजादरूवजादं उप्पाडिदकेसमंसुगं सुद्धं ।
रहिदं हिंसादीदो अप्पडिकम्मं हवदि लिंगं ॥२०५॥

मुच्छारंभविजुत्तं जुत्तं उवजोगजोगसुद्धीहिं ।
लिंगं ण परावेक्खं अपुणब्भवकारणं जेण्हं ॥२०६॥

आदाय तं पि लिंगं गुरुणा परमेण तं णमंसित्ता ।
सोच्चा सवदं किरियं उवट्ठिदो होदि सो समणो ॥२०७॥

वदसमिदिंदियरोधो लोचावस्सयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेगभत्तं च ॥२०८॥

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
तेसु पमत्तो समणो छेदोवट्ठावगो होदि ॥२०९॥

लिंगग्गहणे तेसिं गुरु त्ति पव्वजज्जदायगो होदि ।
छेदेसूवट्ठवगा सेसा णिज्जावगा समणा ॥२१०॥

पयदम्हि समारद्धे छेदो समणस्स कायचेट्ठम्हि ।
जायदि जदि तस्स पुणो आलोयणपुव्विया किरिया ॥२११॥

छेदुवजुत्तो समणो समणं ववहारिणं जिणमदम्हि ।
आसेज्जालोचित्ता उवदिट्ठं तेण कायव्वं ।।२१

अधिवासे व विवासे छेदविहूणो भवीय सामण्णे ।
समणो विहरदु णिच्चं परिहरमाणो णिबंधाणि ।।२१

चरदि णिबद्धो णिच्चं समणो णाणम्हि दंसणमुहम्हि ।
पयदो मूलगुणेसु य जो सो पडिपुण्णसामण्णो ।।२१

भत्ते वा खमणे वा आवसधे वा पुणो विहारे वा ।
उवधिम्हि वा णिबद्धं णेच्छदि समणम्हि विकधम्हि ।।२१

अपयत्ता वा चरिया सयणासणठाणचंकमादीसु ।
समणस्स सव्वकाले हिंसा सा संतयि त्ति मदा ।।२१

मरदु व जियदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदस्स ।।२१

उच्चालियम्हि पाय इरियासमिदस्स णिग्गमत्थाए ।
आबाधेज्ज कुलिंगं मरिज्ज तं जोगमासेज्ज ।।२१

ण हि तस्स तण्णिमित्तो बंधो सुहुमो य देसिदो समये ।
मुच्छा परिग्गहो च्चिय अज्झप्पपमाणदो दिट्ठो ।।२१

अयदाचारो समणो छस्सु वि कायेसु वधकरो त्ति मदो ।
चरदि जदं जदि णिच्चं कमलं व जले णिरुवलेवो ।।२

हवदि व ण हवदि बंधो मदम्हि जीवेऽध कायचेट्ठम्हि ।
बंधो धुवमुवधीदो इदि समणा छड्डिया सव्वं ।।२

ण हि णिरवेक्खो चागो ण हवदि भिक्खुस्स आसयविसु
अविसुद्धस्स य चित्ते कहं णु कम्मक्खओ विहिदो ।।२२

गेण्हदि व चेलखंडं भायणमत्थि त्ति भणिदमिह सुत्ते ।
जदि सो चत्तालंबो हवदि कहं वा अणारंभो ।।२२

वत्थक्खंडं दुद्दियभायणमण्णं च गेण्हदि णियदं ।
विज्जदि पाणारंभो विक्खेवो तस्स चित्तम्मि ॥२२०/३॥
गेण्हइ विधुणइ धोवइ सोसेइ जदं तु आदवे खित्ता ।
पत्तं व चेलखंड बिभेदि परदो य पालयदि ॥२२०/४॥
किध तम्हि णत्थि मुच्छा आरंभो वा असंजमो तस्स ।
तध परदव्वम्मि रदो कधमप्पाणं पसाधयदि ॥२२१॥
छेदो जेण ण विज्जदि गहणविसग्गेसु सेवमाणस्स ।
समणो तेणिह वट्टदु कालं खेत्तं वियाणित्ता ॥२२२॥
अप्पडिकुट्ठं उवधिं अपत्थणिज्जं असंज्जदजणेहि ।
मुच्छादिजणणरहिदं गेण्हदु समणो जदि वि अप्पं ॥२२३॥
किं किंचण त्ति तक्कं अपुणब्भवकामिणोध देहे वि ।
संग त्ति जिणवरिंदा अप्पडिकम्मत्तमुद्दिट्ठा ॥२२४/१॥
पेच्छदि ण हि इह लोगं परं च समणिंददेसिदो धम्मो ।
धम्मम्हि तम्हि कम्हा वियप्पियं लिंगमित्थीणं ॥२२४/२॥
णिच्छयदो इत्थीणं सिद्धि ण हि तेण जम्मणा दिट्ठा ।
तम्हा तप्पडिरूवं वियप्पियं लिंगमित्थीणं ॥२२४/३॥
पइडीपमादमइया एदासिं वित्ति भासिआ पमदा ।
तम्हा ताओ पमदा पमादबहुला त्ति णिद्दिट्ठा ॥२२४/४॥
संति धुवं पमदाणं मोहपदोसा भयं दुगुंछा य ।
चित्ते चित्ता माया तम्हा तासिं ण णिव्वाणं ॥२२४/५॥
ण विणा वट्टदि णारी एक्कं वा तेसु जीवलोयम्हि ।
ण हि संउडं च गत्तं तम्हा तासिं च संवरणं ॥२२४/६॥
चित्तस्सावो तासिं सित्थिल्लं अत्तवं च पक्खलणं ।
विज्जदि सहसा तासु अ उप्पादो सुहममणुआणं ॥२२४/७॥
लिंगम्हि य इत्थीणं थणंतरे णाहिकक्खपदेसेसु ।
भणिदो सुहमुप्पादो तासिं कह संजमो होदि ॥२२४/८॥

जदि दंसणेण सुद्धा सुत्तज्झयणेण चावि संजुत्ता ।
घोरं चरदि व चरियं इत्थिस्स ण णिज्जरा भणिदा ॥२२४/६।
तम्हा तं पडिरूवं लिंगं तासिं जिणेहिं णिद्दिट्ठं ।
कुलरूववओजुत्ता समणीओ तस्समाचारा ॥२२४/१०।
वण्णेसु तीसु एक्को कल्लाणंगो तवोसहो वयसा ।
सुमुहो कुच्छारहिदो लिंगग्गहणे हवदि जोग्गो ॥२२४/११।
जो रयणत्तयणासो सो भंगो जिणवरेहिं णिद्दिट्ठो ।
सेसं भंगेण पुणो णो होदि सल्लेहणाअरिहो ॥२२४/१२।
उवयरणं जिण मग्गे लिंगं जह जादरूवमिदि भणिद ।
गुरुवयणं पि य विणओ सुत्तज्झयणं य णिद्दिट्ठं ॥२२५।
इह लोग णिरावेक्खो अप्पडिबद्धो परम्मि लोयम्हि ।
जुत्ताहारविहारो रहिदकसाओ हवे समणो ॥२२६/१
जस्स अणेसणमप्पा तं पि तवो तप्पडिच्छगा समणा ।
अण्णं भिक्खमणेसणमध ते समणा अणाहारा ॥२२७/१
कोहादिएहिं चउहि वि विकहाहि तहिंदियाणमत्थेहिं ।
समणो हवदि पमत्तो उवजुत्तो णेहणिद्दाहिं ॥२२७/२
केवलदेहो समणो देहे ण ममत्ति रहिदपरिकम्मो ।
आजुत्तो तं तवसा अणिगूहिय अप्पणो सत्ति ॥२२८
एक्कं खलु तं भत्तं अप्पडिपुण्णोदरं जहालद्धं ।
चरणं भिक्खेण दिवा ण रसावेक्खं ण मधुमंसं ॥२२९/१
पक्केसु अ आमेसु अ विपच्चमाणासु मंसपेसीसु ।
संतत्तियमुववादो तज्जादीणं णिगोदाण ॥२२९/२
जो पक्कमपक्कं वा पेसी मंसस्स खादि फासदि वा ।
सो किल णिहणदि पिंडं जीवाणमणेगकोडीणं ॥२२९/३
अप्पडिकुट्ठं पिंडं पाणिगयं णेव देयमण्णस्स ।
दत्ता भोत्तुमजोग्गं भुत्तो वा होदि पडिकुट्ठो ॥२२९/

बालो वा वुड्ढो वा समभिहदो वा पुणो गिलाणो वा ।
चरियं चरदु सजोग्गं मूलच्छेदो जधा ण हवदि ।।२३०।।
आहारे व विहारे देसं कालं समं खमं उवधिं ।
जाणित्ता ते समणो वट्टदि जदि अप्पलेवी सो ।।२३१।।
एयग्गगदो समणो एयग्गं णिच्छिदस्स अत्थेसु ।
णिच्छित्ती आगमदो आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा ।।२३२।।
आगमहीणो समणो णेवप्पाणं परं वियाणादि ।
अविजाणंतो अत्थे खवेदि कम्माणि किध भिक्खू ।।२३३।।
आगमचक्खू साहू इंदियचक्खूणि सव्वभूदाणि ।
देवा य ओहिचक्खू सिद्धा पुण सव्वदो चक्खू ।।२३४।।
सव्वे आगमसिद्धा अत्था गुणपज्जएहिं चित्तेहिं ।
जाणंति आगमेण हि पेच्छित्ता ते वि ते समणा ।।२३५।।
आगमपुव्वा दिट्ठी ण भवदि जस्सेह संजमो तस्स ।
णत्थीदि भणदि सुत्तं असंजदो होदि किध समणो ।।२३६।।
ण हि आगमेण सिज्झदि सद्दहणं जदि वि णत्थि अत्थेसु।
सद्दहमाणो अत्थे असंजदो वा ण णिव्वादि ।।२३७।।
जं अण्णाणी कम्मं खवेदि भवसयसहस्सकोडीहिं ।
तं णाणी तिहिं गुत्तो खवेदि उस्सासमेत्तेण ।।२३८।।
परमाणुपमाणं वा मुच्छा देहादिएसु जस्स पुणो ।
विज्जदि जदि सो सिद्धिं ण लहदि सव्वागमधरो वि ।।२३९/१।।
चागो य अणारंभो विसयविरागो खओ कसायाणं ।
सो संजमो त्ति भणिदो पव्वज्जाए विसेसेण ।।२३९/२।।
पंचसमिदो तिगुत्तो पंचेंदियसंवुडो जिदकसाओ ।
दंसणणाणसमग्गो समणो सो संजदो भणिदो ।।२४०।।
समसत्तुबंधुवग्गो समसुहदुक्खो पसंसणिंदसमो ।
समलोट्ठुकंचणो पुण जीविदमरणे समो समणो ।।२४१।।

दंसणणाणचरित्तेसु तीसु जुगवं समुट्ठिदो जो दु ।
एयग्गगदो त्ति मदो सामण्णं तस्स पडिपुण्णं ।।२४२।।
मुज्झदि वा रज्जदि वा दुस्सदि वा दव्वमण्णमासेज्ज ।
जदि समणो अण्णाणी बज्झदि कम्मेहिं विविहेहिं ।।२४३।।
अट्ठेसु जो ण मुज्झदि ण हि रज्जदि णेव दोसमुवयादि ।
समणो जदि सो णियदं खवेदि कम्माणि विविहाणि ।।२४४।।
समणा सुद्धुवजुत्ता सुहोवजुत्ता य होंति समयम्हि ।
तेसु वि सुद्धुवजुत्ता अणासवा सासवा सेसा ।।२४५।।
अरहंतादिसु भत्ती वच्छलदा पवयणाभिजुत्तेसु ।
विज्जदि जदि सामण्णे सा सुहजुत्ता भवे चरिया ।।२४६।।
वंदणणमंसणेहिं अब्भुट्ठाणाणुगमणपडिवत्ती ।
समणेसु समावणओ ण णिंदिदा रागचरियम्हि ।।२४७।।
दंसणणाणुवदेसो सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं ।
चरिया हि सरागाणं जिणिंदपूजोवदेसो य ।।२४८।।
उवकुणदि जो वि णिच्चं चादुव्वण्णस्स समणसंघस्स ।
कायविराधणरहिदं सो वि सरागप्पधाणो से ।।२४९।।
जदि कुणदि कायखेदं वेज्जावच्चत्थमुज्जदो समणो ।
ण हवदि हवदि अगारी धम्मो सो सा ारणं से ।।२५०।।
जोण्हाणं णिरवेक्खं सागारणगारचरियजुत्ताणं ।
अणुकंपयोवयारं कुव्वदु लेवो जदि वि अप्पो ।।२५१।।
रोगेण वा छुधाए तण्हाए वा समेण वा रूढं ।
दिट्ठा समणं साहू पडिवज्जदु आदसत्तीए ।।२५२।।
वेज्जावच्चणिमित्तं गिलाणगुरुबालवुड्ढसमणाणं ।
लोगिगजणसंभासा ण णिंदिदा वा सुहोवजुदा ।।२५३।।
एसा पसत्थभूदा समणाणं वा पुणो घरत्थाणं ।
चरिया परेत्ति भणिदा ताएव परं लहदि सोक्खं ।।२५४।।

रागो पसत्थभूदो वत्थुविसेसेण फलदि विवरीदं ।
णाणाभूमिगदाणिह बीजाणिव सस्सकालम्हि ।।२५५।।

छदुमत्थविहिदवत्थुसु वदणियमज्झयणझाणदाणरदो ।
ण लहदि अपुणब्भावं भावं सादप्पगं लहदि ।।२५६।।

अविदिदपरमत्थेसु य विसयकसायाधिगेसु पुरिसेसु ।
जुट्ठं कदं व दत्तं फलदि कुदेवेसु मणुवेसु ।।२५७।।

जदि ते विसयकसाया पाव त्ति परूविदा व सत्थेसु ।
किह ते तप्पडिबद्धा पुरिसा णित्थारगा होंति ।।२५८।।

उवरदपावो पुरिसो समभावो धम्मिगेसु सव्वेसु ।
गुणसमिदिदोवसेवी हवदि स भागी सुमग्गस्स ।।२५९।।

असुभोवयोगरहिदा सुद्धुवजुत्ता सुहोवजुत्ता वा ।
णित्थारयंति लोगं तेसु पसत्थं लहदि भत्तो ।।२६०।।

दिट्ठा पगदं वत्थुं अब्भुट्ठाणप्पधाणकिरियाहिं ।
वट्टदु तदो गुणादो विसेसिदव्वो त्ति उवदेसो ।।२६१।।

अब्भुट्ठाणं गहणं उवासणं पोसणं च सक्कारं ।
अंजलिकरणं पणमं भणिदमिह गुणाधिगाणं हि ।।२६२।।

अब्भुट्ठेया समणा सुत्तत्थविसारदा उवासेया ।
संजमतवणाणड्ढा पणिवदणीया हि समणेहिं ।।२६३।।

ण हवदि समणो त्ति मदो संजमतवसुत्तसंपजुत्तो वि ।
जदि सद्दहदि ण अत्थे आदपधाणे जिणक्खादे ।।२६४।।

अववददि सासणत्थं समणं दिट्ठा पदोसदो जो हि ।
किरियासु णाणुमण्णदि हवदि हि सो णट्ठचारित्तो ।।२६५।।

गुणदोधिगस्स विणयं पडिच्छगो जो वि होमि समणो त्ति ।
होज्जं गुणाधरो जदि सो होदि अणंतसंसारी ।।२६६।।

अधिगगुणा सामण्णे वट्टंति गुणाधरेहि किरियासु ।
जदि ते मिच्छुवजुत्ता हवंति पब्भट्ठचारित्ता ।।२६७।।

णिच्छिदसुत्तत्थपदो समिदकसाओ तवोधिगो चावि ।
लोगिगजणसंसग्गं ण चयदि जदि संजदो ण हवदि ।।२६८/१।।

तिसिदं बुभुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठूण जो हि दुहिदमणो ।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अणुकंपा ।।२६८/२।।

णिग्गंथो पव्वइदो वट्टदि जदि एहिगेहिं कम्मेहिं ।
सो लोगिगो त्ति भणिदो संजमतवसंपजुत्तो वि ।।२६९।।

तम्हा समं गुणादो समणो समणं गुणेहि वा अहियं ।
अधिवसदु तम्हि णिच्चं इच्छदि जदि दुक्खपरिमोक्खं ।।२७०।।

जे अजधागहिदत्था एदे तच्च त्ति णिच्छिदा समये ।
अच्चंतफलसमिद्धं भमंति ते तो परं कालं ।।२७१।।

अजधाचारविजुत्तो जधत्थपदणिच्छिदो पसंतप्पा ।
अफले चिरं ण जीवदि इह सो संपुण्णसामण्णो ।।२७२।।

सम्मं विदिदपदत्था चत्ता उवहिं बहित्थमज्झत्थं ।
विसयेसु णावसत्ता जे ते सुद्धा त्ति णिद्दिट्ठा ।।२७३।।

सुद्धस्स य सामण्णं भणियं सुद्धस्स दंसणं णाणं ।
सुद्धस्स य णिव्वाणं सो च्चिय सिद्धो णमो तस्स ।।२७४।।

बुज्झदि सासणमेयं सागारणगारचरियया जुत्तो ।
जो सो पवयणसारं लहुणा कालेण पप्पोदि ।।२७५।।

इति प्रवचनसार [पवयणसारो]



श्री कुन्दकुन्दाइरियकदो

णियमसारो

।िवाधिकार

णमिऊण जिणं वीरं अणंतवरणाणदंसणसहावं ।
वोच्छामि णियमसारं केवलिसुदकेवलीभणिदं ।।१।।

मग्गो मग्गफलं ति य दुविहं जिणसासणे समक्खादं ।
मग्गो मक्खउवाओ तस्स फलं होइ णिव्वाणं ।।२।।

णियमेण य जं कज्जं तं णियमं णाणदंसणचरित्तं ।
विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं ।।३।।

णियमं मोक्खउवाओ तस्स फलं हवदि परमणिव्वाणं ।
एदेसिं तिण्हं पि य पत्तेयपरुवणा होइ ।।४।।

अत्तागमतच्चाणं सद्दहणादो हवेइ सम्मत्तं ।
ववगयअसेसदोसो सयलगुणप्पा हवे अत्तो ।।५।।

छुहतण्हभीरुरोसो रागो मोहो चिंता जरा रूजा मिच्चू ।
सेदं खेदं मदो रइ विम्हियणिद्दा जणुव्वेगो ।।६।।

णिस्सेसदोसरहिओ केवलणाणाइपरमविभवजुदो ।
सो परमप्पा उच्चइ तव्विवरीओ ण परमप्पा ।।७।।

तस्स मुहुग्गदवयणं पुव्वावरदोसविरहियं सुद्धं ।
आगममिदि परिकहियं तेण दु कहिया हवंति तच्चत्था ।।८।।

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य काल आयासं ।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणागुणपज्जएहिं संजुत्ता ।।९।।

जीवो उवओगमओ उवओगो णाणदंसणो होइ ।
णाणुवओगो दुविहो सहावणाणं विहावणाणं ति ॥१०॥

केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावणाणं ति ।
सण्णाणिदरवियप्पे विहावणाणं हवे दुविहं ॥११॥

सण्णाणं चउभेयं मदिसुदओही तहेव मणपज्जं ।
अण्णाणं तिवियप्पं मदियाई भेददो चेव ॥१२॥

तह दंसणउवओगो ससहावेदरवियप्पदो दुविहो ।
केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावमिदि भणिदं ॥१३॥

चक्खु अचक्खु ओही तिण्णि वि भणिदं विभावदिट्ठि त्ति ।
पज्जाओ दुवियप्पो सपरावेक्खो य णिरवेक्खो ॥१४॥

णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विभावमिदि भणिदा ।
कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया ते सहावमिदि भणिदा ॥१५॥

माणुस्सा दुवियप्पा कम्ममहीभोगभूमिसंजादा ।
सत्तविहा णेरइया णादव्वा पुढविभेदेण ॥१६॥

चउदहभेदा भणिदा तेरिच्छा सुरगणा चउब्भेदा ।
एदेसिं वित्थारं लोयविभागेसु णादव्वं ॥१७॥

कत्ता भोत्ता आदा पोग्गलकम्मस्स होदि ववहारा ।
कम्मजभावेणादा कत्ता भोत्ता दु णिच्छयदो ॥१८॥

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया ।
पज्जयणयेण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं ॥१९॥

— —

जीवाधिकार

अणुखंधविपप्पेण दु पोग्गलदव्वं हवेइ दुवियप्पं ।
खंधा हु छप्पयारा परमाणु चेव दुवियप्पो ।।२०।।

अइथूलथूल थूलं थूलसुहुमं च सुहुमथूलं च ।
सुहुमं अइसुहुमं इदि धरादियं होदि छब्भेयं ।।२१।।

भूपव्वदमादीया भणिदा अइथूलथूलमिदि खंधा ।
थूला इदि विण्णेया सप्पीजलतेल्लमादीया ।।२२।।

छायातवमादीया थूलेदरखंधमिदि वियाणाहि ।
सुहुमथूलेदि भणिया खंधा चउरक्खविसया य ।।२३।।

सुहुमा हवंति खंधा पाश्रोग्गा कम्मवग्गणस्स पुणो ।
तव्विवरीया खंधा अइसुहुमा इदि परूवेंति ।।२४।।

धाउचउक्कस्स पुणो जं हेऊ कारणं ति तं णेयो ।
खंधाणं उवसाणं णादव्वो कज्जपरमाणु ।।२५।।

अत्तादि अत्तमज्झं अत्तंतं णेव इंदियग्गेज्झं ।
अविभागी जं दव्वं परमाणू तं वियाणाहि ।।२६।।

एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं ।
विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं ।।२७।।

अण्णणिरावेक्खो जो परिणामो सो सहावपज्जाश्रो ।
खंधसरुवेण पुणो परिणामो सो विहावपज्जाश्रो ।।२८।।

पोग्गलदव्वं उच्चइ परमाणू णिच्छएण इदरेण ।
पोग्गलदव्वो त्ति पुणो ववदेसो होदि खंधस्स ।।२९।।

गमणणिमित्तं धम्ममधम्मं ठिदिजीवपोग्गलाणं च ।
अवगहणं आयासं जीवादीसव्वदव्वाणं ।।३०।।

समयावलिभेदेण दु दुवियप्पं अहव होइ तिवियप्पं ।
तीदो संखेज्जावलिहदसंठाणप्पमाणं तु ॥३१॥

जीवादु पुग्गलादो णंतगुणा चावि (भावि) संपदा समया ।
लोयायासे संति य परमट्ठो सो हवे कालो ॥३२॥

जीवादीदव्वाणं परिवट्टणकारणं हवे कालो ।
धम्मादिचउण्हं णं सहावगुणपज्जया होंति ॥३३॥

एदे छद्दव्वाणि य कालं मोत्तूण अत्थिकाय त्ति ।
णिद्दिट्ठा जिणसमये काया हु बहुप्पदेसत्तं ॥३४॥

संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसा हवंति मुत्तस्स ।
धम्माधम्मस्स पुणो जीवस्स असंखदेसा हु ॥३५॥

लोयायासे तावं इदरस्स अणंतयं हवे देसा ।
कालस्स ण कायत्तं एयपदेसो हवे जम्हा ॥३६॥

पोग्गलदव्वं मुत्तं मुत्तिविरहिया हवंति सेसाणि ।
चेदणभावो जीवो चेदणगुणवज्जिया सेसा ॥३७॥



शुद्धभा धिकार

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा ।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ॥३८॥

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा ।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा ॥३९॥

णो ठिदिबंधट्ठाणा पयडिट्ठाणा पदेस ठाणा वा ।
णो अणुभागट्ठाणा जीवस्स ण उदयठाणा वा ॥४०॥

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा ।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा ॥४१॥

चउगइभवसंभमणं जाइजरामरणरोगसोगा य ।
कुलजोणिजीवमग्गणठाणा जीवस्स णो संति ॥४२॥

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्ममो णिक्कलो णिरालंबो ।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा ॥४३॥

णिग्गंथो णीरागो णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मुक्को ।
णिक्कामो णिक्कोहो णिम्माणो णिम्मदो अप्पा ॥४४॥

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणंउसयादिपज्जाया ।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति ॥४५॥

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥४६॥

जारिसिसा सिद्धप्पा भवमल्लिय जीव तारिसा होंति ।
जरमरणजम्ममुक्का अट्ठगुणालंकिया जेण ॥४७॥

असरीरा अविणासा अणिंदिया णिम्मला विसुद्धप्पा ।
जह लोयग्गे सिद्धा तह जीवा संसिदी णेया ॥४८॥

एदे सव्वे भावा ववहारणयं पडुच्च भणिदा हु ।
सव्वे सिद्धसहावा सुद्धणया संसिदी जीवा ॥४९॥

पुव्वुत्तसयलभावा परदव्वं परसहावमिदि हेयं ।
सगदव्वमुपादेयं अंतरतच्चं हवे अप्पा ॥५०॥

विवरीयाभिणिवेस विवज्जिय सद्दहणमेव सम्मत्तं ।
संसयविमोहविब्भमविवज्जियं होदि सण्णाणं ॥५१॥

चलमलिणमगाढत्तविवज्जियसद्दहणमेव सम्मत्तं ।
अधिगमभावो णाणं हेयोवादेयतच्चाणं ॥५२॥

सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा ।
अंतरहेऊ भणिदा दंसणमोहस्स खयपहुदी ।।५३।।

सम्मत्तं सण्णाणं विज्जदि मोक्खस्स होदि सुण चरणं ।
ववहारणिच्छएण दु तम्हा चरणं पवक्खामि ।।५४।।

ववहारणयचरित्ते ववहारणयस्य होदि तवचरणं ।
णिच्छयणयचारित्ते तवचरणं होदि णिच्छयदो ।।५५।।

व्यवहारचारित्राधिकार

कुलजोणिजीवमग्गणठाणाइसु जाणिऊण जीवाणं ।
तस्सारंभणियत्तणपरिणामो होइ पढमवदं ।।५६।।

रागेण व दोसेण व मोहेण व मोसभासपरिणामं ।
जो पजहदि साहु सया बिदियवदं होइ तस्सेव ।।५७।।

गामे वा णयरे वाऽरण्णे वा पेच्छिऊण परमत्थं ।
जो मुयदि गहणभावं तिदियवदं होदि तस्सेव ।।५८।।

दट्ठूण इत्थिरूवं वांछाभावं णियत्तदे तासु ।
मेहुणसण्णविवज्जियपरिणामो अहव तुरीयवदं ।।५९।।

सव्वेसिं गंथाणं तागो णिरवेक्खभावणापुव्वं ।
पंचमवदमिदि भणिदं चारित्तभरं वहंतस्स ।।६०।।

पासुगमग्गेण दिवा अवलोगंतो जुगप्पमाणं हि ।
गच्छइ पुरदो समणो इरियासमिदी हवे तस्स ।।६१।।

पेसुण्णहासकक्कसपरणिंदप्पप्पसंसियं वयणं ।
परिचत्ता सपरहिदं भासासमिदी वंदतस्स ।।६२।।

कदकारिदाणुमोदणरहिदं तह पासुगं पसत्थं च ।
दिण्णं परेण भत्तं समभुत्ती एसणासमिदी ॥६३॥

पोत्थइकमंडलाइं गहणविसग्गेसु पयतपरिणामो ।
आदावणणिक्खेवणसमिदी होदि त्ति णिद्दिट्ठा ॥६४॥

पासुगभूमिपदेसे गूढे रहिए परोपरोहेण ।
उच्चारादिच्चागो पइट्ठासमिदी हवे तस्स ॥६५॥

कालुस्समोहसण्णारागद्दोसाइअसुह भावाणं ।
परिहारो मणुगुत्ती ववहारणयेण परिकहियं ॥६६॥

थीराजचोरभत्तकहादिवयणस्स पावहेउस्स ।
परिहारो वयगुत्ती अलियादिणियत्तिवयणं वा ॥६७॥

बंधणछेदणमारणआकुंचण तह पसारणादीया ।
कायकिरियाणियत्ती णिद्दिट्ठा कायगुत्ति त्ति ॥६८॥

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणीहि तं मणोगुत्ती ।
अलियादिणियत्तिं वा मोणं वा होई वइगुत्ती ॥६९॥

कायकिरियाणियत्ती काउस्सग्गो सरीरगे गुत्ती ।
हिंसाइणियत्ती वा सरीरगुत्ति त्ति णिद्दिट्ठा ॥७०॥

घणघाइकम्मरहिया केवलणाणाइपरमगुणसहिया ।
चोत्तिस्सअदिसयजुत्ता अरिहंता एरिसा होंति ॥७१॥

णट्ठट्ठकम्मबंधा अट्ठमहागुणसमण्णिया परमा ।
लोयग्गठिदा णिच्चा सिद्धा ते एरिसा होंति ॥७२॥

पंचाचारसमग्गा पंचिंदियदंतिदप्पणिद्दलणा ।
धीरा गुणगंभीरा आयरिया एरिया होंति ॥७३॥

रयणत्तय संजुत्ता जिणकहियपयत्थदेसया सूरा ।
णिक्कंखभावसहिया उवज्झाया एरिसा होंति ॥७४॥

वावारविप्पमुक्का चउव्विहा राहणासयारत्ता ।
णिग्गंथा णिम्मोहा साहूदे एरिसा होंति ॥७५॥
एरिसयभावणाए ववहारणयस्स होदि चारित्तं ।
णिच्छयणयस्स २रणं उड्ढं पवक्खामि ॥७६॥

परमार्थप्रतिः णाधि ार

णादं णारयभावो तिरियत्थो मणुवदेवपज्जाओ ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं ॥७७॥
णाहं मग्गणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं ॥७८॥
णाहं बालो बुड्ढो ण चेव तरुणो ण कारणं तेसिं ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीण ॥७९॥
णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारणं तेसिं ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंत्ता णेव कत्तीणं ॥८०॥
णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं ।
कत्ता ण हि कारइदा अण मंत्ता णेव कत्तीणं ॥८१॥
एरिसभेदब्भासे मज्झत्थो होदि तेण चारित्तं ।
तं दिढकरणणिमित्तं पडिक्कमणादी पवक्खामि ॥८२॥
मोत्तूण वयणरयणं रागादीभाववारणं किच्चा ।
अप्पाणं जो झायदि तस्स दु होदो त्ति पडिकमणं ॥८३॥
आराहणाइ वट्टइ मोत्तूण विराहणं विसेसेण ।
सो पडिकमण उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥८४॥

मोत्तूण अणायारं आयारे जो दु कुणदि थिरभावं ।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८५।।

उम्मग्गं परिचत्ता जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभावं ।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८६।।

मोत्तूण सल्लभाव णिस्सल्ले जो दु साहु परिणमदि ।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८७।।

चत्ता अगुत्तिभावं त्तिगुत्तिगुत्तो हवेइ जो साहू ।
सो पडिकमण उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८८।।

मोत्तूण अट्टरुद्दं झाण जो झादि धम्मसुक्कं वा ।
सो पडिकमण उच्चइ जिणवरणिद्दिट्ठसुत्तेसु ।।८९।।

मिच्छत्तपहुदिभावा पुव्वं जीवेण भाविया सुइरं ।
सम्मत्तपहुदिभावा अभाविया होंति जीवेण ।।९०।।

मिच्छादंसणणाणचरित्तं चइऊण णिरवसेसेण ।
सम्मत्तणाणचरणं जो भावइ सो पडिक्कमणं ।।९१।।

उत्तमअट्ठं आदा तम्हि ठिदा हणदि मुणिवरा कम्मं ।
तम्हा दु झाणमेव हि उत्तमअट्ठस्स पठिकमणं ।।९२।।

झाणणिलीणो साहू परिचागं कुणइ सव्वदोसाणं ।
तम्हा दु झाणमेव हि सव्वदिचारस्स पडिक्कमणं ।।९३।।

पडिकमणणामधेये सुत्ते जह वण्णिदं पडिक्कमणं ।
तह णच्चा जो भावइ तस्स तदा होदि पडिक्कमण ।।९४।।

निश्चयप्रत्याख्यानाधिकार

मोत्तूण सयलजप्पमणागयसुहमसुहवारणं किच्चा ।
अप्पाणं जो झायदि पच्चक्खाण हवे तस्स ।।९५।।

केवलणाणसहावो केवलदंसणसहावसुहमइओ ।
केवलसत्तिसहावो सो हं इदि चितए णाणी ।।९६।।

णियभावं णवि मुच्चइ परभाव णेव गेण्हए केइ ।
जाणदि पस्सदि सव्वं सो हं इदि चितए णाणी ।।९७।।

पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबंधेहि वज्जिदो अप्पा ।
सो हं इदि चिंतिज्जो तत्थेव य कुणदि थिरभावं ।।९८।।

ममत्ति परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो ।
आलवणं च मे आदा अवसेसं च वोसरे ।।९९।।

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य ।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे ।।१००।।

एगो य मरदि जीवो एगो य जीवदि सयं ।
एगस्स जादि मरणं एगो सिज्झदि णीरओ ।।१०१।।

एगो मे सासदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो ।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ।।१०२।।

जं किंचि मे दुच्चरित्तं सव्वं तिविहेण वोसरे ।
सामाइयं तु तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं ।।१०३।।

सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि ।
आसाए वोसरित्ता णं समाहि पडिवज्जए ।।१०४।।

णिक्कसायस्स दंतस्स सूरस्स ववसायिणो ।
संसारभयभीदस्स पच्चक्खाणं सुहं हवे ।।१०५।।

एवं भेदब्भासं जो कुव्वइ जीवकम्मणो णिच्चं ।
पच्चक्खाणं सक्कदि धरिदुं सो संजदो णियमा ॥१०६॥

परमालोचनाधि ार

णोकम्मकम्मरहियं विहावगुणपज्जएहिं वदिरित्तं ।
अप्पाणं जो झायदि समणस्सालोयणं होदि ॥१०७॥

आलोयणमालुंछण वियडीकरणं च भावसुद्धी य ।
चउविहमिह परिकहियं आलोयणलक्खणं समये ॥१०८॥

जो पस्सदि अप्पाणं समभावे संठवित्तु परिणामं ।
आलोयणमिदि जाणह परमजिणिंदस्स उवएसं ॥१०९॥

कम्ममहीरुहमूलच्छेदसमत्थो सकीयपरिणामो ।
साहीणो समभावो आलुंछणमिदि समुद्दिट्ठं ॥११०॥

कम्मादो अप्पाणं भिण्णं भावेइ विमलगुणणिलयं ।
मज्झत्थभावणाए वियडीकरणं त्ति विण्णेयं ॥१११॥

मदमाणमायलोहविवज्जियभावो दु भावसुद्धि त्ति ।
परिकहियं भव्वाणं लोयालोयप्पदरसीहिं ॥११२॥

शुद्धनिश्चयप्रायश्चित्ताधि ार

वदसमिदिसीलसंजमपरिणामो करणणिग्गहो भावो ।
सो हवदि पायछित्तं अणवरयं चेव कायव्वो ॥११३॥

कोहादिसगब्भावक्खयपहुदिभावणाए णिग्गहणं ।
पायच्छित्तं भणिदं णियगुणचिंता य णिच्छयदो ॥११४॥

कोहं खमया माणं समद्दवेणज्जवेण मायं च ।
संतोसेण य लोहं जयदि खु ए चउविहकसाए ।।११५।।

उक्किट्ठो जो बोहो णाणं तस्सेव अप्पणोचित्तं ।
जो धरइ मुणी णिच्चं पायच्छित्तं हवे तस्स ।।११६।।

किं बहुणा भणिएण दु वरतवचरणं महेसिणं सव्वं ।
पायच्छित्तं जाणह अणेयकम्माण खयहेऊ ।।११७।।

णंताणंतभवेण समज्जियसुहअसुहकम्मसंदोहो ।
तवचरणेण विणस्सदि पायच्छित्तं तवं तम्हा ।।११८।।

अप्पसरुवालंबणभावेण दु सव्वभावपरिहारं ।
सक्कदि कादुं जीवो तम्हा झाणं हवे सव्वं ।।११९।।

सुहअसुहवयणरयणं रायादीभाववारणं किच्चा ।
अप्पाणं जो झायदि तस्स दु णियमं हवे णियमा ।।१२०।।

कायाईपरदव्वे थिरभावं परिहरत्तु अप्पाणं ।
तस्स हवे तणुसग्गं जो झायइ णिव्वियप्पेण ।।१२१।।

पर ाध्याधि ार

वयणोच्चारणकिरियं परिचत्ता वीयरायभावेण ।
जो झायदि अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स ।।१२२।।

संजमणियमतवेण दु धम्मज्झाणेण सुक्कझाणेण ।
जो झायइ अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स ।।१२३।।

किं काहदि वणवासो कायकिलेसो विचित्तउववासो ।
अज्झयणमोणपहुदी समदारहियस्स समणस्स ।।१२४।।

विरदो सव्वसावज्जे त्तिगुत्तो पिहिंदिदिश्रो ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१२५॥
जो समो सव्वभूदेसु थावरेसु तसेसु वा ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१२६॥
जस्स संण्णिहिदो अप्पा संजमे णियमे तवे ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१२७॥
जस्स रागो दु दोसो दु विगडिं ण जाणेइ दु ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१२८॥
जो दु अट्टं च रुद्दं च झाणं वज्जेदि णिच्चसो ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१२९॥
जो दु पुण्णं च पावं च भावं वज्जेदि णिच्चसो ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१३०॥
जो दु हस्सं रई सोगं अरदिं वज्जेदि णिच्चसो ।
सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१३१॥
जो दुगुंछा भयं वेदं सव्वं वज्जेदि णिच्चसो ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१३२॥
जो दु धम्मं च सुक्कं च झाणं झाएदि णिच्चसो ।
तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥१३३॥



पर भक्त्यधिकार

सम्मत्तणाणचरणे जो भत्ति कुणइ सावगो समणो ।
तस्स दु णिव्वुदिभत्ती होदि त्ति जिणेहि पण्णत्तं ॥१३४॥
मोक्खंगयपुरिसाणं गुणभेदं जाणिऊण तेसिं पि ।
जो कुणदि परमभत्ति ववहारणयेण परिकहियं ॥१३५॥

मोक्खपहे अप्पाणं ठविऊण य कुणदि णिव्वुदी भत्ती ।
तेण दु जीवो पावइ असहायगुणं णियप्पाणं ॥१३६॥

रायादीपरिहारे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू ।
सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य किह हवे जोगो ॥१३७॥

सव्वविअप्पाभावे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू ।
सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य किह हवे जोगो ॥१३८॥

विवरीयाभिणिवेसं परिचत्ता जोण्हकहियतच्चेसु ।
जो जुंजदि अप्पाणं णियभावो सो हवे जोगो ॥१३९॥

उसहादिजिणवरिंदा एवं काऊण जोगवरभत्ति ।
णिव्वुदिसुहमावण्णा तम्हा धरु जोगवरभत्ति ॥१४०॥

११ परमावश्यक अधिकार

जो ण हवदि अण्णवसो तस्स दु कम्मं भणंति आवासं ।
कम्मविणासणजोगो णिव्वुदिमग्गो त्ति पिज्जुत्तो ॥१४१॥

ण वसो अवसो अवसस्स कम्म वावस्सयं त्ति बोद्धव्वा ।
जुत्ति त्ति उवाअं त्ति य णिरवयवो होदि णिज्जुत्ती ॥१४२॥

वट्टदि जो सो समणो अण्णवसो होदि असुहभावेण ।
तम्हा तस्स दु कम्मं आवस्सयलक्खणं ण हवे ॥१४३॥

जो चरदि संजदो खलु सुहभावे सो हवेइ अण्णवसो ।
तम्हा तस्स दु कम्मं आवस्सयलक्खणं ण हवे ॥१४४॥

दव्वगुणपज्जयाणं चित्तं जो कुणइ सो वि अण्णवसो ।
मोहंधयारववगयसमणा कहयंति एरिसयं ॥१४५॥

रिचत्ता परभावं अप्पाणं झादि णिम्मलसहावं ।
प्पवसो सो होदि हु तस्स हु कम्मं भणंति आयासं ॥१४६॥

आवासं जइ इच्छसि अप्पसहावेसु कुणदि थिरभावं ।
तेण दु सामण्णगुणं संपुण्णं होदि जीवस्स ।।१४७।।

आवासएण हीणो पब्भट्ठो होदि चरणदो समणो ।
पुव्वुत्तकमेण पुणो तम्हा आवासयं कुज्जा ।।१४८।।

आवासएण जुत्तो समणो सो होदि अंतरंगप्पा ।
आवासयपरिहीणो समणो सो होदि बहिरप्पा ।।१४९।।

अंतरबाहिरजप्पे जो वट्टइ सो हवेइ बहिरप्पा ।
जप्पेसु जो ण वट्टइ सो उच्चइ अंतरंगप्पा ।।१५०।।

जो धम्मसुक्कझाणम्मि परिणदो सो वि अंतरंगप्पा ।
झाणविहीणो समणो बहिरप्पा इति विजाणीहि ।।१५१।।

पडिकमणपहुदिकिरियं कुव्वंतो णिच्छयस्स चारित्तं ।
तेण दु विरागचरिए समणो अब्भुट्ठिदो होदि ।।१५२।।

वयणमयं पडिकमणं वयणमय पच्चक्खाण णियमं च ।
आलोयण वयणमयं तं सव्वं जाण सज्झायं ।।१५३।।

जदि सक्कदि कादुं जे पडिकमणादिं करेज्ज झाणमयं ।
सत्तिविहीणो जा जइ सद्दहणं चेव कायव्वं ।।१५४।।

जिणकहियपरमसुत्ते पडिकमणादिय परीक्खऊण फुडं ।
मोणव्वएण जोई णियकज्जं साहये णिच्चं ।।१५५।।

णाणा जीवा णाणा कम्मं णाणाविहं हवे लद्धी ।
तम्हा वयणविवादं सगपरसमएहिं वज्जिज्जो ।।१५६।।

लद्धूण णिहिं एक्को तस्स फलं अणुहवेइ सुजणत्ते ।
तह णाणी णाणणिहिं भुंजेइ चइत्तु परतत्ति ।।१५७।।

सव्वे पुराणपुरिसा एवं आवासयं च काऊण ।
अपमत्तपहुदिठाणं पडिवज्ज य केवली जादा ।।१५८।।

णाणं जीवसरूवं तम्हा जाणेइ अप्पगं अप्पा ।
अप्पाणं ण वि जाणदि अप्पादो होदि वदिरित्तं ॥१७०॥

अप्पाणं विणु णाणं णाणं विणु अप्पगो ण संदेहो ।
तम्हा सपरपयासं णाणं तह दसणं होदि ॥१७१॥

जाणंतो पस्संतो ईहापुव्वं ण होइ केवलिणो ।
केवलणाणी तम्हा तेण दु सोऽबधगो भणिदो १७२॥

परिणामपुव्ववयणं जीवस्स य बधकारणं होइ ।
परिणामरहियवयणं तम्हा णाणिस्स ण हि बंधो ॥१७३॥

ईहापुव्वं वयणं जीवस्स य बंधकारणं होइ ।
ईहारहियं वयणं तम्हा णाणिस्स ण हि बंधो ॥१७४॥

ठाणणिसेज्जविहारा ईहापुव्व ण होइ केवलिणो ।
तम्हा ण होइ बंधो साक्खट्ठं मोहणीयस्स ॥१७५॥

आउस्स खयेण पुणो णिण्णासो होइ सेसपयडीणं ।
पच्छा पावइ सिग्घं लोयग्गं यमेत्तेण ॥१७६॥

जाइजरमरणरहियं परमं कम्मट्ठवज्जियं सुद्धं ।
णाणाइचउसहावं अक्खयमविणासमच्छेयं ॥१७७॥

अव्वाबाहमणिंदियमणोवमं पुण्णपावणिम्मुक्कं ।
पुणरागमणविरहियं णिच्चं अचलं अणालबं ॥१७८॥

णवि दुक्खं णवि सुक्खं णवि पीडा णेव विज्जदे बाधा ।
णवि मरण णवि जणणं तत्थेव य होइ णिव्वाणं ॥१७९॥

णवि इंदिय उवसग्गा णवि मोहो विम्हियो ण णिद्दा य।
ण य तिण्हा णेव छुहा तत्थेव य होइ णिव्वाणं ॥१८०॥

णवि कम्मं णोकम्मं णवि चिंता णेव अट्टरुद्दाणि ।
णवि धम्मसुक्कझाणे तत्थेव य होइ णिव्व ण ॥१८१॥

सिरिकुंदकुंदाइरियकदो

पंचत्थिकायसंगहो

इंदसदवंदियाणं तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं ।
अंतातीदगुणाणं णमो जिणाणं जिदभवाणं ॥१॥

णमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं ।
एसो पणमिय सिरसा समयमियं सुणह वोच्छामि ॥२॥

समवाओ पंचण्हं समओ त्ति जिणुत्तमेहि पण्णत्तं ।
सो चेव हवदि लोगो तत्तो अमिओ अलोगो खं ॥३॥

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आगासं ।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता ॥४॥

जेसिं अत्थि सहाओ गुणेहिं सह पज्जएहिं विविहेहिं ।
ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्ण जेहिं तइलोक्कं ॥५॥

ते चेव अत्थिकाया तेकालियभावपरिणदा णिच्चा ।
गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता ॥६॥

अण्णोण्णं पविसंता देंता ओगासमण्णमण्णस्स ।
मेलंता वि णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति ॥७॥

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया ।
भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का ॥८॥

दवियदि गच्छदि ताइं ताइं सब्भावपज्जयाइं जं ।
दवियं तं भण्णंते अणंणभूदं तु सत्तादो ॥९॥

दव्वं सल्लक्खणयं उप्पादव्वयधुव जुत्तं ।
गुणपज्जयासय वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू ॥१०॥

उप्पत्ती व विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो ।
विगमुप्पादधुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया ॥११॥
पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि ।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूविंति ॥१२॥
दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि ।
अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा ॥१३॥
सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं ।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि ॥१४॥
भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो ।
गुणपज्जयेसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति ॥१५॥
भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो ।
सुरणरणारयतिरिया जीवस्य य पज्जया बहुगा ॥१६॥
मणुसत्तणेण णट्ठो देही देवो हवेदि इदरो वा ।
उभयत्थ जीवभावो ण णस्सदि ण जायदे अण्णो ॥१७॥
सो चेव जादि मरणंजादि ण णट्ठोण चेव उप्पण्णो ।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुओ त्ति पज्जाओ ॥१८॥
एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो ।
तावदिओ जीवाणं देवो मणुसो त्ति गदिणामो ॥१९॥
णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा ।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो ॥२०॥
एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च ।
गुणपज्जयेहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो ॥२१॥
जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा ।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स ॥२२॥

सब्भावसभावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च ।
परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो ॥२३॥

ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो य ।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालो त्ति ॥२४॥

समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती ।
मासो दु अयणसंवच्छरोत्ति कालो परायत्तो ॥२५॥

णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहिदं तु सा वि खलु मत्ता ।
पोग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्चभवो ॥२६॥

जीवोत्ति हवदि चेदा उवओगविसेसिदो पहू कत्ता ।
भोत्ता य देहमेत्तो ण हि मुत्तो कम्मसंजुत्तो ॥२७॥

कम्ममलविप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता ।
सो सव्वणाणदरिसी लहदि सुहमणिंदियमणंतं ॥२८॥

जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्वलोगदरसी य ।
पप्पोदि सुहमणंतं अव्वाबाधं सगममुत्तं ॥२९॥

पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं ।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ-उस्सासो ॥३०॥

अगुरुलहुगा अणंता तेहिं अणंतेहिं परिणदा सव्वे ।
देसेहिं असंखादा सिय लोगं सव्वमावण्णा ॥३१॥

केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसणकसायजोगजुदा ।
विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा ॥३२॥

जह पउमरायरयणं खित्तं खीरे पभासयदि खीरं ।
तह देही देहत्थो सदेहमेत्तं पभासयदि ॥३३॥

सव्वत्थ अत्थि जीवो ण य एक्को एक्ककाय एक्कट्ठो ।
अज्झवसाणविसिट्ठो चेट्ठदि मलिणो रजमलेहिं ॥३४॥

जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सव्वहा तस्स ।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा ॥३५॥

ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो ।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि ॥३६॥

सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च ।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे ॥३७॥

कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमध एक्को ।
चेदयदि जीवरासो चेदगभावेण तिविहेण ॥३८॥

सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्जजुदं ।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विदंति ते जीवा ॥३९॥

उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो ।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि ॥४०॥

आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि णाणाणि पंचभेयाणि ।
कुमदिसुदविभंगाणि य तिण्णि व णाणेहिं संजुत्ते ॥४१॥

दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खुजुदमवि य ओहिणा सहियं ।
अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं ॥४२॥

ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि ।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियं ति णाणीहिं ॥४३॥

जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदो अण्णे ।
दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति ॥४४॥

अविभत्तमणण्णत्तं दव्वगुणाणं विभत्तमण्णत्तं ।
णेच्छन्ति णिच्छयण्हू तव्विवरीदं हि वा तेसिं ॥४५॥

ववदेसा संठाणा संखा विसया य होंति ते बहुगा ।
ते तेसिमणण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते ॥४६॥

णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुवेधेहिं ।
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू ॥४७॥
णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदा दु अण्णमण्णस्स ।
दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं ॥४८॥
ण हि समवायादो अत्थंतरिदो दु णाणदो णाणी ।
अण्णाणीति य वयणं एगत्तपसाधगं होदि ॥४९॥
वत्तो समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य ।
तम्हा दव्वगुणाणं अजुदासिद्धित्ति णिद्दिट्ठा ॥५०॥
वण्णरसगंधफासा परमाणुपरूविदा विसेसेहिं ।
दव्वादो य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति ॥५१॥
दंसणणाणाणि तहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि ।
देसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो ॥५२॥
जीवा अणाइणिहणा ा णाता य जीवभावादो ।
सब्भावदो अणंता पंचग्गगुणप्पधाणा य ॥५३॥
एवं ो विणासो असदो जीवस्स होइ उप्पादो ।
इदि जिणवरेहिं भणिदं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं ॥५४॥
णेरइयतिरियमणुआ देवा इदि णामसंजुदा पयडी ।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं ॥५५॥
उदयेण उवसमेण य खयेण दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे ।
जुत्ता ते जीवगुणा बहुसु य अत्थेसु विच्छिण्णा ॥५६॥
कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं ।
सो तेण तस्स कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं ॥५७॥
कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा ।
खइयं ोवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं ॥५८॥

भावो जदि कम्मकदोअत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता ।
ण कुणदि अत्ता किंचि वि मुत्ता अण्णं सगं भावं ॥५९॥

भावो कम्मणिमित्तो कम्मं पुण भावकारणं हवदि ।
ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं ॥६०॥

कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स ।
ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेयव्वं ॥६१॥

कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं ।
जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण ॥६२॥

कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं ।
किध तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं ॥६३॥

ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो ।
सुहुमेहिं बादरेहिं य णंताणंतेहि विविधेहिं ॥६४॥

अत्ता कुणदि सभावं तत्थ गदा पोग्गला सभावेहिं ।
गच्छंति कम्मभावं अण्णण्णोगाहमवगाढा ॥६५॥

जह पोग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती ।
अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणाहि ॥६६॥

जीवा पोग्गलकाया अण्णण्णोगाढगहणपडिबद्धा ।
काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं देंति भुंजंति ॥६७॥

तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोध जीवस्स ।
भोत्ता दु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं ॥६८॥

एव कत्ता भोत्ता होज्जं अप्पा सगेहिं कम्मेहिं ।
हिंडदि पारमपारं संसारं मोहसंछण्णो ॥६९॥

उवसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुवगदो ।
णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो ॥७०॥

एक्को चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो होदि ।
चदुचक्कमणो भणिदो पंचग्गगुणप्पधाणो य ।।७१।।

छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो ।
अट्ठासओ णवट्ठो जीवो दसठाणगो भणिदो ।।७२।।

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को ।
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति ।।७३।।

खंधा य खंधदेसा खंधपदेसा य होंति परमाणू ।
इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्वा ।।७४।।

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति ।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी ।।७५।।

बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पुग्गलो त्ति ववहारो ।
ते होंति छप्पयारा तेलोक्कं जेहिं णिप्पण्णं ।।७६।।

सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू ।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागी मुत्तिभवो ।।७७।।

आदेसमेत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु ।
सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसद्दो ।।७८।।

सद्दो खंधप्पभवो खंधो परमाणुसंगसंघादो ।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादगो णियदो ।।७९।।

णिच्चो णाणवकासो ण सावकासो पदेसदो भेत्ता ।
खंधाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालसंखाणं ।।८०।।

एयरसवण्णगंधं दो फासं सद्दकारणमसद्दं ।
खंधंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणाहि ।।८१।।

उवभोज्जमिंदिएहिं य इंदियकाया मणो य कम्माणि ।
जं हवदि मुत्तमण्णं तं सव्वं पोग्गलं जाणे ।।८२।।

धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं ।
लोगागाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं ॥८३॥

अगुरुगलघुगेहिं सया तेहिं अणंतेहिं परिणदं णिच्चं ।
गदिकिरिया जुत्ताणं कारणभूदं सयमकज्जं ॥८४॥

उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहकरं हवदि लोए ।
तह जीवपुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि ॥८५॥

जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं ।
ठिदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं तु पुढवीव ॥८६॥

जादो अलोगलोगो जेसिं सब्भावदो य गमणठिदी ।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य ॥८७॥

ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स ।
हवदि गदिस्स य पसरो जीवाणं पुग्लाण च ॥८८॥

विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि ।
ते सगपरिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति ॥८९॥

सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पोग्गलाणं च ।
जं देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आगासं ॥९०॥

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोणण्णा ।
तत्तो अणण्णमण्णं आयासं अंतवदिरित्तं ॥९१॥

आगासं अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि ।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ ॥९२॥

जम्हा उवरिट्ठाण सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं ।
तम्हा गमणट्ठाण आयासे जाण णत्थि त्ति ॥९३॥

जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं ।
पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंतपरिवुड्ढी ॥९४॥

तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं ।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं ।।९५।।

धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा ।
पुधगुवलद्धिविसेसा करेंति एगत्तमण्णत्तं ।।९६।।

आगासकालजीवा धम्माधम्मा य मुत्तिपरिहीणा ।
मुत्तं पुग्गलदव्वं जीवो खलु चेदणो तेसु ।।९७।।

जीवा पुग्गलकाया सह सक्किरिया हवंत्ति ण य सेसा ।
पुग्गलकरणा जीवा खंधा खलु कालकरणा दु ।।९८।।

जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहिं होंति ते मुत्ता ।
सेसं हवदि अमुत्तं चित्तं उभयं समादियदि ।।९९।।

कालो परिणामभवो परिणामो दव्वका ंभूदो ।
दोण्हं एस सहावो कालो खणभंगुरो णियदो ।।१००।।

कालो त्ति य ववदेसो सब्भावपरूवगो हवदि णिच्चो ।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई ।।१०१।।

एदे कालागासा धम्माधम्मा य पुग्गला जीवा ।
लब्भंति दव्वसण्णं कालस्स दु णत्थि कायत्तं ।।१०२।।

एवं पवयणसारं पंचत्थियसंगहं वियाणित्ता ।
जो मुयदि रागदोसे सो गाहदि दुक्खपरिमोक्खं ।।१०३।।

मुणिऊण एतदट्ठं तदणुगमणुज्जदो णिहदमोहो ।
पसमिय-रागद्दोसो हवदि हदपरापरो जीवो ।।१०४।।

न पदा धि ार

अभिवंदिऊण सिरसा अपुणब्भवकारणं महावीरं ।
तेसिं पयत्थभंगं मग्गं मोक्खस्स वोच्छामि ॥१०५॥

सम्मत्तणाणजुत्तं चारित्तं रागदोसपरिहीणं ।
मोक्खस्स हवदि मग्गो भव्वाणं लद्धबुद्धीणं ॥१०६॥

सम्मत्तं सद्दहणं भावाणं तेसिमधिगमो णाणं ।
चारित्तं समभावो विसयेसु विरुढमग्गाणं ॥१०७॥

जीवाजीवा भावा पुण्णं पावं च आसवं तेसिं ।
संवरणिज्जरबंधो मोक्खो य हवंति ते अट्ठा ॥१०८॥

जीवा संसारत्था णिव्वादा चेदणप्पगा दुविहा ।
उवओगलक्खणा वि य देहादेहप्पवीचारा ॥१०९॥

पुढवी य उदगमगणी वाउ वणप्फदि जीवसंसिदा काया ।
देंति खलु मोहबहुलं फासं बहुगा वि ते तेसिं ॥११०॥

तित्थावरतणुजोगा अणिलाणलकाइया य तेसु ा ।
मणपरिणामविरहिदा जीवा एइंदिया णेया ॥१११॥

एदे जीवणिकाया पंचविधा पुढविकाइयादीया ।
मणपरिणामविरहिदा जीवा एगेंदिया भणिया ॥११२॥

अंडेसु पवड्ढंता गब्भत्था माणुसा य मुच्छगया ।
जारिसया तारिसया जीवा एगेंदिया णेया ॥११३॥

संबुक्कमादुवाहा संखा सिप्पी अपादगा य किमी ।
जाणंति रसं फासं जे ते बेइन्दिया जीवा ॥११४॥

जूगागुंभीमक्कुणपिपीलिया विच्छियादिया कीडा ।
जाणंति रसं फासं गंधं तेइन्दिया जीवा ॥११५॥

उद्दंसमसयमक्खियमधुकरभमरा पतंगमादीया ।
रूवं रसं च गंधं फासं पुण ते विजाणंति ॥११६॥

सुरणरणारयतिरिया वण्णरसप्फासगंधसद्दण्हू ।
जलचरथलचरखचरा बलिया पंचेंदिया जीवा ॥११७॥

देवा चउण्णिकाया मणुया पुण कम्मभोगभूमीया ।
तिरिया बहुप्पयारा णेरइया पुढविभेयगदा ॥११८॥

खीणे पुव्वणिबद्धे गदिणामे आउसे य ते वि खलु ।
पापुण्णंति य अण्णं गदिमाउस्सं सलेस्सवसा ॥११९॥

एदे जीवणिकाया देहप्पविचारमस्सिदा भणिदा ।
देहविहूणा सिद्धा भव्वा संसारिणो अभव्वा य ॥१२०॥

ण हि इंदियाणि जीवा काया पुण छप्पयार पण्णत्ता ।
जं हवदि तेसु णाणं जीवो त्ति य तं परूवंति ॥१२१॥

जाणदि पस्सदि सव्वं इच्छदि सुक्खं विभेदि दुक्खादो ।
कुव्वदि हिदमहिदं वा भुंजदि जीवो फलं तेसिं ॥१२२॥

एवमभिगम्म जीवं अण्णेहिं वि पज्जएहिं बहुगेहिं ।
अभिगच्छदु अज्जीवं णाणंतरिदेहिं लिंगेहिं ॥१२३॥

आगासकालपुग्गलधम्माधम्मेसु णत्थि जीवगुणा ।
तेसिं अचेदणत्तं भणिदं जीवस्स चेदणदा ॥१२४॥

सुहदुक्खजाणणा वा हिदपरियम्मं च अहिदभीरुत्तं ।
जस्स ण विज्जदि णिच्चं तं समणा बेंति अज्जीवं ॥१२५॥

संठाणा संघादा वण्णरसप्फासगंधसद्दा य ।
पोग्गलदव्वप्पभवा होंति गुणा पज्जया य बहू ॥१२६॥

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥१२७॥

जो खलु संसारत्थो जीवो तत्तो दु होदि परिणामो ।
परिणामादो कम्मं कम्मादो होदि गदिसु गदी ॥१२८॥

गदिमधिगदस्स देहो देहादो इंदियाणि जायंते ।
तेहिं दु विसयग्गहणं तत्तो रागो व दोसो वा ॥१२९॥

जायदि जीवस्सेवं भावो संसारचक्कवालम्मि ।
इदि जिणवरेहिं भणिदो अणादिणिधणो सणिधणो वा ।१३०।

मोहो रागो दोसो चित्तपसादो य जस्स भावम्मि ।
विज्जदि तस्स सुहो वा असुहो व होदि परिणामो ॥१३१॥

सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पावं ति हवदि जीवस्स ।
दोण्हं 'पोग्गलमेत्तो भावो कम्मत्तणं पत्तो ॥१३२॥

जम्हा कम्मस्स फलं विसयं फासेहिं भुंजदे णियदं ।
जीवेण सुहं दुक्खं तम्हा कम्माणि मुत्ताणि ॥१३३॥

मुत्तो फासदि 'मुत्तं मुत्तो मुत्तेण बंधमणुहवदि ।
जीवो मुत्तिविरहिदो गाहदि ते तेहिं उग्गहवि ॥१३४॥

रागो जस्स पसत्थो अणुकंपासंसिदो य परिणामो ।
चित्तम्हि णत्थि कलुसं पुण्णं जीवस्स आसवदि ॥१३५॥

अरहंतसिद्धसाहुसु भत्ती धम्मम्मि जा य खलु चेट्ठा ।
अणुगमणं पि गुरूणं पसत्थरागो त्ति वुच्चंति ॥१३६॥

तिसिदं बुभुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठूण जो दु दुहिदमणो ।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अणुकंपा ॥१३७॥

कोधो व जदा माणो माया लोभो व चित्तमासेज्ज ।
जीवस्स कुणदि खोहं कलुसो त्ति य तं बुधा बेंति ॥१३८॥

चरिया पमादबहुला कालुस्स लोलदा य विसयेसु ।
परपरितावपवादो पावस्स य आसवं कुणदि ॥१३९॥

सण्णाश्रो य तिलेस्सा इंदियवसदा य श्रट्टरुद्दाणि ।
णाणं च दुप्पउत्तं मोहो पावप्पदा होंति ॥१४०॥

इंदियकसायसण्णा णिग्गहिदा जेहिं सुट्ठु मग्गम्मि ।
जावत्तावत्तेहिं पिहियं पावासवच्छिद्दं ॥१४१॥

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व सव्वदव्वेसु ।
णासवदि सुहं असुहं समसुहदुक्खस्य भिक्खुस्स ॥१४२॥

जस्स जदा खलु पुण्णं जोगे पावं च णत्थि विरदस्स ।
संवरणं तस्स तदा सुहासुहकदस्स कम्मस्स ॥१४३॥

संवरजोगेहिं जुदो तवेहिं जो चिट्ठदे बहुविहेहिं ।
कम्माणं णिज्जरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं ॥१४४॥

जो संवरेण जुत्तो श्रप्पट्ठपसाधगो हि श्रप्पाणं ।
मुणिऊण झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्मरयं ॥१४५॥

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व जोगपरिकम्मो ।
तस्स सुहासुहडहणो झाण णो जायए श्रगणी ॥१४६॥

जं सुहमसुहमुदिण्णं भावं रत्तो करेदि जदि श्रप्पा ।
सो तेण हवदि बद्धो पोग्गलकम्मेण विविहेण ॥१४७॥

जोगणिमित्तं गहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो ।
भावणिमित्तो बंधो भावो रदिरागदोसमोहजुदो ॥१४८॥

हेदू चदुव्वियप्पो श्रट्ठवियप्पस्स कारणं भणिदं ।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंति ॥१४९॥

हेदुमभावे णियमा जायदि णाणिस्स श्रासवणिरोधो ।
श्रासवभावेण विणा जायदि कम्मस्स दु णिरोधो ॥१५०॥

कम्मस्साभावेण य सव्वण्हू सव्वलोगदरिसी य ।
पावदि इंदियरहिदं श्रव्वाबाहं सह्यमणंत ॥१५१॥

दसणणाणसमग्गं झाणं णो अण्णदव्वसंजुत्तं ।
जायदि णिज्जरहेदू सभावसहिदस्स साधुस्स ॥१५२॥

जो संवरेण जुत्तो णिज्जरमाणोध सव्वकम्माणि ।
ववगदवेदाउस्सो मुयदि भवं तेण सो मोक्खो ॥१५३॥

—×—

मोक्षमार्गप्रपञ्च चिका-चूलिका

जीवसहावं णाणं अप्पडिहददंसणं अणण्णमयं ।
चरियं च तेसु णियदं अत्थित्तमणिंदियं भणियं ॥१५४॥

जीवो सहावणियदो अणियदगुणपज्जओध परसमओ ।
जदि कुणदि सगं समयं पब्भस्सदि कम्मबंधादो ॥१५५॥

जो परदव्वम्मि सुहं असुहं रागेण कुणदि जदि भावं ।
सो सगचरित्तभट्ठो परचरियचरो हवदि जीवो ॥१५६॥

आसवदि जेण पुण्णं पावं वा अप्पणोध भावेण ।
सो तेण परचरित्तो हवदि त्ति जिणा परूवंति ॥१५७॥

जो सव्वसंगमुक्को णण्णमणो अप्पणं सहावेण ।
जाणदि पस्सदि णियदं सो सगचरियं चरदि जीवो ॥१५८॥

चरियं चरदि सगं सो जो परदव्वप्पभावरहिदप्पा ।
दंसणणाणवियप्पं अवियप्पं चरदि अप्पादो ॥१५९॥

धम्मादीसद्दहणं सम्मत्तं णाणमंगपुव्वगदं ।
चेट्ठा तवम्हि चरिया ववहारो मोक्खमग्गो त्ति ॥१६०॥

णिच्छयणयेण भणिदो तिहि तेहिं समाहिदो हु जो अप्पा ।
ण कुणदि किंचिवि अण्ण ण मुयदि सो मो मग्गो त्ति ॥१६१॥

जो चरदि णादि पिच्छदि अप्पाणं अप्पणा अणण्णमयं ।
सो चारित्तं णाणं दंसणमिदि णिच्छिदो होदि ॥१६२॥

जेण विजाणदि सव्वं पेच्छदि सो तेण सोक्खमणुहवदि ।
इदि तं जाणदि भविओ अभव्वसत्तो ण सद्दहदि ॥१६३॥

दंसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गो त्ति सेविदव्वाणि ।
साधूहि इदं भणिदं तेहिं दु बंधो व मोक्खो वा ॥१६४॥

अण्णाणादो णाणी जदि मण्णदि सुद्धसंपओगादो ।
हवदित्ति दुक्ख मोक्खं परसमयरदो हवदि जीवो ॥१६५॥

अरहंतसिद्धचेदियपवयणगणणाणभत्तिसंपण्णो ।
बंधदि पुण्णं बहुसो ण हु सो कम्मक्खयं कुणदि ॥१६६॥

जस्स हिदयेणुमेत्तं वा परदव्वम्हि विज्जदे रागो ।
सो ण विजाणदि समयं सगस्स सव्वागमधरो वि ॥१६७॥

धरिदुं जस्स ण सक्कं चित्तुब्भामं विणा दु अप्पाणं ।
रोधो तस्स ण विज्जदि सुहासुहकदस्स कम्मस्स ॥१६८॥

तम्हा णिव्वुदिकामो णिस्संगो णिम्ममो य हविय पुणो ।
सिद्धेसु कुणदि भत्तिं णिव्वाणं तेण पप्पोदि ॥१६९॥

सपयत्थं तित्थयरं अभिगदबुद्धिस्स सुत्तरोइस्स ।
दूरतरं णिव्वाणं संजमतवसंपओत्तस्स ॥१७०॥

अरहंतसिद्धचेदियपवयणभत्तो परेण णियमेण ।
जो कुणदि तवोकम्मं सो सुरलोगं समादियदि ॥१७१॥

तम्हा णिव्वुदिकामो रागं सव्वत्थ कुणदु मा किंचि ।
सो तेण वीदरागो भविओ भवसायरं तरदि ॥१७२॥

मग्गप्पभावणट्ठं पवयणभत्तिप्पचोदिदेण मया ।
भणियं पवयणसारं पचत्थियसंगहं सुत्तं ॥१७३॥

॥इति पचत्थिकायसग्रहो॥

— x —

सिरि कुंदकुंदाइरियकदो

अट्ठपाहुणं

दंसणपाहुड

काऊण णमुक्कारं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स ।
दंसणमग्गं वोच्छामि जहाकम्मं समासेण ।।१।।

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं ।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो ।।२।।

दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं ।
सिज्झंति चरियभट्ठा दंसणभट्ठा ण सिज्झंति ।।३।।

सम्मत्तरयणभट्ठा जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं ।
आराहणाविरहिया भमंति तत्थेव तत्थेव ।।४।।

सम्मत्तविरहिया णं सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंता णं ।
ण लहंति बोहिलाहं अवि वाससहस्स कोडीहिं ।।५।।

सम्मत्तणाणदंसणबलवीरियवड्ढमाण जे सव्वे ।
कलिकलुसपावरहिया वरणाणी होंति अइरेण ।।६।।

सम्मत्तसलिलपवहो णिच्चं हियए पवट्टए जस्स ।
कम्म वालुयवरणं बन्धुच्चिय णासए तस्स ।।७।।

जे दंसणेसु भट्ठा णाणे भट्ठा चरित्तभट्ठा य ।
एदे भट्ठ वि भट्ठा सेसं पि जणं विणासंति ।।८।।

जो कोवि धम्मसीलो संजमतवणियमजोगगुणधारी ।
तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गत्तणं दिंति ।।९।।

जह मूलम्मि विणट्ठे दुमस्स परिवार णत्थि परवड्ढी ।
तह जिणदंसणभट्ठा मूलविणट्ठा ण सिज्झंति ।।१०।।

जह मूलाओ खंधो साहापरिवार बहुगुणो होइ ।
तह जिणदंसण मूलो णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स ॥११॥

जे दंसणेसु भट्टा पाए पाडंति दंसणधराणं ।
ते होंति लुल्लमूआ बोही पुण दुल्लहा तेसिं ॥१२॥

जे वि पडंति य तेसिं जाणंता लज्जागारवभयेण ।
तेसिं पि णत्थि बोही पावं अणुमोयमाणाणं ॥१३॥

दुविहं पि गंथचायं तीसु वि जोएसु संजमो ठादि ।
णाणम्मि करणसुद्धे उब्भसणे दंसणं होदि ॥१४॥

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभावउवलद्धी ।
उवलद्धपयत्थे पुण सेयासेयं वियाणेदि ॥१५॥

सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवंतो वि ।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहइ णिव्वाणं ॥१६॥

जिणवयणमोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूदं ।
जरमरणवाहिहरणं खयकरणं सव्वदुक्खाणं ॥१७॥

एगं जिणस्स रूवं विदियं उक्किट्ठसावयाणं तु ।
अवरट्ठियाण तइयं चउत्थ पुण लिंगदंसणं णत्थि ॥१८॥

छह दव्व णव पयत्था पंचत्थी सत्त तच्च णिद्दिट्ठा ।
सद्दहइ ताण रूवं सो सद्दिट्ठी मुणेयव्वो ॥१९॥

जीवादिसद्दहणं सम्मत्तं जिणवरेहिं पण्णत्तं ।
ववहारा णिच्छयदो अप्पाणं हवइ सम्मत्तं ॥२०॥

एवं जिणपण्णत्तं दंसणरयणं धरेह भावेण ।
सारं गुणरयणत्तय सोवाणं पढम मोक्खस्स ॥२१॥

जं सक्कइ तं कीरइ जं च ण सक्केइ तं च सद्दहणं ।
केवलिजिणेहिं भणियं सद्दहमाणस्स सम्मत्तं ॥२२॥

दंसणणाणचरित्ते तववियणे णिच्चकालसुपसत्था ।
एदे दु वंदणीया जे गुणवादी गुणधराण ।।२३।।
सहजुप्पण्णं रूवं दट्ठं जो मण्णए ण मच्छरिओ ।
सो संजमपडिवण्णो मिच्छाइट्ठी हवइ एसो ।।२४।।
अमराण वंदियाणं रूवं दट्ठूण सीलसहियाणं ।
जे गारवं करंति य सम्मत्तविवज्जिया होंति ।।२५।।
असंजदं ण वन्दे वत्थविहीणोवि तो ण वंदिज्ज ।
दोण्णि वि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि ।।२६।।
ण वि देहो वंदिज्जइ ण वि य कुलो ण वि य जाइसंजुत्तो ।
को वंदमि गुणहीणो ण हु समणो णेव सावओ होइ ।।२७।।
वंदमि तवसावण्णा सीलं च गुणं च बंभचेरं च ।
सिद्धिगमणं च तेसिं सम्मत्तेण सुद्धभावेण ।।२८।।
चउसट्ठि चमरसहिओ चउतीसहि अइसएहिं संजुत्तो ।
अणवरबहुसत्तहिओ कम्मव कारणणिमित्तो ।।२९।।
णाणेण दंसणेण य तवेण चरियेण संजमगुणेण ।
चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो ।।३०।।
णाणं णरस्स सारो सारो वि णरस्स होइ सम्मत्तं ।
सम्मताओ चरणं चरणाओ होइ णिव्वाणं ।।३१।।
णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरिएण सम्मसहिएण ।
चउण्हं पि समाजोगे सिद्धा जीवा ण सन्देहो ।।३२।।
कल्लाणपरंपरया लहंति जीवा विशुद्धसम्मत्तं ।
सम्मद्दंसणरयणं अग्घेदि सुरासुरे लोए ।।३३।।
लद्धूण य मणुयत्तं सहियं तह उत्तमेव गोत्तेण ।
लद्धूण य सम्मत्तं अव सोक्खं च मोक्खं च ।।३४।।

जह मूलाओ खंधो साहापरिवार बहुगुणो होइ ।
तह जिणदंसण मूलो णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स ॥११॥

जे दंसणेसु भट्टा पाए पाडंति दंसणधराणं ।
ते होंति लुल्लमूआ बोही पुण दुल्लहा तेसिं ॥१२॥

जे वि पडंति य तेसिं जाणंता लज्जागारवभयेण ।
तेसिं पि णत्थि बोही पावं अणुमोयमाणाणं ॥१३॥

दुविहं पि गंथचायं तीसु वि जोएसु संजमो ठादि ।
णाणम्मि करणसुद्धे उब्भसणे दंसणं होदि ॥१४॥

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभावउवलद्धी ।
उवलद्धपयत्थे पुण सेयासेयं वियाणेदि ॥१५॥

सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवंतो वि ।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहइ णिव्वाणं ॥१६॥

जिणवयणमोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूदं ।
जरमरणवाहिहरणं खयकरणं सव्वदुक्खाणं ॥१७॥

एगं जिणस्स रूवं विदियं उक्किट्ठसावयाणं तु ।
अवरट्ठियाण तइयं चउत्थ पुण लिंगदंसणं णत्थि ॥१८॥

छह दव्व णव पयत्था पंचत्थी सत्त तच्च णिद्दिट्ठा ।
सद्दहइ ताण रूवं सो सद्दिट्ठी मुणेयव्वो ॥१९॥

जीवादिसद्दहणं सम्मत्तं जिणवरेहिं पण्णत्तं ।
ववहारा णिच्छयदो अप्पाणं हवइ सम्मत्तं ॥२०॥

एवं जिणपण्णत्तं दंसणरयणं धरेह भावेण ।
सारं गुणरयणत्तय सोवाणं पढम मोक्खस्स ॥२१॥

जं सक्कइ तं कीरइ जं च ण सक्केइ तं च सद्दहणं ।
केवलिजिणेहिं भणियं सद्दहमाणस्स सम्मत्तं ॥२२॥

दंसणणाणचरित्ते तवविणये णिच्चकालसुपसत्था ।
एदे दु वंदणीया जे गुणवादी गुणधराण ।।२३।।
सहजुप्पण्णं रूवं दट्ठं जो मण्णए ण मच्छरिओ ।
सो संजमपडिवण्णो मिच्छाइट्ठी हवइ एसो ।।२४।।
अमराण वंदियाण रूवं दट्ठूण सीलसहियाण ।
जे गारवं करंति य सम्मत्तविवज्जिया होंति ।।२५।।
असंजदं ण वन्दे वत्थविहीणोवि तो ण वंदिज्ज ।
दोण्णि वि होंति समाणा एगो वि ण संजदो होदि ।।२६।।
ण वि देहो वंदिज्जइ ण वि य कुलो ण वि य जाइसंजुत्तो ।
को वंदमि गुणहीणो ण हु समणो णेव सावओ होइ ।।२७।।
वंदमि तवसावण्णा सीलं च गुणं च बंभचेरं च ।
सिद्धिगमणं च तेसिं सम्मत्तेण सुद्धभावेण ।।२८।।
चउसट्ठि चमरसहिओ चउतीसहि अइसएहिं संजुत्तो ।
अणवरबहुसत्तहिओ कम्मक्खयकारणणिमित्तो ।।२९।।
णाणेण दंसणेण य तवेण चरियेण संजमगुणेण ।
चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो ।।३०।।
णाणं णरस्स सारो सारो वि णरस्स होइ सम्मत्तं ।
सम्मत्ताओ चरणं चरणाओ होइ णिव्वाणं ।।३१।।
णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरिएण सम्मसहिएण ।
चउण्हं पि समाजोगे सिद्धा जीवा ण सन्देहो ।।३२।।
कल्लाणपरंपरया लहंति जीवा विशुद्धसम्मत्तं ।
सम्मद्दंसणरयणं अग्घेदि सुरासुरे लोए ।।३३।।
लद्धूण य मणुयत्तं सहियं तह उत्तमेव गोत्तेण ।
लद्धूण य सम्मत्तं अक्खयसोक्खं च मोक्खं च ।।३४।।

विहरदि जाव जिणिंदो सहसट्ठसुलक्खणेहिं संजुत्तो ।
चउतीसअइसयजुदो सा पडिमा थावरा भणिया ॥३५॥
बारसविह-तवजुत्ता कम्मं खविऊण विहिवलेण सं ।
वोसट्टचत्तदेहा णिव्वाणमणुत्तरं पत्ता ॥३६॥

सुत्तपाहुडं

अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ।
सुत्तत्थमग्गणत्थं सवण्णा साहंति परमत्थं ॥१॥
सुत्तम्मि जं सुदिट्ठं आइरियपरंपूरेण मग्गेण ।
णाऊण दुविह सुत्तं वट्टदि सिवमग्ग जो भव्वो ॥२॥
सुत्तं हि जाणमाणो भवस्स भवणासणं च सो कुणदि ।
सूई जहा असुत्ता णासदि सुत्ते सहा णो वि ॥३॥
पुरिसो वि जो ससुत्तो ण विणासइ सो गयो वि संसारे ।
सच्चेदण पच्चक्खं णासदि तं सो आदिस्समाणो वि ॥४॥
सुत्तत्थं जिणभणियं जीवाजीवादिबहुविहं अत्थं ।
हेयाहेयं च तहा जो जाणइ सो हु सद्दिट्ठी ॥५॥
जं सुत्त जिणउत्तं ववहारो तह य जाण परमत्थो ।
तं जाणिऊण जोई लहइ सुहं खवइ मलपुंजं ॥६॥
सुत्तत्थपयविणट्ठो मिच्छादिट्ठी हु सो मुणेयव्वो ।
खेडे वि ण कायव्वं पाणिपत्त सचेलस्स ॥७॥
हरिहरतुल्लो वि णरो सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी ।
तह वि ण पावइ सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो ॥८॥

उक्किट्ठसीलचरियं बहुपरियम्मो य गुरूयभारो य ।
जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छंति होदि मिच्छत्तं ॥९॥

णिच्चेलपाणिपत्तं उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं ।
एक्को वि मोक्खमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे ॥१०॥

जो संजमेसु सहिओ आरम्भपरिग्गहेसु विरओ वि ।
सो होइ वंदणीओ ससुरासुरमाणुसे लोए ॥११॥

जे बावीसपरीसह सहंति सत्तीसएहिं संजुत्ता ।
ते होंति वंदणीया कम्मक्खयणिज्जरा साहू ॥१२॥

अवसेसा जे लिंगी दंसणणाणेण सम्म संजुत्ता
चेलेण य परिगहिया ते भणिया इच्छाणिज्जा य ॥१३॥

इच्छायारमहत्थं सुत्तठिओ जो हु छंडए कम्मं ।
ठाणे ट्ठियसम्मत्तं परलोयसुहंकरो होदि ॥१४॥

अह पुण अप्पा णिच्छदि धम्माइं करेइ णिरवसेसाइं ।
तह वि ण पावदि सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो ॥१५॥

एएण कारणेण य तं अप्पा सद्दहेह तिविहेण ।
जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण ॥१६॥

बालग्गकोडिमेत्तं परिगहगहणं ण होइ साहूणं ।
भुंजेइ पाणिपत्ते दिण्णण्णं इक्कठाणम्मि ॥१७॥

जहजायरूवसरिसो तिलतुसमेत्तं ण गिहदि हत्थेसु ।
जइ लेइ अप्पबहुयं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं ॥१८॥

जस्स परिग्गहगहणं अप्पं बहुयं च हवइ लिंगस्स ।
सो गरहिउ जिणवयणे परिगहरहिओ णिरायारो ॥१९॥

पंचमहव्वयजुत्तो तिहिं गुत्तिहिं जो स संजुदो होइ ।
णिग्गंथमोक्खमग्गो सो होदि हु वंदणिज्जो य ॥२०॥

दुइयं च उत्त लिंगं उक्किट्ठं अवरसावयाणं च ।
भिक्खं भमेइ पत्ते समिदीभासेण मोणेण ॥२१॥

लिंगं इत्थीण हवदि भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि ।
अज्जिय वि एक्कवत्था वत्थावरणेण भुंजेदि ॥२२॥

ण वि सिज्झदि वत्थधरो जिणसासणे जह वि होइ तित्थयरो ।
णग्गो विमोक्खमग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे ॥२३॥

लिंगम्मि य इत्थीणं थणंतरे णाहिकक्खदेसेसु ।
भणिओ सुहुमो काओ तासिं कह होइ पव्वज्जा ॥२४॥

जइ ` `ण सुद्धा उत्ता मग्गेण सावि संजुत्ता ।
घोरं चरिय चरित्तं इत्थीसु ण पव्वया भणिया ॥२५॥

चित्तासोहि ण तेसिं ढिल्लं भावं तहा सहावेण ।
विज्जदि मासा तेसिं इत्थीसु ण संकया झाणा ॥२६॥

गाहेण अप्पगाहा समुद्दसलिले सचेलअत्थेण ।
इच्छा जाहु णियत्ता ताह णियत्ताइं सव्व ॒ खाइं ॥२७॥

चरित्तपाहुड

सव्वण्हु सव्वदंसी णिम्मोहा वीयराय परमेट्ठी ।
वंदित्तु तिजगवंदा अरहंता भव्वजीवेहिं ॥१॥

णाणं दंसण सम्मं चारित्तं सोहिकारणं तेसिं ।
मोक्खाराहणहेउं चारित्तं पाहुडं वोच्छे ॥२॥ युम्मम् ।

जं जाणइ तं णाणं जं पेच्छइ तं च दसणं भणियं ।
णाणस्स पिच्छियस्स य समवण्णा होइ चारित्तं ॥३॥

एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स अक्खयामेया ।
तिण्हि पि सोहणत्थे जिणभणियं दुवियं चारित्तं ।।४।।

जिणणाणदिट्ठिसुद्धं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं ।
विदियं संजमचरणं जिणणाणसदेसियं तं पि ।।५।।

एवं चिय णाऊण य सव्वे मिच्छत्तदोस संकाइ ।
परिहर सम्मत्तमला जिणभणिया तिविहजोएण ।।६।।

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढदिट्ठी य ।
उवगूहण ठिदिकरणं वच्छलु पहावणा य ते अट्ठ ।।७।।

तं चेव गुणविसुद्धं जिणसम्मत्तं सुमुक्खठाणाए ।
जं चरइ णाणजुत्तं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं ।।८।।

सम्मत्तचरणसुद्धा संजमचरणस्स जइ व सुपसिद्धा ।
णाणी अमूढदिट्ठी अचिरे पावंति णिव्वाण ।।९।।

सम्मत्तचरणभट्ठा संजमचरणं चरंति जे वि णरा ।
अण्णाणणाणमूढा तह वि ण पावंति णिव्वाणं ।।१०।।

वच्छल्लं विणएण य अणुकंपाए सुदाणवच्छाए ।
मग्गणगुणसंणाए अवगूहण रक्खणाए य ।।११।।

एएहि लक्खणेहिं य लक्खिज्जइ अज्जवेहिं भावेहिं ।
जीवो आराहंतो जिणसम्मत्तं अमोहेण ।।१२।।

उच्छाहभावणासंपसंससेवा सुदंसणे सुद्धा ।
अण्णाणमोहमग्गे कुव्वंतो जहदि जिणसम्मं ।।१३।।

उच्छाह भावणासंपसंससेवा सुदंसणे सुद्धा ।
ण जहदि जिणसम्मत्तं कुव्वंतो णाणमग्गेण ।।१४।।

अण्णाण मिच्छत्तं वज्जइ णाणे विसुद्धसम्मत्ते ।
अह मोहं सारंभं परिहर धम्मे अहिंसाए ।।१५।।

पव्वज्ज संगचाए पयट्ट सुत्तवे सुसंजमे भावे ।
होइ सुविसुद्धझाणं णिम्मोहे वीयरायत्ते ।।१६।।

मिच्छादंसणमग्गे मलिणे अण्णाणमोहदोसेहिं ।
वज्झंति मूढजीवा मिच्छत्ताबुद्धिउदएण ।।१७।।

सम्मदंसण पस्सदि जाणदि णाणेण दव्वपज्जाया ।
सम्मेण य सद्दहदि परिहरदि चरित्तजे दोसे ।।१८।।

एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स मोहरहियस्स ।
जियगुणमाराहंतो अचिरेण य कम्म परिहरइ ।।१९।।

संखिज्जमसंखिज्जगुणं च संसारिमेरूमत्ता णं ।
सम्मत्तमणुचरंता करेंति दुक्खक्खयं धीरा ।।२०।।

दुविहं संजमचरणं सायारं तह हवे णिरायारं ।
सायारं संग्गथे परिग्गहा रहिय खलु णिरायारं ।।२१।।

दं वय समाइय पोसह सच्चित्त रायभत्ते य ।
बंभारंभपरिग्गह अणुमण उद्दिट्ठ देसविरदो य ।।२२।।

पंचेव पुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि ।
सिक्खावय चत्तारि य संजमचरणं च सायारं ।।२३।।

थूले तसकायवहे थूले मोषे अदत्तथूले य ।
परिहारो परमहिला परिग्गहारंभपरिमाणं ।।२४।।

दिसिविदिसिमाण पढमं अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं ।
भोगोपभोगपरिमा इयमेव गुणव्वया तिण्णि ।।२५।।

सामाइयं च पढमं विदियं च तहेव पोसहं भणियं ।
तइयं च अतिहिपुज्जं चउत्थ सल्लेहणा अंते ।।२६।।

एवं सावयधम्मं संजमचरणं उदेसियं सयलं ।
सुद्धं संजमचरणं जइधम्मं णिक्कलं वोच्छे ।।२७।।

पंचेंदियसंवरणं पंच वया पंचविंसकिरियासु ।
पंच समिदि तय गुत्ती संजमचरणं णियारायं ॥२८॥

अमणुण्णे य मणुण्णे सजीवदव्वे अजीवदव्वे य ।
ण करेदि रायदोसे पंचेंदियसंवरो भणिओ ॥२९॥

हिंसाविरइ अहिंसा असच्चविरई अदत्तविरई य ।
तुरियं अबंभविरई पंचम संगम्मि विरई य ॥३०॥

साहंवि जं महल्ला आयरियं जं महल्लपुव्वेहि ।
जं च महल्लाणि तदो महव्वया इत्तहे याइं ॥३१॥

वयगुत्ती मणगुत्ती इरियासमिदी सुदाणणिक्खेवो ।
अवलोयभोयणाए अहिंसए भावणा होंति ॥३२॥

कोहभयहासलोहा मोहा विवरीयभावणा चेव ।
विदियस्स भावणाए ए पंचेव य तहा होंति ॥३३॥

सुण्णागारणिवासो विमोचियावास जं परोधं च ।
एसणसुद्धिसउत्तं साहम्मी संविसंवादो ॥३४॥

महिलालोयणपुव्वरइसरणसंसत्तवसहिविकहाहिं ।
पुट्ठियरसेहिं विरओ भावण पंचावि तुरियम्मि ॥३५॥

अपरिग्गह समणुण्णेसु सद्दपरिसरसरूवगंधेसु ।
रायद्दोसाईण परिहारो भावणा होंति ॥३६॥

इरिया भासा एसण जा सा आदाण चेव णिक्खेवो ।
संजमसोहिणिमित्तं खंति जिणा पंच समिदीओ ॥३७॥

भव्वजणबोहणत्थं जिणमग्गे जिणवरेहि जह भणियं ।
णाणं णाणसरूवं अप्पाणं तं वियाणेहि ॥३८॥

जीवाजीवविभत्ती जो जाणइ सो हवेइ सण्णाणी ।
रायादिदोसरहिओ जिणसासणे मोक्खमग्गोत्ति ॥३९॥

पव्वज्ज संगचाए पयट्ट सुत्तवे सुसंजमे भावे ।
होइ सुविसुद्धझाणं णिम्मोहे वीयरायत्ते ॥१६॥

मिच्छादंसणमग्गे मलिणे अण्णाणमोहदोसेहिं ।
वज्झंति मूढजीवा मिच्छत्ताबुद्धिउदएण ॥१७॥

सम्मदंसण पस्सदि जाणदि णाणेण दव्वपज्जाया ।
सम्मेण य सद्दहदि परिहरदि चरित्तजे दोसे ॥१८॥

एए तिण्णि वि भावा हवंति जीवस्स मोहरहियस्स ।
जियगुणमाराहंतो अचिरेण य कम्म परिहरइ ॥१९॥

संखिज्जमसंखिज्जगुणं च संसारिमेरूमत्ता णं ।
सम्मत्तमणुचरंता करेंति दुक्खक्खयं धीरा ॥२०॥

दुविहं संजमचरणं सायारं तह हवे णिरायारं ।
सायारं संग्गथे परिग्गहा रहिय खलु णिरायारं ॥२१॥

दंसण वय समाइय पोसह सच्चित्त रायभत्ते य ।
बंभारंभपरिग्गह अणुमण उद्दिट्ठ देसविरदो य ॥२२॥

पंचेव पुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि ।
सिक्खावय चत्तारि य संजमचरणं च सायारं ॥२३॥

थूले तसकायवहे थूले मोषे अदत्तथूले य ।
परिहारो परमहिला परिग्गहारंभपरिमाणं ॥२४॥

दिसिविदिसि णपढमं अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं ।
भोगोपभोगपरिमा इयमेव गुणव्वया तिण्णि ॥२५॥

सामाइयं च पढमं विदियं च तहेव पोसहं भणियं ।
तइयं च अतिहिपुज्जं चउत्थ सल्लेहणा अंते ॥२६॥

एवं सावयधम्मं संजमचरणं उदेसियं सयलं ।
सुद्धं संजमचरणं जइधम्मं णिक्कलं वोच्छे ॥२७॥

मणवयणकायदव्वा आयत्ता जस्स इंदिया विसया ।
आयदण जिणमग्गे णिद्दिट्ठं संजयं रूवं ॥५॥
मयरायदोष मोहो कोहो लोहो य जस्स आयत्ता ।
पंचमहव्वयधारी आयदणं महरिसी भणियं ॥६॥
सिद्धं जस्स सदत्थं विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स ।
सिद्धायदण सिद्धं मुणिवरवसहस्स मुणिदत्थं ॥७॥
बुद्धं जं वोहंतो अप्पाणं चेदयाइं अण्णं च ।
पंचमहव्वयसुद्धं णाणमयं जाण चेदिहरं ॥८॥
चेइय बंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स ।
चेइहरं जिणमग्गे छक्काय हियंकरं भणियं ॥९॥
सपरा जंगमदेहा दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं ।
णिग्गंथवीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा ॥१०॥
जं चरदि सुद्धचरणं जाणइ पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं ।
सा होइ वंदणीया णिग्गंथा संजदा पडिमा ॥११॥
दसणअणतणाणं अणतवीरिय अणतसुक्खा य ।
सासयसुक्ख अदेहा मुक्का कम्मट्ठबंधेहिं ॥१२॥
निरुवममचलमखोहा णिम्मि' विया जंगमेण रूवेण ।
सिद्धठाणम्मि ठिया वोसरपडिमा धुवा सिद्धा ॥१३॥
दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च ।
णिग्गंथं णाणमयं जिणमग्गे दंसणं भणियं ॥१४॥
जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं स घियमयं चावि ।
तह दसणं हि सम्म णाणमयं होइ रूवत्थं ॥१५॥
जिणबिंब णाणमयं संजमसुद्धं सुवीयरायं च ।
जं देइ दिक्खसिक्खा कम्मक्खयकारणे सुद्धा ॥१६॥

दंसणणाणचरित्तं तिण्णि वि जाणेह परमसद्धाए ।
जं जाणिऊण जोइ अइरेण लहंति णिव्वाणं ।।४०।।

पाऊण णाणसलिलं णिम्मलसुविशुद्धभावसंजुत्ता ।
होति ि ालयवासी तिहुवणचूड़ामणी सिद्धा ।।४१।।

णाणगुणेहि विहीणा ण लहंते ते सुइच्छियं लाहं ।
इय णाउं गुणदोसं तं सण्णाण वियाणेहि ।।४२।।

चारित्तसमारूढो अप्पासु परं ण ईहए णाणी ।
पावइ अइरेण सुहं अणोवमं जाण णिच्छयदो ।।४३।।

एवं संखेवेण य भणियं णाणेण वीयराएण ।
सम्मत्तसंजमासयदुण्हं पि उद्देसियं चरणं ।।४४।।

भावेहि भावसुद्धं फुडु रइयं चरणपाहुडं चेव ।
लहु चउगइ चइऊणं अइरेणऽपुणब्भवा होई ।।४५।।

—×—

ोहपा

बहुसत्थअत्थजाणे संजमसम्मत्तसुद्धतवचरणे ।
वंदित्ता आइरिए कसायमलवज्जिदे सुद्धे ।।१।।

सयलजणबोहणत्थं जिणमग्गे जिणवरेहि जह भणियं ।
वोच्छामि समासेण छक्कायसुहंकरं सुणह ।।२।।

आयदणं चेदिहरं जिणपडिमा दंसणं च जिणबिंबं ।
भणियं सुवीयरायं जिणमुद्दा णाणमादत्थं ।।३।।

अरहंतेण सुदिट्ठं जं देवं तित्थमिह य अरहंत ।
पावज्जगुणविसुद्धा इय णायव्वा जहाकमसो ।।४।।

मणवयणकायदव्वा आयत्ता जस्स इंदिया विसया ।
आयदणं जिणमग्गे णिद्दिट्ठं संजयं रूवं ॥५॥

मयरायदोष मोहो कोहो लोहो य जस्स आयत्ता ।
पंचमहव्वयधारी आयदणं महरिसी भणियं ॥६॥

सिद्धं जस्स सदत्थं विसुद्धझाणस्स णाणजुत्तस्स ।
सिद्धायदणं सिद्धं मुणिवरवसहस्स मुणिदत्थं ॥७॥

बुद्धं जं बोहंतो अप्पाणं चेदयाइं अण्णं च ।
पंचमहव्वयसुद्धं णाणमय जाण चेदिहरं ॥८॥

चेइय बंधं मोक्खं दुक्खं सुक्खं च अप्पयं तस्स ।
चेइहरं जिणमग्गे छक्काय हियंकरं भणियं ॥९॥

सपरा जंगमदेहा दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं ।
णिग्गंथवीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा ॥१०॥

जं चरदि सुद्धचरणं जाणइ पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं ।
सा होइ वंदणीया णिग्गंथा संजादा पडिमा ॥११॥

दंसणअणतणाण अणतवीरिय अणंतसुक्खा य ।
सासयसुक्ख अदेहा मुक्का कम्मट्ठबंधेहिं ॥१२॥

निरुवममचलमखोहा णिम्मिविया जंगमेण रूवेण ।
सिद्धठाणम्मि ठिया वोसरपडिमा धुवा सिद्धा ॥१३॥

दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च ।
णिग्गंथं णाणमयं जिणमग्गे दंसणं भणियं ॥१४॥

जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं स घियमयं चावि ।
तह दंसणं हि सम्मं णाणमयं होइ रूवत्थं ॥१५॥

जिणबिंबं णाणमयं संजमसुद्धं सुवीयरायं च ।
ज देइ दिक्खसिक्खा कम्मक्खयकारणे सुद्धा ॥१६॥

तस्स य करह पणामं सव्वं पुज्जं च विणय वच्छल्लं।
जस्स य दंसण णाणं अत्थि धुवं चेयणाभावो ॥१७॥
तववयगुणेहिं सुद्धो जाणदि पिच्छेदि सुद्धसम्मत्तं।
अरहंतमुद्द एसा दायारी दिक्खसिक्खा य ॥१८॥
दढसंजममुद्दाए इन्दियमुद्दा कसायदिढमुद्दा।
मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया ॥१९॥
संजमसंजुत्तस्स य सुझाणजोयस्स मो मग्गस्स।
णाणेण लहदि तम्हा णाणं च णायव्वं ॥२०॥
जह णवि लहदि हु रहियो कंडस्स वेज्झयविहीणो।
तह णवि लक्खदि लक्खं अण्णाणी मो ग्गस्स ॥२१॥
णाणं पुरिसस्स हवदि लहदि सुपुरिसो वि विणयसंजुत्तो।
णाणेण लहदि लक्खं लक्खंतो मोक्खमग्गस्स ॥२२॥
मइ धणुहं जस्स थिरं सुदगुण वाणा सुअत्थि रयणत्तं।
परमत्थबद्धलक्खो णवि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स ॥२३॥
सो देवो जो अत्थं धम्मं कामं सुदेइ णाणं च।
सो देइ जस्स अत्थि हु अत्थो धम्मो य पव्वज्जा ॥२४॥
धम्मो दयाविसुद्धो पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता।
देवो ववगयमोहो उदयकरो भव्वजीवाणं ॥२५॥
वयसम्मत्तविसुद्धे पंचेंदियसंजदे णिरावेक्खे।
ण्हाएउ मुणी तित्थे दिक्खासिक्खा सुण्हाणेण ॥२६॥
जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मत्तं संजमं णाणं।
तं तित्थं जिणमग्गे हवेइ जदि सतिभावेण ॥२७॥
णामे ठवणे हि य संदव्वे भावे हि सगुणपज्जाया।
चउणागदि संपदिमे भावा भावंति अरहंतं ॥२८॥

दंसण अणंत णाणे मोक्खो णट्ठट्ठकम्मबंधेण ।
णिरुवमगुणमारूढ़ो अरहंतो एरिसो होइ ॥२९॥

जरवाहिजम्ममरणं चउगइगमणं च पुण्ण पावं च ।
हंतूण दोसकम्मे हुउ णाणमयं च अरहंतो ॥३०॥

गुणठाणमग्गणेहिं य पज्जत्तीपाणजीवठाणेहिं ।
ठावण पंचविहेहिं पणयव्वा अरहपुरिसस्स ॥३१॥

तेरहमे गुणठाणे सजोइकेवलिय होइ अरहंतो ।
चउतीस अइसयगुणा होंति हु तस्सट्ठ पडिहारा ॥३२॥

गइ इंदियं च काए जाए वेए कसाय णाणे य ।
संजम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥३३॥

आहारो य सरीरो इंदियमणआणपाणभासा य ।
पज्जत्तिगुणसमिद्धो उत्तमदेवो हवइ अरहो ॥३४॥

पंच वि इंदियपाणा मणवयकाएण तिण्णि बलपाणा ।
आणप्पाणा आउगपाणेण होंति दह पाणा ॥३५॥

मणुयभवे पंचिंदिय जीवट्ठाणेसु होइ चउदसमे ।
एदे गुणगणजुत्तो गुणमारूढो हवइ अरहो ॥३६॥

जरवाहिदुक्खरहियं आहारणिहारवज्जियं विमलं ।
सिंहाण खेल सेओ णत्थि दुगुंछा य दोसो य ॥३७॥

दस पाणा पज्जत्ती अट्ठसहस्सा य लक्खणा भणिया ।
गोखीरसंखधवलं मंसं रुहिरं च सव्वंगे ॥३८॥

एरिसगुणेहिं सव्वं अइसयवंतं सुपरिसलामोयं ।
ओरालियं च कायं णायव्वं अरहपुरिसस्स ॥३९॥

मयरायदोसरहियो कसायमलवज्जिओ य सुविशुद्धो ।
चित्तपरिणामरहिदो केवलभावे मुणेयव्वो ॥४०॥

सम्मद्दंसणि पस्सदि जाणदि णाणेण दव्वपज्जाया ।
सम्मत्तगुणविशुद्धो भावो अरहस्स णायव्वो ॥४१॥
सुण्णहरे तरुहिट्ठे उज्जाणे तह मसाणवासे वा ।
गिरिगुह गिरिसिहरे वा भीमवणे अहववसिते वा ॥४२॥
संवसासत्तं तित्थं वचचइदालत्तयं च वुत्तेहि ।
जिणभवणं अह बेज्झं जिणमग्गे जिणवरा विंति ॥४३॥
पंचमहव्वयजुत्ता पंचिंदियसंजया णिरावेक्खा ।
सज्झायझाणजुत्ता मुणिवरवसहा णिइच्छन्ति ॥४४॥
णिहगंथमोहमुक्का बावीसपरीसहा जियकषाया ।
पावारंभविमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥४५॥
धणधण्णवत्थदाणं हिरण्णसयणासणाइ छत्ताइं ।
कुद्दाणविरहरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥४६॥
सत्तूमित्ते य समा पसंसणिदा अलद्धिलद्धिसमा ।
तणकणए भावा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥४७॥
उत्तममज्झिमगेहे दारिद्दे ईसरे णिरावेक्खा ।
सव्वत्थ गिहिदपिंडा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥४८॥
णिग्गंथा णिस्संगा णिम्माणासा अराय णिद्दोसा ।
णिम्मम णिरहंकारा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥४९॥
णिण्णेहा णिल्लोहा णिम्मोहा णिव्वियार णिक्कलुसा ।
णिब्भय णिरासभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥५०॥
जहजायरूवसरिसा अवलंबियभुय णिराऊहा संता ।
परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥५१॥
उवसमखमदमजुत्ता सरीरसंकारवज्जिया रुक्खा ।
मयरायदोसरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥५२॥

विवरीय ..भावा पणट्ठकम्मट्ठ णट्ठमिच्छत्ता ।
सम्मत्तगुणविसुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।५३।।

जिणमग्गे पव्वज्जा छहसंहणणेसु भणियं णिग्गंथा ।
भावंति भव्वपुरिसा कम्मक्खयकारणे भणिया ।।५४।।

तिलतुसमत्तणिमित्तसम बाहिरग्गंथसंगहो णत्थि ।
पव्वज्ज हवइ एसा जह भणिया सव्वदरसीहिं ।।५५।।

उवसग्गपरिसहसहा णिज्जणदेसे हि णिच्च अत्थेइ ।
सिल कट्ठे भूमितले सव्वे आरुहइ सव्वत्थ ।।५६।।

पसुमहिलसंढसंगं कुसीलसंगं ण कुणइ विकहाओ ।
सज्झायझाणजुत्ता पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।५७।।

तववयगुणेहिं सुद्धा संजमसम्मत्तगुणविसुद्धा य ।
सुद्धा गुणेहिं सुद्धा पव्वज्जा एरिसा भणिदा ।।५८।।

एवं आयत्तगुणपज्जंता बहुविसुद्धसम्मत्ते ।
णिग्गंथे जिणमग्गे संखेवेणं जहाखादं ।।५९।।

रूवत्थं सुद्धत्थं जिणमग्गे जिणवरेहिं जह भणियं ।
भवजणबोहणत्थं छक्कायहियंकरं उत्तं ।।६०।।

सद्दवियारो हूओ भासासुत्तेसु जं जिणे कहियं ।
सो तह कहियं णायं सीसेण य भद्दबाहुस्स ।।६१।।

बारसअंगवियाणं चउदसपुव्वंगविउलवित्थरणं ।
सुयणाणि भद्दबाहू गमयगुरू भयवओ जयउ ।।६२।।

भा पाहुडं

णमिऊण जिणवरिंदे णरसुरभवणिदवंदिए सिद्धे ।
वोच्छामि भावपाहुडमवसेसे संजदे सिरसा ॥१॥

भावो हि पढमलिंगं ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं ।
भावो कारणभूदो गुणदोसाणं जिणा बेंति ॥२॥

भावविसुद्धणिमित्तं बाहिरगंथस्स कीरए चाओ ।
बाहिरचाओ विहलो अब्भंतरगंथजुत्तस्स ॥३॥

भावरहिओ ण सिज्झइ जइ वि तवं चरइ कोडिकोडीओ ।
जम्मंतराइ बहुसो लंबियहत्थो गलियवत्थो ॥४॥

परिणामम्मि असुद्धे गंथे मुञ्चेइ बाहिरे य जई ।
बाहिरगंथच्चाओ भावविहूणस्स किं कुणइ ॥५॥

जाणहि भावं पढमं किं ते लिंगेण भावरहिएण ।
पथिय सिवपुरिपंथं जिणउवइट्ठं पयत्तेण ॥६॥

भावरहिएण सपुरिस अणाइकालं अणंतसंसारे ।
गहिउज्झियाइ बहुसो बाहिरणिग्गंथरूवाइं ॥७॥

भीसणणरयगईए तिरियगईए कुदेवमणुगइए ।
पत्तो सि तिव्वदुक्खं भावहि जिणभावणा जीव ! ॥८॥

सत्तसु णरयावासे दारुणभीमाइं असहणीयाइं ।
भुत्ताइं सुइरकालं दुक्खाइं णिरंतरं सहियं ॥९॥

खणणुत्तावणवालणवेणविच्छेयणाणिरोहं च ।
पत्तो सि भावरहिओ तिरियगईए चिरं कालं ॥१०॥

आगंतुक माणसियं सहजं सारीरियं च चत्तारि ।
दुक्खाइं मणुयजम्मे पत्तो सि अणंतयं कालं ॥११॥

सुरणिलयेसु सुरच्छरविभोयकाले य माणसं तिव्वं ।
संपत्तो सि महासज दुःखं सुहभावणारहिओ ॥१२॥

कंदप्पमाइयाओ पंच वि असुहादिभावणाई य ।
भाऊण दव्वलिंगी पहीणदेवो दिवे जाओ ॥१३॥

पासत्थभावणाओ अणाइकालं अणेयवाराओ ।
भाउण दुहं पत्तो कुभावणाभावबीएहि ॥१४॥

देवाण गुण विहूई इड्ढीमाहप्प बहुविहं दट्ठुं ।
होऊण हीणदेवो पत्तो बहु माणसं दुक्खं ॥१५॥

चउविहविकहासत्तो मयमत्तो असुहभावपयडत्थो ।
होऊण कुदेवत्तं पत्तो सि अणेयवाराओ ॥१६॥

असुईबीहत्थेहि य कलिमलबहुलाहि गब्भवसहीहि ।
वसि ाो सि चिरं कालं अणेयजणणीण मुणिपवर ॥१७॥

पीओ सि थणच्छीरं अणंतजम्मंतराइं जणणीणं ।
अण्णाण्णाण महाजस सायरसलिलादु अहिययरं ॥१८॥

तुह मरणे दुक्खेण अण्णण्णाणं अणेयजणणीणं ।
रुण्णाण णयणणीर सायरसलिलादु अहिययरं ॥१९॥

भवसायरे अणते छिण्णुज्झिय केसणहरणालट्ठी ।
पुञ्जइ जइ को वि जए हवदि य गिरिसमधियारासी ॥२०॥

जलथलसिहिपवणंवरगिरिसरिदरितरूवणाइ सवत्थ ।
वसिओ सि चिरं कालं तिहुवणमज्झे अणप्पवसो ॥२१॥

गसियाइं पुग्गलाइं भुवणोदरवत्तियाइं सव्वाइं ।
पत्तो सि तो ण तित्ति पुणरुत्तं ताइं भुञ्जंतो ॥२२॥

भावेण होइ लिंगी ण हु लिंगी होइ दव्वमित्तेण।
तम्हा कुणिज्ज भावं किं कीरइ दव्वलिंगेण ॥४८॥

दंडयणयरं सयलं डहिओ अब्भंतरेण दोसेण।
जिणलिंगेण वि बाहू पडिओ सो रउरवे णरए ॥४९॥

अवरो वि दव्वसवणो दंसणवरणाणचरणपब्भट्ठो।
दीवायणो त्ति णामो अणंतसंसारिओ जाओ ॥५०॥

भावसमणो य धीरो जुवईजणवेढिओ विसुद्धमई।
णामेण सिवकुमारो परीत्तसंसारिओ जादो ॥५१॥

केवलिजिणपण्णत्तं एयादसअंग सयलसुयणाणं।
पढिओ अभव्वसेणो ण भावसवणत्तणं पत्तो ॥५२॥

तुसमासं घोसंतो भावविसुद्धो महाणुभावो य।
णामेण य सिवभूई केवलणाणी फुडं जाओ ॥५३॥

भावेण होइ णग्गो बाहिरलिंगेण किं च णग्गेण।
कम्मपयडीण णियरं णासइ भावेण दव्वेण ॥५४॥

णग्गत्तणं अकज्जं भावणरहियं जिणेहिं पण्णत्तं।
इय णाऊण य णिच्चं भाविज्जहि अप्पयं धीर ॥५५॥

देहादिसंगरहिओ माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ स भावलिंगीहवे साहू ॥५६॥

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो।
आलंवणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे ॥५७॥

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे ॥५८॥

एगो मे सस्सदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥५९॥

भावेह भावसुद्धं अप्पा सुविशुद्धणिम्मलं चेव ।
लहु चउगइ चइऊणं जइ इच्चह सासयं सुक्खं ।।६०।।

जो जीवो भावंतो जीवसहावं सुभावसंजुत्तो ।
सो जरमरणविणासं कुणइ फुडं लद्ध णिव्वाणं ।।६१।।

जीवो जिणपण्णत्तो णाणसहाओ य चेयणासहिओ ।
सो जीवो णायव्वो कम्मक्खयकरणणिम्मित्तो ।।६२।।

जेसिं जीवसहाओ णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ ।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीवा ।।६३।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ।।६४।।

भावहि पंचपयारं णाणं अण्णाणणासणं सिग्घं ।
भावणभावियसहियो दिवसिवसुहभायणो होइ ।।६५।।

पढिएण वि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण ।
भावो कारणभूदो सायारणयारभूदाणं ।।६६।।

दव्वेण सयल णग्गा णारयतिरिया य सयलसंघाया ।
परिणामेण असुद्धा ण भावसवणत्तणं पत्ता ।।६७।।

णग्गो पावई दुक्खं णग्गो संसारसायरे भमइ ।
णग्गो ण लहइ बोहिं जिणभावणवज्जिओ सुइरं ।।६८।।

अयसाण भायणेण य किं ते णग्गेण पावमलिणेण ।
पेसुण्णहासमच्छरमायाबहुलेण सवणेण ।।६९।।

पयडहिं जिणवरलिंगं अब्भिंतरभावदोसपरिसुद्धो ।
भावमलेण य जीवो बाहिरसंगम्मि मयलियइ ।।७०।।

धम्मम्मि णिप्पवासो दोसावासो य उच्छुफुल्लसमो ।
णिप्फलणिग्गुणयारो णडसवणो णग्गरूवेण ।।७१।।

भावेण होइ लिंगी ण हु लिंगी होइ दव्वमित्तेण ।
तम्हा कुणिज्ज भावं किं कीरइ दव्वलिंगेण ॥४८॥

दंडयणयरं सयलं डहिओ अब्भंतरेण दोसेण ।
जिणलिंगेण वि बाहू पडिओ सो रउखे णरए ॥४९॥

अवरो वि दव्वसमणो दंसणवरणाणचरणपब्भट्ठो ।
दीवायणो त्ति णामो अणंतसंसारिओ जाओ ॥५०॥

भावसमणो य धीरो जुवईजणवेढिओ विसुद्धमई ।
णामेण सिवकुमारो परीत्तसंसारिओ जादो ॥५१॥

केवलिजिणपण्णत्तं एयादसअंग सयलसुयणाणं ।
पढिओ अभव्वसेणो ण भावसवणत्तणं पत्तो ॥५२॥

तुसमासं घोसंतो भावविसुद्धो महाणुभावो य ।
णामेण य सिवभूई केवलणाणी फुडं जाओ ॥५३॥

भावेण होइ णग्गो वाहिरलिंगेण किं च णग्गेण ।
कम्मपयडीण णियरं णासइ भावेण दव्वेण ॥५४॥

णग्गत्तणं अकज्जं भावणरहियं जिणेहिं पण्णत्तं ।
इय णाऊण य णिच्चं भाविज्जहि अप्पयं धीर ॥५५॥

देहादिसंगरहिओ माणकसाएहिं सयलपरिचत्तो ।
अप्पा अप्पम्मि रओ स भावलिंगीहवे साहू ॥५६॥

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो ।
आलंवणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे ॥५७॥

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य ।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोणे ॥५८॥

एगो मे सस्सदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो ।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥५९॥

भावेह भावसुद्धं अप्पा सुविशुद्धणिम्मलं चेव ।
लहु चउगइ चइऊणं जइ इच्चह सासयं सुक्खं ।।६०।।

जो जीवो भावंतो जीवसहावं सुभावसंजुत्तो ।
सो जरमरणविणासं कुणइ फुडं लद्धू णिव्वाणं ।।६१।।

जीवो जिणपण्णत्तो णाणसहाओ य चेयणासहिओ ।
सो जीवो णायव्वो कम्मक्खयकरणणिम्मित्तो ।।६२।।

जेसिं जीवसहाओ णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ ।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा ।।६३।।

अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं ।
जाण अलिगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं ।।६४।।

भावहि पंचपयारं णाणं अण्णाणणासणं सिग्घं ।
भावणभावियसहियो दिवसिवसुहभायेणो होइ ।।६५।।

पढिएण वि किं कीरइ किं वा सुणिएण भावरहिएण ।
भावो कारणभूदो सायारणयारभूदाणं ।।६६।।

दव्वेण सयल णग्गा णारयतिरिया य सयलसंघाया ।
परिणामेण असुद्धा ण भावसवणत्तणं पत्ता ।।६७।।

णग्गो पावई दुक्खं णग्गो संसारसायरे भमइ ।
णग्गो ण लहइ बोहिं जिणभावणवज्जिओ सुइरं ।।६८।।

अयसाण भायणेण य किं ते णग्गेण पावमलिणेण ।
पेसुण्णहासमच्छरमायाबहुलेण सेणेण ।।६९।।

पयडहिं जिणवरलिंगं अब्भिंतरभावदोसपरिसुद्धो ।
भावमलेण य जीवो बाहिरसंगम्मि मयलियइ ।।७०।।

धम्मम्मि णिप्पवासो दोसावासो य उच्छुफुल्लसमो ।
णिप्फलणिग्गुणयारो णडसवणो णग्गरूवेण ।।७१।।

जं रायसंगजुत्ता जिणभावणरहियदव्व णिग्गंथा ।
ण लहंति ते समाहिं बोहि जिणसासणे विमले ।।७२।।
भावेण होइ णग्गो मिच्छत्ताई य दोस चइऊणं ।
पच्छा दव्वेण मुणी पयडदि लिगं जिणाणाए ।।७३।।
भावो वि दिव्वसिवसुक्खभायणो भाववज्जिओ सवणो ।
कम्ममलमलिणचित्तो तिरियालयभायणो पावो ।।७४।।
खयरामरमणुयकरं जलिमालाहिं च सथुया विउला।
चक्कहररायलच्छी लब्भइ बोही सुभावेण ।।७५।।
भावं तिविहपयारं सुहासुहं सुद्धमेव णायव्वं ।
असुहं च अट्टरउद्दं सुह धम्मं जिवणिंदेहिं ।।७६।।
सुद्धं सुद्धसहावं अप्पा अप्पम्मि तं च णायव्वं ।
इदि जिणवरेहिं भणियं जं सेयं तं समायरह ।।७७।।
पयलियमाणकसाओ पयलियमिच्छत्तमोहसमचित्तो ।
पावइ तिहुवणसार बोही जिणसासणे जीवो ।।७८।।
विसयविरत्तो समणो छद्दसवरकारणाइं भाऊण ।
तित्थयरणामकम्मं बंधइ अइरेण कालेण ।।७९।।
बारसविहतवयरणं तेरस किरियाउ भाव तिविहेण।
धरहि मणमत्तदुरियं णाणंकुसएण मुणिपवर ।।८०।।
पंचविहचेलचायं खिदिसयण दुविहसंजमं भिक्खू ।
भावं भावियपुव्वं जिणलिगं णिम्मलं सुद्धं ।।८१।।
जह रयणाणं पवरं वज्जं जह तरूगणाण गोसीरं ।
तह धम्माण पवरं जिणधम्मं भाविभवमहणं ।।८२।।
पूयादिसु वहसहियं पुण्णं हि जिणेहिं सासणे भणियं ।
मोहक्खोह विहीणो परिणामो अप्पणो धम्मो ।।८३।।

सद्दहदि य पत्तेदि य रोचेदि य तह पुणो वि फासेदि ।
पुण्णं भोयणिमित्तं ण हु सो कम्मक्खयणिमित्तं ॥८४॥
अप्पा अप्पम्मि रओ रायादिसु सयलदोसपरिचत्तो ।
संसारतरणहेदू धम्मो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥८५॥
अहपुण अप्पा णिच्छदि पुण्णाइं करेदि णिरवसेसाइं।
तह वि ण पावदि सिद्धिं संसारत्थो पुणो भणिदो ॥८६॥
एएण कारणेण य तं अप्पा सद्दहेह तिविहेण ।
जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण ॥८७॥
मच्छो वि सालिसित्थो असुद्धभावो गओ महाणरयं ।
इय णाउं अप्पाणं भावह जिणभावणं णिच्चं ॥८८॥
बाहिरसंगच्चाओ गिरिसरिदरिकंदराइ आवासो ।
सयलो णाणज्झयणो णिरत्थओ भावरहियाणं ॥८९॥
भंजसु इंदियसेणं भंजसु मणमक्कडं पयत्तेण ।
मा जणरंजणकरणं बाहिरवयवेस तं कुणसु ॥९०॥
णवणोकसाय वग्गं मिच्छत्तं चयसु भावसुद्धीए ।
चेइयपवयणगुरुणं करेहि भत्ति जिणाणाए ॥९१॥
तित्थयरभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं ।
भावहि अणुदिणु अतुलं विसुद्धभावेण सुयणाणं ॥९२॥
पीऊण णाणसलिलं णिम्महतिसडाहसोसउम्मुक्का ।
होंति सिवालयवासी तिहुवणचूडामणी सिद्धा ॥९३॥
दस दस दो सुपरीसह सहहि मुणी सयलकाल काएण ।
सुत्तेण अप्पमत्तो संजम घादं पमोत्तूण ॥९४॥
जह पत्थरो ण भिज्जइ परिट्ठिओ दीहकालमुदएण ।
तह साहू वि ण भिज्जइ उवसग्गपरीसहेहिं तो ॥९५॥

भावहि अणुवेक्खाओ अवरे पणवीसभावणा भावि ।
भावरहिएण किं पुण बाहिरलिंगेण कायव्वं ॥९६॥
सव्वविरओ वि भावहि णव य पयत्थाइं सत्त तच्चाइं ।
जीवसमासाइं मुणी चउदस गुणठाणणामाइं ॥९७॥
णवविहबभं पयडहि अब्बंभं दसविहं पमोत्तूण ।
मेहुणसण्णासत्तो भमिओ सि भवण्णवे भीमे ॥९८॥
भावसहिदो य मुणिणो पावइ आराहणाचउक्कं च ।
भावरहिदो य मुणिवर भमइ चिरं दीहसंसारे ॥९९॥
पावंति भावसवणा कल्लाणपरंपराइं सोक्खाइं ।
दुक्खाइं दव्वसवणा णरतिरियकुदेवजोणीए ॥१००॥
छायालदोसदूसियमसणं गसिउं असुद्धभावेण ।
पत्तो सि महावसणं तिरियगईए अणप्पवसो ॥१०१॥
सच्चित्तत्तमत्तपाणं गिद्धी दप्पेणऽधी पभुत्तूण ।
पत्तो सि तिव्वदुक्खं अणाइकालेण तं चित ॥१०२॥
कंद मूलं बीजं पुफ्फं पत्तादि किंचि सच्चित्तं ।
असिऊण माणगव्वं भमिओ सि अणंतसंसारे ॥१०३॥
विणयं पंचपयारं पालहि मणवयणकायजोएण ।
अविणयणरा सुविहियं तत्तो मुत्तिं ण पावंति ॥१०४॥
णियसत्तीए महाजस भत्तीराएण णिच्चकालम्मि ।
तं कुण जिणभत्तिपर विज्जावच्चं दसवियप्पं ॥१०५॥
जं किंचि कयं दोसं मणवयकाएहिं असुहभावेण ।
तं गरहि गुरुसयासे गारव मायं च मोत्तूण ॥१०६॥

दुज्जणवयणचडक्कं णिट्ठुरकडुयं सहंति सप्पुरिसा ।
कम्ममलणासणट्ठं भावेण य णिम्ममा सवणा ॥१०७॥

पावं खवइ असेसं खमाए पडिमंडिओ य मुणिपवरो ।
खेयरअमरणराणं पसंसणीओ धुवं होइ ॥१०८॥

इय णाऊण खमागुण खमेहि तिविहेण सयल जीवाणं ।
चिरसंचियकोहसिंहि वरखमसलिलेण सिंचेह ॥१०९॥

दिक्खाकालाईयं भावहि अवियारदंसणविसुद्धो ।
उत्तमबोहिणिमित्तं असारसाराणि मुणिऊण ॥११०॥

सेवहि चउविहलिंगं अब्भंतरलिंगसुद्धिमावण्णो ।
बाहिरलिंगमकज्जं होइ फुडं भावरहियाणं ॥१११॥

आहारभयपरिग्गहमेहुणसण्णाहि मोहिओ सि तुमं ।
भमिओ संसारवणे अणाइकालं अणप्पवसो ॥११२॥

बाहिरसयणत्तावणतरुमूलाईणि उत्तरगुणाणि ।
पालहि भावविसुद्धो पूयालाहं ण ईहंतो ॥११३॥

भावहि पढमं तच्चं विदियं तदियं चउत्थ पंचमयं ।
तियरणसुद्धो अप्पं अणाइणिहणं तिवग्गहरं ॥११४॥

जाव ण भावइ तच्चं जाव ण चिंतेइ चिंतणीयाइं ।
ताव ण पावइ जीवो जरमरणविवज्जियं ठाणं ॥११५॥

पावं हवइ असेसं पुण्णमसेसं च हवइ परिणामा ।
परिणामादो बंधो मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो ॥११६॥

मिच्छत्त तह कसाया संजमजोगेहि असुहलेसेहिं ।
बंधइ असुहं कम्मं जिणवयणपरम्मुहो जीवो ॥११७॥

तव्विवरीओ बंधइ सुहकम्मं भावसुद्धिमावण्णो ।
दुविहपयारं बंधइ संखेपेणेव वज्जरियं ॥११८॥

णाणावरणादीहिय अट्ठहिं कम्मेहिं वेढिओ य अहं।
डहिऊण इण्हि पयडमि अणंतणाणाइगुणचित्तां ।।११९।।

सीलसहस्सट्ठारस चउरासीगुणगणाण ल इं।
भावहि अणुदिणु णिहलं असप्पलावेण किं बहुणा ।।१२०।।

झायहि धम्मं सुक्कं अट्ट रउद्दं च झाण मुत्तूण।
रुद्दट्ट झाइयाइं इमेण जीवेण चिरकालं ।।१२१।।

जे के वि दव्व सवणा इंदियसुह आउला ण छिंदंति।
छिंदंति भावसवणा झाण कुठारेहिं भव रुक्खं ।।१२२।।

जह दीवो गब्भहरे मारुयवाहाविवज्जिओ जलइ।
तह रायाणिलरहिओ झाणपईवो वि पज्जलइ ।।१२३।।

झायहि पंच वि गुरुवे मंगलचउसरणलोयपरियरिए।
णरसुरखेयरमहिए आराहणणायगे वीरे ।।१२४।।

णाणमयविमलसयीलसलिलं पाऊण भविय भायेण।
वाहिजरमरणवेयणडाहविमुक्का सिवा होंति ।।१२५।।

जह बोयम्मि य दड्ढे ण वि रोहइ अंकुरो य महिवीढे।
तह कम्मवीयदड्ढे भवंकुरो भावसवणाणं ।।१२६।।

भावसण्णो वि पावइ सुक्खइं दुहाइं दव्वसवणो य।
इय णाऊं गुणदोसे भावेण य संजुदो होइ ।।१२७।।

तित्थयरगणहराइं अब्भुदयपरंपराइं सोक्खाइं।
पावंति भावसहिया संखेवि जिणेहिं वज्जरियं ।।१२८।।

ते धण्णा ताण णमो दंसणवरणाणचरणसुद्धाणं।
भावसहियाण णिच्च तिविहेण पणट्ठमायाणं ।।१२९।।

इड्ढिमतुलं विउव्विय किण्णरकिंपुरि भ
तेहिं वि ण जाइ मोहं जिणभा । अ

किं पुण गच्छइ मोहं णरसुरसुक्खाण अप्पसाराणं ।
जाणंतो पस्संतो चिंतंतो मोक्ख मुणिधवलो ।।१३१।।

उत्थरइ जा ण जरओ रोयग्गी जा ण डहइ देहउडिं ।
इंदियबलं ण वियलइ ताव तुमं कुणहि अप्पहियं ।।१३२।।

छज्जीव छडायदणं णिच्चं मणवयणकायजोएहि ।
कुरु दय परिहर मुणिवर भावि अपुव्वं महासत्तं ।।१३३।।

दसविहपाणाहारो अणंतभवसायरे भमतेण ।
भोयसुहकारणट्ठं कदो य तिविहेण सयलजीवाण ।।१३४।।

पाणिवहेहि महाजस चउरासीलक्खजोणिमज्झम्मि ।
उप्पजंत मरंतो पत्तो सि णिरंतरं दुक्खं ।।१३५।।

जीवाणमभयदाणं देहि मुणी पाणिभूयसत्ताणं ।
कल्लाणसुहणिमित्तं परतेरा तिविह सुद्धीए ।।१३६।।

असियसय किरियवाई अक्किरियाणं च होइ चुलसीदी ।
सत्तट्ठी अण्णाणी वेणईया होंति बत्तीसा ।।१३७।।

ण मुयइ पयडि अभव्वो सुट्ठु वि आयाण्णिऊण जिणधम्मं ।
गुडदुद्धं पि पिबंता ण पण्णया णिव्विसा होंति ।।१३८।।

मिच्छत्तछण्णदिट्ठी दुद्धीए दुम्मएहिं दोसेहिं ।
धम्मं जिणपण्णत्तं अभव्वजीवो ण रोचेदि ।।१३९।।

कुच्छियधम्मम्मि रओ कुच्छियपासंडिभत्तिसंजुत्तो ।
कुच्छियतवं कुणंतो कुच्छियगइभायणो होइ ।।१४०।।

इय मिच्छत्तावासे कुणयकुसत्थेहिं मोहिओ जीवो ।
भमिओ अणाइकाल संसारे धीर चित्तहि ।।१४१।।

पासडी तिण्णि सया तिसट्ठि भेया उमग्ग मुत्तूण ।
रूंमहि मणु जिणमग्गे असप्पलावेण किं बहुणा ।।१४२।।

णाणावरणादीहिं य अट्ठहिं कम्मेहिं वेढिओ य अहं।
डहिऊण इण्हिं पयडमि अणंतणाणाइगुणचित्तां ।।११९।।

सीलसहस्सट्ठारस चउरासीगुणगणाण लक्खाइं ।
भावहि अणुदिणु णिहिलं असप्पलावेण किं बहुणा ।।१२०।।

झायहि धम्मं सुक्कं अट्ट रउद्दं च झाण मुत्तूण ।
रुद्दट्ट झाइयाइं इमेण जीवेण चिरकालं ।।१२१।।

जे के वि दव्व सवणा इंदियसुह आउला ण छिंदंति ।
छिंदंति भावसवणा झाण कुठारेहिं भव रुक्खं ।।१२२।।

जह दीवो गब्भहरे मारुयवाहाविवज्जिओ जलइ ।
तह रायाणिलरहिओ झाणपईवो वि पज्जलइ ।।१२३।।

झायहि पंच वि गुरुवे मंगलचउसरणलोयपरियरिए ।
णरसुरखेयरमहिए आराहणणायगे वीरे ।।१२४।।

णाणमयविमलसयीलसलिलं पाऊण भविय भायेण ।
वाहिजरमरणवेयणडाहविमुक्का सिवा होंति ।।१२५।।

जह बीयम्मि य दड्ढे ण वि रोहइ अंकुरो य महिवीढे ।
तह कम्मबीयदड्ढे भवंकुरो भावसवणाणं ।।१२६।।

भावसण्णो वि पावइ सुक्खाइं दुहाइं दव्वसवणो य ।
इय णाऊं गुणदोसे भावेण य संजुदो होइ ।।१२७।।

तित्थयरगणहराइं अब्भुदयपरंपराइं सोक्खाइं ।
पावंति भावसहिया संखेवि जिणेहिं वज्जरियं ।।१२८।।

ते धण्णा ताण णमो दंसणवरणाणचरणसुद्धाणं ।
भावसहियाण णिच्चं तिविहेण पणट्ठमायाणं ।।१२९।।

इड्ढिमतुलं विउव्विय किण्णरकिंपुरिसअमरखयरेहिं।
तेहिं वि ण जाइ मोह जिणभावणभाविओ धीरो ।।१३०।।

किं पुण गच्छइ मोहं णरसुरसुक्खाण अप्पसाराणं ।
जाणंतो पस्संतो चिंतंतो मोक्ख मुणिधवलो ॥१३१॥

उत्थरइ जा ण जरओ रोयग्गी जा ण डहइ देहउडिं ।
इंदियबलं ण वियलइ ताव तुमं कुणहि अप्पहियं ॥१३२॥

छज्जीव छडायदणं णिच्चं मणवयणकायजोएहिं ।
कुरु दय परिहर मुणिवर भावि अपुव्वं महासत्त ॥१३३॥

दसविहपाणाहारो अणंतभवसायरे भमंतेण ।
भोयसुहकारणट्ठं कदो य तिविहेण सयलजीवाण ॥१३४॥

पाणिवहेहि महाजस चउरासीलक्खजोणिमज्झम्मि ।
उप्पजंत मरंतो पत्तो सि णिरंतरं दुक्खं ॥१३५॥

जीवाणमभयदाणं देहि मुणी पाणिभूयसत्ताणं ।
कल्लाणसुहणिमित्तं परंपरा तिविह सुद्धीए ॥१३६॥

असियसय किरियवाई अक्किरियाण च होइ चुलसीदी ।
सत्तट्ठी अण्णाणी वेणईया होंति बत्तीसा ॥१३७॥

ण मुयइ पयडि अभव्वो सुट्ठु वि आयाणिऊण जिणधम्मं ।
गुडदुद्धं पि पिबंता ण पण्णया णिव्विसा होंति ॥१३८॥

मिच्छत्तछण्णदिट्ठी दुद्धीए दुम्मएहिं दोसेहिं ।
धम्मं जिणपण्णत्तं अभव्वजीवो ण रोचेदि ॥१३९॥

कुच्छियधम्मम्मि रओ कुच्छियपासंडिभत्तिसंजुत्तो ।
कुच्छियतवं कुणंतो कुच्छियगइभायणो होइ ॥१४०॥

इय मिच्छत्तावासे कुणयकुसत्थेहिं मोहिओ जीवो ।
भमिओ अणाइकालं संसारे धीर चिंतेहि ॥१४१॥

पासंडी तिण्णि सया तिसट्ठि भेया उमग्ग मुत्तूण ।
रुंभहि मणु जिणमग्गे असप्पलावेण किं बहुणा ॥१४२॥

जीवविमुक्को श्रो दंसरणमुक्को य होइ चलसबश्रो ।
ाे लोयश्रपुज्जो लोयन्तरयम्मि चलसबश्रो ।।१४३।।

जह तारयाण चंदो मयराश्रो मयउलाण सव्वाणं ।
श्रहिश्रो तह सम्मत्तो रिसिसावयदुविहधम्माणं ।।१४४।।

जह फणिराश्रो सोहइ फणमणिमाणिक्ककिरणविप्फुरिश्रो ।
तह विमलदंसणधरो जिणभत्ती पवयणे जीवो ।।१४५।।
जह तारायणसहियं ससहरबिंबं खमंडले विमले ।
भाविय तववयविमलं जिणलिंगं दंसणविसुद्धं ।।१४६।।
णाऊ इयं गुणदोसं दंसणरयणं परेहभावेण ।
सारं गुणरयणाणं सोवाणं पढम मोक्खस्स ।।१४७।।
कत्ता भोइ श्रमुत्तो सरीरमित्तो श्रणाइणिहणो य ।
दंसणणाणुवश्रोगो णिद्दिट्ठो जिणवरिंदेहिं ।।१४८।।
दंसणणाणावरणं मोहणिणं राइयं कम्मं ।
णिट्ठवइ भवियजीवो सम्म जिणभावणाजुत्तो ।।१४९।।
बलसोक्खणाणदंसण चत्तारि वि पायडा गुणा होंति ।
णट्ठे घाइचउक्के लोयालोयं पयासेदि ।।१५०।।
णाणी सिव परमेट्ठी सव्वण्हू विण्हु चउमुहो बुद्धो ।
श्रप्पो वि य परमप्पो कम्मविमुक्को य होइ फुडं ।।१५१।।
इय घाइकम्ममुक्को श्रट्ठारहदोसवज्जिश्रो सयलो ।
तिहुवणभवणपदीवो देउ ममं उत्तमं बोहिं ।।१५२।।
जिणवरचरणंबुरुहं णमंति जे परमभत्तिराएण ।
ते जम्मवेल्लिमूलं खणंति वरभावसत्थेण ।।१५३।।
जह सलिलेण ण लिप्पइ कमलिणिपत्त सहावपयडीए ।
तह भावेण ण लिप्पइ कसायविसएहिं सप्पुरिसो ।।१५४।।

ते च्चिय भणामि हं जे सयलफला सीलसंजमगुणेहिं ।
बहुदोसाणावासो सुमलिणचित्तो ण सावयसमो सो ।।१५५।।

ते धीरवीरपुरिसा खमदमखग्गेण विप्फुरंतेण ।
दुज्जयपबलबलुद्धरकसायभड़ णिज्जिया जेहिं ।।१५६।।

धण्णा ते भयवंता दंसणणाणग्गपवरहत्थेहिं ।
विसयमयरहरपडिया भविया उत्तारिया जेहिं ।।१५७।।

मायावेल्लि असेसा मोहमहातरुवरम्मि आरुढा ।
विसयविसपुप्फफुल्लिय लुणंति मुणि णाणसत्थेहिं ।।१५८।।

मोहमयगारवेहिं य मुक्का जे करुणभावसंजुत्ता ।
ते सव्वदुरियखंभं हणंति चारित्तखग्गेण ।।१५६।।

गुणगणमणिमालाए जिणमयगयणे णिसायरमुणिंदो ।
तारावलिपरियरियो पुण्णिमइंदुव्व पवणपहे ।।१६०।।

चक्कहररामकेसवसुखरजिणगणहराइसोक्खाइं ।
चारणमुणिरिद्धीओ विसुद्धभावा णरा पत्ता ।।१६१।।

सिवमजरामरलिंगमणोवममुत्तमं परमविमलमतुलं ।
पत्ता वरसिद्धिसुहं जिणभावणभाविया जीवा ।।१६२।।

ते मे तिहुवणमहिया सिद्धा सुद्धा णिरंजणा णिच्चा ।
दिंतु वरभावसुद्धिं दंसण णाणे चरित्ते य ।।१६३।।

किं जंपिएण बहुणा अत्थो धम्मो य काममोक्खो य ।
अण्णे वि य वावारा भावम्मि परिट्ठया सव्वे ।।१६४।।

इय भावपाहुडमिणं सव्वं बुद्धेहि देसियं सम्मं ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ अविचलं ठाणं ।।१६५।।

— x —

मोक्ख पाहुडं

णाणमयं अप्पाणं उवलद्धं जेण झडियकम्मेण ।
चईऊण य परदव्वं नमो णमो तस्य देवस्य ॥१॥

णमिऊण य तं देवं अणंतवरणाणदंसणं सुद्धं ।
वोच्छं परमप्पाणं परमपयं परमजोईणं ॥२॥

जं जाणिऊण जोई जोअत्थो जोईऊण अणवरयं ।
अव्वाबाहमणंतं अणोवयं लहइ णिव्वाणं ॥३॥

तिपयारो सो अप्पा परमतरबाहिरो हु देहीणं ।
तत्थ परो झाइज्जइ अंतोवारण चइवि बहिरप्पा ॥४॥

अक्खाणि बहिरप्पा अन्तरअप्पाहु अप्पसंकप्णो ।
कम्मकलंकविमुक्को परमप्पा भण्णए देवो ॥५॥

मलरहिओ कलचत्तो अणिंदिओ केवलो विसुद्धप्पा ।
परमेट्ठी परमजिणो सिवंकरो सासओ दिद्धो ॥६॥

आरूहवि अन्तरप्पा बहिरप्पा छडिऊण तिविहेण ।
झाइज्जइ परमप्पा उवइट्ठं जिणवरिंदेहिं ॥७॥

बहिरत्थे फुरियमणो इंदियदारेण णियसरूवचुओ ।
णियदेहं अप्पाणं अज्झवसदी मूढदिट्ठीओ ॥८॥

णियदेहसरिच्छं पिच्छिऊण परविग्गहं पयत्तेण ।
अच्चेयण पि गहियं झाइज्जइ परमभावेण ॥९॥

सपरज्झवसाएणं देहेसु य अविदिदत्थमप्पाण ।
सुयदाराईविसए मणुयाण वड्ढए मोहो ॥१०॥

मिच्छाणाणेसु रओ मिच्छाभावेण भावियो संतो ।
मोहोदएण पुणरवि अंगं सं मण्णए मणुओ ॥११॥

जो देहे णिरवेक्खो णिद्दंदो णिम्ममो णिरारंभो ।
आदसहावे सुरओ जोई सो लहइ णिव्वाणं ॥१२॥

परदव्वरओ बज्झदि विरओ मुच्चेइ विविहकम्मेहिं ।
एसो जिणउवदेसो समासदो बंधमुक्खस्स ॥१३॥

सद्दव्वरओ सवणो सम्माइट्ठी हवेइ णियमेण ।
सम्मत्तपरिणदो पुण ख़वेइ दुट्ठट्ठकम्माइं ॥१४॥

जो पुण परदव्वरओ मिच्छादिट्ठी हवेइ सो साहू ।
मिच्छत्तपरिणदो पुण बज्झदि दुट्ठट्ठकम्मेहिं ॥१५॥

परदव्वाओ दुग्गई सद्दव्वादो हु सुग्गई होइ ।
इय णाऊण सदव्वे कुणह रई विरइ इयरम्मि ॥१६॥

आदसहावादण्णं सचित्ताचित्तमिस्सियं हवदि ।
तं परदव्वं भणियं अवितत्थं सव्वदरिसीहिं ॥१७॥

दुट्ठट्ठकम्मरहियं अणोवमं णाणविग्गहं णिच्चं ।
सुद्धं जिणेहिं कहियं अप्पाणं हवदि सद्दव्वं ॥१८॥

जे झायंति सदव्वं परदव्वपरम्मुहा दु सुचरित्ता ।
ते जिणवराण मग्गे अणुलग्गा लहहिं णिव्वाणं ॥१९॥

जिणवरमणए जोई झाणे झाएइ सुद्धमप्पाणं ।
जेण लहइ णिव्वाणं ण लहइ किं तेण सुरलोयं ॥२०॥

जो जाई जोयणसयं दियहेणेक्केण लेवि गुरुभारं ।
सो किं कोसद्धं पि हु ण सक्कए जाउ भुवणयले ॥२१॥

जो कोडिए ण जिप्पइ सुहडो संगामएहिं सव्वेहिं ।
सो किं जिप्पइ इक्कि णरेण संगामए सुहडो ॥२२॥

सग्गं तवेण सव्वो वि पावए तहिं वि झाणजोएण ।
जो पावइ सो पावइ परलोए सासयं सोक्खं ॥२३॥

अइसोहणजोएणं सुद्धं हेमं हवेइ जह तह य।
कालाई लद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि ॥२४॥

वर वयतवेहिं सग्गो मा दुक्खं होउ णिरइ इयरेहिं।
छायातवट्ठियाणं पडिवालंताण गुरुभेयं ॥२५॥

जो इच्छइ णिस्सरिदु संसारमहण्णवाउ रूंद्दाओ।
कम्मिंधणाण डहणं सो झायइ अप्पयं सुद्धं ॥२६॥

सव्वे कसाय मोत्तुं गारवमयरायदोसवामोहं।
लोयववहारविरदो अप्पा झाएह झाणत्थो ॥२७॥

मिच्छत्तं अण्णाणं पाव पुण्ण चएवि तिविहेण।
मोणव्वएण जोई जोयत्थो जोयए अप्पा ॥२८॥

जं मया दिस्सदे रूवं तं ण जाणादि सव्वहा।
जाणगं दिस्सदे णेव तम्हा जंपेमि केण हं ॥२९॥

सव्वासवणिरोहेण कम्मं खवदि संचिदं।
जोयत्थो जाणए जोई जिणदेवेण भासियं ॥३०॥

जो सुत्तो ववहारो सो जोई जग्गए सकज्जम्मि।
जो जग्गदि ववहारे सो सुत्तो अप्पणो कज्जे ॥३१॥

इय जाणिऊण जोई ववहारं चयइ सव्वहा सव्वं।
झायइ परमप्पाणं जह भणियं जिणवरिंदेहि ॥३२॥

पंचमहव्वयजुत्तो पंचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु।
रयणत्तयसंजुत्तो झाणज्झयणं सया कुणह ॥३३॥

रयणत्तयमाराहं जीवो आराहओ मुणेयव्वो।
आराहणाविहाणं तस्स फल केवलं णाणं ॥३४॥

सिद्धो शुद्धो आदा सव्वण्हू सव्वलोयदरिसी य।
सो जिणवरेहिं भणिओ जाण तुमं केवलं णाणं ॥३५॥

रयणत्तयं पि जोई आराहइ जो हु जिणवरमएण ।
सो झायदि अप्पाणं परिहरइ परं ण संदेहो ॥३६॥
जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दंसणं णेयं ।
तं चारित्तं भणियं परिहारो पुण्णपावाणं ॥३७॥
तच्चरुई सम्मत्तं तच्चग्गहणं च हवइ सण्णाणं ।
चारित्तं परिहारो परूवियं जिणवरिंदेहि ॥३८॥
दंसणसुद्धो सुद्धो दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं ।
दंसणविहीण पुरिसो ण लहइ तं इच्छियं लाहं ॥३९॥
इय उवएसं सारं जरमरणहरं खु मण्णए जं तु ।
तं सम्मत्तं भणियं सवणाणं सावयाणं पि ॥४०॥
जीवाजीवविहत्ती जोई जाणेइ जिणवरमएण ।
तं सण्णाणं भणियं अवियत्थं सव्वदरसीहि ॥४१॥
जं जाणिऊण जोई परिहारं कुणइ पुण्णपावाणं ।
तं चारित्तं भणियं अवियप्पं कम्मरहिएहि ॥४२॥
जो रयणत्तयजुत्तो कुणइ तवं संजदो ससत्तीए ।
सो पावइ परमपयं झायंतो अप्पयं सुद्धं ॥४३॥
तिहि तिण्णि धरवि णिच्चं तियरहिओ तह तिएण परियरिओ ।
दोदोसविप्पमुक्को परमप्पा झायए जोई ॥४४॥
मयमायकोहरहिओ लोहेण विवज्जिओ य जो जीवो ।
णिम्मलसहावजुत्तो सो पावइ उत्तमं सोक्खं ॥४५॥
विसयकसाएहि जुदो रुद्दो परमप्पभावरहियमणो ।
सो ण लहइ सिद्धि सुहं जिणमुद्दपरम्मुहो जीवो ॥४६॥
जिणमुद्दं सिद्धिसुहं हवेइ णियमेण जिणवरुद्दिट्ठा ।
सिविणे वि ण रुच्चइ पुण जीवा अच्छंति भवगहणे ॥४७॥

परमप्पय झायंतो जोई मुच्चेइ मलदलोहेण ।
णादियदि णवं कम्मं णिदिट्ठं जिणवरिंदेहिं ॥४८॥
होऊण दिढचरित्तो दिढसम्मत्तेण भावियमईओ ।
झायंतो अप्पाणं परमपयं पावए जोई ॥४९॥
चरणं हवइ सधम्मो धम्मो सो हवइ अप्पसमभावो ।
सो रागरोसरहिओ जीवस्स अणण्णपरिणामो ॥५०॥
जह फलिहमणि विसुद्धो परदव्वजुदो हवेइ अण्णं सो ।
तह रागादिविजुत्तो जीवो हवदि हु अणण्णविहो ॥५१॥
देवगुरुम्मि य भत्तो साहम्मिय संजदेसु अणुरत्तो ।
सम्मत्तमुव्वहंतो झाणरओ होदि जोई सो ॥५२॥
उग्गतवेणण्णाणी जं कम्मं खवदि भवहि बहुएहिं ।
तं णाणी तिहि गुत्तो खवेइ अंतोमुहुत्तेण ॥५३॥
सुहजोएण सुभावं परदव्वे कुणइ रागदो साहू ।
सो तेण दु अण्णाणी णाणी एत्तो दु विवरीओ ॥५४॥
आसवहेदू य तहा भावं मोक्खस्स कारणं हवदि ।
सो तेण दु अण्णाणी आदसहावा दु विवरीओ ॥५५॥
जो कम्मजादमइओ सहावणाणस्स खंडदूसयरो ।
सो तेण दु अण्णाणी जिणसासणदूसगो भणिदो ॥५६॥
णाणं चारित्तहीण दंसणहीण तवेहिं सजुत्तं ।
अण्णेसु भावरहियं लिंगग्गहणेण किं सोक्खं ॥५७॥
अच्चेयणं पि चेदा जो मण्णइ सो हवेइ अण्णाणी ।
सो पुणं णाणी भणिओ जो मण्णइ चेयणे चेदा ॥५८॥
तवरहियं जं णाणं णाणविजुत्तो तवो वि अकयत्थो ।
तम्हा णाणतवेणं संजुत्तो लहइ णिव्वाणं ॥५९॥
धुवसिद्धि तित्थयरो चउणाणजुदो करेइ तवयरण ।
णाऊण धुवं कुज्जा तवयरण णाणजुत्तो वि ॥६०॥

बाहिरलिंगेण जुदो अब्भंतरलिंगरहियपरियम्मो ।
सो सगचरित्तभट्ठो मोक्खपहविणासगो साहू ॥६१॥

सुहेण भाविदं णाणं दुहे जादे विणस्सदि ।
तम्हा जहाबलं जोई अप्पा दुक्खेहि भावए ॥६२॥

आहारासणणिद्दाजयं च काऊण जिणवरमएण ।
झायव्वो णियअप्पा णाऊणं गुरुपसाएण ॥६३॥

अप्पा चरित्तवंतो दंसणणाणेण संजुदो अप्पा ।
सो झायव्वो णिच्चं णाऊणं गुरुपसाएण ॥६४॥

दुक्खे णज्जइ अप्पा अप्पा णाऊण भावणा दुक्खं ।
भावियसहावपुरिसो विसयेसु विरज्जए दुक्खं ॥६५॥

ताव ण णज्जइ अप्पा विसएसु णरो पवट्टए जाव ।
विसए विरत्तचित्तो जोई जाणेंई अप्पाणं ॥६६॥

अप्पा णाऊण णरा केई सब्भावभावपब्भट्ठा ।
हिंडंति चाउरंगं विसएसु विमोहिया मूढा ॥६७॥

जे पुण विषयविरत्ता अप्पा णाऊण भावणासहिया ।
छंडंति चाउरंगं तवगुणजुत्ता ण संदेहो ॥६८॥

परमाणुपमाणं वा परदव्वे रदि हवेदि मोहादो ।
सो मूढो अण्णाणी आदसहावस्स विवरीओ ॥६९॥

अप्पा झायंताणं दंसणसुद्धीण दिढचरित्ताणं ।
होदि धुवं णिव्वाणं विसएसु विरत्तचित्ताणं ॥७०॥

जेण रागो परे दव्वे ससारस्स हि कारणं ।
तेणावि जोइणो णिच्चं कुज्जा अप्पे सभावणं ॥७१॥

णिंदाए य पसंसाए दुक्खे य सुहएसु य ।
सत्तूणं चेव बंधूणं चारित्तं समभावदो ॥७२॥

चरियावरिया वदसमिदिवज्जिया सुद्धभावपब्भट्टा ।
केई जंपंति णरा ण हु कालो झाणजोयस्स ।।७३।।

सम्मत्तणाणरहिओ अभव्वजीवो हु मोक्खपरिमुक्को ।
संसारसुहे सुरदो ण हु कालो भणइ झाणस्स ।।७४।।

पंचसु महव्वदेसु य पंचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु ।
जो मूढो अण्णाणी ण हु कालो भणइ झाणस्स ।।७५।।

भरहे दुस्समकाले धम्मज्झाणं हवेइ साहुस्स ।
तं अप्पसहावठिदे ण हु मण्णइ सो वि अण्णाणी ।।७६।।

अज्ज वि तिरयणसुद्धा अप्पा झाए वि लहइ इंदत्तं ।
लोयंतियदेवत्तं तत्थ चुआ णिव्वुदिं जंति ।।७७।।

जे पावमोहियमई लिंगं छेत्तूण जिणवरिंदाणं ।
पावं कुणंति पावा ते चत्ता मोक्खमग्गम्मि ।।७८।।

जे पंचचेलसत्ता गंथग्गाही य जायणासीला ।
आधाकम्मम्मि रया ते चत्ता मोक्खमग्गम्मि ।।७९।।

णिग्गंथमोहमुक्का बावीसपरीसहा जियकसाया ।
पावारंभविमुक्का ते गहिया मोक्खमग्गम्मि ।।८०।।

उद्धद्धमज्झलोये केई मज्झं ण अहयमेगागी ।
इय भावणाए जोई पावंति हु सासयं सोक्खं ।।८१।।

देवगुरूणं भत्ता णिव्वेयपरंपरा विचिंतिंता ।
झाणरया सुचरित्ता ते गहिया मोक्खमग्गम्मि ।।८२।।

णिच्छयणयस्य एवं अप्पा अप्पम्मि अप्पणे सुरदो ।
सो होदि हु सुचरित्तो जोई सो लहइ णिव्वाणं ।।८३।।

पुरिसायारो अप्पा जोई वरणाणदंसणसमग्गो ।
जो झायदि सो जोई पावहरो हवदि णिद्दंडो ।।८४।।

एवं जिणेहि कहियं णाणं सावयाण पुण सुणसु ।
संसारविणासयरं सिद्धियरं कारणं परमं ॥८५॥

गहिऊण य सम्मत्तं सुणिम्मलं सुरगिरीव णिक्कंपं ।
तं झाणे झाइज्जइ सावय ! दुक्खक्खयट्ठाए ॥८६॥

सम्मत्तं जो झायइ सम्माइट्ठी हवेइ सो जीवो ।
सम्मत्तपरिणदो पुण खवेइ दुट्ठट्ठकम्माणि ॥८७॥

किं बहुणा भणिएण जे सिद्धा णरवरा गए काले ।
सिज्झिहहि जे वि भविया तं जाणह सम्ममाहप्पं ॥८८॥

ते धण्णा सुकयत्था ते सूरा ते वि पंडिया मणुया ।
सम्मत्तं सिद्धियरं सिविणे वि ण मइलियं जेहिं ॥८९॥

हिंसारहिए धम्मे अट्ठारहदोसवज्जिए देवे ।
णिग्गंथे पव्वयणे सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥९०॥

जहजायरूवरूवं सुसंजयं सव्वसंगपरिचत्तं ।
लिंगं ण परावेक्खं जो मण्णइ तस्स सम्मत्तं ॥९१॥

कुच्छियदेव धम्मं कुच्छियलिंगं च वंदए जो दु ।
लज्जाभयगारवदो मिच्छादिट्ठी हवे सो हु ॥९२॥

सपरावेक्खं लिंगं राई देवं असंजयं वंदे ।
मण्णइ मिच्छादिट्ठी ण हु मण्णइ सुद्धसम्मत्ती ॥९३॥

सम्माइट्ठी सावय धम्मं जिणदेवदेसियं कुणदि ।
विवरीयं कुव्वंतो मिच्छादिट्ठी मुणेयव्वो ॥९४॥

मिच्छादिट्ठी जो सो संसारे संसरेइ सुहरहिओ ।
जम्मजरमरणपउरे दुक्खसहस्सउलो जीवो ॥९५॥

सम्म गुण मिच्छ दोसो मणेण परिभाविऊण तं कुणसु ।
जं त मणस्स रुच्चइ किं बहुणा पलविएणं तु ॥९६॥

बाहिरसंगविमुक्को ण वि मुक्को मिच्छभाव णिग्गंथो ।
किं तस्स ठाणमउणं ण वि जाणदि अप्पसमभावं ॥९७॥

मूलगुणं छित्तूण य बाहिरकम्मं करेइ जो साहू ।
सो ण लहइ सिद्धिसुहं जिणलिंगविराहगो णियदं ॥९८॥

किं काहिदि बहिकम्मं किं काहिदि बहुविहं च खवणं तु ।
किं काहिदि आदावं आदसहावस्स विवरीदो ॥९९॥

जदि पढदि बहुसुदाणि य जदि काहिदि बहुविहं
च चारित्तं ।
तं बालसुदं चरणं हवेइ अप्पस्स विवरीदं ॥१००॥

वेरग्गपरो साहू परदव्वपरम्मुहो य जो होदि ।
संसारसुहविरत्तो सगसुद्धसुहेसु रत्तो ॥१०१॥

गुणगणविहूसियंगो हेयोपादेयणिच्छिदो साहू ।
झाणज्झयणे सुरदो सो पावइ उत्तमं ठाणं ॥१०२॥

णविएहिं जं णविज्जइ झाइज्जइ झाइएहिं अणवरयं ।
थुव्वंतेहिं थुणिज्जइ देहत्थं किं पि तं मुणह ॥१०३॥

अरुहा सिद्धायरिया उज्झाया साहू पंच परमेट्ठी ।
ते विहु चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं ॥१०४॥

सम्मत्तं सण्णाणं सच्चारित्तं हि सत्तवं चेव ।
चउरो चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं ॥१०५॥

एवं जिणपण्णत्तं मोक्खस्य य पाहुडं सुभत्तीए ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं सोक्खं ॥१०६॥

—×—

लिंगपाहुडं

काऊण णमोकारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं ।
वोच्छामि समणलिंगं पाहुडसत्थं समासेण ।।१।।

धम्मेण होइ लिंगं ण लिंगमत्तेण धम्मसंपत्ती ।
जाणेहि भावधम्मं किं ते लिंगेण कायव्वो ।।२।।

जो पावमोहिदमदी लिंगं घेत्तूण जिणवरिंदाणं ।
उवहसदि लिंगिभावं लिंगिम्मिय णारदो लिंगी ।।३।।

णच्चदि गायदि तावं वायं वाएदि लिंगरूवेण ।
सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो ।।४।।

सम्मूहदि रक्खेदि य अट्टं झाएदि बहुपयत्तेण ।
सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो ।।५।।

कलहं वादं ा णिच्च बहुमाणगव्विओ लिंगी ।
वच्चदि णरयं पाओ करमाणो लिंगिरूवेण ।।६।।

पाओपहदभावो सेवदि य अबंभु लिंगिरूवेण ।
सो पावमोहिदमदी हिंडदि संसारकांतारे ।।७।।

दंसणणाणचरित्ते उवहाणे जह ण लिंगरूवेण ।
अट्टं झायदि झाणं अणंतसंसारिओ होदि ।।८।।

जो जोडेदि विवाहं किसिकम्मवणिज्जजीवघादं च ।
वच्चदि णरयं पाओ करमाणो लिंगिरूवेण ।।९।।

चोराण लाउराण य जुद्ध विवादं च तिव्वकम्मेहिं ।
जतेण दिव्वमाणो गच्छदि लिंगी णरयवासं ।।१०।।

दंसणणाणचरित्ते तवसंजमणियमणिच्चकम्मम्मि ।
पीडयदि वट्टमाणो पावदि लिंगी णरयवासं ।।११।।

कंदप्पाइय वट्टइ करमाणो भोयणेसु रसगिद्धिं ।
मायी लिंगविवाई तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥१२॥

धावदि पिंडणिमित्तं कलहं काऊण भुञ्जदे पिंडं ।
अवरुपरुई संत्तो जिणमग्गि ण होइ सो णो ॥१३॥

गिण्हदि अदत्तदाणं परणिंदा वि य परोक्खदूसेहि ।
जिणलिंगं धारंतो चोरेण व होइ सो समणो ॥१४॥

उप्पड दि पडदि धावदि पुढवीओ दि लिंगरूपेण ।
इरियावह धारंतो तिरिक्ख ोणी ण सो समणो ॥१५॥

बंधो णिरओ संतो सस्स खडेदि तह य वसुहं पि ।
छिंददि तरुगण बहुसो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥१६॥

रागं करेदि णिच्चं महिलावग्गं परं च दूसेदि ।
दंसणणाणविहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥१७॥

पव्वज्जहीणगहिणं णेहं सासम्मि वट्टदे बहुसो ।
आयारविणयहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ॥१८॥

एवं सहिओ मुणिवर संजदमज्झम्मि वट्टदे णिच्चं ।
बहुल पि जाणमाणो भावविणट्ठो ण सो समणो ॥१९॥

दंसणणाणचरित्ते महिलावग्गम्मि देदि वीसट्ठो ।
पासत्थ वि हु णियट्ठो भावविणट्ठो ण सो समणो ॥२०॥

पुंच्छलिघरि जो भुञ्जइ णिच्चं संथुणदि पोसए पिंडं ।
पावदि बालसहावं भावविणट्ठो ण सो समणो ॥२१॥

इय लिंगपाहुडमिणं सव्वं बुद्धेहिं देसियं धम्मं ।
पालेइ कट्ठसहियं सो गाहदि उत्तमं ठाणं ॥२२॥

—×—

सीलं रक्खंताणं दंसणसुद्धाण दिढचरित्ताणं ।
अत्थि धुवं णिव्वाणं विसएसु विरत्तचित्ताणं ॥१२॥

विसएसु मोहिदाणं कहियं मग्गं पि इट्ठदरिसीणं ।
उम्मग्गं दरिसीणं णाणं पि णिरत्थयं तेसिं ॥१३॥

कुमयकुसुदपसंसा जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं ।
शील वदणाणरहिदा ण हु ते आराधया होंति ॥१४॥

रूवसिरिगव्विदाणं जुव्वणलावण्णकंतिकलिदाणं ।
सीलगुणवज्जिदाणं णिरत्थयं माणुसं जम्म ॥१५॥

वायरणछंदवइसेसियववहारणायसत्थेसु ।
वेदेऊण सुदेसु य तेव सुयं उत्तमं शीलं ॥१६॥

सीलगुणमंडिदाणं देवा भवियाण वल्लहा होंति ।
सुदपारयपउरा णं दुस्सीला अप्पिला लोए ॥१७॥

सव्वे वि य परिहीणा रूवविरूवा वि पदिदसुवया वि ।
सीलं जेसु सुसीलं सुजीविदं माणुसं तेसिं ॥१८॥

जीवदया दम सच्चं अचोरियं बभचेरसंतोसे ।
सम्मद्दंसण णाणं तओ य सीलस्स परिवारो ॥१९॥

सीलं तवो विसुद्धं दंसणसुद्धी य णाणसुद्धी य ।
सीलं विसयाण अरी सीलं मोक्खस्स सोवाणं ॥२०॥

जह विसयलुद्ध विसदो तह थावरजंगमाण घोराणं ।
सव्वेंसिं पि विणासदि विसयविसं दारुणं होई ॥२१॥

वारि एक्कम्मि य जम्मे सरिज्ज विसवेयणाहदो जीवो ।
विसयविसपरिहया णं भमंति संसारकांतारे ॥२२॥

णरएसु वेयणाओ तिरिक्खिए माणएसु दुक्खाइं ।
देवेसु वि दोहग्गं लहंति विसयासिता जीवा ॥२३॥

तुसधम्मतंबलेण य जह् दव्वं ण हि णराण गच्छेदि ।
तवसीलमंत कुसली खवंति विसयं विस व खलं ।।२४।।

वट्टेसु य खंडेसु य भद्देसु य विसालेसु अंगेसु ।
अंगेसु य पप्पेसु य सव्वेसु य उत्तमं सीलं ।।२५।।

पुरिसेण वि सहियाए कुसमयमूढेहि विसयलोलेहि ।
संसारे भमिदव्वं अरयघरट्टं व भूदेहि ।।२६।।

आदेहि कम्मगंठी जा बद्धा विसयरागरंगेहिं ।
तं छिंदंति कयत्था तवसंजमसीलयगुणेण ।।२७।।

उदधीव रदणभरिदो तवविणयंसीलदाणरयणाणं ।
सोहेतो य ससीलो णिव्वाणमणुत्तरं पत्तो ।।२८।।

सुणहाण गद्दहाण य गोपसुमहिलाण दीसदे मोक्खो ।
जे सोधंति चउत्थं पिच्छिज्जंता जणेहि सव्वेहिं ।।२९।।

जइ विसयलोलएहिं णाणीहि हविज्ज साहिदो मोक्खो ।
तो सो सच्चइपुत्तो दसपुव्वीओ वि किं गदो णरय ।।३०।।

जइ णाणेण विसोही सीलेण विणा बुहेहिं णिद्दिट्ठो ।
दस पुव्वियस्स भावो यण किं पुण णिम्मलो जादो ।।३१।।

जाए विसयविरत्तो सो गमयदि णरयवेयणा पउरा ।
ता लेहदि अरुहपयं भणियं जिणवड्ढमाणेण ।।३२।।

एवं बहुप्पयारं जिणेहि पच्चक्खणाणदरसीहिं ।
सीलेण य मोक्खपयं अक्खातीदं य लोयणाणेहिं ।।३३।।

सम्मत्तणाणदसणतववीरियपंचयारमप्पाण ।
जलणो वि पवणसहिदो डहति पोरायणं कम्मं ।।३४।।

णिद्दड्ढअट्ठकम्मा विसयविरत्ता जिदिंदिया धीरा ।
तवविणयसीलसहिदा सिद्धा सिद्धिं गदिं पत्ता ।।३५।।

लावण्णसीलकुसलो जम्ममहीरुहो जस्स सवणस्स ।
सो सीलो स महप्पा भमित्थ गुणवित्थरं भविए ॥३६॥

णाणं झाणं जोगो दंसणसुद्धी य वीरियायत्तं ।
सम्मत्तदंसणणेण य लहंति जिणसासणे बोहिं ॥३७॥

जिणवयणगहिदसारा विसयविरत्ता तपोधणा धीरा ।
सीलसलिलेण ण्हादा ते सिद्धालयसुहं जंति ॥३८॥

सव्वगुणखीणकम्मा सुहदुक्खविवज्जिदा मणविसुद्धा ।
पप्फोडियकम्मरसा हवंति आराहणा पयडा ॥३९॥

अरहंते सुहभत्ती सम्मत्तं दंसणेण सुविसुद्धं ।
सील विसयविरागो णाणं पुण केरिस भणियं ॥४०॥

समाप्तम्



निष्काम वृत्ति से बढकर इस जगत मे दूसरी कोई सम्पत्ति नही है। कामना से मुक्त होने के सिवाय पवित्रता और कुछ नही है। वे ही लोग मुक्त है, जिन्होने अपनी इच्छाओ को जीत लिया है। शेष लोग देखने मे स्वतन्त्र दिखाई देते हैं, किन्तु वास्तव मे वे कर्म-बन्धन से जकडे हुए हैं।

सिरिकुंदकुंदाइरियकदो

रयणसारो

णमिदूण वड्ढमाणं परप्पाणं जिणं तिसुद्धेण।
वोच्छामि रयणसारं सायारणयारधम्मीणं ॥१॥

पुव्वं जिणेहि भणिदं जहट्ठिदं गणहरेहि वित्थरिदं।
पुव्वाइरियक्कमजं तं बोल्लदि जो हु सिद्दिट्ठी ॥२॥

मदिसुदणाणबलेण दु सच्छंदं बोल्लदे जिणुद्दिट्ठं।
जो सो होदि कुद्दिट्ठी ण होदि जिणमग्गलग्गरवो ॥३॥

सम्मत्तरयणसारं मोक्खमहारुक्खमूलमिदि भणिदं।
तं जाणिज्जदि णिच्छयववहारसरूवदो भेयं ॥४॥

भयवसणमलविवज्जिद-संसारसरीरभोगणिव्विण्णो।
अट्ठगुणंगसमग्गो दंसणसुद्धो हु पंचगुरुभत्तो ॥५॥

णियसुद्धप्पणुरत्तो बहिरप्पावत्थवज्जिदा णाणी।
जिण-मुणि-धम्मं मण्णदि गददुक्खो होदि सद्दिट्ठी ॥६॥

मदमूढमणायदणं संकादिवसणभयमदीयारं।
जेसिं चउवालेसे ण संति ते होंति सद्दिट्ठी ॥७॥

उहयगुणवसणभयमलवेरग्गादीयार-भत्तिविग्घं वा।
एदे सत्तत्तरिया दंसणसावयगुणा, भणिदा ॥८॥

देवगुरुसमयभत्ता संसारसरीरभोगपरिचत्ता।
रयणत्तयसंजुत्ता ते मणुया सिवसुहं पत्ता ॥९॥

दाणं पूया सीलं उववासं बहुविहं पि खवणं पि।
सम्मजुदं मोक्खसुहं सम्मविणा दीहसंसारं ॥१०॥

दाणं पूया मुक्खं सावयधम्मे ण सावया तेण विणा ।
झाणाज्झयणं मुक्खं जदिधम्मे तं विणा तहा सो वि ॥११॥
दाण ण धम्म ण चाग ण भोग ण बहिरप्प जो पयंगो सो ।
लोहकसायग्गिमुहे पडिदो मरिदो ण संदेहो ॥१२॥
जिणपूया मुणिदाणं करेदि जो देदि सत्तिरूवेण ।
सम्मादिट्ठी सावय-धम्मी सो होदि मोक्खमग्गरदो ॥१३॥
पूयफलेण तिलोक्के सुरपुज्जो हवदि सुद्धमणो ।
दाणफलेण तिलोए सारसुहं भुञ्जदे णियदं ॥१४॥
दाणं भोयणमेत्तं दिण्णदि धण्णो हवेदि सायारो ।
पत्तापत्तविसेसं सद्दंसणे किं वियारेण ॥१५॥
दिण्णदि सुपत्तदाणं विसेसदो होदि भोगसग्गमही ।
णिव्वाणसुहं सो णिद्दिट्ठं जिणवरिंदेहिं ॥१६॥
खेत्तविसेसे काले ववदि सुवीयं फलं जहा विउलं ।
होदि तहा तं जाणह पत्तविसेसेसु दाणफलं ॥१७॥
इह णियसुवित्तवीयं जो ववदि जिणुत्त खेत्तेसु ।
सो तिहुवणरज्जफलं भुञ्जदि कल्लाणपंचफलं ॥१८॥
मादु-पिदु-पुत्त-मित्तं कलत्त-धण-धण्ण-वत्थु-वाहण-विहवं ।
ारसारसोक्खं सव्वं जाणह सुपत्तदाणफलं ॥१९॥
संत्तगरज्ज-णवणिहि-भंडार-सडंग -चउद्दस रयणं ।
छण्णवदि सहस्सित्थी विहवं जाणह सुपत्तदाणफलं ॥२०॥
सुकुलसुरूवसुलक्खणसुमदिसुसिक्खासुसीलसुगुणसुचरितं ।
सयलं सुहाणुभवणं विहवं जाणह सुपत्तदाणफलं ॥२१॥
जो मुणि भुत्तवसेसं भुञ्जदि सो भुञ्जदे जिणुद्दिट्ठं ।
संसारसारसोक्खं कमसो णिव्वाणवरसोक्खं ॥२२॥

सीदुण्ह-वाय-पिउलं सिलेसिम्मं तह परिसमं वाहिं ।
कायकिलेसुववासं जाणिच्चा दिण्णदे दाणं ।।२३।।

हिदमिदमण्णं पाणं णिरवज्जोसहिं णिराउलं ठाणं ।
सयणासणमुवयरणं जाणिच्चा देदि मोक्खमग्गरदो ।।२४।।

अणयाराणं वेज्जावच्चं कुज्जा जहेह जाणिच्चा ।
गब्भब्भमेव मादा-पिदुच्च णिच्चं तहा णिरालसया ।।२५।।

सप्पुरिसाणं दाणं कप्पतरूणं फलाण सोहा वा ।
लोहीणं दाणं जदि विमाण सोहा सवं जाणे ।।२६।।

जस-कित्ति-पुण्णलाहे देदि सुबहुगं पि जत्थ तत्थेव ।
सम्मादिसुगुणभायण पत्तविसेसं ण जाणंति ।।२७।।

जंतं मतं तंतं परिचरिदं पक्खवाद पियवयणं ।
पडुच्च पंचमयाले भरहे दाणं ण किं पि मोक्खस्स ।।२८।।

दाणीणं दारिद्दं लोहीणं किं हवदि महइसरियं ।
उहयाणं पुव्वज्जिदं कम्मफलं जाव होदि थिरं ।।२९।।

धणधण्णादिसमिद्धे सुहं जहा होदि सव्वजीवाणं ।
मुणिदाणादिसमिद्धे सुह तहा तं विणा दुक्खं ।।३०।।

पत्त विणा दाणं च सुपुत्त विणा बहुधणं महाखेत्तं ।
चित्त विणा वय-गुण-चारित्तं णिक्कारणं जाणे ।।३१।।

जिण्णुद्धार-पदिट्ठा-जिणपूया-तित्थवंदण वसेसधणं ।
जो भुञ्जदि सो भुञ्जदि जिणदिट्ठं णरयगदिदुक्खं ।।३२।।

पुत्ताकलत्तविदूरो दारिद्दो पंगुमूकबहिरंधो ।
चांडालादिकुजादो पूयादाणादि दव्वहरो ।।३३।।

इच्छिदफलं ण लब्भदि जदि लब्भदि सो ण भुञ्जदे णियदं ।
वाहीणमायरो सो पूयादाणादि दव्वहरो ।।३४।।

गदहत्थपादरणासिय-कण्णउरंगुल विहीरणदिट्ठीए ।
जो तिव्वदुक्खमूलो पूयादारणादि दव्वहरो ।।३५।।

खय-कुट्ठ-मूल-सूला लूय-भयंदर-जलोयरक्खिसिरो ।
सीदुण्हवाहिरादी पूयादाणंतरायकम्मफलं ।।३६।।

रणरइ-तिरियाइ-दुगदी दरिद्द-वियलंग-हारिण-दुक्खारिण ।
देव-गुरु-सत्थवंदरण-सुदभेद-सज्झयविघणफलं ।।३७।।

सम्मविसोही-तव-गुरण-चरित्र-सण्णारण-दारणपरिहीणं ।
भरहे दुस्समयाले मणुयाणं जायदे रिणयदं ।।३८।।

णहि दाणं रणहि पूया रणहि सीलं णहि गुरणं रण चारित्तं ।
जे जइणा भणिदा ते णेरइया होंति कुमाणुसा तिरिया ।।३९।।

ण वि जाणदि कज्जमकज्जं सेयमसेयं पुण्णपावं हि ।
तच्चमतच्चं धम्ममधम्मं सो सम्मउम्मुक्को ।।४०।।

रण वि जाणदि जोग्गमजोग्गं णिच्चमरिणच्चं हेयमुवादेयं ।
सच्चमसच्चं भव्वमभव्वं सो सम्मउम्मुक्को ।।४१।।

लोइयजणरणसंगादो होदि महामुहरकुडिलदुब्भावो ।
लोइय संगं तम्हा जोइवि तिविहेरण मुच्चाहो ।।४२।।

उग्गो तिव्वो दुट्ठो दुब्भावो दुस्सुदो दुरालावो ।
दुम्मदरदो विरुद्धो सो जीवो सम्मउम्मुक्को ।।४३।।

खुद्दो रुद्दो रुट्ठो अरिणट्ठ पिसुणो सगव्वियोसूयो ।
गायरण-जायरण-भडडरण-दुस्सरणसीलो दु सम्मउम्मुक्को ।४४।

वाणर-गद्दह-सारण-गय वग्घ-वराह-कराह ।
मक्खि-जलूय-सहाव णर जिणवर धम्म विणास ।।४५।।

सम्म विणा सण्णारणं सच्चारित्तं रण होदि रिणयमेरण ।
तो रयरणत्तय मज्झे सम्मगुणुक्किट्ठमिदि जिणुद्दिट्ठं ।।४६।।

कुतव कुलिंगि कुणाणी कुवय कुसीले कुदंसण कुसत्थे ।
कुणिमित्ते संथुय थुइ पसंसणं सम्महाणि होदि णियमं ।।४७।।

तणुकुट्ठी कुलभंगं कुणदि जहा मिच्छमप्पणो वि तहा ।
दाणादि सुगुणभंगं गदिभंगं मिच्छमेव हो कट्ठं ।।४८।।

देव-गुरु-धम्म-गुण-चारित्त-तवापार-मोक्खगदिभेयं ।
जिणवयण सुदिट्ठि विणा दीसदि किं जाणदे सम्मं ।।४९।।

एक्क खणं ण वि चिंतदि मोक्खणिमित्तं णियप्पसब्भावं ।
अणिसि विचिंतदि पावं बहुलालावं मणे विचिंतेदि ।।५०।।

मिच्छामदि मदमोहासवमत्तो बोल्लदे जहा भुल्लो ।
तेण ण जाणदि अप्पा अप्पाणं सम्मभावाणं ।।५१।।

पुव्वट्ठिद खवदि कम्म पविसदु णो देदि अहिणवं कम्मं ।
इह-परलोए महप्पं देदि तहा उवसमो भावो ।।५२।।

सम्मादिट्ठी कालं बोल्लदि वेरग्गणाणभावेहिं ।
मिच्छादिट्ठी वांछा दुब्भावालस्सकलहेहिं ।।५३।।

अज्जवसप्पिणि भरहे पउरा रुद्दट्ठझाणया दिट्ठा ।
णट्ठा दुट्ठा कट्ठा पाविट्ठा किण्ह-णील-काओदा ।।५४।।

अज्जवसप्पिणि भरहे पंचमयाले मिच्छपुव्वया सुलहा ।
सम्मत्तपुव्व सायारणयारा दुल्लहा होंति ।।५५।।

अज्जवसप्पिणि भरहे धम्मज्झाणं पमादरहिदो त्ति ।
होदि त्ति जिणुदिट्ठं ण हु मण्णदि सो हु कुद्दिट्ठी ।।५६।।

असुहादो णिरयाऊ सुहभावादो दु सग्गसुहमाओ ।
दुहसुहभावं जाणदु जं ते रुच्चेद तं कुज्जा ।।५७।।

हिंसादिसु कोहादिसु मिच्छाणाणेसु पक्खवाएसु ।
मच्छरिदेसु मदेसु दुरहिणिवेसेसु असुहलेस्सेसु ।।५८।।

विकहादिसु रुद्दट्टज्झाणेसु असुयगेसु दंडेसु ।
सल्लेसु गारवेसु य जो वट्टदि असुहभावो सो ॥५९॥

दव्वत्थिकाय छप्पण तच्चपयत्थेसु सत्तणवगेसु ।
बंधणमोक्खे तक्कारणरूवे वारसणुवेक्खे ॥६०॥

रयणत्तयस्सरूवे अज्जाकम्मे दयादि सद्धम्मे ।
इच्चेव माइगे जो वट्टदि सो होदि सुहभावो ॥६१॥

सम्मत्तगुणाइ सुगदि मिच्छादो होदि दुग्गदी णियमा ।
इदि जाण किमिह बहुणा जं रुच्चदि तं कुज्जाहो ॥६२॥

मोह ण छिज्जदि अप्पा दारुणकम्मं करेदि बहुवारं ।
ण हु पावदि भवतीरं किं बहुदुक्खं वहेदि मूढमदी ॥६३॥

धरियउ बाहिरलिंगं परिहरियउ बाहिरक्ख सोक्खं हि ।
करियउ किरियाकम्मं मरियउ जम्मियउ बहिरप्प जीवो ।६४।

मोक्खणिमित्तं दुक्खं वहेदि परलोय दिट्ठि तणुदंडी ।
मिच्छाभाव ण छिज्जदि किं पावदि मोक्खसोक्खं हि ॥६५॥

ण हु दंडदि कोहादिं देहं दंडदि कह खवदि कम्मं ।
सप्पो किं मुवदि तहा वम्मीए मारदे लोए ॥६६॥

उवसमतवभावजुदो णाणी सो ताव संजदो होदि ।
णाणी कसायवसगो असंजदो होदि सो ताव ॥६७॥

णाणी खवेदि कम्मं णाणबलेणेदि बोल्लदे अण्णाणी ।
वेज्जो भेसज्जमहं जाणे इदि णस्सदे वाही ॥६८॥

पुव्वं सेवदि मिच्छा-मलसोहणहेदु सम्म-भेसज्जं ।
पच्छा सेवदि कम्मामयणासणचरिय-भेसज्जं ॥६९॥

अण्णाणीदो विसयविरत्तादो होदि सयसहस्सगुणो ।
णाणी कसायविरदो वि [illegible]सत्तो जिणुद्दिट्ठं ॥७०॥

विणओ भत्तिविहीणो महिलाणं रोदणं विणा णेहं ।
चागो वेरग्ग विणा एदेदो वारिआ भणिदा ॥७१॥

सुहडो सूरत्त विणा महिला सोहग्गरहिद परिसोहा ।
वेरग्ग-णाण-संजम हीणा खवणा ण किं पि लब्भंते ॥७२॥

वत्थुसमग्गो मूढो लोही लब्भदि फलं जहा पच्छा ।
अण्णाणी जो विसयासत्तो लहदि जहा चेवं ॥७३॥

वत्थुसमग्गो णाणी सुपत्तदाणी फलं जहा लहदि ।
णाणसमग्गो विसयपरिचत्तो लहदि जहा चेव ॥७४॥

भू-महिला-कणयादि-लोहाहि-विसहरं कहं पि हवे ।
सम्मत्तणाण-वेरग्गोसहमंतेण-जिणुद्दिट्ठं ॥७५॥

पुव्वं जो पंचिंदिय तणु-मण-वचि-हत्थ-पाय-मुंडाओ ।
पच्छा सिर मुंडाओ सिवगदिपहणायगो होदि ॥७६॥

पदिभत्तिविहीण सदी भिच्चो जिणसमयभत्तिहीण जण्णो ।
गुरुभत्तिहीण सिस्सो दुग्गदिमग्गाणुलग्गओ णियदं ॥७७॥

गुरुभत्तिविहीणाणं सिस्साणं सव्वसंगविरदाणं ।
ऊसरखेत्ते ववियं सुवीयसमं जाण सव्वणुट्ठाणं ॥७८॥

रज्जं पहाणहीणं पदिहीणं देसगामरट्ठवलं ।
गुरुभत्तिहीण सिस्साणुट्ठाण णस्सदे सव्वं ॥७९॥

सम्माण विणा रुइ भत्ति विणा दाणं दया विणा धम्मो ।
गुरु-भत्ति विणा तव-गुण-चारित्तं णिप्फलं जाण ॥८०॥

हीणादाणवियारविहीणादो बाहिरक्खसोक्खं हि ।
किं तजियं किं भजियं किं मोक्खं ण दिट्ठं जिणुद्दिट्ठं ॥८१॥

कायकिलेसुववासं दुद्धरतवयरणकारणं जाण ।
तं णियसुद्धप्परुई परिपुण्णं चेदि कम्मणिम्मूलं ॥८२॥

कम्म ण खवेदि जो परब्रह्म ण जाणदि सम्मउम्मुक्को ।
अत्थ ण तत्थ ण जीयो लिंगं घेत्तूण किं करेदि ॥८३॥

अप्पाणं पि ण पेच्छदि ण मुणदि ण वि सद्दहदि ण भावेदि ।
बहुदुक्खभारमूलं लिंगं घेत्तूण किं करेदि ॥८४॥

जाव ण जाणदि अप्पा अप्पाणं दुक्ख्पणो ताव ।
तेण अणतसुहाणं अप्पाणं भावए जोई ॥८५॥

णियतच्चुवलद्धि विणा सम्मत्तुवलद्धि णत्थि णियमेण ।
सम्मत्तुवलद्धि विणा णिव्वाणं णत्थि णियमेण ॥८६॥

सालविहीणो राओ दाणदयाधम्मरहिद गिहिसोहा ।
णाणविहीण तवो वि य जीव विणा देहसोहं ण ॥८७॥

मक्खी सिलिम्मि पडिदो मुवदि जहा तह परिग्गहे पडिदो ।
लोही मूढो खवणो कायकिलेसेसु अण्णाणी ॥८८॥

णाणब्भास विहीणो सपरं तच्चं ण जाणदे किं पि ।
झाणं तस्स ण होदी हु ताव ण कम्मं खवेदि ण हु मोक्खं ॥८९॥

अज्झयणमेव झाणं पंचेदियणिग्गहं कसायं पि ।
तत्तो पंचमयाले पवयणसारब्भासमेव कुज्जाहो ॥९०॥

पावारंभणिवित्ती पुण्णारभे पउत्तिकरणं पि ।
णाणं धम्मज्झाणं जिणभणिदं सव्वजीवणं ॥९१॥

सुदणाणब्भासं जो ण कुणदि सम्मं ण होदि तवयरणं ।
कुव्वंतो मूढमदो संसारसुहाणुरत्तो सो ॥९२॥

तच्चवियारणसीलो मोक्खपहाराहणासहावजुदो ।
अणवरयं धम्मकहापसंगओ होदि मुणिराओ ॥९३॥

विकहादिविप्पमुक्को आहाकम्मादि विराहिदो णाणी ।
धम्मुद्देसणकुसलो अणुपेहा भावणाजुदो जोई ॥९४॥

णिदावंचणदूरो परिसह–उवसग्ग–दुक्खसहमाणो ।
सुहझाणज्झयणरदो गदसंगो होदि मुणिराओ ।।९५।।

अवियप्पो णिद्दंदो णिम्मोहो णिक्कलंकओ णियदो ।
णिम्मलसहावजुत्तो जोई सो होदि मुणिराओ ।।९६।।

तिव्वं कायकिलेसं कुव्वंतो मिच्छभावसंजुत्तो ।
सव्वण्हुवदेसे सो णिव्वाणसुहं ण गच्छेदि ।।९७।।

रायादिमलजुदाणं णियप्परूवं ण दिस्सदे किं पि ।
समलादरिसे रूवं ण दिस्सदे जह तहा णेयं ।।९८।।

दंडत्तयसल्लत्तय मंडिदमाणो असूयगो साहू ।
भंडण–जायणसीलो हिंडदि सो दीहसंसारे ।।९९।।

देहादिसु अणुरत्ता विसयासत्ता कसायसंजुत्ता ।
आदसहावे सुत्ता ते साहू सम्मपरिचत्ता ।।१००।।

आरंभे धणधण्णे उवयरणे कंखिया तहासूया ।
वयगुणसीलविहीणा कसायकलहप्पिया मुहरा ।।१०१।।

संघविरोहकुसीला सच्छंदा रहिदगुरुकुला मूढा ।
रायादिसेवया ते जिणधम्मविराहया साहू ।।१०२।।

जोइस–वेज्जा–मंतोवजीवणं वायवस्स ववहारं ।
धणधण्णपरिग्गहणं समणाणं दूसणं होदि ।।१०३।।

जे पावारंभरदा कसायजुत्ता परिग्गहासत्ता ।
लोयववहारपउरा ते साहू सम्मउम्मुक्का ।।१०४।।

ण सहंति इदरप्पं थुवंति अप्पाणमप्पमाहप्पं ।
जिब्भणिमित्त कज्ज कुणंति ते साहू सम्मउम्मुक्का ।।१०५।।

चम्मट्ठि–मंसलवलुद्धो सुणहो गज्जदे मुणि दिट्ठा ।
जह तह पाविट्ठो सो धम्मिट्ठं दिट्ठा सगीयट्ठो ।।१०६।।

कम्म ण खवेदि जो परब्रह्म ण जाणदि सम्मउम्मुक्को ।
अत्थ ण तत्थ ण जीयो लिगं घेत्तूण किं करेदि ।।८३।।

अप्पाणं पि ण पेच्छदि ण मुणदि ण वि सद्दहदि ण भावेदि ।
बहुदुक्खभारमूलं लिंगं घेत्तूण किं करेदि ।।८४।।

जाव ण जाणदि अप्पा अप्पाणं दुक्खमप्पणो ताव ।
तेण अणंतसुहाण अप्पाणं भावए जोई ।।८५।।

णियतच्चुवलद्धि विणा सम्मत्तुवलद्धि णत्थि णियमेण ।
सम्मत्तुवलद्धि विणा णिव्वाण णत्थि णियमेण ।।८६।।

सालविहीणो राओ दाणदयाधम्मरहिद गिहिसोहा ।
णाणविहीण तवो वि य जीव विणा देहसोहं ण ।।८७।।

मक्खी सिलिम्मि पडिदो मुवदि जहा तह परिग्गहे पडिदो ।
लोही मूढो खवणो कायकिलेसेसु अण्णाणी ।।८८।।

णाणब्भास विहीणो सपरं तच्चं ण जाणदे किं पि ।
झाणं तस्स ण होदी हु ताव ण कम्मं खवेदि ण हु मोक्खं ।।८९।।

अज्झयणमेव झाणं पंचेदियणिग्गहं कसायं पि ।
तत्तो पंचमयाले पवयणसारब्भासमेव कुज्जाहो ।।९०।।

पावारंभणिवित्ती पुण्णारंभे पउत्तिकरणं पि ।
णाण धम्मज्झाणं जिणभणिदं सव्वजीवणं ।।९१।।

सुदणाणब्भासं जो ण कुणदि सम्मं ण होदि तवयरणं ।
कुव्वंतो मूढमदी संसारसुहाणुरत्तो सो ।।९२।।

तच्चवियारणसीलो मोक्खपहाराहणसहावजुदो ।
अणवरयं धम्मकहापसंगओ होदि मुणिराओ ।।९३।।

विकहादिविप्पमुक्को आहाकम्मादि विराहिदो णाणी ।
धम्मुद्दे सणकुसलो अणुपेहा भावणाजुदो जोई ।।९४।।

णिंदावंचणदूरो परिसह–उवसग्ग–दुक्खसहमाणो ।
सुहझाणज्झयणरदो गदसंगो होदि मुणिराओ ॥९५॥

अवियप्पो णिद्दंदो णिम्मोहो णिक्कलंकओ णियदो ।
णिम्मलसहावजुत्तो जोई सो होदि मुणिराओ ॥९६॥

तिव्वं कायकिलेसं कुव्वंतो मिच्छभावसंजुत्तो ।
सव्वण्हुवदेसे सो णिव्वाणसुहं ण गच्छेदि ॥९७॥

रायादिमलजुदाणं णियप्परूवं ण दिस्सदे किं पि ।
समलादरिसे रूवं ण दिस्सदे जह तहा णेयं ॥९८॥

दंडत्तयसल्लत्तय मंडिदमाणो असूयगो साहू ।
भंडण–जायणसीलो हिंडदि सो दीहसंसारे ॥९९॥

देहादिसु अणुरत्ता विसयासत्ता कसायसंजुत्ता ।
आदसहावे सुत्ता ते साहू सम्मपरिचत्ता ॥१००॥

आरंभे धणधण्णे उवयरणे कंखिया तहासूया ।
वयगुणसीलविहीणा कसायकलहप्पिया मुहरा ॥१०१॥

संघविरोहकुसीला सच्छंदा रहिदगुरुकुला मूढा ।
रायादिसेवया ते जिणधम्मविराहया साहू ॥१०२॥

जोइस–वेज्जा–मंतोवजीवणं वायवस्स ववहारं ।
धणधण्णपरिग्गहणं समणाणं दूसणं होदि ॥१०३॥

जे पावारंभरदा कसायजुत्ता परिग्गहासत्ता ।
लोयववहारपउरा ते साहू सम्मउम्मुक्का ॥१०४॥

ण सहंति इदरप्पं थुवंति अप्पाणमप्पमाहप्पं ।
जिब्भणिमित्तं कज्जं कुणंति ते साहू सम्मउम्मुक्का ॥१०५॥

चम्मट्ठि–मसलवलुद्धो सुणहो गज्जदे मुणि दिट्ठा ।
जह तह पाविट्ठो सो धम्मिट्ठं दिट्ठा सगीयट्ठो ॥१०६॥

भुञ्जेदि जहालाहं लहेदि जइ णाणसंजमणिमित्तं ।
झाणज्झयणणिमित्तं अणयारो मोक्खमग्गरदो ॥१०७॥

उदरग्गियसमण-मक्खमक्खण-गोयार-सब्भपूरण-भमरं ।
णाऊण तप्पयारे णिच्चेवं भुञ्जदे भिक्खू ॥१०८॥

रसरुहिरमंसमेदट्ठिसुकिलमलमुत्तपूयकिमिबहुलं ।
दुग्गंधमसुइचम्ममयमणिच्चमचेदणं पडणं ॥१०९॥

बहुदुक्खभायणं कम्मकारणं भिण्णमप्पणो देहं ।
तं देहं धम्माणुट्ठाणकारणं चेदि पोसदे भिक्खू ॥११०॥

संजमतवझाणज्झयणविण्णाणए गिण्हदे पडिगहणं ।
बज्जदि गिण्हदि भिक्खु ण सक्कदे वज्जिदु दुक्खं ॥१११॥

कोहेण य कलहेण य जायणसीलेण संकिलेसेण ।
रुद्देण य रोसेण य भुञ्जदि किं वितरो भिक्खू ॥११२॥

दिव्वुत्तरणसरिच्छं जाणिच्चाहो धरेदि जदि सुद्धो ।
तत्तायसपिंडसमं भिक्खू तुह पाणिगदपिंडं ॥११३॥

अविरद–देस–महव्वय आगमरुइण वियारतच्चण्हं ।
पत्तंतरं सहस्सं णिद्दिट्ठं जिणवरिंदेहिं ॥११४॥

उवसमणिरीहझाणज्झयणादि महागुणा जहा दिट्ठा ।
जेसिं ते मुणिणाहा उत्तमपत्ता तहा भणिदा ॥११५॥

ण वि जाणदि जिणसिद्धसरूवं तिविहेण तह णियप्पाणं ।
जो तिव्वं कुणदि तवं सो हिंडदि दीहसंसारे ॥११६॥

दंसणसुद्धो धम्मज्झाणरदो संगवज्जिदो णिस्सल्लो ।
पत्तविसेसो भणिदो सो गुणहीणो दु विवरीदो ॥११७॥

सम्मादिगुणविसेसं पत्तविसेस जिणेहि णिद्दिट्ठं ।
तं जाणिदूण देदि सुदाणं जो सो हु मोक्खरदो ॥११८॥

णिच्छयववहारसरूवं जो रयणत्तयं ण जाणदि सो ।
जं कीरदि तं मिच्छारूवं सव्वं जिणुद्दिट्ठं ॥११९॥

किं जाणिदूण सयलं तच्चं किच्चा तवं च किं बहुलं ।
सम्मविसोहिविहीणं णाणतवं जाण भववीयं ॥१२०॥

वयसीगुणसीलपरीसहजयं च चरियं तवं छडावसयं ।
झाणज्झयणं सव्वं सम्म विणा जाण भववीयं ॥१२१॥

खाई–पूया–लाहं काराइं किमिच्छसे जोई ।
इच्छसि जदि परलोयं तेहि किं तुज्झ परलोयं ॥१२२॥

कम्मादविहाव सहावगुणं जो भाविदूण भावेण ।
णियसुद्धप्पा रुच्चदि तस्सय णियमेण होदि णिव्वाणं ॥१२३॥

मूलुत्तरुत्तरुत्तर दव्वादो भावकम्मदो मुक्को ।
आसव–बंधण–संवर–णिज्जर जाणेदि किं बहुणा ॥१२४॥

विसयविरत्तो मुञ्चदि विसयासत्तो ण मुञ्चदे जोई ।
बहिरंतरपरमप्पाभेदं जाणाहि किं बहुणा ॥१२५॥

णियअप्पणाणझाणज्झयणसुहामियरसायणं पाणं ।
मोत्तूणक्खाणसुहं जो भुञ्जदि सोहु बहिरप्पा ॥१२६॥

किंपायफलं पक्कं विसमिस्सिद मोदगिंदवारुणं सोहं ।
जिव्हसुयं दिट्ठिपियं जह तह जाणक्खसोक्खं पि ॥१२७॥

देह कलत्तं पुत्तं मित्तादि विहावचेदणारूवं ।
अप्पसरूवं भावदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा ॥१२८॥

इंदियविसयसुहादिसु मूढमदी रमदि ण लहदि तच्चं ।
बहुदुक्खमिदि ण चिंतदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा ॥१२९॥

जं जं अक्खाणसुहं तं तं तिव्वं करेदि बहु दुक्खं ।
अप्पाणमिदि ण चिंतदि सो चेव हवेदि बहिरप्पा ॥१३०॥

जेसिं अमेज्झमज्झे उप्पण्णाणं हवेदि तत्थ रुई ।
तह बहिरप्पाणं बहिरिंदिय-विसएसु होदि मदी ॥१३१॥
पूयसूयरसाणाण खारामियभक्खभक्खणाणं पि ।
मणु जाइ जहा मज्झे बहिरप्पाणं तहा णेयं ॥१३२॥
सिविणे वि ण भुञ्जदि विसयाइं देहादि भिण्णभावमदी ।
भुञ्जदि णियप्परूवो सिवसुहरत्तो दु मज्झिमप्पो सो ॥१३३॥
मलमुत्तघडव्व चिरंवासिद दुव्वासणं ण मुञ्चेदि ।
पक्खालिद सम्मत्तजलो य णाणमियेण पुण्णो वि ॥१३४॥
सम्मादिट्ठी णाणी अक्खाणसुहं कहं पि अणुहवदि ।
केणावि ण परिहरणं वाहीणविणासणट्ठ भेसज्जं ॥१३५॥
किं बहुणा हो तजि बहिरप्पसरूवाणि लभावाणि ।
भजि मज्झिम परमप्पा वत्थु सरूवाणि भावाणि ॥१३६॥
चउगदि-संसारगमणकारणभूदाणि दुक्खहेदूणि ।
ताणि हवे बहिरप्पा वत्थुसरूवाणि भावाणि ॥१३७॥
मोक्खगदिगमणकारणभूदाणि पसत्थपुण्णहेदूणि ।
ताणि हवे दुविहप्पा वत्थुसरूवाणि भावाणि ॥१३८॥
दव्वगुणपज्जयेहिं जाणदि परसगसमयादिविभेदं ।
अप्पाणं जाणदि सो सिवगदिपहणायगो होदि ॥१३९॥
बहिरंतरप्पभेदं परसमयं भण्णदे जिणिंदेहिं ।
परमप्पा सगसमयं तब्भेदं जाण गुणठाणे ॥१४०॥
मिस्सो त्ति बाहिरप्पा तरतमया तुरियं ˙ रप्प जहण्णो ।
संतो त्ति मज्झिमंतर खीणुत्तम परम जिणसिद्धा ॥१४१॥
मूढत्तय सल्लत्तय दोसत्तय दंडगारवत्तयेहि ।
परिमुक्को जोई सो सिवगदिपहणायगो होदि ॥१४२॥

रयणत्तय–करणत्तय–जोगत्तय–गुत्तित्तय विसुद्धेहि ।
संजुत्तो जोई सो सिवगदिपहणायगो होदि ।।१४३।।
जिणलिंगहरो जोई विराय–सम्मत्तसंजुदो णाणी ।
परमोवेक्खाइरियो सिवगदिपहणायगो होदि ।।१४४।।
बहिरब्भंतरगंधविमुक्को सुद्धोपजोयसंजुत्तो ।
मूलुत्तरगुणपुण्णो सिवगदिपहणायगो होदि ।।१४५।।
ज जादिजरामरणं दुहदुट्ठविसाहिविसविणासयरं ।
सिवसुहलाहं सम्मं संभावदि सुणदि साहदे साहू ।।१४६।।
किं बहुणा हो देविंदाहिंदणरिंद–गणहरिंदेहिं ।
पुज्जा परमप्पा जे तं जाण पहाणसम्मगुणं ।।१४७।।
उवसम्मइ सम्मत्तं मिच्छत्तबलेण पेल्लदे तस्स ।
परिवट्टंति कसाया उवसप्पिणी कालदोसेण ।।१४८।।
गुण-वय-तव-सम-पडिमा-दाणं-जलगालणं-अणत्थमिदं ।
दंसण-णाण-चरित्तं किरिया तेवण्ण सावया भणिदा ।।१४९।।
णाणेण झाणसिद्धि झाणादो सव्वकम्मणिज्जरणं ।
णिज्जरणफलं मोक्खं णाणब्भासं तदो कुज्जा ।।१५०।।
कुसलस्स तवो णिवुणस्स संजमो समपरस्स वेरग्गो ।
सुद्धभावणेण तत्तिय तम्हा सुदभावणं कुणह ।।१५१।।
कालमणंतं जीवो मिच्छत्तसरूवेण पंचसंसारे ।
हिंडदि ण लहदि सम्मं संसारब्भमणपारंभो ।।१५२।।
सम्मद्दंसणशुद्धं जाव दु लभदे हि ताव सुही ।
सम्मद्दंसणसुद्धं जाव ण लभदे हि ताव दुही ।।१५३।।
किं बहुणा वयणेण दु सव्वं दुक्खेव सम्मत्त विणा ।
सम्मत्तेण विजुत्तं सव्वं सोक्खेव जाण खु ।।१५४।।
णिक्खेवणयपमाणं सद्दालंकारछंद लहियाणं ।
णाडय पुराण कम्मं सम्मं विणा दीहसंसारं ।।१५५।।

वसदि-पडिमोवयरणे गणगच्छे समय-संघ-जादि कुले ।
सिस्स-पडिसिस्सछत्ते सुदजादे कप्पडे पुत्थे ।।१५६।।
पिच्छे-संथरणे इच्छासु लोहेण कुणदि ममयारं ।
यावच्च अट्टरुद्दं ताव ण मुञ्चेदि ण हु सोक्खं ।।१५७।।
रयणत्तयमेव गणं गच्छं गमणस्स मोक्खमग्गस्स ।
संघो गुणसंघादो समओ खलु णिम्मलो अप्पा ।।१५८।।
मिहिरो मंहधयारं मरुदो मेहं महावणं दाहो ।
वज्जो गिरिं जहा विणसिज्जदि सम्मं तहा कम्मं ।।१५९।।
मिच्छंधयाररहिदं हियमज्झं सम्मरयणदीवकलावं ।
जो पज्जलदि स दीसदि सम्मं लोयत्तयं जिणुद्दिट्ठं ।।१६०।।
पवयणसारब्भासं परमप्पज्झाणकारणं जाण ।
कम्मखवणणिमित्तं कम्मक्खवणे हि मोक्खसुहं ।।१६१।।
धम्मज्झाणब्भासं करेदि तिविहेण भावसुद्धेण ।
परमप्पझाणचेट्ठो तेणेव खवेदि कम्माणि ।।१६२।।
अदिसोहण जोएणं सुद्धं हेमं हवेदि जह तह य ।
कालाईलद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि ।।१६३।।
कामदुहिं कप्पतरुं चिंतारयणं रसायणं परसं ।
लद्धो भुञ्जदि सोक्खं जहच्छिदं जाण तह सम्मं ।।१६४।।
सम्म णाणं वेरग्ग–तवोभावं णिरीहवित्ति–चारित्तं ।
गुणसीलसहावं तह उप्पज्जदि रयणसारमिणं ।।१६५।।
गथ मिण जिणदिट्ठं ण हु मण्णदि ण हु सुणेदि ण हु पढदि ।
ण हु चिंतदि ण हु भावदि सो चेव हवेदि कुद्दिट्ठी ।।१६६।।
इदि सज्जणपुज्जं रयणसारगंथं णिरालसो णिच्चं ।
जो पढदि सुणदि भावदि सो पावदि सासदं ठाणं ।।१६७।।

इदि रयणसार गथो समत्तो

पृष्ठ नं० ५८६ पर मूलाचार प्रारम्भ हो रहा है। कृपया निम्नलिखि गाथाओ को भी क्रमानुसार पढने का कष्ट करें।

मूलाचारो

छक्करण चउव्विहत्थी किदकारिदअणुमोदिदं चेव।
जोगेसु अवम्भस्स य भंगा खलु होति अक्खसचारे ॥५२-१॥

एसो अज्जाणंपि अ सामाचारो जधाखिओ पुव्वं।
सव्वह्मि अहोरत्ते विभासि दव्वो जधाजोग्गं ॥२२७-१॥

जत्थेवक मरइ जीवो तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थ णंताणं ॥२६०-१॥

उत्तरगुण उज्जोगो सम्म अहियासणा य सद्धा य।
आवास याण मुचिदाण अपरिहाणी अणुस्सेहो ॥४३१-१॥

पुढवी आऊ य तहा हरिदा वीया तसा य सज्जीवा।
पंचेहि तेहि मिस्सं आहार होदि उम्मिस्स ॥५३९-१॥

जह मच्छयाण पयदे मदणुदयेमच्छया हि मज्जंति।
णहि मंडूगा एवं परमट्ठकदे जदि विसुद्धो ॥५५२-१॥

किह तेण कित्तणिज्जा सदेव मणुया सुरेहिं लोगेहिं।
दंसणणाणचरित्ते तव विणओ जेहिं पण्णत्तो ॥६३७-१॥

सव्व केवलकप्पं लोग जाणंति तह य सस्संति।
केवलणाणचरित्ता तह्मा ते केवली होंति ॥६३८-१॥

मिच्छत्तं वेदणीयं णाणावरण चरित्तमोहं च।
तिविहा तमाहु मुक्का तह्मा ते उत्तमा होंति ॥६३९-१॥

आरोग्ग बोहिलाहं देंतु समाहि च मे जिणवरिंदा।
किं ण हु णिदाणमेय णवरि विभासेत्थ कायव्वा ॥६४०-१॥

भासा असच्चमोसा णवरि हु भत्तीय भासिदा भासा।
ण हु खीण राग दोसा दिंति समाहि च बोहिं च ॥६४१-१॥

वसदि-पडिमोवयरणे गणगच्छे समय-संघ-जादि कुले ।
सिस्स-पडिसिस्सछत्ते सुदजादे कप्पडे पुत्थे ॥१५६॥
पिच्छे-संथरणे इच्छासु लोहेण कुणदि ममयारं ।
यावच्च अट्टरुद्दं ताव ण मुञ्चेदि ण हु सोक्खं ॥१५७॥
रयणत्तयमेव गणं गच्छं गमणस्स मोक्खमग्गस्स ।
संघो गुणसंघादो समओ खलु णिम्मलो अप्पा ॥१५८॥
मिहिरो मंहधयारं मरुदो मेहं महावणं दाहो ।
वज्जो गिरिं जहा विणसिज्जदि सम्मं तहा कम्मं ॥१५९॥
मिच्छंधयाररहिदं हियमज्झं सम्मरयणदीवकलावं ।
जो पज्जलदि स दीसदि सम्मं लोयत्तयं जिणुद्दिट्ठं ॥१६०॥
पवयणसारब्भासं परमप्पज्झाणकारणं जाण ।
कम्मखवणणिमित्तं कम्मक्खवणे हि मोक्खसुहं ॥१६१॥
धम्मज्झाणब्भासं करेदि तिविहेण भावसुद्धेण ।
परमप्पझाणचेट्ठो तेणेव खवेदि कम्माणि ॥१६२॥
अदिसोहण जोएणं सुद्धं हेमं हवेदि जह तह य ।
कालाईलद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि ॥१६३॥
कामदुहिं कप्पतरुं चिंतारयणं रसायणं परसं ।
लद्धो भुञ्जदि सोक्खं जहच्छिदं जाण तह सम्मं ॥१६४॥
सम्म णाणं वेरग्ग–तवोभावं णिरीहवित्ति–चारित्तं ।
गुणसीलसहावं तह उप्पज्जदि रयणसारमिणं ॥१६५॥
गंथमिणं जिणदिट्ठं ण हु मण्णदि ण हु सुणेदि ण हु पढदि ।
ण हु चिंतदि ण हु भावदि सो चेव हवेदि कुदिट्ठी ॥१६६॥
इदि सज्जणपुज्जं रयणसारगंथं णिरालसो णिच्चं ।
जो पढदि सुणदि भावदि सो पावदि सासदं ठाणं ॥१६७॥

इदि रयणसार गंथो समत्तो ।

पृष्ठ नं० ५८६ पर मूलाचार प्रारम्भ हो रहा है। कृपया निम्नलिखित गाथाओं को भी क्रमानुसार पढ़ने का कष्ट करें।

मूलाचारो

छक्करण चउव्विहत्थी किदकारिदअणुमोदिदं चेव।
जोगेसु अबम्भस्स य भंगा खलु होंति अक्खसंचारे ॥५२-१॥

एसो अज्जाणंपि अ सामाचारो जधाखिओ पुव्वं।
सव्वह्मि अहोरत्ते विभासि दव्वो जधाजोग्गं ॥२२७-१॥

जत्थेक्क मरइ जीवो तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थ णंताणं ॥२६०-१॥

उत्तरगुण उज्जोगो सम्मं अहियासणा य सद्धा य।
आवास याण मुचिदाण अपरिहाणी अणुस्सेहो ॥४३१-१॥

पुढवी आऊ य तहा हरिदा वीया तसा य सज्जीवा।
पंचेहि तेहि मिस्सं आहार होदि उम्मिस्सं ॥५३९-१॥

जह मच्छयाण पयदे मदणुदयेमच्छया हि मज्जंति।
णहि मडूगा एवं परमट्ठकदे जदि विसुद्धो ॥५५२-१॥

किह तेण कित्तणिज्जा सदेव मणुया सुरेहिं लोगेहिं।
दंसणणाणचरित्ते तव विणओ जेहिं पण्णत्तो ॥६३७-१॥

सव्वं केवलकप्प लोग जाणंति तह य पस्संति।
केवलणाणचरित्ता तह्मा ते केवली होंति ॥६३८-१॥

मिच्छत्त वेदणीय णाणावरणं चरित्तमोहं च।
तिविहा तमाहु मुक्का तह्मा ते उत्तमा होंति ॥६३९-१॥

आरोग्ग बोहिलाह देंतु समाहिं च मे जिणवरिंदा।
किं ण हु णिदाणमेय णवरि विभासेत्थ कायव्वा ॥६४०-१॥

भासा असच्चमोसा णवरि हु भत्तीय भासिदा भासा।
ण हु खीण राग दोसा दिंति समाहिं च बोहिं च ॥६४१-१॥

जं तेहिं दु दादव्वं तं दिण्ण जिणवरेहिं सव्वेहिं ।
दंसणणाणचरित्तस्य एस तिविहस्स उवदेसो ।।६४२-१।।

जलथलखगममुच्छिमतिरिय अपज्जत्तया विहत्थी दु ।
जलसम्मुच्छिम पज्जत्तयाण तह जोयण सहस्सं ।।११८०।।
सत्त दु वासहस्सा आऊ आउस्स होइ उक्कस्स ।
रत्तिदिणाणि तिण्णिदु तेऊण होइ उक्कस्सं ।।११६३।।
तिण्णि दु वाससहस्सा आऊ वाउस्स होइ उक्कस्सं ।
दस वाससहस्साणि दु वणप्फदीणं तु उक्कस्स ।।११६४।।
बारस वासा वेइंदियाण मुक्कस्सं भवे आऊ ।
राइंदिणाणि तेइंदियाण मुणुवण्ण उक्कस्स ।।११६५।।
एदे पिंडापिंडं पयठी णिच्चुच्चगोदं च ।






सिरिकुंदकुंदाइरियकदो

मूलाचारो

मूलगुणेसु विसुद्धे वंदित्ता सव्वसंजदे सिरसा ।
इहपरलोगहिदत्थे मूलगुणे कित्तइस्सामि ॥१॥
णाणादिरयणतिथमिह सज्झं तं साधयंति जमणियमा ।
जत्थ जमा सस्सदिया णियमा णियतप्पपरिणामा ॥२॥
ते मूलुत्तरसण्णा मूलगुणा महव्वदादि अडवीसा ।
तव परिसहादिभेदा चोत्तीसा उत्तरगुणक्खा ॥३॥
पंच य महव्वयाइं समिदीओ पंच जिणवरुद्दिट्ठा ।
पंचेविंदियरोहा छप्पि य आवासया लोचो ॥४॥
अच्चेलकमण्हाणं खिदिसयणमदंतधंसणं चेव ।
ठिदिभोयणेभत्तं मूलगुणा अट्ठवीसा दु ॥५॥
हिंसाविरदी सच्चं अदत्तपरिवज्जणं च बंभं च ।
संगविमुत्ती य तहा महव्वया पंच पण्णत्ता ॥६॥
कार्येदियगुणमग्गणकुलाउजोणीसु सव्वजीवाणं ।
णाऊण य ठाणादिसु हिंसादिविवज्जणमहिंसा ॥७॥
रागादीहिं असच्चं चत्ता परतावसच्चवयणुत्ति ।
सुत्तत्थाण विकहणे अयधावयणुज्झणं--सच्चं ॥८॥
गामादिसु पडिदाइं अप्पप्पहुदिं परेण संगहिदं ।
णादाणं परदव्वं अदत्तपरिवज्जणं तं तु ॥९॥
मादुसुदाभगिणीवं य दट्ठूणित्थित्तियं च पडिरुवं ।
इत्थिकहादिणियत्ती तिलोयपुज्जं हवे बंभं ॥१०॥

जीवणिबद्धा बद्धा परिग्गहा जीवसंभवा चेव ।
तेसिं सक्कच्चाओ इयरम्हि य णिम्मओऽसगो ॥११॥
इरियाभासा एसण णिक्खेवादाणमेव समिदीओ ।
पडिठावणिया य तहा उच्चारादीण पंच विहा ॥१२॥
फासुयमग्गेण दिवा जुवंतरप्पहेणा सकज्जेण ।
जंतूण परिहरंति इरियासमिदी हवे गमणं ॥१३॥
पेसुण्णहासकक्कसपरणिंदाप्पप्पसंसविकहादी ।
वज्जित्ता सपरहिदं भासासमिदी हवे कहणं ॥१४॥
छादालदोससुद्धं कारणजुत्तं विसुद्धण णेडी ।
सीदादीसमभुत्ती परिसुद्धा एसणासमिदी ॥१५॥
णाणुवहिं संजुमवहिं सउचुवहिं अण्णमप्पमुवहिं वा ।
पयद गहणिक्खेवो समिदी आदाणणिक्खेवा ॥१६॥
एगंते अच्चंते दूरे गूढे विसालमविरोहे ।
उच्चारादिच्चाओ पदिठावणिया हवे समिदी ॥१७॥
जियदु व मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदस्स ॥१८॥
चक्खू सोदं घाणं जिब्भा फासं च इंदिया पंच ।
सगसगविसेएहिंतो णिरोहियव्वा सया मुणिणा ॥१९॥
सच्चित्ताचित्ताणं किरियासंठाणवण्णभेएसु ।
रागादिसंगहरणं चक्खुणिरोहो हवे मुणिणो ॥२०॥
सज्जादिजीवसद्दे वीणादिअजीवसंभवे सद्दे ।
रागादीण णिमित्ते तदकरणं सोदरोधो दु ॥२१॥
पयडीवासणगंधे जीवाजीवप्पगे सुहे असुहे ।
रागद्दोसाकरणं घाणणिरोहो मुणिवरस्स ॥२२॥

असणादिचदुवियप्पे पंचरसे फासुगम्हि णिरवज्जे।
इट्ठाणिट्ठाहारे दत्ते जिब्भाजओऽगिद्धी ॥२३॥

जीवाजीवसमुत्थे कक्कडमउगादिअट्ठभेदजुदे।
फासे सुहे य असुहे फासणिरोहो असंमोहो ॥२४॥

समदा थओ य वंदण पडिक्कमणं तहेव णादव्वं।
पच्चक्खाण विसग्गो करणीयावासया छप्पि ॥२५॥

जीविदमरणे लाहालाभे संजोयविप्पओगे य।
बंधुरिसुहदुक्खादिसु समदा सामायियं णाम ॥२६॥

उसहादिजिणवराणं णामणिरुत्तिं गुणाणुकित्तिं च।
काऊण अच्चिदूण य तिसुद्धपणमो थओ णेओ ॥२७॥

अरहंतसिद्धपडिमातवसुदगुणगुरुगुरूण रादीणं।
किदिकम्मेणिदरेण य तियरणसंकोचणं पणमो ॥२८॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य किदावराहसोहणयं।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवचकायेण पडिकमण ॥२९॥

णामादीणं छण्णं अजोग्गपरिवज्जणं तिकरणेण।
पच्चक्खाण णेयं अणागयं चागमे काले ॥३०॥

देवस्सियणियमादिसु जहुत्तमाणेण उत्तकालम्हि।
जिणगुणचिंतणजुत्तो काओसग्गो तणुविसग्गो ॥३१॥

वियतियचउक्कमासे लोचो उक्कस्समज्झिमजहण्णो।
सपडिक्कमणे दिवसे उववासेणेव कायव्वो ॥३२॥

वत्थाजिणवक्केण य अहवा पत्तादिणा असंवरणं।
णिब्भूसण णिग्गंथं अच्चेलक्कं जगदि पुज्जं ॥३३॥

ण्हाणादिवज्जणेण य विलित्तजल्लमल्लसेदसव्वंगं।
अण्हाणं घोरगुण संजमदुगपालयं मुणिणो ॥३४॥

फासयु भूमिपएसे अप्पमसंथारिदम्हि पच्छण्णे ।
दंडं धणुव्व सेज्ज खिदिसयणं एयपासेण ॥३५॥

अंगुलिणहावलेहणिकलीहिं पासाणछल्लियादीहिं ।
दंतमलसोहणयं संजमगुत्ती अदंतमणं ॥३६॥

अंजलिफुडेण ठिच्चा कुड्डादिविवज्जणेण समपायं ।
पडिसुद्धे भूमितिए असणं ठिदिभोयणं णाम ॥३७॥

उदयत्थमणे काले णालीतियवज्जियम्हि मज्झम्हि ।
एकम्हि दुअ तिए वा मुहुत्तकालेयभत्तं तु ॥३८॥

एवं विहाणजुत्ते मूलगुणे पालिऊण तिविहेण ।
होऊण जगदि पुज्जो अवखयसोक्खं लहइ मोक्खं ॥३९॥

कागा मेज्झा छद्दी रोहण रुहिरं च अस्सुवादं च ।
जण्हूहिट्ठमरिसं जण्हुवरि वदिक्कमो चेव ॥४०॥

णाभिअधोणिग्गमणं पच्चक्खिसेवणा ए जंतुवहो ।
कागादिपिंडहरणं पाणीदो पिंडपडणं च ॥४१॥

पाणीए जंतुवहो मंसादीदंसणे य उवसग्गे ।
णाद तरम्मि जीवो संपादो भायणाणं च ॥४२॥

उच्चारं पस्सवणं अभोज्जगिहपवेसणं तहा पडणं ।
उववेसणं सदंसं भूमीसंफासं णिट्ठवणं ॥४३॥

उदरक्किमिणिग्गहमणं अदत्तगहणं पहारगामडाहो ।
पादेण किंवि गहणं करेण वा जं च भूमीए ॥४४॥

एदे अण्णे बहुगा कारणभूदा अभोजणस्सेह ।
बीहण लोगदुगुंछणसंजमणिव्वेदणट्ठं च ॥४५॥

णहरोमजंतु अट्ठीकणकुंडयपूयचम्मरुहिरमंसाणि ।
बीयफलकंदमूला छिण्णाणि मला चउद्दसा होंति ॥४६॥

सव्वदुक्खप्पहीणाणं सिद्धाणं अरहदो णमो।
सद्दहे जिणपण्णत्तं पच्चक्खामि य पावयं ॥४७॥
णमोत्थु धुद पावाणं सिद्धाणं च महेसिणं।
संभरं पडिवज्जामि जहा केवलिदेसियं ॥४८॥
जं किंचि मे दुच्चरियं सव्वं तिविहेण वोसरे।
सामाइयं च तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं ॥४९॥
बज्झब्भंतरमुवहिं शरीराइं च भोयणं।
मणेण वचि कायेण सव्वं तिविहेण वोसरे ॥५०॥
सव्वं पापारभं पच्चक्खामि अलीयवयणं च।
सव्वमदत्तादाणं मेहूण परिग्गहं चेव ॥५१॥
सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि।
आसाए वोसरित्ताण समाहिं पडिवज्जये ॥५२॥
खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु वेर मज्झं ण केणवि ॥५३॥
रायबंधं पदोसं च हरिसं दीणभावयं।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोसरे ॥५४॥
ममत्तिं परिवज्जामि णिम्मत्तिमुवट्ठिदो।
आलंबणं च मे आदा अवसेसाइं वोसरे ॥५५॥
आदा हु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोए ॥५६॥
एओ य मरइ जीवो एओ य उववज्जइ।
एयस्स जाइ मरणं एओ सिज्झइ णीरओ ॥५७॥
एओ मे सस्सओ अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥५८॥

संजोयमूलं जीवेण पत्तं दुक्खपरंपरं ।
तम्हा संजोगसंबधं सव्वं तिविहेण वोसरे ॥५९॥

मूलगुण उत्तरगुणे जो मे णाराहिओ पमाएण ।
तमहं सव्वं णिंदे पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥६०॥

असंजममण्णाणं मिच्छत्तं सव्वमेव य ममत्तिं ।
जीवेसु अजीवेसु य तं णिंदे तं च गरिहामि ॥६१॥

सत्तभए अट्ठमए सण्णा चत्तारि गारवे तिण्णि ।
तेत्तीसच्चासणाओ रायद्दोसं च गरिहामि ॥६२॥

इहपरलोयत्ताणं अगुत्तिमरणं च वेयणाकम्हिभया ।
विण्णाणिस्सरियाणा कुलबलतवरूवजाइ मया ॥६३॥

आहारादिसण्णा चत्तारि वि होंति जाण जिणवयणे ।
सादादिगारवा ते तिण्णि वि णियमा पवज्जेजो ॥६४॥

इह जाहि बाहिया वि य जीवा पावंति दारुणं दुक्खं ।
सेवंता वि य उभये ताओ चत्तारि सण्णाओ ॥६५॥

आहारदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमकोठाए ।
सादिदरुदीरणाए हवदि हु आहारसण्णा हु ॥६६॥

अइभीमदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए ।
भयकम्मुदीरणाए भयसण्णा जायदे चदुहिं ॥६७॥

पणिदरसभोयणेण य तस्सुवजोगे कुसील सेवाए ।
वेदस्सुदीरणाए मेहुणसण्णा हु जायदे चदुहिं ॥६८॥

उवयरणदंसणेण य तस्सुवजोएण मुच्छिदाए य ।
लोहस्सुदीरणाए परिग्गहे जायदे सण्णा ॥६९॥

पंचेव अत्थिकाया छज्जीवणिकाय महव्वया पंच ।
पवयणमाउपयत्था तेतीसच्चासणा भणिया ॥७०॥

णिंदामि णिंदणिज्जं गरहामि य जं मे गरहणीयं ।
आलोचेमि य सव्वं सब्भंतर बाहिरं उवहिं ॥७१॥

जह बालो जंप्पतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणदि ।
तह आलोचेयव्वं मायामोसं च मोत्तूणं ॥७२॥

णाणम्हि दंसणम्हि य तवे चरित्ते य चउसु वि अकंपो ।
धीरो आगमकुसलो अपरिस्सावी रहस्साणं ॥७३॥

एरिसगुणजुत्ताणं आइरियाणं विसुद्धभावेण ।
आलोचेदि सुविहिदो सव्वे दोसे पमोत्तूणं ॥७४॥

रागेण य दोसेण य जं मे अकुदण्हुयं पमादेण ।
जो मे किंचिवि भणिओ तमहं सव्वं खमावेमि ॥७५॥

तिविहं भणंति मरणं बालाणं बालपंडियाणं च ।
तइयं पडियमरणं जं केवलिणो अणुमरंति ॥७६॥

जे पुण पणट्ठमदिया पचलियसण्णा य वक्कभावा य ।
असमाहिणा मरंते ण हु ते आराहया भणिया ॥७७॥

मरणे विराहिए देवदुग्गई दुल्लहा य किर बोही ।
संसारो य अणंतो होइ पुणो आगमे काले ॥७८॥

का देवग्गदीओ का बोही केण ण बुज्झय मरणं ।
केण व अणंतपारे संसारे हिण्डए जीओ ॥७९॥

कंदप्पमाभिजोग्गं किब्बिससम्मोहमासुरत्त च ।
ता देव दुग्गदीओ मरणम्मि विराहिए होंति ॥८०॥

असच्चमुल्लावेंतो पण्णावेंतो य बहुजणं कुणइ ।
कदप्परइहमावण्णो कंदप्पेसु ववज्जइ ॥८१॥

मंताभियोग कोदुगभूदीकम्मं पउंजये जो सो ।
इड्ढिरसासादहेदुं अभियोगं भावणं कुणदि ॥८२॥

अभिजुंजइ बहुभावे साहू हस्साइयं च बहुवयणं ।
अभिजोगेहिं कम्मेहिं जुत्तो वाहणेसु उववज्जइ ॥८३॥

तित्थयराणं पडिणीओ संघस्स य चेइयस्स सुत्तस्स ।
अविणीदो णियडिल्लो किव्विसियेसूववज्जेई ॥८४॥

उम्मग्गदेसओ मग्गणासओ मग्गविपडिवण्णो य ।
मोहेण य मोहंतो समोहेसूववज्जेदि ॥८५॥

खुद्दी कोही माणी मायी तह संकिलिट्ठो तवे चरित्ते य ।
बद्धवेररोई असुरेहूववज्जदे जीवो ॥८६॥

मिच्छादंसणरत्ता सणिदाणा किण्हलेसमोगाढा ।
इह जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥८७॥

जे पुण गुरुपडिणीया बहुमोहा ससबला कुसीला य ।
माहिणा मरंते ते होंति अणंतसंसारा ॥८८॥

सव्वे वि बंधुवग्गे जादिसु जादिसु चिंतएदव्वा ।
ते चेव होंति बंधव जादिसहस्सा वियोगमोगाढे ॥८९॥

अद्धुवमसरणमेगत्तमण्ण संसारलोयमसुचित्तं ।
आसवसंवरणिज्जर धम्मं बोहिं च चिंतेज्जो ॥९०॥

जलेसु उत्तं व थलेसु उत्तं गिरिसिहर पादमूलेसु ।
रुक्खग्गेसु य उत्तं संसारे संसरत्तेण ॥९१॥

धरणितलविवरगिरिसागरेसु तरुसिहरकोठरथलेसु ।
जीवाण मरणकाले को परियम्मं कुणदि तेसिं ॥९२॥

मणुसेसु वि को वि णरो तिरियेसु वि जे बंधवा य सेणा य ।
कालं करेंसि दुहदो को परिकम्मं कुणदि तेसिं ॥९३॥

अण्णं इमं सरीरं अण्णो जीवोत्ति णिच्छिदमदीओ ।
दुक्खभयकिलेसयरीं मा खु ममत्ति कुण सरीरे ॥९४॥

णत्थि भयं मरणसमं जम्मणसमगं ण विज्जदे दुक्खं ।
जम्मणमरणातंकं छिंद ममत्तिं सरीरादो ॥९५॥

जावंति केइ दुक्खा सरीरा माणसा व संसारे ।
पत्ता अणंतखुत्तो कायस्स ममत्तदोसेण ॥९६॥

तम्हा सरीरपहुदिं सब्भंतरबाहिरं णिरवसेसं ।
छिंद ममत्ति सुविहिद जदि इच्छसि दुक्खमुत्ति तो ॥९७॥

जा गदी अरहंताणं णिट्ठिदट्ठाणं च जा गदी ।
जा गदी वदिमोहाणं सा मे भवदु सस्सदा ॥९८॥

एगम्हि भवग्गहणे समाहिमरणं लभेज्ज जदि जीवो ।
सत्तट्ठभवग्गहणे णिव्वाणमणुत्तरं लहदि ॥९९॥

एक्को वि णमोयारो जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स ।
संसारसायरादो तारेदि णरं व णारीं वा ॥१००॥

णादूण लोगसारं णिस्सारं दीहगमणसंसार ।
लोगग्गसिहरवासं झाहि पयत्तेण सुहवासं ॥१०१॥

णाणं पगासिगो तवो सोहगो संजमो य गुत्तियरो ।
तिण्हं पि य समवाये दिट्ठो जिणसासणे मोक्खो ॥१०२॥

णिज्जावगो य णाणं वादो झाणं चरित्त णावा हि ।
भवसागरं तु भविया तरंति तिहिसण्णिपायेण ॥१०३॥

जह णिज्जावयरहिया णावाओ वररदणसुपुण्णाओ ।
पट्टणमासण्णाओ खु पमाद मूला णिबुडंति ॥१०४॥

अजलिहुंकारो वि य भूविक्खेवणसिरचलण मुट्ठी य ।
एदे पंच वि सण्णा दिण्णाओ णमोकारपरिणदेसत्तेण ।१०५।

एदे पच्चक्खाणं णवमं पुव्वं तु सागरज्झयणं ।
जिणदिट्ठं सब्भावं आइरियपरंपरागदं ॥१०६॥

णाणं सरणं मे दंसणं च सरणं च चरिय सव्वं च ।
तव संजमं च सरणं भगवं सरणो महावीरो ॥१०७॥

णाणस्स संजमस्स य सम्मत्तस्स य तहेव सव्वस्स ।
जो काहिदिउवओगं संसारादो विमुंचदि सो ॥१०८॥

एक्कं पंडिदमरणं छिंददि जादीसयाणी बहुगाणि ।
तं मरणं मरिदव्वं जेण मंद सुम्मदं होदि ॥१०९॥

कंखिदकलुसिदभूदो कामभोगेसु मुच्छिदो संतो ।
अभुंजंतोवि य भोगे परिणामेण णिबज्झेह ॥११०॥

आहारणिमित्तं किर मच्छा गच्छति सत्तमिं पुढविं ।
सच्चित्तो आहारो ण कप्पदि मणसा वि पत्थेदुं ॥१११॥

तिणकठ्ठेण व अग्गी लवण समुद्दो णदीसहस्सेहिं ।
ण इमो जीवो सक्को तिप्पेदु कामभोगेहिं ॥११२॥

अधणो सहस्सुमिच्छदि तंपि य लद्धूण कोडिमभिलसदि ।
कोडिधणो वि य रज्जं रज्जादो चक्कवट्टित्तं ॥११३॥

पत्ते वि चकवट्टि देवं देवो वि तह य इंदत्तं ।
इंदत्ते वि य पत्ते उवरिं उवरिं च वड्ढदे इच्छा ॥११४॥

इच्छाए णत्थि अंतो सो साहू जो ण सेवए इच्छां ।
जे साहू सतुट्ठा ते सुहिदा दुक्खिदा सेसा ॥११५॥

सम्मद्दंसणरत्ता अणियाणा सुक्क लेस्समोगाढा ।
इह जे मरंति जीवा तेसिं सुलहा हवे बोही ॥११६॥

जिणवयणे अणुरत्ता गुरुवयण जे करंति भावेण ।
असबल असंकिलिठ्ठा ते होंति परित्तसंसारा ॥११७॥

बालमरणाणि बहुसो बहुयाणि अकामयाणि मरणाणि ।
मरिहंति ते वराया जे जिणवयणं ण जाणंति ॥११८॥

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं जलप्पवेसो य ।
अणयारभंडसेवी जम्मणमरणाणुबंधीणि ॥११९॥

उड्ढमधोतिरियम्हि दु कदाणि बालमरणाणि बहूगाणि ।
दंसण णाण सहगदो पंडियमरणं अणुमरिस्से ॥१२०॥

उव्वेयमरणजादीमरणं णिरएसु वेदणाओ य ।
एदाणि संभरंतो पंडियमरणं अणुमरिस्से ॥१२१॥

उव्वेयमरणजादीमरणं णिरएसु वेदणाओ य ।
एदाणि संभरतो पंडियमरणं अणुमरिस्से ॥१२२॥

जइ उप्पज्जइ दुक्खं तो दठ्ठव्वो सभावदो णिरये ।
कढमं मए ण फां संसारे संसरंतेण ॥१२३॥

संसारचक्कवालम्मि मए सव्वेवि पुग्गला बहूसो ।
आहारिदा य परिणामिदा य ण य मे गदा तित्ती ॥१२४॥

पुव्वं कदपरियम्मो अणिदाणो ईहिदूण मदिबुद्धि ।
पच्छा मलिदकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छाहि ॥१२५॥

हंदि चिर भाविदा वि य जे पुरिसा मरणदेसयाणंम्हि (लंम्हि)।
पुव्वकदकम्मगुरुयत्तणेण पच्छा परिवडंति ॥१२६॥

तम्हा चंदयवेज्झस्स कारणेण उज्जदेण पुरिसेण ।
जीवो अविरहिद गुणो कादव्वो मोक्खमग्गम्मि ॥१२७॥

सागर रो बम्लभगो कुलदत्तो वढ्ढमाणगो चेव ।
दिवसेणिक्केण हदा मिथिलाय र्मोहदत्तेण ॥१२८॥

कणयलदा णागलदा विज्जुलदा तहेव कुंदलदा ।
एदाविय तेण हदा मिथिलाणयरिये र्मोहदत्तेण ॥१२९॥

बाहिरजोगविरहिओ अब्भंतरजोगझाणमायीणो ।
जह तम्हि देसयाले अमूढ सण्णो जहसु देहं ॥१३०॥

हंतूण रागदोसे छेत्तूण य अट्ठकम्मसंकलयं ।
जम्मणमरणरहट्टं भेत्तूण भवाहिं मुच्चिहिसि ॥१३०॥

सव्वमिमं उवदेसं जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेण ।
तसथावर खेमकरं सारं णिव्वाण मग्गस्स ॥१३१॥

ण हि तम्हि देसयाले को बारसविहो सुदक्खंधो ।
सव्वो ुंचितेदुं बलिया वि स्थचित्तेण ॥१३२॥

सत्तक्खरसज्झाणं अरहंताण णमोत्ति भावेण ।
जो कुणदि अणण्णमदी सो पावदि उत्तमं ठाणं ॥१३३॥

एक्कम्हि विदियम्हि पदे संवेगो वीयरायमग्गम्मि ।
वच्चदि णरो अभिक्खं तं मरणते ण मोत्तव्वं ॥१३४॥

एदम्हादो ए हि सलोगं मरणदेसयालम्हि ।
आराहणउवजुत्तो चिंतंतो राधओ होदि ॥१३५॥

जिणवयणमोसहमिणं वि सुहविरेयणं अमिदभूदं ।
जरमरणवाहिवेयणखयकरणं स व्वदुक्खाणं ॥१३६॥

आराहण उ ुत्तो कालं काऊण सुविहिओ सम्मं ।
उक्कस्सं तिण्णिभवे गन्तूण य लहइ णिव्वाणं ॥१३७॥

णाणं सरणं मे दंसणं च सरणं च चरिय सरणं च ।
तव संजमं च सरणं भगवं सरणं महावीरो ॥१३८॥

समणो मेत्ति य पढमं विदियं सव्वत्थ संजदो मेत्ति ।
सव्वं च वोसरामि य एदं भणिदं ासेण ॥१३९॥

लद्धं अलद्धपुव्वं जिणवयणसुभासिदं अमिद भूदं ।
गहिदो सुग्गइमग्गो णाहं मरणस्स बीहेमि ॥१४०॥

वीरेण वि मरिदव्वं णिव्वीरेण वि अवस्स मरिदव्वं ।
जदि दोहिं वि मरिदव्वं वरं हि वीरत्तणेण मरिदव्वं ॥१४१॥

सीलेण वि मरिदव्वं णिस्सीलेण वि अवस्स मरिदव्वं ।
जइ दोहिं वि मरिदव्वं वरं हि सीलत्तणेण मरियव्वं ॥१४२॥

चिरउसिदबंभचारी पप्फोडेदूण सेसयं कम्मं ।
अणुपुव्वीए विसुद्धो सुद्धो सिद्धि गदिं जादि ॥१४३॥

णिम्ममो णिरहंकारो णिक्कसाओ जिदिंदिओ धीरो ।
अणिदाणो दिट्ठिसंपण्णो मरंतो आराहओ होदि ॥१४४॥

णिक्कसायस्स दंतस्स सूरस्स ववसायिणो ।
संसारभयभीदस्स पच्चक्खाणं सुहं हवे ॥१४५॥

एदं पच्चक्खाणं जो काहदि मरणदेसकालम्मि ।
धीरो अ॒ सण्णो सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥१४६॥

वीरो जरमरणरिऊ वीरो विण्णाणणाणसंपण्णा ।
लोयस्सुज्जोययरो जिणवरचंदो दिसदु बोहिं ॥१४७॥

एस करेमि पणामं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स ।
सेसाणं च जिणाणं सगणगणधराण च सव्वेसिं ॥१४८॥

सव्व पाणारंभं पच्चक्खामि अलीयवयणं च ।
सव्वमदत्तादाणं मेहूणपरिग्गहं चेव ॥१४९॥

सम्मं मे सव्वभूदेसु वेरं मम ण केण वि ।
आसाए वोसरित्ताण समाधिं पडिवज्जए ॥१५०॥

सव्वं आहारविहिं सण्णाओ आसए कसाए य ।
सव्वं चेव ममत्तिं जहामि सव्वं खमावेमि ॥१५१॥

सव्वो गुणगणणिलओ मोक्खसुहे सिग्घं हेदु ।
सव्वो चाउव्वण्णो ममापराधं ॥१५२॥

पढमं सव्वदिचारं विदियं तिविहं हवे पडिक्कमणं ।
पाणस्स परिच्चयणं जावज्जीवाय उत्तमट्ठं च ॥१५३॥

एदम्हि देसयाले उवक्कमो जीविदस्स जदि मज्झं ।
एदं पच्चक्खाणं णित्थिण्णे पारणा हुज्ज ।।१५४।।

सव्वं आहारविहिं पच्चक्खामि पाणयं वज्जं ।
उवहिं च वोसरामि य दुविहं तिविहेण सावज्जं ।।१५५।।

पच्च वि इंदियमुंडा वचमुंडा हत्थपायमणमुंडा ।
तणुमुंडेण वि सहिया दसमुंडा वण्णिया समये ।।१५६।।

जो कोइ मज्झ उवही सब्भंतर बाहिरो य हवे ।
आहारं च सरीरं जावज्जीवा य वोसरे ।।१५७।।

जामल्लीणा जीवा तरंति संसारसायरमणंतं ।
तं सव्वजीवसरण णंददु जिणसासण सुइरं ।।१५८।।

जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणं ।
तेलोक्कसेहराणं णमो सया सव्वसिद्धाणं ।।१५९।।

सगबोहदीवणिज्जिदभुवणत्तयरुंदमंदमोहतमो ।
णमिदसुरासुरसंघो जयदु जिणिंदो महावीरो ।।१६०।।

तेलोक्कपूजणीए अरहंते वंदिऊण तिविहेण ।
वोच्छं सामाचारं समासदो आणुपुव्वीए ।।१६१।।

समदो सामाचारो सम्माचारो समो व आचारो ।
सव्वेसिं सम्माण सामाचारो दु आचारो ।।१६२।।

दुविहो सामाचारो ओघोवि य पदविभागिओ चेव ।
दसहा ओघो भणिओ अणेगहा पदविभागी य ।।१६३।।

इच्छामिच्छाकारो तधाकारो य आसिका णिसिही ।
आपुच्छा पडिपुच्छा छंदणसणिमतणा य उवसंपा ।।१६४।।

इट्ठे इच्छाकारो मिच्छाकारो तहेव अवराहे ।
पडिसुणणम्हि तहत्ति य णिग्गम्मणे आसिया भणिया ।।१६५।।

पविसंते य णिसिद्दी आपुच्छणिया सकज्ज आरंभे ।
साधम्मिणा य गुरुणा पुव्वणिसिट्ठम्हि पडिपुच्छा ॥१६६॥

छंदण गहिदे दव्वे अगहिददव्वे णिमंतणा भणिदा ।
तुम्ह महंति गुरुकुले आदणिसग्गो दु उवसंपा ॥१६७॥

ओघियसामाचारो एसो भणिदो हु दसविहो णेओ ।
एतो य पदविभागो समासदो वण्णइस्सामि ॥१६८॥

मुग्गमसूरप्पहुदि समणाहोस्तमंडले कसिणे ।
जं अच्चरंति सददं एसो भणिदो पदविभागो ॥१६९॥

संजमणाणुवकरणे अण्णुवकरणे च जायणे अण्णे ।
जोगग्गहणादीसु अ इच्छाकारो दु कादव्वो ॥१७०॥

जं दुक्कडं तु मिच्छा तं णेच्छदि दुक्कड पुणो कादुं ।
भावेण पडिक्कंतो तस हवे दुक्कडं मिच्छा ॥१७१॥

वायणपडिच्छणाए उवदेसे सुत्तअत्थकहणाए ।
अवित्तहमेदत्ति पुणो पडिच्छणाए तधाकारो ॥१७२॥

कंदरपुलिणगुहादिसु पवेसकाले णिसिद्धियं कुज्जा ।
तेहिंतो णिग्गमणे तहासिया होदि कायव्वा ॥१७३॥

आदावणादिगहणे सण्णा उब्भामगादि गहणे वा ।
विणयेणायरियादिसु आपुच्छा होदि कायव्वा ॥१७४॥

जं किं चि महाकज्जं करणीयं पुच्छिऊण गुरुआदी ।
पुणरवि पुच्छदि साहू त जाणसु होदि पडिपुच्छा ॥१७५॥

गहिदुवकरणे विणए वंदनसुत्तत्थपुच्छणादीसु ।
गणधरवसभादीणं अणुवृत्ति छंदणिच्छाए ॥१७६॥

गुरुसाहम्मियदव्वं पुत्थयमण्णं च गेण्हिदुं इच्छे ।
तेसिं विणयेण पुणो णिमंतणा होइ कायव्वा ॥१७७॥

एदम्हि देसयाले उवक्कमो जीविदस्स जदि मज्झं ।
एदं पच्चक्खाणं णित्थिण्णे पारणा हुज्ज ।।१५४।।

सव्वं आहारविहिं पच्चक्खामि पाणयं वज्जं ।
उवहिं च वोसरामि य दुविह तिविहेण सावज्जं ।।१५५।।

पंच वि इंदियमुंडा वचमुंडा हत्थपायमणमुंडा ।
तणुमुंडेण वि सहिया दसमुंडा वण्णिया समये ।।१५६।।

जो कोइ मज्झ उवही सब्भंतर बाहिरो य हवे ।
आहारं च सरीरं जावज्जीवा य वोसरे ।।१५७।।

जामल्लीणा जीवा तरंति संसारसायरमणंतं ।
तं सव्वजीवसरण णंददु जिणसासणं सुइरं ।।१५८।।

जयमंगलभूदाण विमलाणं णाणदंसणमयाणं ।
तेलोक्कसेहराणं णमो सया सव्वसिद्धाण ।।१५९।।

सगबोहदीवणिज्जिदभुवणत्तयरुंदमंदमोहतमो ।
णमिदसुरासुरसंघो जयदु जिणिंदो महावीरो ।।१६०।।

तेलोक्कपूजणीए अरहंते वंदिऊण तिविहेण ।
वोच्छं सामाचारं समासदो आणुपुव्वीए ।।१६१।।

समदो सामाचारो सम्माचारो समो व आचारो ।
सव्वेसिं सम्माण सामाचारो दु आचारो ।।१६२।।

दुविहो सामाचारो ओघोवि य पदविभागिओ चेव ।
दसहा ओघो भणिओ अणेगहा पदविभागो य ।।१६३।।

इच्छामिच्छाकारो तधाकारो य आसिका णिसिही ।
आपुच्छा पडिपुच्छा छंदणसणिमंतणा य उवसपा ।।१६४।।

इट्ठे इच्छाकारो मिच्छाकारो तहेव अवराहे ।
पडिसुणणम्हि तहत्ति य णिग्गमणे आसिया भणिया ।।१६५।।

पविसंते य णिसिद्दी आपुच्छणिया सकज्ज आरंभे ।
साधम्मिणा य गुरुणा पुव्वणिसिट्ठम्हि पडिपुच्छा ।।१६६।।

छंदण गहिदे दव्वे अगहिददव्वे णिमंतणा भणिदा ।
तुम्ह महंति गुरुकुले आदणिसग्गो दु उवसंपा ।।१६७।।

ओघियसामाचारो एसो भणिदो हु दसविहो णेओ ।
एतो य पदविभागो समासदो वण्णइस्सामि ।।१६८।।

मुग्गमसूरप्पहुदि समणाहोस्तमंडले कसिणे ।
ज अच्चरंति सददं एसो भणिदो पदविभागी ।।१६९।।

संजमणाणुवकरणे अण्णुवकरणे च जायणे अण्णे ।
जोगगहणादीसु अ इच्छाकारो दु कादव्वो ।।१७०।।

जं दुक्कडं तु मिच्छा तं णेच्छदि दुक्कडं पुणो कादुं ।
भावेण पडिक्कंतो तस हवे दुक्कडं मिच्छा ।।१७१।।

वायणपडिच्छणाए उवदेसे सुत्तअत्थकहणाए ।
अवित्तहमेदत्ति पुणो पडिच्छणाए तधाकारो ।।१७२।।

कंदरपुलिणगुहादिसु पवेसकाले णिसिद्धियं कुज्जा ।
तेहिंतो णिग्गमणे तहासिया होदि कायव्वा ।।१७३।।

आदावणादिगहणे सण्णा उब्भामगादि गहणे वा ।
विणयेणायरियादिसु आपुच्छा होदि कायव्वा ।।१७४।।

जं किं चि महाकज्जं करणीयं पुच्छिऊण गुरुआदी ।
पुणरवि पुच्छदि साहू तं जाणसु होदि पडिपुच्छा ।।१७५।।

गहिदुवकरणे विणए वंदनसुत्तत्थपुच्छणादीसु ।
गणधरवसभादीणं अणुवुत्ति छंदणिच्छाए ।।१७६।।

गुरुसाहम्मियदव्वं पुत्थयमण्णं च गेण्हिदुं इच्छे ।
तेसिं विणयेण पुणो णिमंतणा होइ कायव्वा ।।१७७।।

उवसंपया य रोया पंचविहा जिरावरेहि रिगद्दिट्ठा ।
विरगये खेत्ते मग्गे सुहदुक्खे चेव सुत्ते य ।।१७८।।

पाहुणविरगउवचारो तेसिं चावासभूमिसंपुच्छा ।
दाणाणुवत्तणादि विणये उवसंपया णेया ।।१७९।।

सजम तव गुण सीला जमणियमादी य जम्हि खेत्तम्हि ।
वड्ढंति तम्हि वासो खेत्ते उवसपया णेया ।।१८०।।

पाहुणवत्थव्वाण अण्णोण्णागमणगमणसुहपुच्छा ।
उवसंपदा य मग्गे संजमतवणाणजोगजुत्ताणं ।।१८१।।

सुहदुक्खे उवयारो वसही आहार भेसजादीहिं ।
तुम्हं अहंति वयणं सुहदुक्खुवसंपया णेया ।।१८२।।

उवसंपया य सुत्ते तिविहा सुत्तत्थतदुभया चेव ।
एक्केक्का वि य तिविहा लोइय वदे तहा समये ।।१८३।।

कोई सव्वसमत्थो सगुरुसुदं सव्वमागमित्ताणं ।
विरगएणुवक्कमित्ता पुच्छइ सगुरुं पयत्तेण ।।१८४।।

तुज्झं पादपसाएण अण्णमिच्छामि गंतुमायदणं ।
तिण्णि व पच व छा वा पुच्छावो एत्थ सो कुणइ ।।१८५।।

एवं आपुच्छित्ता सगवरगुरुणा विसज्जिओ संतो ।
अप्पचउत्थो तदिओ विदिओ वा सो तदो णीदी ।।१८६।।

गिहिदत्थेय विहारो विदिओ गिहिदत्थसंसिदो चेव ।
एत्तो तदियविहारो णाणुण्णादो जिणवरेहिं ।।१८७।।

तवसुत्त सत्तएगत्तभाव संघडणधिदिसमग्गो य ।
पविआ आगमबलिओ एयबिहारी अणुण्णादो ।।१८८।।

सच्छंदगदागदी सयरगरिगसयरणादाणभिवरगवोसरणे ।
सच्छंदजंपरोचि य मा मे सत्तू वि एगागी ।।१८९।।

गुरुपरिवादो सुदवुच्छेदो तित्थस्स मइलणा जडदा ।
भिंभलकुसील पासत्थदा य उस्सारकप्पम्हि ॥१६०॥

कंटयखुण्णपडिणियसाणागोणादिसप्पमेच्छेहिं ।
पावइ आदवि त्ति विसेण व विसूइया चेव ॥१६१॥

गारविओ गिद्धीओ माइल्लो अलसलुद्धणिद्धम्मो ।
गच्छे वि संवसंतो णेच्छइ संघाडयं मंदो ॥१६२॥

आणा अणवत्था वि य मिच्छत्ताराहणादणासो य ।
संजम वि य एदे दु णिकाइया ठाणा ॥१६३॥

तत्थ ण कप्पइ वासो जत्थ इमे पंच आधारा ।
आइरिय उवज्झाया पवत्तथेरा गणधरा य ॥१६४॥

सिस्साणुग्गहकुसलो धम्मुवदेसो य संघवट्टवओ ।
मज्जादुवदेसो वि य गणपरिरक्खो मुणेयव्वो ॥१६५॥

जं जेणंतर लद्धं सच्चित्ताचित्तमिस्सयं दव्वं ।
तस्स य सो आइरियो अरिहदि एवं गुणो सो वि ॥१६६॥

संगहणुग्गहकुसलो सुत्तत्थविसारओ पहियकित्ती ।
किरिआचरण सुजुत्तो गाहुय आदेज्ज वयणो य ॥१६७॥

गंभीरो दुद्धरिसो सूरो धम्मप्पहावणासीलो ।
खिदिससिसायरसरिसो कमेण तं सो दु संपत्तो ॥१६८॥

आएसे एज्जंतं सहसा दट्ठूण संजदा सव्वे ।
वच्छल्लाणासंगहपणमणहेदुं समुट्ठंति ॥१६९॥

पच्चुग्गमणं किच्चा सत्तपदं अण्णमण्णपणमं च ।
पाहुणकरणीयकदे तिरयणसंपुच्छणं कुज्जा ॥२००॥

आएस्स तिरत्तं णियमा संघाडओ दु दायव्वो ।
किरियासंथारादिसु सहवासपरिक्खवणहेऊं ॥२०१॥

आगंतुय वत्थव्वा पडिलेहाहि तु अण्णमण्णाहि ।
अणोण्णकरणचरणं जाणणहेदुं परिक्खंति ॥२०२॥

आवसयठाणादिसु पडिलेहणवयणगहणणिक्खेवे ।
सज्झाएय विहारे भिक्खग्गहणे परिच्छंति ॥२०३॥

विस्समिदो तद्दिवसं मीमंसित्ता णिवेदयदि गणिणे ।
विणएणागमकज्जं विदिए तदिए व दिवसम्मि ॥२०४॥

आगंतुकणामकुलं गुरुदिक्खामाण वरिसगवासं च ।
आगमणदिसासिक्खापडिकमणादीय गुरुपुच्छा ॥२०५॥

जदि चरणकरणसुद्धो णिच्चुज्जुत्तो विणीद मेधावी ।
तस्सिठ्ठं कधिदव्वं सगसुदसत्तीए भणिऊण ॥२०६॥

जदि इदरो सो जोग्गो छेदमुवट्ठावणं च कादव्वं ।
जदि णेच्छदि छंडेज्जो अह गेण्हदि सोवि छेदरिहो ॥२०७॥

एवंविधिणुववण्णो एवंविधिणेव सो वि संगहिदो ।
सुत्तत्थं सिक्खंतो एवं कुज्जा पयत्तेण ॥२०८॥

पडिलेहिऊण सव्वं खेत्तं च काल भावे य ।
विणयउवयार जुत्तेणज्झेदव्वं पयत्तेण ॥२०९॥

दव्वादिवदिक्कमण करेदि सुत्तत्थसिक्खलोहेण ।
असमाहिमसज्झायं कलहं वाहि वियोग च ॥२१०॥

संथारावासयाणं पाणीलेहाहि दंसणुज्जोवं ।
जत्तेणुभये काले पडिलेहा होदि कायव्वा ॥२११॥

उब्भामगादिगमणे उत्तरजोगे सकज्ज आरंभे ।
इच्छाकारणिजुत्तो आपुच्छा होइ कायव्वा ॥२१२॥

गच्छे वेज्जावच्चं गिलाणगुरुबालबुड्ढसेहाणं ।
जह जोगं कादव्वं सगसत्तीए पयत्तेण ॥२१३॥

दिवसियरादियपक्खियचाउम्मासियवरिस किरियासु ।
रिसिदेव वंदणादिसु सहजोगी होदि णायव्वो ॥२१४॥

मणवयणकायजोगेणुप्पण्णवराध जस्स गच्छम्मि ।
मिच्छाकारं किच्चा णियत्तणं होदि कायव्वं ॥२१५॥

अज्जागमणे काले ण अत्थिदव्वं तधेव एक्केण ।
ताहि पुण सल्लावो ण य कायव्वो अकज्जेण ॥२१६॥

तासिं पुण पुच्छावो एक्किस्से ण य कहिज्ज एक्को दु ।
गणिणी पुरओ किच्चा जदि पुच्छइ तो कहेदव्वं ॥२१७॥

तरुणो तरुणीए सह कहा व सल्लावणं ज जदि कुज्जा ।
आणाकोवादीया पचवि दोसा कदा तेण ॥२१८॥

णो कप्पदि विरदाणं विरदीण मुवासयम्हि चिट्ठेदुं ।
तत्थ णिसेज्ज उवट्टणसज्झायाहारभिक्खवोसरणं ॥२१९॥

थेरं चिरपव्वइयं आयरियं बहुसुदं च तवसिं वा ।
ण गणेदि काममलिणो कुलमवि समणो विणासेदि ॥२२०॥

कण्णं विधवं अन्तेउरियं तह सइरिणी सलिंगं वा ।
अचिरेणल्लियमाणो अववादं तत्थ पप्पोदि ॥२२१॥

पियधम्मो दिढधम्मो संविग्गो वज्जभीरु परिसुद्धो ।
सगहणुग्गहकुसलो सददं सारक्खणाजुत्तो ॥२२२॥

गंभीरो दुद्धरिसो मिदवादी अप्पकोदुहल्लो य ।
चिरपव्वइदो गिहिदत्थो अज्जाणं गणधरो होदि ॥२२३॥

एव गुणवदिरित्तो जदि गणधारित्तं करेदि अज्जाणं ।
चत्तारि कालगा से गच्छादिविराहणा होज्ज ॥२२४॥

आयंबिल णिव्वियडी एयट्ठाणं तहेव खमणं च ।
एक्केक्क एकमास करेदि जदि कालगं एक्कं ॥२२५॥

किं बहुणा भणिदेण दु जा इच्छा गणधरस्स सा सव्वा ।
कादव्वा तेण भवे एसेव विधि दु सेसाणं ॥२२६॥

अण्णोण्णणुकूलाओ अण्णोण्णहिरक्खणाभिजुत्ताओ ।
गयरोसवेरमाया सलज्जमज्जादाकिरियाओ ॥२२७॥

अज्झयणे परियट्टे सवणे तहाणुपेहाए ।
तवविणयसंजमेसु य अविरहिदुवओगजुत्ताओ ॥२२८॥

अविकारवत्थवेसा जल्लमलविलित्तचत्तदेहाओ ।
धम्मकुलकित्तिदिक्खापडिरुववविसुद्धचरियाओ ॥२२९॥

अगिहत्थमिस्सणिलये असण्णिवाए विसुद्धसंचारे ।
दो तिण्णिव अज्जाओ बहुगीओ वा सहत्थंति ॥२३०॥

ण य परगेहमकज्जे गच्छे कज्जे अवस्सगणिज्जे ।
गणिणीमापुच्छित्ता संघाडेणेव गच्छेज्ज ॥२३१॥

रोदणण्हावणभोयणपयणं सुत्तं च छव्विहारंभे ।
विरदाण पादमक्खणधोवणगेयं च ण वि कुज्जा ॥२३२॥

पाणियरणयणं छेणं गिहबोहरणं च गेहसारमणं ।
कुड्डावलिप्पाणं कुड्डविदे एदंतु छव्विहारंभो ॥२३३॥

तिण्णिव पंच व सत्त व अज्जाओ अण्णमण्णरक्खाओ ।
थेरीहिं संहतरिदा भिक्खाय समोदरंति सदा ॥२३४॥

पंच छ सत्त हत्थे सूरी अज्झावगो य साधु य ।
परिहरिऊणज्जाओ गवासणेणेव वंदंति ॥२३५॥

एवं विधाणचरियं चरंति जे साधवो व अज्जाओ ।
ते जगपुज्जं कित्तिं सुहं च लद्धूण सिज्झंति ॥२३६॥

एवं सामाचारो बहुभेदो वण्णिदो समासेण ।
वित्थारसमावण्णो वित्थरिदव्वो बुहजणेहिं ॥२३७॥

तिहुयणमंदरमहिदे तिलोयबुद्धे तिलोगमत्थत्थे ।
तेलोक्कविदिदवीरे तिविहेण च पणिवदे सिद्धे ॥२३८॥

दंसणणाणचरित्ते तव्वे विरियाचरम्हि पंचविहे ।
वोच्छ अदिचोरहं कारिदे अणुमोदिदे अ कदे ॥२३९॥

दंसणचरणविसुद्धी अट्ठविहा जिणवरेंहि णिद्दिट्ठा ।
दंसणमलसोहणयं वोच्छं तं सुणह एयमणा ॥२४०॥

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढदिट्ठी य ।
उवगूहणठिदिकरणं वच्छल्ल पभावणा य ते अट्ठ ॥२४१॥

मग्गो मग्गफलंति य दुविहं जिणसासणे समक्खादं ।
मग्गो खलु सम्मत्तं मग्गफलं होई णिव्वाणं ॥२४२॥

भूयत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
आसवसंवरणिज्जर बंधो मोक्खो य सम्मत्तं ॥२४३॥

दुविहा य होंति जीवा संसारत्था य णिव्वुदा चेव ।
छद्धा संसारत्था सिद्धगदा णिव्वुदा जीवा ॥२४४॥

पुढवी आऊ तेऊ वाऊ य वणप्फदी तहा य तसा ।
छत्तीसविहा पुढवी तिस्से भेदा इमे णेया ॥२४५॥

पुढवी पुढवीकाओ पुढवीकाइव पुढविजीवो य ।
सहारणा य मुक्को सरीरगहिओ भवंतरिदो ॥२४६॥

पुढवी य बालुगा सक्करा य उवले सिला लोणे य ।
अय तवं तउय सीसय रुप्पसुवण्णो य वइरे य ॥२४७॥

हरिदाले हिंगुलये मणोसिला सस्संग जणपवाले य ।
अब्भपडलब्भवालु य बादरकाया मणिविधीया ॥२४८॥

गोमज्झगे य रुजगे अंके फलिहे य लोहिदंके य ।
चंदप्पभे य वेरुलिये जलकंते सूरकंते य ॥२४९॥

गेरुग चंदण बग्गय वयमोए तह मसारगल्लो य ।
ते जाण पुढवि जीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा ।।२५०।।

ओसायहिमगमहिगा हरदणु सुद्धोदगे घणुदगे य ।
ते जाण तेउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा ।।२५१।।

इंगाल जाल अच्ची मुम्मुर सुद्धागणी य अगणी य ।
ते जाण तेउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा ।।२५२।।

वादुब्भासो उक्कलि मंडलि गुंजा महाघण तणूय ।
ते जाण वाउजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा ।।२५३।।

मूलग्गपोरबीजा कंदा तह खंदबीजबीजरुहा ।
संमुच्छिमा य भणिया पत्तेयाणंतकाया य ।।२५४।।

कंदा मूला छल्ली खंधं पत्त पवाल पुप्फफलं ।
गुच्छा गुम्मा वल्ली तणाणि तह पव्व काया य ।।२५५।।

जलकंजियाण मज्झे इट्टय धम्मीय सिंगमज्झे य ।
सेवाल पणग केणुग कवगो कुहणो जहाकमं होंति ।।२५६।।

सेवालपणग कवगो कुहणो य बादरा काया ।
सव्वे वि सुहुमकाया सव्वत्थ जलत्थलागासे ।।२५७।।

गूढसिरसंधिपव्वं समभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं ।
साहारणं सरीरं तव्विवरीयं च पत्तेयं ।।२५८।।

बीजे जोणीभूदे जीवो उव्वकमदि सो व अण्णो वा ।
जा वि य लसुणादीया पत्तेया पढमादाए ते ।।२५९।।

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं ।।२६०।।

फली वणप्फदी णेया रुक्ख पुप्फफलं गदो ।
ओसही फलपक्कंता गुम्मा वल्ली च वीरुदा ।।२६१।।

होदि वणप्फदि वल्ली रुक्ख तणादी तहेव एइंदी ।
ते जाण हरितजीवा जाणित्ता परिहरेदव्वा ।।२६२।।

दुविधा तसा य उत्ता विगला सगलेंदिया मुणेयव्वा ।
बितिचउरिंदिय विगला सेसा सगलिंदिया जीवा ।।२६३।।

संखो गोभी भमरादिया दु विकलेंदिया मुणेयव्वा ।
सकलिंदिया य जलथलखचरा सुरणारयणरा य ।।२६४।।

बावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडिसदसहस्साइं ।
णेया पुढविदगागणिवाउक्कायाण परिसंखा ।।२६५।।

कोडिसदसहस्साइं सत्तट्ठ णव य अट्ठवीस चं ।
बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय हरिदकायाणं ।।२६६।।

अद्धत्तेरस बारस दसयं कूवकोडिसदसहस्साइं ।
जलचरपक्खिचउप्पयचर परिसप्पेसु णव होंति ।।२६७।।

छव्वीसं पणवीसं चउदस कुलकोडिसदसहस्साइं ।
सुरणेरइयणराणं जहाकमं होइ णायव्वा ।।२६८।।

एसा य कोडिकोडी णवणवदी कोडिसदसहस्साइं ।
पण्णं कोडिसहस्सा सव्वगीणं कुलाण तु ।।२६९।।

णिच्चिदरधादुसत्त य तरु दस विगलिंदिये सुछच्चेव ।
सुरणिरयतिरिय चउरो चउदस मणुएसु सदसहस्सा ।।२७०।।

तसथावरा य दुविहा जोग कसाय इंदियविधीहिं ।
बहुविध भव्वाभव्वा एस गदी जीवणिद्दे से ।।२७१।।

णाणं पचविह पि अ अण्णाणतिगं च सागरुवओगो ।
चदु दसणमणगारो सव्वे तल्लक्खणा जीवा ।।२७२।।

कुलजोणिमग्गणावि य णायव्वा चेव सव्वजीवाणं ।
णाऊण सव्वजीवे णिस्संका होदि कादव्वा ।।२७३।।

एवं जीवविभागा बहुभेदा वण्णिदा समासेण ।
एवंविध भावरहिदा अजीवदव्वेदि विण्णेया ।।२७४।।

अज्जीवा वि य दुविहा रूवारूवा य रूविणो चदुणा ।
खंधा य खंधदेसा खंदपदेसा अणु य तहा ।।२७५।।

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसोत्ति ।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी ।।२७६।।

खंधा देसपदेसा जाव अणुत्तोवि पोग्गला रूवी ।
वण्णादिमंत जीवेण होंति बंधा जहाजोग्गं ।।२७७।।

पुढवी जल च छाया चउरिंदिय विसयकम्मपरिमाणू ।
छव्विहभेयं भणियं पुग्गलदव्वं जिणवरेंहि ।।२७८।।

बाद-बादरबादर बादरसुहमं च सुहुमथूलं च ।
सुहुमं सुहुमसुहुमं धरादियं होदि छब्भेयं ।।२७९।।

धम्माधम्मागासा अरूविणो चेव होंति तह कालो ।
गदिठाणोग्गह होइ य कमसो परिवट्टणगुणो य ।।२८०।।

ते पुणधम्माधम्मागासा य विणो य तह कालो ।
खंधा देसपदेसा अणुत्तिवि य पोग्गला रूवी ।।२८१।।

गदिठाणोग्गाहणकारणाणि कमसो दु वत्तणगुणो य ।
रूवरसगंधफासादिकारणा कम्मबंधस्स ।।२८२।।

सम्मत्तेण सुदेण य विरदीए कसायणिग्गहगुणेंहि ।
जो परिणदो स पुण्णो तव्विवरीदेण पावं तु ।।२८३।।

पुण्णस्सासवभूदा अणुकंपा सुद्ध एव उवओगो ।
विवरीदं पावस्स दु आसवहेऊं बियाणाहि ।।२८४।।

णेहोउप्पिदगत्तस्स रेणवो लग्गदे जधा अंगे ।
तह रागदोससिणे होल्लिदस्स कम्मं मुणेयव्वो ।।२८५।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति ।
अरिहंतवुत्तअत्थेसु विमोहो होइ मिच्छत्तं ॥२८६॥
अविरमणं हिंसादि पंचवि दोसा हवंति णादव्वा ।
कोधादी य कसाया जोगो जीवस्स चेट्ठा दु ॥२८७॥
मिच्छत्तासवदारं रुंभइ सम्मत्तदिढकवाडेण ।
हिंसादिदुवाराणि वि दढवदफलिहेहिं रुंभन्ति ॥२८८॥
आसवदि जं तु कम्मं कोधादीहिं तु अपदजीवाणं ।
तप्पडिवक्खेहिं विदु रुंभंति तमप्पमत्ता दु ॥२८९॥
मिच्छत्ताविरदीहिं य कसायजोगेहिं जं च आसवदि ।
दंसणविरमणणिग्गहणिरोधणेहिं तु णासवदि ॥२९०॥
सं जोगे जुत्तो जो तवसा चेट्ठदे अणेगविधं ।
सो कम्मणिज्जराए विउलाए वट्टदे जीवो ॥२९१॥
जह धाऊ धम्मंतो सुज्झदि सो अग्गिणा दु संतत्तो ।
तवसा तथा विसुज्झदि जीवो कम्मेहिं कणयं व ॥२९२॥
जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागं कसायदो कुणदि ।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदि कारणं णत्थि ॥२९३॥
पुव्वकदकम्मसडणं तु णिज्जरा सा पुणो हवे दुविहा ।
पढमा विवागजादा विदिया अविवागजादा य ॥२९४॥
कालेण उवाएण य पच्चंति जहा वणप्फदिफलाणि ।
तध कालेण तवेण य पच्चंति कदाणि कम्माणि ॥२९५॥
रागो बंधइ कम्मं मुच्चइ जीवो विरागसंपण्णो ।
एसो जिणोवदेसो समासदो बंधमोक्खाणं ॥२९६॥
अरहंतसिद्धसाहूसुदभत्ती धम्मम्हि जा हि खलु चेट्ठा ।
अणुगमणं य गुरूणं पसत्थरागोत्ति उच्चदि सो ॥२९७॥

एवं जीवविभागा बहुभेदा वण्णिदा समासेण ।
एवविध भावरहिदा अजीवदव्वेदि विण्णेया ।।२७४।।

अज्जीवा वि य दुविहा रूवारूवा य रूविणो चदुणा ।
खंधा य खंधदेसा खंदपदेसा अणु य तहा ।।२७५।।

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसोत्ति ।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी ।।२७६।।

खंधा देसपदेसा जाव अणुत्तीवि पोग्गला रूवी ।
वण्णादिमंत जीवेण होंति बंधा जहाजोग्गं ।।२७७।।

पुढवी जल च छाया चउरिंदिय विसयकम्मपरिमाणू ।
छव्विहभेयं भणियं पुग्गलदव्वं जिणवरेहिं ।।२७८।।

बाद-बादरबादर बादरसुहमं च सुहुमथूलं च ।
सुहुमं सुहुमसुहुमं धरादियं होदि छब्भेयं ।।२७९।।

धम्माधम्मागासा अरूविणो चेव होंति तह कालो ।
गदिठाणोग्गह होइ य सो परिवट्ठणगुणो य ।।२८०।।

ते पुणधम्माधम्मागासा य विणो य तह कालो ।
खंधा देसपदेसा अणुत्तिवि य पोग्गला रूवी ।।२८१।।

गदिठाणोग्गाहणकारणाणि कमसो दु वत्तणगुणो य ।
रूवरसगंधफासादिकारणा कम्मबंधस्स ।।२८२।।

सम्मत्तेण सुदेण य विरदीए कसायणिग्गहगुणेहिं ।
जो परिणदो स पुण्णो तव्विवरीदेण पावं तु ।।२८३।।

पुण्णस्सासवभूदा अणुकंपा सुद्ध एव उवओगो ।
विवरीदं पावस्स दु आसवहेऊं बियाणाहि ।।२८४।।

णेहोउप्पिदगत्तस्स रेणवो लग्गदे जधा अंगे ।
तह रागदोससिणे होल्लिदस्स कम्मं मुणेयव्वो ।।२८५।।

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति ।
अरिहंतवुत्तअत्थेसु विमोहो होइ मिच्छत्तं ।।२८६।।

अविरमणं हिंसादि पंचवि दोसा हवंति णादव्वा ।
कोधादी य कसाया जोगो जीवस्स चेट्ठा दु ।।२८७।।

मिच्छत्तासवदारं रुंभइ सम्मत्तदिढकवाडेण ।
हिंसादिदुवाराणि वि दढवदफलिहेहिं रुंभन्ति ।।२८८।।

आसवदि जं तु कम्मं कोधादीहिं तु अपदजीवाणं ।
तप्पडिवक्खेहिं विदु रुंभंति तमप्पमत्ता दु ।।२८९।।

मिच्छत्ताविरदीहिं य कसायजोगेहिं जं च आसवदि ।
दंसणविरमणणिग्गहणिरोधणेहिं तु णासवदि ।।२९०।।

सं जोगे जुत्तो जो तवसा चेट्ठदे अणेगविधं ।
सो कम्मणिज्जराए विउलाए वट्टदे जीवो ।।२९१।।

जह धाऊ धम्मंतो सुज्झदि सो अग्गिणा दु संतत्तो ।
तवसा तधा विसुज्झदि जीवो कम्मेहिं कणयं व ।।२९२।।

जोगा पयडिपदेसा ठिदि भागं कसायदो कुणदि ।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदि कारणं णत्थि ।।२९३।।

पुव्वकदकम्मसडणं तु णिज्जरा सा पुणो हवे दुविहा ।
पढमा विवागजादा विदिया अविवागजादा य ।।२९४।।

कालेण उवाएण य पच्चंति जहा वणप्फदिफलाणि ।
तध कालेण तवेण य पच्चंति कदाणि कम्माणि ।।२९५।।

रागो बंधइ कम्मं मुच्चइ जीवो विरागसंपण्णो ।
एसो जिणोवदेसो समासदो बंधमोक्खाणं ।।२९६।।

अरहंतसिद्धसाहूसुदभत्ती धम्मम्हि जा हि खलु चेट्ठा ।
अणुगमणं य गुरूणं पसत्थरागोत्ति उच्चदि सो ।।२९७।।

अरहंतसिद्धचेंदियपवयणगणणाणभत्तिसंपुण्णो ।
वज्झदि बहुो सो पुण्णं हु सो कम्मक्खयं कुणदि ॥२९८॥

विसयकसायओगाढो दुस्सुदिदुच्चित्तदुठ्ठगोठ्ठिजुदो ।
उग्गो उम्मग्गपरो उवओगो जस्स सो असुहो ॥२९९॥

सुविदिदपदत्थजुत्तो संजमतवसंजदो विगदरागो ।
समणो समसुहदुक्खो भणिदो सुद्धोवओगोत्ति ॥३००॥

जं खलु जिणोवदिट्ठं तमेव तत्थमिदि भावदो गहणं ।
सम्मद्दंसणभावो तं विवरीदं च मिच्चत्तं ॥३०१॥

णव य पदत्थ एदे जिणदिठ्ठा वण्णिदा मए तच्चा ।
एत्थ भवे जा संका दंसणघादी हरदि एसो ॥३०२॥

तिविहा य होइ कखा इहपरलोए तहा कुधम्मे य ।
तिविहं पि जो ण कुज्जा दंसणसुद्धि उवगदो सो ॥३०३॥

बलदेवचक्कवट्टीसेट्ठीरायत्तणादि अहिलासो ।
इहपरलोगे देवत्तपत्थणा दंसणाभिघादी सो ॥३०४॥

रत्तवडचरगतावमपरिवज्जादीणमण्णतित्थीणं ।
धम्मम्मि य अहिलासो कुधम्मकखा हवदि एसा ॥३०५॥

विदिगिंच्छा वि य दुविहा दव्वे भावे य होइ णायव्वा ।
उच्चारादिसु दव्वे खुदादिए भावविदिगिंछा ॥३०६॥

उच्चार पस्सवणं खेलं सिघाणयं च चमस्ठी ।
पूयं च मससोणिदवंत जल्लादि साधूण ॥३०७॥

छुहतण्हा सीदुण्हा दंसमसयमचेलभावो य ।
अरदि रदि इत्थि चरिया णिसीधिया सेज्ज अक्कोसो ॥३०८॥

वधयाचन अलाहो रोग तणप्फास जल्लसक्कारो ।
तह चेव पण्णपरिसह अण्णाणमदंसणं खमणं ॥६०९॥

लोइयवेदियसामाइएसु तह अण्णदेवमूढत्तं ।
णिच्चा दंसणघादी ण य कायव्वं ससत्तीए ॥३१०॥

कोटिल्लमासुरक्खा भारहरामायणादि जे धम्मा ।
होज्जु व तेसु विसुत्ती लोइयमूढो हवदि एसो ॥३११॥

ऋग्वेदसामवेदा वागणुवागादिवेदसत्थाइं ।
तुच्छाणि ताणि गेण्हइ वेदियमूढो हवदि एसो ॥३१२॥

रत्तवड चरगतावसपरिहत्तादीय अण्ण पासंडा ।
संसार तारगत्तिय जदि गेण्हदि समयमूढो सो ॥३१३॥

ईसरबंभाविण्हू अज्जाखंदादिया य जे देवा ।
ते देवभावहीणा देवत्तणभावणे मूढो ॥३१४॥

दंसणचरणविवण्णो जीवे दट्ठूण धम्मबुद्धीए ।
उवगूहणं करेत्तो दंसणसुद्धो हवदि एसो ॥३१५॥

दंसणचरणुवभट्ठे जीवे दठ्ठूण धम्मबुद्धीए ।
हिदमिदमवगूहिय ते खिप्पं तत्तो णियत्तेई ॥३१६॥

चादुव्वण्णे संघे चदुगदि संसारणित्थरणभूदे ।
वच्छल्लं कादव्वं वच्छे गावी जहा गिद्धी ॥३१७॥

धम्मकहाकहणेण य बाहिरजोगेहिं चावि अणवज्जे ।
धम्मो पहाविदव्वो जीवेसु दयाणुकंपाए ॥३१८॥

संवेगो वेरग्गो णिंदा गरिहा य उवसमो भत्ती ।
अणुकंपा वच्छल्ला गुणा य सम्मत्तजुत्तस्स ॥३१९॥

दंसणचरणो एसो णाणाचारं च वोच्छमट्ठविहं ।
अठ्ठविहकम्ममुक्को जेण य जीवो लहइ सिद्धि ॥३२०॥

जेणं तच्चं विबुज्झेज्ज जेणं चित्तं णिरुज्झदि ।
जेण अत्ता विसुज्झेज्ज तं णाणं जिणसासणे ॥३२१॥

जेण रागा विरज्जेज्ज जेण सेएसु रज्जदि ।
जेण मित्ती पभावेज्ज तं णाणं जिणसासणे ।।३२२।।

काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए णाणाचारो दु अट्ठविहो ।।३२३।।

पादोसियवेरत्तियगोसग्गियकालमेव गेण्हित्ता ।
उभये कालम्हि पुणो सज्झाओ होदि कायव्वो ।।३२४।।

सज्झाये पट्ठवणे जंघच्छायं वियाण सत्तपयं ।
पुव्वण्हे अवरण्हे तावदियं चेव णिट्ठवणे ।।३२५।।

आसाढे सत्तपदे आउड्ढपदे य पुस्समासम्हि ।
सत्तंगुल ड्ढी मासे मासे तदिदराम्हि ।।३२६।।

आसाढे दुपदा छाया पुस से चदुप्पदा ।
वड्ढदे हीयदे चावि मासे मासे दुअंगुला ।।३२७।।

ण त्तपंचगाहापरिमाणं दिसिविभागसोधीए ।
पुव्वण्हे रण्हे पदोसकाले य सज्झाये ।।३२८।।

दिसिदाह उक्कपडणं विज्जुचडुक्कासणिदधणुग च ।
दुग्गंधसंज्झदुद्दिणचंदग्गह सूरराहुजुज्झं च ।।३२९।।

कलहादि धूमकेदू धरणीकंप च अब्भगज्जं च ।
इच्चेवमाइ बहुगा सज्झाये वज्जिदा दोसा ।।३३०।।

रुहिरादिपूयमसं दव्वे खेत्ते सदहत्थपरिमाणं ।
कोधादिसंकिलेसा भावविसोही पढणकाले ।।३३१।।

सुत्तं गणधरकधिदं तहेव पत्तेय बुद्धि कधिदं च ।
सुदकेवलिणा कधिदं अविण्ण ु धिदं च ।।३३२।।

तं पढिदुमसज्झाये णो कप्पदि विरदइत्थिवग्गस्स ।
एत्तो अण्णो गंथो कप्पदि पढिदु असज्झाए ।।३३३।।

आराहणणिज्जुत्ती मरणविभत्ती य संगहत्थुदिओ ।
पच्चक्खाणावासयधम्मकहाओ य परिसओ ॥३३४॥

उद्देससमुद्देसे अणुणापणए य होति पचेव ।
अंगसुदखंदछेणुव देसा वि य पदविभागो य ॥३३५॥

पलियंकणिसेज्जगदो पडिलेहिय अंजलीकदपणामो ।
सुत्तत्थजोगजुत्तो पढिदव्वो आदसत्तीए ॥३३६॥

सुत्तत्थं जप्पंतो अत्थविसुद्धं च तदुभयविसुद्धं ।
पयदेण य वाचंतो णाणविणीदो हवदि एसो ॥३३७॥

विणयेण सुदमधीदं जदि वि पमादेण होदि विस्सरिदं ।
तमुवट्ठादि परभवे केवलणाणं च आवहदि ॥३३८॥

आयंबिलणिव्वियडी अण्णं वा जस्स होदि कायव्वं ।
तं तस्स करेमाणो उवहाणजुदो हवदि एसो ॥३३९॥

सुत्तत्थं जप्पंतो वायंतो चावि णिज्जराहेदुं ।
आसादणं ण कुज्जा तेण किदं होदि बहुमाणं ॥३४०॥

कुलवयसीलविहीणे सुत्तत्थं सम्ममागमित्ता य ।
कुलवयसीलमहल्ले णिण्हवदोसो दु जप्पंतो ॥३४१॥

विंजणसुद्धं सुत्तं अत्थविसुद्धं च तदुभयविसुद्धं ।
पयदेण य जप्पंतो णाणविसुद्धो हवइ एसो ॥३४२॥

तित्थयरकहियं अत्थं गणहररचिदं यदीहिं अणुचरिदं ।
णिव्वाणहेदुभूदं सुदमहमखिलं पणिवदामि ॥३४३॥

णाणाचारो एसो णाणगुणसमण्णिदो मए उत्तो ।
एत्तो चरणाचारं चरणगुणसमण्णियं वोच्छं ॥३४४॥

पाणिवह मुसावाद अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरदी ।
एस चरित्ताचारो पंचविहो होति णादव्वो ॥३४५॥

एइंयादिपाणा पंचविधावज्जभीरुणा सम्मं ।
ते खलु ण हिंसिदव्वा मणवचिकायेण सव्वत्थ ॥३४६॥

हस्सभयकोहलोहा मणवचिकायेण सव्वकालम्मि ।
मोसं ण य भासिज्झो पच्चयघादी हवदि एसो ॥३४७॥

गामे णयरे रण्णे थूलं सचित्त बहुसपडिवक्खं ।
तिविहेण वज्जिदव्वं अदिण्णगहणं च तण्णिच्चं ॥३४८॥

अचित्तदेवमाणुस तिरिक्खजादं च मेहुणं चदुधा ।
तिविहेण त ण सेवदि णिच्चपि मुणीहि पयदमणो ॥३४९॥

गामं णयरं रण्णं थूलं सचित्त बहुसपडिवक्खं ।
अज्झाथबाहिरत्थं तिविहेण परिग्गहं वज्जे ॥३५०॥

साहंति जं महत्थं आचरिदाणि य जं महल्लेहिं ।
ज च महल्लाणि तदो महव्वयाइं भवे ताइं ॥३५१॥

तेसिं चेव वदाणं रक्खट्ठं रादि भोयण णियत्ति ।
अट्ठ य पवयणमादा य भावणाओ य सव्वाओ ॥३५२॥

तेसिं पंचण्हं पि य ण्हयाणमावज्जणं च संका वा ।
आद विवत्ती य हवे रादी भत्तप्पसगेण ॥३५३॥

पणिधाणजोगजुत्तो पचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु ।
एस चरित्ताचारो अठ्ठविहो होइ णायव्वो ॥३५४॥

पणिधाण पि य दुविहं पसत्थ तह अप्पसत्थं च ।
समिदीसु य गुत्तीसु य पसत्थं सेसमप्पसत्थं तु ॥३५५॥

पणिधाणं पि य दुविहं इंदियणोइंदिय य बोधव्वा ।
सद्दादि इंदियं पुण कोधादिगं भवे इदरं ॥३५६॥

सद्दरसरुवगंधे फासे य मणोहरे य इदरे य ।
जं रागदोसगमणं पंचविहं होइ पणिधाणं ॥३६७॥

णो इंदियपणिधाणं कोहे माणे तहेव मायाए।
लोभे य णोकसाए मणपणिधाणं तु तं वज्जे ॥३५८॥

णिक्खेवणं च गहणं इरिया भासेसणा य समिदीओ।
पदिठावणियं च तहा उच्चारादीणि पंचविहा ॥३५९॥

मग्गुज्जोवुपओगालंवणसुद्धीहिं इरियदो मुणिणो।
सुत्ताणु वीचि भणिया इरियासमिदी पवयणम्मि ॥३६०॥

इरिया वह पडिवण्णेणवलोगंतेण होदि गंजव्वं।
पुरदो जुगतपमाणं सयापमत्तेण संतेण ॥३६१॥

सयडं जाण जुग्गं वा रहो वा एवमादिया।
बहुसो जेण गच्छंति सो मग्गो फासुओ भवे ॥३६२॥

हत्थी अस्सो खरोढो वा गोमहिसगवेलया।
बहुसो जेण गच्छंति सो मग्गो फासुओ भवे ॥३६३॥

इत्थी पुंसा व गच्छंति आदवेण य जं हदं।
सत्थपरिणदो चेव सो मग्गो फासुओ हवे ॥३६४॥

सच्चं असच्चमोसं अलियादीदोसवज्जमणवज्जं।
वदमाणस्सणुवीची भासासमिदी हवे सुद्धा ॥३६५॥

जणवदसम्मदठवणा णामे रूवे पडुच्च सच्चे य।
संभावववहारे भावे ओपम्मसच्चे य ॥३६६॥

जणपदसच्चं जध ओदणादि कुच्चदि य सव्वभासेण।
बहुजणसम्मदमवि होदि जं तु लोए जहा देवी ॥३६७॥

ठवणा ठविदं जह देवदाहि णामं च देवदत्तादि।
उक्कडदरोत्ति वण्णे रुवे सेदो जहा बलागा ॥३६८॥

एइंयादिपाणा पंचविधावज्जभीरुणा सम्मं ।
ते खलु ण हिंसिदव्वा मणवचिकायेण सव्वत्थ ।।३४६।।

हस्सभयकोहलोहा मणवचिकायेण सव्वकालम्मि ।
मोसं ण य भासिज्जो पच्चयघादी हवदि एसो ।।३४७।।

गामे णयरे रण्णे थूलं सचित्त बहुसपडिवक्खं ।
तिविहेण वज्जिदव्वं अदिण्णगहणं च तण्णिच्चं ।।३४८।।

अचित्तदेवमाणुस तिरिक्खजादं च मेहुणं चदुधा ।
तिविहेण तं ण सेवदि णिच्चपि मुणीहि पयदमणो ।।३४९।।

गामं णयरं रण्णं थूल सचित्त बहुसपडिवक्खं ।
अज्झाथबाहिरत्थं तिविहेण परिग्गहं वज्जे ।।३५०।।

साहंति जं महत्थं आचरिदाणि य जं महल्लेहिं ।
जं च महल्लाणि तदो महव्वयाइं भवे ताइं ।।३५१।।

तेसिं चेव वदाणं रक्खट्ठं रादि भोयण णियत्ति ।
अट्ठ य पवयणमादा य भावणाओ य सव्वाओ ।।३५२।।

तेसिं पंचण्हं पि य ण्हयाणमावज्जणं च संका वा ।
आद विवत्ती य हवे रादी भत्तप्पसगेण ।।३५३।।

पणिधाणजोगजुत्तो पचसु समिदीसु तीसु गुत्तीसु ।
एस चरित्ताचारो अठ्ठविहो होइ णायव्वो ।।३५४।।

पणिधाणं पि य दुविहं पसत्थ तह अप्पसत्थं च ।
समिदीसु य गुत्तीसु य पसत्थं सेसमप्पसत्थं तु ।।३५५।।

पणिधाणं पि य दुविहं इंदियणोइंदिय य बोधव्वा ।
सद्दादि इंदियं पुण कोधादिगं भवे इदरं ।।३५६।।

सद्दरसरुवगंधे फासे य मणोहरे य इदरे य ।
जं रागदोसगमणं पंचविहं होइ पणिधाणं ।।३६७।।

रादो दु पमज्जित्ता पण्णसमरण पेक्खिदम्मि आगासे ।
आसंकविसुद्धीए अपहत्थगफासरणं कुज्जा ।।३८१।।

जदि तं हवे असुद्धं विदियं तदियं अणुण्णए साहू ।
लहुए अरिणच्छयारे ण देज्ज साधम्मिए गरुए ।।३८२।।

पदिठवणासमिदी वि य तेणेव कमेव कमेण वण्णिदा होदि ।
वोसरणिज्जं दव्वं तु थंडिले वोसरंतस्स ।।३८३।।

एदाहिं सया जुत्तो समिदीहि महिं विहरमाणो दु ।
हिंसादीहि ण लिप्पइ जीवणिकाआकुले साहू ।।३८४।।

पउमिणिपत्तं व जहा उदएण ण लिप्पदि सिणेहगुणजुत्तं ।
तह समिदीहिं ण लिप्पदि साहू काएसु इरियंतो ।।३८५।।

सरवासेहिं पडते जह दढकवचो ण भिज्जदि सरेहिं ।
तह समिदीहिं ण लिप्पइ साहू काएसु इरियतो ।।३८६।।

जत्थेव चरदि बालो परिहारण्हू वि चरदि तत्थेव ।
वज्झदि पुण सो बालो परिहारण्हू विमुच्चदि सो ।।३८७।।

तम्हा चेट्ठिदुकामो जइया तइया भवाहि तं समिदो ।
समदो हु अण्ण ण दियदि खवेदि पोराणयं कम्मं ।।३८८।।

मणवचकायपवुत्ती भिक्खु सावज्जकज्जसंजुत्ता ।
खिप्पं णिवारयंतो तीहिंदु गुत्तो हवदि एसो ।।३८९।।

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणाहि तं मणोगुत्ती ।
अलियादिणियत्ती वा मोणं वा होदि वचिगुत्ती ।।३९०।।

कायकिरियाणियत्ती काओसग्गो सरीरगुत्ती हि ।
हिंसादिणियत्ती वा सरीरगुत्ती हवदि दिट्ठा ।।३९१।।

खेत्तस्स वई णयरस्स खाइया अहवं होइ पायारो ।
तह पावस्स णिरोहो ताओ गुत्तीओ साहुस्स ।।३९२।।

अण्णं अपेक्खसिद्धं पडुच्चसच्चं जहा हवदि दिग्धं ।
ववहारेण य सच्चं रज्झदि कूरो जहा लोए ॥३६९॥

संभावणा य सच्चं जदि णामेच्छेज्ज एव कुव्वंति ।
जदि सक्को इच्छेज्जो जंबूदीवं हि पल्लत्थे ॥३७०॥

हिंसादिदोसविजुदं सच्चमकप्पिय विभावदो भावं ।
ओवम्मेण दु सच्चं जाणदु पलिदोवमादीया ॥३७१॥

तव्विवरीदं मोसं तं उभयं जत्थ सच्चमोसं तं ।
तव्विवरीदा भासा असच्चमोसा हवदि दिट्ठा ॥३७२॥

आमंतणि आणवणी जायणि पुच्छणी य पण्णवणी ।
पच्चक्खाणी भासा भासा इच्छाणुलोमा य ॥३७३॥

संसयंवयणी य तहा असच्चमोसा य अट्ठमी भासा ।
णवमी अणक्खरगदा असच्चमोसा हवदि एसा ॥३७४॥

सावज्जजोग्गवयणं वज्जंतोऽवज्जभीरु गुणकंखी ।
सावज्जवज्जवयणं णिच्चं भासेज्ज भासंतो ॥३७५॥

उग्गमउप्पादणएसणेहिं पिंडं च उवधि सेज्जं च ।
सोधंतस्स य मुणिणो परिसुज्झइ एसणासमिदी ॥३७६॥

आदाणे णिक्खेवे पडिलेहिय चक्खुणा पमज्जेज्ज ।
दव्वं च दव्वठाणं संजमलद्धीए सो भिक्खू ॥३७७॥

सहसाणाभोइयदुप्पमज्जिद अप्पच्चुवेक्खणा ।
परिहरमाणस्स हवे समिदी आदाणणिक्खेवा ॥३७८॥

वणदाहकिसिमसिकदे थंडिल्लेऽणुपरोधवित्थिण्णे ।
उवगयजंतुविवित्ते उच्चारादि विकिंचिज्जो ॥३७९॥

उच्चारं पस्सवणं खेलं सिंघाणयादियं दव्वं ।
अच्चित्तभूमिदेसे पडिलेहित्ता विसज्जेज्जो ॥३८०॥

रादो दु पमज्जित्ता पण्णसमरण पेक्खिदम्मि आगासे ।
आसंकविसुद्धीए अपहत्थगफासरणं कुज्जा ॥३८१॥

जदि तं हवे असुद्धं विदियं तदियं अणुण्णए साहू ।
लहुए अरिणच्छयारे ण देज्ज साधम्मिए गरुए ॥३८२॥

पदिठवणासमिदी वि य तेणेव कमेव कमेण वण्णिदा होदि ।
वोसरणिज्जं दव्वं तु थंडिले वोसरंतस्स ॥३८३॥

एदाहिं सया जुत्तो समिदीहिं महिं विहरमाणो दु ।
हिंसादीहिं ण लिप्पइ जीवणिकाआकुले साहू ॥३८४॥

पउमिणिपत्तं व जहा उदएण रण लिप्पदि सिणेहगुणजुत्तं ।
तह समिदीहिं रण लिप्पदि साहू काएसु इरियंतो ॥३८५॥

सरवासेहिं पडंते जह दढकवचो रण भिज्जदि सरेहिं ।
तह समिदीहिं ण लिप्पइ साहू काएसु इरियंतो ॥३८६॥

जत्थेव चरदि बालो परिहारण्हू वि चरदि तत्थेव ।
वज्झदि पुण सो बालो परिहारण्हू विमुच्चदि सो ॥३८७॥

तम्हा चेठ्ठिदुकामो जइया तइया भवाहि तं समिदो ।
समदो हु अण्ण रण दियदि खवेदि पोराणयं कम्मं ॥३८८॥

मणवच्चकायपवुत्तो भिक्खु सावज्जकज्जसंजुत्ता ।
खिप्पं णिवारयंतो तीहिंदु गुत्तो हवदि एसो ॥३८९॥

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणाहि तं मणोगुत्ती ।
अलियादिणियत्ती वा मोरणं वा होदि वचिगुत्ती ॥३९०॥

कायकिरियाणियत्ती काओसग्गो सरीरगुत्ती हि ।
हिंसादिणियत्ती वा सरीरगुत्ती हवदि दिट्ठा ॥३९१॥

खेत्तस्स वई णयरस्स खाइया अहवं होइ पायारो ।
तह पावस्स रिणरोहो ताओ गुत्तीओ साहुस्स ॥३९२॥

तम्हा तिविहेण तुमं णिच्चं मणवयण कायजोगेहिं ।
होहिसु समाहिदमई णिरंतरं ज्झाणसज्झाए ।।३९३।।

एदाओ अट्ठपवयणमादाओ णाणदंसणचरित्तं ।
रक्खति सदा मुणिणो मादा पुत्तं थ पयदाओ ।।३९४।।

एसणणिक्खेवादाणिरियासमिदी तहा मणोगुत्ती ।
आलोपपवयणं पि य अहिंसाए भावणा पंच ।।३९५।।

कोहभदलोहहासपइण्णा अणुवीचिभासणं चेव ।
विदियस्स भावणाओ वदस्स पंचेव ता होंति ।।३९६।।

जायण समणुण्णमणा अणण्णभावो वि चत्तपडिसेवी ।
साधम्मि ओवकरणस्सणुवीचीसेवणं चावि ।।३९७।।

महिलालोयणपुव्वरदिसरणसंसत्तवसधिविकहाहिं ।
पणिदरसेहिं य विरदो य भावणा पंच बह्मम्हि ।।३९८।।

अपरिग्गहस्स मुणिणो सद्दफरिसरसरूवगधेसु ।
रोगाद्दोसादीणं परिहारो भावणा पच ।।३९९।।

ण करेदि भावणाभाविदो हु पीलं वदाणसव्वेसिं ।
साधू पासुत्तो समुहदो व किमिदाणि वेदंतो ।।४००।।

एदाहिं भावणाहिं दु तम्हा भावेहि अप्पमत्तो तं ।
अच्छिद्दाणि अखडाणि ते भविस्संति हु वदाणि ।।४०१।।

एस चरित्ताचाहो पंचविहो वण्णिदो मए सम्मं ।
एत्तो य तवाचारं समासदो वण्णयिस्सामि ।।४०२।।

दुविहो य तवाचारो बाहिर अब्भतरो मुणेयव्वो ।
एक्कक्को वि य छद्धा जहाकम्मं तं परुवेमो ।।४०३।।

अणसण मोदरियं रसपरिचाओ य वुत्ति परिसंखा ।
कायस्स वि परिताओ विवित्तसयणासण छट्ठं ।।४०४।।

इत्तिरिय जावजीवं दुविहं पुण अणसणं मुणेयव्वं ।
इत्तिरियं साकंख णिरावकक्खं हवे विदियं ।।४०५।।

छट्ठट्ठमदसमवदुवादसेहिं मासद्धमासखमणाणि ।
कणगेगावलिआदि तवोविहाणाणि णाहारे ।।४०६।।

सिद्धिप्पासादवदसंगस्स करणं चदुव्विधं होदि ।
दव्वे खेत्ते काले भावे य पडुच्च आणुपुव्वीए ।।४०७।।

भत्तपइण्णाइंगिणिपाउवगमणाणि जाणि मरणाणि ।
अण्णे वि एवमादी बोधव्वा णिरवकंखाणि ।।४०८।।

बत्तीसा किर कवला पुरिसस्स दु होदि पयदि आहारो ।
चऐक्कवलादिहिं तत्तो ऊणियगहणे उमोदरिय ।।४०९।।

धम्मावासयजोगे णाणादीये उवग्गहं कुणदि ।
ण य इदयप्पदोसयरी उम्मोदरितवोवुत्ती ।।४१०।।

चत्तारि महादियडीओ होंति णवणीदमज्जमासमहू ।
कंखापसंगदप्पासंजमकारीओ एदाओ ।।४११।।

आणाभि खिणा वज्जभीरुणा तवसमाधि कामेण ।
ताओ जावज्जीवं णिज्जूडाओ पुरा चेव ।।४१२।।

खीरदहिसप्पितेलं गुडलवणाणं च जं परिच्चयणं ।
तित्तकडुकसायंबिलमधुररसाणं च जं चयणं ।।४१३।।

गोयार पमाणदायगभायणणाणाविधाण जं गहणं ।
तह एसणस्स गहणं विविधस्स य वुत्तिपरिसंखा ।।४१४।।

ठाणसयणासणेहिं य विविहेहिं य उग्गहेहिं अणुवीची ।
कायस्स य परिताओ कायकिलेसो हवदि ऐसो ।।४१५।।

तेरिक्खय माणुस्सिय सविगारियदेविगेहिं संसत्ते ।
वज्जेंति अप्पमत्ता णिलस सयणासणट्ठाणे ।।४१६।।

सो णाम बाहिरतवो जेण मणोदुक्कडं ण उट्ठेदि ।
जेण य सड्ढा जायदि जेण य जोगा ण हायंति ॥४१७॥

एसो दु बाहिरतवो बाहिरजणपागदो परमघोरो ।
अब्भंतरजणणादं वोच्छं अब्भंतरं वितवं ॥४१८॥

पायच्छित्तं विणयं वेज्जावच्चं तहेव सज्झायं ।
ज्झाणं च विउस्सग्गो अब्भंतरगो तवो एसो ॥४१९॥

पायच्छित्तं ति तवो जेण विसुज्झदि हु पुव्वकयपावं ।
पायच्छित्तं पत्तो त्ति तेण वुत्तं दसविहं तु ॥४२०॥

आलोयणपडिकमणं उभयविवेगो तहा विउस्सग्गो ।
तव छेदो मूलं वि य परिहारो चेव सद्दहणा ॥४२१॥

पोराणकम्मखवणं खिवण णिज्जरणसोधणं धुवणं ।
पुंछणमुच्छिवणंछिदणंति पायच्छित्तस्स णामाणि ॥४२२॥

पोराणकम्मखवणं खिवणं णिज्जरणसोधणं धुवणं ।
पुंछणमुच्छिवणंछिदणंति पायच्छित्तस्स णामाणि ॥४२३॥

दंसणणाणे विणओ चरित्ततवओवचरिओ विणओ ।
पंचविहो खलु विणओ पंचमगइणायगो भणिओ ॥४२४॥

उवगूहणादिआ पुव्वुत्ता तह भत्तिआदिआ य गुणा ।
संकादिवज्जणं पि य दंसणविणओ समासेण ॥४२५॥

जे अत्थपज्जया खलु उवदिट्ठा जिणवरेहिं सुदणाणे ।
ते तह रोचेदि णरो दंसणविणओ हवदि एसो ॥४२६॥

काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे ।
वंजण अत्थतदुभए विणओ णाणम्हि अट्ठविहो ॥४२७॥

णाणं सिक्खदि णाणं गुणेदि णाणं परस्स उवदिसदि ।
णाणेण कुणदि णायं णाणविणीदो हवदि एसो ॥४२८॥

इंदियकसायपणिधाणं पि य गुत्तीओ चेव समिदीओ ।
एसो चरित्तविणओ समासदो होइ णायव्वो ॥४२९॥

पोराणयकम्मरयं चरिया रित्तं करेदि यदमाणो ।
णवकम्मं ण ण बज्झदि चरित्तविणओ हवदि एसो ॥४३०॥

भत्ती तवोधियम्हि य तवम्हि य अहीलणा य सेसाणं ।
एसो तवम्हि विणओ जहुत्त चारित्तसाहुस्स ॥४३१॥

अवणेदि तवेण तमं उवणेदि य मोक्खमग्गमप्पाणं ।
तवविणय णियमिद मदी सो तवविणओत्ति णादव्वे ॥४३२॥

काइयवाइयमाणसिओत्ति य तिविहो दु पंचमो विणओ ।
सो पुण सव्वो दुविहो पच्चक्खो तह परोक्खो य ॥४३३॥

अब्भुट्ठाणं किदिअम्म णवण अंजली य मुंडाणं ।
पच्चुग्गच्छणमेत्ते पच्छिदस्सणुसाधणं चेव ॥४३४॥

णीचं ठाणं णीचं गमण णीचं च आसणं सयणं ।
आसणदाणं उवगरणदाणमोगासदाणं च ॥४३५॥

पडिरुवकायसंफासणदापडिरुवकालकिरिया य ।
पेसणकरणं संथरकरणं उवकरणपडिलिहणं ॥४३६॥

इच्चेवमादिओ जो उवयारो कीरदे सरीरेण ।
एसो काइयविणओ जहारिहं साहुवग्गस्स ॥४३७॥

पूयावयणं हिदभासणं अणिट्ठुरमकक्कसा वयणं ।
सुत्ताणुवीचिवयणं अणिट्ठुरगकक्कसं वयणं ॥४३८॥

उवसंतवयणमगिहत्थवयणमकिरियमहीलणं वयणं ।
एसो वाइयविणओ जहारिह होदि कायव्वो ॥४३९॥

पापविसोत्तियपरिणामवज्जणं पियहिदे य परिणामो ।
णादव्वो संखेवेणेसो माणसिओ विणओ ॥४४०॥

इय एसो पच्चक्खो विरणश्रो पारोक्खिश्रो विजं गुरूणो ।
विरहम्मि वि वट्टिज्जदि श्राणाणिद्द्सेचरियाए ।।४४१।।

श्रहवोक्चारिश्रो खलु विणहो दुविहो समासदो होदि ।
पडिरूवकालकिरियाणासादणसीलदा चेव ।।४४२।।

पडिरूवो काइगवाचिगमाणसिगो दु बोधव्वो ।
सत्त चदुव्विह दुविहो जहा कमं होदि भेदेण ।।४४३।।

श्रब्भुट्ठाणं सण्णादि श्रासणदाणं श्रणुप्पाणं च ।
किदिकम्मं पडिरूवं श्रासणचाहो य श्रणुव्वजणं ।।४४४।।

हिदमिदमद्दवश्रणुवाचिभासणो वाचिगो हवे विणश्रो ।
श्रसुहमणसण्णिरोहो सुहमणसंकप्पगो तदिश्रो ।।४४५।।

रादिणिए ऊणरादिणिएसु श्र श्रज्जासु चेव गिहिवग्गे ।
विणश्रो जहारिहो सो कायव्वो श्रप्पमत्तेण ।।४४६।।

विणएण विप्पहीणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा ।
विणश्रो सिक्खाए फल विणयफलं सव्वकल्लाणं ।।४४७।।

विणश्रो मोक्खद्दारं विणयादो संजमो तवो णाणं ।
विणएणाराहिज्जदि श्राइरिश्रो सव्वसंघो य ।।४४८।।

श्रायारजीदकप्पगुणदीवणा श्रत्तसोधिणिज्झंजो ।
श्रज्जवमद्दव लाहवभत्तीपल्हादकरणं च ।।४४९।।

कित्तीमित्ती माणस्स भजणं गुरूजणे य बहुमाणं ।
तित्थयराणं गुणाणुमोदो य विणयगुणा ।।४५०।।

श्रायरियादिसु पंचसु सबालउड्ढाउले तहा गच्छे ।
वेज्जवच्च उत्तं कादव्वं सव्वसत्तीए ।।४५१।।

गुणाधिए उवज्झाए तवस्सि सिस्से य दुब्बले ।
साहुगणे कुले संघे समणुण्णे य चापदि ।।४५२।।

सेज्जोगासणिसेज्जो तहेव पडिलेहणे उवग्गहिदे ।
आहारोसहवायणविकिंचणोवत्तणादीसु ॥४५३॥
अद्धाणतेणसावदरायणदीरोधणासिवे ओमे ।
वेज्जावच्चं उत्तं सगहसारक्खणोवेदं ॥४५४॥

परियट्टणा य वायण पडिच्छणाणुपेहणा य धम्मकहा ।
थुदिमंगल संजुत्तो पचविहो होइ सज्झाओ ॥४५५॥

सज्झायं कुव्वंतो पंचिंदियसंवुडो तिगुत्तो य ।
होदि य एयग्गमणो विणएण समाहिदो भिक्खू ॥४५६॥

अट्टं रूद्दं च तहा दोण्णि वि ज्झाणाणि अप्पसत्थाणि ।
धम्मं सुक्कं च दुवे पसत्थज्झाणाणि णेयाणि ॥४५७॥

अमणुण्णजोगइट्ठ वियोगपरीसहणिदाण करणेसु ।
अट्टं कसायसहियं ज्झाणं भणियं समासेण ॥४५८॥

तेणिक्कमोससारक्खणेसु तध चेव छव्विहारंभे ।
रुद्दं कसायसहियं ज्झाण भणियं समासेण ॥४५९॥

अवहट्टु अट्टरुद्दे महाभये सुगदीयपच्चूहे ।
धम्मे वा सुक्के वा होदि समण्णागदमदीओ ॥४६०॥

एयग्गेण मणं णिरुंभिऊणं धम्मं चउव्विहं झाहि ।
आणापायविवायविचओ य संठाणविचयं च ॥४६१॥

पंचत्थिकायछज्जीवणिकाये कालदव्वमण्णे य ।
आणागेज्झे भावे आणाविचयेण विचिणादि ॥४६२॥

कल्लाणपावगाओपाए विचिणादि जिणमदमुविच्चं ।
विचिणादि वा अपाये जीवाण सुहे य असुहे य ॥४६३॥

एयाणेयभवगयं जीवाणं पुण्णपावकम्मफलं ।
उदओदिरणसंकमबंधं मोक्खं च विचिणादि ॥४६४॥

इय एसो पच्चक्खो विणश्रो पारोक्खिश्रो विजं गुरूणो ।
विरहम्मि वि वट्टिज्जदि आणाणिद्देसचरियाए ।।४४१।।

अहवोवचारिश्रो खलु विणहो दुविहो समासदो होदि ।
पडिरूवकालकिरियाणासादणसीलदा चेव ।।४४२।।

पडिरूवो काइगवाचिगमाणसिगो दु बोधव्वो ।
सत्त चदुव्विह दुविहो जहा कमं होदि भेदेण ।।४४३।।

अब्भुट्ठाणं सण्णादि आसणदाणं अणुप्पाणं च ।
किदिकम्मं पडिरूवं आसणचाहो य अणुव्वजणं ।।४४४।।

हिदमिदमद्दवअणुवाचिभासणो वाचिगो हवे विणश्रो ।
असुहमणसण्णिरोहो सुहमणसंकप्पगो तदिश्रो ।।४४५।।

रादिणिए ऊणरादिणिएसु अ अज्जासु चेव गिहिवग्गे ।
विणश्रो जहारिहो सो कायव्वो अप्पमत्तेण ।।४४६।।

विणएण विप्पहीणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा ।
विणश्रो सिक्खाए फलं विणयफल सव्वकल्लाणं ।।४४७।।

विणश्रो मोक्खद्दारं विणयादो संजमो तवो णाणं ।
विणएणाराहिज्जदि आइरिश्रो सव्वसंघो य ।।४४८।।

आयारजीदकप्पगुणदीवणा अत्तसोधिणिज्झंजो ।
अज्जवमद्दव लाहवभत्तीपल्हादकरणं च ।।४४९।।

कित्तीमित्ती माणस्स भंजणं गुरूजणे य बहुमाणं ।
तित्थयराणं गुणाणुमोदो य विणयगुणा ।।४५०।।

आयरियादिसु पंचसु सबालउड्ढाउले तहा गच्छे ।
वेज्जवच्चं उत्तं कादव्व सव्वसत्तीए ।।४५१।।

गुणाधिए उवज्झाए तवस्सि सिस्से य दुब्बले ।
साहुगणे कुले संघे समणुण्णे य चापदि ।।४५२।।

सेज्जोगासणिसेज्जो तहेव पडिलेहणे उवग्गहिदे ।
आहारोसहवायणविकिंचणोवत्तणादीसु ॥४५३॥
अद्धाणतेणसावदरायणदीरोधणासिवे ओमे ।
वेज्जावच्चं उत्तं संगहसारक्खणोवेद ॥४५४॥

परियट्टणा य वायण पडिच्छणाणुपेहणा य धम्मकहा ।
थुदिमंगल सजुत्तो पंचविहो होइ सज्झाओ ॥४५५॥

सज्झायं कुव्वंतो पंचिंदियसंवुडो तिगुत्तो य ।
होदि य एयग्गमणो विणएण समाहिदो भिक्खू ॥४५६॥

अट्टं रूद्दं च तहा दोण्णि वि ज्झाणाणि अप्पसत्थाणि ।
धम्मं सुक्क च दुवे पसत्थज्झाणाणि णेयाणि ॥४५७॥

अमणुण्णजोगइट्ठ वियोगपरीसहणिदाण करणेसु ।
अट्ठं कसायसहिय ज्झाणं भणियं समासेण ॥४५८॥

तेणिक्कमोससारक्खणेसु तध चेव छव्विहारभे ।
रुद्दं कसायसहियं ज्झाणं भणियं समासेण ॥४५९॥

अवहट्टु अट्टरुद्दे महाभये सुगदीयपच्चूहे ।
धम्मे वा सुक्के वा होदि समण्णागदमदीओ ॥४६०॥

एयग्गेण मणं णिरु भिऊणं धम्मं चउव्विहं झाहि ।
आणापायविवायविचओ य संठाणविचयं च ॥४६१॥

पंचत्थिकायछज्जीवणिकाये कालदव्वमण्णे य ।
आणागेज्झे भावे आणाविचयेण विचिणादि ॥४६२॥

कल्लाणपावगाओपाए विचिणादि जिणमदमुविच्चं ।
विचिणादि वा अपाये जीवाण सुहे य असुहे य ॥४६३॥

एयाणेयभवगयं जीवाणं पुण्णपावकम्मफलं ।
उदओदिरणसंकमबंधं मोक्खं च विचिणादि ॥४६४॥

उड्ढमहतिरिय लोए विचिणादि सपज्जए ससंठाणे ।
एत्थेव अणुगदाओ अणुपेक्खाओ य विचिणादि ।।४६५।।

अद्ध्रुवमसरणमेगत्तमण्णसंसारलोगमसुचित्तं ।
आसवसंवरणिज्जरधम्मं बोधिं च चिंतिज्जो ।।४६६।।

उवसंतो दु पुहत्तं ज्झायदि ज्झाणं विदक्कवीचारं ।
खीणकसाओ ज्झायदि एयत्तविदक्कवीचारं ।।४६७।।

सुहुमकिरियं सजोगी झायदि ज्झाणं च तदिय सुक्कं तु ।
जं केवली अजोगी ज्झायदि ज्झाणं समुच्छिण्णं ।।४६८।।

दुविहो य विउस्सग्गो अब्भंतर बाहिरो मुणेयव्वो ।
अब्भंतर कोहादी बाहिरं खेत्तादियं दव्वं ।।४६९।।

कोहो माणो माया लोहो रागो तहेव दोसो य ।
मिच्छत्त वेदरदिअरदिहास सोगभयदुगुंछाय ।।४७०।।

खेत्तं वत्थुं धणधण्णगदं दुपदचदुप्पदगदं च ।
जाणसयणासणाणि य कुप्पे भंडेसु दस होंति ।।४७१।।

बारसविधम्हि वि तवे सब्भंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
णवि अत्थि ण वि होहि सज्झायसमो तवो कम्मं ।।४७२।।

सिद्धिप्पासादवदंसयस्स करणं चदुव्विहं होदि ।
दव्वे खेत्ते काले भावे वि य आणुपुव्वीए ।।४७३।।

अब्भंतरसोहणओ एसो अब्भंतरो तओ भणिओ ।
एत्तो विरियाचारं समासदो वण्णइस्सामि ।।४७४।।

बलवीरियसत्तिपरक्कमधिदिबलमिदि पंचधा उत्तं ।
तेसिं तु जहाजोग्गं आचरण वीरियाचारो ।।४७५।।

अणिगूहिदबलविरिओ परक्कामदि जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजदि य जहा थामं विरियायारोत्ति णादव्वो ।।४७६।।

पडिसेवापडि सुरणणं संवासो चेव अणुमदी तिविहा ।
उद्दिट्ठं जदि भुजंदि भोगादि य होदि पडिसेवा ॥४७७॥

उद्दिट्ठं जदि विचरदि पुव्वं पच्छा व होदि पडिसुरणणा ।
सावज्जसंकिलिट्ठो ममत्ति भावो दु संवासो ॥४७८॥

कुलगामरणयररज्जं पज्जहिय जो कुणदि तेसु ममत्ति सु ।
सो णवरि लिगधारी संयमसारेण निस्सारः ॥४७९॥

पुढविदगतेउवाऊवणप्फदि असंजमो य बोधव्वो ।
विगतिगचदुपचेंदिय अजीवकाये असंजमणं ॥४८०॥

अप्पडिलेहं दुप्पडिलेहमुवेक्ख अवहट्टसंजमो चेव ।
मणवयणकायसंजमसत्तरसविधो दु णायव्वो ॥४८१॥

पंचरस पंचवण्णा दो गंधे अट्ठ फास सत्त सरा ।
मणसा चोद्दस जीवा इंदियपाणा य संजमो णेओ ॥४८१॥

जियदु व मरदु जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामित्तेण समिदस्स ॥४८३॥

अपयत्ता वा चरिया सयणासणठाणचंकमादीसु ।
समणस्स सव्वकालं हिंसा सांतत्तिया त्ति मता ॥४८४॥

अयदाचारो समणो छसु वि कायेसु बंधगोत्ति मदो ।
चरदि यदं यदि णिच्चं कमलं व जले निरुवलेओ ॥४८५॥

असिअसणि परुसवणदहबग्घग्गकिण्ण सप्पसरिसस्स ।
मा देहि ठाणवासं दुग्गदिमग्गं च रोचिस्स ॥४८६॥

दंसणणाणचरित्तो तवविरियाचारणिग्गहसमत्थो ।
अत्ताणं जो समणो गच्छदि सिद्धि धुदकिलेसो ॥४८७॥

तिरदणपुरूगुणसहिदे अरहंते विदिदसयल सब्भावे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं समासदो पिण्डसुद्धी दु ॥४८८॥

उग्गम उप्पादरण एसरणं च संजोजरणं पमारणं च ।
इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पिण्डसुद्धी दु ॥४८९॥

अप्पासुएरण मिस्सं पासुयदव्वं तू पूदिकम्मं तं ।
चुल्लो उक्खलि दव्वी भायरणगंधत्ति पंचविह ॥४९०॥

जावदियं उद्देसो पासडोत्ति य हवे समुद्देसो ।
समरणोत्ति य आदेसो रिणग्गंथोत्ति य हवे समादेसो ॥४९१॥

जलतुंदलपक्खेवो दारणट्ठं संजदारण पयणे ।
अज्झोवज्झं णेयं अहवा पागं तु जाव रोहो वा ॥४९२॥

देवरणासंडट्ठं किविरणट्ठं चावि जं तु उद्दिसियं ।
कदमण्णसमुद्देसं च चदुव्विहं वा समासेण ॥४९३॥

आधाकम्मुद्देसिय य अज्झोवज्झे य पूदिमिस्से य ।
ठविदे बलि पाहुडिदे पादुक्काहे य कीदे य ॥४९४॥

पमिच्छे परियट्टे अभिहडमुब्भिण्ण मालाआरोहे ।
अच्छिज्जे अणिसट्ठे हुग्गमदोसादु सोलसिमे ॥४९५॥

छज्जीवणिकायाणं विराहणोद्दावरणादिरिणप्पण्णं ।
आधाकम्मं णेयं सयपरकदमादासपण्णं ॥४९६॥

पासंडेहि य सद्धं सागारेहिं य जदण्णमुद्दिसियं ।
दादुमिदि संजदाणं सिद्धं मिस्सं वियारणाहि ॥४९७॥

पागादु भायरणाओ अण्णम्हि य भायरणम्मि पक्खविय ।
सघरे व परघरे वा रिणहिदं ठविद वियारणाहि ॥४९८॥

जक्खयरणागादीणं बलिसेस बलित्ति पण्णत्तं ।
संजदआगमरणट्ठं बलियम्मं वा बलिं जारणे ॥४९९॥

पाहुडियं पुरण दुविहं बादर सुहमं च दुविहमेक्केक्कं ।
ओकस्सरणमक्कस्सरण महाकालो वट्टरणा पड्ढी ॥५००॥

दिवसे पक्खि मासे वास परत्तीय बादरं दुविहं ।
पुव्वपरमज्झबेलं परियत्तं दुविह सुहुमं च ॥५०१॥

पादुक्कारो दुविहो सकमणपयासणा य बोद्धव्वो ।
भायणभोयणदीणं मंडलविरलादिय कमओ ॥५०२॥

कीदयडं पुण दुविहं दव्वं भावं च सगपरं दुविहं ।
सच्चित्तादि दव्वं विज्जामंतादि भावं च ॥५०३॥

दहरिय रिणं तु भणियं पामिच्छं ओदणादि अण्णदरं ।
तं पुण दुविहं भणिदं सवड्ढियमवडियं चापि ॥५०४॥

वीहीकूरादीहिं य सालीकूरादियं तु जं गहिदं ।
दादुमिदि संजदाणं परियट्टं होदि णायव्वं ॥५०५॥

देसोत्ति य सव्वोत्ति य दुविहं पुण अभिहडं वियाणाहि ।
आचिण्णमणाचिण्णं देसाभिहडं हवे विदियं ॥५०६॥

उज्जु तिहिं सत्तहिं वा घरेदि जदि आगदं दु आचिण्णं ।
परदो वा तेहिं भवे तव्विवरीदं अणाचिण्णं ॥५०७॥

सव्वाभिघडं चदुधा सयपरगामे सदेसपरदेसे ।
पुव्वापरपाडणायड पढमं सेसं पि णादव्वं ॥५०८॥

पिहिदं लंछिदियं वा ओसहघिदसक्करादि जं दव्वं ।
उब्भिण्णिऊण देयं उब्भिण्णं होदि णादव्वं ॥५०९॥

णिस्सेणीकट्ठादिहि णिहिदं पूयादियं तु घेत्तूणं ।
मालारोहं किच्चा देयं मालारोहणं णाम ॥५१०॥

राजाचोरादीहि य संजदभिक्खासमं तु दट्ठूण ।
बीहेदूण णिजुज्जं अच्छेज्जं होदि णादव्वं ॥५११॥

अणिसट्ठं पुण दुविहं इस्सरमहणिस्सरं च तिवियप्पं ।
पढमिस्सरसारक्खं वत्तावत्तं च संघाण्डं ॥५१२॥

उग्गम उप्पादण एसणं च संजोजणं पमाणं च ।
इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पिण्डसुद्धी दु ।।४८९।।
अप्पासुएण मिस्स पासुयदव्वं तू पूदिकम्मं तं ।
चुल्ली उक्खलि दव्वी भायणगंधत्ति पंचविह ।।४९०।।
जावदियं उद्द`सो पासंडोत्ति य हवे समुद्द`सो ।
समणोत्ति य आदेसो णिग्गंथोत्ति य हवे समादेसो ।।४९१।।
जलतुंदलपक्खेवो दाणट्ठं संजदाण सयपयणे ।
अज्झोवज्झं णेयं अहवा पागं तु जाव रोहो वा ।।४९२।।
देवणासंडट्ठं किविणट्ठं चावि जं तु उद्दिसियं ।
कदमण्णसमुद्द`सं च चदुव्विहं वा समासेण ।।४९३।।
आधाकम्मुद्द`सिय य अज्झोवज्झे य पूदिमिस्से य ।
ठविदे बलि पाहुडिदे पादुक्काहे य कीदे य ।।४९४।।
पमिच्छे परियट्टे अभिहडमुब्भिण्ण मालाआरोहे ।
अच्छिज्जे अणिसट्ठे हुग्गमदोसादु सोलसिमे ।।४९५।।
छज्जीवणिकायाण विराहणोद्दावणादिणिप्पण्णं ।
आधाकम्मं णेयं सयपरकदमादासंपण्णं ।।४९६।।
पासंडेहि य सद्धं सागारेहिं य जदण्णमुद्दिसियं ।
दादुमिदि संजदाणं सिद्धं मिस्सं वियाणाहि ।।४९७।।
पागादु भायणाओ अण्णम्हि य भायणम्मि पक्खविय ।
सघरे व परघरे वा णिहिदं ठविदं वियाणाहि ।।४९८।।
जक्खयणागादीणं बलिसेस बलित्ति पण्णत्तं ।
संजदआगमणट्ठं बलियम्मं वा बलिं जाणे ।।४९९।।
पाहुडियं पुण दुविहं बादर सुहमं च दुविहमेक्केक्कं ।
ओकस्सणमक्कस्सण महाकालो वट्टणा पड्ढी ।।५००।।

दिवसे पक्खि मासे वास परत्तीय बादरं दुविहं ।
पुव्वपरमज्झबेलं परियत्तं दुविह सुहुमं च ॥५०१॥

पादुक्कारो दुविहो संकमणपयासणा य बोद्धव्वो ।
भायणभोयणादीणं मंडलविरलादियं कमसो ॥५०२॥

कीदयडं पुण दुविहं दव्वं भाव च सगपरं दुविह ।
सच्चित्तादि दव्वं विज्जामंतादि भावं च ॥५०३॥

दहरिय रिणं तु भणियं पामिच्छं ओदणादि अण्णदरं ।
तं पुण दुविहं भणिदं सवड्ढियमवड्ढियं चापि ॥५०४॥

वीहीकूरादीहिं य सालीकूरादियं तु जं गहिदं ।
दावुमिदि संजदाणं परियट्टं होदि णायव्वं ॥५०५॥

देसोत्ति य सव्वोत्ति य दुविहं पुण अभिहडं वियाणाहि ।
आचिण्णमणाचिण्णं देसाभिहडं हवे विदियं ॥५०६॥

उज्जु तिहिं सत्तहिं वा घरेहि जदि आगदं दु आचिण्णं ।
परदो वा तेहिं भवे तव्विवरीदं अणाचिण्णं ॥५०७॥

सव्वाभिघडं चदुधा सयपरगामे सदेसपरदेसे ।
पुव्वापरपाडणयडं पढमं सेसं पि णादव्वं ॥५०८॥

पिहिदं लंछिदियं वा ओसहघिदसक्करादि जं दव्वं ।
उब्भिण्णिऊण देयं उब्भिण्णं होदि णादव्व ॥५०९॥

णिस्सेणीकट्ठादिहि णिहिदं पूयादियं तु घेत्तूणं ।
मालारोहं किच्चा देयं मालारोहणं णाम ॥५१०॥

राजाचोरादीहि य संजदभिक्खासमं तु दट्ठूण ।
बीहेदूण णिजुज्जं अच्छेज्जं होदि णादव्व ॥५११॥

अणिसट्ठं पुण दुविहं इस्सरमहणिस्सरं च तिवियप्पं ।
पढमिस्सरसारक्खं वत्तावत्तं च संघाण्डं ॥५१२॥

धादीदूदणिमित्ते आजीवे वणिवगे य तेगिंछे ।
कोधी माणी मायी लोही य हवंति दस एदे ॥५१३॥
मज्जणमंडणधादी खेल्लावणखीर अंबधादी य ।
पंचविधधादि कम्मेणुप्पादो धादिदोसो दु ॥५१४॥
जलथल आयासगदं सयपरगामे सदेस परदेसे ।
संबंधिवयणणयणं दूदीदोसो हवदि एसो ॥५१५॥
अंगं सरं च वंजण लक्खण छिण्णं च भोम्मसुमिणं च ।
तह चेव अंतरिक्खं अट्ठविहं होइ णेमित्तं ॥५१६॥
जादी कुलं च सिप्पं तवकम्मं ईसरत्त आजीवं ।
तेहिं पुण उप्पादो आजीवदोसो हवदि एसो ॥५१७॥
साणाकिवणतिथिमाहणपासंडियसवणकागदाणादीं ।
पुण्णं णवेत्ति पुट्ठे पुण्णेत्ति वणीवयं वयणं ॥५१८॥
कोमारतणुतिगिंछारसायणविसभूदखारतंतं च ।
सल्लं सालंकियणं तिगिच्छदोसो दु अट्ठविहो ॥५१९॥
कोधेण य माणेण य मायालोभेण चावि उप्पादो ।
उप्पादणा य दोसो चदुव्विहो होदि णायव्वो ॥५२०॥
कोधो य हत्थिकप्पे माणो वेणायडम्मि णयरम्मि ।
माया वाणारसिए लोहो पुण रासियाणम्मि ॥५२१॥
दायगपुरदो कित्ती तं दाणवदी जसोधरो वेत्ति ।
पुव्वीसं थुदिदोसो विस्सरिदे बोधणं चावि ॥५२२॥
पच्छा संथुदिदोसो दाणं गहिदूण तं पुणो कित्तिं ।
विक्खादो दाणवदी तुज्झ जसो विस्सुदो बेंति ॥५२३॥
विज्जा साधितसिद्धा तिस्से आसायदाणकरणेहिं ।
तिस्से माहप्पेण य विज्जादोसो दु उप्पादो ॥५२४॥

सिद्धे पढिदे मंते तस्स य आसापदानकरणेण ।
तस्स य माहप्पेण य उप्पादो मंतदोसो दु ॥५२५॥

आहारदायगाण विज्जामंतेहि तेवदाण तु ।
आहुय साधिदव्वा विज्जामंतो हवे दोसो ॥५२६॥

णेत्तस्संजणचुण्णं भूसणचुण्ण च गत्तसोभयरं ।
चुण्णं तेणुप्पादो चुण्णयदोसो हवदि एसो ॥५२७॥

अवसाणं वसियरणं संजोजयणं च विप्पजुत्ताणं ।
भणियं तु मूलकम्मं एदे उप्पादणा दोसा ॥५२८॥

संकिदमक्खिदणिक्खिद पिहिद संववहरणदायगुम्मिस्से ।
अपरिणदलित्तछोडिद रसण दोसाइं दस एदे ॥५२९॥

असणं च पाणयं वा खादियमध सादियं च अज्झप्पे ।
कप्पियमकप्पियत्ति य संदिद्धं संकियं जाणे ॥५३०॥

ससिणिद्धेण दु देयं हत्थेण य भायणेण दव्वीए ।
एसो मक्खिदोसो परिहरिदव्वो सदा मुणिणा ॥५३१॥

सचित्त पुढवि आऊ तेऊ हरिदं च बीयतसजीवा ।
जं तासमुवरि ठविदं णिक्खित्तं होदि छब्भेयं ॥५३२॥

सच्चित्तेण व पिहिदं अथवा अच्चित्तगुरुगपिहिदं च ।
तं छंडिय ज पेयं पिहिदं त होदि बोदव्वो ॥५३३॥

संववहरण किच्चा पदादुमिदि चेलभाजणादीणं ।
असमक्खिय जं देयं सववहरणो हवदि एसो ॥५३४॥

सूदी सुंडी रोगी मदय णवुंसय पिसायणग्गो य ।
उच्चारपडिदवतरुहिरवेसी समणि अंगमक्खीया ॥५३५॥

अतिबाला अतिवुड्ढा घासत्ती गब्भिणी य अंधलिया ।
अंतरिदा व णिसण्णा उच्चत्था अहव णीच्चत्था ॥५३६॥

पूयणपज्जलणं वा सारणपच्छादणं च विज्झवणं ।
किच्चा तहग्गिजज्जं णिव्वादं घट्टणं चावि ।।५३७।।

लेवणमज्जणकम्मं पियमाणं दारयं च णिक्खविय ।
एवंविहादिया पुण दाणं जदि दिंति दायगा दोसा ।।५३८।।

तिलचाउलउसणोदय चणोदय तुसोदयं अविद्धुत्थं ।
अण्णं पि असणादी अपरिणद णेव गेण्हेज्जो ।।५३९।।

गेरूयहरिदालेण व सेडीय मणोसिलामपिट्ठेण ।
सपबालोदणलेबेण व देयं करभायणे लित्तं ।।५४०।।

बहुपरिणाउणमुज्झिअ आहारो परिगलंत दिज्जंतं ।
छंडिय भुजणमहवा छोडिददोसो हवे णेओ ।।५४१।।

संजोयणा य दोसो जो संजोएदि भत्तपाणं तु ।
अदिमत्तो आहारो पमाणदोसो हवदि एसो ।।५४२।।

तं होदि सयंगालो जं आहारेदि मुच्छिदो संतो ।
तं पुण होदि सधूमं जं आहारेदि णिदंतो ।।५४३।।

छहिं कारणेहिं असणं आहारंतो वि आयरदि धम्मं ।
छहिं चेव कारणेहिं दु णिज्जुहवंतो वि आयरदि ।।५४४।।

वयणेवेज्जावच्चे किरियाठाणे य संजमट्ठाए ।
तध पाणधम्म चिंता कुज्जा एदेहिं आहारे ।।५४५।।

आदके उवसग्गे तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीओ ।
पाणिदयातवहेऊ सरीरपरिहार वोच्छेदो ।।५४६।।

ण बलाउसाउअट्ठं ण सरीरस्सुवयट्ठतेजट्ठं ।
णाणट्ठसंजमट्ठं ज्झाणट्ठं चेव भुंजेज्जो ।।५४७।।

णवकोडीपरिसुद्धं असणं बादालदोसपरिहीणं।
संजोजणाए हीण पमाणसहियं विहिसुदिण्ण ॥५४८॥
विंदिगालविधूमं छक्कारणसंजुदं कमविसुद्धं।
जत्तासाधणमेत्तं चोद्दसमलवज्जिदं भुंजे ॥५४९॥
णहरोमजंतु अट्ठी कणकुंडयपूयचम्मरुहिरं च।
बीयफलकंदमूल मासं च मला दु चोद्दसमे ॥५५०॥
पगदा असओ जम्हा तम्हादो दव्वदोत्ति तं दव्वं।
ण हि मंडूगा एवं परमट्ठकदे जदि विसुद्धो ॥५५१॥
आधाकम्मपरिणदो फासुगदव्वे वि बंधओ भणिदो।
सुद्धं गवेसमाणो आधामम्मे वि सो सुद्धो ॥५५२॥
सव्वो वि पिंडदोसो दव्वे भावे समासदो दुविहो।
दव्वगदो पुण दव्वे भावगदो अप्पपरिणामो ॥५५३॥
सव्वेसणं च विद्देसणं च सुद्धेसणं च ते कमसो।
एसणसमिदिविसुद्धं णिव्वियउमवजणं जाणे ॥५५४॥
दव्वं खेत्तं कालं भावं बलवीरियं च णाऊणं।
कुज्जा एसणसमिदिं जहोवदिट्ठं जिणमदम्मि ॥५५५॥
अद्धमसणस्स सव्विजणस्स उदर तदिय मुदएण।
वाऊसंचरणट्ठं चउत्थमवसेसए भिक्खू ॥५५६॥
सूरूदयत्थमणादो णालितियवज्जिदे असणकाले।
तिगदुगएगमुहुत्ते जहण्णमज्झिम्ममुक्कस्से ॥५५७॥
एक्कम्हि दोण्णि तिण्णि य मुहुत्तकालो दु उत्तमदोगो।
पुरदो य पच्छिमेण य णालीतिगवज्जिदो चारे ॥५५८॥
भिक्खाचरियाए पुण गुत्तीगुणसीलसंजमादीणं।
रक्खतो चरदि मुणी णिव्वेदतिगं च पेच्छंतो ॥५५९॥

श्राणा श्रणवत्था वि य मिच्छत्ताराहणादणासो यो ।
संजमविराधणा वि य चरियाए परिहरेदव्वा ।।५६०।।

जेणेह पिंडसुद्धी उवदिट्ठा जेहिं धारिदा सम्मं ।
ते वीरसाहुवग्गा तिरदणसुद्धि मम दिसंतु ।।५६१।।

सगबोधदीवणिज्जिदभवणत्तयकद्धमंदमोहतमो ।
णमिदसुरासुरसंघो जयदु जिणिंदो महावीरो ।।५६२।।

काऊण णमोकारं श्रपहंताणं तहेव सिद्धाणं ।
श्राइरियउवज्झाए लोगम्मि य सव्वसाहूणं ।।५६३।।

श्रावासयणिज्जुत्ती वोच्छामि जहा समासेण ।
श्रायरियपरंपराए जहागदा श्राणुपुव्वीए ।।५६४।।

रागद्दोसकसाए य इंदियाणि य पंच य ।
परीसहे उवसग्गे णासयंतो णमोरिहा ।।५६५।।

श्ररिहंति णमोक्कारं श्ररिहा पूजा सुरुत्तमा लोए ।
रजहंता श्ररिहंति य श्ररहंतो तेण उच्चंदे ।।५६६।।

श्ररिहंति वंदणणमंसणाणि श्ररिहंति पूय ारं ।
श्ररिहंति सिद्धिगमणं श्ररहंता तेण उच्चंति ।।५६७।।

श्ररहंतणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि श्रचिरेण कालेण ।।५६८।।

दीहकालमयं जंतू उसिदो श्रट्ठकम्मोंहि ।
सिद्धे धत्ते णिधत्ते य सिद्धत्तमुवगच्छदि ।।५६९।।

श्रावेसणी सरीरे इंदियभंडो मणो व श्रागरिश्रो ।
धमिदव्वजीवलोहे बावीसपरीसहग्गीहिं ।।५७०।।

सिद्धाण णमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि श्रचिरेण कालेण ।।५७१।।

सदा आयरविदृण्हू सदा आयरियं चरे ।
आयारमायारवंतो आयरिओ तेण मुच्चदे ।।५७२।।

जम्हा पंचविहाचारं आचरंतो पभासदि ।
आयरिदाणि देसंतो आइरिओ तेण उच्चदे ।।५७३।।

आइरियणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्व दुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण ।।५७४।।

बारसंगं जिणक्खादं सज्झायं कहियं बुधे ।
उवदेसइ सज्झायं तेणुवज्झाउ उच्चदि ।।५७५।।

उवज्झायणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण ।।५७६।।

णिव्वाणसाधगे जोगे सदा जुंजंति साधवो ।
समा सव्वेसु भूदेसु तम्हा ते सव्वसाधवो ।।५७७।।

साहूण णमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण ।।५७८।।

एवं गुणजुत्ताणं पंचगुरुण विसुद्धकरणेंहिं ।
जो कुणदि णमोक्कारं सो पावदि णिव्वुदिं सिग्घं ।।५७९।।

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलेसु य सव्वेसु पढमं होइ मंगलं ।।५८०।।

ण वसो सो अवसस्स कम्ममावासणंति बोधव्वा ।
जुत्ति त्ति उवाय त्ति य णिरवयवा होदि णिज्जुत्ती ।।५८१।।

सामाइय चउवीसत्थववंदणयं पि चेव पडिकमणं ।
पच्चक्खाणं च तहा काओसग्गो हवदि छट्ठो ।।५८२।।

सामायियणिज्जुत्ती वोच्छामी जहाकमं समासेण ।
आइरियपरंपरया जहागमं आणुपुव्वीए ।।५८३।।

आणा अरणवत्था वि य मिच्छत्ताराहरणादणासो यो ।
संजमविराधरणा वि य चरियाए परिहरेदव्वा ।।५६०।।

जेणेह पिंडसुद्धी उवदिट्ठा जेहिं धारिदा सम्मं ।
ते वीरसाहुवग्गा तिरदरणसुद्धिं मम दिसंतु ।।५६१।।

सगबोधदीवरिणज्जिदभवरणत्तयकद्धमंदमोहतमो ।
णमिदसुरासुरसंघो जयदु जिरिणदो महावीरो ।।५६२।।

काऊरण णमोकारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं ।
आइरियउवज्झाए लोगम्मि य सव्वसाहूणं ।।५६३।।

आवासयणिज्जुत्ती वोच्छामि जहाकमं समासेण ।
आयरियपरंपराए जहागदा आणुपुव्वीए ।।५६४।।

रागद्दोसकसाए य इंदियारिण य पंच य ।
परीसहे उवसग्गे णासयंतो रणमोरिहा ।।५६५।।

अरिहंति रणमोक्कारं अरिहा पूजा सुरुत्तमा लोए ।
रजहंता अरिहंति य अरहंतो तेरण उच्चदे ।।५६६।।

अरिहंति वंदरणरणमंसरणाणि अरिहंति पूयसक्कारं ।
अरिहंति सिद्धिगमणं अरहंता तेरण उच्चंति ।।५६७।।

अरहंतणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेरण कालेरण ।।५६८।।

दीहकालमयं जंतू उसिदो अट्ठकम्मेहिं ।
सिद्धे धत्ते रिणधत्ते य सिद्धत्तमुवगच्छदि ।।५६९।।

आवेसरणी सरीरे इंदियभंडो मरणो व आगरिओ ।
धमिदव्वजीवलोहे बावीसपरीसहग्गीहिं ।।५७०।।

सिद्धाणं णमोक्कारं भावेरण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावदि अचिरेरण कालेरण ।।५७१।।

सदा आयरविद्दण्हू सदा आयरियं चरे ।
आयारमायारवंतो आयरिओ तेण मुच्चदे ॥५७२॥

जम्हा पंचविहाचारं आचरंतो पभासदि ।
आयरिदाणि देसंतो आइरिओ तेण उच्चदे ॥५७३॥

आइरियणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्व दुक्खमोक्खं पावदि अचिरेण कालेण ॥५७४॥

बारसंगं जिणक्खादं सज्झायं कहियं बुधे ।
उवदेसइ सज्झायं तेणुवज्झाउ उच्चदि ॥५७५॥

उवज्झायणमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण ॥५७६॥

णिव्वाणसाधगे जोगे सदा जुंजंति साधवो ।
समा सव्वेसु भूदेसु तम्हा ते सव्वसाधवो ॥५७७॥

साहूण णमोक्कारं भावेण य जो करेदि पयदमदी ।
सो सव्वदुक्खमोक्खं पावइ अचिरेण कालेण ॥५७८॥

एवं गुणजुत्ताणं पंचगुरुण विसुद्धकरणेहि ।
जो कुणदि णमोक्कारं सो पावदि णिव्वुदिं सिग्घं ॥५७९॥

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलेसु य सव्वेसु पढमं होइ मगलं ॥५८०॥

ण वसो अवसो अवसस्स कम्ममावासणंति बोधव्वा ।
जुत्ति त्ति उवाय त्ति य णिरवयवा होदि णिज्जुत्ती ॥५८१॥

सामाइय चउवीसत्थववंदणयं पि चेव पडिक्कमणं ।
पच्चक्खाणं च तहा काओसग्गो हवदि छट्ठो ॥५८२॥

सामायियणिज्जुत्ती वोच्छामी जहाकमं समासेण ।
आइरियपरंपरया जहागमं आणुपुव्वीए ॥५८३॥

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले तहेव दव्वे य ।
सामाइयम्हि एसो णिक्खेओ छव्विहो णेओ ॥५८४॥

सम्मत्तणाणसंजमतवेहिं ज तं पसत्थसमगमणं ।
समयं तु तं तु भणिदं तमेव सामाइयं जाणे ॥५८५॥

ि उवसग्गपरीसह उवजुत्तो भावणासु समिदीसु ।
जमणियमउज्जुदमदी सामाइयपरिणदो जीवो ॥५८६॥

जं च समो अप्पाणं परे य मादूय सव्वमहिलासु ।
अप्पियपियमाणादिसु तो समणो तो य सामइयं ॥५८७॥

जो जाणइ समवायं दव्वाण गुणाण पज्जयाणं च ।
सब्भावं तं सिद्धं सामाइयमुत्तमं जाणे ॥५८८॥

रागदोसे णिरोहित्ता समदा सव्वकम्मसु ।
सुत्तेसु अ परिणामो सामाइयमुत्तमं जाणे ॥५८९॥

विरदो सव्वसावज्जा तिगुत्तो पिहिदिंदि ओ ।
जीवो सामाइयं णामं संजमट्ठाणमुत्तमं ॥५९०॥

जस्स सण्णिहिदो अप्पा संजमे णियमे तवे ।
तस्स सामायियं ठादि इदि केवलिसासणे ॥५९१॥

जो समो सव्वभूदेसु तसेसु थावरेसु य ।
तस्स सम्मायियं ठादि इदि केवलिसासणे ॥५९२॥

जस्स रागो य दोसो य वियडिं ण जणेंति दु ।
तस्स... ... . ॥५९३॥

जेण कोहो य माणो य माया लोहो य णिज्जिदे ।
तस्स.. ... ... ॥५९४॥

जस्स सण्णा य लेस्सा य वियडिं ण जणेंति दु ।
तस्स.. ... . ॥५९५॥

जो दु रसे य फासे व विर्याड ण जाणेंति दु।
तस्स... ... ...॥५९६॥
जो रुवगंधसद्दे य भोगे वज्जदि णिच्चसा।
तस्स... ... ...॥५९७॥
जो दु अट्टं च रुद्दं च ज्झाणं वज्जदि णिच्चसा।
तस्स... ... .॥५९८॥
जो दु धम्मं च सुक्कं च ज्झाणे णिच्चसा।
तस्स... ... ...॥५९९॥
सावज्जजोग्गप्परिवज्जणट्ठं सामायियं केवलिसिं पसत्थ।
गिहत्थधम्मो परमत्ति णच्चा कुज्जा बुधो अप्पहियं
पसत्थं॥६००॥
सामाइयम्हि दु कदे समणो किर सावगो हवदि जम्हा।
एदेण कारणेण दु बहुसो सामाइयं कुज्जा॥६०१॥
सामाइए कदे सावएण विद्धो मओ अरण्णम्हि।
सो य मओ उद्धादो ण यसो सामाइय फिठिओ॥६०२॥
बावीसं तित्थयरा सामाइय संजमं अवदिसंति।
छेदुवठावणियं पुण भयवं उसहो महावीरो॥६०३॥
आचक्खिदुं विभजिदुं विण्णादुं चा वि सुहदरं होदि।
एदेण कारणेण दु महव्वदा पंच पण्णत्ता॥६०४॥
आदीए दुव्विसोधण णिहणे तह सुट्ठदुरणुपाले य।
पुरिमा य पच्छिमा वि हु कप्पाकप्पं ण जाणंति॥६०५॥
अज्जवजडा अणज्जवजडा च उसहवीर तित्थ जा मणुजा।
तेसिं सुबोधमुत्तं छेदोवट्ठावणं वुत्तं॥६०६॥
पडिलिहियअंजलिकरो उवजुत्तो उट्ठिऊण एयमणो।
अव्वाखित्तो उत्तो करेदि सामाइयं भिक्खू॥६०७॥

सामाइयरिणज्जुत्ती एसा कहिया मया समासेरण ।
चउवीसयरिणज्जुत्ती एत्तो रड्ढं पवक्खामि ॥६०८॥

रणामट्ठवरणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य ।
एसो थवम्हि णेश्रो रिणक्खेश्रो छव्विहो होइ ॥६०६॥

लोगुज्जोए धम्मतित्थयरे जिरणवरे य श्ररहंते ।
कित्तण केवलिमेव य उत्तमबोहिं मम दिसतु ॥६१०॥

लोयदि श्रालोयदि पललोयदि सललोयदित्ति एगत्थो ।
जम्हा जिरणेहि कसिरणं तेरणेसो वुच्चदे लोश्रो ॥६११॥

रणामट्ठवरणा दव्वं खेत्तं चिण्हं कसायलोश्रो य ।
भवलोगो भावलोगो पज्जयलोगा य रणादव्वो ॥६१२॥

रणामारिण जारिण कारिण चि सुहासुहारिण लोगम्हि ।
रणामलोगं वियारणहि श्ररणंतजिरणदेसिदं ॥६१३॥

ठविदं ठाविद चावि जं किं चि श्रत्थि लोगम्हि ।
ठवरणालोगं वियारणाहि श्ररणंतजिरणदेसिदं ॥६१४॥

जीवाजीवं रूवारूवं सपदेसमप्पदेसं च ।
दव्वलोगं वियाणाहि श्ररणंतजिरणदेसिदं ॥६१५॥

परियट्टरणादो ठिदि विसेसेरण विसेसिदं दव्वं ।
कालोत्ति तं हि भरिणदं तेहि श्रसखेज्जकालाणु ॥६१६॥

परिरणामि जीवमुत्तं सपदेसं एयखेत्त किरिश्रो य ।
रिणच्चं कारण कत्ता सव्वगदिदरम्हि श्रपवेसो ॥६१७॥

श्रायासं श्रपदेसं उड्ढमहोतिरिय लोगं च ।
खेत्तलोगं वियारणाहि श्ररणंतजिणदेसिदं ॥६१८॥

जं दिट्ठं सठारणं दव्वारण गुरणारण पज्जयारणं च ।
चिण्हलोग वियारिणाहि श्ररणंतज्जिरणदेसिद ॥६१६॥

कोधो माणो माया लोहो उदिण्णा जस्य जंतुणो ।
कसायलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिद ।।६२०।।

णोरइपदेवमाणुसतिरिक्खजोणि गदा य जे सत्ता ।
णिययभवे वट्टंता भवलोगं तं विजाणाहि ।।६२१।।

तिव्वो रागो य दोसो य उदिण्णा जस्य जंतुणो ।
भावलोगं वियाणाहि अणतजिणदेसिद ।।६२२।।

दव्वगुणखेत्तपज्जय भवाणु भावो य भावपरिणामो ।
जाण चउव्हिमेयं पज्जलोगं समासेण ।।६२३।।

उज्जोवो खलु दुविहो णादव्वो दव्वभावसंजुत्तो ।
दव्वुज्जोवो अग्गी चंदो सूरो मणी चेव ।।६२४।।

भावुज्जोवो णाणं जह भणियं सव्वभावदरसीहिं ।
तस्य दुप ओगकरणे भावुज्जोवो त्ति णादव्वो ।।६२५।।

लोयालोयपयासं अ लियं णिम्मलं असंदिद्धं ।
जं णाणं अरहंता भावुज्जोवो त्ति वुच्चंति ।।६२६।।

पंचविहो खलु भणिओ भावुज्जोवो य जिणवरिंदेहिं ।
आभिणि बोहिय सुद ओहिणाणमणकेवलं णेयं ।।६२७।।

दव्वुज्जोवो जोवो पडिहण्णदि परिमिदम्हि खेत्तम्हि ।
भावुज्जोवो जोवो लोगालोगं पयासेदि ।।६२८।।

लोगस्सुज्जोययरा दव्वुज्जोएण ण हु जिणा होंति ।
भावुज्जोययरा पुण जिणवरा चउव्वीसा ।।६२९।।

तिविहो य होदि धम्मो सुदधम्मो अत्थिकायधम्मो य ।
तदिओ चरित्तधम्मो सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं ।।६३०।।

दुविहं च होइ तित्थं णादव्वं-दव्वभावसुंजुत्तं ।
एदेसिं दोण्हं पि य पत्तेय परूवणा होदि ।।६३१।।

दाहोवसमणतण्हाछेदो मलपंकपवहणं चेव ।
तिहिं कारणेहि जुत्ता तम्हा तं दव्वदो तित्थं ॥६३२॥

दंसणणाणचरित्ते णिज्जुत्ता जिणवरा दु सव्वे वि ।
तिहिं कारणेहि जुत्ता तम्हा ते भावदो तित्थं ॥६३३॥

तण्हावदाह छेदणकम्ममल विणासणसमत्थं ।
तिहिं कारणेहिं जुत्तं सुत्तं पुण भावदो तित्थं ॥६३४॥

जिदकोहमाणमाया जिदलोहा तेण ते जिणा होंति ।
हंता अरिं च जम्मं अरिहंता तेण उच्चंति ॥६३५॥

अरिहंति वंदणमंसणाणि अरिहंतो पूयसक्कारं ।
अरिहंति सिद्धिगमणं अरिहन्ता तेण उच्चंति ॥६३६॥

भत्तीए जिणवराणं खीयदि जं पुव्वसंचियं कम्मं ।
आयरिय रसाएण य विज्जा मंता य सिज्झंति ॥६३७॥

अरहंतेसु य राओ ववगद रागेसु दोसरहिदेसु ।
धम्मम्मि य जो राओ सुदे य जो बारसविधम्हि ॥६३८॥

आइरियेसु य राओ समणेसु य बहुसदे चरित्तड्ढे ।
एस पसत्थराओ हवदि सरागेसु सव्वेसु ॥६३९॥

तेसिं अहिमुहदाए अत्था सिज्झंति तह य भत्तीए ।
तो भत्तिरागपुव्वं वुच्चइ एदं ण णु णिदाणं ॥६४०॥

चउरंगुलतरपादो पडिलेहिय अंजली कयपसत्थो ।
अव्वारिवत्तो उत्तो कुणदि य चउवीसत्थयं भिक्खू ॥६४१॥

चउवीसयणिज्जुत्ती एसा कपिया मया समासेण ।
वंदणणिज्जुत्ती पुण एत्तो वुड्ढं पवक्खामि ॥६४२॥

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य ।
एसो खलु वंदणगे णिक्खेओ छव्विहो भणिदो ॥६४३॥

किदियम्मं चिदियम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च ।
कादव्वं केण कस्स व कधेव कहिं व कदिखुत्तो ।।६४४।।

कदि ओणदं कदि सिरं कदिए आवत्तगेहिं परिसुद्धं ।
कदिदोसविप्पमुक्क किदियम्मं होदि कादव्व ।।६४५।।

जम्हा विणेदि कम्म अट्ठविहं चाउरंग मोक्खो य ।
तम्हा वदंति विदुसो विण ओत्ति विलीणसंसार ।।६४६।।

पुव्वं चेव य विण ओ परुविदो जिणवरेहिं सव्वेहिं ।
सव्वासु कम्मभूमिसु णिच्चं सो मोक्खमग्गम्मि ।।६४७।।

लोगाणुवित्तिविण ओ अत्थणिमित्ते य कामतंते य ।
भयविणओ य चउत्थो पंचमओ मोक्खविणओ य ।।६४८।।

अब्भुट्ठाण अंजलि आसणदाण च अतिहिपूजा य ।
लोगाणुवित्तिविणओ देवदपूया सविहवेण ।।६४९।।

भासाणु वत्ति छंदाणुवत्तणं देसकालदाणं च ।
लोकाणुवत्तिविणओ अंजलिकरणं च अत्थकदे ।।६५०।।

एमेव काम तंते भयविणओ चेव आणुपुव्वीए ।
पंचमओ खलु विणओ परुवणा तस्सिमा होदि ।।६५१।।

दंसणणाणचरित्ते तवविणओ ओवचरिओ चेव ।
मोक्खम्मि एस विणओ पंचविहो होदि णायव्वो ।।६५२।।

जे दव्वपज्जया खलु उवदिट्ठा जिणवरेहि सुदणाणे ।
ते तह सद्दहदि णरो दंसण विणओत्ति णादव्वो ।।६५३।।

णाणी गच्छदि णाणी वंचदि णाणी णवं च णादिपदि ।
णाणेण कुणदि चरणं तम्हा णाणे हवे विणओ ।।६५४।।

पोराणयकम्मरयं चरिया रित्तं करेदि जदमाणो ।
णवकम्मं ण य बधदि चरित्तविणओ त्ति णादव्वो ।।६५५।।

अवणयदि तवेण तमं अवणयदि मोक्खमप्पमग्गाणं ।
तवविणयणियमिदमदी सो तवविणओ त्ति णादव्वो ॥६५६॥
अह ओवचारिओ खलु विणओ तिविहो समासदो भणिदो ।
सत्तचउव्विहदुविहो बोधव्वो आणुपुव्वीए ॥६५७॥
अब्भुट्ठाणं सण्णदि आसणदाणं अणुप्पदाणं च ।
किदिकम्मं पडिरुवं आसणचाओ य अणुव्वजणं ॥६५८॥
हिदमिदपरिमिदभासा अणुवीचीभासणं च बोधव्वं ।
अकुसलमणस्स रोधो कुसलमणपवत्तओ चेव ॥६५९॥
विणओ सासणमूलो विणयादो संजमो तवो णाणं ।
विणयेण विप्पहूणस्स कुदो धम्मो कुदो य तवो ॥६६०॥
विणएण विप्पहीणस्स हवदि सि[illegible] णित्थिदा सव्वा ।
विणओ सिक्खाए फलं विणयफलं सव्वकल्लाणं ॥६६१॥
विणओ मोक्खद्दारो विणयादो संजमो तवो णाणं ।
विणएणाराहिज्जदि आइरिओ सव्वसघो य ॥६६२॥
विणउवयारा माणस्स भंजणं गुरुजणेण बहुमाणं ।
तित्थयराणं आणा सुदधम्माराहणा किरिया ॥६६३॥
तम्हा सव्वपयत्तो विणयत्तं मा कदाइ छंडेज्जो ।
अप्पसुदो वि य पुरिसो खवेदि कम्माणि विणएण ॥६६४॥
आयारजीदकप्प गुणदीवणा सोधि णिज्जंजा ।
अज्जवमछ्वलाहवभत्तीपल्हाद करणं च ॥६६५॥
पंचमहव्वयगुत्तो संविग्गोणालसो अमाणी य ।
किदियम्म णिज्जरठ्ठी कुणइ सदा ऊणरादिणिओ ॥६६६॥
आइरियउवज्झायाणं पवत्तयत्थरेगणधरादीणं ।
एदेसिं किदियम्मं कादव्वं णिज्ज[illegible] ॥६६७॥

णो वंदेज्ज अविरदं मादापिदुगुरुणरिदं अण्णतित्थं व ।
देसविरद देवं वा विरदो पासत्थपणगं वा ॥६६८॥
पासत्थो य कुसीलो संसत्तो सण्ण मिगचरित्तो य ।
दंसणणाणचरित्ते अणिउत्ता मंदसंवेगा ॥६६९॥
वसहीसु य पडिवद्धो अहवा उवयरणकारओ भणिओ ।
पासत्थो समणाणं पासत्थो णाम सो होइ ॥६७०॥
कोहादि कलुसिदप्पा वयगुण सीलेहि चावि परिहीणो ।
संघस्य अयसकारी कुसील समणो त्ति णायव्वो ॥६७१॥
वेज्जेण व मंतेण व जोइसकुसलत्तणेण पडिवद्धो ।
राजादि सेवंतो संसत्तो णाम सो होई ॥६७२॥
जिणवयण मयाणंतो मुक्कधरो णाणचरण परिभट्टो ।
करणालसो भवित्ता सेवदि ओसण्णसेवाओ ॥६७३॥
आयरियकुलं मुच्चा विहरइ एगागिणो य जो समणो ।
जिणवयणं णिदंतो सच्छंदो होइ मिगचारी ॥६७४॥
दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकाल मुवजुत्ता ।
एदे अवंधणिज्जा छिद्दप्पेही गुणधराणं ॥६७५॥
समणं वंदेज्ज मेधावी संजदं सुसमाहिदं ।
पंचमहव्वदकलिदं असंजमजुगुछयं धीरं ॥६७६॥
दंसणणाणचरित्ते तव विणए णिच्चकालमुवजुत्ता ।
एदे हु वंदणिज्जा जे गुणवादी गुणधराणं ॥६७७॥
वसदिविहारे काइयसण्णा भिक्खविहारभूमीदो ।
चेदियपुरगामादो गुरुम्हि एते समुट्ठंति ॥६७८॥
असामाणेहि गुरुम्हि य वसभचउक्के वि एस चेव वदी ।
तेसु असमाणेसु य पुज्जो जो सव्वचेट्टो सो ॥६७९॥

वाखित्तपराहुत्तं तु पमत्तं मा कदाचि वंदेज्जो ।
आहारं च करंतो णीहारं वा जदि करेदि ॥६८०॥
आसणे आसणत्थं च उवसंतं च उवट्ठिदं ।
अणुवियणय मेधावी किदियम्मं पउंजदे ॥६८१॥
आलोयणा य करणे पडिपुच्छा पूजणे य सज्झाए ।
अवराधे य गुरूणं वंदणमेदेसु ठाणेसु ॥६८२॥
चत्तारि पडिक्कमणे किदियम्मा तिण्णि होंति सज्झाए।
पुव्वण्हे अवरण्हे किदियम्मा चोद्दसा होंति ॥६८३॥
दोणंद तु जधाजादं बारसावत्तमेव य ।
चदुस्सिदं तिसुद्धं च किदियम्मं पउंजदे ॥६८४॥
तिविहं तियरणसुद्धं मयरहियं दुविहठाणपुणरुत्तं ।
विणएण कमविशुद्धं किदियम्मं होदि कायव्वं ॥६८५॥
अणाठिदं च थद्धं च पविट्ठं परिपीडिदं ।
दोलाइयमंकुसियं तहा कच्छवरिंगियं ॥६८६॥
मच्छुव्वत्तं मणोढुट्ठं वेदिआबद्धमेव य ।
भयसा चेव भयत्तं इड्ढिगाखगाखं ॥६८७॥
तेणिदं पडिणिदं चावि पढुट्ठं तज्जिदं तथा ।
सद्दं च हीलिदं चावि तहा तिवलिदकुंचिदं ॥६८८॥
दिट्ठमदिट्ठं चावि य संघस्स करमोयणं ।
आलद्धमणालद्धं च हीणमुत्तरचूलियं ॥६८९॥
मूगं च दद्दुरं चावि चुलुलिद मपच्छिमं ।
बत्तीसदोसविसुद्धं किदियम्मं पंउजदे ॥६९०॥
किदियम्मपि करंतो ण होदि किदियम्मणिज्जराभागी ।
बत्तीसाणण्णदरं साहू ठाणं विराधंतो ॥६९१॥

हत्थंतरेणं बाधे संफासमप्पज्जणं पउंज्जतो ।
जाएंतो वंदणयं इच्छाकारं कुणदि भिक्खू ।। ६६२ ।।
तेण च पडिच्छिदव्वं गारवरहिएण सुद्धभावेण ।
किदियम्मकारगस्स वि संवेगं संजणंतेण ।।६६३ ।।
वंदणणिज्जुत्ती पुण एसा कहिया मया समासेण ।
पडिकमणणिज्जुत्ती पुण एत्तो वुड्ं पवक्खामि ।। ६६४ ।।
णामट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले तहेव भावे य ।
एसो पडिक्कमणगे णिक्खेवो छव्विहो णेओ ।। ६६५ ।।
पडिकमणं देवसियं रादिय इरियापधं च बोधव्वं ।
पक्खिय चादुम्मासिय संवच्छरमुत्तमट्ठं च ।। ६६६ ।।
पडिकमओ पडिकमणं पडिकमिदव्वं च होदि णादव्वं ।
एदेसिं पत्तेयं परूवणा होदि तिण्हं पि ।। ६६७ ।।
जीवो दु पडिक्कमओ दव्वे खेत्ते य काल भावे य ।
पडिगच्छदि जेण जम्हि तं तस्स भवे पडिक्कमणं ।। ६६८ ।।
पडिकमिदव्वं दव्वं सचित्ताचित्तमिस्सियं तिविहं ।
खेत्तं च गिहादीयं कालो दिवसादिकालम्हि ।। ६६६ ।।
मिच्छत्तपडिक्कमणं तह चेव असंजमे पडिक्कमणं ।
कसाएसु पडिक्कमणं जोगेसु य अप्पसत्थेसु ।। ७०० ।।
काऊण य किदियम्मं पडिलेहियकरणसुद्धो ।
आलोचिज्ज सुविहिदो गारवमाणं च मोत्तूण ।। ७०१ ।।
आलोचिय अवराहं ठिदिओ सुद्धो अहं ति तुट्ठमणो ।
पुणरवि तमेव जुज्जइ तोसत्थ होइ पुणरुत्तं ।। ७०२ ।।
आलोचणं दिवसिय राइयइरियापथं च बोद्धव्वं ।
पक्खिय चादुम्मासिय संवच्छर मुत्तमट्ठं च ।। ७०३ ।।

आणा भोगकिदं कम्जं जं किं पि मणसा कदं ।
तं सव्वं आलोचेज्ज हु अव्वाखित्तेण चे । ।। ७०४ ।।

आलोचणमालुंचण विगडीकरणं च भावसुद्धी दु ।
आलोचिदम्हि अराधणा अणालोचणे भज्जा ।। ७०५ ।।

उप्पणा उप्पणा माया आणुपुव्वसो णिहंतव्वा ।
आलोचणणिंदणगरहणाहिं ण पुणो तिअं विदियं ।। ७०६ ।।

आलोचणणिंदणगरहणाहिं अब्भुट्ठिओ अकरणाए ।
तं भावपडिक्कमणं सेसं पुण दव्वदो भणिअं ।। ७०७ ।।

भावेण अणुवजुत्तो दव्वीभूदो पडिक्कमदि जो दु ।
ठुं पडिकमदे तं पुण अट्ठं ण साधेदि ।। ७०८ ।।

भावेण संपजुत्तो त्थजोगो य जंपदे सुत्तं ।
सो कम्मणिज्जराए विउलाए वट्ठदे साधु ।। ७०९ ।।

सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पुच्छिमस्स य जिणस्स ।
अवराहे पडिकमणं मज्झिमयाणं जिणवराणं ।।७१०।।

जावेदु अप्पणो वा अण्णदरे वा भवे अदीचारो ।
तावेदु पडि णं मज्झिमयाणं जिणवराणं ।।७११।।

इरियागोयरसुमिणादि सव्वमाचरदु मा व आचरदु ।
पुरिमचरिमा दु सव्वे सव्वं णियमा पडिकमंति ।।७१२।।

मज्झिमया दिढबुद्धी एयग्गमणा अमोहलक्खा य ।
तम्हा हु जमाचरंति जं गरहंता वि सुज्झंति ।।७१३।।

पुरिमचरिमा दु जम्मा चलचित्ता चेव मोहल य ।
तो सव्वपडिक्कमण अंधलयघोडयदिट्ठंता ।।७१४।।

पडिकमणणिजुत्ती पुण एसा कहिया मया समासेण ।
पच्चक्खाणणिजुत्ती एत्तो वुड्ढं पवक्खामि ।।७१५।।

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य।
एसो पच्चक्खाणे णिक्खेओ छव्विहो होदि ॥७१६॥

पच्चक्खाओ पच्चक्खाणं पच्चक्खियव्वमेवं तु।
तीदे पच्चुप्पण्णे अणागदे चेव कालम्हि ॥७१७॥

आणय जाणणाविय उवजुत्तो मूलमज्झणिद्देसे।
सागारमणागारं अणुपालेंतो दढधिदीओ ॥७१८॥

एसो पच्चक्खाओ पच्चक्खाणे त्ति वुच्चदे चाओ।
पच्चविखदव्वमुवहिं आहारो चेव बोद्धव्वो ॥७१९॥

पच्चक्खाणं उत्तरगुणेसु खमणादि होदि णेयविहं।
तेण वि अ एत्थ पयदं तं पि य इणमो दसविह तु ॥७२०॥

अणागदमदिक्कंतं कोडीसहिदं णिखंडिदं चेव।
सागारमणागारं परिमाणगदं अपरिसेसं ॥७२१॥

अद्धाणगदं णवमं दसमं तु सहेदुगं वियाणाहि।
पवचक्खाणविपप्पा णिरुत्तिजुत्ता जिणमदम्हि ॥७२२॥

विणए तहाणुभासा हवदि य अणुपालणा य परिणामे।
एदं पच्चक्खाणं चदुव्विधं होदि णादव्वं ॥७२३॥

किदियम्मं उवचारिय विणओ तह णाणदंसणचरित्ते।
पचविधविणयजुत्तं विणयसुद्धं हवदि तं तु ॥७२४॥

अणुभासति गुरुवयणं अक्खरपदवजणं कमविसुद्धं।
घोसविसुद्धी सुद्ध एदं अणुभासणा सुद्धं ॥७२५॥

आदके उवसग्गे समे य दुब्भिक्खवुत्ति कतारे।
जं पालिदं ण भग्गं एदं अणुपालणासुद्धं ॥७२६॥

रागेण व दोसेण व मणपरिणामेण णदूसिदं जं तु।
तं पुण पच्चक्खाणं भावविसुद्धं तु णादव्वं ॥७२७॥

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य ।
एसो पच्चक्खाणे णिक्खेओ छव्विहो होदि ॥७१६॥

पच्चक्खाओ पच्चक्खाणं पच्चक्खियव्वमेवं तु ।
तीदे पच्चुप्पण्णे अणागदे चेव कालम्हि ॥७१७॥

आणय जाणणाविय उवजुत्तो मूलमज्झणिद्देसे ।
सागारमणागारं अणुपालेंतो दढधिदीओ ॥७१८॥

एसो पच्चक्खाओ पच्चक्खाणे त्ति वुच्चदे चाओ ।
पच्चक्खिदव्वमुवहि आहारो चेव बोद्धव्वो ॥७१९॥

पच्चक्खाणं उत्तरगुणेसु खमणादि होदि णेयविहं ।
तेण वि अ एत्थ पयदं तं पि य इणमो दसविहं तु ॥७२०॥

अणागदमदिक्कंत कोडीसहिदं णिखंडिदं चेव ।
सागारमणागारं परिमाणगद अपरिसेसं ॥७२१॥

अद्धाणगदं णवमं दसम तु सहेदुगं वियाणाहि ।
पच्चक्खाणविपप्पा णिरुत्तिजुत्ता जिणमदम्हि ॥७२२॥

विणए तहाणुभासा हवदि य अणुपालणा य परिणामे ।
एदं पच्चक्खाणं चदुव्विधं होदि णादव्वं ॥७२३॥

किदियम्मं उवचारिय विणओ तह णाणदंसणचरित्ते ।
पंचविधविणयजुत्तं विणयसुद्धं हवदि त तु ॥७२४॥

अणुभासदि गुरुवयणं अक्खरपदवंजणं कमविसुद्धं ।
घोसविसुद्धी सुद्धं एदं अणुभासणा सुद्ध ॥७२५॥

आदंके उवसग्गे समे य दुब्भिक्खवुत्ति कंतारे ।
जं पालिदं ण भग्गं एदं अणुपालणासुद्ध ॥७२६॥

रागेण व दोसेण व मणपरिणामेण णदूसिदं जं तु ।
तं पुण पच्चक्खाणं भावविसुद्धं तु णादव्वं ॥७२७॥

असणं खुहप्पसमणं पाणाणमणुग्गहं तहा पाणं ।
खादंति खादियं पुण सादंति सादियं भणियं ॥७२८॥

सव्वो वि य आहारो असणं सव्वो वि वुच्चदे पाणं।
सव्वो वि खादियं पुण सव्वो वि य सादियं भणियं।७२९॥

असणं पाणं तह खादियं चउत्थं च सादियं भणियं।
एवं परूविदं दु सद्दहिदुं जे सुही होदि ॥७३०॥

पच्चक्खाणणिजुत्ती एसा कहिया मया समासेण ।
काओसग्गणिजुत्ती एतो वुड्ढं पवक्खामि ॥७३१॥

णाम ट्ठवणा दव्वे खेत्ते काले य होदि भावे य ।
एसो काउसग्गे णिक्खेओ छव्विहो णेओ ॥७३२॥

काउस्सग्गो काउसग्गी काउसग्गस्स कारणं चेव ।
एदेसिं पत्तेयं परूवणा होदि तिण्हंपि ॥७३३॥

वोसरिदबाहुजुगलो चदुरंगुलअंतरेण समपादो ।
सव्वंगचलणरहिओ काउस्सग्गो विसुद्धो दु ॥७३४॥

मुक्खट्ठी जिदणिद्दो सुत्तत्थविसारदो करणसुद्धो ।
आदबलविरियजुत्तो काओस्सग्गो विसुद्धप्पा ॥७३५॥

काउस्सग्गं मोक्खपहदेसयं घादिकम्म अदिचारं ।
इच्छामि अहिट्ठादुं जिणसेविद देसिदत्ताओ ॥७३६॥

एगपदमस्सिदस्स वि जो अदिचारो दु रागदोसेहिं ।
गुत्तीहिं वदिकमो वा चदुहि कसाएहि व वदेहिं ॥७३७॥

छज्जीवणिकायेहिं भयमयठाणेहिं बंभ धम्मेहिं ।
काउस्सग्गं ठामिय तं कम्मणिघादणट्ठाए ॥७३८॥

जे केई उवसग्गा देवमाणुसतिरिक्खचेदणिआ ।
ते सव्वे अधिआसे काओस्सग्गे ठिदो संतो ॥७३९॥

सवच्छरमुक्कस्सं भिण्णमुहुत्त , जहण्णयं होदि ।
ऐसा काओसग्गा होति अणेगेसु ठाणेसु ।।७४०।।

अट्ठसद देवसियं कल्लद्धं पक्खिय च तिण्णि सया ।
उस्सासा कायव्वा णियमंते अप्पमत्तेण ।।७४१।।

चादुम्मासे चउरो सदाइ संवच्छरे य पचसदा ।
काओसग्गुस्सासा पचसु ठाणेसु णादव्वा ।।७४२।।

पाणिवह मुसावाए अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव ।
अट्ठसदं उस्सासा काओस्सग्गम्हि कादव्वा ।।७४३।।

भत्ते पाणे गामतरे य अरहतसमणसेज्जासु ।
उच्चारे पस्सवणे पणवीसं होंति उस्सासा ।।७४४।।

उद्देसे णिद्देसे सज्झाये वदंणे य पणिधाने ।
सत्तावीसुस्सासा काओस्सग्गम्हि कादव्वा ।।७४५।।

काओसग्गं इरियावहादिचारस्स मोक्खमग्गम्मि ।
वोसट्ठचत्तदेहा करंति दुक्खक्खयट्ठाए ।।७४६।।

एवं दिवसियराइय पक्खिय चादुम्मासियवरिस चरिमेसु ।
णादूण ठंति धीरा घणिदं दुक्खक्खयट्ठाए ।।७४७।।

काओसग्गम्हि ठिदो चिंतेदिरियापहस्स अविचारं ।
तं सव्वं समाणित्ता धम्मं सुक्कं च चिंतेज्जो ।।७४८।।

तह दिवसियरादियपक्खियचदुमासिय वरिसचरिमेसु ।
तं सव्व समाणित्ता धम्मं सुक्कं च झायेज्जो ।।७४९।।

काओसग्गम्हि कदे जह भिज्जदि अंगुवंगसंधीओ ।
तह भिज्जदि कम्मरयं काउस्सग्गस्स करणेण ।।७५०।।

बलवीरियमासेज्ज य खेत्ते काले सरीरसंहडणं ।
काओसग्गं कुज्जा इमे दु दोसे परिहरंतो ।।७५१।।

घोडय लदा य खंभे कुड्ढे माले य सवरवधू णिगले ।
लंबुत्तरथणदिट्ठी वायसखलिणे जुगकविद्वे ।।७५२।।

सीसपकंपिय मुइयं अंगुलि भूविकार वारुणीपेई ।
काओसग्गेण ठिदो एदे दोसे परिहरेज्जो ।।७५३।।

आलोगणं दिसाणं गीवाउण्णामणं पणमणं च ।
णिट्ठीवणंगमरिसो काउस्सग्गम्हि वज्जिज्जो ।।७५४।।

णिक्कूडं सविसेसं बलाणुरूवं वयाणुरूवं च ।
काओस्सग्गं धीरा करंदि दुक्खक्खयट्ठाए ।।७५५।।

जो पुण तीसदिवरिसो सत्तरिवरिसेण पारणाए समो ।
विसमो य कूडवादी णिव्विण्णाणी य सो य जडो ।।७५६।।

उट्ठिदउट्ठिद उट्ठिदणिविट्ठ उवविट्ठउट्ठिदो चेव ।
उवविट्ठणिविट्ठो वि य काओसग्गो चउट्ठाणो ।।७५७।।

धम्मं सुक्कं च दवे ज्झायदि ज्झाणाणि जो ठिदो ो ।
एसो काओसग्गो इह अट्ठिदउट्ठिदो णाम ।।७५८।।

अट्टं रुद्दं च दुवे ज्झायदि ज्झाणाणि जो ठिदो ो ।
एसो काओसग्गो उट्ठिदणिविठ्ठिदो णाम ।।७५९।।

धम्मं सुक्कं च दुवे ज्झायदि ज्झाणाणि जो णिसण्णो दु ।
एसो काओसग्गो उवविट्ठउट्ठिदो णाम ।।७६०।।

अट्टं रुद्दं च दुवे ज्झायदि ज्झाणाणि जो णिस्सण्णो दु ।
एसो काओसग्गो णिसण्णिदणिसण्णिदो णाम ।।७६१।।

दंसणणाणचरित्ते उवओगे संजमे विउस्सग्गे ।
पच्चक्खाणे करणे पणिधाणे तह य समिदीसु ।।७६२।।

विज्जा चरण महव्व समाधि गुणबंभचेरछक्काए ।
खमणिग्गह अज्जवमद्दवमुत्तीविणए च सद्दहणे ।।७६३।।

एव गुणो महत्थो मणसंकप्पो पसत्थ वीसत्थो ।
संकप्पोत्ति वियाणह जिणसासणसम्मदं सव्वं ।।७६४।।

परिवारइड्ढी सक्कारपूयण असणपाणहेऊ वा ।
लयण सयणासण भत्तपाणकामट्ठहेऊ वा ।।७६५।।

आणाणिद्देस पमाणकित्तिवण्ण पहावणगुणट्ठ ।
ज्झाण मिणमप्पसत्थं मणसंकप्पो दु वीसत्थो ।।७६६।।

काउस्सग्गणिजुत्तो एसा कहिया मया समासेण ।
संजमतवड्ढियाण णिग्गंथाणं महरिसीण ।।७६७।।

सव्वा वासणिजुत्तो णियमा सिद्धो त्ति होइ णायव्वो ।
अह णिस्सेसं कुणदि ण णियमा आवासया होंति ।।७६८।।

आवासयं तु आवासएसु सव्वेसु अपरिहीणेसु ।
मणवयणकायगुत्तिंदियस्स आवासया होंति ।।७६९।।

तियरणस०वविसुद्धो दव्वे खेत्ते यथुत्तकालम्मि ।
मोणेणव्वाखित्तो कुज्जा आवासया णिच्चं ।।७७०।।

जो होदि णिसीदप्पा णिसीहिया तस्स भावदो होदि ।
अणिसिद्धस्स णिसीहियसद्दो हवदि केवलं तस्स ।।७७१।।

आसाए विप्पमुक्कस्स आसिया होदि भावदो ।
आसाए अविप्पमुक्कस्स सद्दो हवदि केवलं ।।७७२।।

णिज्जुत्ती णिजुत्ती एसा कहिदा मए समासेण ।
अह वित्थारपसंगोऽणियोगदो होदि णादव्वो ।।७७३।।

आवासयणिजुत्ती एसा कथिदा समासदो विहिणा ।
जो उवजुंजदि णिच्चं सो सिद्धिं जादि विसुद्धप्पा ।।७७४।।

णमिऊण जिणवरिन्दे तिहुवणवरणाणदंसणपदीवे ।
कञ्चण पियं गुविद्दुमघण कुंदमुणालवण्णाणं ।।७७५।।

णाणुज्जोवयराणं लोगा लोगम्हि सव्वदव्वाणं ।
खेत्त गुण काल पज्जयविजाणगाण पणमियाणं ।।७७६।।

अणयारमहरिसीणं णाइंदणरिंदइंद महियाणं ।
वोच्छामि विविहसार भावणसुत्तं गुणमहत्तं ।।७७७।।

णिस्सेसदेसिदमिणं सुत्तं धीरजणबहुमदमुदार ।
अणगारभावणमिणं सुसमण परिकित्तणं सुणह ।।७७८।।

णिग्गंथमहरिसीणं अणयारचरित्तजुत्तिगुत्ताणं ।
णिच्छिदमहातवाणं वोच्छामि गुणे गुणधराणं ।।७७९।।

लिगं वदं च सुद्धी वसदिविहारं च भिक्ख णाणं च ।
उज्झनसुद्धी य पुणो वक्कं च तवं तधा ज्झाणं ।।७८०।।

एदमणयारसुत्तं दसविधपद विणयअत्थसंजुत्तं ।
जो पढइ भत्तिजुत्तो तस्स पणस्संति पावाइं ।।७८१।।

चलचवलजीविदमिणं णाऊण माणुसत्ताणमसारं ।
णिव्विणण्ण कामभोगा धम्मम्मि उवट्ठिदमदीया ।।७८२।।

णिम्मालिय समुणावि य धण कणय समिद्ध बंध णं च ।
पयहंति वीरपुरिसा विरत्तकामा गिहावासे ।।७८३।।

जम्मणमरणुव्विग्गा भीदा संसार वासमसुभस्स ।
रोचन्ति जिणवरमदं पावयणं वड्ढमाणस्स ।।७८४।।

पवरवरधम्मतित्थं जिणवरवसहस्स वड्माणस्स ।
तिविहेण सद्दहंति य णत्थि इदो उत्तर अण्णं ।।७८५।।

उच्छाहणिच्छिदमदी ववसिद ववसाय बद्ध कच्छा य ।
भावाणुरायरत्ता जिणपण्णत्तम्मि धम्मम्मि ।।७८६।।

धम्ममणुत्तरमिमं कम्ममलपडलपाडयं जिणक्खादं ।
संवेग जायसडा गिण्हंति महव्वदा पंच ।।७८७।।

सच्चवयणं अहिंसा अदत्तपरिवज्जणं च रोचेंति ।
तह बंभचेरगुत्तो परिग्गहादो विमुत्ति च ॥७८८॥

पाणिवहमुसावाद अदत्त मेहुण परिग्गहं चेव ।
तिविहेण पडिक्कते जीवज्जीवं दिढधिदीया ॥७८९॥

ते सव्वगंथमुक्का अममा अपरिग्गहा जहाजादा ।
वोसट्ट चत्तदेहा जिणवरधम्मं समं णेंति ॥७९०॥

सव्वारंभणियत्ता जुत्ता जिणदेसिदम्मि धम्मम्मि ।
ण य इच्छंति ममत्तिं परिग्गहे बालमित्तम्मि ॥७९१॥

अपरिग्गहा अणिच्छा संतुट्ठा सुट्ठिदा चरित्तम्हि ।
अवि णीए वि सरीरे ण करेंति मुणी ममत्ति ते ॥७९२॥

ते णिम्ममा सरीरे जत्थत्थमिदा वसंति अणिएदा ।
समणा अप्पडिबुद्धा जह विट्टुणट्ठा वा ॥७९३॥

गामेयरादिवासी णयरे पंचाहवासिणो धीरा ।
सवणा फासुविहारी विवित्तएगंतवासी य ॥७९४॥

एगंत मग्गंता समणा वरगंधहत्थिणो धीरा ।
सुक्कज्झाणरदीया मुत्तिसुहं उत्तमं पत्ता ॥७९५॥

एयाइणो अविहला वसंति गिरिकंदरेसु सप्पुरिसा ।
धीरा अदीणमणसा रममाणा वीरवयणम्मि ॥७९६॥

वसधिसु अप्पडिबद्धा ण ते ममत्तिं करेंति वसदीसु ।
सुण्णागारमसाणे वसंति ते वीरवसदीसु ॥७९७॥

पब्भारकंदरादिसु कापुरिसभयंकरेसु सप्पुरिसा ।
वसदिं अभिरोचंति य सावदाबहुघोरगंभीरा ॥७९८॥

एयंतम्मि वसंता वयरग्घतरच्छभल्लाणं ।
आगुंजियमारसियं सुणंति सद्दं गिरिगुहासु ॥७९९॥

रत्तिचरसउणाणं णाणाकदरसिदभीदसद्दालं ।
उण्णावेंति वणंतं जत्थ वसंता समणसीहा ॥८००॥

सीहा इव णरसीहा पव्वयतडकडयकंदरगुहासु ।
जिणवयणमणुमणंता अणुविग्गमणा परिवसंति ॥८०१॥

सावदसयाणु चरिये परिभय भी मंध पार गंभीरे ।
धम्माणुरायरत्ता वसंति रत्ति गिरिगुहासु ॥८०२॥

सज्झायज्झाणजुत्ता रत्ति ण सुवंति ते पयामं तु ।
सुत्तत्थ चिंतंता णिद्दाय वसं ण गच्छंति ॥८०३॥

पलियंकणिसिज्जगदा वीरासणएयपासाईय ।
ठाणुक्कडेहिं मुणिणो खवंति रत्ति गिरिगुहासु ॥८०४॥

उवधिभरविप्पमुक्का वोसट्टंगा णिरंबरा धीरा ।
णिक्किंचणपरिसुद्धा साधु सिद्धिं वि मग्गंति ॥८०५॥

मुत्ता णिरावयेक्खा सच्छंदविहारिणो जहा वादो ।
हिंडंति णिरुव्विग्गा णयरायरमंडियं वसुहं ॥८०६॥

वसुधम्मि वि विरहंता पीडं ण करेंति कस्सई कयाई ।
जीवेसु दयावण्णा माया जह पुत्तभण्डेसु ॥८०७॥

जीवाजीवविहत्तिं णाणुज्जोएण सुट्ठु णाऊण ।
तो परिहरंति धीरा सावज्जं जेत्तियं किंचि ॥८०८॥

सावज्जकरणजोग्गं सव्वं तिविहेण तियरण विसुद्धं ।
वज्जंति वज्जभीरू जावज्जीवा य णिग्गंथा ॥८०९॥

तणरुक्खहरिदछेदणतयपत्तपवालकंदमूलाइं ।
फलपुप्फबीयघादं ण करेंति मुणी ण कारेंति ॥८१०॥

पुढवीय समारंभं जलपवणग्गीतसाणमारंभं ।
ण करेंति ण कारेंति य कारेंतं णाणुमोदंति ॥८११॥

णिक्खित्तसत्थदंडा समणा समसव्वपाणभूदेसु ।
अप्पट्ठं चिंतेंति हवंति अव्वावडा साहू ॥८१२॥

उवसंता दीणमणा उवक्खसीला हवंति मज्झत्था ।
णिहुदा अलोलमसठा अविम्हिया कामभोगेसु ॥८१३॥

जिणवयणमणुगणेंता संसार महाभयं चिंतंता ।
गब्भवसदीसु भीदा भीदा पुण जम्ममरणेसु ॥८१४॥

घोरे णिरयसरिच्छे कुंभीपाए सपुच्चमाणाणं ।
रुहिरचलाविलपउरे वसिदव्वं गब्भवसदीसु ॥८१५॥

दिट्ठपरमट्ठसारा विण्णाणवियक्खणाय बुद्धीए ।
णाणकयदीवियाए अगब्भवसदी विमग्गंति ॥८१६॥

भावेंति भावणरदा वइरग्गं वीदरागयाणं ज ।
णाणेण दंसणेण च चरित्तजोएण विरिएण ॥८१७॥

देहे णिरावयक्खा अप्पाणं दमरुई दमेमाणा ।
धिदिपग्गहपग्गहिदा छिंदंति भवस्स मूलाइं ॥८१८॥

छट्ठट्ठमभत्तेहिं पारेंति य परघरम्मि भिक्खाए ।
जमणट्ठं भुंजंति य ण वि य पयामं रसट्ठाय ॥८१९॥

णवकोठीपरिसुद्धं दसदोसविवज्जियं मलविसुद्धं ।
भुंजंति पाणिपत्ते परेण दत्तं परघरम्मि ॥८२०॥

उद्देसिय कीदयडं अण्णादं सकिदं अभिहडं च ।
सुत्तप्पठिकूडाणि य पडिसिद्धं तं विवज्जंति ॥८२१॥

अण्णादमणुण्णादं भिक्खं णिच्चुच्चमज्झिमकुलेसु ।
घरपतिहि हिंडंति य मोणेण मुणी समादिंति ॥८२२॥

सीयलमसीयलं वा सुक्कं लुक्खं सिणिद्ध सुद्धं वा ।
लोणिदमलोणिदं वा भुंजन्ति मुणी अणासादं ॥८२३॥

रत्तिचरसउणाणं णाणाकदरसिदभीदसद्दाल ।
उण्णावेंति वणतं जत्थ वसंता समणसीहा ॥८००॥

सीहा इव णरसीहा पव्वयतडकडयकदरगुहासु ।
जिणवयणमणुमणता अणुविग्गमणा परिवसति ॥८०१॥

सावदसयाणु चरिये परिभय भी मंध पार गभीरे ।
धम्माणुरायरत्ता वसंति रत्ति गिरिगुहासु ॥८०२॥

सज्झायज्झाणजुत्ता रत्ति ण सुवंति ते पयामं तु ।
सुत्तत्थं चितता णिद्दाय वसं ण गच्छति ॥८०३॥

पलियंकणिसिज्जगदा वीरासणएयपासाईय ।
ठाणुक्कडेंहि मुणिणो खवंति रत्ति गिरिगुहासु ॥८०४॥

उवधिभरविप्पमुक्का वोसट्टंगा णिरंबरा धीरा ।
णिक्किचणपरिसुद्धा साधु सिद्धि वि मग्गंति ॥८०५॥

मुणा णिरावेवक्खा सच्छंदविहारिणो जहा वादो ।
हिंडति णिरुव्विग्गा णयरायरमंडियं वसुहं ॥८०६॥

वसुधम्मि वि विरहंता पीडं ण करेंति कस्सई कयाईं ।
जीवेसु दयावण्णा माया जह पुत्तभण्डेसु ॥८०७॥

जीवाजीवविहत्ति णाणुज्जोएण सुट्ठु णाऊण ।
तो परिहरति धीरा सावज्ज जेत्तियं किंचि ॥८०८॥

सावज्जकरणजोग्गं सव्वं तिविहेण तियरण विसुद्धं ।
वज्जंति वज्जभीरू जावज्जीवा य णिग्गंथा ॥८०९॥

तणरुक्खहरिदछेदणतयपत्तपवालकंदमूलाइं ।
फलुपुप्फवीयघादं ण करेंति मुणी ण कारेंति ॥८१०॥

पुढवीय समारंभं उलपवणग्गीतसाणमारभं ।
ण करेति ण कारेंति य कारेंतं णाणमोदंति ॥८११॥

णिक्खित्तसत्थदंडा समणा समसव्वपाणभूदेसु ।
अप्पट्ठं चिंतेंति हवंति अव्वावडा साहू ।।८१२।।

उवसंता दीणमणा उवक्खसीला हवंति मज्झत्था ।
णिहुदा अलोलमसठा अविम्हिया कामभोगेसु ।।८१३।।

जिणवयणमणुगणेंता संसार महाभयं चिंतंता ।
गब्भवसदीसु भीदा भीदा पुण जम्ममरणेसु ।।८१४।।

घोरे णिरयसरिच्छे कुंभीपाए सपुच्चमाणाणं ।
रुहिरचलाविलपउरे वसिदव्वं गब्भवसदीसु ।।८१५।।

दिट्ठपरमट्ठसारा विण्णाणवियक्खणाय बुद्धीए ।
णाणकयदीवियाए अगब्भवसदी विमग्गंति ।।८१६।।

भावेंति भावणरदा वइरग्गं वीदरागयाणं ज ।
णाणेण दंसणेण च चरित्तजोएण विरिएण ।।८१७।।

देहे णिरावयक्खा अप्पाणं दमरुई दमेमाणा ।
धिदिपग्गहपग्गहिदा छिंदंति भवस्स मूलाइं ।।८१८।।

छट्ठट्ठमभत्तेहिं पारेंति य परघरम्मि भिक्खाए ।
जमणट्ठं भुंजंति य ण विय पयामं रसट्ठाय ।।८१९।।

णवकोठीपरिसुद्धं दसदोसविवज्जियं मलविसुद्धं ।
भुंजंति पाणिपत्ते परेण दत्तं परघरम्मि ।।८२०।।

उद्देसिय कीदयडं अण्णादं संकिदं अभिहडं च ।
सुत्तप्पठिकूडाणि य पडिसिद्धं तं विवज्जंति ।।८२१।।

अण्णादमणुण्णादं भिक्खं णिच्चुच्चमज्झिमकुलेसु ।
घरपंतिहि हिंडंति य मोणेण मुणी समादिंति ।।८२२।।

सीयलमसीयल वा सुक्कं लुक्खं सिणिद्ध सुद्धं वा ।
लोणिदमलोणिदं वा भुंजन्ति मुणी अणासादं ।।८२३।।

अक्खोमक्खणमेत्तं भुंजंति मुणी पाणधारणणिमित्तं ।
पाणं धम्मणिमित्तं धम्मं पि चरंति मो ट्ठं ॥८२४॥

लद्धे ण होंति तुट्ठा ण वि य अलद्धेण दुम्मणा होंति ।
दुक्खे सुहे य मुणिणो मज्झत्थ मणाउला होंति ॥८२५॥

णवि ते अभित्थुणंति य पिंडत्थं ण वि य किंच जायंति ।
मोणव्वदेण मुणिणो चरंति भिक्खं अभासंता ॥८२६॥

देहीति दीणकलुस भासं णेच्छंति एरिसं वोत्तुं ।
अविणदी अलाभेणं ण य मोणं भजंदे धीरा ॥८२७॥

पयणं व पायणं वा ण करेंति अ णेव ते करावेंति ।
पयणारंभणियत्ता संतुट्ठा भिक्खमेत्तेण ॥८२८॥

असणं जदि वा पाणं खज्जं भोज्जं च लिज्ज पेज्जं वा ।
पडिलेहिऊण सुद्धं भुंजंते पाणिपत्तेसु ॥८२९॥

जं होज्ज अविव्वण्णं पासुग पसत्थं तु एसणासुद्धं ।
भुंजंति पाणिपत्ते लद्धेण य गोयरग्गम्मि ॥८३०॥

जं होज्ज बेहिअं तेहिअ च वेवण्णजतुसंसिट्ठं ।
अप्पासुगं तु णच्चा तं भिक्खं मुणि विवज्जंति ॥८३१॥

जं पुप्फिय किण्णइदं दट्ठूणं पूपप्पडादीणि ।
वज्जंति वज्जणिज्जं भिक्खू अप्पासुयं जं तु ॥८३२॥

ज सुद्धमसंसत्तं खज्जं भोज्जं च लेज्ज पेज्जं वा ।
गिण्हंति मुणी भिक्खं सुत्तेण अणिंदियं जं तु ॥८३३॥

पलकंदमूलबीयं अणग्गिपक्कं तु आमयं किंचि ।
णच्चा अणेसणीयं ण वि य पडिच्छंति ते धीरा ॥८३४॥

जं हवदि अणिव्वीयं णिवट्टिमं फासुयं कयं चेव ।
णाऊण एसणीयं तं भिक्खं मुणी पडिच्छंति ॥८३५॥

भोत्तूण गोयरग्गे तहेव मुणिणो पुणो वि पडिकंता ।
परिमिदएयाहारा खमणेण पुणो वि पारेंति ।।८३६।।

ते लद्धणाणचक्खू णाणुज्जोएण दिट्ठपरमट्ठा ।
णिस्संकिदणिव्विदिगिंछादबलपरक्कम्मा साधू ।।८३७।।

अणुबद्धतवोकम्मा खवणवसगदा तवेण अणुअंगा ।
धीरा गुणगंभीरा अभग्गजोगा दढचरित्ता ।।८३८।।

आलीणगंडमंसा पायडभिउडीमुहा अधियदच्छा ।
सवणा तवं चरंता उक्किकण्णा धक्कमलच्छीए ।।८३९।।

आगमकदविण्णाणा अट्ठंगविदू य बुद्धिसंपण्णा ।
अंगाणि दस य दोण्णि य चोद्दस य धरंति पुव्वाइं ।।८४०।।

धारणगहणसमत्था पदाणुसारी य बीजबुद्धी य ।
संभिण्णकोट्ठबुद्धी सुयसागर पारया धीरा ।।८४१।।

सुदरयणपुण्णकण्णा हेउणयविसारदा विउलबुद्धी ।
णिउणत्थसत्थ कुसला परमपयवियाणया समणा ।।८४२।।

अवगदमाणत्थंभा अणुस्सिदा अगव्विदा अचंडा य ।
दंता मद्दवजुत्ता समयविदण्हू विणीदा य ।।८४३।।

उवलद्धपुण्णपावा जिणसासणगहिद मुणिदपज्जाया ।
करचरणसंवुडंगा झाणुवजुत्ता मुणी होंति ।।८४४।।

ते छिण्णणेह बंधा णिण्णेहा अप्पणो सरीरम्मि ।
ण करंति किंचि साहू परिसंठप्पं सरीरम्मि ।।८४५।।

मुहणयणदंतधोवणमुव्वट्टण पादधोवणं चेव ।
संवाहण परिमद्दण सरीरसंठावणं सव्वं ।।८४६।।

धूवण वमण विरेयण अंजण अब्भंग लेवणं चेव ।
णत्थुय वत्थियकम्मं सिरवेज्झं अप्पणो सव्वं ।।८४७।।

उप्पण्णम्मि य वाही सिरवेयण कुक्खिवेयणं चेव ।
अधियासंति सुधिदिया कायतिगिच्छं ण इच्छंति ।।८४८।।

ण य दुम्मणा ण वियला अणाउला होंति चेव सप्पुरिसा ।
णिप्पडियम्मसरीरा देंति उरं वाहिरोगाणं ।।८४९।।

जिणवयणवोसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमिदभूदं ।
जरमरण वाहिवेयण खयकरणं सव्वदुक्खाणं ।।८५०।।

जिणवयणणिच्छिदमदी अविरमणं अब्भुवेंति सप्पुरिसा ।
ण य इच्छंति अकिरियं जिणवयणवदिक्कमं कादुं ।।८५१।।

रोगाणं आयदाणं वाधिसदसमुच्छिदं सरीरघरं ।
धीरा खणमवि रागं ण करेंति मुणी सरीरम्मि ।।८५२।।

एदं सरीरमसुई णिच्चं कलिकलुसभायणमचोक्खं ।
अंतोछाइद डिड्ढिस खिब्भिसभरिदं अमेज्झघरं ।।८५३।।

वसमज्जमंससोणियपुप्फसकालेज्जसिंभसीहाणं ।
सिरजाल अट्ठिसंकडचम्मे णद्धं सरीरघरं ।।८५४।।

बीभच्छं विच्छुइयं थहायसुणाण वच्चमुत्ताणं ।
अंसूयपूयलसियं पयलियलालाउलमचोक्खं ।।८५५।।

कायमलमत्थुलिंगं दन्तमलविचिक्कणं गलिदसेदं ।
किमिजंतुदोसभरिदं सेंणियाकद्दमसरिच्छं ।।८५६।।

अट्ठि च चम्मं च तहेव मंसं पित्तं च सिंभं तह सोणिदं च ।
अमेज्झयंघायमिणं सरीरं पस्संति णिव्वेदगुणाणुपेहि ।।८५७।।

अट्ठिणिछण्णं णालिणिबद्धं कलिमलभरिदं किमिउलपुण्णं ।
मंसविलित्तं तयपडिछण्णं सरीरघरं तं सददमचोक्खं ।।८५८।।

एदारिसे सरीरे दुग्गंधे कुणिमपूदियमचोक्खे ।
सडणपडणे असारे रागं ण करंति सप्पुरिसा ।।८५९।।

जं वंतं गिहवासे विसयसुहं इंदियत्थ परिभोए ।
तं खु ण कदाइ भूदो भुंजंति पुणो वि सप्पुरिसा ।।८६०।।

पुव्वरदिकेलिदाइं जा इड्ढि भोगभोयणविहिं च ।
ण वि ते कहेंति कस्स वि ण वि ते मणसा विचिंतंति ।।८६१।।

भासं विणयविहूणं धम्मविरोहि विवज्जाए वयणं ।
पुच्छिदमपुच्छिदं वा ण वि ते भासंति सप्पुरिसा ।।८६२।।

अच्छीहिं य पेच्छंता कण्णेहिं य बहुविहाइ सुणमाणा ।
अत्थंति मूयभूया ण करंति हु लोइय कहाओ । ।।८६३।।

इत्थिकहा अत्थकहा भत्तकहा खेडकव्वडाणं च ।
रायकहा चोरकहा जणवदणयरायरकहाओ ।।८६४।।

णडभडमल्लकहाओ मायाकरजल्लमुट्ठियाणं च ।
अज्जललंवियाणं कहासु ण वि रज्जए धीरा ।।८६५।।

विकहाविसोत्तियाणं खणमवि हिदएण ते ण चिंतंति ।
धम्मे लद्धमदीया विकहा तिविहेण वज्जंति ।।८६६।।

कुक्कय कंदप्पाइय हासं उल्लावणं च खेडं च ।
मददप्पहत्थवट्टिं ण करेंति मुणी ण कारेंति ।।८६७।।

ते होंति णिव्वियारा थिमिदमदी पदिट्ठिदा जहा उदधी ।
णियमेसु दिढव्वदिणो पारत्तविमग्गया समणा ।।८६८।।

जिणवयणभासिदत्थं पत्थं च हिदं च धम्मसंजुत्तं ।
समओवयारजुत्तं पारत्तहिदं कधं करेंति ।।८६९।।

सत्ताधिय सप्पुरिसा मग्गं मण्णंति वीदरागाणं ।
अणयारभावणाए भावेंति य णिच्चमप्पाणं ।।८७०।।

णिच्चं च अप्पमत्ता संजमसमिदीसु झाणजोगेसु ।
तवचरणकरणजुत्ता हवंति समणा समिदपावा ।।८७१।।

हेमंते धिदिमंता सहंति ते हिमरयं परमघोरं ।
अंगेसु णिवडमाणं णलिणीवणविणासयं सीयं ॥८७२॥

जल्लेण मइलिदंगा गिम्हे उण्हादवेण दड्ढंगा ।
चेट्ठंति णिसिट्ठंगा सूरस्स य अहिमुहा सूरा ॥८७३॥

धारंधयारगुविलं सहंति ते वादवाछलं चंडं ।
रत्तिदियं गलंतं सप्पुरिसा रुक्खमूलेसु ॥८७४॥

वादं सीदं उण्हं तण्हं च छुधं च दंसमसयं च ।
सव्वं सहंति धीरा कम्माण खयं करेमाणा ॥८७५॥

दुज्जणवयणचडयणं सहंति अच्छोड सत्थपहरं च ।
ण य कुप्पंति महरिसी खमणगुणवियाणया साहू ॥८७६॥

जइ पंचिंदियदमओ होज्ज जणो रूसिदव्वयणियत्तो ।
तो कदरेण कयंतो रूसिज्ज जये मूणयाणं ॥८७७॥

जदि वि य करेंति पावं एदे जिणवयणबाहिरा पुरिसा ।
तं सव्वं सहिदव्वं कम्माण खयं करंतेण ॥८७८॥

लद्धूण इमं सुदणिहिं ववसायविरज्जियं तह करेह ।
जह सुग्गइचोराणं ण उवेह वसं कसायाणं ॥८७९॥

पंचमहव्वयधारी पंचसु समिदीसु संजदा धीरा ।
पंचिंदियत्थविरदा पंचमगइमग्गया सवणा ॥८८०॥

ते इंदिएसु पंचसु कयाइ रागं पुणो ण बंधंति ।
उण्हेण व हारिद्दं णस्सदि राओ सुविहिदाणं ॥८८१॥

विसएसु पधावंता चवला चंडा तिदंडगुत्तेहिं ।
इंदियचोरा घोरा वसम्मि ठविदा ववसिदेहिं ॥८८२॥

जह चंडो वणहत्थी उद्दामो णयररायमग्गम्मि ।
तिक्खंकुसेण धरिदो णरेण दिढसजिजुत्तेण ॥८८३॥

तह चंडो मणहत्थी उद्दामो विसयराजमग्गम्मि ।
णाणं कुसेण धरिदो रुद्धो जह मत्तहत्थिव्व ॥८८४॥

ण च एदि विणिस्सरिदु मणहत्थी ज्झाणवारिबंधणिदो ।
बद्धो तह य पयंडो विरागरज्जूहि धीरेहि ॥८८५॥

धिदिधणिदणिच्छिदमयी चरित्त पायार गोउरं तुंगं ।
ण च यंति पहंसेदु सप्पुरिससुरक्खिदं णयरं ॥८८६॥

रागो दोसो मोहो इंदियचोरा य उज्जदा णिच्चं ।
ण य यंति पहंसेदुं सप्पुरिससुरक्खियं णयरं ॥८८७॥

एदे इंदियतुरया पयडीदोसेण चोइया संता ।
उम्मग्गं णिंति रहं करेह मणपग्गहं बलियं ॥८८८॥

रागो दोसो मोहो विदीय धीरेहि णिज्जिदा सम्मं ।
पंचेंदिया य दंता वदोववासप्पहारेहि ॥८८९॥

दंतेंदिया महरिसी रागं दोस च ते खवेदूणं ।
झाणोवओगजुत्ता खवेंति कम्मं खविदमोहा ॥८९०॥

अट्ठविहकम्ममूलं खविदकसाया खमादिजुत्तेहि ।
उद्धदमूलो व दुमो ण जाइदव्वं पुणो अत्थि ॥८९१॥

अवहट्ट अट्टरुद्दं धम्मं सुक्कं च झाणमोगाढं ।
ण च एदि पधंसेदुं अणियट्टि सुक्कलेस्साए ॥८९२॥

जह ण चलइ गिरिराजो अवरुत्तरपुव्वदक्खिणो वाए ।
एवमचलिदो जोगी अभिक्खणं झायदे झाणं ॥८९३॥

णिट्ठविदकरणचरणा कम्मं णिद्धुद्धद धुणित्ता य ।
जरमरणविप्पमुक्का उवेंति सिद्धि धुदकिलेसा ॥८९४॥

समणोत्ति संजदो त्ति य रिसिमुणि साधुत्ति वीदरागो त्ति ।
णामाणि सुविहिदाणं अणगार भदंत दंतो त्ति ॥८९५॥

अणयारा भयवंता अपरिमिदगुणा थुदा सुरिंदेहिं ।
तिविहेणुत्तिण्णपारे परमगदिगदे पणिवदामि ।।८९६।।

एवं चरियविहाणं जो काहदि संजदो ववसिदप्पा ।
णाणगुणसंपजुत्तो सो गाहदि उत्तमं ठाणं ।।८९७।।

भत्तीए मया कहियं अणयाराणं त्थवं ासेण ।
जो सुणदि य पयदमदी सो पावदि सव्वकल्लाणं ।।८९८।।

एवं मए अभित्थुदा अणगारा गारवेहि उम्मुक्का ।
धरणिधरेहिं य महिया देंतु समाहिं च मे बोहिं ।।८९९।।

उवदो कालम्मि सदा तिगुत्तिगुत्ते पुणो पुरिससीहे ।
जो थुणदि य ुरत्तो सो लहदि लाहं तिरयणस्स ।।९००।।

एवं संजमरासिं करेंति जे संजदा ववसिदप्पा ।
ते णाणदंसणधरा देंतु समाहिं च मे बोहिं ।।९०१।।

अनगारभावनगुणा मए अभित्थुदा महाणुभावा ।
अणयारवीदरागा देंतु समाहिं च मे बोहिं ।।९०२।।

सिद्धे णमंसिदूण य झाणुत्तमखविय दीहसंसारे ।
दह दह दो दो य जिणे दह दो अणुपेहणा वुच्छं ।।९०३।।

अद्धु वमसरणमेगत्तमण्णसंसारलोगअसुचित्तं ।
आ वरणिज्जर बोधिं च चित्तेज्जो ।।९०४।।

ठाणाणि आसणाणि य देवासुरमणुयइड्ढिसोक्खाइं ।
मादुपिदु सयण संवासदा य पीदी वि य अणिच्चा ।।९०५।।

सामग्गिंदियरूवं मदिजोवणजीविदं तेजं ।
गिहसयणासणभंडादीया अणिच्चेत्ति चिंतेज्जो ।।९०६।।

हयगयरहणबलबाहणाणि मंतोसधाणि विज्जाओ ।
मच्चुभयस्स ण सरणं णिगडी णीदी य णीया य ।।९०७।।

जम्मजरामरणसमाहिदम्हि सरणं ण विज्जदे लोए ।
जरमरणहारिउवारणं तु जिणसासणं मुच्चा ॥६०८॥

मरणभयम्हि उवगदे देवा वि सइंदिया ण तारेंति ।
धम्मो त्ताणं सरणं गदित्ति चिंतेहि सरणत्तं ॥६०९॥

सयणस्स परियणस्स य मज्झे एक्को रुवतओ दुहिदो ।
वज्जदि मच्चुवसगदो ण जणो कोई समं एदि ॥६१०॥

एक्को करेइ कम्मं एक्को हिडदि य दीहसंसारे ।
एक्को जायदि मरदि य एव चिंतेहि एयत्तं ॥६११॥

मादुपिदुसयणसंबंधिणो य सव्वे वि अत्तणो अण्णे ।
इहलोग बंधवा ते ण य परलोगं समं जंति ॥६१२॥

अण्णो अण्णं सोयदि मदोत्ति मम णाहगो त्ति मण्णंतो ।
अत्ताणं ण दु सोयदि संसार महण्णवे वुड्ढं ॥६१३॥

अण्णं इमं सरीरादिगं पि जं होज्ज बाहिरं दव्वं ।
णाणं दंसणमादात्ति एवं चिंतेहि अण्णत्तं ॥६१४॥

मिच्छत्तेणोच्छण्णो मग्गं जिणदेसिदं अपेच्छंतो ।
भमदि हि भीमकुडिल्ले जीवो संसारकंतारे ॥६१५॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य चदुव्विहो य संसारो ।
चदुगदिगमणणिबद्धो बहुप्पयारे हि णादव्वो ॥६१६॥

तत्थ जरामरणभयं दुक्खं वियविप्पओग बहिणयं ।
अप्पियसंजोगं वि य रोग महावेदणाओ य ॥६१७॥

जायंतो य मरंतो जलथलखयरेसु तिरियणिरएसु ।
माणुस्से देवत्ते दुक्खसहस्साणि पप्पोदि ॥६१८॥

जे भोगा खलु केई देवा माणुस्सिया य अणुभूदा ।
दुक्खं च णंतखुत्तो णारयतिरिएसु जोणीसु ॥६१९॥

संजोगविप्पजोगा लाहालाहं सुहं च दुक्खं च ।
संसारे अणुभूदा माणं च तहावमाणं च ॥६२०॥

एवं बहुप्पयारं संसार विविहदुक्खथिरसारं ।
णाऊण विचिंतिज्जो तहेव लहुमेव णिस्सारं ॥६२१॥

एगविहो खलु लोओ दुविहो तिविहो तहा बहुविहो वा ।
दव्वेहिं पज्जएहिं य चिंतिज्जो लोयसब्भावं ॥६२२॥

लोओ अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिप्पण्णो ।
जीवाजीवेहिं भुडो णिच्चो तालरुक्खसंठाणो ॥६२३॥

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपुग्गलाण च ।
जावत्तावल्लोगो आगासमदो परमणंत ॥६२४॥

हेट्ठा मज्झे उवरिं वेत्तासणझल्लरीमुदंगणिभो ।
मज्झिमवित्थारेण दु चोद्दसगुणमायदो लोओ ॥६२५॥

तत्थणुभवंति जीवा सकम्मणिव्वत्तियं सुहं दुक्खं ।
जम्मणमरणपुणब्भवमणंतभवसायरे भीमे ॥६२६॥

मादा य होदि धूदा धूदा मादुत्तणं पुण उवेदि ।
पुरिसो वि तत्थ इत्थी पुमं अपुमं च होइ जए ॥६२७॥

होऊण तेयसत्ताधिओ दु बलविरियरूवसंपण्णो ।
जादो वच्चघरे किमि धिगत्थु ससार वासस्स ॥६२८॥

धिग्भवदु लोगधम्मं देवावि य सुखदो महड्ढीया ।
भोत्तूण सोक्खमतुलं पुनरवि दुक्खवहा होंति ॥६२९॥

णाऊण लोगसारं णिस्सारं दीहगमणसंसारं ।
लोगग्गसिहरवासं झाहि पयत्तो सुहवासं ॥६३०॥

णिरएसु असुहमेयं तमेव तिरिएसु बंधरोहादि ।
मणुएसु रोगसोगादियं तु दिवि माणसं असुहं ॥६३१॥

आयासदुक्खवेरभयसोगकलिरागदोसमोहाणं ।
असुहाणमावहो वि य अत्थो मूल अणत्थाण ॥९३२॥

दुग्गमदुल्लहलाभा भयपउरा अप्पकालिया लहुया।
कामादुक्खविवागा असुहा सेविज्जमाणा वि ॥९३३॥

असुइविलिविले गब्भे वसमाणो वत्थिपडलपच्छण्णो ।
माडूइसेंभलालाइयं तु तिव्वासुह पिबदि ॥९३४॥

मंसट्ठिसिंभवसरुहिरचम्मपित्तंतमुत्तकुणिपकुडि ।
बहुदुक्खरोगभायण सरीरमसुभं वियाणाहि ॥९३५॥

अत्थं कामसरीरादिय पि सव्वसुभत्ति णादूण ।
णिव्विज्जतो झायसु जह जहसि कलेवर असुइ ॥९३६॥

मोत्तूण जिणक्खाद धम्मं सुहमिह दु णत्थि लोयम्मि ।
ससुरासुरेसु तिरिएसु णिरयमणुएसु चिंतेज्जो ॥९३७॥

दुक्खभयमीणपउरे संसारमहण्णवे परमघोरे ।
जंतू जं तु णिमज्जति कम्मासवहेदुयं सव्वं ॥९३८॥

रागो दोसो मोहो इंदियसण्णा य गारवकासा ।
मणवयणकायसहिदा दु आसवा होंति कम्मस्स ॥९३९॥

रंजेदि असुहकुणपे रागो दोसो वि दूसदे णिच्चं ।
मोहो वि महारिवु जं णियदं मोहेदि सब्भावं ॥९४०॥

जिणवयण सद्दहाणो वि तिव्वमसुहगदिपावयं कुणदि ।
अभिभूदो जेहिं सदा धित्तोसिं रागदोसाणं ॥९४१॥

अणिहुदमणसा एदे इंदियविसया णिगेण्हिदुं दुक्खं ।
मंतोसहिहीणे व दुट्ठा आसीविसा सप्पा ॥९४२॥

धित्तेसिमिंदियाणं जेसिं वसदो दु पावमज्जणियं ।
पावदि पावविवागं दुक्खमणंतं भवगदीसु ॥९४३॥

सण्णाहिं गारवेहिं य गुरुश्रो गरुगं तुपावमज्जरिणय ।
तो कम्मभारगुरुश्रो गुरुगं दुक्खं समणुभवइ ॥६४४॥

कोहो माणो माया लोहो य दुरासया कसायरिऊ ।
दोससहस्सावासा दुक्खसहस्साणि पावंति ॥६४५॥

हिंसादिएहिं पंचहि श्रासवदारेहिं श्रासवदि पावं ।
तेहिंतो धुव विणासो सासवरणावा जह समुद्दे ॥६४६॥

एवं बहुप्पयारं कम्मं श्रासवदि दुट्ठमट्ठविहं ।
णाणावरणादीयं दुक्खविवागंति चिंतेज्जो ॥६४७॥

तम्हा कम्मासवकारणाणि सव्वाणि ताणि कंधेज्जो ।
इंदिय कसाय सण्णा गारवरागादिश्रादीणि ॥६४८॥

रुद्देसु कसायेसु श्र मूलादो होंति श्रासवा रुद्धा ।
दुब्भत्तम्हि णिरुद्धे वणम्मि णावा जह ण एदि ॥६४९॥

इंदियकसायदोसा णिग्घिप्पंति तवणाणविणएहि ।
रज्जूहिं णिग्घिप्पंति हु उप्पह गामी जहा तुरया ॥६५०॥

मणवयणकायगुत्तिदियस्स समिदीसु श्रप्पमत्तस्स ।
श्रासवदारणिरोहे णवकम्मरयासवो ण हवे ॥६५१॥

मिच्छत्ताविरदीहिं य कसायजोगेहिं जं च श्रासवदि ।
दंसणविरमणणिग्गहणिरोधणेहिं तु णासवदि ॥६५२॥

संवरफलं तु णिव्वाणमेति संवरसमाधिसंजुत्तो ।
णिज्चुज्जुत्तो भावय संवर इणमो विसुद्धप्पो ॥६५३॥

रुद्धासवस्स एवं तवसा जुत्तस्स णिज्जरा होदि ।
दुविहा य सा वि भणिया देसादो सव्वदो चेव ॥६५४॥

संसारे संसरंतस्स खश्रोवसमगदस्स कम्मस्स ।
सव्वस्स वि होदि जगे तवसा पुण णिज्जरा विउला।६५५।

जह धादू धम्मंतो सुज्झदि सो अग्गिणा दु संतत्तो ।
तवसा तहा विसुज्झदि जीवो कम्मेहि कणयं व ॥६५६॥

आवेसणी सरीरे इंदियभंडो मणो व आगरिओ ।
धमिदव्वजीवलोहो बावीसपरीसहग्गीहिं ॥६५७॥

णाणवरमारुदजुदो सीलवरसमाधिसंजमुज्जलिदो ।
दुहइ तवो भवबीयं तणकट्ठादी जहा अग्गी ॥६५८॥

चिरकालमज्जिदं पि य विहुणदि तवसा रयति णाऊण ।
दुविहे तवम्मि णिच्चं भावेदव्वो हवदि अप्पा ॥६५९॥

णिज्जरियसव्वकम्मो जादिजरामरण बंधण विमुक्को ।
पावदि सुक्खमणंतं णिज्जरणं तं मणसि कुज्जा ॥६६०॥

सव्वजगस्स हिदकरो धम्मो तित्थंकरेहि अक्खादो ।
धण्णा तं पडिवण्णा विसुद्धमणसा जगे मणुया ॥६६१॥

जेणेह पाविदव्वं कल्लाणपरंपरं परमसोक्खं ।
सो जिणदेसिदधम्मं भावेणुववज्जदे पुरिसो ॥६६२॥

खंती मद्दव अज्जव लग्घव तव संजमो आकिंचणदा ।
तह होइ बंभचेर सच्चं चाओ य दसधम्मा ॥६६३॥

उवसम दया य खंती वड्ढइ वेरग्गदा य जह जह से ।
तह तह य मोक्खसोक्खं अक्खीणं भावियं होइ॥६६४॥

संसारविसमदुग्गे भवगहणे कह वि मे भमंतेण ।
दिट्ठो जिणवरदिट्ठो जेट्ठो धम्मो त्ति चिंतेज्जो ॥६६५॥

संसारम्मि अणंते जीवाणं दुल्लहं मणुस्सत्तं ।
जुगसमिलासंजोगो लवणसमुद्दे जहा चेव ॥६६६॥

देसकुलजम्मरूवं आऊ आरोग्ग वीरियं विणओ ।
सवणं गहणं मदि धारणा य एदे वि दुल्लहा लोए ॥६६७॥

लद्धूण वि एदाइं बोही जिणसासणम्मि ण हु सुलहा ।
कुपहाणमाकुलत्ता जं बलिया रागदोसा य ॥६६८॥

सेयं भवभयमहणी बोधी गुणवित्थडा मए लद्धा ।
जदि पडिदा ण हु सुलहा तम्हा ण खमो पमादो मे ॥६६९॥

दुल्लहलाहं लद्धूण बोधि जो णरो पमादेज्जो ।
सो पुरिसो कापुरिसो सोयदि कुगदिं गदो संतो ॥६७०॥

उवसमखयमिस्सं वा बोधिं लद्धूण भविय पुंडरिओ ।
तवसंजमसंजुत्तो अक्खयसोक्खं तदा लहदि ॥६७१॥

तम्हा अहमवि णिच्चं सुद्धासंवेगविरियविणएहिं ।
अत्ताणं तह भावे जह सा बोही हवे सुइरं ॥६७२॥

बोधीए जीवदव्वादियाइं बुज्झइ हु णव वि तच्चाइं ।
गुणसयसहकलियं एवं बोहिं सया झाहि ॥६७३॥

दस दो य भावणाओ एवं संखेवदो समुद्दिट्ठा ।
जिणवयणे दिट्ठाओ बहुजण वेरग्गजणणीओ ॥६७४॥

अणुवेक्खाहिं एवं जो अत्ताणं सदा विभावेदि ।
सो विगद सव्वकम्मो विमलो विमलालयं लहदि ॥६७५॥

झाणेहि खवियकम्मा मोक्खग्गलमोडया विगयमोहा ।
ते मे तमरयमहणा तारंतु भवाहि लहुमेव ॥६७६॥

जह मज्झ तम्हि काले विमला अणुपेहणा भवेजण्हु ।
तह सव्वलगोगाहा विमलगदिगदा पसीदन्तु ॥६७७॥

वंदित्तु देवदेवं तिहुअणमहिदं च सव्वसिद्धाणं ।
वोच्छामि समयसारं सुण संखेवं जहा वुत्तं ॥६७८॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं च पडुच्च तह य संघडणं ।
जत्थ हि जददे समणो तत्थ हि सिद्धिं लहु लहइ ॥६७९॥

धीरो वइरग्गपरो थोवं हि य सिक्खिदूण सिज्झदि हु ।
ण य सिज्झदि वेरग्गविहीणो पढिदूण सव्वसत्थाइं ९८०॥

भिक्खं चर वस रण्णे थोवं जेमेहि मा बहू जंप ।
दुक्खं सह जिण णिद्दा मेत्ति भावेहि सुट्ठु वेरग्ग ॥९८१॥

अव्ववहारी एक्को झाणे एयग्गमणो भव णिरारम्भो ।
चत्तकसायपरिग्गह पयत्तचेट्ठो असंगो य ॥९८२॥

थोवम्हि सिक्खिदे जिणइ बहुसुदं जो चरित्तसंपुण्णो ।
जो पुण चरित्तहीणो किं तस्स सुदेण बहुएण ॥९८३॥

णिज्जावगो य णाणं वादो झाणं चरित्त णावा हि ।
भवसागरं तु भविया तरंति तिहि सण्णिवायेण ॥९८४॥

णाणंपयासओ तओ सोधओ संजमो य गुत्तियरो ।
तिण्हं पि संपजोगे होदि हु जिणसासणे मोक्खो ॥९८५॥

णाणं करणविहीणं लिंगग्गहणं च संजमविहीणं ।
दंसणरहिदो य तवो जो कुणइ णिरत्थयं कुणइ ॥९८६॥

तवेण धीरा विधुणंति पावं अज्झप्पजोगेण खवंति मोहं ।
संखीणमोहा धुदरागदोसा ते उत्तमा सिद्धिगदिं पयंति ।९८७।

लेस्सा झाणतवेण य चरियविसेसेण सुग्गई दिट्ठा ।
तम्हा इदरा भावे झाणं संभावये धीरो ॥९८८॥

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी ।
उवलद्धपयत्थो पुण सेयासेयं वियाणादि ॥९८९॥

सेयासेयविदण्हू उद्धुददुस्सील सीलवं होदि ।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहदि णिव्वाणं ॥९९०॥

सव्वं पि हि सुदणाणं सुट्ठु सुगुणिदं पि सुट्ठु पढिदं पि ।
समणं भट्ठचरित्तं णहु सक्को सुग्गइं णेदुं ॥९९१॥

लद्धूण वि एदाइं बोही जिणसासणम्मि ण हु सुलहा ।
कुपहाणमाकुलत्ता ज बलिया रागदोसा य ।।९६८।।

सेयं भवभयमहणी बोधी गुणवित्थडा मए लद्धा ।
जदि पडिदा ण हु सुलहा तम्हा ण खमो पमादो मे ।।९६९।।

दुल्लहलाहं लद्धूण बोधिं जो णरो पमादेज्जो ।
सो पुरिसो कापुरिसो सोयदि कुगदिं गदो संतो ।।९७०।।

उवसमखयमिस्सं वा बोधिं लद्धूण भविय पुंडरिश्रो ।
तवसंजमसंजुत्तो श्रक्खयसोक्खं तदा लहदि ।।९७१।।

तम्हा श्रहमवि णिच्चं सुद्धासवेगविरियविणएहिं ।
श्रत्ताणं तह भावे जह सा बोही हवे सुइरं ।।९७२।।

बोधीए जीवदव्वादियाइं बुज्झइ हु णव वि तच्चाइं ।
गुणसयसहकलियं एवं बोहिं ा झाहि ।।९७३।।

दस दो य भावणाश्रो एवं संखेवदो समुद्दिट्ठा ।
जिणवयणे दिट्ठाश्रो बहुजण वेरग्गजणणीश्रो ।।९७४।।

श्रणुवेक्खाहिं एवं जो श्रत्ताणं सदा विभावेदि ।
सो विगद सव्वकम्मो विमलो विमलालयं लहदि ।।९७५।।

ज्झाणेहि खवियकम्मा मोक्खग्गलमोइया विगयमोहा ।
ते मे तमरयमहणा तारंतु भवाहि लहुमेव ।।९७६।।

जह मज्झ तम्हि काले विमला श्रणुपेहणा भवेजण्हु ।
तह सव्वलगोगाहा विमलगदिगदा पसीदन्तु ।।९७७।।

वंदित्तु देवदेवं तिहुश्रणमहिदं च सव्वसिद्धाणं ।
वोच्छामि समयसारं सुण संखेवं जहा वुत्तं ।।९७८।।

दव्वं खेत्तं काल भावं च पडुच्च तह य संघडणं ।
जत्थ हि जददे समणो तत्थ हि सिद्धिं लहुं लहइ ।।९७९।।

धीरो वइरग्गपरो थोव हि य सिक्खिदूण सिज्झदि हु ।
ण य सिज्झदि वेरग्गविहीणो पढिदूण सव्वसत्थाइं ९८०॥

भिक्खं चर वस रण्णे थोवं जेमेहि मा बहू जंप ।
दुक्खं सहजिण णिद्दा मेत्तिं भावेहि सुट्ठु वेरग्ग ॥९८१॥

अव्ववहारी एक्को झाणे एयग्गमणो भव णिरारम्भो ।
चत्तकसायपरिग्गह पयत्तचेट्ठो असंगो य ॥९८२॥

थोवम्हि सिक्खिदे जिणइ बहुसुदं जो चरित्तसंपुण्णो ।
जो पुण चरित्तहीणो किं तस्स सुदेण बहुएण ॥९८३॥

णिज्जावगो य णाणं वादो झाणं चरित्त णावा हि ।
भवसागरं तु भविया तरंति तिहि सण्णिवायेण ॥९८४॥

णाणंपयासओ तओ सोधओ संजमो य गुत्तियरो ।
तिण्हं पि संपजोगे होदि हु जिणसासणे मोक्खो ॥९८५॥

णाणं करणविहीणं लिंगग्गहणं च संजमविहीणं ।
दंसणरहिदो य तवो जो कुणइ णिरत्थयं कुणइ ॥९८६॥

तवेण धीरा विधुणंति पावं अज्झप्पजोगेण खवंति मोहं ।
संखीणमोहा धुदरागदोसा ते उत्तमा सिद्धिगदिं पयंति ।९८७।

लेस्सा झाणतवेण य चरिय विसेसेण सुग्गई दिट्ठा ।
तम्हा इदरा भावे झाणं संभावये धीरो ॥९८८॥

सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी ।
उवलद्धपयत्थो पुण सेयासेयं वियाणादि ॥९८९॥

सेयासेयविदण्हू उद्धुदुस्सील सीलवं होदि ।
सीलफलेणब्भुदयं तत्तो पुण लहदि णिव्वाणं ॥९९०॥

सव्वं पि हि सुदणाणं सुट्ठु सुगुणिदं पि सुट्ठु पढिदं पि ।
समणं भट्ठचरित्तं णहु सक्को सुग्गहं णेदुं ॥९९१॥

जदि पडदि दीवहत्थो अवडे किं कुणदि तस्स सो दीवो ।
जदि सिक्खिऊण अणयं करेदि कि तस्स सिक्खफलम् ।।९९२।।

पिंडं सेज्जं उवधिं उग्गमउप्पायणेसणादीहि ।
चारित्तरक्खणट्ठं सोधणयं होदि सुचरित्तम् ।।९९३।।

आचेलक्कं लोचो वोसट्टसरीदा य पडिलिहणं ।
एसो हु लिंगकप्पो चदुव्विधो होदि णायव्वो ।।९९४।।

अच्चेलक्कुद्देसियसेज्जाहररायपिंडकिदियम्मं ।
वदजेट्ठपडिक्कमणं मासं पज्जो समणकप्पो ।।९९५।।

रजसेदाणमगहणं मद्दवसुकुमालदा लहुत्तं च ।
जत्थेदे पंचगुणा तं पडिलिहणं पसंसंति ।।९९६।।

सुहुमा संति पाणा खु दुप्पेक्खा मंसचक्खुणा ।
तम्हा जीवदायट्ठाय धारये पडिलेहणं ।।९९७।।

सुहुमाहु संति पाणा दुप्पेक्खा अवि ाो अगेज्झो हु ।
तम्हा जीवदयाए पडिलिहणं धारए भिक्खू ।।९९८।।

उच्चारं पस्सवण णिसि सुत्तो उट्ठिदो हु काऊण ।
अप्पडिलिहिए सुवंतो जीववहं कुणदि णियदं तु ।।९९९।।

ण य होदि णयणपीडा अच्छिं पि भमाडिदे दु पडिलेहे ।
तो सुहुमादि लहुओ पडिलेहो होदि कायव्वो ।।१०००।।

ठाणे चंकमणादाणे णिक्खेवे सयणआसणपयत्ते ।
पडिलेहणेण पडिलेहिज्जइ लिंग च होइ सयपक्खे ।।१००१।।

ठाण ाणिसिज्जागमणे जीवाणं हंति अप्पणो देहं ।
दस कत्तरिठाणगदं णिप्पिच्छे णत्थि णिव्वाणं ।।१००२।।

पोसह उवहोपक्खे तह साहू जो करेदि णावाए ।
णावाए कल्लाणं चादुम्मासेण णियमेण ।।१००३।।

पिंडोवधि सेज्जाओ अविसोधिय जो य भुंजदे समणो ।
मूलट्ठाणं पत्तो भुवणेसु हवे समणपोल्लो ॥१००४॥

तस्स ण सुज्झइ चरियं तव संजमणिच्चकालपरिहीणं ।
आवासयं ण सुज्झइ चिरपव्वइयो वि जइ होइ ॥१००५॥

मूलं छित्ता समणो जो गिण्हादी य बाहिरं जोगं ।
बाहिरजोगा सव्वे मूलविहूणस्स किं करिस्संति ॥१००६॥

हतूंण य बहुपाणं अप्पाणं जो करेदि सप्पाणं ।
अप्पासु असुहकंखी मोक्खं कंखी ण सो समणो ॥१००७॥

एक्को वा वि तयो वा सीहो वग्घो मयो य खादिज्जो ।
जदि खादेज्ज स णीचो जीवयरासिं णिहंतूण ॥१००८॥

आरंभे पाणिवहो पाणिवहो होदि अप्पणो हु वहो ।
अप्पा ण हु हंतव्वो पाणिवहो तेण मोत्तव्वो ॥१००९॥

जो ठाणमोणवीरासणेहि अत्थदि चउत्थछट्ठेहिं ।
भुंजदि आधाकम्मं सव्वे वि णिरत्थया जोगा ॥१०१०॥

किं काहदि वणवासो सुण्णागारो य रुक्खमूलो वा ।
जदि भुंजदि आधम्मं सव्वे वि णिरत्थया जोगा ॥१०११॥

किं तस्स ठाणमोणं अब्भोवासो य तह य आदावो ।
मेत्तिविहीणो णो सिज्झदि ण हु दीहकालेण ॥१०१२॥

बाहिरसंगविमुक्को अब्भतरदोसजुत्तणिग्गंथो ।
ण च कोधसहिद लिंगी बंधविधाणं ण मोचेदि ॥१०१३॥

जह वोसरित्तु कत्तिं विसं ण वोसरदि दारुणो सप्पो ।
तह को वि मदसवणो पंच दु सूणा ण वोसरदि ॥१०१४॥

कडणी पीसणी चुल्ली उदपाणं च उपेक्खरं ।
बीहेदव्वं हि णियमा जीवरासिं च मारेंति ॥१०१५॥

जो भुंजदि आधाकम्मं छज्जीवणिघायणं किच्चा ।
अबुहो स लोलजिब्भो ण वि समणो सावगो होज्ज ।।१०१६।।

पयणं व पायणं वा अणुमणचित्तो व कुणदि जो समणो ।
जेमंतो वि सघादी ण वि समणो दिट्ठिसंपण्णो ।।१०१७।।

पायच्छित्तं आलोयणं च काऊण गुरुसयासम्हि ।
तं चेव पुणो भुंजदि आधाकम्मं असुहकम्मं ।।१०१८।।

ण हु तस्स इमो लोओ ण वि परलोओ उत्तमट्ठभट्ठस्स ।
लिंगग्गहणं तस्स दु णिरत्थयं संजमेण हीणस्स ।।१०१९।।

जो जत्थ जहा लद्धं गेण्हदि आहारमुवधिमादीयं ।
समणगुणमुक्कजोगी संसार पवड्ढओ होइ ।।१०२०।।

पयणं पायणमणुमणणं सेवतो ण संजदो होदि ।
जेमंतो वि य जम्हा ण वि समणो संजमो णत्थि ।।१०२१।।

बहुगंपि सुदमधीदं किं काहदि अजाणमाणस्स ।
दीवविसेसो अधे णाणविसेसो वि तह तस्स ।।१०२२।।

आधाकम्मपरिणदो फासुगदव्वे वि बंधगो भणिदो ।
सुद्धं गवेसमाणो आधाकम्मे वि सो सुद्धो ।।१०२३।।

भावुग्गमो य दुविहो पसत्थपरिणाम अप्पसत्थो त्ति ।।
सुद्धे असुद्धभावो पायच्छित्तस्स तं ठाणं ।।१०२४।।

फासुगमण्णं फासुग उवधिं तह दो वि अत्तसोधीए ।
जो देदि जो य गिण्हदि दोण्ह पि महप्फलं होइ ।।१०२५।।

जोखेसु मूलजोगं भिक्खाचरियं च वण्णियं सुत्ते ।
अण्णे य पुणो जोगा विण्णाणविहीणएहिं कया ।।१०२६।।

कल्लं कल्लं पि आहारो परिमिदो पसत्थो य ।
ण य खमणपारणाओ बहवो बहुसो बहुविधो य ।।१०२७।।

मरणभयभीरुयाणं अभयं जो देदि सव्वजीवाण ।
तं दाणाणं दाणं त पुण जोगेसु मूलजोग पि ॥१०२८॥

सम्मादिट्ठिस्स वि अविरदस्स ण तवो महागुणो होदि ।
होदि हु हत्थिण्हाणं चु दुच्छिदकम्म तं तस्य ॥१०२९॥

वेज्जादुर भेसज्जा परिचारय सपदा जहारोग्गं ।
गुरुसिस्सरयणसाहण संपत्तीए तहा मोक्खो ॥१०३०॥

आइरिओ वि य वेज्जो सिस्सो रोगी दु भेसजं चरिया ।
खेत्त बल काल पुरिसं णाऊण सणि दढं कुज्जा ॥१०३१॥

भिक्खं सरीरजोग्गं सुभत्तिजुत्तेण फासुय दिण्णं ।
दव्वपमाणं खेत्तं कालं भावं च णादूण ॥१०३२॥

णवकोडी पडिसुद्धं फासुयसुद्धं च एसणासुद्धं ।
दस दोसविप्पमुक्कं चोद्दसमलवज्जियं भुंजे ॥१०३३॥

आहारो दु तवस्सी विगदिगालं विगदधूमं च ।
जत्तासाहण मेत्तं जवणाहारं विगदरागो ॥१०३४॥

ववहार सोहणाए परमट्ठाए तहा परिहरउ ।
दुविहा चावि दुगंछा लोइय लोगुत्तरा चेव ॥१०३५॥

परमट्ठियं विसोहिं सुट्ठु पयत्तेण कुणइ पव्वइओ ।
परमट्ठदुगंछा वि य सुट्ठु पयत्तेण परिहरउ ॥१०३६॥

संजममविराधंतो करेउ ववहार साधणं भिक्खू ।
ववहार दुगंछावि य परिहरउ वदे अभंजंतो ॥१०३७॥

जत्थ कसायुप्पत्तिर भत्तिंवियदारइत्थि जण बहुलं ।
दुक्खमुवसग्गबहुलं भिक्खू खेत्तं विवज्जेऊ ॥१०३८॥

गिरिकंदरं मसाणं सुण्णागारं च रुक्खमूलं वा ।
ठाणं विरागबहुलं धीरो भिक्खू णिसेवेऊ ॥१०३९॥

णिवदिविहूणं खेत्तं णिवदी वा जत्थ दुट्ठश्रो होज्ज ।
पव्वज्जा च ण लब्भइ संजमघादो य तं वज्जे ॥१०४०॥

णो कप्पदि विरदाणं विरदीणमुवासयम्हि चेट्ठे दुं ।
तत्थ णिसेज्जउवट्टण सज्झायाहार वोसरणे ॥१०४१॥

होदि दुगंछा दुविहा ववहारादो तहा य परमट्ठे ।
पयदेण य परमट्ठा ववहारेण य तहा पच्छा ॥१०४२॥

वड्ढदि बोही संसग्गेण तह पुणो विणस्सेदि ।
संसग्गविसेसेण दु उप्पलगंधो जहा कुंभो ॥१०४३॥

चंडो चवलो मंदो तह साहू पुट्ठिमंसपडिसेवी ।
गारवकसायबहुलो दुरासलो होदि सो समणो ॥१०४४॥

वेज्जावच्चविहूणं विणयविहूणं च दुस्सुदिकुसीलं ।
णं विरागहीणं सुजमो साधू ण सेवेज्ज ॥१०४५॥

दंभं परपरिवादं पिसुणत्तणपावसुत्तपडिसेवं ।
चिरपव्वइदं पि मुणी श्रारंभजुदं ण सेवेज्ज ॥१०४६॥

चिरपव्वइदं पि मुणी श्रपुट्ठधम्मं श्रसंवुडं णीचं ।
लोइय लोगुत्तरियं श्रयाणमाणं विवज्जेज्ज ॥१०४७॥

श्रंबो णिबत्तणं पत्तो दुरासएण जहा तहा ।
णं मंदसवेगं श्रपुट्ठधम्मं ण सेवेच्छ ॥१०४८॥

श्रायरियकुलं मुच्चा विहरदि एगागिणो दु जो समणो ।
श्रविगेहिय उवदेसं ण य सो समणो समणडोवो ॥१०४९॥

श्रायरियत्तणमुवणमइ जो मुणि श्रागमं ण याणंतो ।
श्रप्पाणं पि विणासिय श्रण्णे वि पुणो विणासेइ ॥१०५०॥

श्रायरियत्तण तुरिश्रो पुव्वं सिस्सत्तणं श्रकाऊण ।
हिंडइ ढुंढायरिश्रो णिरंकुसो मत्तहत्थीव ॥१०५१॥

बीहेदव्वं णिच्चं दुज्जणवयणस्सपलोट्ट जिब्भस्स ।
वरणयरणिग्गमं पिव वयणकयारं वहंतस्स ॥१०५२॥
घोडयलद्दि समाणस्स बाहिरबगणिहुदकरणचरणस्स ।
अब्भंतरह्मि कुहिदस्स तस्स दु किं वज्झजोगेहि ॥१०५३॥
मा होह वासगणणा ण तत्थ वासाणि परिगणिज्जंति ।
बहवो तिरत्तिसिद्धा वेरग्गपरायणा समणा ॥१०५४॥
जोगणिमित्तं गहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो ।
भावणिमित्तो बंधो भावो रदिरागदोसमोहजुदो ॥१०५५॥
जीवपरिणामहेदू कम्मत्तणपोग्गला परिणमंति ।
ण दु णाणपरिणदो पुण जीवो कम्मं समादियदि ॥१०५६॥
णाणविण्णाण संपण्णो झाणज्झणतवे जुदो ।
कसायगारवुम्मुक्को संसारं तरदे लहुं ॥१०५७॥
सज्झायं कुव्वंतो पंचिंदिय संवुडो तिगुत्तो य ।
हवदि य एयग्गमणो विणएण समाहिदो भिक्खू॥१०५८॥
बारसविधम्हि य तवे सब्भंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
ण वि अत्थि ण वि य होहदि सज्झायसमं तवो कम्मं
॥१०५९॥
सूई जहा ससुत्ता ण णस्सदि सा पुणो वि णट्ठावि ।
एवं ससुत्तपुरिसो ण वि णस्सदि सो पमादेण ॥१०६०॥
णिद्दं जिणेहि णिच्चं णिद्दा खलु णरमचेदणं कुणदि ।
वट्टेज्ज हु पासुत्तो समणो सव्वेसु दोसेसु ॥१०६१॥
जहउसुगारो उसुमुज्जु करइ संपिडिएहि णयणेहिं ।
तह साहू भावेज्जो चित्तस्सेयग्ग भावेण ॥१०६२॥
कम्मस्स बंधमोक्खे जीवाजीवे च दव्वपज्जाए ।
संसारसरीराणि य भोगविरत्तो सदा झाहि ॥१०६३॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य भवे य होंति पंचेव ।
परिवट्टणाणि बहुसो अणादि काले य चिंतेज्जो ॥१०६४॥

मोहग्गिणा महंतेण उज्झमाणे महाजगे धीरा ।
समणा विसयविरत्ता झायन्ति अणंतसंसारं ॥१०६५॥

आरंभं च कसायं च ण सहदि तवो तहा लोए ।
अच्छी लवणसमुद्दो य कयारं खलु जहा दिट्ठं ॥१०६६॥

जह कोइ सट्ठिवरिसो तीसदिवरिसो णराहिवो जाओ ।
उभयत्थ जम्मसद्दो वासविभागं विसेसेइ ॥१०६७॥

एवं जीव द्व्वं अणाइणिहणं विसेसियं णियमा ।
रायसरिसो दु केवलपज्जाओ तस्स दु विसेसो ॥१०६८॥

जीणो अणाइणिहणो जीवोत्ति य णियमिदो ण वत्तव्वो ।
जं पुरिसाउगजीवो देवाउगजीविद बिसिट्ठो ॥१०६९॥

संखेज्जासंखेज्जमणंतकप्पं च केवलं णाणं ।
तह रायदोसमोहा अण्णे वि य जीवपज्जाया ॥१०७०॥

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं ।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगदं ॥१०७१॥

अकसायं तु चरित्तं कसायवसिओ असंजदो होदि ।
उवसमदि जम्हि काले तक्काले संजदो होदि ॥१०७२॥

वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं ।
विवाहे रागउप्पत्ति गणो दोसाणमागरो ॥१०७३॥

पच्चयभूदा दोसा पच्चयभावेण णत्थि उप्पत्ति ।
पच्चयभावे दोसा णस्संति णिरासया जहा बीयं ॥१०७४॥

हेदू पच्चयभूदा हेदुविणासे विणासमुवयंति ।
तम्हा हेदुविणासो कायव्वो सव्वसाहूहिं ॥१०७५॥

जं जं जे जे जीवा पज्जाया परिणमंति संसारे ।
रागस्स य दोसस्य य मोहस्स वसा मुणेयव्वा ।।१०७६।।

अत्थस्स जीवियस्स य जिब्भोवत्थाण कारणं जीवो ।
मरदि य मारावेदि य अणंतसो सव्वकालं तु ।।१०७७।।

जिब्भोवत्थणिमित्तं जीवो दुक्खं अणादि संसारे ।
पत्तो अणंतसो तो जिब्भोवत्थे जयह दाणि ।।१०७८।।

चतुरंगुला ज जिब्भा असुहा चदुरंगुलो उवत्थो वि ।
अट्ठंगुलदोसेण दु जीवो दुक्खं खु पप्पोदि ।।१०७९।।

बीहेदव्वं णिच्चं कट्ठत्थस्स वि तहित्थिरूवस्स ।
हवदि य चित्तक्खोभो पच्चयभावेण जीवस्स ।।१०८०।।

घिदभरिदघडसरित्थो पुरिसो इत्थी जलंत अग्गिसमा ।
तो महिलेयं ढुक्का णट्ठा पुरिसो सिवं गया इयरे ।।१०८१।।

मायाए बहिणीए धूआए मूइ बुड्ढ इत्थीए ।
बीहेदव्वं णिच्चं इत्थी रूवं णिरावेक्खं ।।१०८२।।

हत्थपाद परिच्छिण्णं कण्णणासवियप्पियं ।
अविवासं सदिं णारीं दूरदो परिवज्जये ।।१०८३।।

मण बंभचेर वचि बंभचेर तह काय बंभचेरं य ।
अहवा हु बंभचेरं दव्वं भावं ति दुवियप्पं ।।१०८४।।

भावविरदो दु विरदो ण दव्वविरदस्स सुग्गई होई ।
विसयवणरमणलोलो धरियव्वो तेण मणहत्थी ।।१०८५।।

पढमं विवुलाहारं विदियं कायसोहणं ।
तदियं गंधमल्लाइं चउत्थं गीयवाइयं ।।१०८६।।

तह सयण सोधणं वि य इत्थिसंसग्गं पि य अत्थसंगहणं ।
पुव्वरदिसरणमिंदियविसयरदी पणिदरससेवा ।।१०८७।।

दव्वे खेत्ते काले भावे य भवे य होंति पंचेव ।
परिवट्टणाणि बहुसो अणादि काले य चितेज्जो ॥१०६४॥

मोहग्गिणा महंतेण उज्झमाणे महाजगे धीरा ।
समणा विसयविरत्ता झायन्ति अणंतसंसारं ॥१०६५॥

आरंभं च कसायं च ण सहदि तवो तहा लोए ।
अच्छी लवणसमुद्दो य कयारं खलु जहा दिट्ठं ॥१०६६॥

जह कोइ सट्ठिवरिसो तीसदिवरिसो णराहिवो जाओ ।
उभयत्थ जम्मसद्दो वासविभागं विसेसेइ ॥१०६७॥

एवं जीव द्दव्वं अणाइणिहणं विसेसियं णियमा ।
रायसरिसो दु केवलपज्जाओ तस्स दु विसेसो ॥१०६८॥

जीणो अणाइणिहणो जीवोत्ति य णियमिदो ण वत्तव्वो ।
जं पुरिसाउगजीवो देवाउगजीविद बिसिट्ठो ॥१०६९॥

संखेज्जासंखेज्जमणंतकप्पं च केवलं णाणं ।
तह रायदोसमोहा अण्णे वि य जीवपज्जाया ॥१०७०॥

आदा णाणपमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं ।
णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगदं ॥१०७१॥

अकसायं तु चरित्तं कसायवसिओ असंजदो होदि ।
उवसमदि जम्हि काले तक्काले संजदो होदि ॥१०७२॥

वरं गणपवेसादो विवाहस्स पवेसणं ।
विवाहे रागउप्पत्ति गणो दोसाणमागरो ॥१०७३॥

पच्चयभूदा दोसा पच्चयभावेण णत्थि उप्पत्ति ।
पच्चयभावे दोसा णस्संति णिरासया जहा वीयं ॥१०७४॥

हेदू पच्चयभूदा हेदुविणासे विणासमुवयंति ।
तम्हा हेदुविणासो कायव्वो सव्वसाहूहिं ॥१०७५॥

जं जं जे जे जीवा पज्जाया परिणमंति संसारे ।
रागस्स य दोसस्य य मोहस्स वसा मुणेयव्वा ॥१०७६॥

अत्थस्स जीवियस्स य जिब्भोवत्थाण कारणं जीवो ।
मरदि य मारावेदि य अणंतसो सव्वकालं तु ॥१०७७॥

जिब्भोवत्थणिमित्तं जीवो दुक्खं अणादि संसारे ।
पत्तो अणंतसो तो जिब्भोवत्थे जयह दाणि ॥१०७८॥

चतुरंगुला ज जिब्भा असुहा चदुरंगुलो उवत्थो वि ।
अट्ठंगुलदोसेण दु जीवो दुक्खं खु पप्पोदि ॥१०७९॥

बीहेदव्वं णिच्चं कट्ठत्थस्स वि तहित्थिरूवस्स ।
हवदि य चित्तक्खोभो पच्चयभावेण जीवस्स ॥१०८०॥

घिदभरिदघडसरित्थो पुरिसो इत्थी जलंत अग्गिसमा ।
तो महिलेयं ढुक्का णट्ठा पुरिसो सिवं गया इयरे ॥१०८१॥

मायाए बहिणीए धूआए मूइ बुड्ड इत्थीए ।
बीहेदव्वं णिच्चं इत्थी रूवं णिरावेक्खं ॥१०८२॥

हत्थपाद परिच्छिण्णं कण्णणासवियप्पियं ।
अविवासं सदिं णारीं दूरदो परिवज्जये ॥१०८३॥

मण बंभचेर वचि बंभचेर तह काय बंभचेरं य ।
अहवा हु बंभचेरं दव्वं भावं ति दुवियप्पं ॥१०८४॥

भावविरदो दु विरदो ण दव्वविरदस्स सुग्गई होई ।
विसयवणरमणलोलो धरियव्वो तेण मणहत्थी ॥१०८५॥

पढमं विवुलाहारं विदियं कायसोहणं ।
तदियं गंधमल्लाइं चउत्थं गीयवाइयं ॥१०८६॥

तह सयण सोधणं वि य इत्थिसंसग्गं पि य अत्थसंगहणं ।
पुव्वरदिसरणमिंदियविसयरदी पणिदरससेवा ॥१०८७॥

दसविहमब्बंभमिणं संसारमहादुहाणमावाहं ।
परिहरइ जो महप्पा सो दढबंभव्वदो होदि ।।१०८८।।

कोहमदमायलोहेहि परिमग्गहे लइय संसजइ जीवो ।
तेणुभयसंगचाग्रो कायव्वो सव्वसाहूहिं ।।१०८९।।

णिस्संगो णिरारंभो भिक्खाचरियाए सुद्धभावो य ।
एगागी झाणरदो सव्वगुणड्ढो हवे समणो ।।१०९०।।

णामेण जहा समणो ठावणिए तह य दव्वभावेण ।
णिक्खेवो वीह तहा चदुव्विहो होइ णायव्वो ।।१०९१।।

भा मणा हु समणा ण सेससमणाण सुग्गई जम्हा ।
जहिऊण दुविहमुवहिं भावेण सुसंजदो होइ ।।१०९२।।

वदसीलगुणा जम्हा भिक्खचरिया विसुद्धिए ठंति ।
तम्हा भिक्खाचरियं सोहिय साहू सदा विहारिज्ज ।।१०९३।।

भिक्खं वक्कं हिययं सोधिय जो चरदि णिच्च सो साहू ।
एसो सुट्ठिद साहू भणिग्रो जिणसासणे भयवं ।।१०९४।।

दव्वं खेत्तं कालं भावं सत्ति च सुट्ठु णादूण ।
ज्झाणज्झयणं च तहा साहू चरणं च्चरऊ ।।१०९५।।

चाग्रो य होइ दुविहो संगच्चाग्रो कलत्तचाग्रो य ।
उभयच्चायं किच्चा साहू सिद्धिं लहु लहदि ।।१०९६।।

पुढविकाइगा जीवा पुढवि जे समासिदा ।
दिट्ठा पुढविसमारंभे धुवा तेसिं विराहणा ।।१०९७।।

ग्राउकायिगा जीवा ग्राऊं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा ग्राउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा ।।१०९८।।

तेउकायिगा जीवा तेउं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा तेउसमारभे धुवा तेसिं विराधणा ।।१०९९।।

वाउकायिगा जीवा वाउं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा वाउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा ॥११००॥

वणप्फदिकाइगा जीवा वणप्फदिं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा वणप्फदिसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा ॥११०१॥

जे तसकायिगा जीवा तसं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा तससमारंभे धुवा तेसिं विराधणा ॥११०२॥

तम्हा पुढविसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०३॥

तम्हा आउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीण जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०४॥

तम्हा तेउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०५॥

तम्हा वाउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०६॥

तम्हा वणप्फदिसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०७॥

तम्हा तससमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीण जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०८॥

जो पुढविकाइयजीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं णिद्दिट्ठे ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्स उवट्ठावणा णत्थि ॥११०९॥

जो आउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ॥१११०॥

जे तेउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ॥११११॥

दसविहमब्बंभमिणं संसारमहादुहाणमावाहं ।
परिहरइ जो महप्पा सो दढबंभव्वदो होदि ॥१०८८॥

कोहमदमायलोहेहि परिमग्गहे लइय संसजइ जीवो ।
तेणुभयसंगचाओ कायव्वो सव्वसाहूहि ॥१०८९॥

णिस्संगो णिरारंभो भिक्खाचरियाए सुद्धभावो य ।
एगागी झाणरदो सव्वगुणड्ढो हवे समणो ॥१०९०॥

णामेण जहा समणो ठावणिए तह य दव्वभावेण ।
णिक्खेवो वीह तहा चदुव्विहो होइ णायव्वो ॥१०९१॥

भा मणा हु समणा ण सेससमणाण सुग्गई जम्हा ।
जहिऊण दुविहमुवहिं भावेण सुसंजदो होइ ॥१०९२॥

वदसीलगुणा जम्हा भिक्खचरिया विसुद्धिए ठंति ।
तम्हा भिक्खाचरियं सोहिय साहू सदा विहारिज्ज ॥१०९३॥

भिक्खं वक्कं हियय सोधिय जो चरदि णिच्च सो साहू ।
एसो सुट्ठिद साहू भणिओ जिणसासणे भयवं ॥१०९४॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं सत्ति च सुट्ठु णादूण ।
ज्झाणज्झयणं च तहा साहू चरणं चरऊ ॥१०९५॥

चाओ य होइ दुविहो संगच्चाओ कलत्तचाओ य ।
उभयच्चायं किच्चा साहू सिद्धि लहुं लहदि ॥१०९६॥

पुढविकाइगा जीवा पुढविं जे समासिदा ।
दिट्ठा पुढविसमारंभे धुवा तेसिं विराहणा ॥१०९७॥

आउकायिगा जीवा आऊं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा आउसमारंभे धुवा तेसिं विराधणा ॥१०९८॥

तेउकायिगा जीवा तेउं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा तेउसमारभे धुवा तेसिं विराधणा ॥१०९९॥

वाउकायिगा जीवा वाउं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा वाउसमारंभे धुवा तेंसि विराधणा ॥११००॥

वणप्फदिकाइगा जीवा वणप्फदिं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा वणप्फदिसमारभे धुवा तेंसि विराधणा ॥११०१॥

जे तसकायिगा जीवा तसं जे समस्सिदा ।
दिट्ठा तससमारंभे धुवा तेंसि विराधणा ॥११०२॥

तम्हा पुठविसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०३॥

तम्हा आउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०४॥

तम्हा तेउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०५॥

तम्हा वाउसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०६॥

तम्हा वणप्फदिसमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०७॥

तम्हा तससमारंभो दुविहो तिविहेण वि ।
जिणमग्गाणुचारीणं जावज्जीवं ण कप्पदि ॥११०८॥

जो पुठविकाइयजीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं णिद्दिट्ठे ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्स उवट्ठावणा णत्थि ॥११०९॥

जो आउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ॥१११०॥

जे तेउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ॥११११॥

जो वाउकाइगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ।।१११२।।

जो वणप्फदिकायिगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ।।१११३।।

जो तसकायिगे जीवे णवि सद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
दूरत्थो जिणवयणे तस्सुवट्ठावणा णत्थि ।।१११४।।

जो पुढविकाइगे जीवे अइसद्दहदे जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।१११५।।

जो आउकायिगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।१११६।।

जो तेउकायिगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।१११७।।

जो वाउकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।१११८।।

जो वणप्फदिकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।१११९।।

जो तसकाइगे जीवे अइसद्दहदि जिणेहिं पण्णत्ते ।
उवलद्धपुण्णपावस्स तस्सुवट्ठावणा अत्थि ।।११२०।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे पुढविदं गदे ।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं लिंगत्थो वि हु दुम्मदी ।।११२१।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे आउतग्गदे ।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं, लिंगत्थो वि हु दुम्मदी ।।११२२।।

ण सद्दहदि जो एदे जीवे तेउतग्गदे ।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं, लिंगत्थो वि हु दुम्मदी ।।११२३।।

ण सद्दहदि जो एदे, जीवे वाउतग्गदे ।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं, लिंगत्थो वि हु दुम्मदी ॥११२४॥
ण सद्दहदि जो एदे जीवे वणप्फदितग्गदे ।
स गच्छे दिग्घमद्धाणं, लिंगत्थो वि हु दुम्मदी ॥११२५॥
ण सद्दहदि जो एदे जीव तसतग्गदे ।
स गच्छे दिग्घसंद्धाणं लिंगत्थो वि य दुम्मदो ॥११२६॥
कधं चरे कधं चिट्ठे कधमासे कधं सये ।
कधं भुंजेज्ज भासेज्ज कध पावं ण बज्झधि ॥११२७॥
जदं चरे जदं चिट्ठे जदमासे जदं सये ।
जदं भुंजेज्ज भासेज्ज एव पावं ण बज्झइ ॥११२८॥
जद तु चरमाणस्स दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराण च विधूयदि ॥११२९॥
जदं तु चिट्ठमाणस्य दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि ॥११२९॥
जद तु आसमाणस्य दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णव ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि ॥११३०॥
जदं तु सयमाणस्य दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि ॥११३१॥
जदं तु भुंजमाणस्य दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णव ण बज्झदे कम्म पोराणं च विधूयदि ॥११३२॥
जद तु भासमाणस्य दयापेक्खिस्स भिक्खुणो ।
णव ण बज्झदे कम्म पोराणं च विधूयदि ॥११३३॥
दव्वं खेत्त कालं भाव च पडुच्च तह य संघडणं ।
चरणम्हि जो पवट्टइ कमेण सो णिरवहो होइ ॥११३४॥
एवं विहाण चरियं जाणित्ता आचरेज्ज जो भिक्खू ।
णासेऊण दु कम्मं दुविह पि य लहु लहइ सिद्धि ॥११३५॥

तित्थयरकहियमत्थं गणधररचियं जदीहिं अणुचरिदं ।
णिव्वाणहेदुभूदं सुदमहमखिलं पणिवदासि ॥११३६॥

काऊण णमोक्कारं सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं ।
पज्जत्ती संगहणी वोच्छामि जहाणुपुव्वीयं ॥११३७॥

पज्जत्ती देहो वि य संठाणं कायइंदियाणं च ।
जोणी आउपमाणं जोगो वेदो य लेस पविचारो ॥११३८॥

उववादो य उव्वट्टण ठाणं च कुलं च अप्पबहुलो य ।
पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबधो य सुत्तपदा ॥११३९॥

पज्जत्तीणं सण्णा लक्खण सामित्त संख परिमाणं ।
णिव्वत्ती ठिदिकालो पभेददो होदि छब्भेदो ॥११४०॥

आहारे य सरीरे तह इंदिय आणपाणभासाए ।
होंति मणो वि य कमसो पज्जतीओ जिणक्खादा ॥११४१॥

एइंदियेसु चत्तारि होंनि तह आदिदो य पंच भवे ।
वेइंदियादियाणं पज्जत्तीओ असण्णित्ति ॥११४२॥

छप्पि य पज्जत्तीओ बोधव्वा होंति सण्णिकायाणं ।
एदाहि अणिव्वत्ता ते दु अपज्जत्तया होंति ॥११४३॥

पज्जत्तीपज्जत्ता भिण्णमुहुत्तेण होंति णायव्वा ।
अणुसमयं पज्जत्ती सव्वेंसि चोववादीणं ॥११४४॥

जम्हि विमाणे जादो उववादसभाए महारिहे सयणे ।
अणुसमयं पज्जत्तो देवो दिव्वेण रूवेण ॥११४५॥

देहस्स य णिव्वती भिण्णमुहुत्तेण होइ देवाणं ।
सव्वंगभूसणगुण जोव्वणमवि होंदि देहम्मि ॥११४६॥

कणयमिव णिरुवलेवा णिम्मलगत्ता सुयंधणीसासा ।
अणादिवरचारुरूवा समचउरंसोरूसंठाणा ॥११४७॥

केसणहमंसुलोमा चम्मवसारुहिरमुत्तपुरिसं वा ।
णेवट्ठी णेव सिरा देवाण सरीरसंठाणे ॥११४८॥

वरवण्णगंधरसफासदिव्व बहुपोग्गलेहिं णिम्माणं ।
गेण्हदि देवो देहं सुचरिदकम्माणु भावेण ॥११४९॥

वेउव्वियं सरीरं देवाणं माणुसाण संठाणं ।
सुहणाम पसत्थगदी सुस्सरवयणं सुरूवं च ॥११५०॥

पढमाए पुढवीए णेरवियाणं तु होइ उस्सेहो ।
सत्तधणु तिण्णि रदणी य अंगुला होंति ॥११५१॥

विदियाए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
पण्णरस दोण्णि बारस धणुरदणी अंगुला चेव ॥११५२॥

तदियाए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
एकत्तीसं च धणु एगा रदणी मुणेयव्वा ॥११५३॥

चउथीए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
बासट्ठी चेव धणू वे रदणी होंति णायव्वा ॥११५४॥

पंचमिय पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
सदमेगं पणवीसं धणुप्पमाणेण णादव्वं ॥११५५॥

छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
दोण्णि सदा पण्णासा धणुप्पमाणेण वि णेया ॥११५६॥

सत्तमिए पुढवीए णेरइयाणं तु होइ उस्सेहो ।
पंचेव धणुसयाइं पमाणदो चेव बोधव्वा ॥११५७॥

पणवीसं असुराण सेसकुमाराण दसधणू चेव ।
विंतरजोइसियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा ॥११५८॥

सोहम्मीसाणेसु य देवा खलु होंति सत्तरयणीओ ।
छच्चेव य रयणीओ सणक्कुमारे हि माहिंदे ॥११५९॥

बंभे य लंतवे वि य कप्पे खलु होंति पंच रयणीओ ।
चत्तारि य रयणीओ सुक्कसहस्सार कप्पेसु ॥११६०॥

आणदपाणदकप्पे अद्धद्धाओ हवंति रयणीओ ।
तिण्णेव य रयणीओ बोधव्वा आरणच्चुदे चावि ॥११६१॥

हेट्ठिमगेवेज्जेसु य इज्जा हवंति रयणीओ ।
मज्झिमगेवेज्जेसु य बे रयणी होंति उस्सेहो ॥११६२॥

उवरिमगेवेज्जेसु य दिवड्ढरयणी हवे य उस्सेसो ।
अणुदिसणुत्तरदेवा एया रयणी सरीराणि ॥११६३॥

साधियपंचधणुस्स य उस्सेधो होइ कम्मभूमीसु ।
छद्धणुसहस्सुस्सेधं चत्तारि दु वे य भोगभूमीसु ॥११६४॥

भागमसंखेज्जदिमं जं देहं अंगुलस्स तं देहं ।
एइंदियादिपंचेंदियंतदेहं पमाणेण ॥११६५॥

साधियसहस्समेगं तु जोयणाणं हवेज्ज उक्कस्सं ।
एइंदियस्स देहं तं पुण पउमत्ति णादव्वं ॥११६६॥

संखो पुण बारस जोयणाणि गोम्ही हवे तिकोसं तु ।
भमरो जोयणमेत्तं मच्छो पुण जोयणसहस्सं ॥११६७॥

जंबूदीवपरिहिओ तिण्णिव लक्खं च सोलहसहस्सं ।
बे चेव जोयणसया सत्तावीसा य होंति बोधव्वा ॥११६८॥

तिण्णेव गाउआइं अट्ठावीसं च धणुसयं भणियं ।
तेरस य अगुलाइं अद्धंगुलमेव सविसेसं ॥११६९॥

जंबूदीवो धादइखंडो पुक्खरवरो य तह दीवो ।
वारुणिवर खीरवरो य घिदवरो खुइवरदीवो ॥११७०॥

णंदीसरो य अरुणो अरुणब्भासो य कुंडलवरो य ।
संखवर रुजगभुजगवर कुसवर कुंचवरदीवो ॥११७१॥

एवं दीवसमुद्दा दुगुणदुगुणवित्थडा असंखेज्जा ।
एदे दु तिरियलोए सयंभुरमणोदहिं जाव ।।११७२।।

जावदिया उद्धारा अड्ढाइज्जाण सागरुवमाणं ।
तावदिया खलु रोमा हवंति दीवा समुद्दाय ।।११७३।।

जंबूदीवो लवणो धादइखंडो य काल उदधी य ।
सेसाणं दीवाणं दोवसरिसणामया उदधी ।।११७४।।

पत्तेयरसा चत्तारि सायरा तिण्णि होंति उदयरसा ।
अवसेसा य समुद्दा खोद्दरसा य णायव्वा ।।११७५।।

वारुणिवर खीरवरो घदवर लवणो य होंति पत्तेया ।
कालो पुक्खर उदधी सयंभुरमणो य उदयरसा ।।११७६।।

लवणे कालसमुद्दे सयंभुरमणे य होंति मच्छा दु ।
अवसेसेसु समुद्देसु णत्थि मच्छा य मयरा वा ।।११७७।।

अट्ठारस जोयणिया लवणे णवजोयणा णदिमुहेसु ।
छत्तीसगा य कालोदहिम्मि अट्ठार णदिमुहेसु ।।११७८।।

साहस्सिया दु मच्छा सयंभुरमणम्हि पंचसदिया दु ।
देहस्स सव्वहस्सं कुंथुपमाणं जलचरेसु ।।११७९।।

जलथलगब्भअपज्जत्त खगथलसंम्मुच्छिमा य पज्जत्ता ।
खगगब्भजा य उभये उक्कस्सेण धणुपुधत्तं ।।११८०।।

जलगब्भजपज्जत्ता उक्कस्सं पंचजोयणसयाणि ।
थलगब्भजपज्जत्ता तिगाउदोक्कस्समायामो ।।११८१।।

अंगुलअसंखभागं बादरसुहुमा य सेसया काया ।
उक्कस्सेण दु णियमा मणुगा य तिगाउ उव्विद्धा ।।११८२।।

सुहुमणिगोद अपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि ।
हवदि दु सव्वजहण्णं सव्वुक्कस्सं जलचराणं ।।११८३।।

मसुरिय कुसग्गबिंदू सूइकलावा पडाय संठाणा ।
कायाणं संठाणं हरिदतसा णेगसंठाणा ॥११८४॥
समचउरसणग्गोहासादिय खुज्जा य वामणा हुंडा ।
पंचेंदिय तिरियणरा देवा चउरस्स णारया हुंडा ॥१८८५॥
जवणालिया मसूरी अतिमुत्तय चंदए खुरप्पे च ।
इंदियसंठाणा खलु फासस्स अणेयसंठाणं ॥११८६॥
अचित्ता खलु जोणी णेरइयाणं च होइ देवाणं ।
दिस्सा य गब्भजम्मा तिविहा जोणी दु सेसाणं ॥११८७॥
सीदुण्हा खलु जोणी णेरइयाणं तहेव देवाणं ।
तेऊण उसिणजोणी तिविहा जोणी दु सेसाणं ॥११८८॥
संखावत्तयजोणी कुम्मुण्णदवंसपत्तजोणी य ।
तत्थ य संखावत्ते णियमा दु विवज्जए गब्भो ॥११८९॥
एइंदिय णेरइया संवुडजोणी हवंति देवा य ।
वियलिंदिया य वियडा संवुडवियडा य गब्भेसु ॥११९०॥
कुम्मुण्णदजोणीए तित्थयरा दुविह चक्कवट्टी य ।
रामावि य जायंते सेसा सेसेसु जोणीसु ॥११९१॥
णिच्चिदर धादु सत्त य तरु दस वियलिंदिएसु छच्चेव ।
सुरणिरयतिरिय चउरो चोद्दस मणुएसु सदसहस्सा ।११९२।
बारसवाससहस्सा आऊ सुद्धेसु जाण उक्कस्सं ।
खरपुढविकायगेसु य वाससहस्साणि बाबीसा ॥११९२॥
चउरिंदियाणमाऊ उक्कस्सं खलु हवेज्ज छम्मासं ।
पचेंदियाणमाऊ एत्तो उड्ढं प ामि ॥११९४॥
मच्छाण पुव्वकोडी परिसप्पाणं तु णवय पुव्वंगा ।
बादाली हस्सा उरगाणं होइ उक्कस्सं ॥११९५॥

पक्खीणं उक्कस्सं वाससहस्सा विसत्तरी होंति।
एगा य पुव्वकोडी असण्णीए तह य कम्मभूमीणं ॥११९७॥
हेमवदवंसयाणं तहेव हेरण्णवंसवासीणं।
मणुसेसु य मेच्छाणं हवदि दु पलिदोपमं एक्कं ॥११९८॥
हरिरम्मयवसेसु य हवंति पलिदोवमाणि खलु दोण्णि।
तिरिएसु य सण्णीणं तिण्णि य तह कुरुवगाणं च ॥११९९॥
देवेसु णारयेसु य तेत्तीसं होंति उदधिमाणाणि।
उक्कस्सयं तु आऊ वाससहस्सा दस जहण्णा ॥१२००॥
एगं च तिण्णि सत्त य दस सत्तरसेव होंति बावीसा।
तेत्तीसमुदधिमाणा पुढवीण ठिदीणमुक्कस्सं ॥१२०१॥
पढमादियमुक्कस्सा विदियादिसु साधियं जहण्णत्तं।
घम्मा य भवणवितरवास सहस्सा दस जहण्णा ॥१२०२॥
असुरेसु सागरोवम तिपल्ल पल्लं च णाग भोम्माणं।
अड्ढाइज्ज सुवण्णा दु दीव सेसा दिवड्ढं तु ॥१२०३॥
पल्लट्ठभाग पल्लं च साधियं जोदिषाण जहण्णिदरं।
हेट्ठिल्लुकस्स ठिदी सक्कादीणं जहण्णा सा ॥१२०४॥
चंदस्स सदसहस्सं सहस्स रविणो सदं च सुक्कस्स।
वासाधिए हि पल्लं लेहिट्ठं वरिसणामस्स ॥१२०५॥
सेसाणं च गहाणं पल्लद्धं आउगं मुणेयव्वं।
ताराणं च जहण्णं पादद्धं पादमुक्कस्सं ॥१२०६॥
वे सत्त दस य चोद्दस सोलस अट्ठारवीस बावीसा।
एयाधिया य एत्तो सक्कादिसु सागरुवमाणं ॥१२०७॥
पंचादी बेहिं जुदा सत्तावीसा य पल्ल देवीणं।
तत्तो सुत्तत्तरिया जाव दु अरणच्चुयं कप्पं ॥१२०८॥

पणयं दस सत्तधियं पणवीसं तीसमेव पंचधियं ।
चत्तालं पणदालं पण्णाश्रो पण्णपणाश्रो ।।१२०६।।

सव्वेसिं श्रमणाणं भिण्णमुहुत्तं हवे जहण्णेण ।
सोवक्कमाउगाणं सण्णीणं चावि एमेव ।।१२१०।।

बेइंदियादिभासा भासा य मणो य सण्णिकायाणं ।
एइंदिया य जीवा श्रमणा य श्रभासया होंति ।।१२११।।

एइंदिय वियलिंदिय णारय सम्मुच्छिमा य खलु सव्वे ।
वेदे णवुंसगा ते णायव्वा होंति णियमेण ।।१२१२।।

देवा य भोगभूमा असंखवासाउगा मणुयतिरिया ।
ते होंति दोसु वेदेसु णत्थि तेसिं तदियवेदो ।।१२१३।।

पंचिंदिया दु सेसा सण्णि श्रसण्णीय तिरिय मणुसा य ।
ते होंति इत्थिपुरिसा णवुंसया चावि वेदेहिं ।।१२१४।।

णेरइगा य णवुंसा मणुया तिरिया तिवेदगा होंति ।
देवा य इत्थिपुरिसा गेवेज्जादिसु हवे पुरिसवेदो ।।१२१५।।

श्राईसाणा कप्पा उववादो होइ देवदेवीणं ।
तत्तो परं तु णियमा उववादो होइ देवाणं ।।१२१६।।

जाव दु श्रारण श्रच्चुद गमणागमणं च होइ देवीणं ।
तत्तो परं तु णियमा णत्थि से गमणं ।।१२१७।।

कंदप्पश्राभिजोगा देवीश्रो चावि श्रारणचुदो त्ति ।
लंतवगादो उवरिं ण संति संमोहखिब्भिमया ।।१२१८।।

कामादुवे तश्रो भोगा इंदियत्था विदूहिं पण्णत्ता ।
कामो रसो य फासो सेसा भोगेत्ति श्राहीया ।।१२१९।।

श्राईसाणा कप्पा देवा खलु होंति कायपडिचारा ।
फासप्पडिचारा पुण सणक्कुमारे श्र माहिंदे ।।१२२०।।

बंभे कप्पे बंभुत्तरे य तह लंतवे य कापिट्ठे ।
एदेसु य जे देवा बोधव्वा रूवपडिचारा ॥१२२१॥

सुक्कमहासुक्केसु य सदारकप्पे तहा सहस्सारे ।
कप्पे एदेसु सुरा बोधव्वा सद्दपडिचारा ॥१२२२॥

आणदपाणदकप्पे आरणकप्पे य अच्चुदे य तहा ।
मणपडिचारा णियमा एदेसु य होंति जे देवा ॥१२२३॥

तत्तो वरं तु णियमा देवा खलु होंति णिप्पडीचारा ।
सप्पडिचारेहिंतो अणंतगुण सोक्खसंजुत्तं ॥१२२४॥

जं च कामसुहं लोए जं च दिव्वं महासुहं ।
वीतरागसुहस्सेदे णंतभागं पि णग्घदि ॥१२२५॥

जदि सागरोवमाओ तदिवास सहस्सिया दु आहारो ।
पक्खेहि दु उस्सासो सागर समएहि चेव भवे ॥१२२६॥

उक्कस्सेणाहारो वाससहस्साहिएण भवणाणं ।
जोविसियाण पुण भिण्णमुहुत्तेणेदि सेस उक्कस्सं ॥१२२७॥

उक्कस्सेणुस्सासो पक्खेणहिएण होइ भवणाणं ।
मुहुत्तपुधत्तेण जहा जोइसणागाण भोमाणं ॥१२२८॥

मोत्तूण मणोहारं आहारो होइ सव्वजीवाणं ।
अणुसमयं अणुसमयं पोग्गलमइयो य णायव्वो ॥१२२९॥

अमयं दिव्वाहारो मदुजीवणियं च कदसणाहारो ।
देवाण भोगभूमाणं चक्कवट्टीण मणुयाणं ॥१२३०॥

पणवीसजोयणाणं ओही वितरकुमारवग्गाणं ।
संखेज्जजोयणाणं जोइहियाणं जहण्णं तु ॥१२३१॥

असुराणामसंखेज्जा कोडीओ सेसजोइसंताणं ।
संखादीदसहस्सा उक्कसोही य विसओदु ॥१२३२॥

सक्कीसाणा पढमं विदियं तु सणक्कुमारमाहिंदा ।
भालंतव तदियं सुक्कसहस्सारया चउत्थी दु ॥१२३३॥
पंचमि आणद पाणद छट्ठी आरणच्चुदा य पस्संदि ।
णवगेवेज्जा सत्तमि अणुदिस अणुत्तरा य लोगं तु ॥१२३४॥
रयणप्पहाए जोयणमेयं विसओ हवेज्ज ओहीए ।
पुढवीदो पुढवीदो गाऊ अद्धं परिहरेज्ज ॥१२३५॥
चत्तारि धणुसदाइं चउसट्ठी धणुसयं च बोधव्वा ।
फासे रसे य गंधे दुगुणा दुगुणा असण्णित्ति ॥१२३६॥
उणतीस जोयणसदा चउवण्णा चेव होंति णादव्वा ।
चउरिंदियस्स णियमा चक्खुप्फासं वियाणाहि ॥१२३७॥
अट्ठेव धणुसहस्सा असण्णिपंचिंदियस्स सोदस्स ।
विसया वि य णायव्वा पोग्गल परिणाम जोगेण ॥१२३८॥
फासे रसे य गंधे विसया णव जोयणा य णायव्वा ।
सोदस्स दु बारस जोयणाणिदो चक्खुसो वोच्छं ॥१२३९॥
सत्तेताल सहस्सा बे चेव सदा हवंति तेसट्ठी ।
चक्खिंदियस्स विसओ उक्कस्सो होदि अदिरित्तो ॥१२४०॥
तिण्णिसयसट्ठिविरहियलक्खं दसमूलताडिदे मूलं ।
णवगुणिदे सट्ठिहिदे चक्खुप्फासस्स अद्धाणं ॥१२४१॥
पढमं पुढविमसण्णी विदियं च सरिसवा जंति ।
पक्खी जाव दु तदियं जाव चउत्थी दु उरसप्पा ॥१२४२॥
आपंचमी त्ति सीहा इत्थीसो जंति छट्ठि पुढवि त्ति ।
गच्छंति माघवी त्ति य मच्छा मणुया य जे पावा ॥१२४३॥
उवट्ठिदा य संता णेरइया तमतमा दु पुढवीदो ।
ण लहंति मणुस्सत्त तिरिक्खजोणि उवणमंति ॥१२४४॥

बालेसु य दाढीसु व पक्खीसु य जलचरेसु उववण्णा ।
संखेज्ज आउठिदिया पुणो वि णिरयावहा होंति ।।१२४५।।

छट्ठीदो पुढवीदो उव्वट्टिदा अणंतर भवम्हि ।
भज्जा माणुसलंभे संजमलंभेण दु विहीणा ।।१२४६।।

होज्जुद संजमलाहो पंचमखिदिणिग्गदस्स जीवस्स ।
णत्थि पुण अंतकिरिया णियमा भवसंकिलेसेण ।।१२४७।।

होज्जुद णिव्वुदिगमणं चउत्थिखिदियागदस्स जीवस्स ।
णियमा तित्थयरत्तं णत्थित्ति जिणेहिं पण्णत्तं ।।१२४८।।

तेण परं पुढवीसु भयणिज्जा उवरियासु णेरयिया ।
समणंतरम्हि जम्मे तित्थयरत्तेण बोधव्वा ।।१२४९।।

णिरयेहिं णिग्गदाणं अणंतर भवम्हि णत्थि णियमादो ।
बलदेव वासुदेवत्तणं च तह चक्कवट्टित्तं ।।१२५०।।

उववादुव्वट्टणमा णेरइयाणं समासदो भणिदो ।
एत्तो सेसाणं पि य आगदि गदिमो पवक्खामि ।।१२५१।।

सव्वप्पज्जत्ताणं सुहुमकायाणं सव्वतेऊणं ।
वाऊणमसण्णीणं आगमणं तिरियमणुसेहिं ।।१२५२।।

तिण्हं खलु कायाणं तहेव वियलिंदियाण सव्वेसिं ।
अविरुद्धं संकमणं माणुसतिरिएसु य भवेसु ।।१२५३।।

पत्तेयदेहा वणप्फइ बादरपज्जत्त पुढवि आउ य ।
माणुसतिरिक्खदेवेहिं चेवाइंति खलु एदे ।।१२५४।।

सव्वे वि तेउकाया सव्वे तह वायुकाइया जीवा ।
ण लहंति माणुसत्तं णियमादु अणंतर भवम्हि ।।१२५५।।

अविरुद्धं संकमणं असण्णिपज्जत्तयाण तिरियाणं ।
माणुसतिरिक्खसुरणारएसु ण दु सव्वभावेसु ।।१२५६।।

णिरएसु पढमणिरए तिरिए मणुएसु कम्मभूमीसु ।
हीणेसु य उप्पत्ती अमराणं भवणवेंतरेसु ॥१२५७

संखादीदाओ खलु माणुसतिरियादु मणुयतिरिएहिं ।
संखेज्ज आउगेहिं दु णियमा सण्णीय आयंति ॥१२५८

संखादि दाऊणं संकमणं णियमदो दु देवेसु ।
पयडीए तणुकसाया सव्वेसिं तेण बोधव्वा ॥१२५९

माणुसतिरिया य तहा सलागपुरिसा ण हुंति खलु णियमा ।
तेसिं अणंतर भवे भजणिज्जा णिव्वुदी गमणं ॥१२६०॥

सण्णि असण्णी तहा वाणेसु य तह य भवणवासीसु ।
उववादो बोधव्वो मिच्छादिट्ठीण णियमादु ॥१२६१॥

संखादी दाऊणं मणुयतिरिक्खाण मिच्छभावेणं ।
उववादो जोदिसिए उक्कस्सं तावसाणं दु ॥१२६२॥

परिवायगाण णियमा उक्कस्स होदि बंभलोगोत्ति ।
उक्कस्स सहस्सारं जाव दु आजीवगाण तहा ॥१२६३॥

तत्तो परं तु णियमा उववादो णत्थि अण्णलिंगीणं ।
णिग्गंथ सावगाणं उववादो अच्चुदं जाव ॥१२६४॥

जाउवरिमगेवेज्जं उववादो अभवियाण उक्कस्सो ।
उक्कट्ठेण तवेण दु णियमा णिग्गंथलिंगेण ॥१२६५॥

तत्तो पर तु णियमा तवदंसणणाण चरणजुत्ताणं ।
णिग्गंथाणुववादो जावदु सव्वट्ठसिद्धित्ति ॥१२६६॥

आईसाणा देवा चएतु एइंदियत्तणे भज्जा ।
तिरियत्तमाणुसत्ते भयणिज्जा जाव सहसारा ॥१२६७॥

ो परं तु णियमा देवा वि अणंतरे भवे सव्वे ।
उववज्जंति मणुस्से ण तेसिं तिरिएसु उववादो ॥१२६८॥

आजोदिसित्ति देवा सलागपुरिसा ण होंति ते णियमा ।
तेसिं अणंतरभवे भयणिज्जं णिव्वुदीगमणं ॥१२६९॥

तत्ता परं तु गेवेज्जं भयणिज्जा सलागपुरिसा दु ।
तेसिं अणंतरभवे भयणिज्जा णिव्वुदीगमणं ॥१२७०॥

णिव्वुदिगमणे रामत्तणे य तित्थयरचक्कवट्टित्ते ।
अणुदिसणुत्तरवासी तदो चुदा होंति भयणिज्जा ॥१२७१॥

सव्वट्ठादो य चुदा भज्जा तित्थयरचक्कवट्टित्ते ।
रामत्तणेण भज्जा णियमा पुण णिव्वुदिं जंति ॥१२७२॥

सक्को सहग्गमहिसी सलोगपाला य दक्खिणिंदा य ।
लोगंतिगा य णियमा चुदा दु खलु णिव्वुदिं जंति ॥१२७३॥

एवं तु सारसमए भणिदा दु गदागदी मया किंचि ।
णियमादु मणुसगदिए णिव्वुदिगमणं अणुण्णादं ॥१२७४॥

सम्मद्दंसणणाणेहिं भाविदा सयलसंजमगुणेहिं ।
णिट्ठवियसव्वकम्मा णिग्गंथा णिव्वुदिं जंति ॥१२७५॥

ते अजरयमरमरुजं अक्खयसोक्खं अणोवमं पत्ता ।
अव्वाबाधमणंतं अणागयं काल मच्छंति ॥१२७६॥

एइंदियादि पाणा चोद्दस दु हवंति जीवठाणाणि ।
गुणठाणाणि य चोद्दस मग्गणठाणाणि वि तहेव ॥१२७७॥

एइंदियादि जीवा पंचविधा भयवदा दु पण्णत्ता ।
पुढवीकायादीया पंचविधे इंदिया चेव ॥१२७८॥

संखो गोभी भमरादिगा दु विगलिंदिया मुणेदव्वा ।
पंचेंदिया दु जलथलखचरासुरणारयणरा च ॥१२७९॥

पंचेव इंदियपाणा मणवचकाया दु तिण्णि बलपाणा ।
आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दसपाणा ॥१२८०॥

इंदिय बल उस्सासा आऊ चदु छक्क सत्त अट्ठेव ।
एगिंदिय विगलिंदिय असण्णिसण्णीण णव दस
पाणा ॥१२८१॥

सुहुमा बादरकाया ते खलु पज्जत्तया अपज्जत्ता ।
एइंदिया दु जीवा जिणेहिं कहिया चदुवियप्पा ॥१२८२॥

पज्जत्त अपज्जत्ता होंति विगलिंदिया दु छब्भेया ।
पज्जत्तापज्जत्ता सण्णि असण्णी य सेसा दु ॥१२८३॥

मिच्छादिट्ठी सासादणो य मिस्सो अ ो चेव ।
देसविरदो पमत्तो अपमत्तो तह य णायव्वो ॥१२८४॥

एत्तो अपुव्वकरणो अणियट्ठी सुहुमसंपराओ य ।
उवसंतखीणमोहो सजोगकेवलिजिणो अजोगी य ॥१२८५॥

गइ इंदिये च काये जोगे वेदे कसाय णाणे य ।
संजम दंसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥१२८६॥

जीवाणं खलु ठाणाणि जाणि गुणसण्णिदाणि ठाणाणि ।
एदे मग्गणठाणेसु चेव परिमग्गिदव्वाणि ॥१२८७॥

तिरियगदीए चोद्दस हवंति सेसासु जाण दो दो दु ।
एइंदिएसु चउरो दो दो विगिलिंदिएसु हवे ॥१२८८॥
पंचिंदिएसु चत्तारि होंति काये तहा पुढवि आदीसु ।
दस तसकाये भणिया मणजोगे जाण एक्केक्कं ॥१२८९॥
तिण्हं वचिजोगाणं एक्केकं सच्चमोस वज्जित्ता ।
तस्स य पंच य भणिया पज्जत्ता जिणवरिंदेहिं ॥१२९०॥
आहारदुगस्सेगं कम्मइए अट्ठ अपरिपुण्णा दु ।
थीपुरिसेसु य चउरो णवुंसगे चोद्दसा भणिया ॥१२९१॥
चोद्दस कसाय मगो मदिसुदअवधिम्हि जाण दो दो दु ।
मणपज्जवम्हि एक्कं एक्कदुगे केवले णाणे ॥१२९२॥

मदियण्णाणे चोद्दस सुदम्हि तह एक्क बोहिविवरीदो ।
सामाइयादि एक्कं असंजमे चोद्दसा होंति ॥१२९३॥

चक्खुम्हि दंसणम्हि य तिय छा वा चोद्दसा अचक्खुम्हि ।
ओधिम्हि दोण्णि भणिया एक्कं वा दोण्णि केवलगे ॥१२९४॥

किण्हादीणं चोद्दस तेउस्स य दोण्णि होंति विण्णेया ।
पउमसुक्केसु दो दो चोद्दस भव्वे अभव्वे य ॥१२९५॥

उवसमवेदयखइये सम्मत्ते जाण होंति दो दो दु ।
सम्मामिच्छत्तम्मि य सण्णी खलु होई पज्जत्तो ॥१२९६॥

पज्जत्तापज्जत्ता सासणसम्मम्हि सत्त णायव्वा ।
मिच्छत्ते चोद्दसया दो बारस सण्णि इदरम्हि ॥१२९७॥

सुहुमदुगं वज्जित्ता सेसे पज्जत्तगा य छच्चेव ।
सण्णीदो पज्जत्तं पि एव सत्तेव सासणे णेया ॥१२९८॥

आहारम्हि य चोद्दस इदरम्हि य अट्ठ अपरिपुण्णा दु ।
जीवसमासा एदे गइयादीमग्गणे भणिया ॥१२९९॥

सुरणारएसु चत्तारि होंति तिरिएसु जाणु पचेव ।
मणुसगदीए वि तहा चोद्दस गुणणामठाणाणि ॥१३००॥

एगविगलिंदिय मिच्छादिट्ठिस्स होई गुणठाणं ।
आसादणस्स केहि वि भणियं चोद्दस सयलिंदियाण तु ॥१३०१॥

पुढवीकायादीणं पंचसु जाणाहि मिच्छगुणठाणं ।
तसकायिएसु चोद्दस भणिया गुणणामधेयाणि ॥१३०२॥

सच्चे मणवचिजोगे असच्चमोसे य तह य दोण्हं पि ।
मिच्छादिट्ठिप्पहुदी जोगंता तेरसा होंति ॥१३०३॥

वेउव्वकाययोगे चत्तारि हवंति तिण्णि मिस्ससम्हि ।
आहारदुगस्सेमं पमत्तठाणं विजाणाहि ॥१३०४॥

कम्मइयस्स य चउरो तिण्हं वेदाण होंति णव चेव ।
वेदे व कसायाणं लोभस्स वियाण दस ठाणं ॥१३०५॥

तिण्हं अण्णाणाणं मिच्छादिट्ठि य सासणो होदि ।
मदि सुद ओहिणाणे चउत्थादो जाव खीणंता ॥१३०६॥

मणपज्जयम्हि णियमा सत्तेव य संजदा समुद्दिट्ठा ।
केवलिणाणे णियमा जोगि अजोगि य दोण्णि मदे ॥१३०७॥

सामायियछेदणादो जाव णियत्तेत्ति परिहारमप्पत्तोत्ति ।
सुहुमं सुहुमसरागे उवसंतादि जहाखादं ॥१३०८॥

विरदाविरदं एक्कं संजमिस्सस्स होदि गुणठाणं ।
हेट्ठिमगा चउरो खलु असंजमे होंति णादव्वा ॥१३०९॥

मिच्छादिट्ठिप्पहुदि चक्खुअचक्खुस्स होति खीणंता ।
ओधिस्स अविरदपहुदि केवल तह दंसणे दोण्णि ॥१३१०॥

मिच्छादिट्ठिप्पहुदी चउरो सत्तेव तेरसंत्तत्तं ।
तियदगु एक्कस्सेव किण्हादीहीणलेस्साणं ॥१३११॥

भवसिद्धिगस्स चोद्दस एक्कं इयरस्स मिच्छगुणठाणं ।
उवसमसम्मत्तेसु य अविरदपहुदि तु अट्ठेव ॥१३१२॥

तह वेदयस्स भणिया चउरो खलु होंति अप्पमत्ताणं ।
खाइयसम्मत्तम्हि य एयारस जिणवरुदिट्ठा ॥१३१३॥

मिस्से सासणसम्मे मिच्छादिट्ठिम्हि होइ एक्केक्कं ।
सण्णिस्स बारसा खलु हवदि असण्णीसु मिच्छत्तं ॥१३१४॥

आहारस्स य तेरस पंचेव हवंति जाण इयरस्स ।
मिच्छासासण अविरद सजोगी अजोगी य बोधव्वा ॥१३१५॥

एइंदिया य पंचिंदिया य उड्ढमहोतिरियलोएसु ।
सयलविगलिंदिया पुण जीवा तिरियम्मि लोयम्मि ॥१३१६॥

एइंदिया य जीवा पंचविधा बादरा य सुहुमा य ।
देसेहि बादरा खलु सुहुमेहि णिरंतरो लोओ ॥१३१७॥

अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो ।
भावकलंकसुपउरा णिगोदवासं अमुंचता ॥१३१८॥

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा ।
सिद्धेहिं अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण ॥१३१९॥

एइंदिया अणंता वणप्फदीकायिगा णिगोदा य ।
पुढवी आऊ तेऊ वाऊ लोया असंखिज्जा ॥१३२०॥

तस काइया असंखा सेढीओ पदरसंखभागो दु ।
सेसासु मग्गणासु वि णेदव्वा जीव समासेज्ज ॥१३२१॥

बावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडिसदसहस्साइं ।
णेयापुढविदगागणि वाऊ कायाण परिसखा ॥१३२२॥

कोडिसदसहस्साइं सत्तट्ठ य णव य अट्ठवीसं च ।
बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियहरिदकायाणं ॥१३२३॥

अद्धत्तेरस बारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं ।
जलचर पक्खि चउप्पयउर परिसप्पेसु णव होंति ॥१३२४॥

छव्वीसं पुणवीसं बारस कुलकोडिसदसहस्साइं ।
सुरणेरइयणराणं जहाकमं होंति णायव्वा ॥१३२५॥

एया य कोडिकोडी सत्ता णिवुदी य सदसहस्साइं ।
पण्णं कोडि सहस्सा सव्वंगीणं कुलाण तु ॥१३२६॥

मणुसगदीए थोवा तेहिं असंखिज्जसंगुणा णिरए ।
तेहिं असखेज्जगुणा देवगदीए हवे जीवा ॥१३२७॥

तेहिंतो णंतगुणा सिद्धगदीए हवंति भवरहिया ।
तेहिं तोणंतगुणा तिरियगदीए किलेसंता ॥१३२८॥

थोवा दु तमतमाए अणंतराणंतरे दु चरिमासु ।
होंति असखेज्जगुणा णारइया छासु पुढवीसु ।।१३२६।।

थोवा तिरिया पंचेंदिया दु चउरिंदिया विसेसहिया ।
बेइंदिया दु जीवा तत्तो अहिया विसेसेण ।।१३३०।।

तत्तो विसेसअहिया जीवा तेइंदिया मुणेयव्वा ।
तेहिंतो णतगुणा भवंति एइंदिया जीवा ।।१३३१।।

अंतरदीवे मणुया थोवा मणुएसु होंति णायव्वा ।
कुरुवेसु दससु मणुया संखेज्जगुणा तहा होंति ।।१३३२।।

तत्तो संखेज्जगुणा मणुया हरिरम्मएसु वस्सेसु ।
तत्तो संखेज्जगुणा हेमवदहरिण्णवस्सा य ।।१३३३।।

भरहेरावदमणुया संखेज्जगुणा हवंति खलु तत्तो ।
तत्तो संखिज्जगुणा णियमादु विदेहगा मणुया ।।१३३४।।

सम्मुच्छि य मणुया होंति असंखिज्जगुणा य तत्तो दु ।
ते चेव अपज्जत्ता सेसा पज्जत्तया सव्वे ।।१३३५।।

थोवा विमाणवासी देवा देवी य होंति सव्वे वि ।
तेहि असंखेज्जगुण भवणेसु य दसविहा देवा ।।१३३६।।

तेहि असंखेज्जगुणा देवा खलु होंति वाणवेंतरिया ।
तेहि असंखेज्जगुणा देवा सव्वे वि जोदिसिया ।।१३३७।।

अणुदिसणुत्तरदेवा सम्मादिट्ठी य होंति बोधव्वा ।
तत्तो खलु हेट्ठिमया सम्मामिस्सा य तह सेसा ।।१३३८।।

मिच्छादंसण अविरदिकसायजोगा हवंति बंधस्स ।
आउस्सज्झवसाणं हेदव्वो ते दु णादव्वा ।।१३३९।।

जीवो कसायजुत्तो जोगादो कम्मणो दु जे जोग्गा ।
गेण्हदि पोग्गलदव्वे बधो सो होदि णायव्वा ।।१३४०।।

पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबंधो य चउव्विहो होइ ।
दुविहो य पयडिबंधो मूलो तह उत्तरो चेव ॥१३४१॥

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेदणीय मोहणियं ।
आउगणामा गोदं तहंतरायं च मूलाओ ॥१३४२॥

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो तहेव बादालं ।
दोण्णि य पंच य भणिया पयडीओ उत्तरा चेव ॥१३४३॥

आभिणिबोहियसुदओहिमणपज्जयकेवलाणं च ।
आवरणं णाणाणं णादव्वं सव्वभेदाणं ॥१३४४॥

णिद्दाणिद्दा पयलापयला तह थीणगिद्धि णिद्दा य ।
पयला चक्खु अचक्खू ओहीणं केवलस्सेदं ॥१३४५॥

सादमसादं दुविहं वेदणियं तहेव मोहणीयं च ।
दंसणचरित्तमोहं कसाय तह णोकसायं च ॥१३४६॥

तिण्णि य दुवे य सोलसणवभेदा जहाकमेण णायव्वा ।
मिच्छत्तं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तमिदि तिण्णि ॥१३४७॥

कोहो माणो माया लोहाणंताणुबंधिसण्णा य ।
अपच्चक्खाण तहा पच्चक्खाणो य संजलणो ॥१३४८॥

इत्थी पुरिसणवुंसयवेदा हासरदि अरदिसोगो य ।
भयमेत्तो य दुगुंछा णवविह तह णोकसायभेयं तु ॥१३४९॥

णिरयाऊ तिरियाऊ माणुसदेवाण होंति आऊणी ।
गदि जादिसरीराणि य बंधणसंघादसंठाणा ॥१३५०॥

सचउणगोवंगं वण्णरसगंधफासमणुपुव्वी ।
अगुरूलहुगुवघादं परघादमुस्सासणामं च ॥१३५१॥

आदावुज्जोदविहायगइजुयलतस सुहुमणामं च ।
पज्जत्तसाहरणजुग थिर सुह सुहगं च आदेज्जं ॥१३५२॥

अथिर असुह दुब्भगयाणादेज्जं दुस्सरं अजसकित्ती ।
सुस्सर जसकित्ती वि य णिमिणं तित्थयरणाम
बादालं ॥१३५३॥

दाणंतराय लाहो भोगुवभोगं च वीरियं चेव ।
एव खु पयडिबद्धं वीसहियसायं वियाणाहि ॥१३५४॥

सव्वे मिच्छाइट्ठी बंधइ णाहारदुग य तित्थयरं ।
उणवीसं छादालं सासणसम्मो य मिस्सो य ॥१३५५॥

वज्जि तेदालीसं तेवण्णं चेव पंचवण्णं च ।
बंधइ सम्मादिट्ठि दु सावओ संजदो तहा चेव ॥१३५६॥

एगट्ठी बासट्ठी अडणउदी तिण्णिसहिय सयरहियं ।
बंधंति अप्पमत्ता पुव्व णियट्ठी य सुहुमो य ॥१३५७॥

उससं णिजोगी उणवीससयेहिं रहियपयडीणं ।
वीससयं पयडिविणा जोगविहीणा हु बंधंति ॥१३५८॥

तिण्हं खलु पढमाणं उक्कस्सं अतंरायस्सेव ।
तीसं कोडाकोडी सायरणामाणमेव ठिदि ॥१३५९॥

मोहस्स सत्तरिं खलु वीसं णामस्य चेव गोदस्स ।
तेतीसमाउगाणं उवमाओ सायराणं तु ॥१३६०॥

बारस य वेयणीए णामागोदाणमट्ठ य मुहुत्ता ।
भिण्णहुत्तं तु ठिदी जहण्णया सेसपंचण्हं ॥१३६१॥

कम्माणं जो दु रसो अज्झवसाणजणिद सुह असुहो वा ।
बंधो सो अणुभागो पदेसबधो इमो होइ ॥१३६२॥

सुहुमे जोगविसेसेणेगदखेत्तावगाढठिदिगाणं ।
एक्केक्कम्हि पदेसे कम्मपदेसा अणंता दु ॥१३६३॥

मोहस्सावरणाणं खएण अह अंतराइयस्सेव ।
उप्पज्जइ केवलयं पयासयं सव्वभावाणं ॥१३६४॥

तत्तोरालिय देहो णामा गोदं च केवली जुगवं ।
आउं च वेदणीयं खिवइत्तो णीरओ होई ।।१३६५।।

एसो मे उवदेसो संखेवेण कहिदो जिणक्खादो ।
सम्मं भावेदव्वो दायव्वो सव्वजीवाणं १३६६।।

दइढूण सव्वजीवे दमिदूण य इंदियाणि तह पंच ।
अट्ठविहकम्मरहिया णिव्वाणमणुत्तरं जाथ ।।१३६७।।

शीलगुणालयभूदे कल्लाणविसेसपाडिहेरजुदे ।
बंदित्ता अरहंते सीलगुणे कित्तइस्सामि ।।१३६८।।

जोए करणे सण्णा इंदिय भोम्मादि समणधम्मे य ।
अण्णोण्णेहि अभत्था अट्ठारससीलसहस्साइं १३६९।।

तिण्हं सुहसंजोगो करणं च असुहसंजोगो ।
आहारावी सण्णा फासादिय इंदिया णेया ।।१३७०।।

पुढविदगागणिमारुदपत्तेय अणंजकायिया चेव ।
विगतिगचउपंचिंदिय भोम्मादी हवंति दस एदे ।।१४७१।।

खंती मद्दव अज्जव लाघव तवसंजमो अंकिचणदा ।
तह होति बंभचेरं सच्च च्चागो य दस धम्मा ।।१३७२।।

मणगुत्ते मुणिवसहे मणकरणोम्मुक्कसुद्धभावजुदे ।
आहारसण्णविरदे फासिंदियसंवुडे चेव ।।१३७३।।

पुढवी संजम जुत्ते खतिगुणसंजुदे पढमसीलं ।
अचल ठादि विसुद्धे तहेव सेसाणि णेयाणि ।।१३७४।।

इगवीस चदुर सदिया दस दस दसगा य आणुपुव्वी य ।
हिंसादिक्कमकाया विराहणालोयणा सोही ।।१३७५।।

पाणिवह मुसावादं अदत्त मेहुण परिग्गहं चेव ।
कोदमदमाय लोहा भय अरदिरदी दुगुंछा य ।।१३७६।।

मरगवयरगकाय मंगुल मिच्छत्तं जेह तह पमादो य ।
पिसुणत्तरगमण्णाणं श्ररिणग्गहो इंदियाणं च ॥१३७७॥
श्रदिक्कमणं वदिक्कमणं श्रदिचारो तहेव श्ररगाचारो ।
एदेहिं चदूहिं पुरगो सावज्जो होई गुरिगयव्वो ॥१३७८॥
पुढविदगागरिगमारुदपत्तेयारगंतकाइया च्चेव ।
विगतिगचदुपंचिदिय श्रण्णोण्णवधाय दसगुरिगदा ॥१३७९॥
थीसंसग्गो परिगदरसभोयणं गधमल्लसंठप्पं ।
सयणासणभूसरगयं छट्ठं पुण गीयवाइयं चेव ॥१३८०॥
श्रत्थस्स संपश्रोगो कुसीलसंसग्गि रायसेवा य ।
रत्ती वि य संयरगं दससीलविराहरगा भरिगया ॥१३८१॥
श्राकंपिय श्रणुमारिगय ज दिट्ठं बादरं च सुहुमं च ।
छण्णं सद्धाउलय बहुजरगमव्वत्त तस्सेवी ॥१३८२॥
श्रालोपण पडिकमणं उभय विवेगो तधा विउस्सग्गो ।
तव छेदो मूलं पिय परिहारो चेव सद्दहणा ॥१३८३॥
पाणादिवादविरदे श्रदिक्कमरगदोस करण उम्मेक्को ।
पुढवीए पुडवीपुणरारंभसुसंजदे धीरे ॥१३८४॥
इत्थीसंसग्गविजुदे श्राकंपिय दोसकररग उम्मुक्के ।
श्रालोयरग सोधिजुदे श्रादिगुरगो सेसया रगेया १३८५॥
सील गुणाणं संखा पथ्थारो श्रक्खसंकमोच्चेव ।
णट्ठं तह उद्दिट्ठं पंचवि वत्थूरिग रगेयाणि ॥१३८६॥
सव्वे वि पुव्वभगा उवरिमभगेसु एक्कमेक्केसु ।
मेलंत्तित्तिय कमसो गुरिगदे उप्पज्जदे संखा ॥१३८७
पढमं सील पमाणं कमेरग रिगक्खिविय उवरिमाणं च ।
पिंडं पाडि एक्केक्कं रिगक्खि रिगखित्ते होई पत्थारो
॥१३८८॥

णिक्खित्तु विदियमेत्तं पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं ।
पिंडं पडि णिक्खेज्जो तहेव सेसावि कादव्वा ।।१३८८

पढमक्खे अंतगदे आदिगदे संकमेदि विदियक्खो ।
दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो ।।१३९०।।

सगमाणेहि विहत्ते सेसं लक्खित्तु सखिवे रूवं ।
लक्खिज्जंते सुद्धं एव सव्वत्थ कायव्वं ।।१३९१।।

संठाविदूण रूवं उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे ।
अवणिज्ज अणंकिदयं कुज्जा पढमंतिया चेव ।।१३९२।।

एवं सीलगुणाणं सुत्तत्थवियप्पदो विजाणित्ता ।
जो पालेदि विसुद्धो सो पावदि सव्वकल्लाणं ।।१३९३।।

सो मे तिहुवणमहिदो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणलाहं चरित्तसुद्धिं समाधिं च ।।१३९४।।

इति श्री कुंदकुंदाचार्यविरचित मूलाचार समाप्त.

"मैं" और "मेरे" के जो भाव है, वे घमण्ड और स्वार्थपूर्णता के अतिरिक्त और कुछ नही हैं। जो मानव उनका दमन कर लेता है, वह देव लोक से भी उच्चलोक को प्राप्त होता है।

❋ ❋ ❋

यदि मनुष्य अपने दोषो की आलोचना उसीप्रकार करे, जिसप्रकार वह अपने वैरियो के दोषो की करता है, तो क्या उसे कोई दोष स्पर्श कर सकेगा ? अर्थात् नही कर सकेगा।

श्रीमद्देवसेन विरचिता

ालाप-पद्धति:

गुणाना विस्तरं वक्ष्ये स्वभावानां तथैव च ।
पर्यायाणां विशेषेण नत्वा वीरं जिनेश्वरम् ॥१॥

आलापपद्धतिर्वचनरचनाऽनुक्रमेण नयचक्रस्योपरि उच्यते ।
॥१॥

सा च किमर्थम् ? ॥२॥

द्रव्यलक्षणसिद्ध्यर्थं स्वभावसिद्ध्यर्थञ्च ॥३॥

द्रव्याणि कानि ? ॥४॥

जीवपुद्गलधर्माधर्माकाशकालद्रव्याणि ॥५॥

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥६॥

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥७॥

इति द्रव्याधिकार

–●–

लक्षणानि कानि ? ॥८॥

अस्तित्वं, वस्तुत्वं, द्रव्यत्वं, प्रमेयत्वं, अगुरुलघुत्वं, प्रदेशत्वं, चेतनत्वमचेतनत्वं, मूर्तत्वममूर्तत्वं द्रव्याणां दश सामान्यगुणाः ।
॥९॥

प्रत्येकमष्टावष्टौ सर्वेषाम् ॥१०॥

[एकैकद्रव्ये अष्टौ अष्टौ गुणाः भवन्ति । जीवद्रव्ये अचेतनत्वं मूर्त्तत्वं च नास्ति, पुद्गलद्रव्ये चेतनत्वममूर्तत्वं च नास्ति, धर्माधर्माकाशकालद्रव्येषु चेतनत्वं मूर्तत्वं च नास्ति । एवं द्विद्विगुणवर्जिते अष्टौ अष्टौ गुणाः प्रत्येकद्रव्ये भवन्ति ।]

ज्ञानदर्शनसुखवीर्याणि, स्पर्शरसगन्धवर्णाः, गतिहेतुत्वं, स्थितिहेतुत्वं, अवगाहनहेतुत्वं, वर्त्तनाहेतुत्वं, चेतनत्वं, अचेतनत्वं, मूर्तत्वं, अमूर्तत्वं, द्रव्याणां षोडश विशेषगुणाः ।।११।।

प्रत्येकं जीवपुद्गलयोः षट् ।।१२।।

इतरेषां प्रत्येक त्रयो गुणाः ।।१३।।

[षोडशविशेषगुणेषु जीवपुद्गलयोः षडिति । जीवस्य ज्ञानदर्शनसुखवीर्याणि चेतनत्वममूर्तत्वमिति षट् । पुद्गलस्य स्पर्शरसगन्धवर्णाः मूर्त्तत्वमचेतनत्वमिति षट् । इतरेषां धर्माधर्माकाशकालानां प्रत्येकं त्रयो गुणाः । धर्मद्रव्ये गतिहेतुत्वममूर्तत्वमचेतनत्वमेते त्रयो गुणाः । अधर्मद्रव्ये स्थितिहेतुत्वममूर्तत्वमचेतनत्वमिति । आकाशद्रव्ये अवगाहनहेतुत्वममूर्तत्वमचेतनत्वमितिः । कालद्रव्ये वर्त्तनाहेतुत्वममूर्तत्वमचेतनत्वमिति विशेषगुणाः ।]

अन्तस्थाश्चत्वारो गुणाः स्वजात्यपेक्षया सामान्यगुणा विजात्यपेक्षया त एव विशेषगुणाः ।।१४।।

इति गुणाधिकार

—•—

गुणविकाराः पर्यायास्ते द्वेधा अर्थव्यंजनपर्यायभेदात् ।।१५।।

अर्थपर्यायास्ते द्वेधा स्वभावविभावपर्यायभेदात् ।।१६।।

अगुरुलघुविकाराः स्वभावपर्यायास्ते द्वादशधा षड्वृद्धिःरूपाः षड्ढानिरूपाः । अनन्तभागवृद्धिः, असंख्यातभागवृद्धिः, संख्यातभागवृद्धिः, संख्यातगुणवृद्धिः, असंख्यातगुणवृद्धिः, अनन्तगुणवृद्धिः इति षड्वृद्धिः तथा अनन्तभागहानिः, असंख्यातभागहानिः, संख्यातभागहानिः, संख्यातगुणहानिः, असंख्यातगुणहानिः, अनन्तगुणहानिःइतिषड्ढानिः । एवं षट्वृद्धिषड्ढानिरूपा ज्ञेयाः । ।।१७।।

विभावार्थपर्यायाः षड्विधाः मिथ्यात्व-कषाय-राग-द्वेष-पुण्य-पापरूपाऽध्यवसायाः ॥१८॥

॥ इत्यर्थ पर्याय ॥

-●-

विभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायाश्चतुर्विधा नरनारकादिपर्यायाः अथवा चतुरशीतिलक्षा योनयः ॥१९॥

विभावगुणव्यञ्जनपर्याया मत्यादयः ॥२०॥

स्वभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायाश्चरमशरीरात्किञ्चिन्न्यूनसिद्ध पर्यायाः ॥२१॥

स्वभावगुणव्यञ्जनपर्याया अनन्तचतुष्टयरूपा जीवस्य। ॥२२॥

पुद्गलस्य तु द्व्यणुकादयो विभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायाः। ॥२३॥

रसरसान्तर-गन्धगन्धान्तरादि विभावगुणव्यञ्जनपर्यायाः। ॥२४॥

अविभागिपुद्गलपरमाणुःस्वभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायः ॥२५॥

वर्णगन्धरसैकैकाविरुद्धस्पर्शद्वयं स्वभावगुणव्यञ्जन पर्यायाः ॥२६॥

अनाद्यनिधने द्रव्ये स्वपर्यायाः प्रतिक्षणम्।
उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति जलकल्लोलवज्जले ॥२॥
धर्माऽधर्मनभः काला अर्थपर्यायगोचराः।
व्यञ्जनेन तु संबद्धौ द्वावन्यौ जीवपुद्गलौ ॥३॥

॥ इति पर्यायाधिकार ॥

-●-

गुणपर्ययवद् द्रव्यम् ॥२७॥

स्वभावाः कथ्यन्ते। अस्तिस्वभावः, नास्तिस्वभावः, नित्यस्वभावः, अनित्यस्वभावः, एकस्वभावः, अनेकस्वभावः,

भेदस्वभावः, अभेदस्वभावः, भव्यस्वभावः, अभव्यस्वभावः, परमस्वभावः – एते द्रव्याणामेकादश सामान्यस्वभावाः ।

चेतनस्वभावः, अचेतनस्वभावः, मूर्त्तस्वभावः, अमूर्त्तस्वभावः, एकप्रदेशस्वभावः, अनेकप्रदेशस्वभावः, विभावस्वभावः, शुद्ध-स्वभावः, अशुद्धस्वभावः, उपचरितस्वभावः – एते द्रव्याणा दशविशेषस्वभावाः ॥२८॥

जीवपुद्गलयोरेकविंशतिः ॥२९॥

चेतनस्वभावः, मूर्तस्वभावः, विभावस्वभावः, अशुद्धस्वभावः उपचरितस्वभावः एतैः पञ्चभिः स्वभावैर्विना धर्मादित्रयाणां षोडशस्वभावाः सन्ति ॥३०॥

तत्र बहुप्रदेशं विना कालस्य पञ्चदशस्वभावाः ॥३१॥

एकविंशतिभावाः स्युर्जीवपुद्गलयोर्मताः ।
धर्मादीनां षोडश स्युः काले पञ्चदश स्मृताः ॥३॥

ते कुतो ज्ञेयाः ? ॥३२॥

प्रमाणनयविवक्षातः ॥३३॥

सम्यग्ज्ञानं प्रमाणम् ॥३४॥

तद्द्वेधा प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥३५॥

अवधिमनःपर्ययावेकदेशप्रत्यक्षौ ॥३६॥

केवलं सकलप्रत्यक्षम् ॥३७॥

मतिश्रुते परोक्षे ॥३८॥

॥ प्रमाणमुक्त ॥

–□–

तदवयवा नयाः ॥३९॥

नयभेदा उच्यन्ते ॥४०॥

णिच्छयववहारणया मूलमभेयाण जाण सव्वाणं ।
णिच्छय साहणहेऊ दव्वयपज्जत्थिया मुणह ॥४॥

द्रव्यार्थिकः, पर्यायार्थिकः, नैगमः, संग्रहः, व्यवहारः, ऋजुसूत्रः, शब्दः, समभिरूढः, एवंभूत इति नव नयाः स्मृताः । ॥४१॥

उपनयाश्च कथ्यन्ते ॥४२॥

नयानां समीपा उपनयाः ॥४३॥

सद्भूतव्यवहारः, श्रसद्भूतव्यवहारः, उपचरितासद्भूतव्यवहारश्चेत्युपनयास्त्रेधा ॥४४॥

इदानीमेतेषां भेदा उच्यन्ते ॥४५॥

द्रव्यार्थिकस्य दश भेदाः ॥४६॥

१. कर्मोपाधिनिरपेक्षः शुद्धद्रव्यार्थिको यथा संसारिजीवः सिद्धसदृक् शुद्धात्मा ॥४७॥

२. उत्पादव्ययगौरणत्वेन सत्ताग्राहकः शुद्धद्रव्यार्थिको यथा द्रव्यं नित्यम् ॥४८॥

३. भेदकल्पनानिरपेक्षः शुद्धो द्रव्यार्थि
पर्यायस्वभावद्रव्यमभिन्नम् ॥४९॥

४. कर्मोपाधिसापेक्षोऽशुद्धद्रव्यार्थिको यथ
भाव श्रात्मा ॥५०॥

५. उत्पादव्ययसापेक्षोऽशुद्धद्रव्यार्थिको
द्रव्यमुत्पादव्ययध्रौव्यात्मकम् ॥५१॥

६. भेदकल्पनासापेक्षोऽशुद्धद्रव्यार्थिको यथ
दयो गुणाः ॥५२॥

७. श्रन्वयसापेक्षो द्रव्यार्थिको यथा
द्रव्यम् ॥५३॥

८. स्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिको यथा स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया द्रव्यमस्ति ॥५४॥

९. परद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिको यथा परद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया द्रव्यं नास्ति ॥५५॥

१०. परमभावग्राहकद्रव्यार्थिको यथा ज्ञानस्वरूप आत्मा। अत्रानेकस्वभावानां मध्ये ज्ञानाख्यः परमस्वभावो गृहीतः ॥५६॥

इति द्रव्यार्थिकस्य दशभेदा

— ❀ —

अथ पर्यायार्थिकस्य षड्भेदा उच्यन्ते ॥५७॥

१. अनादिनित्यपर्यायार्थिको यथा पुद्गलपर्यायो नित्यः मेर्वादिः ॥५८॥

२. सादिनित्यपर्यायार्थिको यथा सिद्धपर्यायो नित्यः ॥५९॥

३. सत्तागौणत्वेनोत्पादव्ययग्राहकस्वभावो नित्याशुद्धपर्यायार्थिको यथा समयं समयं प्रति पर्याया विनाशिनः ॥६०॥

४. सत्तासापेक्षस्वभावो नित्याशुद्धपर्यायार्थिकोयथा एकस्मिन् समये त्रयात्मकः पर्यायः ॥६१॥

५. कर्मोपाधिनिरपेक्षस्वभावो नित्यशुद्धपर्यायार्थिको यथा सिद्धपर्यायसदृशः शुद्धाः संसारिणां पर्यायाः ॥६२॥

६. कर्मोपाधिसापेक्षस्वभावोऽनित्याशुद्धपर्यायार्थिको यथा संसारिणामुत्पत्तिमरणे स्तः ॥६३॥

॥ इति पर्यायार्थिकस्य षड्भेदा ॥

— ❀ —

नैगमस्त्रेधा भूतभाविवर्त्तमानकालभेदात् ॥६४॥

अतीते वर्त्तमानारोपणं यत्र स भूतनैगमो यथा अद्य दीपोत्सवदिने श्रीवर्द्धमानस्वामी मोक्षं गतः ॥६५॥

भाविनि भूतवत्कथन यत्र स भाविनैगमो यथा अर्हन् सिद्ध एव ॥६६॥

कर्तुमारब्धमीषन्निष्पन्नं वा वस्तु निष्पन्नवत्कथ्यते यत्र स वर्त्तमाननैगमो यथा ओदनः पच्यते ।।६७।।

इति नैगमस्त्रेधा

—❀—

संग्रहो द्विविधः ।।६८।।

सामान्यसंग्रहो यथा सर्वाणि द्रव्याणि परस्परमविरोधीनि ।।६९।।

विशेषसंग्रहो यथा सर्वे जीवाः परस्परमविरोधिनः ।।७०।।

इति सग्रहोऽपि द्विधा ।

—❀—

व्यवहारोऽपि द्वेधा ।।७१।।

सामान्यसंग्रहभेदको व्यवहारो यथा द्रव्याणि जीवा जीवाः ।।७२।।

विशेषसंग्रहभेदको व्यवहारो यथा जीवाः संसारिणो मुक्ताश्च ।।७३।।

इति व्यवहारो द्वेधा ।।

—❀—

ऋजुसूत्रो द्विविधः ।।७४।।

सूक्ष्मर्जुसूत्रो यथा एकसमयावस्थायी पर्यायः ।।७५।।

स्थूलर्जुसूत्रो यथा मनुष्यादि पर्यायास्तदायुः प्रमाणकालं तिष्ठन्ति ।।७६।।

इति ऋजु सूत्रो द्वेधा ।

—❀—

शब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः प्रत्येकमेकैका नयाः ।।७६।।

शब्दनयो यथा दाराः भार्या कलत्रं जलं आपः ।।७७।।

समभिरूढनयो यथा गौः पशुः ।।७८।।

एवंभूतनयो यथा इन्दतीति इन्द्रः ।।७९।।

उक्ता अष्टाविंशतिर्नयभेदा ।

—❀—

उपनयभेदा उच्यन्ते ॥८०॥

सद्भूतव्यवहारो द्विधा ॥८१॥

शुद्धसद्भूतव्यवहारो यथा शुद्धगुणशुद्धगुणिनोः शुद्धपर्याय-शुद्धपर्यायिणोर्भेदकथनम् ॥८२॥

अशुद्धसद्भूतव्यवहारो यथाऽशुद्ध गुणाऽशुद्धगुणिनोरशुद्ध-पर्यायाऽशुद्धपर्यायिणोर्भेदकथनम् ॥८३॥

इति सद्भूतव्यवहारोऽपि द्वेधा ।

— ❀ —

असद्भूतव्यवहारस्त्रेधा ॥८४॥

स्वजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा परमाणुःबहुप्रदेशीति कथन-मित्यादि ॥८५॥

विजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा मूर्त्तं मतिज्ञानं यतो मूर्त्त-द्रव्येणजनितम् ॥८६॥

स्वजातिविजात्यसद्भूतव्यवहारो यथा ज्ञेये जीवेऽजीवे ज्ञान-मिति कथनम् ज्ञानस्य विषयात् ॥८७॥

इत्यसद्भूतव्यवहारस्त्रेधा ।

— ❀ —

उपचरितासद्भूतव्यवहारत्रेधा ॥८८॥

स्वजात्युपचरितासद्भूतव्यवहारो यथा पुत्रदारादि मम । ॥८९॥

विजात्युपचरितासद्भूत व्यवहारो यथा वस्त्राभरणहेम-रत्नादि मम ॥९०॥

स्वजातिविजात्युपचरितासद्भूतव्यवहारो यथा देशराज्य-दुर्गादि मम ॥९१॥

इत्युपचरितासद्भूतव्यवहारस्त्रेधा ।

— ❀ —

सहभुवो गुणा., क्रमवर्तिनः पर्यायः ॥९२॥

गुण्यन्ते पृथक् क्रियन्ते द्रव्यं द्रव्यान्तैस्ते गुणाः ॥९३॥

अस्तीत्येतस्य भावोऽस्तित्वं सद्‌रूपत्वम् ।।९४।।

वस्तुनो भावो वस्तुत्वम्, सामान्यविशेषात्मकं वस्तु ।।९५।।

द्रव्य स्वभावो द्रव्यत्वम् निजनिजप्रदेशसमूहैरखण्डवृत्या स्वभावविभावपर्यार्यान् द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवदिति द्रव्यम्। ।।९६।।

सद्द्रव्यलक्षरणम्, सीदति स्वकीयान् गुणपर्यायान् व्याप्नोतीति सत्, उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।९७।।

प्रमेयस्य भावः प्रमेयत्वम्, प्रमाणेन स्वपरस्वरूप परिच्छेद्यं प्रमेयम् ।।९८।।

अगुरुलघोर्भावोऽगुरुलघुत्वं सूक्ष्मा अवाग्गोचराः प्रतिक्षणं वर्तमाना आगमप्रमाणादभ्युपगम्या अगुरुलघुगुणाः ।।९९।।

"सूक्ष्मं जिनोदितं तत्त्वं हेतुभिर्नैव हन्यते ।
आज्ञासिद्धं तु तद्ग्राह्यं नान्यथावादिनो जिनाः" ।।५।।

प्रदेशस्य भावः प्रदेशत्वं क्षेत्रत्वं अविभागिपुद्गलपरमाणु-नावष्टब्धम् ।।१००।।

चेतनस्य भावश्चेतनत्वम् चैतन्यमनुभवनम् ।।१०१।।

चैतन्यमनुभूतिः स्यात् सा क्रियारूपमेव च ।
क्रिया मनोवचः कायेष्वन्विता वर्तते ध्रुवम् ।।६।।

अचेतनस्य भावोऽचेतनत्वमचैतन्यमननुभवनम् ।।१०२।।

मूर्तस्य भावो मूर्तत्वं रूपादिमत्वम् ।।१०३।।

अमूर्तस्वभावोऽमूर्तत्वं रूपादिरहितत्वम् ।।१०४।।

इति गुणाना व्युत्पत्ति ।

–●–

स्वभावविभावरूपतया याति पर्येति परिणमतीति पर्यायः ।।१०५।।

इति पर्यायस्य व्युत्पत्ति ।

–●–

स्वभावलाभादच्युतत्वादस्तिस्वभावः ॥१०६॥

परस्वरूपेणाभावान्नास्तिस्वभावः ॥१०७॥

निज-निज-नानापर्यायेषु तदेवेदमिति द्रव्यस्योपलम्भान्नित्य-स्वभावः ॥१०८॥

तस्याप्यनेकपर्यायपरिणामिकत्वादनित्यस्वभावः ॥१०९॥

स्वभावानामेकाधारत्वादेकस्वभावः ॥११०॥

एकस्याप्यनेकस्वभावोपलम्भादनेकस्वभावः ॥१११॥

गुणगुण्यादिसंज्ञादिभेदाद् भेदस्वभावः ॥११२॥

गुणगुण्याद्येकस्वभावादभेदस्वभावः ॥११३॥

भाविकाले परस्वरूपाकारभवनाद् भव्यस्वभावः ॥११४॥

कालत्रयेऽपि परस्वरूपाकाराभवनादभव्यस्वभावः ॥११५॥

उक्तञ्च—

"अण्णोण्णं पविसता दिंता उग्गासमण्णमण्णस्स ।
मेलंतावि य णिच्चं सग सग भावं ण विजहंति" ॥७॥

पारिणामिकभावप्रधानत्वेन परमस्वभावः ॥११६॥

इति सामान्यस्वभावाना व्युत्पत्ति ।

— ● —

प्रदेशादिगुणाना व्युत्पत्तिश्चेतनादिविशेषस्वभावाना च व्युत्पत्तिर्निगदिता ॥११७॥

धर्मापेक्षया स्वभावा गुणा न भवन्ति ॥११८॥

स्वद्रव्यचतुष्टयापेक्षया परस्पर गुणाः स्वभावाः भवन्ति ॥११९॥

द्रव्याण्यपि भवन्ति ॥१२०॥

स्वभावादन्यथाभवन विभाव. ॥१२१॥

शुद्धं केवलभावमशुद्धं तस्यापि विपरीतम् ॥१२२॥

स्वभावस्याप्यन्यत्रोपचारादुपचरितस्वभावः ॥१२३॥

स द्वेधा - कर्मजस्वाभाविकभेदात् । यथा जीवस्य मूर्तत्वमचेतनत्वं यथा सिद्धानां परज्ञता परदर्शकत्वं च ॥१२४॥

एवमितरेषां द्रव्याणामुपचारो यथासम्भवो ज्ञेयः ॥१२५॥

इति विशेषस्वभावाना व्युत्पत्ति ।

—●—

"दुर्नयैकान्तमारूढा भावानां स्वार्थिका हि ते ।
स्वार्थिकाश्च विपर्यस्ताः सकलङ्का नया यतः" ॥८॥

तत्कथं ? ॥१२६॥

तथाहि सर्वथैकान्तेन सद्रूपस्य न नियतार्थव्यवस्था संकरादि दोषत्वात् ॥१२७॥

तथाऽसद्रूपस्य सकलशून्यताप्रसङ्गात् ॥१२८॥

नित्यस्यैकरूपत्वादेकरूपस्यार्थक्रियाकारित्वाभावः । अर्थक्रिया कारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१२९॥

अनित्यपक्षेऽपि निरन्वयत्वात् अर्थक्रियाकारित्वाभावः । अर्थक्रियाकारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१३०॥

एकस्वरूपस्यैकान्तेन विशेषाभावः सर्वथैकरूपत्वात् विशेषाभावे सामान्यस्याप्यभावः ॥१३१॥

"निर्विशेषं हि सामान्यं भवेत्खरविषाणवत् ।
सामान्यरहितत्वाच्च विशेषस्तद्वदेव हि" ॥९॥ इति ज्ञेयः ।

अनेकपक्षेऽपि तथा द्रव्याभावो निराधारत्वात् आधाराधेयाभावाच्च ॥१३२॥

भेदपक्षेऽपि विशेषस्वभावानां निराधारत्वादर्थक्रियाकारित्वाभावः, अर्थक्रियाकारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१३३॥

अभेदपक्षेऽपि सर्वेषामेकत्वम्, सर्वेषामेकत्वेऽर्थक्रियाकारित्वाभावः, अर्थक्रियाकारित्वाभावे द्रव्यस्याप्यभावः ॥१३४॥

भव्यस्यैकान्तेन पारिणामिकत्वात् द्रव्यस्य द्रव्यान्तरत्व-प्रसङ्गात् सङ्करादिदोषसम्भवात् ।।१३५।।

सर्वथाऽभव्यस्यैकान्तेऽपि तथा शून्यताप्रसङ्गात् स्वभावरूपाण्यभवनात् ।।१३६।।

स्वभावस्वरूपस्यैकान्तेन संसाराभावः ।।१३७।।

विभावपक्षेऽपि मोक्षस्याप्यभावः ।।१३८।।

सर्वथाचैतन्यमेवेत्युक्ते सर्वेषां शुद्धज्ञानचैतन्यावाप्तिः स्यात्, तथा सति ध्यानं ध्येयं, ज्ञानं ज्ञेयं, गुरुशिष्याद्याभावः ।।१३९।।

'सर्वथा' शब्दः सर्वप्रकारवाची, अथवा सर्वकालवाची, अथवा नियमवाची, वा अनेकान्त सापेक्षी वा ? यदि सर्वप्रकार-वाची सर्वकालवाची अनेकान्तवाची वा सर्वादिगणे पठनात् सर्वशब्द एवंविधश्चेत्तर्हि सिद्धं नः समीहितम् । अथवा नियम-वाची चेत्तर्हि सकलार्थानां तव प्रतीतिः कथं स्यात् ? नित्यः, अनित्यः, एकः, अनेकः, भेदः, अभेदः कथं प्रतीतिः स्यात् नियमित पक्षत्वात् ? ।।१४०।।

तथाऽचैतन्यपक्षेऽपि सकलचैतन्योच्छेदः स्यात् ।।१४१।।

असूर्त्तस्यैकान्तेनात्मनो मोक्षस्यावाप्तिः स्यात् ।।१४२।।

सर्वथाऽमूर्त्तस्यापि तथात्मनः संसारविलोपः स्यात् ।।१४३।।

एक प्रदेशस्यैकान्तेनाखण्डपरिपूर्णस्यात्मनोऽनेककार्यकारित्व एव हानिः स्यात् ।।१४४।।

सर्वथाऽनेकप्रदेशत्वेऽपि तथा तस्यानर्थकार्यकारित्व स्वस्वभावशून्यताप्रसङ्गात् ।।१४५।।

शुद्धस्यैकान्तेनात्मनो न कर्ममल कलङ्कावलेपः सर्वथा निरञ्जनत्वात् ।।१४६।।

सर्वथाऽशुद्धैकान्तेऽपि तथात्मनो न कदापि शुद्धस्वभाव-प्रसङ्गः स्यात् तन्मयत्वात् ॥१४७॥

उपचरितैकान्तपक्षेऽपि नात्मज्ञता सम्भवति नियमितपक्ष-त्वात् ॥१४८॥

तथात्मनोऽनुपचरितपक्षेऽपि परज्ञतादीनां विरोधः स्यात् । ॥१४९॥

॥ इति एकान्तपक्षे दोषा ॥

— × —

"नानास्वभावसंयुक्तं द्रव्यं ज्ञात्वा प्रमाणतः ।
तच्च सापेक्षसिद्ध्यर्थं स्यान्नयमिश्रितं कुरु" ॥१०॥

स्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वभावः ।१५०॥
परद्रव्यादिग्राहकेण नास्तिस्वभावः ॥१५१॥
उत्पादव्ययगौणत्वेन सत्ताग्राहकेण नित्यस्वभावः ॥१५२॥
केनचित्पर्यायार्थिकेणानित्यस्वभावः ॥१५३॥
भेदकल्पनानिरपेक्षेणैकस्वभावः ॥१५४॥
अन्वयद्रव्यार्थिकेनैकस्याप्यनेकद्रव्यस्वभावत्वम् ॥१५५॥
सद्भूतव्यवहारेण गुणगुण्यादिभिर्भेदस्वभावः ॥१५६॥
भेदकल्पनानिरपेक्षेण गुणगुण्यादिभिरभेदस्वभावः ॥१५७॥
परमभावग्राहकेण भव्याभव्यपारिणामिकस्वभावः ॥१५८॥
शुद्धाशुद्धपरमभावग्राहकेण चेतनस्वभावो जीवस्य ॥१५९॥
असद्भूतव्यवहारेण कर्मनोकर्मणोरपि चेतनस्वभावः॥१६०॥
परमभावग्राहकेण कर्मनोकर्मणोरचेतनस्वभावः ॥१६१॥
जीवस्याप्यसद्भूतव्यवहारेणाऽचेतनस्वभावः ॥१६२॥
परमभावग्राहकेण कर्मनोकर्मणोर्मूर्त्तस्वभावः ॥१६३॥

जीवस्याप्यसद्भूतव्यवहारेण मूर्त्तस्वभावः ।।१६४।।

परमभावग्राहकेण पुद्गलं विहाय इतरेषाममूर्त्त-स्वभावः ।।१६५।।

पुद्गलस्योपचारादेवनास्त्यमूर्त्तत्वम् ।।१६६।।

परमभावग्राहकेण कालपुद्गलाणूनामेकप्रदेशस्व-भावत्वम् ।।१६७।।

भेदकल्पनानिरपेक्षेणेतरेषां चाखण्डत्वादेकप्रदेशत्वम्।।१६८।।

भेदकल्पनासापेक्षेण चतुर्णामपि नानाप्रदेशस्व-भावत्वम् ।।१६९।।

पुद्गलाणोरुपचारतो नानाप्रदेशत्वं, न च कालाणोः स्निग्धरुक्षत्वाभावात् ऋजुत्वाच्च ।।१७०।।

अणोरमूर्त्तपुद्गलस्यैकविंशतितमो:भावो न स्यात् ।।१७१।।

परोक्षप्रमाणापेक्षयाऽसद्भूतव्यवहारेणाप्युपचारेणामूर्त्तत्वं पुद्गलस्य ।।१७२।।

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेन विभावस्वभावत्वम् ।।१७३।।

शुद्धद्रव्यार्थिकेन शुद्धस्वभावः ।।१७४।।

अशुद्धद्रव्यार्थिकेनाशुद्धस्वभावः ।।१७५।।

असद्भूतव्यवहारेण उपचरितस्वभावः ।।१७६।।

"द्रव्याणां तु यथा रूपं तल्लोकेऽपि व्यवस्थितम् ।
तथा ज्ञानेन संज्ञातं नयोऽपि हि तथाविधः" ।।११।।

।। इति नययोजनिका ।।

———

परद्रव्यादिग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परद्रव्यादिग्राहकः ।
।।१८९।।

परमभावग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परमभावग्राहकः।।१९०।।

(इति द्रव्यार्थिकस्य व्युत्पत्ति)

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः ।।१९१।।

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यनादिनित्य-पर्यायार्थिकः ।।१९२।।

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्य-पर्यायार्थिकः ।।१९३।।

शुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्धपर्यायार्थिकः।।१९४।।

अशुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति अशुद्धपर्यायार्थिकः
।।१९५।।

(इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्ति)

नैकं गच्छतीति निगमः, निगमो विकल्पस्तत्र भवो नैगमः ।।१९६।।

अभेदरूपतया वस्तुजातं संगृह्णातीति संग्रहः ।।१९७।।

संग्रहेण गृहीतार्थस्य भेदरूपतया वस्तुव्यवह्रियत इति व्यवहारः ।।१९८।।

ऋजुं प्राजलं सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः ।।१९९।।

शब्दात् व्याकरणात् प्रकृतिप्रत्ययद्वारेण सिद्धः शब्दः शब्दनय· ।।२००।।

सकलवस्तु ग्राहकं प्रमाणं, प्रमीयते परिच्छिद्यते वस्तुतत्त्वं येन ज्ञानेन तत्प्रमाणम् ।।१७७।।

तद्द्वेधा सविकल्पेतरभेदात् ।।१७८।।

सविकल्पं मानसं तच्चतुर्विधम् मतिश्रुतावधिमनःपर्यय-रूपम् ।।१७९।।

निर्विकल्पं मनोरहितं केवलज्ञानम् ।।१८०।।

।। इति प्रमाणस्य व्युत्पत्ति ।।

प्रमाणेन वस्तुसंगृहीतार्थैकांशो नयः, श्रुतविकल्पो वा, ज्ञातुरभिप्रायो वा नयः, नानास्वभावेभ्यो व्यावृत्य एकस्मिन् स्वभावे वस्तु नयति प्राप्नोतीति वा नयः ।।१८१।।

स द्वेधा सविकल्पनिर्विकल्पभेदात् ।।१८२।।

।। इति नयस्य व्युत्पत्ति ।।

प्रमाणनययोर्निक्षेपणं आरोपणं निक्षेप स नामस्थापना-दिभेदेन चतुर्विधः ।।१८३।।

।। इति निक्षेपस्य व्युत्पत्ति ।।

द्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति द्रव्यार्थिकः ।।१८४।।

शुद्धद्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्धद्रव्यार्थिकः ।।१८५।।

अशुद्धद्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति अशुद्धद्रव्यार्थिकः।।१८६।।

सामान्यगुणादयोऽन्वयरूपेण द्रव्यमिति व्यवस्थापयतीति-अन्वयद्रव्यार्थिकः ।।१८७।।

स्वद्रव्यादिग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति स्वद्रव्यादि ग्राहकः ।।१८८।।

परद्रव्यादिग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परद्रव्यादिग्राहकः । ॥१८९॥

परमभावग्रहणमर्थः प्रयोजनमस्येति परमभावग्राहकः॥१९०॥

(इति द्रव्यार्थिकस्य व्युत्पत्ति)

पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः ॥१९१॥

अनादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येत्यनादिनित्य-पर्यायार्थिकः ॥१९२॥

सादिनित्यपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति सादिनित्य-पर्यायार्थिकः ॥१९३॥

शुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति शुद्धपर्यायार्थिकः॥१९४॥

अशुद्धपर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति अशुद्धपर्यार्थिकः ॥१९५॥

(इति पर्यायार्थिकस्य व्युत्पत्ति)

नैकं गच्छतीति निगमः, निगमो विकल्पस्तत्र भवो नैगमः ॥१९६॥

अभेदरूपतया वस्तुजातं संगृह्णातीति संग्रहः ॥१९७॥

संग्रहेण गृहीतार्थस्य भेदरूपतया वस्तुव्यवह्रियत इति व्यवहारः ॥१९८॥

ऋजुं प्राजलं सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः ॥१९९॥

शब्दात् व्याकरणात् प्रकृतिप्रत्ययद्वारेण सिद्धः शब्दः शब्दनय. ॥२००॥

परस्परेणाभिरूढाः समभिरूढाः । शब्दभेदेऽप्यर्थभेदो नास्ति । यथा शक्र इन्द्रः पुरन्दर इत्यादयः समभिरूढाः ॥२०१॥

एवं क्रियाप्रधानत्वेन भूयत इत्येवभूतः ॥२०२॥

शुद्धाशुद्धनिश्चयौ द्रव्यार्थिकस्य भेदौ ॥२०३॥

अभेदानुपचारतया वस्तु निश्चीयत इति निश्चयः ॥२०४॥

भेदोपचारतया वस्तु व्यवह्रियत इति व्यवहारः ॥२०५॥

गुणगुणिनोः सज्ञादिभेदात् भेदकः सद्भूतव्यवहारः ॥२०६॥

अन्यत्र प्रसिद्धस्य धर्मस्यान्यत्र समारोपणमसद्भूत-व्यवहारः ॥२०७॥

असद्भूतव्यवहार एवोपचारः, उपचारादप्युपचारं यः करोति स उपचारितासद्भूतव्यवहारः ॥२०८॥

गुणगुणिनोः पर्यायपर्यायिणोः स्वभावस्वभाविनोः कारक-कारकिणोर्भेदः सद्भूतव्यवहारस्यार्थः ॥२०९॥

१. द्रव्ये द्रव्योपचारः, २. पर्याये पर्यायोपचारः, ३. गुणे गुणोपचारः, ४. द्रव्ये गुणोपचार , ५. द्रव्ये पर्यायोपचारः, ६. गुणे द्रव्योपचारः, ७. गुणे पर्यायोपचारः, ८. पर्याये द्रव्योपचारः, ९. पर्याये गुणोपचार इति नवविधोपचार असद्भूतव्यवहारस्यार्थो द्रष्टव्यः ॥२१०॥

उपचारः पृथग् नयो नास्तीति न पृथक् कृतः ॥२११॥

मुख्याभावे सति प्रयोजने निमित्ते चोपचारः प्रवर्तते ॥२१२॥

सोऽपि सम्बन्धोऽविनाभावः, सश्लेषः सम्बन्ध., परिणाम-परिणामिसम्बन्धः, श्रद्धाश्रद्धेयसम्बन्धः, [illegible]सम्बन्धः, चारित्रचर्यासम्बन्धश्चेत्यादि सत्यार्थः अस[illegible] [illegible]त्युपचारिताऽसद्भूतव्यवहारनयास्यार्थः ।

सिद्धान्तचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्राचार्यकृत

* द्रव्यसंग्रह *

जीवमजीवं दव्वं, जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं ।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा ॥१॥

जीवो उवओगमओ अमुत्तिकत्ता सदेहपरिमाणो ।
भोत्ता संसारत्थो सिद्धो सो विस्ससोड्ढगई ॥२॥

तिक्काले चदुपाणा इंदियबलमाउआणपाणो य ।
ववहारा सो जीवो णिच्चयणयदो दु चेदणा जस्स ॥३॥

उवओगो दुवियप्पो दंसण णाणं च दसणं चदुधा ।
चक्खु अचक्खु ओही दंसणमध केवलं णेयं ॥४॥

णाणं अट्ठवियप्पं मदिसुदओही अणाणणाणाणि ।
मणपज्जयकेवलमवि पच्चक्ख परोक्खभेयं च ॥५॥

अट्ठचदुणाणदंसण सामण्णं जीवलक्खणं भणियं ।
ववहारा सुद्धणया सुद्धं पुण दंसणं णाणं ॥६॥

वण्ण रस पंच गंधा दो फासा अट्ठ णिच्चया जीवे ।
णो संति अमुत्ति तदो ववहारा मुत्ति बंधादो ॥७॥

पोग्गलकम्मादीणं कत्ता ववहारदो दु णिच्छयदो ।
चेदणकम्माणादा सुद्धणया सुद्धभावाणं ॥८॥

ववहारा सुहदुक्खं पुग्गलकम्मप्फलं पभुंजेदि ।
आदा णिच्छयणयदो चेदणभावं खु आदस्स ॥९॥

अणुगुरूदेहपमाणो उवसंहारप्पसप्पदो चेदा ।
असमुहदो ववहारा णिच्छयणयदो असंखदेसो वा ॥१०॥

पुढविजलतेउवाउ वणप्फदी विविहथावरेइंदी ।
विगतिगचदुपवक्खा तस जीवा होंति संखादी ॥११॥

समणा अमणा णेया पंचिंदिय णिम्मणा परे सव्वे ।
बादरसुहुमेइंदी सव्वे पज्जत्त इदरा य ॥१२॥

मग्गणगुणठाणेहिं य चउदसहिं हवंति तह असुद्धणया ।
विण्णेया संसारी सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया ॥१३॥

णिक्कम्मा अट्ठगुणा किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा ।
लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ॥१४॥

अज्जीवो पुण णेओ पुग्गल धम्मो अधम्म आयासं ।
कालो पुग्गल मुत्तो रूवादिगुणो अमुत्ति सेसा दु ॥१५॥

सद्दो बंधो सुहमो थूलो संठाणभेदतमछाया ।
उज्जोदादवसहिया पुग्गलदव्वस्स पज्जाया ॥१६॥

गइपरिणयाण धम्मो पुग्गल जीवाण गमणसहयारी ।
तोयं जह मच्छाणं अच्छंता णेव सो णेई ॥१७॥

ठाणजुवाण अधम्मो पुग्गलजीवाण ठाणसहयारी ।
छाया जह पहियाणं गच्छंता णेव सो धरई ॥१८॥

अवगासदाण जोग्गं जीवादीणं वियाण आयासं ।
जेण्हं लोगागासं अल्लोगागासमिदि दुविहं ॥१९॥

धम्मा धम्मा कालो पुग्गलजीवा य संति जावदिये ।
आयासे सो लोगो तत्तो परदो अलोगुत्तो ॥२०॥

दव्वपरिवट्टरूवो जो सो कालो हवेइ ववहारो ।
परिणामादिलक्खो वट्टणलक्खो य परमट्ठो ॥२१॥

लोयायासपदेसे इक्केक्के जे ठिया हु इक्केक्का ।
रयणाणं रासीमिव ते कालाणू असंखदव्वाणि ॥२२॥

एव छब्भेयमिदं जीवाजीवप्पभेददो दव्वं ।
उत्तं काल विजुत्तं णायव्वा पंच अत्थिकाया दु ॥२३॥

संति जदो तेणेदे अत्थीत्ति भणंति जिणवरा जम्हा ।
काया इव बहुदेसा तम्हा काया य अत्थिकाया य ।।२४।।

होंति असंखा जीवे धम्माधम्मे अणंत आयासे ।
मुत्ते तिविह पदेसा कालस्सेगो ण तेण सो काओ ।।२५।।

एयपदेसो वि अणू णाणाखंधप्पदेसदो होदि ।
बहुदेसोउवयारा तेण य काओ भणंति सव्वण्हु ।।२६।।

जावदियं आयासं अविभागी पुग्गलाणुवट्ठद्धं ।
तं खु पदेसं जाणे सव्वाणुट्ठाणदाणरिहं ।।२७।।

आसवबंधणसंवरणिज्जरमोक्खा सपुण्णपावा जे ।
जीवाजीव विसेसा तेवि समासेण पभणामो ।।२८।।

आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेयो ।
भावासवो जिणुत्तो कम्मासवणं परो होदि ।।२९।।

मिच्छत्ताविरदिपमादजोगकोहादओथ विण्णेया ।
पण पण पणदह तिय चदु कमसो भेदा दु पुव्वस्स ।।३०।।

णाणावरणादीणं जोग्गं जं पोग्गलं समासवदि ।
दव्वासवो स णेओ अणेयभेयो जिणक्खादो ।।३१।।

बज्झदि कम्मं जेणदु चेदणभावेण भावबंधो सो ।
कम्मादपदेसाणं अण्णोण्णपवेसणं इदरो ।।३२।।

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसभेदा दु चदुविधो बंधो ।
जोगा पयडिपदेसा ठिदि अणुभागा कसायदो होंति ।।३३।।

चेदणपरिणामो जो कम्मस्सासवणिरोहणे हेऊ ।
सो भावसंवरो खलु दव्वासवरोहणे अण्णो ।।३४।।

वदसमिदीगुत्तीओ धम्माणुपिहा परीसहजओ य ।
चारित्तं बहुभेयं णायव्वा भावसंवरविसेसा ।।३५।।

जह कालेण तवेण य भुत्तरसं कम्मपुग्गलं जेण ।
भावेण सडदि णेया तस्सडणं चेदि णिज्जरा दुविहा ॥३६॥

सव्वस्स कम्मणो जो खयहेदू अप्पणो हु परिणामो ।
णेओ स भावमोक्खो दव्वविमोक्खो य कम्मपुधभावो ॥३७॥

सुहअसुहभावजुत्ता पुण्णं पावं हवंति खलु जीवा ।
सादं सुहाऊणामं गोदं पुण्णं पराणि पावं च ॥३८॥

सम्मद्दंसण णाणं चरणं मोक्खस्स कारणं जाणे ।
ववहारा णिच्छयदो तत्तियमइयो णियो अप्पा ॥३९॥

रयणत्तयं ण वट्टइ, अप्पाणं मुयत्तु अण्णदवियम्हि ।
तम्हा तत्तियमइयो होदि हु मोक्खस्स कारणं आदा ॥४०॥

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं रूवमप्पणो तं तु ।
दुरभिणिवेसविमुक्कं णाणं सम्म खु होदि सदि जम्हि ॥४१॥

संसयविमोहविब्भम विवज्जियं अप्पपरसरूवस्स ।
गहणं सम्मं णाणं सायारमणेयभेयं च ॥४२॥

जं सामण्णं गहणं भावाणं णेव कट्टुमायारं ।
अविसेसदूण अट्ठे दंसणमिदि भण्णए समये ॥४३॥

दंसण पुव्वं णाणं छदुमत्थाणं ण दुण्णि उवओगा ।
जुगवं जम्हा केवलि णाहे जुगवं तु ते दो वि ॥४४॥

असुहादो विणिवित्ती सुहे पवित्ती य जाण चारित्तं ।
वदसमिदि गुत्ति रूवो ववहारणयादु जिणभणियं ॥४५॥

बहिरब्भंतरकिरिया रोहो भवकारणप्पणा सट्ठं ।
णाणिस्स जं जिणुत्तं तं परमं सम्मचारित्तं ॥४६॥

दुविहं पि मोक्खहेउ झाणे पाउणदि जं मुणी णियमा ।
तम्हा पयत्तचित्ता जूयं झाणं समब्भसह ॥४७॥

मा मुज्झह मा रज्जह मा दुस्सह इट्ठणिट्ठअत्थेसु ।
थिरमिच्छह जइचित्तं विचित्त झाणप्पसिद्धीए ॥४८॥

पणतीस सोल छप्पण चदु दुग मेगं च जवह झाएह ।
परमेट्ठिवाचयाणं अण्णं च गुरूवएसेण ॥४९॥

णट्ठचदुघाइकम्मो दंसणसुहणाणवीरियमइयो ।
सुहदेहत्थो अप्पा सुद्धो अरिहो विचिंतिज्जो ॥५०॥

णट्ठट्ठकम्मदेहो लोया लोयस्स जाणओ दट्ठा ।
पुरुसायारो अप्पा सिद्धो झाएह लोहसिहरत्थो ॥५१॥

दंसणणाणपहाणे वीरियचारित्त वरतवायारे ।
अप्पं परं च जुंजइ सो आइरियो मुणी णेओ ॥५२॥

जो रयणत्तयजुत्तो णिच्चं धम्मोवएसणे णिरदो ।
सो उवझाओ अप्पा जदिवरवसहो णमो तस्स ॥५३॥

दंसणणाण समग्गं मग्गं मोक्खस्स जो हु चारित्तं ।
साधयति णिच्चसुद्धं साहू सो मुणी णमो तस्स ॥५४॥

जं किंचिवि चिंतंतो णिरीहवित्ती हवे जदा साहू ।
लद्धूणय एयत्तं तदा हु तं तस्स णिच्चयं झाण ॥५५॥

मा चिट्ठह मा जंपह मा चिंतह किं वि जेण होइ थिरो ।
अप्पा अधम्मि रओ इणमेव पर हवे झाणं ॥५६॥

तवसुदवदवं चेदा झाणरह धुरधरो हवे जम्हा ।
तम्हा तत्तियणिरदा तल्लद्धीए सादा होइ ॥५७॥

दव्वसगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदा सुद पुण्णा ।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं ॥५८॥

गोम्मटसारः

(ोवकाण्डम्)

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं ।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं ॥१॥

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य ।
उवयोगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिदा ॥२॥

संखेओ ओघो त्ति य गुणसण्णा सा च मोहजोगभवा ।
वित्थारादेसो त्ति य मग्गणसण्णा सकम्मभवा ॥३॥

आदेसे संलीणा जीवा पज्जत्ती-पाण-सण्णाओ ।
उवओगो वि य भेदे वीसं तु परूपणा भणिदा ॥४॥

इंदियकाये लीणा जीवा पज्जत्ती-आण-भास-मणो ।
जोगे काओ णाणे, अक्खा गदिमग्गणे आऊ ॥५॥

मायालोहे रदिपुव्वाहारं कोहमाणगम्हि भयं ।
वेदे मेहुणसण्णा लोहम्हि परिग्गहे सण्णा ॥६॥

सागारो उवजोगो णाणे मग्गम्हि दंसणे मग्गे ।
अणगारो उवजोगो लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥७॥

जेहिं दु लक्खिज्जंते उदयादिसु संभवेहिं भावेहिं ।
जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं ॥८॥

मिच्छो सासण मिस्सो अविरदसम्मो य देसविरदो य ।
विरदा पमत्त इदरो अपुव्व अणियट्टि सुहमो य ॥९॥

उवसंत खीणमोहो सजोगकेवलि जिणो अजोगी य ।
चउदस जीवसमासा कमेण सिद्धा य णादव्वा ॥१०॥

मिच्छे खलु ओदइयो विदिये पुण पारणामिओ भावो ।
मिस्से खओवसमिओ अविरदसम्मम्हि तिण्णेव ।।११।।

एदे भावा णियमा दंसणमोहं पडुच्च भणिदा हु ।
चारित्तं णत्थि जदो अविरदअंतेसु ठाणेसु ।।१२।।

देशविरदे पमत्ते इदरे व खओवसमिय भावो दु ।
सो खलु चरित्तमोहं पडुच्च भणिदं तहा उवरिं ।।१३।।

तत्तो उवरिं उवसमभावो उवसामगेसु खवगेसु ।
खइओ भावो णियमा अजोगिचरिमो त्ति सिद्धे य ।।१४।।

मिच्छोदयेण मिच्छत्तमसद्दहणं तु तच्च-अत्थाणं ।
एयंतं विवरीयं विणयं संसयिदमण्णाणं ।।१५।।

एयंत बुद्धदरसी यिवरीओ बह्म तावसो विणयो ।
इंदो वि य संसइयो मक्कडियो चेव अण्णाणी ।।१६।।

मिच्छत्तं वेदंतो जीवो विवरीयदसणो होदि ।
ण य धम्म रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जरिदो ।।१७।।

मिच्छाइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ।।१८।।

आदिमसम्मत्तद्धा समयादो छावलि त्ति वा सेसे ।
अणअण्णदरुदयादो णासियसम्मो त्ति सासणक्खो सो ।।१९।।

सम्मत्तरयणपव्वयसिहरादो मिच्छभूमिसमभि मुहो ।
णासियसम्मत्तो सो सासणणामो मुणेयव्वो ।।२०।।

सम्मामिच्छुदयेण य जत्तंतरसव्वघादिकज्जेण ।
ण य सम्मं मिच्छं पि य सम्मिस्सो होदि परिणामो ।।२१।।

दहिगुडमिव वामिस्सं पुहभावं णेव कारिदुं सक्कं ।
एवं मिस्सयभावो सम्मामिच्छो त्ति णादव्वो ।।२२।।

सो संजमं ण गिण्हदि देसजमं वा ण बधदे आउं ।
सम्मं वा मिच्छं वा पडिवज्जिय मरदि णियमेण ।।२३।।

सम्मत्त-मिच्छपरिणामेसु जहिं आउगं पुरा बद्धं ।
तहिं मरणं मरणंतसमुग्घादो वि य ण मिस्सम्मि ।।२४।।

सम्मत्त देशघादिस्सुदयादो वेदगं हवे सम्मं ।
चलमलिनमगाढं तं णिच्चं कम्मक्खवणहेदु ।।२५।।

सत्तण्हं उवसमदो उवसमसम्मो खया दु खइयो य ।
विदियकसायुदयादो असजदो होदि सम्मो य ।।२६।।

सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि ।
सद्दहति असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा ।।२७।।

सुत्तादो तं सम्मं दरसिज्जतं जदा ण सद्दहदि ।
सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी ।।२८।।

णो इंदियेसु विरदो णो जीवे थावरे तसे वापि ।
जो सद्दहदि जिणुत्तं सम्माइट्ठी अविरदो सो ।।२९।।

पच्चक्खाणुदयादो संजमभावो ण होदि णवरिं तुं ।
थोववदो होदि तदो देसवदो होदि पंचमओ ।।३०।।

जो तसवहाउ विरदो अविरदओ तह य थावरवहादो ।
एक्कसमयम्हि जीवो विरदाविरदो जिणेक्कमई ।।३१।।

संजलणणोकसायाणुदयादो संजमो हवे जम्हा ।
मल जणणपमादो वि य तम्हा हु पमत्तविरणो सो ।।३२।।

वत्तावत्तपमादे जो वसइ पमत्तसंजदो होदि ।
सयलगुणसीलकलियो महव्वई चित्तलायरणो ।।३३।।

विकहा तहा कसाया इंदिय णिद्दा तहेव पणओ य ।
चदु चदु पणमेगेग होंति पमादा हु पण्णरस ।।३४।।

मिच्छे खलु ओदइयो विदिये पुण पारणामिओ भावो ।
मिस्से खओवसमिओ अविरदसम्मम्हि तिण्णेव ॥११॥

एदे भावा णियमा दंसणमोहं पडुच्च भणिदा हु ।
चारित्तं णत्थि जदो अविरदअंतेसु ठाणेसु ॥१२॥

देशविरदे पमत्ते इदरे व खओवसमिय भावो दु ।
सो खलु चरित्तमोहं पडुच्च भणिदं तहा उवरिं ॥१३॥

तत्तो उवरिं उवसमभावो उवसामगेसु खवगेसु ।
खइओ भावो णियमा अगोगिचरिमो त्ति सिद्धे य ॥१४॥

मिच्छोदयेण मिच्छत्तमसद्दहणं तु तच्च-अत्थाणं ।
एयंतं विवरीयं विणयं संसयिदमण्णाणं ॥१५॥

एयंत बुद्धदरसी विवरीओ बह्म तावसो विणयो ।
इंदो वि य संसइयो मक्कडियो चेव अण्णाणी ॥१६॥

मिच्छत्तं वेदंतो जीवो विवरीयदंसणो होदि ।
ण य धम्मं रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जरिदो ॥१७॥

मिच्छाइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥१८॥

आदिमसम्मत्तद्धा समयादो छावलि त्ति वा सेसे ।
अणअण्णदरुदयादों णासियसम्मो त्ति सासणक्खो सो ॥१९॥

सम्मत्तरयणपव्वयसिहरादो मिच्छभूमिसमभि मुहो ।
णासियसम्मत्तो सो सासणणामो मुणेयव्वो ॥२०॥

सम्मामिच्छुदयेण य जत्ततरसव्वघादिकज्जेण ।
ण य सम्मं मिच्छं पि य सम्मिस्सो होदि परिणामो ॥२१॥

दहिगुडमिव वामिस्सं पुहभाव णेव कारिदुं सक्कं ।
एव मिस्सयभावो सम्मामिच्छो त्ति णादव्वो ॥२२॥

सो संजमं ण गिण्हदि देसंजमं वा ण बंधदे आउं ।
सम्मं वा मिच्छं वा पडिवज्जिय मरदि णियमेण ॥२३॥

सम्मत्त-मिच्छपरिणामेसु जहिं आउगं पुरा बद्धं ।
तहिं मरणं मरणंतसमुग्घादो वि य ण मिस्सम्मि ॥२४॥

सम्मत्त देशघादिस्सुदयादो वेदगं हवे सम्मं ।
चलमलिनमगाढं त णिच्चं कम्मक्खवणहेदु ॥२५॥

सत्तण्हं उवसमदो उवसमसम्मो खया दु खइयो य ।
विदियकसायुदयादो असंजदो होदि सम्मो य ॥२६॥

सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥२७॥

सुत्तादो त सम्मं दरसिज्जतं जदा ण सद्दहदि ।
सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी ॥२८॥

णो इंदियेसु विरदो णो जीवे थावरे तसे वापि ।
जो सद्दहदि जिणुत्तं सम्माइट्ठी अविरदो सो ॥२९॥

पच्चक्खाणुदयादो संजमभावो ण होदि णवरिं तु ।
थोववदो होदि तदो देसवदो होदि पंचमओ ॥३०॥

जो तसवहाउ विरदो अविरदओ तह य थावरवहादो ।
एक्कसमयम्हि जीवो विरदाविरदो जिणेक्कमई ॥३१॥

संजलणणोकसायाणुदयादो संजमो हवे जम्हा ।
मल जणणपमादो वि य तम्हा हु पमत्तविरणो सो ॥३२॥

वत्तावत्तपमादे जो वसइ पमत्तसंजदो होदि ।
सयलगुणसीलकलियो महव्वई चित्तलायरणो ॥३३॥

विकहा तहा कसाया इंदिय णिद्दा तहेव पणओ य ।
चदु चदु पणमेगेग होंति पमादा ८ पण्णरस ॥३४॥

संखा तह पत्थारो परियट्टण णट्ट तह समुद्दिट्ठं ।
एदे पंच पयारा पमदसमुक्कित्तणे णेया ।।३५।।

सव्वे वि पुव्वभंगा उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु ।
मेलन्ति त्ति य कमसो गुणिदे उप्पज्जदे संखा ।।३६।।

प ं पमदपमाणं कमेण णिक्खिविय उवरिमाणं च ।
पिंडं पडि एक्केक्क णिक्खित्त होदि पत्थारो ।।३७।।

णिक्खित्तु विदियमेत्तं पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं ।
पिंडं पडि णिक्खेओ एवं सव्वत्थ कायव्वो ।।३८।।

तदियक्खो अंतगदो आदिगदे संकमेदि विदियक्खो ।
दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि पढमक्खो ।।३९।।

पढमक्खो अंतगदो आदिगदे संकमेदि विदियक्खो ।
दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो ।।४०।।

सगमाणेहिं विभत्ते सेसं लक्खित्तु जाण अक्खपदं ।
लद्धे रूवं पक्खिव सुद्धे अंते ण रूवपेक्खेवो ।।४१।।

संठाविदूण रूवं उवरीदो सगुणित्तु सगमाणे ।
अवणिज्ज अणंकिदयं कुज्जा एमेव सव्वत्थ ।।४२।।

इगिवितिचपणखपणदसपण्णरसं खवीसतालसट्ठी य ।
सठविय पमदठाणे णट्ठुदिट्ठं च जाण तिट्ठाणे ।।४३।।

इगिवितिचखचडवारं खसोल रागट्ठदालचउसट्ठिं ।
संठविय पमदठाणे णट्ठुदिट्ठं च जाण तिट्ठाणे ।।४४।।

संजलणणोकसायाणुदओ मदो जदा तदा होदि ।
अपमत्तगुणो तेण य अपमत्तो संजदो होदि ।।४५।।

णट्ठासेसपमादो वयगुणसीलोलिमंडिओ णाणी ।
अणुवसमओ अखवओ झाणणिलीणो हु अपमत्तो ।।४६।।

इगवीसमोहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं ।
पढमं अधापवत्तं करणं तु करेदि अपमत्तो ॥४७॥

जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति ।
तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं ॥४८॥

अन्तोमुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा ।
लोगाणमसंखमिदा उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया ॥४९॥

अंतोमुहुत्तकालं गमिऊण अधापवत्तकरणं तं ।
पडिसमयं सुज्झंतो अपुव्वकरणं समल्लियई ॥५०॥

एदम्हि गुणट्ठाणे विसरिससमयट्ठियेहिं जीवेहिं ।
पुव्वमपत्ता जम्हा होंति अपुव्वा हु परिणामा ॥५१॥

भिण्णसमयट्ठियेहिं दु जीवेहिं ण होदि सव्वदा सरिसो ।
करणेहिं एक्कसमयट्ठियेहिं सरिसो विसरिसो वा ॥५२॥

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोग परिणामा ।
कमउड्ढा पुव्वगुणे अणुकट्टी णत्थि णियमेण ॥५३॥

तारिसपरिणामट्ठियजीवा हु जिणेहिं गलियतिमिरेहिं ।
मोहस्सपुव्वकरणा खवणुवसमणुज्जया भणिया ॥५४॥

——पयले णट्ठे सदि आऊ उवसमंति उवसमया ।
ढुक्के खवया णियमेण खवंति मोहं तु ॥५५॥

-ह कालसमये संठाणादीहिं जह णिवट्ठंति ।
णिवट्ठंति तहावि य परिणामेहिं मिहो जेहि ॥५६॥

अणियट्टिणो ते पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा ।
लयरझाणहुयवहसिहाहिं णिद्दड्ढकम्मवणा ॥५७॥

ोसु भयवत्थं होहि जहा सुहमरायसंजुत्तं ।
सुहमकसाओ सुहमसरागोत्ति णादव्वो ॥५८॥

पुव्वापुव्वप्फड्ढय बादरसुहमगयकिट्टि अणुभागा ।
हीणक्कमाणंतगुणेणवराद्दु वरं च हेट्ठस्स ॥५९॥

अणुलोहं वेदंतो जीवो उवसामगो व खबगो वा ।
सो सुहमसापराओ जहखादेणूणओ किं चि ॥६०॥

कदकफलजुदजलं वा सरए सरवाणियं व णिम्मलयं ।
सयलोवसंतमोहो उवसंतकसायओ होदि ॥६१॥

णिस्सेसखीणमोहो फलिहामलभायणुदयसमचित्तो ।
खीणकसाओ भण्णदि णिग्गंथो वीयरायेहिं ॥६२॥

केवलणाणदिवायरकिरण-कलावप्पणासियण्णाणो ।
णवकेवललद्धुग्गम सुजणियपरमप्पववएसो ॥६३॥

असहायणाणदंसणसहियो इदि केवली हु जोगेण ।
जुत्तो त्ति सजोगजिणो अणाइणिहणारिसे उत्तो ॥६४॥

सीलेसिं संपत्तो णिरूद्धणिस्सेसआसवो जीवो ।
कम्मरयविप्पमुक्को गयजोगो केवली होदि ॥६५॥

सम्मत्तुप्पत्तीये सावयविरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवगे कसायउवसामगे य उवसंते ॥६६॥

खवगे य खीणमोहे जिणेसु दव्वा असंखगुणदक्कमा ।
तव्विवरीया काला संखेज्जगुणक्कमा होंति ॥६७॥

अट्ठविहकम्मवियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा ।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा ॥६८॥

सदसिव संखो मक्कडि बुद्धो णेयाइयो य वेसेसी ।
ईसरमंडलिदंसण-विदूसणट्ठं कयं एदं ॥६९॥

जेहिं अणेया जीवा णज्जंते बहुविहा वि तज्जादी ।
ते पुण संगहिदत्था जीवसमासा त्ति विण्णेया ॥७०॥

तसचदुजुगाण मज्झे अविरुद्धेहि जुदजादिकम्मुदये ।
जीवसमासा होंति हु तब्भवसारिच्छसामण्णा ॥७१॥

बादरसुहुमेइंदिय वितिचउरिंदिय असण्णिसण्णी य ।
पज्जत्तापज्जत्ता एवं ते चोद्दसा होंति ॥७२॥

भूआउतेउवाऊ णिच्चचदुग्गदिणिगोदथूलिदरा ।
पत्तेयपदिट्ठिदरा तस पण पुण्णा अपुण्णदुगा ॥७३॥

ठाणेहिं वि जोणीहिं वि देहोग्गाहणकुलाण भेदेहिं ।
जीवसमासा सव्वे परूविदव्वा जहाकमसो ॥७४॥

सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे ।
इंदियकाये चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेदजुदे ॥७५॥

पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे ।
छद्दुगपत्तेयम्हि य तसस्स तियचदुरपणगभेदजुदे ॥७६॥

सगजुगलम्हि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा ।
एयादुणवीसो त्ति य इगिवितिगुणिदे हवे ठाणा ॥७७॥

सामण्णेण तिपंत्ती पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे ।
पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती ॥७८॥

इगिवण्णं इगिविगले असण्णिसण्णिगयजलथलखगाणं ।
गब्भभवे सम्मुच्छे दुतिगं भोगथलखेचरे दो दो ॥७९॥

अज्जवमलेच्छमणुए तिदु भोगकुभोगभूमिजे दो दो ।
सुरणिरये दो दो इदि, जीवसमासा हु अडणउदी ॥८०॥

संखावत्तयजोणी कुम्मुण्णयवंसपत्तजोणी य ।
तत्थ य संखावत्ते णियमा दु विवज्जदे गब्भो ॥८१॥

कुम्मुण्णयजोणीये तित्थयरा दुविहचक्कवट्टी य ।
रामा वि य जायंते सेसाए सेसगजणो दु ॥८२॥

जम्मं खलु सम्मुच्छरण गब्भुववादा दु होदि तज्जोरणी ।
सच्चित्तसीदसंउडसेदर मिस्सा य पत्तेयं ।।८३।।

पोतजरायुजअंडज जीवाणं गब्भ देवरिणरयारणं ।
उववाद सेसाणं सम्मुच्छरणयं तु रिणद्दिट्टं ।।८४।।

उववादे अच्चित्तं गब्भे मिस्सं तु होदि सम्मुच्छे ।।
सच्चित्तं अच्चित्तं मिस्स च य होदि जोरणी हु ।।८५।।

उववादे सीदुसणं सेसे सीदुसरणमिस्सयं होदि ।
उववादेयक्खेसु य संउड वियलेसु विउलं तु ।।८६।।

गब्भजजीवाणं पुरण मिस्सं रिणयमेण होदि जोरणी हु ।
सम्मुच्छरणपंचक्खे वियल वा विउलजोरणी हु ।।८७।।

सामण्णेरण य एवं रणव जोरणीओ हवंति वित्थारे ।
लक्खारण चदुरसीदी जोरणीओ होंति रिणयमेव ।।८८।।

णिच्चिदरधादुसत्त य तरुदस वियलिंदियेसु छच्चेव ।
सुररिणरयतिरियचउरो चोद्दस मणुए सदसहस्सा ।।८९।।

वादा सुररिणरया गब्भजसमुच्छिमा हु रणरतिरिया ।
सम्मुच्छिमा मणुस्साऽपज्जत्ता एयवियलक्खा ।।९०।।

पंचक्खतिरिक्खाओ गब्भजसमुच्छिमा तिरिक्खारणं ।
भोगभुमा गब्भभवा नरपुण्णा गब्भजा चेव ।।९१।।

उववादगब्भजेसु य लद्धिअपज्जत्तगा रण रिणयमेरण ।
णरसम्मुच्छिमजीवा लद्धिअपज्जत्तगा चेव ।।९२।।

रणेरइया खलु संढा रणरतिरिये तिण्णि होति सम्मुच्छा ।
संढा सुरभोगभुमा पुरिसिच्छीवेदगा चेव ।।९३।।

सुहमरिणगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि ।
अंगुलअंसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे ।।९४।।

साहियसहस्समेकं वारं कोसूणमेकमेक्कं च ।
जोयणसहस्सदीहं पम्मे वियले महामच्छे ॥९५॥

वितिचपपुण्णजहण्णं अणुंधरीकुंथुकाणमच्छीसु ।
सिच्छयमच्छे विंदंगुलसंखं संखगुणिदकमा ॥९६॥

सुहमणिवातेआभू वातेआपुणिपदिट्ठिदं इदरं ।
वितिचपमादिल्लाणं एयाराणं तिसेढीये ॥९७॥

अपदिट्ठिदपत्तेयं वितिचपतिचविअपदिट्ठिदं सयलं ।
तिचविअपदिट्ठिदं च य सयलं बादालगुणिदकमा ॥९८॥

अवरमपुण्णं पढमं सोलं पुण पढमविदियतवियोली ।
पुण्णिदरपुण्णयाणं जहण्णमुक्कस्समुक्कस्सं ॥९९॥

पुण्ण जहण्णं तत्तो वरं अपुण्णस्स पुण्णउक्कस्सं ।
वीपुण्णजहण्णो त्ति असंखं संखं गुणं तत्तो ॥१००॥

सुहमेदरगुणगारो आवलिपल्ला असंखभागो दु ।
सट्ठाणे सेढिगया अहिया तत्थेकपडिभागो ॥१०१॥

अवरुवरि इगिपदेसे जुदे असंखेज्जभागवड्ढीए ।
आदी णिरंतरमदो एगेगपदेसपरिवड्ढी ॥१०२॥

अवरोग्गाहणमाणे जहण्णपरिमिद असंखरासिहिदे ।
अवरस्सुवरिं उड्ढे जेट्ठमसंखेज्जभागस्स ॥१०३॥

तस्सुवरि इगिपदेसे जुदे अवत्तव्वभागपारंभो ।
वरसंखमवहिदवरे रूऊणे अवरउवरि जुदे ॥१०४॥

तव्वड्ढीए चरिमो तस्सुवरिं रूवसंजुदे पढमा ।
संखेज्ज भागउड्ढी उवरिमदो रूवपरिवड्ढी ॥१०५॥

अवरद्धे अवरुवरिं उड्ढे तव्वड्ढिपरिसमत्ती हु ।
रूवे तदुवरि उड्ढे होदि अवत्तव्वपढमपदं ॥१०६॥

रुऊरणवरे अवरुस्सुवरिं संवड्ढिदे तदुक्कस्स ।
तलि (तम्हि) पदेसे उड्ढे पढमा संखेज्जगुणवड्ढी ।।१०७।।

अवरे वरसगगुणे तच्चरिमो तम्हि रूवसंजुत्ते ।
उग्गाहणम्हि पढमा होदि अवत्तव्वगुणवड्ढी ।।१०८।।

अवरपरित्तासंखेणवरं संगुणिय रूवपरिहीणे ।
तच्चरिमो रूवजुदे तम्हि असंखेज्जगुणपढमं ।।१०९।।

एवुत्तरेण तत्तो आवलिया संखभागगुणगारे ।
तप्पाउग्गे जादे वाउस्सोग्गाहणं कमसो ।।११०।।

एवं उवरि वि णेओ पदेसवड्ढिक्कमो जहाजोग्गं ।
सव्वत्थेक्केकम्हि य जीवसमासाण विच्चाले ।।१११।।

हेट्ठा जेसिं जहण्णं उवरिं उक्कस्सयं हवे जत्थ ।
तत्थंतरगा सव्वे तेसिं उग्गाहणविअप्पा ११२।।

वावीस सत्त तिण्णि य सत्त य कुलकोडिसयसहस्साहिं ।
णेया पुढविदगागणि वाउक्कायाण परिसंखा ।।११३।।

कोडिसयसहस्साइं सत्तट्ठ णव य अट्ठवीसाइं ।
वेइंदिय–तेइंदिय — चउरिंदिय–हरिदकायाणं ।।११४।।

अद्धतेरस वारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं ।
जलचर-पक्खि चउप्पय उरपरिसप्पेसु णव होंति ।।११५।।

छप्पचाधियवीसं वारसकुलकोडिसदसहस्साइं ।
सुर-णेरइय-णराणं जहाकमं होंति णेयाणि ।।११६।।

एया य कोडिकोडी सत्ताणउदी य सदसहस्साइं ।
पण्णं कोडिसहस्सा सव्वंगीणं कुलाण य ।।११७।।

जह पुण्णापुण्णाइं गिह-घड-वत्थादियाइं दव्वाइं ।
तह पुण्णिदरा जीवा पज्जत्तिदरा मुणेयव्वा ।।११८।।

आहार--सरीरिंदिय पज्जत्ती आणपाण-भासमणो ।
चत्तारि पंच छप्पि य एइंदिय-वियल सण्णीणं ॥११९॥

पज्जत्तीपट्ठवणं जुगवं तु कमेण होदि णिट्ठवणं ।
अंतोमुहुत्तकालेणहियकमा तत्तियालावा ॥१२०॥

पज्जत्तस्स य उदये णियणियपज्जत्तिणिट्ठिदो होदि ।
जाव सरीरमपुण्णं णिव्वत्ति अपुण्णगो ताव ॥१२१॥

उदये दु अपुण्णस्स य सगसगपज्जत्तियं ण णिट्ठवदि ।
अंतोमुहुत्तमरणं लद्धिअपज्जत्तगो सो दु ॥१२२॥

तिण्णिसया छत्तीसा छवट्ठिसहस्सगाणि मरणाणि ।
अंतोमुहुत्त काले तावदिया चेव खुद्दभवा ॥१२३॥

सीदीसट्ठी तालं वियले चउवीस होंतिपचक्खे ।
छावट्ठि च सहस्सा सय च वत्तीसमेयक्खे ॥१२४॥

पुढविदगागणिमारूद साहारणथूलसुहमपत्तेया ।
एदेसु अपुण्णेसु य एक्केक्के वार ख छक्कं ॥१२५॥

पज्जत्तसरीरस्स य पज्जत्तुदयस्स कायजोगस्स ।
जोगिस्स अपुण्णत्तं अपुण्णजोगो त्ति णिद्दिट्ठं ॥१२६॥

लद्धिअपुण्णं मिच्छे तत्थ वि विदिये चउत्थछट्ठे य ।
णिव्वत्तिअप्पज्जत्ती तत्थ वि सेसेसु पज्जत्ती ॥१२७॥

हेट्ठिमछप्पुढवीण जोइसिवणभवणसव्वइत्थीणं ।
पुण्णिदरे ण हि सम्मो ण सासणो णारयापुण्णे ॥१२८॥

बाहिरपाणेहिं जहा तहेव अब्भंतरे हिं पाणेहिं ।
पाणंति जेहिं जीवा पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा ॥१२९॥

पच वि इंदियपाणा मणवचिकायेसु तिण्णि बलपाणा ।
आणापाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा ॥१३०॥

वीरियजुदमदिखउवसमुत्था णोइंदियेंदियेसु बला ।
देहुदये कायाणा वचीबला आउ आउदये ॥१३१॥

इंदियकायाऊणि य पुण्णापुण्णेसुपुण्णगे आणा ।
बीइंदियादिपुण्णे वचीमणो सण्णिपुण्णेव ॥१३२॥

दस सण्णीणं पाणा सेसेगूणंतिमस्स वेऊणा ।
पज्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेगूणा ॥१३३॥

इह जाहि बाहिया वि य जीवा पावंति दारुणं दुक्खं ।
सेवंता वि य उभये ताओ चत्तारि सण्णाओ ॥१३४॥

आहारदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमकोठाए ।
सादिदरुदीरणाए हवदि हु आहारसण्णा हु ॥१३५॥

अइभीमदंसणेण य तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए ।
भयकम्मुदीरणाए भयसण्णा जायदे चदुहिं ॥१३६॥

पणिदरसभोयणेण य तस्सुवजोगे कुसील सेवाए ।
वेदस्सुदीरणाए मेहुणसण्णा हवदि एवं ॥१३७॥

उवयरणदंसणेण य तस्सुवजोगेण मुच्छिदाए य ।
लोहस्सुदीरणाए परिग्गहे जायदे सण्णा ॥१३८॥

णट्ठपमाए पढमा सण्णा ण हि तत्थ कारणाभावा ।
सेसा कम्मत्थित्तेणुवयारेणत्थि ण हि कज्जे ॥१३९॥

धम्मगुणमग्गणाहय मोहारिबलं जिणं णमंसित्ता ।
मग्गणमहाहियारं विविहहियारं भणिस्सामो ॥१४०॥

जाहि व जासु व जीवा मग्गिज्जते जहा तहा दिट्ठा ।
ताओ चोदस जाणे सुयणाणे मग्गणा होंति ॥१४१॥

गइइंदियेसु काये जोगे वेदे कषायणाणे य ।
संजमदंसणलेस्सा भवियासम्मत्त सण्णि आहारे ॥१४२॥

उवसम सुहुमाहारे वेगुव्वियमिस्स णरअपज्जत्ते ।
सासणसम्मे मिस्से सांतरगा मग्गणा अट्ठ ॥१४३॥

सत्त दिणा छम्मासा वासपुधत्तं च बारस मुहुत्ता ।
पल्लासंखं तिण्हं वरमवरं एगसमयो दु ॥१४४॥

पढमुवसमसहिदाए विरदाविरदीए चोद्दसा दिवसा ।
विरदीए पण्णरसा विरहिदकालो दु बोधव्वो ॥१४५॥

गइउदयजपज्जाया चउगइगमणस्स हेउ वा हु गई ।
णारयतिरिक्खमाणुसदेवगइ त्ति य हवे चदुधा ॥१४६॥

ण रमंति जदो णिच्चं दव्वे खेत्ते य काल-भावे य ।
अण्णोण्णेहिं य जम्हा तम्हा ते णारया भणिया ॥१४७॥

तिरियंति कुडिलभावं सुविउलसण्णा णिगिट्ठमण्णाणा ।
अच्चंतपावबहुला तम्हा तेरिच्छया भणिया ॥१४८॥

मण्णंति जदो णिच्चं मणेण णिउणा मणुक्कडा जम्हा ।
मण्णुब्भवा य सव्वे तम्हा ते माणुसा भणिदा ॥१४९॥

सामण्णा पंचिदी पज्जत्ता जोणिणी अपज्जत्ता ।
तिरिया णरा तहा वि य पंचिंदियभंगदो हीणा ॥१५०॥

दीव्वंति जदो णिच्चं गुणेहिं अट्ठेहिं दिव्वभावेहिं ।
भासंतदिव्वकाया तम्हा ते वण्णिया देवा ॥१५१

जाइजरामरणभया संजोगविजोग दुक्खसण्णाओ ।
रोगादिगा य जिस्से ण संति सा होदि सिद्ध गई ॥१५२

सामण्णा णेरइया घणअंगुलबिदियमूलगुणसेढी ।
बिदियादि बारदसअड छत्तिदुणिजपदहिदा सेढी ॥१५३

हेट्ठिमछप्पुढवीणं रासिविहीणो दु सव्वरासी दु ।
पढमावणिम्हि रासी णेरइयाणं तु णिद्दिट्ठो ॥१५४

संसारी पंचक्खा तप्पुण्णा तिगदिहीणया कमसो ।
सामण्णा पंचिंदी पंचिंदियपुण्णतेरिक्खा ॥१५५॥

छस्सय जोयणकदिहदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं ।
पुण्णूणा पंचक्खा तिरियअपज्जत्तपरिसंखा ॥१५६॥

सेढीसूई अंगुलआदिमतदियपदभाजिदेगूणा ।
सामण्णमणुसरासी पंचमकदिघणसमा पुण्णा ॥१५७॥

तललीन मधुगविमलंधूमसिलागाविचोरभय मेरु ।
तटहरिखझसा होंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका ॥१५८॥

पज्जत्तमणुस्साणं तिचउत्थो माणुसीण परिमाणं ।
सामण्णा पुण्णूणा मणुवअप्पज्जत्तगा होंति ॥१५९॥

तिण्णिसयजोयणाणं वेसदछप्पण्णअंगुलाणं च ।
कदिहदपदरं वेंतर जोइसियाण च परिमाणं ॥१६०॥

घणअंगुलपढमपदं तदियपदं सेढिसंगुणं कमसो ।
भवणे सोहम्मदुगे देवाण होदि परिमाण ॥१६१॥

तत्तो एगारणवसगपणचउणिय मूलभाजिदा सेढी ।
पल्लासखेज्जदिमा पत्तेयं आणदादिसुरा ॥१६२॥

तिगुणा सत्तगुणा वा सव्वट्ठा माणुसीपमाणादो ।
सामण्णदेवरासी जोइसियादो विसेसाहिया ॥१६३॥

अहमिंदा जह देवा अविसेस अहमहंति मण्णता ।
ईसंति एक्कमेक्कं इंदा इव इंदिये जाण ॥१६४॥

मदिआवरणखओव समुत्थविसुद्धी हू तज्जबोहो वा ।
भाविंदिय तु दव्व देहुदयजदेहचिण्ह तु ॥१६५॥

फासरसगंधरूवे सद्दे णाणं च चिण्हयं जेसिं ।
इगिविति चदुपंचिंदिय जीवा णियभेय भिण्णाओ ॥१६६॥

एइंदियस्स फुसणं एक्कं वि य होदि सेसजीवाणं ।
होंति कमउड्ढियाइं जिब्भाघाणच्छिसोत्ताइं ।।१६७।।

धणु वीसडदसयकदी जोयणछादालहीणतिसहस्सा ।
अट्ठसहस्स धणूणं विसया दुगुणा असण्णि त्ति ।।१६८।।

सण्णिस्स वार सोदे तिण्हं णव जोयणाणि चक्खुस्स ।
सत्तेतालसहस्सा बेसदतेसट्ठिमदिरेया ।।१६९।।

तिण्णिसयसट्ठिविरहिद लक्ख दशमूलताडिदेमूलम् ।
णवगुणिदे सट्ठिहदे चक्खुप्फासस्स अद्धाणं ।।१७०।।

चक्खूसोदं घाणं जिब्भायार मसूरजवणाली ।
अतिमुत्तखुरप्पसमं फासं तु अणेयसंठाणं ।।१७१।।

अंगुलअसंखभागं संखेज्जगुणं तदो विसेसहियं ।
तत्तो असंखगुणिदं अंगुलसंखेज्जयं तत्तु ।।१७२।।

सुहमणिगोदअप्पज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि ।
अंगुलअसखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे ।।१७३।।

ण वि इंदियकरणजुदा अवग्गहादीहि गाहया अत्थे ।
णेव य इंदियसोक्खा अणिंदियाणंतणाण सुहा ।।१७४।।

थावरसंखपिपीलिय भमरमणुस्सादिगा सभेदा जे ।
जुगवारमसंखेज्जा णंताणंता णिगोदभवा ।।१७५।।

तसहीणो संसारी एयक्खा ताण संखगा भागा ।
पुण्णाण परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णाणं ।।१७६।।

वादरसुहमा तेसिं पुण्णापुण्णे त्ति छव्विहाणं पि ।
तक्कायमग्गणाये भणिज्जमाणक्कमो णेयो ।।१७७।।

वितिचपमाणमसंखेण वहिदपदरंगुलेण हिदपदरं ।
हीणकमं पडिभागो आवलिया संखभागो दु ।।१७८।।

बहुभागे समभागो चउण्णमेदेसिमेक्क भागम्हि ।
उत्तकमो तत्थ वि बहु भागो बहुगस्स देओ दु ॥१७९॥

तिविपचपुण्णपमाणं पदरंगुलसंखभागहिदपदरं ।
हीणकमं पुण्णूणा बिचिचपजीवा अपज्जत्ता ॥१८०॥

जाई अविणाभावी तसथावरउदयजो हवे काओ ।
सो जिणमदम्हि भणिओ पुढवीकायादिछब्भेयो ॥१८१॥

पुढवी आऊ तेऊ वाऊ कम्मोदयेण तत्थेव ।
णियवण्णचउक्कजुदो ताणं देहो हवे णियमा ॥१८२॥

बादर सुहुमुदयेण य बादरसुहुमा हवंति तद्देहा ।
घादसरीरं थूलं अघाददेहं हवे सुहुमं ॥१८३॥

तद्देहमंगुलस्स असंखभागस्स विंदमाणं तु ।
आधारे थूला ओ सव्वत्थ णिरंतरा सुहुमा ॥१८४॥

उदये दु वणप्फदिकम्मस्स य जीवा वणप्फदी होंति ।
पत्तेयं सामण्णं पदिट्ठिदिदरे त्ति पत्तेयम् ॥१८५॥

मूलग्गपोरबीजा कंदा तह खंदबीज बीजरुहा ।
सम्मुच्छिमा य भणिया पत्तेयाणंतकाया य ॥१८६॥

गूढसिरसंधिपव्वं समभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं ।
साहारणं सरीरं तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥१८७॥

मूले कंदे छल्ली पवाल सालदल कुसुम फलबीजे ।
समभंगे सदि णंता असमे सदि होंति पत्तेया ॥१८८॥

कंदस्स व मूलस्स व सालाखंदस्स वावि बहुलतरा ।
छल्ली साणंतजिया पत्तेयजिया तु तणुकदरी ॥१८९॥

बीजे जोणीभूदे जीवो चंकमदि सो व अण्णो वा ।
जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥१९०॥

साहारणोदयेण णिगोदसरीरा हवंति सामण्णा ।
ते पुण दुविहा जीवा बादर सुहुमा त्ति विण्णेया ॥१९१॥

साहारणमाहारो साहारणमाण पाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं ॥१९२॥

जत्थेक्क मरइ जीवो तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं ।
वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थ णंताणं ॥१९३॥

खंधा असंखलोगा अंडरआवासपुलविदेहा वि ।
हेट्ठिल्लजोणिगाओ असंखलोगेण गुणिदकमा ॥१९४॥

जम्बूदीवं भरहो कोसलसागेदतग्घराइं वा ।
खंधंडरआवासा पुलविशरीराणि दिट्ठंता ॥१९५॥

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा ।
सिद्धेहिं अणंतगुणा सव्वेण विदीदकालेण ॥१९६॥

अत्थि अणंता जीवा जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो ।
भावकलंकसुपउरा णिगोदवासं ण मुंचंति ॥१९७॥

विहि तिहि चहुहिं पंचहिं सहिया जे इंदिएहिं लोयम्हि ।
ते तसकाया जीवा णेया णीरोवदेसेण ॥१९८॥

उववाद मारणंतिय परिणदतस मुज्झिऊण सेसतसा ।
तसणालि बाहिरम्हि य णत्थि त्ति जिणेहिं णिद्दिण्हं ॥१९९॥

पुढवीआदिचउण्हं केवलिआहारदेवणिरयंगा ।
अपदिट्ठिदा णिगोदेहिं पदिट्ठिदंगा हवे सेसा ॥२००॥

मसुरंबुबिंदुसूई कलावधयसण्णिहो हवे देहो ।
पुढवीआदिचउण्हं तरुतसकाया अणेयविहा ॥२०१॥

जह भारवहो पुरिसो वहइ भरं गेहिऊण कावलियं ।
एमेव वहइ जीवो कम्मभरं कायकावलियं ॥२०२॥

जह कंचणमग्गिगयं मुंचइ किट्ठेण कालियाए य ।
तह कायबन्धमुक्का अकाइया झाणजोगेण ॥२०३॥

आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्ण संगुले तेऊ ।
भूजलवाऊ अहिया पडिभागोऽसंखलोगो दु ॥२०४॥

अपदिट्ठिदपत्तेया असंखलोगप्पमाणया होंति ।
तत्तो पदिट्ठिदा पुण असंखलोगेण संगुणिदा ॥२०५॥

तसरासि पुढवि आदी चउक्कपत्तेयहीणसंसारी ।
साहारणजीवाणं परिमाणं होदि जिणदिट्ठं ॥२०६॥

सगसगअसंखभागो बादरकायाण होदि परिमाणं ।
सेसा सुहमपमाणं पडिभागो पुव्वणिद्दिट्ठो ॥२०७॥

सुहुमेसु संखभागं संखा भागा अपुण्णगा इदरा ।
जस्सि अपुण्णद्धादो पुण्णद्धा संखगुणिदकमा ॥२०८॥

पल्लासंखेज्जवहिद पदरंगुलभाजिदे जगप्पदरे ।
जलभूणिपबादरया पुण्णा आवलि असंखभजिदकमा ॥२०९॥

विंदावलिलोगाणमसंखं संखं च तेउवाऊणं ।
पज्जताण पमाणं तेहिं विहीणा अपज्जत्ता ॥२१०॥

साहरणबादरेसु असंखं भागं असंखगा भागा ।
पुण्णाणमपुण्णाणं परिमाणं होदि अणुकमसो ॥२११॥

आवलिअसंखसखेण वहिदपरंगुलेण हिदपदरं ।
कमसो तसतप्पुण्णा पुण्णूणतसा अपुण्णा हु ॥२१२॥

आवलिअसंखभागेण वहिदपल्लूण सायरद्धछिदा ।
बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिमसागरं पुण्णं ॥२१३॥

ते वि विसेसेणहिया पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण ।
तम्हा ते रासीओ असंखलोगेण गुणिदकमा ॥२१४॥

दिण्णच्छेदेणवहिद इट्ठच्छेदेहि पयदविरलणं भजिदे ।
लद्धमिदइट्ठरासीणण्णोण्णहदीए होदि पयदघणं ।।२१५।।

पुग्गलविवाइदेहोदयेण मणवयणकाय जुत्तस्स ।
जीवस्स जा हु सत्ती कम्मागमकारणं जोगो ।।२१६।।

मणवयणाणपउत्ती सच्चासच्चुभयअणुभयत्थेसु ।
तण्णामं होदि तदा तेहि दु जोगा हु तज्जोगा ।।२१७।।

सब्भावमणो सच्चो जो जोगो तेण सच्चमणजोगो ।
तव्विवरीओ मोसो जाणुभयं सच्चमोसो त्ति ।।२१८।।

ण य सच्चमोसजुत्तो जो दु मणो सो असच्चमोसमणो ।
जो जोगो तेण हवे असच्चमोसो दु मणजोगो ।।२१९।।

दसविहसच्चे वयणे जो जोगो सो दु सच्चवचिजोगो ।
तव्विवरीओ मोसो जाणुभयं सच्चमोसो त्ति ।।२२०।।

जो णेव सच्चमोसो जो जाण असच्चमोसवचिजोगो ।
अमणाणं जा भासा सण्णीणामंतणी आदी ।।२२१।।

जणवदसम्मदिठवणा णामे रूवे पडुच्चववहारे ।
सम्भावणे य भावे उवमाए दसविह सच्चं ।।२२२।।

भत्तं देवी चंदप्पह-पडिमा तह य होदि जिणदत्तो ।
सेदो दिग्घो रज्झदि कूरोत्ति य जं हवे वयणं ।।२२३।।

सक्को जवूदीवं पल्लट्टदि पाव वज्जवयणं च ।
पल्लोवमं च कमसो जणवद सच्चादिदिट्ठता ।।२२४।।

आमंतणि आणवणी याचणिया पुच्छणी य पण्णवणी ।
पच्चक्खाणी संसयवयणी इच्छाणुलोमा य ।।२२५।।

णवमी अणक्खरगदा असच्चमोसा हवंति भासाओ ।
सोदाराणं जम्हा वत्तावत्तंससंजणया ।।२२६।।

मणवयणाणं मूलणिमित्तं खलु पुराणदेहउदयो दु ।
मोसुभयाणं मूलनिमित्तं खलु होदि आवरणं ॥२२७॥

मणसहियाणं वयणं दिट्ठं तप्पुव्वमिदि सजोगम्मि ।
उत्तो मणोवयारे णिंदियणाणेन हीणन्हि ॥२२८॥

अंगोवंगुदयादो दव्वमणट्ठं जिणिदचंदम्हि ।
मणवग्गणखंधाणं आगमणादो दु मणजोगो ॥२२९॥

पुरुमहदुदारुरालं एयट्ठं संविजाण तम्हि भवं ।
ओरालियं तमुच्चइ ओरालियकाय जोगो सो ॥२३०॥

ओरालिय उत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं ।
जो तेण संपजोगो ओरालिय मिस्स जोगो सो ॥२३१॥

विविह गुणइड्ढिजुत्तं विक्किरियं वा हु होदि वेगुव्वं ।
मिस्से भवं च णेयं वेगुव्वियकायजोगो सो ॥२३२॥

वादरतेऊवाऊपंचिंदियपुण्वगाविगुव्वंति ।
ओरालियं शरीरं विगुव्वणप्पं हवे जेसि ॥२३३॥

वेगुव्विय उत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं ।
जो तेण संपजोगो वेगुव्विय मिस्स जोगो सो ॥२३४॥

आहारस्सुदयेण य पमत्तविरदस्स होदि आहारं ।
असंजयपरिहरणट्ठं संदेहविणासणट्ठं च ॥२३५॥

णियखेत्ते केवलिदुगविरहे णिक्कमण पहुदि कल्लाणे ।
परखेत्ते संवित्ते जिणजिणवर वंदणट्ठं च ॥२३६॥

उत्तम अंगम्हि हवे धादुविहीणं सुहं असंहणणं ।
सुहं संठाणं धवलं हत्थपमाणं पसत्थुदयं ॥२३७॥

अव्वाघादी अंतोमुहुत्तकालट्ठिदी जहिण्णदरे ।
पज्जत्तीसंपुण्णे मरणं पि कदाचि संभवई ॥२३८॥

आहरदि अणेण मुणी सुहमे अत्थे सयस्स संदेहे ।
गत्ता केवलिपासं तम्हा आहारगो जोगे ॥२३९॥

आहारयमुत्तत्थ विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं ।
जो तेण संपजोगो आहारयमिस्सजोगो सो ॥२४०॥

कम्मेव य कम्मभवं कम्मइयं जो दु तेण संजोगो ।
कम्मइयकायजोगो इगिविगतिगसमयकालेसु ॥२४१॥

वेगुव्विय–आहारयकिरिया ण समं पमत्तविरदम्हि ।
जोगो वि एक्ककाले एक्केव य होदि णियमेण ॥२४२॥

जेसिं ण संति जोगो सुहासुहा पुण्णपावसंजणया ।
ते होंति अजोगिजिणा अणोवमाणंतबलकलिया ॥२४३॥

ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजणामकम्मुदये ।
चउणोकम्मसरीरा कम्मेव य होदि कम्मइयं ॥२४४॥

परमाणूहिं अणंतेहिं वग्गणसण्णा हु होदि एक्को हु ।
ताहि अणंताहि णियमा समयपबद्धो हवे एक्को ॥२४५॥

ताणं समयपबद्धा सेढिअसंखेज्जभागगुणिदकमा ।
णंतेण य तेजदुगा परं परं होदि सहुमं खु ॥२४६॥

ओगाहणाणि ताणं समयपबद्धाण वग्गणाणं च ।
अंगुलअसंखभागा उवरुवरिमसंखगुणहीणा ॥२४७॥

तस्समयबद्ध वग्गण ओगाहो सूइअंगुलासंख ।
भागहिदविंदअंगुलमुवरुवरिं तेण भजिदकमा ॥२४८॥

जीवादो णंतगुणा पडिपरमाणुम्हि विस्ससोवचया ।
जीवेण य समवेदा, एक्केक्कं पडि समाणा हु ॥२४९॥

उक्कस्सट्ठिदिचरिमे सगसग उक्कस्ससंचओ होदि ।
पणदेहाणं वरजोगादिससामग्गिसहियाणं ॥२५०॥

आवासया हु भवमद्धाउस्सं जोगसंकिलेसो य ।
ओकट्टुक्कट्टणगा छच्चेदे गुणिदकम्मंसे ॥२५१॥

पल्लतियं उवहीण तेत्तीसंतोमुहुत्त उवहीणं ।
छावट्ठी कम्मट्ठिदि बंधुक्कस्सट्ठिदी ताणं ॥२५२॥

अंतोमुट्टुत्तमेत्तं गुणहाणी होदि आदि मतिगाण ।
पल्लासखेज्जदिमं गुणहाणी तेजकम्माणं ॥२५३॥

एक्कं समयबद्धं बंधदि एक्कं उदेदि चरिमम्मि ।
गुणहाणणी दिवड्ढं समयपवद्धं हवे सत्तं ॥२५४॥

णवरि य दुसरीराणं गलिदवसेसाउमेत्तठिदिबंधो ।
गुणहाणीण दिवड्ढं साचयमुदयं च चरिमम्हि ॥२५५॥

ओरालियवरसंचं देवुत्तरकुरुवजादजीवस्स ।
तिरियमणुसस्स हवे चरिम दुचरिमेतिपल्लाठिदिगस्स॥२५६॥

वेगुव्वियवरसंचं बावीससमुद्दआरणदुगम्हि ।
जम्हा वरजोगस्य य, वारा अण्णत्थ ण हि बहुगा ॥२५७॥

तेजासरीर जेट्ठं सत्तमचरिमम्हि विदिय वारस्स ।
कम्मस्स वि तत्थेव य णिरये बहुवारभमिदा ॥२५८॥

बादरपुण्णातेऊ सगरासीए - असंखभागमिदा ।
विक्किरियसत्ति जुत्ता पल्लखाखेज्जया बाऊ ॥२५९॥

पल्लासंखेज्जाहयविदंगुलगुणिदसेढिमेत्ता हु ।
वेगुव्विय पंचक्खा-भोगभुमा पुह विगुव्वंति ॥२६०॥

देवेहिं सादिरेया तिजोगिणो तेहि हीणतसपुण्णा ।
वियजोगिणो तदूणा संसारी एक्क जोगा हु ॥२६१॥

अंतोमुहुत्तमेत्ता चउमणजोगा कमेण संखगुणा ।
तज्जोगो सामण्णं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा ॥२६२॥

तज्जोगो सामण्णं काओ संखाहदो तिजोगमिदं ।
सव्वसमास विभंजिद सगसग गुणसंगुणे दु सगरासी ॥२६३॥

कम्मोरालियमिस्सय ओरालद्धोस संचिद अणंता ।
कम्मोरालियमिस्सय ओरालियजोगिणो जीवा ॥२६४॥

समयतयसंखावलिसंखगुणावलिसमासहिदरासी ।
सगगुणगुणिदे थोवो असंखसंखा हदो कमसो ॥२६५॥

सोवक्कमाणुवक्कमकालो संजेज्जवाठिदिवाणे ।
आवलिअसंखभागो संखेज्जावलियमा कमसो ॥२६६॥

तहिं सव्वे सुद्धसला सोवक्कमकालदो दु संखगुणा ।
तत्तो सखगुणूणा अपुण्णकालम्हि सुद्धसला ॥२६७॥

तं सुद्धसलागाहिदणियरासिमपुण्णकाललद्धाहिं ।
सुद्धसलागाहिं गुणे वेतंर वेंगुव्वमिस्सा हु ॥२६८॥

तहिं सेसदेवणारय मिस्सजुदे सव्वमिस्स वेगुव्वं ।
सुरणिरयकायजोगा वेगुव्वियकायजोगा हु ॥२६९॥

आहार कायजोगा चउवण्णं होंति एकसमयम्हि ।
आहारमिस्सजोगा सत्तावीसा दु उक्कस्सं ॥२७०॥

पुरिसिच्छिसंढवेदोदयेण पुरिसिच्छिसंढओ भावे ।
णामोदयेण दव्वे पाएण समा कहिं विसमा ॥२७१॥

वेदस्सुदीरणाए परिणामस्स य हवेज्ज संमोहो ।
समोहेण ण जाणदि जीवो हि गुणं व दोषं वा ॥२७२॥

पुरुगुणभोगे सेदे करेदि लोयम्हि पुरुगुणं कम्मं ।
पुरुउत्तमो य जम्हा तम्हा सो वण्णिओ पुरिसो ॥२७३॥

छादयदि सयं दोसे णयदो छाददि परं वि दोसेण ।
छादणसीला जम्हा तम्हा सा वण्णिया इत्थी ॥२७४॥

णेवित्थी णेव पुमं णउंसओ उहयलिंगवदिरित्तो ।
इट्ठावग्गिसमाणगवेदणगरुओ कलुसचित्तो ॥२७५॥
तिणकारिसिट्ठपागग्गि सरिसपरिणाम वेदुम्मुक्का ।
अवगयवेदा जीवा सग संभवणंतवरसोक्खा ॥२७६॥
जोइसियवाणजोणिणितिरिक्खपुरूसा य सण्णिणो जीवा ।
तत्तेउपम्मलेस्सा संखगुणूणा कमेणेदे ॥२७७॥
इगिपुरिसे वत्तीसं देवी तज्जोगभजिद देवोघे ।
सगगुणगारेण गुणे पुरूसा महिला य देवेसु ॥२७८॥
देवेहिं सादिरेया पुरिसा देवीहिं साहिया इत्थी ।
तेहि विहीण सवेदो रासी संठाण परिमाणं ॥२७९॥
गब्भणपुइत्थिसण्णी सम्मुच्छणसण्णिपुण्णगा इदरा ।
कुरुजा असण्णि गब्भजणपुइत्थीवाणजोइसिया ॥२८०॥
थोवा तिसु संखगुणा तत्तो आवलिअसंखभाग गुणा ।
पल्लासंखेज्जगुणा ततो सव्वत्थ संखगुणा ॥२८१॥
सुहदुक्खसुवहुसस्सं कम्मक्खेत्तं कसेदि जीवस्स ।
संसार दूरमेरं तेण कसाओ त्ति णं बेंति ॥२८२॥
सम्मत्त देससयलचरित्त जहक्खादचरण परिणामे ।
घादंति वा कसाया चउसोल असंखलोगमिदा ॥२८३॥
सिल पुढविभेदधूली जल राइसमाणओ हवे कोहो ।
णारयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो ॥२८४॥
सेलट्ठिकट्ठवेत्ते णियभेएणणुहरंतओ माणो ।
णारयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो ॥२८५॥
वेणुवमूलोरब्भयसिगे गोमुत्तए य खोरप्पे ।
सरिसी माया णारयतिरियणरामरगईसु खिवदि जिय
२८६॥

किमिरायचक्कलणुमलहरिद्दराएण सरिसओ लोहो ।
णारयतिरिक्खमाणुसदेवेसुप्पायओ कमसो ॥२८७॥
णारयतिरिक्खिणरसुरगइसु उप्पण्णपढमकालम्हि ।
कोहो माया माणो लोहुदओ अणियमो वापि ॥२८८॥
अप्पपरोभय बाधणबंधा संजमनिमित्त कोहादी ।
जेसिं णत्थि कसाया अमला अकसाइणो जीवा ॥२८९॥
कोहादिकसायाणं चउ चउदस वीस होंति पद संखा ।
सत्तीलेस्साआउगवंधावंधगदभेदेहिं ॥२९०॥
सिलसेलवेणुमूलक्किमियारादी कमेण चत्तारि ।
कोहादिकसायाणं सत्ति पडि होंति णियमेण ॥२९१
किण्हं सिलासमाणे किण्हादी छक्कमेण भूमिम्हि ।
छक्कादि सुक्को त्ति य धूलिम्मि जलम्मि सुक्केक्का ॥२९२॥
सेलगकिण्हे सुण्णं णिरय च य भूगएगविट्ठाणे ।
णिरयं इगिवितिआऊ तिट्ठाणे चारि सेसपदे ॥२९३॥
धूलिगछक्कट्ठाणे चउराऊतिगदुगं च उवरिल्लं ।
पणचदुठाणे देवं देव सुण्णं च तिट्ठाणे ॥२९४॥
सुण्णं दुगइगिठाणे जलम्हि सुण्णं असंख भजिदकमा ।
चउचोदसवीसपदा असंखलोगा हु पत्तेयं ॥२९५॥
पुह पुह कसायकालो णिरये अंतोमुहुत्तपरिमाणो ।
लोहादि संखगुणो देवेसु य कोहपहुदीदो ॥२९६॥
सव्वसमासेणवहिदसगसगरासी पुणो वि संगुणिदे ।
सगसगगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाणं ॥२९७॥
णरतिरिय लोहमाया कोहो माणो विइंदियादिव्व ।
आवलि असंखभज्जा सगकालं वा समासेज्ज ॥२९८॥

जाणइ तिकालविसए दव्वगुणे पज्जए स बहुभेदे ।
पच्चक्खं च परोक्खं अणेण णांणा ति णं बेंति २९९।।

पंचेव होंति णाणा मदिसुदओहीमणं च केवलयं ।
खयउवसमिया चउरो केवलणाणं हवे खइयं ।।३००।।

अण्णाणतियं होदिहु अण्णाणतियं खु'मिच्छअण उदये ।
णवरि बिभंगं णाणं पंचिंदियसण्णिपुण्णेव ।।३०१।।

मिस्सुदये सम्मिस्सं अण्णाणतियेणणाणतियमेव ।
संजमविसेससहिए मणपज्जवणाणमुद्दिट्ठं ।।३०२।।

विसजतकूडपंजरबधादिसु विणुवएसकरणेण ।
जा खलु पवट्ठइ मइ मइअण्णां ति णं बेंति ।।३०३।।

आभीयमासुरक्ख भारहरामायणादिउवएसा ।
तुच्चा असाहणीया सुयअण्णणं ति णं बेंति ।।३०४।।

विवरीयमोहिणाणं खेओवसमिय च कम्मबीजं च ।
वेभंसो त्ति पउच्चइ समत्तणाणीण समयम्हि ।।३०५।।

अहिमुहणिय मियबोहण माभिणिबोहयमणिदिइंदियजं ।
अवगहईहावायाधारणगा होंरि पत्तेय ।।३०६।।

वेजंणअत्थअवग्गहभेदा हु हवंति पत्तपत्तत्थे ।
कमसो ते वावरिदा पढम ण हि चक्खुमणसाणं ।।३०७।।

विसयाणं विसईणं संजोगाणंतरं हवे णियमा ।
अवगहणाणं गहिदे विसेसकंखा हवे ईहा ।।३०८।।

ईहणकरणेण जदा सुणिण्णओ होदि सो अवाओ दु ।
कालांतरे वि णिठिणदवत्थु समरणस्स कारणं तुरियं ।।३०९।।

वहु वहुविहंच खिप्पाणिस्सिदणुत्तं धुवं च इदरं च ।
तत्थेक्केक्के जादे छत्तीसं तिसयभेदं तु ।।३१०।।

बहुवत्तिजादिगहणे बहुवहुविहमियरमियरगहणम्हि ।
सगणामादो सिद्धा खिप्पादी सदेरा य तहा ३११॥

वत्थुस्स पदेसादो वत्थुग्गहणं तु वत्थुदेसं वा ।
सयलं वा अवलविय अणिस्सिदं अण्णवत्थुगई ॥३१२॥

पुक्खरगहणे काले हत्थिस्स स वदणगवयगहणे वा ।
वत्थुतरचंदस्स य धेणुस्स य वोहणं च हवे ॥३१३॥

एक्कचउक्कं चउवीसट्ठावीसं च तिप्पडिं किच्चा ।
इगिछव्वारसगुणिदे मदिणाणे होंति ठाणाणि ॥३१४॥

अत्थादो अत्थंतरमुवलंभंत भणंति सुदणाणं ।
आभणिबोहियपुव्वं णियमेणिह सद्दजं पमुह ॥३१५॥

लोगाणमसंखमिदा अणक्खरप्पे हवति छट्ठाणा ।
वेरूवछट्ठवग्गपमाणं रुउणमक्खरगं ॥३१६॥

पज्जायक्खरपदसंघादं पडिवत्तियाणिजोगं च ।
दुगवारपाहुडं च य पाहुडय वत्थु पुव्वं च ॥३१७॥

तेसिं च समासेहि य वीसविहं वा हु होदि सुदणाणं ।
आवरणस्स वि भेदा तत्तियमेत्ता हवंति त्ति ॥३१८॥

णवरि विसेसं जाणे सुहमजहण्णं तु पज्जय णाणं ।
पज्जायावरण पुण तदणंतरणाण भेदम्हि ॥३१९॥

सुहमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढम समयम्हि ।
हवदि हु सव्वजहण्णं णिच्चुग्घाडं णिरावरणं ॥३२०॥

सुहमणिगोदअपज्जत्तगेसु सगसंभवेसु भमिउण ।
चरिमापुण्ण तिवक्काणादिमवक्कट्ठियेव हवे ॥३२१॥

सुहमणिगोद अपज्जत्तयस्स जादस्य पढमसमयम्हि ।
फासिंदियमदिपुव्व सुदणाणं लद्धिअक्खरयं ॥३२२॥

अवरुवरिम्मि अणंतमसंखं संखं च भागवड्ढीए ।
संखमसंखमणं तं गुणवड्ढी होंति हु कमेण ।।३२३।।
जीवाणं च य रासि असंखलोगा वरं खु संखेज्जं ।
भागगुणम्हि य कमसो अवट्ठिदा होंति छट्ठाणे ।।३२४।।
उव्वंकं चउरंकं पणछस्सत्तंक अट्ठअंकं च ।
छव्वड्ढीणं सण्णा कमसो संदिट्ठिकरणट्ठं ।।३२५।।

अंगुलअसंखभागे पुव्वगवड्ढीगदे दु परवड्ढी ।
एक्कं वारं होदि हु पुणो पुणो चरिमउड्ढित्ती ।।३२६।।

आदिमछट्ठाणम्हि य पंच य वड्ढी हवंती सेसेसु ।
छव्वड्ढीओ होंति हु सरिसा सवत्थ पदसंखा ।।३२७।।
छट्ठाणाणं आदि अट्ठंकं होदि चरिममुव्वंकं ।
जम्हा जहण्णणाणं अट्ठंकं होदि जिणदिट्ठं ।।३२८।।
एक्कं खलु अट्ठंकं सत्तंकं कंडयं तदो हेट्ठा ।
रुवहियकंडएण य गुणिदकमा जावमुव्वंकं ।।३२९।।
सव्वसमासो णियमा रुवाहियकडयस्स वग्गस्स ।
विदंस्स य संवग्गो होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ।।३३०।।

उक्कस्ससंखमेत्तं तत्तिचउत्थेक्कदाल छप्पण्णं ।
सत्तदसमं च भागं गंतूण य लद्धिअक्खरं दुगुणं ।।३३१।।
एवं असंखलोगा अणक्खरप्पे हवंति छट्ठाणा ।
ते पज्जायसमासा अक्खरगं उवरि वोच्छामि ।।३३२।।
चरिमुव्वंकेणवहिद अत्थक्खरगुणिदचरिममुव्वंकं ।
अत्थक्खरं तु णाणं होदि त्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं ।।३३३।।
पण्णवणिज्जा भावा अणंतभागो दु अणभिलप्पाणं ।
पण्णवणिज्जाणं पुण अणंतभागो सुदणिबद्धो ।।३३४।।

एयक्खरादु उवरिं एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो ।
संखेज्जे खलु उड्ढे पदणामं होदि सुदणाणं ॥३३५॥

सोलससयचउतीसा कोडी तियसीदिलक्खयं चेव ।
सत्तसहस्साट्ठसया अट्ठासीदी य पदवण्णा ॥३३६॥

एयपदादो उवरिं एगेगेणक्खरेण वड्ढतो ।
संखेज्जसहस्सपदे उड्ढे संघादणाम सुदं ॥३३७॥

एक्कदरगदिणिरूवयसंघादसुदादु उवरि पुव्वं वा ।
वण्णे संखेज्जे संघादे उड्ढम्हि पडिवत्ती ॥३३८॥

चउगइसरूवरूवयपडिवत्तीदो दु उवरि पुव्वं वा ।
वण्णे संखेज्जे पडिवत्तीउड्ढम्हि अणियोगं ॥३३९॥

चोद्दसमग्गणसंजुदअणियोगादुवरि वड्ढदे वण्णे ।
चउरादीअणियोगे दुगवारं पाहुडं होदि ॥३४०॥

अहियारो पाहुडयं एयट्ठो पाहुडस्स अहियारो ।
पाहुडपाहुडणामं होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥३४१॥

दुगवारपाहुडादो उवरिं वण्णे कमेण चउवीसे ।
दुगवारपाहुडे संउड्ढे खलु होदि पाहुडयं ॥३४२॥

वीसं वीसं पाहुडअहियारे एक्कवत्थुअहियारो ।
एक्केक्कवण्णउड्ढी कमेण सव्वत्थ णायव्वा ॥३४३॥

दस चोदसट्ठ अट्ठारसयं बारं च बार सोलं च
वीसं तीसं पण्णारस च दस चदुसु वत्थूणं ॥३४४॥

उप्पायपुव्वगाणियविरियपवादत्थिणत्थियपवादे ।
णाणासच्चपवादे आदाकम्मप्पवादे य ॥३४५॥

पच्चक्खाणे विज्जाणुवाद कल्लाणपाणवादे य ।
किरियाविसालपुव्वे कमसोथ तिलोयबिंदुसारे य ॥३४६॥

पण्णउदिसया वत्थू पाहुडया तियसहस्सणवयसया ।
एदेसु चोद्दसेसु वि पुव्वेसु हवंति मिलिदाणि ।।३४७।।

अत्थक्खरं च पदसंघातं पडिवत्तियाणि जोगं च ।
दुगवारपाहुडं च य पाहुडयं वत्थु पुव्वं च ।।३४८।।

कमवण्णुत्तरवड्ढिय ताण समासा य अक्खरगदाणि ।
णाणवियप्पे वीसं गंथे बारस य चोद्दसयं ।।३४९।।

बारुत्तरसयकोडी तेसीदी तह य होंति लक्खाणं ।
चत्तारि य जोगवहा चउसट्ठी मूलवण्णाओ ।।३५०।।

अडकोडिएयलक्खा अट्ठसहस्सा य एयसदिगं च ।
अट्ठावण्णसहस्सा पंचेव पदाणि अंगाणं ।।३५१।।

तेत्तीस वेंजणाइं सत्तावीसा सरा तहा भणिया ।
पण्णत्तरि वण्णाओ पइण्णयाण पमाणं तु ।।३५२।।

चउसट्ठिपदं विरलिय दुगं च दाउण संगुणं किच्चा ।
रूऊणं च कए पुण सुदणाणस्सक्खरा होंति ।।३५३।।

एकट्ठ च च य छस्सत्तयं च च य सुण्णसत्ततियसत्ता ।
सुण्णं णवपण पंच य एक्कं छक्केक्कगो य पणगं च ।।३५४।।

मज्झिमपदक्खरवहिदवण्णा ते अंगपुव्वगपदाणि ।
सेसक्खरसंखा ओ पइण्णयाण पमाणं तु ।।३५५।।

आयारे सुद्दयडे ठाणे समवायणामगे अंगे ।
तत्तो विक्खापण्णत्तीए णाहस्स धम्मकहा ।।३५६।।

तोवासयअज्झयणे अंतयडे णुत्तरोववाददसे ।
पण्हाणं वायरणे विवायसुत्ते य पदसंखा ।।३५७।।

अट्ठारस छत्तीस बादाल अडकडी अड वि छप्पण्णं ।
सत्तरि अट्ठावीस चउदाल सोलससहस्सा ।।३५८।।

इगिदुगपंचेयारं तिवीसदुतिणउदिलक्ख तुरियादी ।
चुससीदिलक्खमेया कोडी य विवागसुत्तम्हि ।।३५९।।

वापणनरनोनानं एयारगे जुदी हु वादम्हि ।
कनजतजमताननमं जनकनजयसीम बाहिरेवण्णा ।।३६०।।

चंदरविजंबुदीवयदीव समुद्दयवियाहपण्णत्ती ।
परियम्मं पचविहं सुत्तं पढमाणिजोगमदो ।।३६१।।

पुव्वं जलथलमाया आगासयरूवगयमिमा पंच ।
भेदाहु चूलियाए तेसु पमाणं इणं कमसो ।।३६२।।

गतनम मनगं गोरम मरगत जवगातनोननं जजलक्खा ।
मवनन धममननोननमं रनधजधरानन जलादी ।।३६३।।

याजकनामेनाननमेदाणि पदाणि होंति परिकम्मे ।
कानवधिवाचनाननमेसो पुण चूलियाजोगो ।।३६४।।

पण्णट्ठदाल पणतीस तीस पण्णास पण्ण तेरसदं ।
णउदी दुदाल पुव्वे पणवण्णा तेरससयाइं ।।३६५।।

छस्सयपण्णासाइं चउसयपण्णास छसयपणुवीसा ।
विहि लक्खेहि दु गुणिया पचम रूऊण छज्जुदा छट्ठे ।।३६६।।

सामइयचउवीसत्थयं तदो वंदणा पडिक्कमणं ।
वेणइयं किदियम्मं दसवेयालं च उत्तरज्झयणं ।।३६७।।

कप्पववहारकप्पाकप्पियमहकप्पियं च पुंडरियं ।
महपुंडरीयणिसिहियमिदि चोद्दसमंगबाहिरयं ।।३६८।।

सुदकेवलं च णाणं दोण्णि वि सरिसानि होंति बोहादो ।
सुदणाणं तु परोक्खं पच्चक्खं केवलं णाणं ।।३६९।।

अवहीयदि त्ति ओहि सीमाणाणे त्ति वण्णियं समये ।
भवगुणपच्चयविहियं जमोहिणाणे त्ति णं बेंति ।।३७०।।

भवपच्चइगो सुरणिरयाणं तित्थे वि सव्वअंगुत्थो ।
गुणपच्चइगो णरतिरियाणं संखादिचिण्हभवो ॥३७१॥

गुणपच्चइगो छद्धा अणुगावट्ठिदपवड्ढ णिदरा ।
देसोही परमोही सव्वोहि त्ति य तिधा ओही ॥३७२॥

भवपच्चइगो ओही देसोही होदि परमसव्वोही ।
गुणपच्चइगो णियमा देसोही वि य गुणे होदि ॥३७३॥

देसोहिस्स य अवरं णरतिरिये होदि संजदम्हि वरं ।
परमोही सव्वोही चरमसरीरस्स बिरदस्स ॥३७४॥

पडिवादी देसोही अप्पडिवादी हवंति सेसा ओ ।
मिच्छत्तं अविरमणं ण य पडिवज्जंति चरमदुगे ॥३७५॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं पडि रूवि जाणदे ओही ।
अवरादुक्कस्सो त्तिय वियप्परहिदो दु सव्वोही ॥३७६॥

णोकम्मुरालसंचं मज्झिमजोगज्जियं सविस्सचयं ।
लोयविभत्तं जाणदि अवरोही दव्वदो णियमा ॥३७७॥

सुहमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि ।
अवरोगाहणमाणं जहण्णयं ओहिखेत्तं तु ॥३७८॥

अवरोहिखेत्तदीहं वित्थारूस्सेहयं ण जाणामो ।
अण्णं पुण समकरणे अवरोगाहणपमाणं तु ॥३७९॥

अवरोगाहणमाणं उस्सेहंगुलअसंखभागस्स ।
सूइस्स य घणपदरं होदि हु तक्खेत्तसमकरणे ॥३८०॥

अवरं तु ओहिखेत्तं उस्सेहं अंगुलं हवे जम्हा ।
सुहमोगाहणमाणं उवरि परमाणं तु अंगुलयं ॥३८१॥

अवरोहिखेत्तमज्झे अवरोही अवरदव्वमवगमदि ।
तद्दव्वस्सवगाहो उस्सेहासंखघणपदरो ॥३८२॥

आवलियअसंखभागं तीदभविस्सं च कालदो अवरं ।
ओही जाणदि भावे कालअसंखेज्ज भागं तु ॥३८३॥

अवरद्दव्वादुवरिमदव्ववियप्पाय होदि धुवहारो ।
सिद्धाणंतिमभागो अभव्वसिद्धादणंत गुणो ॥३८४॥

धुवहारकम्मवग्गण गुणगारं कम्मवग्गणं गुणिदे ।
समयपबद्धपमाणं जाणिज्जो ओहिविसयम्हि ॥३८५॥

मणदव्ववग्गणाण वियप्पाणंतिमसमं खु धुवहारो ।
अवरुक्कस्सविसेसा रूवहिया तव्वियप्पा हु ॥३८६॥

अवरं होदि अणंतं अणंतभागेण अहियमुक्कस्सं ।
इदि मणभेदाणंतिमभागो दव्वम्मि धुवहारो ॥३८७॥

धुवहाररस्स पमाणं सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तं पि ।
समयपबद्धणिमित्तं कम्मणवग्गणगुणादो दु ॥३८८॥

होदि अणंतिमभागो तग्गुणगारो वि देसओहिस्स ।
दोऊणदव्वभेद पमाणद्धुवहारसवग्गो ॥३८९॥

अंगुलअसंख गुणिदा खेत्तवियप्पा य दव्वभेदा हु ।
खेत्तवियप्पा अवरुक्कस्सविसेसं हवे एत्थ ॥३९०॥

अंगुल असंखभागं अवरं उक्कस्सयं हवे लोगो ।
इदिवग्गणगुणगारो असंखधुवहारसंवग्गो ॥३९१॥

वग्गणरासिपमाणं सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तं पि ।
दुगसहियपरमभेदपमाण वहाराण संवग्गो ॥३९२॥

परमावहिस्स भेदा सगओगाहण वियप्पहदतेऊ ।
इदि धुवहारं वग्गणगुणगारं वग्गणं जाणे ॥३९३॥

देसोहि अवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे विदियं ।
तदियादिवियप्पेसु वि, असंखवारो त्ति एस कमो ॥३९४॥

देसोहिमज्झभेदे सविस्ससोवचयतेजकम्मंगं ।
तेजोभासमणाणं वग्गणयं केवलं जत्थ ॥३६५॥

पस्सदि ओहीतत्थ असंखेज्जाओ हवंति दीउवही ।
वासाणि असंखेज्जा होंति असंखेज्जगुणिदकमा ॥३६६॥

तत्तो कम्मइयस्सिगिसमयपबद्धं विविस्स सोवचयं ।
धुवहारस्स विभज्जं सव्वोही जाव ताव हवे ॥३६७॥

एदम्हि विभज्जते दुचरिमदेसावहिम्मि वग्गणयं ।
चरिमे कम्मइयस्सिगिवग्गणमिगिवारभजिदं तु ॥३६८॥

अंगुलअसंखभागे दव्ववियप्पे गदे दु खेत्तम्हि ।
एगागासपदेसो वड्ढदि संपुण्णलोगो त्ति ॥३६६॥

आवलि असंखभागो जहण्णकालो कमेण समयेण ।
वड्ढदि देसोहिवरं पल्लं समऊणयं जाव ॥४००॥

अंगुलअसंखभागं धुपरूवेण य असंखवासं तु ।
असंखसंख भागं असंखवारं तु अद्धुवगे ॥४०१॥

धुव अद्धुवरूवेण य अवरे खेत्तम्हि वड्ढिदे खेत्ते ।
अवरे कालम्हि पुणो एक्केक्कं वड्ढदे समयं ॥४०२॥

संखातीदा समया पढमे पव्वम्मि उभयदो वड्ढी ।
खेत्तं कालं अस्सिय पढमादी कंडये वोच्छं ॥४०३॥

अंगुलमावलियाए भागमसंखेज्जदो वि संखेज्जो ।
अंगुलमावलियंतो आवलियं चांगुलपुधत्तं ॥४०४॥

आवलियपुधत्तं पुण हत्थं तह गाउयं मुहुत्तं तु ।
जोयणभिण्णमुहुत्त दिवसंतो पण्णुवीसं तु ॥४०५॥

भरहम्मि अद्धमासं साहियमासं च जम्बुदीवम्मि ।
वासं च मणुवलोए वासपुधत्त च रूचगम्मि ॥४०६॥

संखेज्जपमे वासे दीवसमुद्दा हवंति संखेज्जा ।
वासम्मि असंखेज्जे दीवसमुद्दा असंखेज्जा ॥४०७॥

काल विसेसेणवहिद खेत्तविसेसो धुवा हवे वड्ढी ।
अद्धुववड्ढी वि पुणो अविरुद्धं इट्ठकंडम्मि ॥४०८॥

अंगुलअसंखभागं संखं वा अंगुलं च वस्सेव ।
संखमसंखं एवं सेढीपदरस्स अद्धुवगे ॥४०९॥

कम्मइयवग्गणं धुवहारेणिगिवारभाजिदे दव्वं ।
उक्कस्सं खेत्तं पुण लोगो संपुण्णओ होदि ॥४१०॥

पल्लसमऊण काले भावेण असंखलोगमेत्ता हु ।
दव्वस्स य पज्जाया वरदेसोहिस्स विसया हु ॥४११॥

कालेचउण्ण उड्ढी कालो भजिदव्व खेत्तउड्ढीय ।
उड्ढीए दव्वपज्जय भजिदव्वा खेत्त-काला हु ॥४१२॥

देसावहिवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे णियमा ।
परमावहिस्स अवरं दव्वपमाण तु जिणदिट्ठं ॥४१३॥

परमावहिस्स भेदा सगउग्गाहणवियप्पहदतेऊ ।
चरमे हारपमाणं जेट्ठस्स य होदि दव्वं तु ४१४॥

सव्वावहिस्स एक्को परमाणू होदि णिव्वियप्पो सो ।
गंगामहाणइस्स पवाहोव्व धुवो हवे हारो ॥४१५॥

परमोहिदव्वभेदा जेत्तियमेत्ता हु तेत्तिया होंति ।
तस्सेव खेत्तकालवियप्पा विसया असंखगुणिदकमा ॥४१६॥

आवलिमसंखभागा इच्छिदगच्छधणमाणमेत्ताओ ।
देसावहिस्स खेत्ते काले वि य होंति संवग्गे ॥४१७॥

गच्छसमा तक्कालियतीदे रूऊणगच्छधणमेत्ता ।
उभये वि य गच्छस्स य धणमेत्ता होंति गुणगारा ॥४१८॥

परमावहिवरखेत्तेणवहिद उक्कस्सओहिखेत्तं तु ।
सव्वावहिणुणगारो काले वि असंखलोगो दु ॥४१९॥

इच्छिदरासिच्छेदं दिण्णच्छेदेहिं भाजिदे तत्थ ।
लद्धमिददिण्णरासीणब्भासे इच्छिदो रासी ॥४२०॥

दिण्णच्छेदेणवहिदलोगच्छेदेण पदधणे भजिदे ।
लद्धमिदलोगगुणणं परमावहिचरिमगुण गारो ॥४२१॥

आवलिअसंखभागा जहण्णदव्वस्स होंति पज्जाया ।
कालस्स जहण्णादो असंखगुण हीणमेत्ता हु ॥४२२॥

सव्वोहि त्ति य कमसो आवलिअसंख भागगुणिद कमा ।
दव्वाणं भावाणं पदसंखा सरिसगा होंति ॥४२३॥

सत्तमखिदिम्मि कोसं कोसस्सद्धं पवड्ढदे ताव ।
जाव य पढये णिरये जोयणमेक्कं हेव पुण्णं ॥४२४॥

तिरिये अवरं ओघो तेजोयंते य होति उक्कस्सं ।
मणुए ओघं देवे जहाकमं सुणह वोच्छामि ॥४२५॥

पणुवीसजोयणाइं दिवसंतं च य कुमारभोम्माणं ।
संखेज्जगुणं खेत्तं बहुगं कालं तु जोइसिगे ॥४२६॥

असुराणमसंखेज्जा कोडीओ सेस जोइसंताणं ।
संखातीदसहस्सा उक्कस्सोहीण विसओ दु ॥४२७॥

असुराणमसंखेज्जा वस्सा पुण सेसजोइसंताणं ।
तस्संखेज्जदि भागं कालेण य होदि णियमेण ॥४२८॥

भवणतियाणमधोधो थोवं तिरियेण होदि बहुगं तु ।
उड्ढेण भवणवासी सुरगिरिसिहरो त्ति पस्संति ॥४२९॥

सक्कीसाणा पढमं बिदियं तु सणक्कुमार माहिंदा ।
तदियं तु बम्ह लांतव सुक्क सहस्सारया तुरियं ॥४३०॥

आणद पाणदवासी आरण तह अच्चुदा य पस्संति ।
पंचमखिदिपेरंतं छट्ठिं गेवेज्जगा देवा ।।४३१।।

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा ।
खेत्ते य सकम्मे रूवगदमणं तभागं च ।।४३२।।

कप्पसुराणं सगसग ओही खेत्तं विविस्ससोवचयं ।
ओही दव्वपमाणं संठाविय धुवहरेण हरे ।।४३३।।

सगसगखेत्तपदेससलायपमाणं समप्पदे जाव ।
तत्थतणचरिमखंडं तत्थतणोहिस्स दव्वं तु ।।४३४।।

सोहम्मीसाणाणमसंखेज्जाओ हु वस्सकोडीओ ।
उवरिमकप्पचउक्के पल्लासंखेज्जभागो दु ।।४३५।।

तत्तो लां कप्पप्पहुदी सव्वत्थसिद्धिपेरंतं ।
किंचूणपल्लमेत्तं कालपमाणं जहाजोग्गं ।।४३६।।

जोइसियंताणोहीखेत्ता उत्ता ण होंति घणपदरा ।
कप्पसुराणं च पुणो ि रित्थं आयदं होदि ।।४३७।।

चिंतियमचिंतियं वा अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं ।
मणपज्जवं ति उच्चइ जं जाणइ तं खु णरलोए ।।४३८।।

मणपज्जवं च दुविहं उजुविउलमदि त्ति उजुमदी तिविहा ।
उजुमणवयणे काए गदत्थविसया त्ति णियमेण ।।४३९।।

विउलमदी वि य छद्धा उजुगाणुजुवयणकायचित्तगयं ।
अत्थं जाणदि जम्हा सद्दत्थगया हु ताणत्था ।।४४०।।

तियकालविसयरूविं चिंतियं वट्ठमाणजीवेण ।
उजुमदिणाणं जाणदि भूदभविस्सं च विउलमदी ।।४४१।।

सव्वंगअंगसंभवचिण्हादुप्पज्जदे जहा ओही ।
मणपज्जव च दव्वमणादो उपज्जदे णियमा ।।४४२।।

हिदि होदिहु दव्वमणं वियसिय अट्ठच्छदारविंदं वा ।
णोबंगुदयादो मणवग्गणखंधदो णियमा ॥४४३॥

णोइंदियं ति सण्णा तस्स हवे सेसइंदियाणं वा ।
वत्तत्ताभावादो मणमणपज्जं च तत्थहवे ॥४४४॥

मणपज्जवं च णाणं सत्तसु विरदेसु सत्तइड्ढीणं ।
एगादिजुदेसु हवे वड्ढंतविसिट्ठ चरणेसु ॥४४५॥

इंदियणोइंदियजोगादि पेक्खित्तु उजुमदी होदि ।
णिरवेक्खिय विउलमदी ओहिं वा होदि णियमेण ॥४४६॥

पडिवादी पुण पढमा अप्पडिवादी हु होदि विदिया हु ।
सुद्धो पढमो बोहो सुद्धतरो विदियबोहो दु ॥४४७॥

परमणसि ट्ठियमट्ठं ईहामदिणा उजुट्ठिय लहिय ।
पच्छा पच्चक्खेण य ऊजुमदिणा जाणदे णियमा ॥४४८॥

चिंतियमचिंतियं वा अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं ।
ओहिं वा विउलमदी लहिऊण विजाणए पच्छा ॥४४९॥

दव्वं खेत्तं कालं भावं पडि जीवलक्खियं रूवि ।
उजुविउलमदी जाणदि अवर वरं मज्झिमं च तहा ॥४५०॥

अवरं दव्वमुरालियसरीरणिज्जिण्णसमयबद्धं तु ।
चक्खिदियणिज्जरण उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे ॥४५१॥

मणदव्ववग्गणाणमणंतिमभागेण उजुगउक्कस्सं ।
खंडिदमेत्तं होदि हु विउलमदिस्सावरं दव्वं ॥४५२॥

अट्ठण्हं कम्माणं समयपबद्धं विविस्ससोवचयम् ।
धुवहारेणिगिवारं भजिदे विदियं हवे दव्वं ॥४५३॥

तव्विदियं कप्पाणमसंखेज्जाणं च स खसमं ।
धुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दव्वं ॥४५४॥

गाउयपुधत्तमवरं उक्कस्सं होदि जोयणपुधत्तं ।
विउलमदिस्स य अवरं तस्स पुधत्तं वरं खु णरलोयं ॥४५५॥

णरलोएत्ति य वयणं विक्खंभणियामयं ण वट्टस्स ।
जम्हा तग्घणपदरं मणपज्जवखेत्तमुद्दिट्ठं ॥४५६॥

दुग-तिगभवा हु अवरं सत्तट्ठभवा हवंति उक्कस्सं ।
अड-णवभवा हु अवरमसंखेज्जं विउलउक्कस्सं ॥४५७॥

आवलिअसंखभागं अवरं च वरं च वरमसंखगुणं ।
तत्तो असंखगुणिदं असंखलोगं तु विउलमदी ॥४५८॥

मज्झिम दव्वं खेत्तं कालं भावं च मज्झिम णाणं ।
जाणदि इदि मणपज्जवणाणं कहिदं समासेण ॥४५९॥

संपुण्णं तु समग्गं केवलमसवत्त सव्वभावगयं ।
लोयालोयवितिमिरं केवलणाणं मुणेदव्वं ॥४६०॥

चदुगदिमदिसुदबोहा पल्लासंखेज्जया हु मणपज्जा ।
संखेज्जा केवलिणो सिद्धादो होंति अतिरित्ता ॥४६१॥

ओहिरहिदा तिरिक्खा मदिणाणिअसंखभागगा मणुगा ।
संखेज्जा हु तदूणा मदिणाणी ओहिपरिमाणं ॥४६२॥

पल्लासंखघणंगुलहदसेणितिरिक्खगदिविभंगजुदा ।
णरसहिदा किंचूणा चदुगदिवेभंगपरिमाणं ॥४६३॥

सण्णाणरासिपंचयपरिहीणो सव्वजीवरासी हु ।
मदि-सुद अण्णाणीणं पत्तेयं होदि परिमाणं ॥४६४॥

वदसमिदिकसायाण दंडाण तहिंदियाण पंचण्हं ।
धारण पालण णिग्गहचागजओ संजमो भणिओ ॥४६५॥

बादरसंजलणुदये सुहुमुदये समखये य मोहस्स ।
संजमभावो णियमा होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥४६६॥

बादरसंजलणुदये बादरसंजमतियं खु परिहारो ।
पमदिदरे सुहुमुदये सुहुमो संजमगुणो होदि ।।४६७।।

जहखादसंजमो पुण उवसमदो होदि मोहणीयस्य ।
खयदो वि य सो णियमा होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ।।३६८।।

तदियकसायुदयेण य विरदाविरदो गुणो हवे जुगवं ।
विदियकसायुदयेण य असंजमो होदि णियमेण ।।४६९।।

संगहिय सयलसंजममेयजममणुत्तरं दुरवगम्मं ।
जीवो समुव्वहंतो सामाइय संजमो होदि ।।४७०।।

छेत्तूण य परियायं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं ।
पंचजमे धम्मे सो छेदोवट्ठावगो जीवो ।।४७१।।

पंचसमिदो तिगुत्तो परिहरइ सदा वि जो हु सावज्जं ।
पंचेक्कजमो पुरिसो परिहारय संजदो सो हु ।।४७२।।

तीसं वासो जम्मे वासपुधत्तं खु तित्थयरमूले ।
पच्चक्खाणं पढिदो संभूणदुगाउयविहारो ।।४७३।।

अणुलोहं वेदंतो जीवो उवसामगो व खवगो वा ।
सो सुहुमसांपराओ जहखादेणूणओ किंचि ।।४७४।।

उवसंते खीणे वा असुहे कम्मम्मि मोहणीयम्मि ।
छदुमट्ठो व जिणो वा जहखादो संजदो सो दु ।।४७५।।

पंचतिहिचहुविहेहिं य अणुगुणसिक्खावयेहिं संजुत्ता ।
उच्चति देसविरया सम्माइट्ठी झलियकम्मा ।।४७६।।

दंसणवयसामाइय पोसहसच्चित्तरायभत्ते य ।
बम्हारंभपरिग्गह अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदेदे ।।४७७।।

जीवा चोद्दसभेया इंदियविसया तहट्ठवीसं तु ।
जेतेसु णेव विरया असंजदा ते मुणेदव्वा ।।४७८।।

पंचरसपंचवण्णा दो गंधा अट्ठफाससत्तसरा ।
मणसहिदट्ठावीसा इंदियविसया मुणेदव्वा ।।४७९।।

पमदादिचउण्णजुदी सामायियदुगं कमेण सेसतियं ।
सत्तसहस्सा णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा ।।४८०।।

पल्लासंखेज्जदिमं विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं ।
पुव्वुत्तरासिहीणा संसारी अविरदाण पमा ।।४८१।।

जं सामण्णं गहणं भावाणं णेव कट्टुमायारं ।
अविसेसदूण अट्ठे दंसणमिदि भण्णदे समये ।।४८२।।

भावाण सामण्णं विसेसयाणं सरूवमेत्तं जं ।
वण्णणहीणग्गहणं जीवेण य दंसणं होदि ।।४८३।।

चक्खूण जं पयासइ दिस्सइ त चक्खुदंसणं वेंति ।
सेसिंदियप्पयासो णायव्वो सो अचक्खू त्ति ।।४८४।।

परमाणुआदियाइं अन्तिमखंधं ति मुत्तिदव्वाइं ।
तं ओहिदंसणं पुण जं पस्सइ ताइं पच्चक्खं ।।४८५।।

बहुविहबहुप्पयारा उज्जोवा परिमियम्मि खेत्तम्मि ।
लोगालोगवितिमिरो जो केवलदंसणुज्जोओ ।।४८६।।

जोगे चउरक्खाण पंचक्खाणं च खीणचरिमाण ।
चक्खूणमोहिकेवलपरिमाणं ताण णाणं च ।।४८७।।

एइंदियपहुदीणं खीणकसायंतणंतरासीणं ।
जोगो अचक्खुदंसण जीवाणं होदि परिमाण ।।४८८।।

लिंपइ अप्पीकीरई एदीए णियअपुण्णपुण्णं च ।
जीवो त्ति होदि लेस्सा लेस्सागुण जाणयक्खादा ।।४८९।।

जोगपउत्ती लेस्सा कषायउदयाणुरंजिया होई ।
तत्तो दोण्णं कज्जं बंधचउक्कं समुदिट्ठं ।।४९०।।

णिद्देसवण्णपरिणामसंकमो कम्मलक्खणगदी य ।
सामी साहणसंखा खेतं फासं तदो कालो ।।४६१।।
अन्तरभावप्पबहु अहियारा सोलसा हवंति त्ति ।
लेस्साणं साहणट्ठं जहाकमं तेहिं वोच्छामि ।।४६२।।
किण्हा णीला काऊ तेऊ पम्मा य सुक्कलेस्सा य ।
लेस्साणं णिद्देसा छच्चेव हवंति णियमेण ।।४६३।।
वण्णोदयेण जणिदो सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा ।
सा सोढा किण्हादी अणेयभेया सभेयेण ।।४६४।।
छप्पयणीलकवोदसुहेमंबुजसंखसण्णिहा वण्णे ।
संखेज्जा संखेज्जाणंतवियप्पा य पत्तेय ।।४६५।।
णिरया किण्हा कप्पा भावाणुगया हु तिसुरणरतिरिये ।
उत्तरदेहे छक्कं भोगे रविचंदहरिदंगा ।।४६६।।
बादरआऊतेऊ सुक्का तेऊय वाउकायाणं ।
गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य ।।४६७।।
सव्वेसिं सुहुमाणं कावोदा सव्वविग्गहे सुक्का ।
सव्वो मिस्सो देहो कवोदवण्णो हवे णियमा ।।४६८।।
लोगाणमसंखेज्जा उदयट्ठाणा कसायगा होंति ।
तत्थ किलिट्ठा असुहा सुहा विसुद्धा तदालावा ।।४६९।।
तिव्वतमा तिव्वतरा तिव्वा असुहा सुहा तहा मंदा ।
मंदतरा मंदतमा छट्ठाणगया हु पत्तेयं ।।५००।।
असुहाणं वरमज्झिमअवरंसे किण्हणीलकाउतिए ।
परिणमदि कमेणप्पा परिहाणीदो किलेसस्स ।।५०१।।
काऊ णीलं किण्हं परिणमदि किलेसवड्ढिदो अप्पा ।
एवं किलेसहाणीवड्ढीदो होदि असुहतियं ।।५०२।।

तेऊ पउमे सुक्के सुहाणमवरादिअसंखे अप्पा ।
सुद्धिस्स य वड्ढीदो हाणीदो अण्णहा होदि ।।५०३।।
संकमणं सट्ठाण-परट्ठाण होदि किण्ह-सुक्काणं ।
वड्ढीसु हि सट्ठाणं उभयं हाणिम्मि सेस उभये वि ।।५०४।।
लेस्साणुक्कस्सादोवरहाणी अवरगादवरवड्ढी ।
सट्ठाणे अवरादो हाणी णियमा परट्ठाणे ।।५०५।।
संकमणे छट्ठाणा हाणिसु वड्ढीसु होति तण्णामा ।
परिमाणं च य पुव्वं उत्तकमं होदि सुदणाणे ।।५०६ ।।
पहिया जे छप्पुरिसा परिभट्ठारण्ण मज्झदेसम्हि ।
फलभरियरुक्खमेगं पेक्खित्ता ते विचिंतंति ।।५०७।।
णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तु चिणुत्तु पडिदाइं ।
खाउं फलाइं इदि जं मणेण वयणं हवे कम्मं ।।५०८।।
चंडो ण मुचइ वेरं भंडणसीलो य धम्मदयरहिओ ।
दुट्ठो ण य एदि वसं लक्खणमेयं तु किण्हस्स ।।५०९।।
मंदो बुद्धिविहीणो णिव्विणाणी य विसयलोलो य ।
माणी मायी य तहा आलस्सो चेव भेज्जो य ।।५१०।।
णिद्दावचणबहुलो धणधण्णे होदि तिव्वसण्णा य ।
लक्खणमेयं भणियं समासदो णीललेस्सस्स ।।५११।।
रूसइ णिंदइ अण्णे दूसइ बहुसो य सोयभयबहुलो ।
असुयइ परिभवइ परं पसंसये अप्पयं बहुसो ।।५१२।।
ण य पत्तियइ परं सो अप्पाणं यिव परं पि मण्णंतो ।
थूसइ अभित्थुवंतो ण य जाणइ हाणि-वड्ढि वा ।।५१३।।
मरणं पत्थेइ रणे देइ सुबहुगं वि थुव्वमाणो दु ।
ण गणइ कज्जाकज्जं लक्खणमेयं तु काउस्स ।।५१४।।
जाणइ कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव्वसमपासी ।
दयदाणरदो य मिदू लक्खणमेयं तु तेउस्स ।।५१५।।

चागी भद्दो चोक्खो उज्जवकम्मो य खमदि बहुगं पि ।
साहुगुरुपूजणरदो लक्खणमेयं तु पम्मस्स ॥५१६॥

ण य कुणइ पक्खवाय ण वि य णिदाणं समो य सव्वेसिं ।
णत्थि य रायद्दोसा णेहो वि य सुक्कलेस्सस्स ॥५१७॥

लेस्साणं खलु अंसा छब्बीसा होंति तत्थ मज्झिमया ।
आउगबंधणजोगा अट्ठट्ठवगरिसकालभवा ॥५१८॥

सेसट्ठारस अंसा चउगइगमणस्स कारणा होंति ।
सुक्कुक्कस्संसमुदा सव्वट्ठं जांति खलु जीवा ॥५१९॥

अवरंसमुदा होंति सदारदुगे मज्झिमंसगेण मुदा ।
आणदकप्पादुवरिं सवट्ठाइल्लगे होंति ॥५२०॥

परमुक्कस्संसमुदा जीवा उवजांति खलु सहस्सारं ।
अवरंसमुदा जीवा सणक्कुमारं च माहिंदं ॥५२१॥

मज्झिमअंसेण मुदा तम्मज्झं जांति तेउजेट्ठमुदा ।
साणक्कुमारमाहिंदंतिमचक्किदसेढिम्मि ॥५२२॥

अवरंसमुदा सोहम्मीसाणादिमउडम्मि सेढिम्मि ।
मज्जिमअंसेण मुदा विमलविमाणादिबलभद्दे ॥५२३॥

किण्हवरंसेण मुदा अवधिट्ठाणम्मि अवरअंसमुदा ।
पंचम चरिमतिमिस्से मज्से मज्झेण जायते ॥५२४॥

नीलुक्कस्संसमुदा पंचम अंधिदयम्मि अवरमुदा ।
बालुकसंपज्जलिदे मज्झे मज्णेण जायते ॥५२५॥

वरकाओदंसमुदा संजलिदं जांति तदियणिरयस्स ।
सीमंत अवरमुदा मज्झे मज्झेण जायंते ।५२६॥

किण्हचउक्काणं पुण मज्झंसमुदा हु भवणगादितिये ।
पुढवीआउवणप्फदिजीवेसु हवंति खलु जीवा ॥५२७॥

किण्हतियाणं मज्झिमअंसमुदा तेउआउ वियलेसु ।
सुरणिरया सगलेस्सहिं णरतिरियं जांति सगजोग्गं ।।५२८।।

काऊ काऊ काऊ णीला णीला य णील किण्हा य ।
किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं ।।५२९।।

णरतिरियाण ओघो इगिविगिले तिण्णि चउ असण्णिस्स ।
सण्णिअपुण्णगमिच्छे सासणसम्मे असुहतियं ।।५३०।।

भोगा पुण्णगसम्मे काउस्स जहण्णियं हवे णियमा ।
सम्मे वा मिच्छे वा पज्जत्ते तिण्णि सुहलेस्सा ।।५३१।।

अयदो त्ति छ लेस्साओ सुहतियलेस्सा हु देसविरदतिये ।
तत्तो सुक्का लेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु ।।५३२।।

णट्ठकसाये लेस्सा उच्चदि सा भूदपुव्वगदिणाया ।
अहवा जोगपउत्ती मुक्खो त्ति तहिं हवे लेस्सा ।।५३३।।

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।
एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्सा भवणादिदेवाणं ।।५३४।।

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्मसुक्का य ।
सुक्का य परमसुक्का भवणतिया पुण्णगे असुहा ।।५३५।।

वण्णोदयसंपादितसरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा ।
मोहुदयखओवसमोवसमखयजजीव फंदणं भावो ।।५३६।।

किण्हादिरासिमावलि असंख भागेण भजिय पविभत्ते ।
हीणकमा कालं वा अस्सिय दव्वा दु भजिदव्वा ।।५३७।।

खेत्तादो असुहतिया अणंतलोगा कमेण परिहीणा ।
कालादोतीदादो अणंतगुणिदा कमाहीणा ।।५३८।।

केवलणाणाणंतिमभागा भावादु किण्हतियजीवा ।
तेउतियासंखेजा संखासंखेज्ज भागकमा ।।५३९।।

जोइसियादो अहिया तिरिक्खसण्णिस्स संखभागो दु ।
सूइस्स अंगुलस्स य असंखभागं तु तेऊतिय ॥५४०॥

वेसदछप्पण्णंगुलकदिहृदपदरं तु जोइसियमाणं ।
तस्स य संखेज्जदिमं तिरिक्खसण्णीणपरिमाणं ॥५४१॥

तेउदु असंखकप्पा पल्लासंखेज्जभागया सुक्का ।
ओहि असंखेज्जदिमा तेउतिया भावदो होंति ॥५४२॥

सट्ठाणसमुग्घादे उववादे सव्वलोयमसुहाणं ।
लोयस्सासंखेज्जदिभागं खेत्तं तु तेउतिये ॥५४३॥

मरदि असंखेज्जदिमं तस्सासंखा य विग्गहे होंति ।
तस्सासंखं दूरे उववादे तस्स खु असंखं ॥५४४॥

सुक्कस्स समुग्घादे असंखलोया य सव्वलोगो य ।
फासं सव्वं लोयं तिट्ठाणे असुहलेस्साणं ॥५४५॥

तेउस्स य सट्ठाणे लोगस्स असंखभागमेत्तं तु ।
अडचोद्दसभागा वा देसूणा होंति णियमेण ॥५४६॥

एवं तु समुग्घादे णव चोद्दसभागयं च किंचूणं ।
उववादे पढमपदं दिवड्ढचोद्दस य किंचूणं ॥५४७॥

पमस्स य सट्ठाणसमुघाददुगेसु होदि पढमपदं ।
अड चोद्दस भागा वा देसूणा होंति णियमेण ॥५४८॥

उववादे पढमपदं पणचोदसभागयं च देसूणं ।
सुक्कस्स य तिट्ठाणे पढमो छच्चोदसा हीणा ॥५४९॥

णवरि समुग्घादम्मि य संखातीदा हवंति भागा वा ।
सव्वो वा खलु लोगो फासो होदित्ति णिद्दिट्ठो ॥५५०॥

कालो छल्लेस्साणं णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ।
अंतोमुहुत्तमवरं एग जीवं पडुच्च हवे ॥५५१॥

उवहीण तेत्तीसं सत्तर सत्तेव होंति दो चेव ।
अट्ठारस तेत्तीसा उक्कस्सा होंति अदिरेया ॥५५२॥

अंतरमवरुक्कस्सं किण्हतियाणं मुहुत्तअंत तु ।
उवहीणं तेत्तीसं अहियं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ॥५५३॥

तेउ तियाणं एवं णवरि य उक्कस्सविरहकालो दु ।
पोग्गलपरिवट्ठा हु असंखेज्जा होंति णियमेण ॥५५४॥

भावादो छल्लेस्सा ओदइया होंति अप्पबहुगं तु ।
दव्वपमाणे सिद्धं इदि लेस्सा वण्णिदा होंति ॥५५५॥

किण्हादिलेस्सरहिया संसारविणिग्गया अणंतसुहा ।
सिद्धिपुरं संपत्ता अलेस्सिया ते मुणेयव्वा ॥५५६॥

भविया सिद्धि जेसिं जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा ।
तव्विवरीयाऽभव्वा संसारादो ण सिज्झंति ॥५५७॥

भवत्तणस्स जोग्गा जे जीवा ते हवंति भवसिद्धा ।
ण हु मलविगमे णियमा ताण कणओवलाणमिव ॥५५८॥

ण य जे भव्वाभव्वा मुत्तिसुहातीदणंतसंसारा ।
ते जीवा णायव्वा णेव य भव्वा अभव्वा य ॥५५९॥

अवरो जुत्ताणंतो अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं ।
तेण विहीणो सव्वो संसारी भव्वरासिस्स ॥५६०॥

सुहमट्ठिदिसंजुत्तं आसण्णं कम्मणिज्जरामुक्कं ।
पाएण एदि गहणं दव्वमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥५६०-१॥

अगहिदमिस्सं गहिदं मिस्समगहिदं तहेव गहिदं च ।
मिस्सं गहिदमगहिदं गहिद मिस्सं अगहिदं च ॥५६०-२॥

[क्षेपक गाथायें]

छप्पंचरणवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं ।
आरणाए अहिगमेरण य सद्दहरणं होइ सम्मत्तं ॥५६१॥

छद्दव्वेसु य णामं उवलक्खगुवाय अत्थणे कालो ।
अत्थरण खेत्तं संखा ठाणसरूवं फलं च हवे ॥५६२॥

जीवाजीवं दव्वं रूवारूवि त्ति होदि पत्तेयं ।
संसारत्था रूवा कम्मविमुक्का अरूवगया ॥५६३॥

अज्जीवेसु य रूवी पुग्गलदव्वारिण धम्म इदरो वि ।
आगासं कालो वि य चत्तारि अरूविरणो होंति ॥५६४॥

उवजोगो वण्णचऊ लक्खरणमिह जीवपोग्गलाणं तु ।
गदिठाणोग्गह वत्तरणकिरियुवयारो दुधम्मचऊ ॥५६५॥

गदिठारणोग्गहकिरिया जीवाणं पुग्गलारणमेव हवे ।
धम्मतिये ण हि किरिया मुक्खा पुण साधका होंति ।५६६।

जत्तस्स पहं ठत्तस्स आसरणं णिवसगस्स वसदी वा ।
गदिठारणोग्गहकरणे धम्मतियं साधग होदि ॥५६७॥

वत्तरणहेदू कालो वत्तरणगुणमविय दव्वरिणचयेसु ।।
कालाधारेणेव य वट्टंति हु सव्वदव्वारिण ॥५६८॥

धम्माधम्मादीणं अगुरूगलहुगं तु छहिं वि वड्ढीहिं ।
हारणीहिं वि वड्ढतो हायतो वट्टदे जम्हा ॥५६९॥

ण य परिणमदि सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेहिं ।
विविहपरिणामियाणं हवदि हु कालो सयं हेदू ॥५७०॥

कालं अस्सिय दव्वं सगसगपज्जायपरिणदं होदि ।
पज्जायावट्ठाणं सुद्धणये होदि खणमेत्तं ॥५७१॥

ववहारो य वियप्पो भेदो तह पज्जओ त्ति एयट्ठो ।
ववहार अवट्ठाणट्ठिदो हु ववहारकालो दु ॥५७२॥

अवरा पज्जायठिदी खणमेत्तं होदि तं च समओ त्ति।
दोण्हमणूणमदिक्कमकालपमाणं हवे सो दु ॥५७३॥

णभएयपयेसत्थो परमाणू मंदगइपवट्टंतो।
बीयमणंतरखेत्तं जावदियं जादि तं समयकालो ॥५७३-१॥

जेत्ती वि खेत्तमेत्तं अणुणा रुद्धं खु गयणदव्वं च।
तं च पदेसं भणियं अवरावरकारणं जस्स ॥५७३-२॥

[क्षेपक गाथायें]

आवलिअसंखसमया संखेज्जावलिसमूहमुस्सासो।
सत्तुस्सासा थोवो सत्तत्थोवा लवो भणियो ॥५७४॥

अड्ढस्स अणलसस्स य णिरूवहदस्स य हवेज्ज जीवस्स।
उस्सासाणिस्सासो एगो पाणो त्ति आहीदो ॥५७४-१॥

[क्षेपक गाथायें]

अट्ठत्तीसद्धलवा णाली वेणालिया मुहुत्तं तु।
एगसमयेण हीणं भिण्णमुहुत्तं तदो सेस ॥५७५॥

ससमयमावलि अवरं समऊण मुहुत्तयं तु उक्कस्सं।
मज्झासंखवियप्पं वियाण अंतोमुहुत्तमिणं ॥५७५-१॥

[क्षेपक गाथायें]

दिवसो पक्खो मासो उडु अयणं वस्समेवमादी हु।
संखेज्जासंखेज्जाणंताओ होदि ववहारो ॥५७६॥

ववहारो पुण कालो माणुसखेत्तम्हि जाणिदव्वो दु।
जोरसियाणं चारे ववहारो खलु समाणो त्ति ॥५७७॥

ववहारो पुण तिविहो तीदो वट्टंतगो भविस्सो दु।
तीदो संखेज्जावलिहदसिद्धाणं पमाणं तु ॥५७७-१॥

[क्षेपक गाथायें]

छप्पंचरणवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं ।
आणाए अहिगमेण य सद्दहणं होइ सम्मत्त ॥५६१॥

छद्दव्वेसु य णामं उवलक्खगुवाय अत्थणे कालो ।
अत्थण खेत्त संखा ठाणसरुवं फल च हवे ॥५६२॥

जीवाजीवं दव्वं रूवारूवि त्ति होदि पत्तेयं ।
संसारत्था रूवा कम्मविमुक्का अरूवगया ॥५६३॥

अज्जीवेसु य रूवी पुग्गलदव्वाणि धम्म इदरो वि ।
आगासं कालो वि य चत्तारि अरूविणो होति ॥५६४॥

उवजोगो वण्णचऊ लक्खणमिह जीवपोग्गलाणं तु ।
गदिठाणोग्गह वत्तणकिरियुवयारो दु धम्मचऊ ॥५६५॥

गदिठाणोग्गहकिरिया जीवाणं पुग्गलाणमेव हवे ।
धम्मतिये ण हि किरिया मुक्खा पुण साधका होति ।५६६।

जत्तस्स पहं ठत्तस्स आसणं णिवसगस्स वसदी वा ।
गदिठाणोग्गहकरणे धम्मतियं साधग होदि ॥५६७॥

वत्तणहेदू कालो वत्तणगुणमविय दव्वणिचयेसु । ।
कालाधारेणेव य वट्ठ ति हु सव्वदव्वाणि ॥५६८॥

धम्माधम्मादीणं अगुरूगलहुगं तु छहिं वि वड्ढीहिं ।
हाणीहिं वि वड्ढतो हायंतो वट्टदे जम्हा ॥५६९॥

ण य परिणमदि सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेहिं ।
विविहपरिणामियाणं हवदि हु कालो सयं हेदू ॥५७०॥

कालं अस्सिय दव्वं सगसगपज्जायपरिणदं होदि ।
पज्जायावट्ठाणं सुद्धणये होदि खणमेत्त ॥५७१॥

ववहारो य वियप्पो भेदो तह पज्जओ त्ति एयट्ठो ।
ववहार अवट्ठाणट्ठिदो हु ववहारकालो दु ॥५७२॥

समग्रो हु वट्टमाणो जीवादो सव्वपुग्गलादो वि ।
भावो अणंतगुणिदो इदि ववहारो हवे कालो ।।५७९।।

कालो वि य ववएसो सब्भावपरूवग्रो हवदि णिच्चो ।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहतरट्ठाई ।।५८०।।

छद्दव्वावट्ठाणं सरिसं तियकालग्रत्थपज्जाय ।
वेंजणपज्जाये वा मिलिदे तावं ठिदित्तादो ।।५८१।।

रयदवियम्मि जे ग्रत्थपज्जया वियणपज्जया चावि ।
तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं ।।५८२।।

आगासं वज्जित्ता सव्वे लोगम्मि चेव णत्थि बहिं ।
वावी धम्माधम्मा अवट्ठिदा अचलिदा णिच्चा ।।५८३।।

लोगस्स असंखेज्जदिभागप्पहुदिं तु सव्वलोगो त्ति ।
अप्पपदेस विसप्पणसंहारे वावडो जीवो ।।५८४।।

पोग्गलदव्वाणं पुण एयपदेसादि होंति भजणिज्जा ।
एक्केक्को दु पदेसो कालाणूणं धुवो होदि ।।५८५।।

संखेज्जासंखेज्जाणंता वा होंति पोग्गलपदेसा ।
लोगागासेव ठिदी एगपदेसो अणुस्स हवे ।।५८६।।

लोगागासपदेसा छद्दव्वेहिं फुडा सदा होंति ।
सव्वमलोगागासं अण्णेहिं विवज्जियं होदि ।।५८७।।

जीवा अणंतसंखाणंतगुणा पुग्गला हु तत्तो दु ।
धम्मतियं एक्केक्कं लोगपदेसप्पमा कालो ।।५८८।।

लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का ।
रयणाणं रासीमिव ते कालाणू मुणेयव्वा ।।५८९।।

ववहारो पुण कालो पोग्गलदव्वादणंतगुणमेत्तो ।
तत्तो अणंतगुणिदा आगासपदेसपरिसंखा ।।५९०।।

लोगागासपदेसा धम्माधम्मेगजीवगपदेसा ।
सरिसा हु पदेसो पुण परमाणु अवट्ठिदं खेत्तं ॥५९१॥

सव्वमरूवी दव्वं अवट्ठिदं अचलिआ पदेसा वि ।
रूवी जीवा चलिया तिवियप्पा होंति हु पदेसा ॥५९२॥

पोग्गलदव्वम्हि अणू संखेज्जादी हवंति चलिदा हु ।
चरिममहक्खंधम्मि य चलाचला होंति हु पदेसा ॥५९३॥

अणुसंखासंखेज्जाणंता य अगेज्जगेहि अंतरिया ।
आहारतेजभासामणकम्मइया धुवक्खंधा ॥५९४॥

सांतरणिरंतरेण य सुण्णा पत्तियदेहधुवसुण्णा ।
बादरणिगोदसुण्णा सुहुमणिगोदा णमो महक्खंधा ॥५९५॥

परमाणुवग्गणम्मि ण अवरुक्कस्सं च सेसगे अत्थि ।
गेज्झमहक्खंधाणं वरमहियं सेसगं गुणियं ॥५९६॥

सिद्धाणंतिमभागो पडिभागो गेज्झगाण जेट्ठट्ठं ।
पल्लासंखेज्जदिमं अंतिमखंधस्स जेट्ठट्ठं ॥५९७॥

संखेज्जासंखेज्जे गुणगारो सोदु होदि हु अणंते ।
चत्तारि अगेज्जेसु वि सिद्धाणमणंतिमो भागो ॥५९८॥

जीवादोणंतगुणो धुवादितिण्हं मसंखभागो दु ।
पल्लस्स तदो तत्तो असंखलोगवहिदो मिच्छो ॥५९९॥

सेढी सूई पल्ला जगपदरा संखभागगुणगारा ।
अप्पप्पणअवरादो उक्कस्से होंति णियमेण ॥६००॥

हेट्ठिमउक्कस्सं पुण रूवहियं उवरिमं जहण्णं खु ।
इदि तेवीसवियप्पा पुग्गलदव्वा हु जिणदिट्ठा ॥६०१॥

पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसयकम्मपरमाणु ।
छव्विहभेयं भणियं पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं ॥६०२॥

बादरबादर बादर बादरसुहमं च सुहमथूलं च ।
सुहमं च सुहमसुहमं धरादियं होदि छब्भेयं ॥६०३॥

खंधं सयलसमत्थं तस्स य अद्धं भणंति देसो त्ति ।
अद्धद्धं च पदेसो अविभागी चेव परमाणू ॥६०४॥

गदिठाणोग्गह किरिया साधणभूदं खु होदि धम्मतियं ।
वत्तणकिरियासाहणभूदो णियमेण कालो दु ॥६०५॥

अण्णोण्णुवयारेण य जीवा वट्टंति पुग्गलाणि पुणो ।
देहादीणिव्वत्तणकारणभूदा हु णियमेण ॥६०६॥

आहारवग्गणदो तिण्णि सरीराणि होंति उस्सासो ।
णिस्सासो वि य तेजोवग्गण खंधादु तेजंगं ॥६०७॥

भासमणवग्गणादो कमेण भासा मणं च कम्मादो ।
अट्ठविहकम्मदव्वं होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥६०८॥

णिद्धत्तं लुक्खत्तं बंधस्स य कारणं तु एयादी ।
संखेज्जासंखेज्जाणंतविहा णिद्धलुक्खगुणा ॥६०९॥

एगगुणं तु जहण्णं णिद्धत्तं विगुणतिगुण संखेज्जा ।
संखेज्जाणंतगुणं होदि तहा रुक्खभावं च ॥६१०॥

एवं गुणसंजुत्ता परमाणु आदिवग्गणम्मि ठिया ।
जोग्गदुगाणं बंधे दोण्हं बंधो हवे णियमा ॥६११॥

णिद्धणिद्धा ण वज्झंति रुक्खरुक्खा य पोग्गला ।
णिद्धलुक्खा य वज्झंति रूवारूवी य पोग्गला ॥६१२॥

णिद्धदरोलीमज्झे विसरिसजादिस्स समगुण एक्कं ।
रूवित्ति होदि सण्णा सेसाणं ते अरुवि त्ति ॥६१३॥

दोगुणणिद्धाणुस्स य दोगुणलुक्खाणुगं हवे रूवी ।
इगितिगुणादि अरूवी रुक्खस्स वि तव इदि जाणे ॥६१४॥

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएणे लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण ।
णिद्धस्स लुक्खेण हवेज्ज बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा
।।६१५।।

णिद्धिदरे समविसमा दोत्तिगआदी दुउत्तरा होंति ।
उभयेवि य समविसमा सरिसिदरा होंति पत्तेय ।।६१६।।

दोत्तिगपभवदुउत्तर गदे सुणंतरदुगाण बंधो दु ।
णिद्धे लुक्खे वि तहा वि जहण्णुभये वि सव्वत्थ ।।५१७।।

णिद्धिदरवरगुणाणू सपरट्ठाणे वि णेदि बंधट्ठं ।
बहिरंतरंगहेदुहि गुणंतरं संगदे एदि ।।६१८।।

णिद्धिदरगुणा अहिया हीणं परिणामयंति बंधम्मि ।
संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसाण खंधाणं ।।६१९।।

दव्व छक्कमकालं पंचत्थीकाय सण्णिदं होदि ।
काले पदेसपचयो जम्हा णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं ।।६२०।।

णव य पदत्था जीवाजीवा ताणं च पुण्णपावदुगं ।
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य होंति त्ति ।।६२१।।

जीवदुगं उत्तट्ठं जीवा पुण्णा हु सम्मगुणसहिदा ।
वदसहिदा वि य पावा तव्विवरीया हवंति त्ति ।।६२२।।

मिच्छाइट्ठी पावा णंताणंता य सासणगुणा य ।
पल्लासंखेज्जदिमा अणअण्णदरुदयमिच्छगुणा ।।६२३।।

मिच्छा सावयसासणमिस्साविरदा दुवारणंता य ।
पल्लासखेज्जदिममसखगुणं संखसंखगुणं ।।६२४।।

तिरधियसयणवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी ।
पंचेव य तेणउदी णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे ।।६२५।।

तिसयं भणंति केई चउकत्तरमत्थपंचयं केई ।
उवसामगपरिमाणं खवगाणं जाण तद्दुगुणं ।।६२६।।

सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तहय बादालं ।
अडदालं चउवण्णं चउवण्णं होंति उवसमगे ।।६२७।।

बत्तीसं उउवदालं सट्ठी बावत्तरी य चुलसीदी ।
छण्णउदी अट्ठुत्तरसयमट्ठत्तरसयं च खवगेसु ।।६२८।।

अट्ठे व सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साणं ।
संखा जोगिजिणाणं पंचसयबिउत्तरं वंदे ।।६२९।।

होंति खवा इगिसमये बोहियबुद्धा य पुरसिवेदा य ।
उक्कस्सेणट्ठुत्तारसयप्पमा सग्गदो य चुदा ।।६३०।।

पत्तेयबुद्धतित्थयरत्थिणंउसयमणोहिणाणजुदा ।
दस छक्कवीसदसवीसट्ठसंखी जहाकमसो ।।६३१।।

जेट्ठावरबहुमज्झिम ओगाहणगा दु चारि अट्ठेव ।
जुगवं हवंति खवगा उवसमगा अद्धमेदेसिं ।।६३२।।

सत्तादी अट्ठता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे ।
अंजलिमोलियहत्थो तियरणसुद्धे णमसामि ।।६३३।।

ओघासंजद मिस्सय सासण सम्माण भागहारा जे ।
रुऊणावलिया संखेज्जणिह भजिय तत्थ णिक्खित्ते ।।६३४।।

देवाणं अवहारा होंति असंखेण ताणि अवहरिय ।
तत्थेव य पक्खित्ते सोहम्मीसाण अवहारा ।।६३५।।

सोहम्मसाणहारमसंखेण य संखरूवसंगुणिदे ।
उवरि असंजद मिस्सय सासणसम्माण अवहारा ।।६३६।।

सोहम्मादासारं जोइसिवण भवण तिरिय पुढवीसु ।
अविरद मिस्सेऽसखं संखासंखगुण सासणे देसे ।।६३७।।

चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्पहुदिं ।
अंतिमगेवेज्जतं सम्माणमसंखसखगुणहारा ।।६३८।।

तत्तो ताणुत्ताणं वामाणमणुद्दिसाण विजयादि ।
सम्माणं संखगुणो आणदमिस्से असंखगुणो ॥६३९॥

तत्तो संखेज्जगुणो सासणसम्माण होदि संखगुणो ।
उत्तट्ठाणे कमसो पणछस्सत्तट्ठचदुसंदिट्ठी ॥६४०॥

सगसगअवहारेहिं पल्ले भजिदे हवंति सगरासी ।
सगसगगुण पडिवण्णे सगसगरासीसु अवणिदे वामा ॥६४१॥

तेरसकोडी देसे बावण्णं सासणे मुणेदव्वा ।
मिस्सा वि य तद्दुगुणा असंजदा सत्तकोडिसयं ॥६४२॥

जीविदरे कम्मचये पुण्णं पावो त्ति होहि पुण्णं तु ।
सुहपयडीणं दव्वं पावं असुहाण दव्वं तु ॥६४३॥

आसवसंवर दव्वं समयपबद्धं तु णिज्जरादव्वं ।
तत्तो असंखगुणिदं उक्कस्सं होदि णियमेण ॥६४४॥

बंधो समयपबद्धो किंचूणदिवड्ढ मेत्तगुणहाणी ।
मोक्खो य होदि एवं सद्दहिव्वा दु तच्चट्ठा ॥६४५॥

खीणे दंसणमोहे जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई ।
तं खाइयसम्मत्तं णिच्चं कम्मक्खवणहेदू ॥६४६॥

दंसणमोहे खविदे सिज्झदि एक्केव तदियतुरियभवे ।
णादिक्कदि तुरियभव ण विणस्सदि सेससम्मं व ॥६४६क॥

वयणेहिं वि हेदूहिं वि इंदियभयआणएहिं रूवेहिं ।
वभिच्छजुगुच्छाहिं य तेलोक्केण वि ण चालेज्जो ॥६४७॥

दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो कम्मभूमिजादो हु ।
मणुसो केवलिमूले णिट्ठवगो होदि सव्वत्थ ॥६४८॥

दंसणमोहुदयादो उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं ।
चलमलिणमगाढं तं वेदयसम्मत्तमिदि जाणे ॥६४९॥

दंसणमोहुवसमदो उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं ।
उवसमसम्मत्तमिणं पसण्णमलपंकतोयसमं ॥६५०॥

खयउवसमियविसोही देसणपाउग्गकरणलद्धी य ।
चत्तारि वि सामण्णा करणं पुण होदि सम्मत्ते ॥६५१॥

चदुगदिभव्वो सण्णी पज्जत्तो सुज्झगो य सागारो ।
जागारो सल्लेसो सलद्धिगो सम्ममुवगमई ॥६५२॥

चत्तारि वि खेत्ताइं आउगबंधेण होदि सम्मत्तं ।
अणुवद महव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं ॥६५३॥

ण य मिच्छत्तं पत्तो सम्मत्तादो य जो य परिवडिदो ।
सो सासणो त्ति णेयो पंचमभावेण संजुत्तो ॥६५४॥

सद्दहणासद्दहणं जस्स य जीवस्स होइ तच्चेसु ।
विरयाविरयेण समे सम्मामिच्छो त्ति णायव्वो ॥६५५॥

मिच्छादिट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥६५६॥

वासपुधत्ते खइया संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे ।
तो संखपल्लठिदिये केवडिया एवमणुपादे ॥६५७॥

संखावलिहिदपल्ला खइया तत्तो य वेदमुवसमगा ।
आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥६५८॥

पल्लासंखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु ।
मिस्सा तेहिं विहीणो संसारी वामपरिमाणं ॥६५९॥

णोइंदिय आवरणखओवसमं तज्जबोहणं सण्णा ।
सा जस्स सो दु सण्णी इदरो सेसिंदअवबोहो ॥६६०॥

सिक्खाकिरियुवदेसालावग्गाही मणोवलंबेण ।
जो जीवो सो सण्णी तव्विवरीओ असण्णी दु ॥६६१॥

मीमंसदि जोपुव्वं कज्जमकज्जं च तच्चमिदरं च ।
सिक्खदि णामेणेदि य समणो अमणो य विवरीदो ॥६६२॥

देवेहिं सादिरेगो रासी सण्णीण होदि परिमाणं ।
तेणूणो संसारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं ॥६६३॥

उदयावण्णसरीरोदयेण तद्देहवयणचित्ताणं ।
णोकम्मवग्गणाणं गहणं आहारयं णाम ॥६६४॥

आहरदि सरीराणं तिण्हं एयदरवग्गणाओ य ।
भासमणाणं णियदं तम्हा आहारयो भणियो ॥६६५॥

विग्गहगदिमावण्णा केवलिणो समुग्घदो अजोगी य ।
सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥६६६॥

वेयणकसायवेगुव्वियो य मरणंतियो समुग्घादो ।
तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु ॥६६७॥

मूलसरीरमछंडिय उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स ।
णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु ॥६६८॥

आहारमारणंतिय दुगंपि णियमेण एगदिसिगं तु ।
दसदिसि गदा हु सेसा पंच समुग्घादया होंति ॥६६९॥

अंगुल असंखभागो कालो आहारयस्स उक्कस्सो ।
कम्मम्मि अणाहारो उक्कस्स तिण्ण समया हु ॥६७०॥

कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं ।
तव्विरहिदसंसारी सव्वो आहारपरिमाणं ॥६७१॥

वत्थुणिमित्तं भावो जादो जीवस्स जो दु उवजोगो ।
सो दुविहो णायव्वो सायारो चेव णायारो ॥६७२॥

णाणं पंचविहं पि य अण्णाणतियं च सागरुवजोगो ।
चदुदंसणमणगारो सव्वे तल्लक्खणा जीवा ॥६७३॥

मदिसुदश्रोहिमणेहि य सगसग विसये विसेसविण्णाणं ।
श्रंतोमुहुत्तकालो उवजोगो सो दु सायारो ॥६७४॥
इंदियमणोहिणा वा श्रत्थे श्रविसेसिदूण जं गहणं ।
श्रंतोमुहुत्तकालो उवजोगो सो श्रणायारो ॥६७५॥
णाणुवजोगजुदाणं परिमाणं णाणमग्गणं व हवे ।
दंसणुवजोगियाणं दंसणमग्गण व उत्तकमो ॥६७६॥
गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणुवजोगो ।
जोग्गा परूविदव्वा श्रोघादेसेसु पत्तेयं ॥६७७॥
चउपण चोद्दस चउरो णिरयादिसु चोद्दसं तु पंचक्खे ।
तसकाये सेसिंदयकाये मिच्छं गुणट्ठाणं ॥६७८॥
मज्झिमचउमणवयणे सण्णिप्पहुदिं दु जाव खीणो त्ति ।
सेसाणं जोगि त्ति य श्रणुभयवयणं तु वियलादो ॥६७९॥
श्रोरालं पज्जत्तो थावरकायादि जाव जोगो त्ति ।
तम्मिस्समपज्जत्ते चदुगुणठाणेसु णियमेण ॥६८०॥
मिच्छे सासणसम्मे पुंवेदयते कवाडजोगिम्मि ।
णरतिरिये वि य दोण्णि वि होंति त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥६८१॥
वेगुव्वं पज्जत्ते इदरे खलु होदि तस्स मिस्सं तु ।
सुरणिरयचउट्ठाणे मिस्से ण हि मिस्स जोगो हु ॥६८२॥
श्राहारो पज्जत्ते इदरे खलु होदि तस्स मिस्सो दु ।
ं[illegible]ोमुहुत्तकाले छट्ठगुणे होदि श्राहारो ॥६८३॥
श्रोरालियमिस्सं वा चउगुणठाणेसु होदि कम्मइयं ।
चदुगदिविग्गहकाले जोगिस्स य पदरलोगपूरणगे ॥६८४॥
थावरकायप्पहुदी संढो सेसा श्रसण्णिश्रादी य ।
श्रणियट्टिस्स य पढमो भागो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ॥६८५॥
थावरकायप्पहुदी श्रणियट्टीवितिचउत्थभागो त्ति ।
कोहतियं लोहो पुण सुहमसरागो त्ति विण्णेश्रो ॥६८६॥

थावरकायप्पहुदी मदिसुदअण्णाणयं विभंगो दु ।
सण्णीपुण्णप्पहुदी सासणसम्मो त्ति णायव्वो ॥६८७॥
सण्णाणतिगं अविरदसम्मादी छट्ठगादि मणपज्जो ।
खीणकसायं जाव दु केवलणाणं जिणे सिद्धे ॥६८८॥
अयदो त्ति हु अविरमण देसो देसो पमत्त इदरे य ।
परिहारो सामाइयछेदो छट्ठादि थूलो त्ति ॥६८९॥
सुहमो सुहमकसाये संते खीणे जिणे जहक्खादं ।
संजममग्गण भेदा सिद्धे णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं ॥६९०॥
चउरक्खथावराविरदसम्माइट्ठी दु खीणमोहो त्ति ।
चक्खुअचक्खू ओही जिणसिद्धे केवलं होदि ॥६९१॥
थावरकायप्पहुदी अविरदसम्मो त्ति असुहतियलेस्सा ।
सण्णीदो अपमत्तो जाव दु सुहतिण्णिलेस्साओ ॥६९२॥
णवरि य सुक्का लेस्सा सजोगिचरिमो त्ति होदि णियमेण ।
गयजोगिम्मि वि सिद्धे लेस्सा णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं ॥६९३॥
थावरकायप्पहुदी अजोगिचरिमो त्ति होंति भवसिद्धा ।
मिच्छाइट्ठिट्ठाणे अभव्वसिद्धा हवंति त्ति ॥६९४॥
मिच्छो सासणमिस्सो सगसगठाणम्मि होदि अयदादो ।
पढमुवसमवेदगसम्मत्तदुगं अप्पमत्तो त्ति ॥६९५॥
विदियुवसमसम्मत्तं अविरदसम्मादि संतमोहो त्ति ।
खइग सम्मं च तहा सिद्धो त्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं ॥६९६॥
सण्णी सण्णिप्पहुदी खीणकसाओत्ति होदि णियमेण ।
थावरकायप्पहुदी असण्णित्ति हवे असण्णी हु ॥६९७॥
थावर कायप्पहुदी सजोगिचरिमोत्ति होदी आहारी ।
कम्मइय अणाहारी अजोगिसिद्धे वि णायव्वो ॥६९८॥
मिच्छे चोद्दस जीवा सासण अयदे पमत्तविरदे य ।
सण्णिदुगं सेसगुणे सण्णीपुण्णी दु खीणोत्ति ॥६९९॥

तिरियगदीए चोद्दस हवंति सेसेसु जाण दो दो दु ।
मग्गणठाणस्सेव णेयाणि समासठाणाणि ।।७००।।

पज्जत्ती पाणावि य सुगमा भाविंदियं ण जोगिम्हि ।
तहिं वाचुस्सासाउगकायत्तिगदुगम जोगिणो आऊ ।।७०१।।

छट्टोत्ति पढमसण्णा सकज्ज सेसा य कारणावेक्खा ।
पुव्वो पढमणियट्टी सुहमोत्ति कमेण सेसाओ ।।७०२।।

मग्गण उवजोगावि य सुगमा पुव्वं परूविदत्तादो ।
गदिआदिसु मिच्छादी परूविदे रूविदा होति ।।७०३।।

तिसु तेरं दस मिस्से सत्तसु णव छट्ठयम्मि एयारा ।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं ।।७०४।।

दोण्हं पंच य छच्चेव दोसु मिस्सम्मि होति वामिस्सा ।
सत्तुवजोगा सत्तसु दो चेव जिणे य सिद्धे य ।।७०५।।

गोयमथेरं पणमिय ओघादेसेसु वीसभेदाणं ।
जोजणिकाणालावं वोच्छामि जहाकमं सुणह ।।७०६।।

ओघे चोदसठाणे सिद्धे वीसदिविहाणमालावा ।
वेदकषायविभिण्णे अणियट्टीपंचभागे य ।।७०७।।

ओघे मिच्छिदुगेवि य अयदपमत्ते सजोगिठाणम्मि ।
तिण्णेव य अलावा सिसेसिक्को हवे णियमा ।।७०८।।

सामण्णं पज्जत्तमपज्जत्तं चेदि तिण्णि अलावा ।
दुवियप्पमपज्जत्तं लद्धीणिव्वत्तगं चेदि ।।७०९।।

दुविहं पि अपज्जत्तं ओघे मिच्छेव होदि णियमेण ।
सासणअयदपमत्ते णिव्वत्तिअपुण्णगो होदि ।।७१०।।

जोगं पडि जोगिजिणे होदि हु णियमा अपुण्णगत्तं तु ।
अवसेसणवट्ठाणे पज्जत्तालावगो एक्को ।।७११।।

सत्तण्हं पुढवीणं ओघे मिच्छे य तिण्णि अलावा ।
पढमाविरदेवि तहा सेसाणं पुण्णगालावो ॥७१२॥

तिरियचउक्काणोघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णे व ।
णवरि य जोणिणि अयदे पुण्णो सेसेवि पुण्णो दु ॥७१३॥

तेरिच्छियलद्धियपज्जत्ते एक्को अपुण्ण अलावो ।
मूलोघं मणुसतिये मणुसिणि अयदम्हि पज्जत्तो ॥७१४॥

मणुसिणि पमत्तविरदे आहारदुगं तु णत्थि णियमेण ।
अवगदवेदे मणुसिणि सण्णा भूदगदिमासेज्ज ॥७१५॥

णरलद्धिअपज्जत्ते एक्को दु अपुण्णगो दु आलावो ।
लेस्साभेदविभिण्णा सत्त वियप्पा सुरट्ठाणा ॥७१६॥

सव्वसुराणं ओघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णेव ।
णवरि य भवणतिकप्पित्थीणं च य अविरदे पुण्णो ॥७१७॥

मिस्से पुण्णालाओ अणुद्दिसाणुत्तरा हु ते सम्मा ॥
अविरद तिण्णालावा अणुद्दिसाणुत्तरे होंति ॥७१८॥

बादरसुहमेइंदियवितिचउरिंदिय असण्णि जीवाणं ।
ओघे पुण्णे तिण्णि य अपुण्णगे पुण अपुण्णो दु ॥७१९॥

सण्णी ओघे मिच्छे गुणपडिवण्णे य मूलआलावा ।
लद्धियपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ ॥७२०॥

भूआउतेउवाऊणिच्चचदुग्गदिणिगोदगे तिण्णि ।
ताणं थूलिदरेसु वि पत्तेगे तद्दुभेदेवि ॥७२१॥

तसजीवाणं ओघे मिच्छादि गुणे वि ओघ आलाओ ।
लद्धिअपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ ॥७२२॥

एक्कारस जोगाणं पुण्णगदाणं सपुण्ण आलाओ ।
मिस्सचउक्कस्स पुणो सगएक्कअपुण्ण आलाओ ॥७२३॥

तिरियगदीए चोद्दस हवंति सेसेसु जाण दो दो दु ।
मग्गणठाणस्सेव णेयाणि समासठाणाणि ॥७००॥

पज्जत्ती पाणावि य सुगमा भाविदियं ण जोगिम्हि ।
तहि वाचुस्सासाउगकायत्तिगदुगम जोगिणो आऊ ॥७०१॥

छट्ठोत्ति पढमसण्णा सकज्ज सेसा य कारणावेक्खा ।
पुव्वो पढमणियट्ठी सुहुमोत्ति कमेण सेसाओ ॥७०२॥

मग्गण उवजोगावि य सुगमा पुव्वं परूविदत्तादो ।
गदिआदिसु मिच्छादी परूविदे रूविदा होंति ॥७०३॥

तिसु तेरं दस मिस्से सत्तसु णव छट्ठयम्मि एयारा ।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं ॥७०४॥

दोण्हं पंच य छच्चेव दोसु मिस्सम्मि होंति वामिस्सा ।
सत्तुवजोगा सत्तसु दो चेव जिणे य सिद्धे य ॥७०५॥

गोयमथेरं पणमिय ओघादेसेसु वीसभेदाणं ।
जोजणिकाणालाव वोच्छामि जहाकमं सुणह ॥७०६॥

ओघे चोदसठाणे सिद्धे वीसदिविहाणमालावा ।
वेदकषायविभिण्णे अणियट्टीपचभागे य ॥७०७॥

ओघे मिच्छदुगेवि य अयदपमत्ते सजोगिठाणम्मि ।
तिण्णेव य अलावा सिसेसिक्को हवे णियमा ॥७०८॥

सामण्णं पज्जत्तमपज्जत्तं चेदि तिण्णि अलावा ।
दुवियप्पमपज्जत्त लद्धीणिव्वत्तगं चेदि ॥७०९॥

दुविहं पि अपज्जत्तं ओघे मिच्छेव होदि णियमेण ।
सासणअयदपमत्ते णिव्वत्तिअपुण्णगो होदि ॥७१०॥

जोगं पडि जोगिजिणे होदि हु णियमा अपुण्णगत्तं तु ।
अवसेसणवट्ठाणे पज्जत्तालावगो एक्को ॥७११॥

सत्तण्हं पुढवीणं ओघे मिच्छे य तिण्णि अलावा ।
पढमाविरदेवि तहा सेसाणं पुण्णगालावो ।।७१२।।

तिरियचउक्काणोघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णे व ।
णवरि य जोणिणि अयदे पुण्णो सेसेवि पुण्णो दु ।।७१३।।

तेरिच्छयलद्धियपज्जत्ते एक्को अपुण्ण अलावो ।
मूलोघ मणुसतिये मणुसिणि अयदम्हि पज्जत्तो ।।७१४।।

मणुसिणि पमत्तविरदे आहारदुगं तु णत्थि णियमेण ।
अवगदवेदे मणुसिणि सण्णा भूदगदिमासेज्ज ।।७१५।।

णरलद्धिअपज्जत्ते एक्को दु अपुण्णगो दु आलावो ।
लेस्साभेदविभिण्णा सत्त वियप्पा सुरट्ठाणा ।।७१६।।

सव्वसुराणं ओघे मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णेव ।
णवरि य भवणतिकप्पित्थीणं च य अविरदे पुण्णो ।।७१७।।

मिस्से पुण्णालाओ अणुद्दिसाणुत्तरा हु ते सम्मा ।।
अविरद तिण्णालावा अणुद्दिसाणुत्तरे होंति ।।७१८।।

बादरसुहमेइंदियबितिचउरिंदिय असण्णि जीवाणं ।
ओघे पुण्णे तिण्णि य अपुण्णगे पुण अपुण्णो दु ।।७१९।।

सण्णी ओघे मिच्छे गुणपडिवण्णे य मूलआलावा ।
लद्धियपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ ।।७२०।।

भूआउतेउवाऊणिच्चचदुग्गदिणिगोदगे तिण्णि ।
ताण थूलिदरेसु वि पत्तेगे तद्दभेदेवि ।।७२१।।

तसजीवाणं ओघे मिच्छादि गुणे वि ओघ आलाओ ।
लद्धिअपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ ।।७२२।।

एक्कारस जोगाणं पुण्णगदाणं सपुण्ण आलाओ ।
मिस्सचउक्कस्स पुणो सगएक्कअपुण्ण आलाओ ।।७२३।।

वेदादाहारोत्ति य सगुणट्ठाणाणमोघ आलाओ ।
णवरि य संढित्थीणं णत्थि हु आहारगाण दुगं ॥७२४॥

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा गइंदिया काया ।
जोगावेदकसाया णाणजमा दंसणा लेस्सा ॥७२५॥

भव्वा सम्मत्तावि य सण्णी आहारगा य उवजोगा ।
जोग्गा परूविदव्वा ओघादेसेसु समुदायं ॥७२६॥

ओघे आदेसे वा सण्णीपज्जंतगा हवे जत्थ ।
तत्थ य उणवीसंताइगिबितिगुणिदा हवे ठाणा ॥७२७॥

वीरमुहकमलणिग्गयसयलसुग्गहणपवउणसमत्थं ।
णमिऊणगोयममहं सिद्धंतालावमणुवोच्छं ॥७२८॥

सव्वेसिं सुहुमाणं काओदा सव्वविग्गहे सुक्का ।
सव्वो मिस्सो देहो कओदवण्णो हवे णियमा ॥७२९॥

मगपज्जयपरिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा ।
एदेसु एक्कपगदे णत्थित्ति असेसयं जाणे ॥७३०॥

विदियुवसमसम्मत्तं सेढीदोदिण्णि अविरदादीसु ।
सगसगलेस्सामरिदे देवअपज्जत्तगेव हवे ॥७३१॥

सिद्धाणं सिद्धगई केवलणाणं च दंसणं खयियं ।
सम्मत्तमणाहारं उवजोगाणक्कमपउत्ती ॥७३२॥

गुणजीवठाणरहियासण्णापज्जत्तिपाणपरिहीणा ।
सेसणवमग्गणूणा सिद्धा सुद्धा सदा होंति ॥७३३॥

णिक्खेवे एयत्थे णयप्पमाणे णिरुत्तिअणियोगे ।
मग्गइ वीसं भेयं सो जाणइ अप्पसव्वभावं ॥७३४॥

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारिअजियसेणगुरू ।
भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयतु ॥७३५॥

———

गो टसार:
(र्मकाण्डम्)

पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥१॥

पयडी सील सहावो जीवंगाणं अणाइ संबंधो ।
कणयोबले मलं वा ताणत्थित्तं सयं सिद्धं ॥२॥

देहोदयेण सहिओ जीवो आहरदि कम्म णोकम्मं ।
पडिसमयं संव्वंगं तत्तायसपिंडओव्व जलं ॥३॥

सिद्धाणतिमभागं अभव्वसिद्धादणंतगुणमेव ।
समयपबद्धं बंधदि जोगवसादो दु विसरित्थं ॥४॥

जीरदि समयपबद्धं पओगदो णेगसमयबद्धं वा ।
गुणहाणीण दिवड्ढं समयपबद्धं हवे सत्तं ॥५॥

कम्मत्तणेण एक्कं दव्वं भावोत्ति होदि दुविहं तु ।
पोग्गलपिंडो दव्व तस्सत्ती भावकम्मं तु ॥६॥

तं पुण अट्ठविहं वा अडदालसयं असंखलोगं वा ।
ताणं पुण घादित्ति अघादित्ति य होंति सण्णाओ ॥७॥

णाणस्स दसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं ।
आउगणामं गोदंतरायमिदि अट्ठ पयडीओ ॥८॥

आवरणमोहविग्घं घादी जीवगुणघादणत्तादो ।
आउगणामं गोदं वेयणियं तह अघादित्ति ॥९॥

केवलणाणं दसणमणंतविरियं च खयियसम्मं च ।
खयियगुणे मदियादी खओवसमिए य घादी दु ॥१०॥

कम्मकयमोहवड्ढियसंसारम्हि य अणादिजुत्तम्हि ।
जीवस्स अवट्ठाणं करेदि आऊ हलिव्व णरं ॥११॥

गदि आदि जीवभेदं देहादी पोग्गलाण भेदं च ।
गदियंतरपरिणमनं करेदि णामं अणेयविहं ॥१२॥

संताणकमेणागयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा ।
उच्चं णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं ॥१३॥

अक्खाणं अणुभवणं वेयणियं सुहसरूवयं सादं ।
दुक्खसरूवमसादं तं वेदयदीवि वेदणियं ॥१४॥

उत्थं देक्खिय जाणदि पच्छा सद्दहदि सत्तभंगीहिं ।
इदि दंसणं च णाणं सम्मत्त होंति जीवगुणा ॥१५॥

अब्भरहिदादु पुव्वं णाणं तत्तो हि दंसणं होदि ।
सम्मत्तमदो विरियं जीवाजीवगदमिदि चरिमे ॥१६॥

घादीवि अघादिं वा णिस्सेसं घादणे असक्कादो ।
णामतियणिमित्तादो विग्घं पडिदं अघातिचरिमम्हि ॥१७॥

आउबलेण अवट्ठिदि भवस्स इदिणामआउपुव्वं तु ।
भवमस्सिय णीचुच्चं इदि गोदं णामपुव्वं तु ॥१८॥

घादिंव वेयणीयं मोहस्स बलेण घाददे जीवं ।
इदि घादीणं मज्झे मोहस्सादिम्हि पढिदं तु ॥१९॥

णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेयणीयमोहणियं ।
आउगणामं गोदतरायमिदि पढिदमिदि सिद्धं ॥२०॥

पडपडिहारसिमज्जाहलिचित्तकुलालभंडयारीणं ।
जह एदेसिं भावा तहवि य कम्मा मुणेयव्वा ॥२१॥

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी ।
तेउत्तरं सयं वा दुगपणगं उत्तरा होंति ॥२२॥

थीणुदयेणुट्ठविदे सोवदि कम्मं करेदि जप्पदि य ।
णिद्दाणिद्दुदयेण य ण दिट्ठिमुग्घादिदुं सक्को ।।२३।।

पयलापयलुदयेण य वहेदि लाला चलंति अंगाइं ।
णिद्दुदये गच्छंतो ठाइ पुणो वइसइ पडेई ।।२४।।

पयलुदयेण य जीवो ईसुम्मीलिय सुवेइ सुत्तोवि ।
ईसं ईसं जाणदि मुहुं मुहुं सोवदे मंदं ।।२५।।

जंतेण कोद्दवं वा पढमुवसमसम्मभाव जंतेण ।
मिच्छं दव्वं तु तिधा असंखगुणहीणदव्वकमा ।।२६।।

तेजा कम्मेहिं तिए तेजा कम्मेण कम्मणा कम्मं ।
कयसंजोगे चदु चदुचदुदुग एक्कं च पयडीओ ।।२७।।

णलया बाहू य तहा णियंबपुट्ठी उरो य सीसो य ।
अट्ठेव दु अंगाइं देहे सेसा उवंगाइं ।।२८।।

सेवट्टेण य गम्मइ आदीदो चदुसु कप्पजुगलोत्ति ।
तत्तो दुजुगलजुगले कीलियणारायणद्धोत्ति ।।२९।।

णवगेविज्जाणुद्दिसणुत्तरवासीसु जांति ते णियमा ।
तिदुगेगे संघडणे णारायणमादिगे कमसो ।।३०।।

सण्णी छस्संहडणो वज्जदि मेघं तदो परं चापि ।
सेवट्ठादीरहिदो पण पणचदुरेगसंहडओ ।।३१।।

अंतिमतियसंहडणस्सुदओ पुण कम्मभूमिमहिलाणं ।
आदिमतिगसंहडणं णत्थि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ।।३२।।

मूलुण्हपहा अग्गी आदावो होदि उण्हसहियपहा ।
आइच्चे तेरिच्छे उण्हूणपहा हु उज्जोओ ।।३३।।

देहे अविणाभावी बंधणसंघाद इदि अबंधुदया ।
वण्णचउक्केऽभिण्णे गहिदे चत्तारि बंधुदये ।।३४।।

पच्च णव दोण्णि छव्वीसमवि य चउरो कमेण सत्तट्ठी ।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ बंधपयडीओ ।।३५।।

पच्च णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण सत्तट्ठी ।
दोण्णि य पंच य भणिया एदाओ उदयपयडीओ ।।३६।।

भेदे छादालसयं इतरे बंधे हवंति वीससयं ।
भेदे सव्वे उदये वावीससयं अभेदम्हि ।।३७।।

पंच णव दोण्णि अट्ठावीसं चउरो कमेण तेणउदी ।
दोण्णिय पंच य भणिया एदाओ सत्तापयडीओ ।।३८।।

केवलणाणावरणं दंसणसक्कं कसायबारसयं ।
मिच्छं च सव्वघादी सम्मामिच्छं अबंधम्हि ।।३९।।

णाणावरण चउक्कं तिदंसणं सम्मगं च संजलणं ।
णव णोकसाय विग्घं छव्वीसा देसघादीओ ।।४०।।

सादं तिण्णेवाऊ उच्चं णरसुरदुगं च पंचिंदी ।
देहा बंधणसंघादंगोवगाइं वण्णचओ ।।४१।।

समचउरवज्जरिसहं उवघादूणगुरूछक्क सग्गमणं ।
तसवारसट्ठसट्ठी बादालमभेददो सत्था ।।४२।।

घादीणीचमसादं णिरआऊ णिरयतिरियदुगजादी ।
सठाणसंहदीणं चदुपणपणगं च वण्ण ाे ।।४३।।

उवघादमसग्गमणं थावरदसयं च अप्पसत्था हु ।
बंधुदयं पडि भेदे अडणउदी सयं दुचदुरसीदिदरे ।।४४।।

पढमादिया कसाया सम्मत्तं देससयलचारित्तं ।
जहखादं घादंति ॱय गुणणामा होंति सेसावि ।।४५।।

अंतोमुहुत्त पक्खं छम्मासं संखऽसखणतभवं ।
संजलणमादियाण वासणकालो दु णियमेण ।।४६।।

देहादी फासंता पण्णासा णिमिणताव जुगलं च ।
थिरसुहपत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई ।४७।।

आऊणि भवविवाई खेत्तविवाई य आणुपुव्वीओ ।
अट्ठत्तरि अवसेसा जीवविवाई मुणेयव्वा ।।४८।।

वेदणियगोदघादीणेकावण्णं तु णामपयडीणं ।
सत्तावीसं चेदे अट्ठत्तरि जीवविवाई ।।४९।।

तित्थयरं उस्सासं बादरपज्जत्तसुस्सरादेज्जं ।
जसतसविहायसुभगदु चउगइ पणजाइ सगवीसं ।।५०।।

गदि जादी उस्सासं विहायगति तसतियाण जुगलं च ।
सुभगादिचउज्जुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं ।।५१।।

णामं ठवणा द वियं भावोत्ति चउव्विहं हवे कम्मं ।
पयडी पाव कम्मं मलति सण्णा हु णाममलं ।।५२।।

सरिसासरिसे दव्वे मदिणा जीवट्ठियं खु जं कम्मं ।
तं एदंति पदिट्ठा ठवणा तं ठावणा कम्मं ।।५३।।

दव्वे कम्मं दुविहं आगमणोआगतिमं तप्पढमं ।
कम्मागमपरिजाणुगजीवो उवजोगपरिहीणो ।।५४।।

जाणुगसरीर भवियं तव्वदिरित्तं तु होदि ज विदियं ।
तत्थ सरीरं तिविहं तियकालगयति दो सुगमा ।।५५।।

भूदं तु चुद चइद चदति तेधा चुद सपाकेण ।
पडिदं कदलीघादपरिच्चागेणूणयं होदि ।।५६।।

विसवेयणरत्तक्खय भयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं ।
उस्सासाहाराणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ ।।५७।।

कदलीघादसमेदं चागविहीण तु चइदमिदि होदि ।
घादेण अघादेण व पडिदं चागेण चत्तमिदि ।।५८।।

भत्तपइण्णाइंगिणिपाउग्गविधीहिं चत्तमिदि तिविहं ।
भत्तपइण्णा तिविहा जहण्णमज्झिमवरा य तहा ॥५९॥

भत्तपइण्णाइविहिं जहण्णमंतोमुहुत्तयं होदि ।
बारसवरिसा जेट्ठा तम्मज्झे होदि मज्झिमया ॥६०॥

अप्पोवयारवेक्खं परोवयारूणमिंगिणीमरणं ।
सपरोवयारहीणं मरणं पाओवगमणमिदि ॥६१॥

भवियंति भवियकाले कम्मागमजाणगो स जो जीवो ।
जाणुगसरीर भवियं एवं होदित्ती णिद्दिट्ठं ॥६२॥

तव्वदिरित्तं दुविहं कम्मं णोकम्ममिदि तहिं कम्मं ।
कम्मसरूवेणागय कम्मं दव्वं हवे णियमा ॥६३॥

कम्मद्दव्वादण्णं दव्वं णोकम्मदव्वमिदि होदि ।
भावे कम्मं दुविहं आगमणोआगमंति हवे ॥६४॥

कम्मागमपरिजाणगजीवो कम्मागमम्हि उवजुत्तो ।
भावगामकम्मोत्ति य तस्स य सण्णा हवे णियमा ॥३५॥

णो आगभभावो पुण कम्मफलं भुंजमाणगो जीवो ।
इदि सामण्ण कम्मं चउव्विहं होदि णियमेण ॥६६॥

मूलुत्तरपयडीणं णामादी एवमेव णवरिं तु ।
सगणामेण य णामं ठवणा दवियं हवे भावो ॥६७॥

मूलुत्तरपयडीणं णामादि चउव्विहं हवे सुगमं ।
वज्जित्ता णोकम्मं णोआगमभावकम्मं च ॥६८॥

पडपडिहारसिमज्जा आहारं देह उच्चणीचंगं ।
भंडारी मूलाणं णोकम्मं दवियकम्मं तु ॥६९॥

पडविसयपहुदि दव्वं मदिसुदवाघादकरणसंजुत्तं ।
मदिसुदबोहाणं पुण णोकम्म दवियकम्मं तु ॥७०॥

ओहिमणपज्जवाणं पडिघादणिमित्तसंकिलेसयरं ।
जं बज्झट्टं तं खु णोकम्मं केवले णत्थि ।।७१।।
पचण्हं णिद्दाणं माहिसदहिपहुदि होदि णोकम्मं ।
वाघादकरपडादी चक्खूअ चक्खूण णोकम्मं ।।७२।।
ओहीकेवलदंसणणोकम्मं ताण णाण भंगो अ ।
सादेदरणोकम्मं इट्ठाणिट्ठण्णपाणादि ।।७३।।
आयदणाणायदणं सम्मे मिच्छे य होदि णोकम्मं ।
उभयं सम्मामिच्छे णोकम्मं होदि णियमेण ।।७४।।
अणणोकम्मं मिच्छत्तायदणाद हु होदि सेसाणं ।
सगसगजोग्गं सत्थं सहायपहुदी हवे णियमा ।।७५।।
थीपुंसंढसरीरं ताणं णोकम्म दव्वकम्मं तु ।
वेडबको सुपुत्तो हस्सरदीणं च णोक्कमं ।।७६।।
इट्ठाणिट्ठविजोगजोगं अरदिस्स सुदसुपुत्तादि ।
सोगस्स य सिहादी णिंदिददव्वं च भयजुगले ।।७७।।
णिरयायुस्स अणिट्ठाहारो सेसाणमिट्ठमण्णादी ।
गदिणोकम्मं दव्वा चउग्गदीणं हवे खेत्तं ।।७८।।
णिरयादीण गदीणं णिरयादी खेत्तयं हवे णियमा ।
जाईए णोकम्मं दव्विदियपोग्गलं होदि ।।७९।।
एइंदियमादीणं सगसगदव्विदियाणि णोकम्मं ।
देहस्स य णोकम्मं देहुदयजदेहखंधाणि ।।८०।।
ओरालियवेगुव्वियआहारयतेजकम्मणोकम्मं ।
ताणुदयजचउदेहा कम्मे विस्संचयं णियमा ।।८१।।
बंधणपहुदिसमण्णियसेसाणं देहमेव णोकम्मं ।
णवरि विसेस जाणे सगखेत्तं आणुपुव्वीणं ।।८२।।

थिरजुम्मस्स थिराथिररसरूहिरादीणि सुहजुगस्स सुहं ।
असुह देहावयवं सरपरिणदपोग्गलाणि सरे ॥८३॥
उच्चस्सुच्चं देहं णीचं णीचस्स होदि णोकम्मं ।
दाणादि चउक्काणं विग्घगणगपुरिसपहुदी हु ॥८४॥
विरियस्स य णोकम्मं रुक्खाहारादिबलहरं दव्वं ।
इदि उत्तरपयडीणं णोकम्मं दव्वकम्मं तु ॥८५॥
णो आगमभावो पुण सगसगकम्मफलसंजुदो जीवो ।
पोग्गलविवाइयाणं णत्थि खु णोआगमो भावो ॥८६॥
णमिऊण णेमिचंदं असहायपरक्कमं महावीरं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं ओघादेसे थवं वोच्छं ॥८७॥
सयलंगेक्कंगेक्कंगहियारं सवित्थरं ससखेवं ।
वण्णणसत्थं थयथुइधम्मकहा होइ णियमेण ॥८८॥
पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधोत्ति चदुविहो बंधो ।
उक्कस्समणुक्कस्स जहण्णमजहण्णगंति पुधं ॥८९॥
सादिअणादी धुव अद्धुवो य बंधो दु जेट्ठमादीसु ।
णाणेग जीव पडि ओघादेसे जहाजोग्गं ॥९०॥
ठिदिअणुभागपदेसा गुणपडिवण्णेसु जेसिमुक्कस्सा ।
तेसि मणुक्कस्सो चउव्विहोऽजहण्णोवि एमेव ॥९१॥
सम्मेव तित्थबधो आहारदुग पमादरहिदेसु ।
मिस्सूणे आउस्स य मिच्छादिसु सेसबंधो दु ॥९२॥
पढमुवसमिये सम्मे सेसतिये अविरदादिचत्तारि ।
तित्थयरबधपारंभया णरा केवलिदुगंते ॥९३॥
सोलस पणवीस णभं दस चउ छक्केक्क बंधवोच्छिण्णा ।
दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्को ॥९४॥

मिछत्तहु डसंढाऽसंपत्तेयक्खथावरादावं ।
सुहुमतियं वियलिंदिय णिरयदुणिरयाउगं मिच्छे ॥९५॥
विदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहदिचउक्कं ।
दुग्गमणित्थीणीचं तिरियदुगुज्जोवतिरिआऊ ॥९६॥
अयदे विदियकसाया वज्जं ओरालमणुदुयणुवाऊ ।
देसे तदियकसाया णियमेणिह बंघवोच्छिण्णा ॥९७॥
छट्ठे अथिरं असुहं असादमजसं च अरदिसोगं च ।
अपमत्ते देवाऊ णिट्ठवणं चेव अत्थित्ति ॥९८॥
मरणूणम्हि णिट्ठीपढमे णिदा तहेव पयला य ।
छट्ठे भागे तित्थं णिमिणं सग्गमणपंचिंदी ॥९९॥
तेजदुहारदुसमचउसुरवण्णागुरुचउक्कतसणवयं ।
चरमे हस्सं च रदी भयं जुगुच्छा य बंध वोच्छिण्णा ॥१००॥
पुरिसं चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपंचभागेसु ।
पढमं विग्घं दंसणचउजसउच्चं ज सुहुमंते ॥१०१॥
उवसंतखीणमोहे जोगिम्हि य समयियट्ठिदी सादं ।
णायव्वो पयडीणं बंधस्सातो अणंतो य ॥१०२॥
सत्तरसेकग्गसयं चउसत्तत्तरि सगट्ठि तेवट्ठी ।
बंधा णवट्ठवण्णा दुवीस सत्तारसेकोघे ॥१०३॥
तिय उणवीसं छत्तियतालं तेवण्ण सत्तवण्णं च ।
इगिदुगसट्ठी विरहिय सय तियउणवीससहिय वीससयं ॥१०४॥
ओधे वा आदेसे णारयमिच्छम्हि चारि वोच्छिण्णा ।
उवरिम वारस सुरचउ सुराउ आहारयमबंधा ॥१०५॥
घम्मे तित्थं वंधदि वंसामेघाण पुण्णगो चेव ।
छट्ठोत्ति य मणुवाउ चरिमे मिच्छेव तिरियाऊ ॥१०६॥

मिस्साविरदे उच्चं मणुवदुगं सत्तमे हवे बंधो ।
मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण बंधंति ॥१०७॥

तिरिये श्रोघो तित्थाहारूणो अविरदे छिदी चउरो ।
उवरिम छण्हं च छिदी सासण सम्मे हवे णियमा ॥१०८॥

सामण्णतिरियपंचिंदियपुण्णगजोणिणीसु एमेव ।
सुरणिरयाउ अपुण्णे वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि ॥१०९॥

तिरियेव णरे णवरि हु तित्थाहारं च अत्थि एमेव ।
सामण्ण पुण्णमणुसिणिणरे अपुण्णे अपुण्णेव ॥११०

णिरयेव होदि देवे आईसाणोत्ति सत्त वाम छिदी ।
सोलस चेव अबंधा भवणतिए णत्थि तित्थयरं ॥१११॥

कप्पित्थीसु ण तित्थं सदरसहस्सारगोत्तितिरियदुगं ।
तिरियाऊ उज्जोवो अत्थि तदो णत्थि सदरचऊ ॥११२॥

पुण्णिदरं विगिविगिले तत्थुप्पण्णो हु सासणो देहे ।
पज्जत्तिं णवि पावदि इदि णरतिरियाउगं णत्थि ॥११३॥

पंचेन्द्रियेसु श्रोघं एयक्खे वा वणप्फदीयंदे ।
मणुवदुगं मणुवाऊ उच्चं ण हि तेहुवाउम्हि ॥११४॥

ण हि सासणो अपुण्णे साहारण सुहुमगे य तेउदुगे ।
श्रोघं तस मणवयणे श्रोराले मणुवगईभंगो ॥११५॥

श्रोराले वा मिस्से ण सुरणिरयाउहारणिरयदुगं ।
मिच्छदुगे देवश्चो तित्थं ण हि अविरदे अत्थि ॥११६॥

पण्णारसमुनतीस मिच्छदुगे अविरदे छिदी चउरो ।
उवरिमपणसट्ठीवि य एक्कं सादं सजोगिम्हि ॥११७॥

देवे वा वेगुव्वे मिस्से णरतिरियआउगं णत्थि ।
छट्ठगुणंवाहारे तम्मिस्से णत्थि देवाऊ ॥११८॥

कम्मे उरालमिस्सं वा णाउदुगंपि णव छिदी अयदे ।
वेदादाहारोत्ति य सगुणट्ठाणाणमोघं तु ।।११९।।
णवरि य सव्वुवसम्मे णरसुरआऊणि णत्थि णियमेण ।
मिच्छस्संतिम णवंय वारं णहि तेउपम्मेसु ।।१२०।।
सुवके सदरचउवकं वामंतिमबारस च ण व अत्थि ।
कम्मेव अणाहारे बंधस्संतो अणंतो य ।।१२१।।
सादि अणादि धुव अद्धुवो य बंधो दु कम्मछक्कस्स ।
तदियो सादियसेसो अणादिधुवसेसगो आऊ ।।११२।।
सादि अबंधबंधे सेढिअणारूढगे अणादी हु ।
अभव्वसिद्धम्हि धुवो भवसिद्धे अद्धुवो बंधो ।।१२३।।
घादितिमिच्छकसाया भयतेजगुरुदुगणिमिणवण्णचओ ।
सत्तेतालधुवाणं चदुधा सेसाणयं तु दुधा ।।१२४।।
तेसे तित्थाहारं परघादचउक्क सव्वआऊणि ।
अप्पडिवक्खा सेसा सप्पडिवक्खा हु बासट्ठी ।।१२५।।
अवरो भिण्णमुहुत्तो तित्थाहाराण सव्वआऊणं ।
समओ छावट्ठीण बधो तम्हा दुधा सेसा ।।१२६।।
तीसं कोडाकोडी तिघादितदियेसु बीस णामदुगे ।
सत्तरि मोहे सुद्धं उवही आउस्स तेतीसं ।।१२७।।
दुक्खतिघादीणोधं सादिच्छीमणुदुगे तदद्धं तु ।
सत्तरि दसणमोहे चरित्तमोहे य चत्ताल ।।१२८।।
संठाणसहदीण चरिमस्सोघ दुहीणमादित्ति ।
अट्ठरसकोडकोडी वियलाण सुहुमतिण्हं च ।।१२९।।
अरदिसोगे सढे तिरिक्खभयणिरयतेजुरालदुगे ।
वेगुव्वादावदुगे णीचे तसवण्णअगुरुतिचउक्के ।।१३०।।
इगिपंचेदियथावरणिमिणा सगमणअथिरछक्काणं ।
वीसंकोडाकोडीसागरणामाणमुक्कस्सं ।।१३१।।

उज्जोवो तमतमगे सुरणारयमिच्छगे असंपत्तं।
तिरियदुगं सेसा पुण चदुगदिमिच्छे किलिट्ठे य ॥१६९॥

वण्णचउक्कमसत्थं उवघादोखवगघादि वणवीसं।
तीसाणमवरबंधो सगसगवोच्छेदठाणम्हि ॥१७०॥

अणथीणतियं मिच्छं मिच्छे अयदे हु विदियकोधादी।
देसे तदियकसाया संजमगुणपच्छिदे सोलं ॥१७१॥

आहारमप्पमत्ते पमत्तसुद्धे य अरदिसोगाणं।
णरतिरिये सुहुमतियं वियलं वेगुव्वछक्काओ ॥१७२॥

सुरणिरये उज्जोवोरालदुगं तमतमम्हि तिरियदुगं।
णीचं च तिगदिमज्झिमपरिणामे थावरेयक्खं ॥१७३॥

सोहम्मोत्ति य तावं तित्थयरं अविरदे मणुस्सम्हि।
चदुगदिवामकिलिट्ठे पण्णरस दुवे विसोहीये ॥१७४॥

परघाददुग तेजदु तसवण्णचउक्क णिमिणपंचिंदी।
अगुरूलहुं च किलिट्ठे इत्थिणउंसं विसोहीये ॥१७५॥

सम्मो वा मिच्छो वा अट्ठ अपरियत्तमज्झिदो य जमि।
परियत्तमाणमज्झिममिच्छादिट्ठी दु तेवीसं ॥१७६॥

थिरसुहजससाददुगं उभये मिच्छेव उच्चसंठाणं।
संहदिगमणं णरसुरसुभगादेज्जाण जुम्मं च ॥१७७॥

घादीणं अजहण्णोऽणुक्कस्सो वेयणीयणामाणं।
अजहण्णमणुक्कस्सो गोदे चदुधा दुधा सेसा ॥१७८॥

सत्थाणं धुवियाणमणुक्कस्समसत्थगाण धुवियाणं।
अजहण्णं च य चदुधा सेसा सेसाणयं च दुधा ॥१७९॥

सत्ती य लदादारू अट्ठीसेलोवमाहु घादीणं।
दारूअणंतिमभागोत्ति देसघादी तदो सव्वं ॥१८०॥

देसोत्ति हवे सम्मं तत्तो दारूअणंतिमे मिस्सं ।
सेसा अणंतभागा अट्ठिसिलाफड्ढया मिच्छे ॥१८१॥

आवरणदेसघादंतरायसंजलणपुरिससत्तरसं ।
चदुविहभावपरिणदा तिविहा भावा हु सेसाणं ॥१८२॥

अवसेसापयडीओ अघादिया घादियाण पडिभागा ।
ता एव पुण्णभावा सेसा पावा मुणेयव्वा ॥१८३॥

गुडखण्डसक्करामियसरिसा सत्था हु णिबकंजीरा ।
विसहालाहलसरिसाऽसत्था हु अघादिपडिभागा ॥१८४॥

एयक्खेतोगाढं सव्वपदेसेहिं कम्मणो जोग्गं ।
बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं ॥१८५॥

एयसरीरोगाहियमेयक्खेतं अणेयखेतं तु ।
अवसेसलोयखेत खेत्तणुसारिट्ठियं रूवी ॥१८६॥

एयाणेयक्खेत्तट्ठियरूविअणंतिमं हवे जोग्गं ।
अवसेसं तु अजोग्गं सादी अणादी हवे तत्थ ॥१८७॥

जेट्ठे समयपबद्धे अतीदकाले हदेण सव्वेण ।
जीवेण हदे सव्वं सादी होदित्ति णिद्दिट्ठ ॥१८८॥

सगसगखेत्तगयस्स य अणतिमं जोग्गदव्वगयसादी ।
सेसं अजोग्गसागयसादी होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥१८९॥

सगसगसादिविहीणे जोग्गाजोग्गे य होदि णियमेण ।
जोग्गाजोग्गाण पुण अणादिदव्वाणं परिमाणं ॥१९०॥

सयलरसरूवगंधेहिं परिणदं चरमचदुहिं फासेहि ।
सिद्धादोऽभव्वादोऽणंतिमभाग गुण दव्वं ॥१९१॥

आउगभागो थोवो णामागोदे समो तदो अहियो ।
घादितियेवि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥१९२॥

सुहदुक्खरिणमित्तादो बहुणिज्जरगोत्ति वेयणीयस्स ।
सव्वेहिंतो बहुगं दव्वं होदित्ति रिणद्दिट्ठं ।।१९३।।

सेसाणं पयडीण ठिदिपडिभागेरण होदि दव्वं तु ।
आवलि असंखभागो पडिभागो होदि रिणयमेरण ।।१९४।।

बहुभागे समभागो अट्ठण्हं होदि एक्कभागम्हि ।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु ।।१९५।।

उत्तरपयडीसु पुरणो मोहावरणा हवंति हीरणकमा ।
अहियकमा पुण रणामाविग्घा य रण भंजरणं सेसे ।।१९६।।

सव्वावरणं दव्वं अणंतभागो दु मूलपयडीणं ।
सेसा अरणंतभागा देसावरणं हवे दव्वं ।।१९७।।

देसावरणण्णोण्णब्भत्थं तु अरणंतसाखमेत्तं खु ।
सव्वावरणधणट्ठं पडिभागो होदि घादीरणं ।।१९८।।

सव्वावरणं दव्वं विभंजणिज्जं तु उभयपयडीसु ।
देसावरणं दव्वं देसावरणेसु णेविदरे ।।१९९।।

बहुभागे समभागो बंधारणं होदि एक्कभागम्हि ।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु ।।२००।।

घादि तियारणं सगसगसव्वावरणीय सव्वदव्वं तु ।
उत्तकमेरण य देयं विवरीयं रणामविग्घारणं ।।२०१।।

मोहे मिच्छत्तादी सत्तरसण्हं तु दिज्जदे हीणं ।
संजलरणारणं भागेव होदि परणरणोकसायाणं ।।२०२।।

संजलरणभागबहुभागद्धं अकसायसंगयं दव्वं ।
इगि भागसहियबहुभागद्धं संजलणपडिबद्धं ।।२०३।।

तण्णोकसाय भागो सबंधपरणरणोकसाय पयडीसु ।
हीरण कमो होदि तहा देसे देसावरण दव्वं ।।२०४।।

पुंबंधडद्धा अंतोमुहुत्त इत्थिम्हि हस्सजुगले य ।
अरदिदुगे संखगुणा णपुंसकऽद्धा विसेसहिया ॥२०५॥
पणविग्घे विवरीयं ंधपिंडिदरणाम ठाणेवि ।
पिंडं दव्वं च पुणो ंधसगपिंडपयडीसु ॥२०६॥
छण्हंपि अणुक्कसो पदेसबधो दु चदुवियप्पो दु ।
सेसतिये दुवियप्पो मोहाऊणं च दुवियप्पो ॥२०७॥
तीसण्हमणुक्कस्सो उत्तरपयडीसु चदुविहो बंधो ।
सेसतिये दुवियप्पो सेसचउक्केवि दुवियप्पो ॥२०८॥
णाणंतरायदसयं दंसणछक्कं च मोहचोद्दसयं ।
तीसण्हमणुक्कस्सो पदेसबंधो चदुवियप्पो ॥२०९॥
उक्कडजोगो सण्डी पज्जतो पयडिबंधमप्पदरो ।
कुणदि पदेसुक्कस्सं जहण्णये जाण विवरीयं ॥२१०॥
आउक्कस्स पदेसं छक्कं मोहस्स णव दु ठाणाणि ।
सेसाण तणुकसाओ बधदि उक्कस्सजोगेण ॥२११॥
सत्तर सुहुमसरागे पंचऽणियट्टिम्हि देसगे तदियं ।
अयदे बिदियकसायं होदि हु उक्कस्सदव्वं तु ॥२१२॥
छण्णोकसायणिद्दापयलातित्थं च सम्मगो य जदी ।
सम्मो वामो तेरं णरसुरआऊ असादं तु ॥२१३॥
देवचउक्कं वज्जं समचउरं सत्थगमणसुभगतियं ।
आहारमप्पमत्तो सेसपदेसुक्कडो मिच्छो ॥२१४॥ विसेसयं
सुहुमणिगोद अपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णये जोगे ।
सत्तण्हं तु जहण्णं आउगबधेवि आउस्स ॥२१५॥
घोडणजोगोऽसण्णी णिरयदुसुरणिरय आउगजहण्णं ।
अपमत्तो आहारं अयदो तित्थं च देवचऊ ॥२१६॥

चरिमअपुण्णभवत्थे तिविग्गहे पढमविग्गहम्मि ठिओ ।
सुहमणिगोदो बंधदि सेसाणं अवरबंधं तु ॥२१७॥

जोगट्ठाणा तिविहा उववादेयंतवड्ढिपरिणामा ।
भेदाएक्केक्कंपि य चोद्दसभेदा पुणो तिविहा ॥२१८॥

उववादजोगठाणा भावादिसमयट्ठियस्स अवरवरा ।
विग्गहइजुगदिगमणे जीवसमासे मुणेदव्वा ॥२१९॥

परिणामजोगठाणा सरीरपज्जत्तगादु चरिमोत्ति ।
लद्धि अपज्जत्ताणं चरिमतिभागम्हि बोधव्वा ॥२२०॥

सगपज्जत्तीपुण्णे उवरिं सव्वत्थ जोगमुक्कस्सं ।
सव्वत्थ होदि अवरं लद्धिअपुण्णस्स जेट्ठं वि ॥२२१॥

एयंतवड्ढिठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति ।
अवरवरट्ठाणाणाओ सगकालादिम्हि अंतम्हि ॥२२२॥

अविभाग पडिच्छेदो वग्गो पुण वग्गणा य फड्ढयगं ।
गुणहाणीवि य जाणे ठाण पडि होदि णियमेण ॥२२३॥

पल्लासंखेज्जदिमा गुणहाणिसला हवंति इगिठाणे ।
गुणहाणिफड्ढयाओ असंखभागं तु सेढीये ॥२२४॥

फड्ढयगे एक्केक्के वग्गणसंखा हु तत्तियालावा ।
एक्केक्कवग्गणाए असखपदरा हु वग्गाओ ॥२२५॥

एक्केक्के पुण वग्गे असखलोगा हवंति अविभागा ।
अविभागस्स पमाण जहण्णउड्ढी पदेसाणं ॥२२६॥

इगिठाणफड्ढयाओ वग्गणसंखा पदेसगुणहाणी ।
सेढि असंखेज्जदिमा असखलोगा हु अविभागा ॥२२७॥

सव्वे जीवपदेशे दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा ।
उवरिं उत्तरहीण गुणहाणि पडि तदद्धकमं ॥२२८॥

फड्ढयसंखाहि गुणं जहण्णवग्गं तु तत्थ तत्थादी ।
बिदियादि वग्गणाणं वग्गा अविभागअहियकया ॥२२९॥

अंगुल असंखभागप्पमाणमेत्तऽवरफड्ढयावड्ढी ।
अंतरछक्कं मुच्चा अवरट्ठाणादु उक्कस्सं ॥२३०॥

सरिसायामेणुवरिं सेढिअसंखज्जभागठाणाणि ।
चडिदेक्केक्कमपुव्वं फड्ढयमिह जायदे चयदो ॥२३१॥

एदेसिं ठाणाण जीवसमासाण अवरवरविसयं ।
चउरासीदि पदेहिं अप्पाबहुगं परूवेमो ॥२३२॥

सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो ।
लद्धिअपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो ॥२३३॥

णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु ।
बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं ॥२३४॥

बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबिइंदियस्स अवरमदो ।
एवं बितिबितितिचतिच चउविमणो होदि चउविमणो ।२३५।

तहय असण्णी सण्णी असण्णिसण्णिस्स सण्णिउववादं ।
सुहुमे इंदियलद्धिगअवरं एयतवड्ढिस्स ॥२३६॥

सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स ।
एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरे थूलथूले य ॥२३७॥

तह सुहुमसुहुमजेट्ठं तो बादरबादरे वरं होदि ।
अंतरमवर लद्धिगसुहुमिदरवरंपि परिणामे ॥२३८॥

अंतरमुवरीवि पुणो तप्पुण्णाणं च उवरि-अंतरियं ।
एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवरवरा ॥२३९॥

लद्धीणिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्ढिठाणाओ ।
परिणामट्ठाणाओ अंतरअंतरिय उवरुवरिं ॥२४०॥

एदेंसि ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा ।
हेट्ठिमगुणहाणिसला अण्णोण्णब्भत्थमेत्तं तु ।।२४१।।

अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाणं ।
एक्कसमयं हवे पुण इदरेंसि जाव अट्ठोत्ति ।।२४२।।

अट्ठसमयस्स थोवा उभयदिसासुवि असंखसंगुणिदा ।
चउसमयोत्ति तहेव य उवरिं तिदुसमयजोग्गाओ ।।२४३।।

मज्झे जीवा बहुगा उभयत्थ विसेसहीणकमजुत्ता ।
हेट्ठिमगुणहाणिसलादुवरिं सलागा विसेसऽहिया ।।२४४।।

दव्वतियं हेट्ठुवरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोण्णं ।
जीवजवे चोद्दससयबावीस होदि बत्तीसं ।।२४५।।

चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठं तदो य बत्तीसं ।
किंचूणतिगुणहाणिविभजिदे दव्वे दु जवमज्झं ।।२४६।।

पुण्णतसजोगठाणं छेदाऽसंखस्सऽसंखबहुभागे ।
दलमिगिभागं च दलं दव्वदुगं उभयदलवारा ।।२४७।।

णाणागुणहाणिसला छेदासंखेज्जभागमेत्ताओ ।
गुणहाणीणद्धाणं सव्वत्थवि होदि सरिसं तु ।।२४८।।

अण्णोण्णगुणिदरासी पल्लासंखेज्जभागमेत्तं तु ।
हेट्ठिमरासीदो पुण उवरिल्लमसंखसंगुणिदं ।।२४९।।

इगिठाणफड्ढयाओ समयपबद्धं च जोगवड्ढी य ।
समयपबद्धचयट्ठं एदे हु पमाणफलइच्छा ।।२५०।।

बीइंदियपज्जत्तजहण्णट्ठाणादु सण्णिपुण्णस्स ।
उक्कस्सट्ठाणोत्ति य जोगट्ठाणा कमे उड्ढा ।।२५१।।

सेढियसंखेज्जदिमा तस्स जहण्णस्स फड्ढया होंति ।
अंगुलअसंखभागा ठाणं पडि फड्ढया उड्ढा ।।२५२।।

धुववड्ढीवड्ढंतो दुगुणं दुगुणं कमेण जायंते ।
चरिमे पल्लच्छेदाऽसंखेज्जदिमो गुणो होदि ॥२५३॥

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे रूवसंजुदे ठाणा ।
सेढिअसखेज्जदिमा जोगट्ठाणा णिरंतरगा ॥२५४॥

अतरगा तदसखेज्जदिमा सेढीअसंखभागा हु ।
सांतरणिरंतराणिवि सव्वाणिवि जोगठाणाणि ॥२५५॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णओ जोगो ।
पज्जत्तसण्णि पंचिंदियस्स उक्कसओ होदि ॥२५६॥

जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणभागा कसायदो होंति ।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदिकारणं णत्थि ॥२५७॥

सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणाणि होंति सव्वाणि ।
तेहिं असंखेज्जगुणो पयडीणं संगहो सव्वो ॥२५८॥

तेहिं असखेज्जगुणा ठिदिअवसेसा हवंति पयडीणं ।
ठिदिबधज्झवसाणट्ठाणा तत्तो असंखगुणा ॥२५९॥

अणुभागाणं बंधज्झवसाणमसखलोगगुणिदमदो ।
एत्तो अणंतगुणिदा कम्मपदेसा मुणेदव्वा ॥२६०॥

आहारं तु पमत्ते तित्थं केवलिणि मिस्सयं मिस्से ।
सम्मं वेदगसम्मे मिच्छदुगयदेव आणुदओ ॥२६१॥

णिरयं सासणसम्मो ण गच्छदित्ति य ण तस्स णिरयाणू ।
मिच्छादिसु सेसुदओ सगसगचरमोत्ति णादव्वो ॥२६२॥

दस चउरिगि सत्तरसं अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य ।
छच्छक्कएक्कदुगदुग चोद्दस उगुतीस तेरसुदयविधि ॥२६३॥

पण णव इगि सत्तरस अड पच च चउर छक्क छच्चेव ।
इगिदुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगता ॥२६४॥

मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइंदी ।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा ।।२६५।।

अयदे विदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ।।२६६।।

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी ।
छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा ।।२६७।।

अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि ।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु ।।२६८।।

वेदतिय कोहमाणं मायासंजलणमेव सुहुमंते ।
सुहुमो लोहो संते वज्जंणारायणारायं ।।२६९।।

खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा ।
णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि ।।२७०।।

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं ।
संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगिम्हि ।।२७१।।

तदियेक्कं मणुवगदी पंचिंदिय सुभगतसतिगादेज्जं ।
जसतित्थ मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्हि ।।२७२।।

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाण च केवलिम्हि जदो ।
तेण दु सादासादसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ।।२७३।।

समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स ।
तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि ।।२७४।।

एदेण कारणेण दु सादस्सेव दु णिरंतरो उदओ ।
तेणासादणिमित्ता परीसहा जिणवरे णत्थि ।।२७५।।

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि छदुसदरी ।
छवट्ठि सट्ठि णवसगवण्णास दुदालबारुदया ।।२७६।।

धुववड्ढीवड्ढंतो दुगुणं दुगुणं कमेण जायंते ।
चरिमे पल्लच्छेदाऽसंखेज्जदिमो गुणो होदि ॥२५३॥

आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे रूवसंजुदे ठाणा ।
सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणा णिरंतरगा ॥२५४॥

अंतरगा तदसंखेज्जदिमा सेढीअसंखभागा हु ।
सांतरणिरंतराणिवि सव्वाणिवि जोगठाणाणि ॥२५५॥

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णओ जोगो ।
पज्जत्तसण्णि पंचिंदियस्स उक्कसओ होदि ॥२५६॥

जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागा कसायदो होंति ।
अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंधट्ठिदिकारणं णत्थि ॥२५७॥

सेढिअसंखेज्जदिमा जोगट्ठाणाणि होंति सव्वाणि ।
तेहिं असंखेज्जगुणो पयडीणं संगहो सव्वो ॥२५८॥

तेहिं असंखेज्जगुणा ठिदिअवसेसा हवंति पयडीणं ।
ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा तत्तो असंखगुणा ॥२५९॥

अणुभागाणं बंधज्झवसाणमसंखलोगगुणिदमदो ।
एत्तो अणंतगुणिदा कम्मपदेसा मुणेदव्वा ॥२६०॥

आहारं तु पमत्ते तित्थं केवलिणि मिस्सयं मिस्से ।
सम्मं वेदगसम्मे मिच्छदुगयदेव आणुदओ ॥२६१॥

णिरयं सासणसम्मो ण गच्छदित्ति य ण तस्स णिरयाणू ।
मिच्छादिसु सेसुदओ सगसगचरमोत्ति णादव्वो ॥२६२॥

दस चउरिगि सत्तरसं अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य ।
छच्छक्कएक्कदुगदुग चोद्दस उगुतीस तेरसुदयविधि ॥२६३॥

पण णव इगि सत्तरसं अड पंच च चउर छक्क छच्चेव ।
इगिदुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगंता ॥२६४॥

मिच्छे मिच्छादाव सुहुमतियं सासणे अणेइंदी ।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा ॥२६५॥

अयदे विदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥२६६॥

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी ।
छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा ॥२६७॥

अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि ।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु ॥२६८॥

वेदतिय कोहमाणं मायासंजलणमेव सुहुमते ।
सुहुमो लोहो संते वज्जणारायणाराय ॥२६९॥

खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा ।
णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि ॥२७०॥

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं ।
संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगिम्हि ॥२७१॥

तदियेक्क मणुवगदी पंचिंदिय सुभगतसतिगादेज्ज ।
जसतित्थ मणुवाऊ उच्च च अजोगिचरिमम्हि ॥२७२॥

णट्ठा य रायदोसा इंदियणाणं च केवलिम्हि जदो ।
तेण दु सादासादसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ॥२७३॥

समयट्ठिदिगो बंधो सादस्सुदयप्पिगो जदो तस्स ।
तेण असादस्सुदओ सादसरूवेण परिणमदि ॥२७४॥

एदेण कारणेण दु सादस्सेव दु णिरंतरो उदओ ।
तेणासादणिमित्ता परीसहा जिणवरे णत्थि ॥२७५॥

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि छदुसदरी ।
छवट्ठि सट्ठि णवसगवण्णास दुदालबारुदया ॥२७६॥

पंचेक्कारसबावीसट्ठारसपंचतीस इगिछादालं ।
पण्णं छप्पण्णं बितिपणसट्ठि असीदि दुगुणपणवण्णं ॥२७७॥

उदयस्सुदीरणस्स य सामित्तादो ण विज्जदि विसेसो ।
मोत्तूण तिण्णिठाणं पमत्त जोगी अजोगी य ॥२७८॥

तीसं बारस उदयुच्छेदं केवलिणमेकदं किच्चा ।
सादमसादं च तहिं मणुवाउगमवणिदं किच्चा ॥२७९॥

अवणिदतिप्पयडीणं पमत्तविरदे उदीरणा होदि ।
णत्थित्ति अजोगिजिणे उदीरणा उदयपयडीणं ॥२८०॥

पण णव इगि सत्तरसं अट्ठट्ठ य चदुर छक्क छच्चेव ।
इगि दुग सोलुगदालं उदीरणा होंति जोगंता ॥२८१॥

सत्तरसेक्कारखचदुसहियसयं सगिगिसीदि तियसदरी ।
णवतिण्णिसट्ठि सगछक्कवण्ण चउवण्णमुगुदाल ॥२८२॥

पंचेक्कारसबावीसट्ठारस पंचतीस- इगिणवदालं ।
तेवण्णेक्कुणसट्ठी पणछक्कडसट्ठि तेसीदी ॥२८३॥

गदियादिसु जोग्गाणं पयडिप्पहुदीणमोघसिद्धाणं ।
सामित्तं णेदव्वं कमसो उदयं समासेज्ज ॥२८४॥

गदिआणुआउउदओ सपदे भूपुण्णबादरे ताओ ।
उच्चुदओ णरदेवे थीणतिगुदओ णरे तिरिये ॥२८५॥

संखाउगणरतिरिए इंदिय पज्जत्तगादु थीणतियं ।
जोग्गमुदेदुं वज्जिय आहारविगुव्विणुट्ठवगे ॥२८६॥

अयदापुण्णे ण हि थी संढोवि य घम्मणारयं मुच्चा ।
थी ं दे कमसो णाणुचऊ चरिमतिण्णाणू ॥२८७॥

इगिविगलथावरचऊ तिरिए अपुण्णो णरेवि संघडणं ।
ओरालदु णरतिरिए वेगुव्वदु देवणेरयिए ॥२८८॥

तेउतिगूणतिरिक्खेसुज्जोवो बादरेसु पुण्णेसु ।
सेसाण पयडीणं ओघं वा होदि उदओ दु ॥२८९॥

थीणतिथीपुरिसूणा घादी णिरयाउणीचवेयणियं ।
णामे सगवचिठाणं णिरयाणू णारयेसुदया ॥२९०॥

वेगुव्वतेजथिरसुहदुग दुग्गदिहुडणिमिण पंचिंदी ।
णिरयगदि दुब्भगगुरुतसवण्णाचऊ य वचिठाणं ॥२९१॥

मिच्छमणतं मिच्छादितिए कमा छिदी अयदे ।
बिदियकसाया दुब्भगणादेज्जदुगाउणिरय चऊ ॥२९२॥

विदियादिसु छसु पुढविसु एवं णवरि य असंजदट्ठाणे ।
णत्थि णिरयाणुपुव्वी तिस्से मिच्छेव वोच्छेदो ॥२९३॥

तिरिये ओघो सुरणरणिरयाऊउच्च मणुदुहारदुगं ।
वेगुव्वछक्कतित्थ णत्थि हु एमेव सामण्णे ॥२९४॥

थावर दुगसाहारणत्ताविगलूण ताणि पचक्खे ।
इत्थि अपज्जत्तूणा ते पुण्णे उदयपयडीओ ॥२९५॥

पुसंढूणित्थिजुदा जोणिणिये अविरदे ण तिरियाणू ।
पुण्णिदरे थी थीणति परघाददु पुण्णउज्जोवं ॥२९६॥

सरगदिदु जसादेज्जं आदीसंठाणसंहदीपणग ।
सुभगं सम्मं मिस्सं हीणा तेऽपुण्णसंढजुदा ॥२९७॥

मणुवे ओघो थावरतिरियादावदुगएयवियलिंदि ।
साहरणिदराउतियंवेगुव्वियछक्क परिहीणो ॥२९८॥

मिच्छमपुण्णं छेदो अणमिस्सं मिच्छगादि तिसु अयदे ।
विदियकसायणराणू दुब्भगऽणादेज्जअज्जसयं ॥२९९॥

देसे तदियकसाया णीचं एमेव मणुससामण्णे ।
पज्जत्ते वि य इत्थीवेदाऽपज्जत्तिपरिहीणो ॥३००॥

मणुसिरिणत्थी सहिदा तित्थयराहार पुरिससंढूणा ।
पुण्णिदरेव अपुण्णे सगाणुगदि आउगं णेयं ॥३०१॥

मणुसोघं वा भोगे दुब्भगचउणीचसंढथीणतियं ।
दुग्गदितित्थमपुण्णं संहदिसंठाण चरिमपणं ॥३०२॥

हारदुहीणा एवं तिरये मणुदुच्चगोदमणुवाउं ।
अवणिय पक्खिव णीचं तिरियदुतिरियाउउज्जोवं ॥३०३॥

भोगं व सुरे णरचउणराउवज्जूण सुरचउसुराउं ।
खिव देवे णेवित्थी इत्थिम्मि ण पुरिसवेदो य ॥३०४॥

अविरदठाणं एक्कं अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव हवे ।
भवणतिकप्पित्थीणं असाजदे णत्थि देवाणू ॥३०५॥

तिरियअपुण्णं वेगे परघादचउक्कपुण्ण साहरण ।
एइंदिय जसथीणंति थावरजुगलं च मिलिदव्वं ॥३०६॥

णिामगोवंगतसं संहदिपंचक्खमेवमिह वियले ।
णिय थावरजुगलं साहरणेयव दावं ॥३०७॥

खिवतसदुग्गदिदुस्सरमंगोवंगं सजादिसेवट्टं ।
ओघं सयलेसाहरणिगिविगलादावथावरदुगूण ॥३०८॥

एवं वा पणकाये ण हि साहारणमिणं च आदावं ।
दुसु तद्दुगमुज्जोव कमेण चरियम्हि आदावं ॥३०९॥

ओघं तसे ण थावरदुगसाहरणेयतावमथ ओघं ।
मणवयण सत्तगे ण हि ताविगिविगलं च थावराणुचओ ॥३१०॥

अणुभयवचि वियलजुदा ओघमुराले ण हारदेवाऊ ।
वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ ॥३११॥

तम्मिस्से पुण्णजुदा ण मिस्सथीणतियसरविहायदुगं ।
परघादचओ अयदे णादेज्जदुदुब्भगं ण साढिच्छी ॥३१२॥

साणे तेसिं छेदो वामे चत्तारि चोद्दसा साणे ।
चउदालं वोछेदो अयदे जोगिम्हि छत्तीसं ॥३१३॥

देवोघं वेगुव्वे ण सुराणू पविखवेज्ज णिरयाऊ ।
णरयगदिहुंडसंढं दुग्गदि दुब्भगचओ णीच ॥३१४॥

वेगुव्वं वा मिस्सं ण मिस्सं परघादसरविहायदुगं ।
साणे ण हुंडसंढं दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥३१५॥

णिरयगदि आउणीचं ते खित्तयदेवऽणिज्ज थीवेसं ।
छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियसंढथीवेदं ॥३१६॥

दुग्गदि दुस्सरसंहदि ओरालदुचरिमपंचसंठाण ।
ते तम्मिस्से सुस्सर परघाददुसत्थगदि हीणा ॥३१७॥

ओघं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुरालदुग मिस्सं ।
उवघादपणविगुव्वदुथीणतिसंठाणसंहदी णत्थि ॥३१८॥

साणे थीवेदछिदी णिरयदुणिरयाउग ण तियदसयं ।
इगिवण्णं पणवीस मिच्छादिसु चउसु वोच्छेदो ॥३१९॥

मूलोघं पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं ।
इगिविगलं थीसंढं तावं णिरयाउग णत्थि ॥३२०॥

इत्थिवेदेवि तहा हारदुपुरिसूण मित्थिसंजुत्तं ।
ओघं संढे ण हि सुरहारदुथीपुंसुराउतित्थयरं ॥३२१॥

तित्थयरमाणमायालोहचउक्कूणमोघमिह कोहे ।
अणरहिदे णिगिविगलं तावऽणकोहाणुथावरचउक्कं ॥३२२॥

एवं माणादितिए मदिसुदअण्णाणगे दु सगुणोघं ।
वेभंगेवि ण ताविगिविगलिंदी थावराणु चऊ ॥३२३॥

सण्णाणपंचयादी दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं ।
मणपज्जवपरिहारे णवरि ण संढित्थि [हारदुगं ॥३२४॥

मणुसिणिएत्थी सहिदा तित्थयराहार पुरिससंढूणा ।
पुण्णिदरेव अपुण्णे सगाणुगदि आउगं णेयं ॥३०१॥
मणुसोघं वा भोगे दुब्भगचउणीचसंढथीणतियं ।
दुग्गदितित्थमपुण्णं संहदिसंठाण चरिमपणं ॥३०२॥
हारदुहीणा एवं तिरये मणुदुच्चगोदमणुवाउं ।
अवणिय पक्खिव णीचं तिरियदुतिरियाउउज्जोवं ॥३०३॥
भोगं व सुरे णरचउणराउवज्जूण सुरचउसुराउं ।
खिव देवे णेवित्थी इत्थिम्मि ण पुरिसवेदो य ॥३०४॥
अविरदठाणं एक्कं अणुद्दिसादिसु सुरोघमेव हवे ।
भवणतिकप्पित्थीणं असंजदे णत्थि देवाणू ॥३०५॥
तिरियअपुण्ण वेगे परघादचउक्कपुण्ण साहरणं ।
एइंदिय जसथीणंति थावरजुगल च मिलिदव्वं ॥३०६॥
रिणमंगोवंगतसं संहदिपंचक्खमेवमिह वियले ।
णिय थावरजुगलं साहरणेयक्खमादावं ॥३०७॥
खिवतसदुग्गदिदुस्सरमंगोवंगं सजादिसेवट्टं ।
ओघं सयलेसाहरणिगिविगलादावथावरदुगूणं ॥३०८॥
एव वा पणकाये ण हि साहारणमिणं च आदावं ।
दुसु तद्दुगमुज्जोवं कमेण चरियम्हि आदावं ॥३०९॥
ओघं तसे ण थावरदुगसाहरणेयतावमथ ओघं ।
मणवयण सत्तगे ण हि ताविगिविगल च थावराणुचओ
॥३१०॥
अणुभयवचि वियलजुदा ओघमुराले ण हारदेवाऊ ।
वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ ॥३११॥
तम्मिस्से पुण्णजुदा ण मिरसथीणतियसरविहायदुगं ।
परघादचओ अयदे णादेज्जदुदुब्भगं ण संढिच्छी ॥३१२॥

साणे तेसिं छेदो वामे चत्तारि चोद्दसा साणे ।
चउदालं वोच्छेदो अयदे जोगिम्हि छत्तीसं ॥३१३॥

देवोघं वेगुव्वे ण सुराणू पविखवेज्ज णिरयाऊ ।
णिरयगदिहुंडसंढं दुग्गदि दुब्भगचओ णीच ॥३१४॥

वेगुव्वं वा मिस्सं ण मिस्सं परघादसरविहायदुगं ।
साणे ण हुंडसंढं दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥३१५॥

णिरयगदि आउणीचं ते खित्तयदेवऽणिज्ज थीवेसं ।
छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियसाढथीवेदं ॥३१६॥

दुग्गदि दुस्सरसंहृदि ओरालदुचरिमपंचसंठाणं ।
ते तम्मिस्से सुस्सर परघाददुसत्थगदि हीणा ॥३१७॥

ओधं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुरालदुग मिस्सा ।
उवघादपणविगुव्वदुथीणतिसाठाणसाहृदी णत्थि ॥३१८॥

साणे थीवेदछिदी णिरयदुणिरयाउग ण तियदसयं ।
इगिवण्णं पणवीसं मिच्छादिसु चउसु वोच्छेदो ॥३१९॥

मूलोघं पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं ।
इगिविगल थीसंढं तावा णिरयाउगं णत्थि ॥३२०॥

इत्थिवेदेवि तहा हारदुपुरिसूण मित्थिसंजुत्तं ।
ओघं संढे ण हि सुरहारदुथीपुंसुराउतित्थयरं ॥३२१॥

तित्थयरमाणमायालोहचउक्कूणमोघमिह कोहे ।
अणरहिदे णिगिविगलं तावऽणकोहाणुथावरचउक्कं ॥३२२॥

एवं माणादितिए मदिसुदअण्णाणगे दु सगुणोघं ।
वेभंगेवि ण ताविगिविगलिंदी थावराणुचऊ ॥३२३॥

सण्णाणपंचयादी दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं ।
मणपज्जवपरिहारे णवरि ण संढित्थि [हारदुगं ॥३२४॥

चक्खुम्मि ण साहारणताविगिबितिजाइ थावरं सुहुमं ।
किण्हदुगे सगुणोघ मिच्छे णिरयाणुवोच्छेदो ।।३२५।।
साणे सुराउसुरगदिदेवतिरिक्खणुवोछिदी एवं ।
काग्रोदे ग्रयदगुणे णिरयतिरिक्खाणुवोछेदो ।।३२६।।
तेउतिये सगुणोघं णादाविगिविगलथावरचउक्कं ।
णिरयदुतदाउतिरियाणुगं णराणू ण मिच्छदुगे ।।३२७।।
भव्विदरुवसमवेदगखइये सगुणोघमुवसमे खयिये ।
ण हि सम्ममुवसमे पुण णादितियाणू य हार दुगं ।।३२८।।
मिस्साहारस्सयया खवगा चडमाणपढमपुव्वा ।
पढमुवसमया तमतागुणपणिवण्णा य ण मरंति ।।३२८/१।।
ग्रणसंजोगे मिच्छे मुहुत्तग्रंतोत्ति णत्थि मरणं तु ।
कदरणाज्जिं जाव दु सव्वपरट्ठाण ग्रट्ठपदा ।।३२८/२।।
खाइयसम्मो देसो णर एव जदो तहिं ण तिरियाऊ ।
उज्जोवं तिरियगदी तेसिं ग्रयदम्हि वोच्छेदो ।।३२९।।
सेसणं सगुणधं सण्णिस्सवि णत्थि तावसाहरणं ।
थावरसुहुमिगिविगलं ग्रसण्णिणोवि य ण मणुदुच्चं ।।३३०।।
वेगुव्वछ पणसहदिसंठाण सुगमण सुभगग्राउतियं ।
ग्राहारे सगुणोघं णवरि ण सव्वाणुपुव्वीग्रो ।।३३१।।
कम्मे व ग्रणाहारे पयडीणं उदयमेवमादेसे ।
कहियमिणं बलमाहवचंदच्चियणेमिचदेण ।।३३२।।
तित्थाहारा जुगवं सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिए ।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवदि ।।३३३।।
चत्तारिवि खेत्ताइ ग्राउगबंधेण होइ सम्मत्तं ।
ग्रणुवदमहव्वदाइं ण लहदि देवाउगं मोत्तुं ।।३३४।।
णिरियतिरिक्खसुराउग-सत्ते ण हि देससलयवदखवगा ।
ग्रयदचउक्कं तु ग्रणं ग्रणियट्टीकरण चरिमम्हि ।।३३५।।

जुगवं संजोगित्ता पुणोवि अणियट्टिकरणवहुभागं ।
वोलिय कमसो मिच्छं मिस्स सम्मं खवेदि कमे ॥३३६॥
सोलट्ठेक्किगिछक्कं चदुसेक्कं बादरे अदो एक्कं ।
खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरुवत्तते ॥३३७॥
णिरियतिरिक्खदु वियलं-थीणतिगुज्जोवतावएइंदी ।
साहरणसुहुमथावर सोलं मज्झिमकसायट्ठं ॥३३८॥
संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण माय च ।
थूले सुहुमे लोहो उदयं वा होदि खीणम्मि ॥३३९॥
देहादी फस्संता थिरसुहसरसुर विहाय दुग दुभगं ।
णिमिणाजसऽणादेज्जं पत्तेया पुण्ण अगुरुचऊ ॥३४०॥
अणुदयतदियं णीचम-जोगिदुचरिमम्मि सत्तवोच्छिण्णा ।
उदयगबार णराणू तेरस चरिमम्हि वोच्छिण्णा ॥३४१॥
णभतिगिणभइगि दोद्दो दस दससोलट्ठगादि हीणेसु ।
सत्ता हवंति एवं असहायपरक्कमुद्दिट्ठं ॥३४२॥
खवणं वा उवसमणे णवरि य संजलणपुरिसमज्झम्हि ।
मज्झिमदोद्दो कोहादीया कमसोवसता हु ॥३४३॥
णिरयादिसु पयडिट्ठिदिअणुभागपदेसभेदभिण्णस्स ।
सत्तस्सय सामित्तं णेदव्वमिदो जहाजोग्गं ॥३४४॥
तिरिए ण तित्थसत्तं णिरयादिसु तिय चउक्क चउ तिण्णि ।
आऊणि होंति सत्ता सेसं ओघादु जाणेज्जो ॥३४५॥
ओघं वा णेरइये ण सुराऊ तित्थमत्थि तदियोत्ति ।
छट्ठित्ति मणुस्साऊ तिरिए ओघं ण तित्थयरं ॥३४६॥
एव पंचतिरिक्खे पुण्णिदरे णत्थि णिरयदेवाऊ ।
ओघं मणुसतियेसुवि अपुण्णगे पुण अपुण्णेव ॥३४७॥
ओघं देवे ण हि णिरयाऊ सारोत्ति होदि तिरियाऊ ।
भवणतियकप्पवासियइत्थीसु ण तित्थयरसत्तं ॥३४८॥

ओघं पंचक्खतसे सेसिंदियकायगे अपुण्णं वा ।
तेउदुगे ण णराऊ सव्वत्थुव्वेल्लणावि हवे ॥३४६॥

हारदु सम्मं मिस्सं सुरदुग णारय चउक्कमणुकमसो ।
उच्चागोदं मणुदुगमुव्वेल्लिज्जंति जीवेहि ॥३५०॥

चदुगदिमिच्छे चउरो इगिविगले छप्पि तिण्णि तेउदुगे ।
सिय अत्थि णत्थि सत्तं सपदे उप्पण्णठाणेवि ॥३५१॥

पुण्णेकारसजोगे साहारयमिस्सगेवि सगुणोघं ।
वेगुव्वियमिस्सेवि य णवरि ण भाणुसतिरिक्खाऊ ॥३५२॥

ओरालमिस्स जोगे ओघं सुरणिरयआउगंणत्थि ।
तम्मिस्सवामगे ण हि तित्थं कम्मेवि सगुणोघं ॥३५३॥

वेदादाहारोत्ति य सगुणोघं णवरि ं थीखवधे ।
किण्हदुगसुहतिलेस्सियवामेवि ण तित्थयरसत्तं ॥३५४॥

अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिस्साणं ।
आहारचउक्कस्सवि असण्णिजीवे ण तित्थयरं ॥३५५॥

कम्मेवाणाहारे पयडीणं सत्तमेवमादेसे ।
कहियमिणं बलमाहव चंदच्चियणेमिचदेण ॥३५६॥

सो मे तिहुवणमहियो सिद्धो बुद्धो णिरजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणलाहं बुहजणपरिपत्थणं परमसुद्धं ॥३५७॥

णमिऊण वड्ढमाणं कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं ।
पयडीण सत्तठाणं ओघे भंगे समं वोच्छं ॥३५८॥

आउगबंधाबंधणभेदमकाऊण वण्णणं पढमं ।
भेदेण य भंगसमं परूवण होदि विदियम्हि ॥३५६॥

सव्व तिगेग सव्वं चेग छसु दोण्णि चउसु छद्दस य दुगे ।
छस्सगदालं दोसु तिसट्ठी परिहीण पडि सत्तं जाणे ॥३६०॥

घाई तियउज्जोव थावरवियलं च ताव एइंदी ।
णिरय-तिरिक्ख दु सुहुमं साहरणे होइ तेसट्ठी ।।३६०/१।।
सासणमिस्से देपे सजददुग सामगेसु णत्थी य ।
तित्थाहारं तित्थ णिरयाऊ णिरयतिरिय आउअणं ।।३६१।।
विगुणणव चारि अट्ठं मिच्छतिये अयदचउसु चालीसं ।
तिय उवसमगे संते चउवीसा होंति पत्तेयं ।।३६२।।
चउछक्कदि चउअट्ठं चउछक्क य होंति सत्तठाणाणि ।
आउबंधाबधे अजोगि अंतेतदो भंगा ।।३६३।।
तित्थसमे णिथिमिच्छेवद्धाउसि माणुसोगदि एग ।
मणुवणिरयाऊ भंगुघज्जत्ते भज्जमाण णिरयाऊ ।।३६३/१।।
पण्णासबार छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु दालं ।
अडवीसा बासट्ठी अडचउवीसा य अट्ठ चउ अट्ठ ।।३६४।।
दुतिछस्सत्तट्ठणवेक्करसं सत्तरसमूणवीसमिगिवीसं ।
हीणा सव्वे सत्ता मिच्छे बद्धाउगिदरसेगूण ।।३६५।।
तिरियाउगदेवाउगमण्णदराउगदुग तहा तित्थं ।
देवतिरियाउसहिया हारचउक्कं तु छच्चेदे ।।३६६।।
आउदुगहारतित्थ सम्म मिस्सा च तह य देवदुगं ।
णारयछक्क च तहा णराउउच्चं च मणुवदुगं ।।३६७।।
उव्वेल्लिददेवदुगे विदियपदे चारि भंगया एवं ।
सपदे पढमो विदियं सो चेव णरेसु उप्पण्णो ।।३६८।।
वेगुव्वअट्ठरहिदे पंचिंदियतिरिय जादि सुवचण्णे ।
सुरछक्कबंधे तदियो णरेसु तब्बंधगे तुरियो ।।३६९।।
णारकछक्कुव्वेल्ले आउगबंधुज्झिदे दुभंगा हु ।
इगिविगलेसिगिभंगो तस्मि णरे विदियमुप्पण्णे ।।३७०।।
णिरियाऊ तिरियाऊ णिरिय-णराऊ तिरिय-मणुवायु ।
तेरंचिय-देवाऊ माणुस-देवाउ एगेगं ।।३७०/१।।

ओघं पंचक्खतसे सेसिंदियकायगे अपुण्णं वा ।
तेउदुगे ण णराऊ सव्वत्थुव्वेल्लणावि हवे ॥३४९॥

हारदु सम्मं मिस्सं सुरदुग णारय चउक्कमणुकमसो ।
उच्चागोदं मणुदुगमुव्वेल्लिज्जंति जीवेहि ॥३५०॥

चदुगदिमिच्छे चउरो इगिविगले छप्पि तिण्णि तेउदुगे ।
सिय अत्थि णत्थि सत्तं सपदे उप्पण्णठाणेवि ॥३५१॥

पुण्णेकारसजोगे साहारयमिस्सगेवि सगुणोघं ।
वेगुव्वियमिस्सेवि य णवरि ण माणुसतिरिक्खाऊ ॥३५२॥

ओरालमिस्स जोगे ओघं सुरणिरयआउगं णत्थि ।
तम्मिस्सवामगे ण हि तित्थं कम्मेवि सगुणोघं ॥३५३॥

वेदादाहारोत्ति य सगुणोघं णवरि संढथीखवघे ।
किण्हदुगसुहतिलेस्सियवामेवि ण तित्थयरसत्तं ॥३५४॥

अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिसाणं ।
आहारचउक्कस्सवि असण्णिजीवे ण तित्थयरं ॥३५५॥

कम्मेवाणाहारे पयडीणं सत्तमेवमादेसे ।
कहियमिणं बलमाहव चंदच्चियणेमिचंदेण ॥३५६॥

सो मे तिहुवणमहियो सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणलाह बुहजणपरिपत्थणं परमसुद्धं ॥३५७॥

णमिऊण वड्ढमाणं कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं ।
पयडीण सत्तठाणं ओघे भंगे समं वोच्छं ॥३५८॥

आउगबंधाबंधणभेदमकाऊण वण्णणं पढमं ।
भेदेण य भंगसमं परूवण होदि विदियम्हि ॥३५९॥

सव्वं तिगेग सव्वं चेगं छसु दोण्णि चउसु छद्दस य दुगे ।
छस्सगदाल दोसु तिसट्ठी परिहीण पडि सत्त जाणे ॥३६०॥

घाई तियउज्जोव थावरवियल च ताव एइंदी ।
णिरय–तिरिक्ख दु सुहुमं साहरणे होइ तेसट्ठी ॥३६०/१॥
सासणमिस्से देवे सजददुग सामगेसु णत्थी य ।
तित्थाहार तित्थ णिरयाऊ णिरयतिरिय आउअणं ॥३६१॥
विगुणणव चारि अट्ठं मिच्छतिये अयदचउसु चालीसं ।
तिय उवसमगे संते चउवीसा होंति पत्तेयं ॥३६२॥
चउछक्कदि चउअट्ठं चउछक्क य होंति सत्तठाणाणि ।
आउबंधाबंधे अजोगि अंतेतदो भंगा ॥३६३॥
तित्थसमे णिथिमिच्छेवद्धाउसि माणुसीगदि एग ।
मणुवणिरयाऊ भंगुघज्जत्ते भज्जमाण णिरयाऊ ॥३६३/१॥
पण्णासबार छक्कदि वीससयं अट्ठदाल दुसु दालं ।
अडवीसा बासट्ठी अडचउवीसा य अट्ठ चउ अट्ठ ॥३६४॥
दुतिछस्सत्तट्ठणवेक्करसं सत्तरसमूणवीसमिगिवीसं ।
हीणा सव्वे सत्ता मिच्छे बद्धाउगिदरमेगूणं ॥३६५॥
तिरियाउगदेवाउगमण्णदराउगदुगं तहा तित्थं ।
देवतिरियाउसहिया हारचउक्कं तु छच्चेदे ॥३६६॥
आउदुगहारतित्थं सम्मं मिस्सं च तह य देवदुगं ।
णारयछक्कं च तहा णराउउच्चं च मणुवदुगं ॥३६७॥
उव्वेल्लिददेवदुगे विदियपदे चारि भंगया एवं ।
सपदे पढमो विदियं सो चेव णरेसु उप्पण्णो ॥३६८॥
वेगुव्वअट्ठरहिदे पंचिंदियतिरिय जादि सुववण्णे ।
सुरछब्बंधे तदियो णरेसु तब्बंधणे तुरियो ॥३६९॥
णारकछक्कुव्वेल्ले आउगबधुज्झिदे दुभंगा हु ।
इगिविगलेसिगिभगो तम्मि णरे विदियमुप्पण्णे ॥३७०॥
णिरियाऊ तिरियाऊ णिरिय-णराऊ तिरिय-मणुवायु ।
तेरंचिय-देवाऊ माणुस-देवाउ एगेगं ॥३७०/१॥

विदिये तुरिये पणगे, छट्ठे पंचेव सेसगे एक्कं ।
विगचउपणछस्सत्तयठाणे चत्तारि अट्ठगे दोण्णि ।।३७१।।

सत्ततिगं आसाणे, मिस्से तिगसत्तसत्तएयारा ।
परिहीण सव्वसत्त, बद्धस्सियतरस्स एगूणं ।।३७२।।

तित्थाहारचउक्कं, अण्णदराउगदुगं च सत्तोदे ।
हारचउक्कं वज्जिय तिण्णि य केइं समुद्दिट्ठं ।।३७३।।

तित्थण्णदराउदुगं, तिण्णिवि अणसहिय तह य सत्ता च ।
हार चउक्के सहिया, ते चेव य होंति एयारा ।।३७४।।

साणे पण इगि भगा, बद्धस्सियरस्स चारि दो चेव ।
मिस्से पणपण भंगा, बद्धस्सियरस्स चउ चऊणेया ।।३७५।।

बंधदेवाउगुवसमसद्दिट्ठी बंधिऊण आहारं ।
सो चेव सासणे जादो तरिसं पुण बंध एक्कोदु ।।३७५/१।।

तस्सेव य बंधाउगठाणे भंगा दु भुज्जमाणम्मि ।
मणुवाउगम्मि एक्को देवेसु ववणगे विदियो ।।३७५/२।।

दुग छक्क सत्त अट्ठं, णवरहियं तह य चउपडिं किच्चा ।
णभमिगि चउ पण हीणं, बद्धस्सियरस्स एगूणं ।।३७६।।

तित्थाहारे सहियं, तित्थूणं अह य हारचउहीणं ।
तित्थाहारचउक्केणूणं इति चउपडिट्ठाण ।३७७।।

अण्णदरआउसहिया, तिरियाऊ ते च तह य अणसहिया ।
मिच्छं मिस्सं सम्मं, कमेण खविदे हवे ठाणा ।।३७८।।

आदिमपंचट्ठाणे, दुगदुगभंगा हवंति बद्धस्स ।
इयरस्सवि णादव्वा, तिगतिगइगि तिण्णितिण्णेव ।।३७९।।

मणुवणिरयाउगे णरसुर आऊ णिराणबधम्मि ।
तिरियाऊणा तिगिदरे मिच्छव्वणम्मि भुज्जमणुसाऊ
।।३७९/१।।

बिदियस्सवि पणठाणे पण पण तिग तिण्ण चारि वद्धस्स ।
इयरस्स होंति णेया, चउचइगिचारि चत्तारि ॥३८०॥

पुव्वुत्तपणपणाउग, भंगा बंधस्स भुज्जमणुसाऊ ॥
अण्णतियाऊसहिया, तिगतिग चउणिरयतिरियाऊण
॥३८०/१॥

आदिल्लदससु सरिसा, भंगेण य तिदियदसयठाणाणि ।
बिदियस्स चउत्थस्स य, दसठाणाणी य समा होंति ॥३८१॥

देसतियेसुवि एवं, भंगा एक्केक्क देसगस्स पुणो ।
पडिरासि बिदियतुरियस्सादी बिदियम्मि दो भंगा ॥३८२॥

दुगचक्कतिण्णिवग्गेणूणापुव्वस्स चउपडि किच्चा ।
णभमिगिचउपणहीणं बद्धस्सियरस्स एगूणं ॥३८३॥

णिरियतिरियाउ दोण्णिवि पढमकसायाणि दंसणतियाणि ।
हीणा एदे णेया भंगे एक्केक्कगा होंति ॥३८४॥

एवं तिसु उवसमगे, खवगापुव्वम्मि दसहिं परिहीणं ।
सव्वं चउपडि किच्चा, णभमेक्क चारि पण हीणं ॥३८५॥

एदे सत्तट्ठाणा, अणियट्टिस्सवि पुणोवि खविदेवि ।
सोलस अट्ठेक्केक्कं, छक्केक्कं एक्कमेक्क तहा ॥३८६॥

णिरयदुगं तिरियदुगं, विगतिगचउक्खजादि थीणतियं ।
उज्जोवं आतावेगि, साहारण सुहुम थावरयं ॥३८६/१॥

मज्झट्ठकसाय संढथीवेदं हस्सपमुहछक्कसाया ।
पुरिसो कोहो माणो, अणियट्टी भागहीण पयडिओ ॥३८६/२॥

भंगा एक्केक्का पुण, णउंसयक्खविदचउसु ठाणेसु ।
बिदिय तुरियेसु दो दो, भंगा तित्थयरहीणेसु ॥३८७॥

थी पुरिसोदय चडिदे, पुव्वं संढ खवेदि थी अत्थि ।
संढस्सुदये पुव्वं, थीखविद संढमत्थित्ति ॥३८८॥

अणियट्टि चरिमठाणा, चत्तारिवि एक्कहीण सुहुमस्स ।
ते इगिदोण्णि विहीणं, खीणस्सवि होंति ठाणाणि ।।३८९।।

ते चोद्दसपरिहीणा, जोगिस्स अजोगि चरिमगेवि पुणो ।
बाबत्तरिमडसट्ठिं, दुसु दुसु हीणेसु दुगदुगा भङ्गा ।।३९०।।

विदियं तेरस बारसठाणं पुणरूत्तमिदि विहायपुणो ।
दुसु सादेदरपयडी, परिगहणादो दुगदुगा भंगा ।।३९०/१।।

णत्थि अणं उवसमगे, खवगापुव्वं खवित्तु अट्ठा य ।
पच्छा सोलादीणं, खवणं इदि केइं णिद्दिट्ठं ।।३९१।।

अणियट्टिगुणट्ठाणे मायारहिदं च ठाणमिच्छांति ।
ठाणा भंगपमाणा, केई एवं परूवेंति ।।३९२।।

अट्टारह चउ अट्ठं, मिच्छतिये उवरि चाल चउठाणे ।
तिसु उवसमगे संते, सोलस सोलस हवे ठाणा ।।३९३।।

पण्णोंकारं छक्कदि, वीससयं अट्ठढाल दुसु तालं ।
विसडतिण्ण वीसं, सोलट्ठ य चारि अट्ठेव ।।३९४।।

एवं सत्तट्ठाणं, सवित्थरं वण्णियं मए सम्मं ।
जो पढइ सुणइ भावइ, सो पावइ णिव्वुदि सोक्खं ।।३९५।।

वरइंदणंदिगुरूणो, पासे सोऊण सयलसिद्धंतं ।
सिरिकणयणंदि गुरूणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं ।।३९६।।

जह चक्केण य चक्की, छक्खंडं साहियं अविग्घेण ।
तह मइचक्केण मया, छक्खंड साहियं सम्म ।।३९७।।

असहायजिणवरिंदे, असहायपरक्कमे महावीरे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं, तियूलियं सुणह एयमणा ।।३९८।।

किं बंधो उदयादो, पुव्वं पच्छा समं विणस्सदि सो ।
सपरोभयोदयो वा, णिरंतरो सांतरो उभयो ।।३९९।।

देवचउक्काहारदुगज्जस देवाउगाणं सो पच्छा ।
मिच्छात्तादावाणं, णराणुथावरचउक्काणं ॥४००॥
पण्णरकसायभयदुगहस्सदुचउजाइपुरिसवेदाणं ।
सममेक्कत्तीसाणं, सेसिगिसोदाण पुव्व तु ॥४०१॥
सुरणिरयाऊ तित्थं, वेगुव्विय छक्कहारमिदि जेसिं ।
परउदयेण य बधो, मिच्छ सुहुमस्स घादीओ ॥४०२॥
तेजदुगं वण्णचऊ, थिरसुहजुगल गुरूणिमिणधुवउदया ।
सोदयबंधा सेसा, बासीदा उभयबंधाओ ॥४०३॥
सत्तेताल धुवावि य, तित्थाहारउगा णिरतरगा ।
णिरयदुजाइचउक्कं, संहदिसंठाणपणपणग ॥४०४॥
दुग्गमणादावदुग, थावरदसग असादसंढित्थि ।
अरदीसोग चेदे, सातरगा होंति चोत्तीसा ॥४०५॥
सुरणरतिरियोरालिय वेगुव्वियदुगपसत्थगदि वज्जं ।
परघाददुसमचउर, पंचिदिय तसदसं सादं ॥४०६॥
हस्सरदिपुरिसगोददु, सप्पडिवक्खम्मि सातरा होंति ।
णट्ठे पुण पडिवक्खे णिरतरा होंति बत्तीसा ॥४०७॥
जत्थ वरणेमिचदो, महणेण विणा सुणिम्मलो जादो ।
सो अभयणदि णिम्मलसुओवही हरउ पावमलं ॥४०८॥
उव्वेल्लणविज्झादो, अधापवत्तो गुणो य सव्वो य ।
संकमदि जेहिं कम्म, परिणामवसेण जीवाणं ॥४०९॥
बधे संकामिज्जदि, णोबधे णत्थि मूलपयडीणं ।
दंसणचरित्तमोहे, आउचउक्के ण संकमणं ॥४१०॥
सम्मं मिच्छं मिस्सं, सगुणट्ठाणम्मि णेव संकमदि ।
सासणमिस्से णियमा, दसणतियसंकमो णत्थि ॥४११॥

मिच्छे सम्मिस्साणं, अधापवत्तो मुहुत्तअंतोत्ति ।
उव्वेलणं तु तत्तो, दुचरिमकंडोत्ति णियमेण ॥४१२॥

उव्वेलणपयडीणं गुणं तु चरिमम्हि कंडये णियमा ।
चरिमे फालिम्मि पुणो सव्वं च य होदि संकमणं ॥४१३॥

तिरियदुजाइदचउक्कं, आदावुज्जोवथावरं सुहुमं ।
साहारणं च एदे, तिरियेयारं मुणेयव्वा ॥४१४॥

आहारदुगं सम्मं, मिस्सं देवदुगणारयचउक्कं ।
उच्चं मणुदुगमेदे, तेरस उव्वेल्लणा पयडी ॥४१५॥

बंधे अधापवत्तो, विज्झादं सत्तमोत्ति हु अबंधे ।
एत्तो गुणो अबंधे–पयडीणं अप्पसत्थाणं ॥४१६॥

तिरियेयारुव्वेल्लणपयडी संजलण लोहसम्ममिस्सूणा ।
मोहा थीणतिगं च य, बावण्णे सव्वसंकमणं ॥४१७॥

उदुदालतीससत्तयवीसे एक्केक्कबारतिचउक्के ।
इगिचदुदुगतिगतिगचदुपण दुग दुगतिण्णि संकमणा ॥४१८॥

सुहुमस्स बंधघादी, सादं संजलणलोहपंचिदी ।
तेजदुसमवण्णचऊ, अगुरुगपरघादउस्सासं ॥४१९॥

सत्थगदी तसदसयं, णिमिणुगुदाले अधापवत्तो दु ।
थीणतिबारकसाया संढित्थी अरइ सोगो य ॥४२०॥

तिरियेयार तीसे, उव्वेलणहीणचारि संकमणा ।
णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं च उवघादे ॥४२१॥

सत्तण्हं गुणसंकममधापवत्तो य दुक्खमसुहगदी ।
संहदि संठाणदसं णीचापुण्णथिरछक्कं च ॥४२२॥

वीसण्हं विज्झादं, अधापवत्तो गुणो य मिच्छत्ते ।
विज्झादगुणे सव्वं, सम्मे विज्झादपरिहीणा ॥४२३॥

सम्मविहीणुव्वोले पंचेव य तत्थ होंति संकमणा ।
संजलणतये पुरिसे अधापवत्तो य सव्वो य ।।४२४।।

ओरालदुगे वज्जे तित्थे विज्झादधापवत्तो य ।
हस्सरदिभयजुगुच्छे अधापवत्तो गुणो सव्वो ।।४२५।।

सम्मत्तूणुव्वेलणथीणतितीसं च दुक्खवीस च ।
वज्जोरालदुतित्थं मिच्छं विज्झादसत्तट्ठी ।।४२६।।

मिच्छूणिगिवीससयं, अधापवत्तस्स होंति पयडीओ ।
सुहुमस्स बंधघादिप्पहुदी उगुदालुरालदुगतित्थं ।।४२७।।

वज्जं पुंसंजलणति ऊणा गुणसंकमस्स पयडीओ ।
पणहत्तरिसंखाओ पयडीणियमं विजाणाहि ।।४२८।।

ठिदि अणुभागाणं पुण, बंधो सुहुमोत्ति होदि णियमेण ।
बंधपदेसाणं पुण, संकमणं सुहुमरागोत्ति ।।४२९।।

सव्वस्सेक्कं रूवं, असंखभागो दु पल्लछेदाणं ।
गुणसंकमो दु हारो, ओकट्टुक्कट्टण तत्तो ।।४३०।।

हारं अधापवत्तं, तत्तो जोगम्हि जो दु णगागुरो ।
णाणागुणहाणिसला, असंखगुणिदक्कमा होंति ।।४३१।।

तत्तो पल्लसलायच्छेदहिया पल्लछेदणा होंति ।
पल्लस्स पढममूलं, गुणहाणीवि य असंखगुणिदकमा ।।४३२।।

अण्णोणब्भत्थं पुण, पल्लमसंखेज्जरूवगुणिदकमा ।
संखेज्जरूवगुणिदं, कम्मुक्कस्सट्ठिदी होदि ।।४३३।।

अंगुलअसंखभागं, विज्झादुव्वेल्लणं असखगुणं ।
अणुभागस्स य णाणागुणहाणिसला अणंताओ ।।४३४।।

गुणहाणि अणतगुण, तस्स दिवड्ढ णिसेयहारो य ।
अहियकमाणण्णोण्णब्भत्थो रासी अणतगुणो ।।४३५।।

जस्स य पायपसायेणणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो ।
वीरिंदणंदिवच्छो, णमामि तं अभयणंदि गुरुं ॥४३६॥

बंधुक्कट्टण करणं, संकममोकट्टुदीरणा सत्तं ।
उदयुवसामणिधत्ती, णिकाचणा होदि पडिपयडी ॥४३७॥

कम्माणं संबंधो, बंधो उक्कट्टणं हवे बड्ढी ।
संकमणमणत्थगदी, हाणी ओकट्टणं णाम ॥४३८॥

अण्णत्थठियस्सुदये, संथुहणमुदीरणा हु अत्थित्तं ।
सत्ता सकालपत्तं, उदओ होदित्ति णिद्दिट्ठो ॥४३९॥

उदये संकममुदये, चउसुवि दादुं कमेण णो सक्कं ।
उवसंतं च णिधत्तिं णिकाचिदं होदि जं कम्मं ॥४४०॥

संकमणाकरणूणा, णवकरणा होंति सव्वआऊणं ।
सेसाणं दसकरणा, अपुव्वकरणोत्ति दसकरणा ॥४४१॥

आदिमसत्तेव तदो, सुहुमकसाओत्ति संकमेण विणा ।
छच्च सजोगित्ति तदो, सत्तं उदयं अजोगित्ति ॥४४२॥

णवरि विसेसं जाणे, संकममवि होदि संतमोहम्मि ।
मिच्छस्स य मिस्सस्स य सेसाणं णत्थि संकमणं ॥४४३॥

बंधुक्कट्टणकरणं, सगसगबंधोत्ति होदि णियमेण ।
संकमणं करणं पुण, सगसगजादीण बंधोत्ति ॥४४४॥

ओक्कट्टणकरणं पुण, अजोगिसत्ताण जोगिचरिमोत्ति ।
खीण सुहुमंताणं, खयदेसं सावलीयसमयोत्ति ॥४४५॥

उवसंतोत्ति सुराऊ, मिच्छत्तिय खवगसोलसाणं च ।
खयदेसोत्ति य खवगे, अट्ठकसायादि वीसाणं ॥४४६॥

मिच्छत्तिय सोलसाणं, उवसमसेढिम्मि संतमोहोत्ति ।
अट्ठकसायादीणं, उवसमियट्ठाणगोत्ति हवे ॥४४७॥

पढमकसायाणं च विसाजोजक वोत्ति अयददेसोत्ति ।
णिरयतिरियाउगाणमुदीरणसत्तोदया सिद्धा ॥४४८॥

मिच्छस्स य मिच्छोत्ति य उदीरणा उवसमाहि मुहियस्स ।
समयाहियावलित्ति य सुहुमे सुहुमस्स लोहस्स ॥४४९॥

उदये संकममुदये, चउसुवि दादु कमेण णो सक्क ।
उवसंतं च णिधत्ति, णिकाचिदं तं अपुव्वोत्ति ॥४५०॥

णमिऊण णेमिणाहं, सच्चजुहिट्ठिरणमंसियघिजुगं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ठाणसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥४५१॥

छसु सगविहमट्ठविहं, कम्मं बंधंति तिसु य सत्तविहं ।
छव्विहमेकट्ठाणे, तिसु एक्कमबंधगो एक्को ॥४५२॥

चत्तारि तिण्णि तिय चउ, पयडिट्ठाणाणि मूलपयडीण ।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि कमे होंति ॥४५३॥

अट्ठुदओ सुहुमोत्ति य, मोहेण विणा हु संतखीणेसु ।
घादिदराण चउक्कस्सुदओ केवलिदुगे णियमा ॥४५४॥

घादीणं छदुमट्ठा उदीरगा रागिणो हि मोहस्स ।
तदियाऊण पमत्ता जोगंता होंति दोण्हंपि ॥४५५॥

मिस्सूण पमत्ते, आउस्सद्धा हु सुहुमखीणाणं ।
आवलिसिट्ठे कमसो, सग पण दो चेवुदीरणा होंति ॥४५६॥

संतोत्ति अट्ठ सत्ता, खीणे सत्तेव होंति सत्ताणि ।
जोगिम्मि अजोगिम्मि य, चत्तारि हवंति सत्ताणि ॥४५७॥

तिण्णि दस अट्ठ ठाणाणि दसणावरणमोहणामाणं ।
एत्थेव य भुजगारा, सेससेयं हवे ठाणं ॥४५८॥

णव छक्क चदुक्कं च य, विदियावरणस्स बंधठाणाणि ।
भुजगारप्पदराणि य, अवट्ठिदाणिवि य जाणाहि ॥४५९॥

णव सासणोत्ति बंधो छच्चेव अपुव्वपढमभागोत्ति ।
चत्तारि होंति तत्तो सुहुमकसायस्स चरिमोत्ति ।।४६०।।

खीणोत्ति चारि उदया पंचसु णिद्दासु दोसु णिद्दासु ।
एक्के उदयं पत्ते खीणदुचरिमोत्ति पंचुदया ।।४६१।।

मिच्छादुवसंतोत्ति य अणियट्टीखवगपढम भागोत्ति ।
णवसत्ता खीणस्स दुचरिमोत्ति य छच्चदूचरिमे ।।४६२।।

बावीसमेक्कवीसं सत्तारस तेरसेव णव पंच ।
चदुतियदुगं च एक्कं बंधट्ठाणाणि मोहस्स ।।४६३।।

बावीसमेक्कवीसं सत्तर सत्तार तेर तिसु णवयं ।
थूले पणचदुतियदुगमेक्क मोहस्स ठाणाणि ।।४६४।।

उगुवीसं अट्ठारस चोद्दस चोद्दस च दस य तिसु छक्कं ।
थूले चदुतिदुगेक्कं मोहस्स य होंति धुवबंधा ।।४६५।।

सगसंभवधुवबंधे वेदक्के दोजुगाणमेक्के य ।
ठाणे वेद जुगाणं भंगहदे होंति तब्भंगा ।।४६६।।

छब्बावीसे चदु इगिवीसे दो दो हवंति छट्ठोत्ति ।
एक्केक्कमदो भंगो बंधट्ठाणेसु मोहस्स ।।४६७।।

दसवीसं एक्कारस तेत्तीसं मोहबंधठाणाणि ।
भुजगारप्पदराणि य ट्ठिदाणिवि य सामण्णे ।।४६८।।

अप्पं बंधंतो बहुबंधे बहुगादु अप्पबधेवि ।
उभयत्थ समे बध भुजगारादी कमे होंति ।।४६९।।

सामण्णअवत्तव्वो ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे ।
एक्कं च होदि एत्थवि दो चेव अवट्ठिदा भंगा ।।४७०।।

सत्तावीसहियसयं पणदालं पंचहत्तरिहियसय ।
भुजगारप्पदराणि य अवट्ठिदाणिवि विसेसेण ।।४७१।।

णभ चउवीसं बारस वीसं चउरट्ठवीस दो दो य ।
थूले पणगादीणं तियतिय मिच्छादि भुजगारा ॥४७२॥

अप्पदरा पुण तीस णभ णभ छद्दोण्णि दोण्णि णभ एक्कं ।
थूले पणगादीण एक्केक्कं अंतिमे सुण्णं ॥४७३॥

भेदेण अवत्तव्वा ओदरमाणम्मि एक्कयं मरणे ।
दो चेव होंति एत्थवि तिण्णेव अवट्ठिदा भंगा ॥४७४॥

दस णव अट्ठ य सत्तय छप्पण चत्तारि दोण्णि एक्कं च ।
उदयट्ठाणा मोहे णव चेव य होंति णियमेण ॥४७५॥

मिच्छं मिस्सं सगुणे वेदगसम्मेव होदि सम्मत्तं ।
एक्का कसायजादी वेददुजुगलाणमेक्कं च ॥४७६॥

भयसहियं च जुगुञ्छासहियं दोहिंवि जुदं च ठाणाणि ।
मिच्छादिअपुव्वंते चत्तारि हवंति णियमेण ॥४७७॥

अणसंजोजिदसम्मे मिच्छं पत्ते ण आवलित्तिअणं ।
उवसमखइये सम्मं ण हि तत्थवि चारि ठाणाणि ॥४७८॥

पुव्विल्लेसुवि मिलिदे अड चऊ चत्तारि चदुसु अट्ठेव ।
चत्तारि दोण्णि एक्कं ठाणा मिच्छादिसुहुमंते ॥४७९॥

दसणवणवादि चऊतियतिट्ठाण णवट्ठसगसगादि चऊ ।
ठाणा छादि तिय च य चदुवीसगदा अपुव्वोत्ति ॥४८०॥

एक्क य छक्केयारं एयारेयारसेव णव तिण्णि ।
एदे चऊवीसगदा चदुवीसेयार दुगठाणे ॥४८१॥

उदयट्ठाणं दोण्हं पणबंधे होदि दोण्हमेक्कस्स ।
चदुविहबन्धट्ठाणे सेसेसेयं हवे ठाणं ॥४८२॥

अणियट्टिकरणपढमा संढित्थीणं च सरिस उदयद्धा ।
तत्तो मुहुत्तअंते कमसो पुरिसादिउदयद्धा ॥४८३॥

पुरिसोदएण चडिदे बंधुदयाणं च दुगवदुच्छित्ती ।
सेसोदयेण चडिदे उदयदुचरिमम्हि पुरिसबंधछिदी ॥४८४॥

पणबंधगम्मि बारस भंगा दो चेव उदयपयडीओ ।
दोउदये चदुबधे बारेव हवंति भंगा हु ॥४८५॥

कोहस्स य माणस्स य मायालोहाणियट्ठिभागम्हि ।
चदुतिदुगेक्कभगा सुहुमे एक्को हवे भगो ॥४८६॥

बारससयतेसीदीठाणवियप्पेहि मोहिदा जीवा ।
पणसीदिसदसगेहि पयडिवियप्पेहि ओघम्मि ॥४८७॥

एक्क य छक्केयारं दससगचदुरेक्कय अपुणरुत्ता ।
एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥४८८॥

णवसयसत्तत्तरिहिं ठाणवियप्पेहिं मोहिदा जीवा ।
इगिदालूणत्तरिसयपयडिवियप्पेहि णायव्वा ॥४८९॥

उदयट्ठाणं पयडिं सगसगउवजोगजोगआदीहि ।
गुणयित्ता मेलविदे पदसंखा पयडिसखा य ॥४९०॥

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्ते जिणे य सिद्धे य ।
पण छस्सत्त दुगं च य उवजोगा होंति दो चेव ॥४९१॥

णवणउदिसगसयाहियसत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु उवजोगे मोहणीयस्स ॥४९३॥

एक्कावण्णसहस्सं तेसीदिसमण्णिय वियाणाहि ।
पयडीणं परिमाण उवजोगे मोहणीयस्स ॥४९३॥

तिसु तेरं दस मिस्से णव सत्तसु छट्ठयम्मि एक्कारा ।
जोगिम्मि सत्त जोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं ॥४९४॥

मिच्छे सासण अयदे पमत्तविरदे अपुण्णजोगगदं ।
पुण्णगदं च य सेसे पुण्णगदे मेलिदं होदि ॥४९५॥

सासणअयदपमत्ते वेगुव्वियमिस्स तं च कम्मयियं ।
ओरालमिस्स हारे अडसोलडवग्ग अट्ठवीससयं ॥४९६॥

णत्थि णउंसयवेदो इत्थीवेदो णउंसइत्थिदुगे ।
पुव्वुत्तपुण्णजोगगचदुसुट्ठाणेसु जाणेज्जो ॥४९७॥

तेवण्णणवसयाहियबारसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु जोगं पडि मोहणीयस्स ॥४९८॥

बिदिये बिगिपणगयदे खदुणवएक्कं खअट्ठचउरो य ।
छट्ठे चउसुण्णसगं पयडिवियप्पा अपुण्णम्हि ॥४९९॥

पणदालछस्सयाहिय अट्ठासीदी सहस्समुदयस्स ।
पयडीण परिसखा जोगं पडि मोहणीयस्स ॥५००॥

तेरससयाणि सत्तरिसत्तेव य मेलिदे हवंतित्ति ।
ठाणवियप्पे जाणसु सजमलबेण मोहस्स ॥५०१॥

तेवण्णतिसदसहियं सत्तसहस्सप्पमाणमुदयस्स ।
पयडिवियप्पे जाणसु सजमलबेण मोहस्स ॥५०२॥

मिच्छचउक्के छक्कं देसतिये तिण्णि होंति सुहलेस्सा ।
जोगित्ति सुक्कलेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु ॥५०३॥

पंचसहस्सा बेसयसत्ताणउदी हवंति उदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु लेस्सं पडि मोहणीयस्स ॥५०४॥

अट्ठत्तीससहस्सा बेण्णिसया होंति सत्ततीसा य ।
पयडीणं परिमाणं लेस्सा पडि मोहणीयस्स ॥५०५॥

अट्ठत्तरीहिं सहिया तेरसयसया हवंति उदयस्स ।
ठाणवियप्पे जाणसु सम्मत्तगुणेण मोहस्स ॥५०६॥

अट्ठेव सहस्साइं छव्वीसा तह य होंति णादव्वा ।
पयडीणं परिमाणं सम्मत्तगुणेण मोहस्स ॥५०७॥

अट्ठुय सत्त यछक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि ।
तेरस बारेयारं पणादि एगूणयं सत्तं ।।५०८।।

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्टीए ।
तिण्णि य थूलेयारं सुहुमे चत्तारि तिण्णि उवसंते ।।५०९।।

पढमतियं च य पढमं पढमं चउवीसयं च मिस्सम्हि ।
पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तिदरे ।।५१०।।

अडचउरेक्कावीसं उवसमसेढिम्हि खवगसेढिम्हि ।
एक्कावीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टित्ति ।।५११।।

तेरस बारेयारं तेरस बारं च तेरसं कमसो ।
पुरिसित्थिसढवेदोदयेण गदपणगबंधम्हि ।।५१२।।

पुरिसोदयेण चडिदे अंतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ ।
तप्पणिधिम्मिदराणं अवगदवेदोदयं होदि ।।५१३।।

तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं ।
सत्तण्हं समग छिदी पुरिसो छण्हं च णवगमत्थित्ति ।।५१४।।

इदि चदुबंधक्खवगे तेरस बारस एगार चऊसत्ता ।
तिदुइगिबधे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणमविवक्खा ।।५१५।।

तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठवीस कम्मसा ।
सत्तरतेरणवबन्धगेसु पंचेव ठाणाणि ।।५१६।।

पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि ।
उच्छिट्ठावलिणवकं अविवेक्खिय संत्तठाणाणि ।।५१७।।

दसणवपण्णरसाइं बन्धोदयसत्तापयडिठाणाणि ।
भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं ।।५१८।।

णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया ।
वियलाऽसण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य ।।५१९।।

सामण्णतित्थकेवलि उहयसमुग्घादगा य आहारा ।
देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला ॥५२०॥

तेवीसं पणुवीसं छव्वीसं अट्ठवीसमुगतीसं ।
तीसेक्कतीसमेव एक्को बन्धो दुसेढिम्हि ॥५२१॥

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य उवरि पुण्णगेणेव ।
तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं ॥५२२॥

णिरयेण विणा तिण्हं एक्कदरेणेवमेव सुरगइणा ।
बंधंति विणा गइणा जीवा तज्जोगपरिणामा ॥५२३॥

भूबादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं ।
तेउतिगूणतिरिक्खपसत्थाणं एयदरगेण ॥५२४॥

णरगइणामरगइणा तित्थ देवेण हारमुभयं च ।
संजदबंधट्ठाणं इदराहि गईहि णत्थित्ति ॥५२५॥

णामस्स णव धुवाणि य सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं ।
गदि जादि देहसंठाणाणूणेक्कं च सामण्णा ॥५२६॥

तसबंधेण हि संहदि अंगोवंगाणमेक्क दरगं तु ।
तप्पुण्णेण य सरगमणाणं पुण एगदरगं तु ॥५२७॥

पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमदो दु परघादो ।
जोगट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं ॥५२८॥

तित्थेणाहारदुगं एक्कसराहेण बंधमेदीदि ।
पक्खित्ते ठाणाण पयडीणं होदि परिसंखा ॥५२९॥

एयक्खअपज्जत्तं इगिपज्जत्तवितिचपणरापज्जत्तं ।
एइंदियपज्जत्तं सुरणिरयगईहिं संजुत्तं ॥५३०॥

पज्जत्तगवितिचप मणुसदेवगदिसजुदाणि दोण्णि पुणो ।
सुरगइदजुदमगइदजुदं बंधट्ठाणाणि णामस्स ॥५३१॥

अट्ठय सत्त यछक्क य चदुतिदुगेगाधिगाणि वीसाणि ।
तेरस बारेयारं पणादि एगूणयं सत्तं ॥५०८॥

तिण्णेगे एगेगं दो मिस्से चदुसु पण णियट्ठीए ।
तिण्णि य थूलेयारं सुहुमे चत्तारि तिण्णि उवसंते ॥५०९॥

पढमतियं च य पढमं पढमं चउवीसयं च मिस्सम्हि ।
पढमं चउवीसचऊ अविरददेसे पमत्तिदरे ॥५१०॥

अडचउरेक्कावीसं उवसमसेढिम्हि खवगसेढिम्हि ।
एक्कावीसं सत्ता अट्ठकसायाणियट्टित्ति ॥५११॥

तेरस बारेयारं तेरस बारं च तेरसं कमसो ।
पुरिसित्थिसंढवेदोदयेण गदपणगबंधम्हि ॥५१२॥

पुरिसोदयेण चडिदे अतिमखंडंतिमोत्ति पुरिसुदओ ।
तप्पणिधिम्मिदराणं अवगदवेदोदयं होदि ॥५१३॥

तट्ठाणे एक्कारस सत्ता तिण्होदयेण चडिदाणं ।
सत्तण्हं समग छिदी पुरिसो छण्हं च णवगमत्थित्ति ॥५१४॥
इदि चदुबंधक्खवगे तेरस बारस एगार चऊसत्ता ।
तिदुइगिबधे तिदुइगि णवगुच्छिट्ठाणमविवक्खा ॥५१५॥
तिण्णेव दु बावीसे इगिवीसे अट्ठवीस कम्मंसा ।
सत्तरतेरेणवबन्धगेसु पंचेव ठाणाणि ॥५१६॥
पंचविधचदुविधेसु य छ सत्त सेसेसु जाण चत्तारि ।
उच्छिट्ठावलिणवकं अविवेक्खिय संत्तठाणाणि ॥५१७॥
दसणवपण्णरसाइं बन्धोदयसत्तापयडिठाणाणि ।
भणिदाणि मोहणिज्जे एत्तो णामं परं वोच्छं ॥५१८॥
णिरया पुण्णा पण्हं बादरसुहुमा तहेव पत्तेया ।
वियलाऽसण्णी सण्णी मणुवा पुण्णा अपुण्णा य ॥५१९॥

सामण्णतित्थकेवलि उहयसमुग्घादगा य आहारा ।
देवावि य पज्जत्ता इदि जीवपदा हु इगिदाला ।।५२०।।

तेवीसं पणुवीसं छव्वीसं अट्ठवीसमुगतीसं ।
तीसेक्कतीसमेव एक्को बन्धो दुसेढिम्हि ।।५२१।।

ठाणमपुण्णेण जुदं पुण्णेण य उवरि पुण्णगेणेव ।
तावदुगाणण्णदरेणण्णदरेणमरणिरयाणं ।।५२२।।

णिरयेण विणा तिण्हं एक्कदरेणेवमेव सुरगइणा ।
बंधंति विणा गइणा जीवा तज्जोगपरिणामा ।।५२३।।

भूबादरपज्जत्तेणादावं बंधजोग्गमुज्जोवं ।
तेउतिगूणतिरिक्खपसत्थाण एयदरगेण ।।५२४।।

णरगइणामरगइणा तित्थ देवेण हारमुभयं च ।
संजदबंधट्ठाणं इदराहि गईहि णत्थित्ति ।।५२५।।

णामस्स णव धुवाणि य सरूणतसजुम्मगाणमेक्कदरं ।
गदि जादि देहसंठाणाणूणेक्कं च सामण्णा ।।५२६।।

तसबधेण हि संहदि अंगोवंगाणमेक्क दरगं तु ।
तप्पुण्णेण य सरगमणाणं पुण एगदरगं तु ।।५२७।।

पुण्णेण समं सव्वेणुस्सासो णियमदो दु परघादो ।
जोगट्ठाणे तावं उज्जोवं तित्थमाहारं ।।५२८।।

तित्थेणाहारदुगं एक्कसराहेण बंधमेदीदि ।
पक्खित्ते ठाणाणं पयडीण होदि परिसंखा ।।५२९।।

एयक्खअपज्जत्तं इगिपज्जत्तवितिचपणरापज्जत्तं ।
एइंदियपज्जत्तं सुरणिरयगईहिं संजुत्त ।।५३०।।

पज्जत्तगवितिचप मणुसदेवगदिसंजुदाणि दोण्णि पुणो ।
सुरगइदजुदमगइदजुदं बंधट्ठाणाणि णामस्स ।।५३१।।

सठाणे संहडणे विहायजु ने य चरिमछज्जुम्मे ।
अविरुद्धेक्कदरादो बंधट्ठासुणे भंगा हु ।।५३२।।

तत्थासत्थो णारयसव्वापुण्णेण होदि बंधो दु ।
एक्कदराभावादो तत्थेक्को चेव भगो दु ।।५३३।।

तत्थासत्थं एदि हु साहारणथूलसव्वसुहुमाणं ।
पज्जतेण य थिरसुहजुम्मेक्कदरं तु चदुभंगा ।।५३४।।

पुढवीआऊतेऊवाऊपत्तेयवियल सण्णीणं ।
सत्थेण असत्थं थिरसुहजसजुम्मट्ठभंगा हु ।।५३५।।

सण्णिस्स मणुस्सस्स य ओघेक्कवदरं तु मिच्छभंगा हु ।
छादालसयं अट्ठ य विदिये वत्तीससयभंगा ।।५३६।।

मिस्साविरदमणुस्सट्ठाणे मिच्छादिदेवजुदठाणे ।
सत्थं तु पमत्तंते थिरसुहजसजुम्मगट्ठभंगा हु ।।५३७।।

णेरयियाण गमण सण्णीपज्जत्तकम्मतिरियणरे ।
चरमचऊतित्थूणे तेरिच्छे चेव सत्तमिया ।।५३८।।

तत्थतणऽविरदसम्मो मिस्सो मणुवदुगमुच्चयं णियमा ।
बधदि गुणपडिवण्णा मरति मिच्छेव तत्थ भवा ।।५३९।।

तेउदुगं तेरिच्छे सेसेगअपुण्णवियलगा य तहा ।
तित्थूणणरेवि तहाऽसण्णो धम्मेण देवदुगे ।।५४०।।

सण्णीवि तहा सेसे णियरे भोगेवि अच्चुदतेवि ।
मणुवा जति चउग्गदिपरियंतं सिद्धिठाणं च ।।५४१।।

आहारगा दु देवे देवाण सण्णिकम्मतिरियणरे ।
पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं ।।५४२।।

भवणतियाणं एवं तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती ।
ईसाणताणेगे सदरदुगंताण सण्णीसु ।।५४३।।

णामस्स बंधठाणा णिरयदिसु णवयवीस तीसमदो ।
आदिमछक्कं सव्वं पणछण्णववीस तीसं च ॥५४४॥

पचक्खतसे सव्वं अडवीसूणादिछक्कयं सेसे ।
चउमणवयणोराले सड देव वा विगुव्वदुगे ॥५४५॥

अडवीसदु हारदुगे सेसदुजोगेसु छक्कमादिल्लं ।
वेदकसाये सव्वं पढमिल्ल छक्कमण्णाणे ॥५४६॥

सण्णाणे चरिमपणं केवलजहखादसजमे सुण्ण ।
सुदमिव संजमतिदए परिहारे णत्थि चरिमपद ॥५४७॥

अंतिमठाणं सुहुमे देसाविरदीसु हारकम्म वा ।
चक्खूजुगले सव्वं सगसगणाण व ओहिदुगे ॥५४८॥

कम्मं वा किण्हतिये पणुवीसाछक्कमट्ठवीसचऊ ।
कमसो तेऊजुगले सुक्काए ओहिणाण वा ॥५४९॥

भव्वे सव्वमभव्वे किण्ह वा उवसमम्मि खइए य ।
सुक्कं वा पम्म वा वेदगसम्मत्तठाणाणि ॥५५०॥

अडवीसतिय दु साणे मिस्से मिच्छे दु किण्हलेस्सं वा ।
सण्णी आहारिदरे सव्व तेवीसछक्कं तु ॥५५१॥

णिरयादि जुदट्ठाणे भंगेणप्पप्पणम्मि ठाणम्मि ।
ठविदूण मिच्छभगे सासण भंगा हु अत्थित्ति ॥५५२॥

अविरदभगे मिस्सयदेस पमत्ताण सव्वभंगा हु ।
अत्थित्ति ते दु अवणिय मिच्छाविरदा पमादेसु ॥५५३॥

भुजगारा अप्पदरा अवट्ठिदावि य सभंगसंजुत्ता ।
सव्वपरट्ठाणेण य णेदव्वा ठाणबंधम्मि ॥५५४॥

अप्पपरोभयठाणे बंधट्ठाणाणं जो दु बंधस्स ।
सट्ठाण परट्ठाणं सव्वपरट्ठाणमिदि सण्णा ॥५५५॥

चदुरेक्कदुपण पंच य छत्तिगठाणाणि अप्पमत्तंता ।
तिसु उवसमगे संते त्ति य तियतिय दोण्णि गच्छति ॥५५६॥

सासणपमत्तवज्जं अपमत्तंतं समल्लियइ मिच्छो ।
मिच्छत्तं विदियगुणो मिस्सो पढमं चउत्थं च ॥५५७॥

अविरदसम्मो देसो पमत्तपरिहीणमप्पमत्तं तं ।
छट्ठाणाणि पमत्तो छट्ठगुणं अप्पमत्तो दु ॥५५८॥

उवसामगा दु सेढिं आरोहंति य पडंति य कमेण ।
उवसामगेसु मरिदो देवतमत्तं समल्लियई ॥५५९॥

मिस्सा आहारस्स य गा चडमाणपढमपुव्वा य ।
पढमुवसम्मा तमतमगुणपडिवण्णा य ण मरंति ॥५६०॥

अणसंजोजिदमिच्छे मुहुत्तअंतं तु णत्थि मरणं तु ।
किदकरणिज्जं जाव दु सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा ॥५६१॥

देवेसु देवमणुवे सुरणरतिरिये चउग्गईसु पि ।
कदकरणिज्जुप्पत्ती कमसो ोमुहुत्तेण ॥५६२॥

तिविहो दु ठाणबधो भुजगारप्पदरवट्ठिदो पढमो ।
अप्पं बंधतो बहुबधे विदियो दु विवरीयो ॥५६३॥

तदियो सणामसिद्धो सव्वे अविरूद्धठाणबंधभवा ।
ताणुप्पत्ति कमसो भंगेण समं तु वोच्छामि ॥५६४॥

भूबादरतेवीसं बंधंतो सव्वमेव पणुवीसं ।
बधदि मिच्छाइट्ठी एवं सेसाणमाणेज्जो ॥५६५॥

तेवीसट्ठाणादो मिच्छत्तीसोत्ति बंधगो मिच्छो ।
णवरि हु अट्ठावीसं पंचिंदियपुण्णगो चेव ॥५६६॥

भोगे सुरट्ठवीसं सम्मो मिच्छो य मिच्छगअपुण्णे ।
तिरिउगतीसं तोसं णरउगुतीसं च बधदि हु ॥५६७॥

मिच्छस्स ठाणभंगा एयारं सदरि दुगुणसोल णवं ।
अडदालं बाणउदी सदाण छादाल चत्तधियं ।।५६८।।

विवरीयेणप्पदरा होंति हु तेरासिएण भंगा हु ।
पुव्वपरट्ठाणाण भगा इच्छा फलं कमसो ।।५६९।।

लघुकरणं इच्छंतो एयारादीहिं उवरिम जोग्गं ।
संगुणिदे भुजगारा उवरीदो होंति अप्पदरा ।।५७०।।

भुजगारप्पदराणं भंगसमासो समो हु मिच्छस्स ।
पणतीसं चउणउदी सट्ठी चोदालमंककमे ।।५७१।।

देवट्ठवीसं णरदेवुगुतीस मणुस्सतीस बंधयदे ।
तिछणवणवदुगभगा तित्थविहिणा हु पुणरुत्ता ।।५७२।।

देवट्ठवीसबंधे देवुगुतीसम्मि भंग चउसट्ठी ।
देवुगुतीसे बंधे मणुवत्तीसेवि चउसट्ठी ।।५७३।।

तित्थयरसत्तणारयमिच्छो णरऊणतीसबधो जो ।
सम्मम्मि तीसबंधो तियछक्कडछक्कचउभंगा ।।५७४।।

बावत्तरि अप्पदरा देवुगुतीसा दु णिरयअडवीसं ।
बंधंत मिच्छभंगेणवगयतित्था हु पुणरुत्ता ।।५७५।।

देयजुदेक्कट्ठाणे णरतीसे अप्पमत्तभुजयारा ।
पणदालिगिहारुभये भंगा पुणरुत्तगा होंति ।।५७६।।

इगि अड अट्ठिगि अट्ठिगिभेदड अट्ठड दुणव य वीस तोसेक्के ।
अडिगिगि अडिगिगि बिहि उणखिगि इगि इगितीस
देवचउ कमसो ।।५७७।।

इगिविहिगिगिखतीसे दस णव णवडधियवीसमट्ठविहं ।
देवचउक्केक्केक्के अपमत्तप्पदरछत्तीसा ।।५७८।।

सव्वपरट्ठाणेरण य अयदपमत्तिदरसव्वभंगा हु ।
मिच्छस्स भङ्गमज्झे मिलिदे सव्वे हवे भंगा ॥५७९॥

भुजगारा अप्पदरा हवंति पुव्ववरठाणसंताणे ।
पयडिसमोऽसंताणोऽपुणरुत्तेत्ति य समुद्दिट्ठो ॥५८०॥

भुजगारे अप्पदरेऽवत्तव्वे ठाइदूण समबंधो ।
होदि अवट्ठिदबंधो तब्भंगा तस्स भंगा हु ॥५८१॥

पडिय मरियेक्कमेक्कूणतीस तीसं च बंधगुवसते ।
बंधो दु अवत्तव्वो अवट्ठिदो बिदियसमयादी ॥५८२॥

विग्गहकम्मसरीरे सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते ।
आणावचिपज्जत्ते कमेण पच्चोदये काला ॥५८३॥

एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तय तिसुवि ।
हेट्ठिम कालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु ॥५८४॥

सव्वापज्जत्ताणं दोण्णिवि काला चउक्कमेयक्खे ।
पंचवि होति तसाण आहारस्सुवरिमचउक्कं ॥५८५॥

कम्मोरालिय मिस्स ओरालुरसासभास इदि कमसो ।
काला हु समुग्घादे उवसंहरमाणगे पंच ॥५८६॥

ओरालं दंडदुगे कवाडजुगले य तस्स मिस्सं तु ।
पदरे य लोगपूरे कम्मे व य होदि णायव्वो ॥५८७॥

णामधुवोदयबारस गइजाईणं च तसतिजुम्माणं ।
सुभगादेज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू ॥५८८॥

मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं च एगदरगं तु ।
पत्तेयदुगाणेक्को उवघादो होदि उदयगदो ॥५८९॥

तसमिस्से ताणि पुणो अंगोवंगाणमेगदरगं तु ।
छण्हं संहडणाणं एगदरो उदयगो होदि ॥५९०॥

परघादमंगपुण्णे आदावदुगं विहायमविरुद्धे ।
सासवची तप्पुण्णे कमेण तित्थं च केवलिणी ॥५९१॥
वीसं इगिचउवीसं तत्तो इगितीसओत्ति एयधियं ।
उदयट्ठाणा एवं णव अट्ठ य होंति णामस्स ॥५९२॥
चदुगदिया एइंदी विसेसमणुदेवणिरयएइंदी ।
इगिविर्तिचपसामण्णा विसेससुरणारगेइंदी ॥५९३॥
सामण्णसयलवियल विसेसमणुस्ससुरणारया दोण्हं ।
सयलवियलसामण्णा सजोगपंचक्खवियलया सामी ॥५९४॥
एगे इगिवीसपणं इगिछव्वीसट्ठवीसतिण्णि णरे ।
सयले वियलेवि तहा इगितीसं चावि वचिठाणे ॥५९५॥
सुरणिरयविसेसणरे इविपणसगवीसतिण्णि समुग्धादे ।
मणुसं वा इगिवीसे वीसं रूवाहियं तित्थं ॥५९६॥
वीसदु चउवीसचऊ पणछव्वीसादिपंचयं दोसु ।
उगुतीसति पणकाले गयजोगे होंति णव अट्ठं ॥५९७॥
गयजोगस्स य वारे तदियाउगगोद इदि विहीणेसु ।
णामस्स य णव उदया अट्ठेव य तित्थहीणेसु ॥५९८॥
संठाणे संहडणे विहायजुम्मे य चरिमचदुजुम्मे ।
अविरुद्धेक्कदरादो उदयट्ठाणेसु भंगा हु ॥५९९॥
तत्थासत्था णारयसहारणसुहुमगे अपुण्णे य ।
सेसेगविगलऽसण्णी जुदठाणे जसजुगे भंगा ॥६००॥
सण्णिम्मि मणुस्सम्मि य ओघेक्कदरं तु केवले वज्जं ।
सुभगादेज्ज जसाणि य तित्थजुदे सत्थमेदीदि ॥६०१॥
देवाहारे सत्थं कालवियप्पेसु भंगमाणेज्जो ।
वोच्छिण्णा जाणित्ता गुणपडिवण्णेसु सव्वेसु ॥६०

वीसादीणं भगा इगिदालपदेसु संभवा कमसो ।
एक्कं सट्ठी चेव य सत्तावीस च उगुवीस ।।६०३।।

वीसुत्तरछच्चसया बारस पण्णत्तरीहिं संजुत्ता ।
एक्कारससयसखा मत्तरससयाहिया सट्ठी ।।६०४।।

ऊणतीससयाहियएक्कावीसा तदोवि एकट्ठी ।
एक्कारससयसहिया एक्केक्क विसरिसगा भगा ।।६०५।।

सामण्णकेवलिस्स समुग्घादगदस्स तस्सवचि भंगा ।
तित्थस्सवि सगभंगा समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो ।।६०६।।

णारयसण्णि मणुस्ससुराणं उवरिमगुणाण भंगा जे ।
पुणरुत्ता इदि अवणिय भणिया मिच्छस्स भंगेसु ।।६०७।।

अडवण्णा सत्तसया सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण ।
उदयट्ठाणे भंगा असहायपरक्क मुद्दिट्ठा ।।६०८।।

तिदुइगिणउदी णउदी अडचउदोअहियसीदि सीदि य ।
ऊणासीदट्ठत्तरि सत्तत्तरि दस य णव सत्ता ।।६०९।।

सव्वं तित्थाहारुभऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे ।
उव्वेल्लिदे हदे चउ तेरे जोजिस्स दसणवयं ।।६१०।।

गयजोगस्स दु तेरे तदियाउगगोदइदि विहीणेसु ।
दस णामस्स स सत्ता णव चेव य तित्थहीणेसु ।।६११।।

गुणसंजादप्पयडिं मिच्छे बंधुदयगंधहीणम्मि ।
सेसुव्वेल्लणपयडिं णियमेणुव्वेल्लदे जीवो ।।६१२।।

सत्थत्तादाहारं पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं ।
सम्मामिच्छं तु तदो एगो विगलो य सगलो य ।।६१३।।

वेदगजोग्गो काले आहारं उवसमस्स सम्मत्तं ।
सम्मामिच्छं चेगे वियले वेगुव्वछक्कं तु ।।६१४।।

उदधिपुधत्तं तु तसे पल्लासंखूणमेगमेयक्खे ।
जाव य सम्मं मिस्सं देवगजोग्गो य उवसमस्स तदो ॥६१५॥
तेउदुगे मणुवदुगं उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं ।
पल्लासंखेज्जदिमं उव्वेल्लणकालपरिमाणं ॥६१६॥
पल्लासंखेज्जदिमं ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण ।
संखेज्जसायरठिदिं पल्लासंखेज्जकालेण ॥६१७॥
सम्मत्तं देसजमं अणसाजोजणविहिं च उक्कस्सं ।
पल्लासंखेज्जदिमं बारं पडिवज्जिदे जीवो ॥६१८॥
चत्तारि वारमुवसमसेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो ।
बत्तीसं वाराइं संजममुवलहिय णिव्वादि ॥६१९॥
तित्था हाराणुभयं तित्थ ण मिच्छगादितिये ।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवई ॥६१९/१॥
सुरणरसम्मे पढमो सासणहीणेसु होदि बाणउदी ।
सुरसम्मे णरणारयसम्मे मिच्छे य इगिणउदी ॥६२०॥
णउदी चदुग्गदिम्मि य तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे ।
अडचउसीदी सत्ता तिरिक्खमिच्छम्मि बासीदी ॥६२१॥
सीदादिचउट्ठाणं तेरसखवगादु अणुवसमगेसु ।
गयजोगस्स दुचरिमं जाव य चरिमम्हि दसणवयं ॥६२२॥
णिरये बाइगिणउदी णउदी भूआदि सव्वतिरियेसु ।
बाणउदी णउदि अडचउवासीदी य होंति सत्ताणि ॥६२३॥
बासीदिं वज्जित्ता बारसठाणाणि होंति मणुवेसु ।
सीदादिचउट्ठाणा छट्ठाणा केवलिदुगेसु ॥६२४॥
समविसमट्ठाणाणि य कमेण तित्थियरकेवलीसु हवे ।
तिदुणवदी आहारे देवे आदिमचउक्कं तु ॥६२५॥
बाणउदि णउदिसत्ता भवणतियाणं च भोगभूमीणं ।
हेट्ठिमपुढवि चउक्कभवाण च य सासणे णउदी ॥६२६॥

वीसादीणं भंगा इगिदालपदेसु संभवा कमसो ।
एक्कं सट्ठी चेव य सत्तावीसं च उगुवीसं ॥६०३॥

वीसुत्तरछच्चसया बारस पण्णत्तरीहिं संजुत्ता ।
एक्कारससयसंखा सत्तरससयाहिया सट्ठी ॥६०४॥

ऊणतीससयाहियएक्कावीसा तदोवि एकट्ठी ।
एक्कारससयसहिया एक्केक्क विसरिसगा भंगा ॥६०५॥

सामण्णकेवलिस्स समुग्घादगदस्स तस्सवचि भंगा ।
तित्थस्सवि सगभंगा समेदि तत्थेक्कमवणिज्जो ॥६०६॥

णारयसण्णि मणुस्ससुराण उवरिमगुणाण भंगा जे ।
पुणरुत्ता इदि अवणिय भणिया मिच्छस्स भंगेसु ॥६०७॥

अडवण्णा सत्तसया सत्तसहस्सा य होंति पिंडेण ।
उदयट्ठाणे भंगा असहायपरक्क मुद्दिट्ठा ॥६०८॥

तिदुइगिणउदी णउदी अडचउदोअहियसीदि सीदि य ।
ऊणासीदट्ठत्तरि सत्तत्तरि दस य णव सत्ता ॥६०९॥

सव्वं तित्थाहारुभऊणं सुरणिरयणरदुचारिदुगे ।
उव्वेल्लिदे हदे चउ तेरे जोजिस्स दसणवयं ॥६१०॥

गयजोगस्स दु तेरे तदियाउगगोदइदि विहीणेसु ।
दस णामस्स स सत्ता णव चेव य तित्थहीणेसु ॥६११॥

गुणसंजादप्पयडिं मिच्छे बंधुदयगंधहीणम्मि ।
सेसुव्वेल्लणपयडिं णियमेणुव्वेल्लदे जीवो ॥६१२॥

सत्थत्तादाहारं पुव्वं उव्वेल्लदे तदो सम्मं ।
सम्मामिच्छं तु तदो एगो विगलो य सगलो य ॥६१३॥

वेदगजोग्गे काले आहारं उवसमस्स सम्मत्तं ।
सम्मामिच्छं चेगे वियले वेगुव्वछक्कं तु ॥६१४॥

उदधिपुधत्तं तु तसे पल्लासंखूणमेगमेयक्खे ।
जाव य सम्मं मिस्सं देवगजोग्गो य उवसमस्स तदो ॥६१५॥
तेउदुगे मणुवदुगं उच्चं उव्वेल्लदे जहण्णिदरं ।
पल्लासंखेज्जदिमं उव्वेल्लणकालपरिमाणं ॥६१६॥
पल्लासंखेज्जदिमं ठिदिमुव्वेल्लदि मुहुत्तअंतेण ।
संखेज्जसायरठिदिं पल्लासखेज्जकालेण ॥६१७॥
सम्मत्तं देसजमं अणसंजोजणविहिं च उक्कस्सं ।
पल्लासंखेज्जदिमं बारं पडिवज्जिदे जीवो ॥६१८॥
चत्तारि वारमुवसमसेढिं समरुहदि खविदकम्मंसो ।
बत्तीसं वाराइं संजयमुवलहिय णिव्वादि ॥६१९॥
तित्था हाराणुभयं तित्थं ण मिच्छगादितिये ।
तस्सत्तकम्मियाणं तग्गुणठाणं ण संभवई ॥६१९/१॥
सुरणरसम्मे पढमो सासणहीणेसु होदि बाणउदी ।
सुरसम्मे णरणारयसम्मे मिच्छे य इगिणउदी ॥६२०॥
णउदी चदुग्गदिम्मि य तेरसखवगोत्ति तिरियणरमिच्छे ।
अडचउसीदी सत्ता तिरिक्खमिच्छम्मि बासीदी ॥६२१॥
सीदादिचउट्ठाणं तेरसखवगादु अणुवसमगेसु ।
गयजोगस्स दुचरिमं जाव य चरिमम्हि दसणवयं ॥६२२॥
णिरये बाइगिणउदी णउदी भूआदि सव्वतिरियेसु ।
बाणउदी णउदि अडचउवासीदी य होंति सत्ताणि ॥६२३॥
बासीदिं वज्जित्ता बारसठाणाणि होंति मणुवेसु ।
सीदादिचउट्ठाणा छट्ठाणा केवलिदुगेसु ॥६२४॥
समविसमट्ठाणाणि य कमेण तित्थियरकेवलीसु हवे ।
तिदुणवदी आहारे देवे आदिमचउक्कं तु ॥६२५॥
बाणउदि णउदिसत्ता भवणतियाण च भोगभूमीणं ।
हेट्ठमपुढवि चउक्कभवाणं च य सासणे णउदी ॥६२६॥

मूलुत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तठाण भंगा हु ।
भणिदा हु तिसंजोगे एत्तो भगे परूवेमो ॥६२७॥

अट्ठविहसत्तछब्बंधगेसु अट्ठेव उदयकम्मंसा ।
एयविहे तिवियप्पो एयवियप्पो धम्मि ॥६२८॥

मिस्से अपुव्वजुगले विदियं अपमत्तओत्ति पढमदुगं ।
सुहुमादिसु तदियादी बंधोदयसत्तभंगेसु ॥६२९॥

बन्धोदयकम्मसा णाणावरणंतरायिए पंच ।
बन्धोपरमेवि तहा उदयंसा होंति पंचेव ॥६३०॥

विदियावरणे णवबंधगेसु चदुपंचउदय णवसत्ता ॥
छब्बंधगेसु एवं तह चदुबंधे छडंसा य ॥६३१॥

उवरदबंधे चदुपंचउदय णव छच्च सत्त चदु जुगलं ।
तदियं गोदं आउं विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥६३२॥

सादासादेक्कदर बंधुदया होंति संभवट्ठाणे ।
दोसत्तं जोगित्तिय चरिमे उदयागदं सत्तं ॥६३३॥

छट्ठोत्ति चारि भंगा दो भंगा होंति जाव जोगिजिणे ।
चउभंगाऽजोगिजिणे ठाणं पडि वेयणीयस्स ॥६३४॥

णीचुच्चाणे गदरं बंधुदया होंति संभवट्ठाणे ।
दोसत्ता जोगित्ति य चरिमे उच्चं हवे सत्तं ॥६३५॥

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाउम्मि य णीचमेव सत्तं तु ।
सेसिगिवियले सयले णीचं च दुगं च हवे सत्तं ॥६३६॥

उच्चुव्वेल्लिदतेऊ वाउसेसे य विवलसयलेसु ।
उप्पण्णपढमकाले णीच एय हवे सत्त ॥६३७॥

मिच्छादिगोद भंगा पण चदु तिसु दोण्णि अट्ठठाणेसु ।
एक्केक्का जोगिजिणे दो भंगा होंति णियमेण ॥६३८॥

सुरणिरया णरतिरियं छम्मासवसिट्ठगे सगाउस्स ।
णरतिरिया सव्वाउं तिभागसेसम्मि उक्कस्स ।।६३६।।

भोगभुमा देवाउं छम्मासवट्ठिगे य बंधंति ।
इगिविगला णरतिरियं तेउदुगा सत्तगा तिरियं ।।६४०।।

सगसगगदीणमाउं उदेदि बंधे उदिण्णगेण समं ।
दो सत्ता हु अबधे एक्क उदयागदं सत्त ।।६४१।।

एक्के एक्कं आऊ एक्कभवे बंधमेदि जोग्गपदे ।
अडवार वा तत्थवि तिभागसेसे व सव्वत्थ ।।६४२।।

इगिवारं वज्जित्ता वड्ढी हाणी अवट्ठिदी होदि ।
ओवट्टुण घादो पुण परिणामवसेण जीवाणं ।।६४३।।

एवमबंधे बधे उवरदबंधेवि होंति भगा हु ।
एक्कस्सेक्कम्मि भवे एक्काउं पडितये णियमा ।।६४४।।

एक्काउस्स तिभंगा सभवआउहिं ताडिदे णाणा ।
जीवे इगिभवभङ्गारूऊणगुणूणमसरित्थे ।।६४५।।

पण णव णव पण भंगा आउचउक्केसु होंति मिच्छम्मि ।
णिरयाउबंधभंगेणूणा ते चेव विदियगुणे ।।६४६।।

सव्वाउबंधभंगेणूणा मिस्सम्मि अयदसुरणिरये ।
णरतिरिये तिरियाऊ तिण्णाउगबंधभंगूणा ।।६४७।।

देस णरे तिरिये तियतिय भङ्गा होंति छट्ठसत्तमगे ।
तियभंगा उवसमगे दो दो खवगेसु एक्केक्को ।।६४८।।

अडछव्वीसं सोलस वीसं छत्तिगतिग च चदुसु दुगं ।
असरिसभगा तत्तो अजोगिअंतेसु एक्केक्को ।।६४९।।

बादालं पणुवीस सोलसअहियं सचं च वेयणिये ।
गोदे आउम्मि हवे मिच्छादिअजोगिणो भंगा ।।६५०।।

वेयणिये अडभंगा गोदे सत्तेव होंति भङ्गा हु ।
पण णव णव पण भंगा आउचउक्केसु विसरित्था ।।६५१।।

मोहस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभंगा हु ।
पत्तेउत्तं व हवे तियसजोगेवि सव्वत्थ ।।६५२।।

अट्ठसु एक्को बंधो उदया चदु ति दुसु चउसु चत्तारि ।
तिण्णि य कमसो सत्तं तिण्णेगदु चउसु पणग तियं ।।६५३।।

अणियट्टी बंधतिय पणदुगएक्कारसुहुमउदयंसा ।
इगि चत्तारि य सते सत्तं तिण्णेव मोहस्स ।।६५४।।

बावीस दसय चउ अडवीसतियं च मिच्छबंधादी ।
इगिवीस णवयतिय अट्ठावीसे च विदियगुणे ।।६५५।।

सत्तरस णवयतियं अडचउवीसं पुणोवि सत्तरसं ।
णवचउ अडचउवीस य तिवीसतियमंसयं चउसु ।।६५६।।

तेरट्ठचऊ देसे पमदिदरे णव सगादि चत्तारि ।
तो णवगं छादितिय अडचउरिगिवीससयं च बंधतियं ।।६५७।।

पंचादिपंचबंधो णवमगुणे दोण्णि एक्कमुदयो दु ।
अट्ठचदुरेक्कवीसं तेरादीअट्ठयं सत्तं ।।६५८।।

लोहेक्कुदओ सुहुमे अडचउरिगिवीसमेक्कय सत्त ।
अडचउरिगिवीससा संते मोहस्स गुणठाणे ।।६५९।।

बधपदे उदयसा उदयट्ठाणेवि बध सत्तं च ।
सत्ते बधुदयपद इगिअधिकरणे दुगाधेज्ज ।।६६०।।

बावीसयादिबंधेसुदयसा चदुतितिगिचऊपंच ।
तिसु इगि छद्दो अट्ठ य एक्कं पंचेव तिट्ठाणे ।।६६१।।

दसयचऊ पढमतियं णवतियमडवीसयं णवादिचऊ ।
अडचदुतिदुइगिवीसं अडचदु पुव्वं व सत्तं तु ।।६६२।।

सगचउ पुव्वं वंसा दुगमडचउरेक्कवीस तेरतियं ।
दुगमेक्कं च य सत्तं पुव्वं वा अत्थि पणगदुगं ॥६६३॥

तिसु एक्केक्कं उदओ अडचउरिगिवीससत्तसाजुत्तं ।
चदुतिदय तिदयदुगं दो एक्कं मोहणीयस्स ॥६६४॥

दसयादिसु बंधंसा इगितिय तियछक्क चारिसत्तं च ।
पण पण तियपण दुगपण इगितिग दुगछच्चऊणयं ॥६६५॥

पढमं पढमतिचउपणसत्तरतिग चदुसु बंधयं कमसो ।
पढमतिछस्सगमडचउतिदुइगिवीसंसयं दोसु ॥६६६॥

तेरदु पुव्वं वंसा णवमडचउरेक्कवीससत्तमदो ।
पणदुगमडचउरेक्कावीसं तेरसतियं सत्तं ॥६६७॥

चरिमे चदुतिदुगेक्कं अट्ठयचादुरेक्कसंजुदं वीसा ।
एक्कारादी सव्वं कमेण ते मोहणीयस्स ॥६६८॥

सत्तपदे बंधुदया दसणव इगिति दुसु अडड तिपण दुसु ।
सव दुगि दुसु विगिगिगि दुगि तिसु इगिसुण्णमेक्क च ॥६६९॥

सव्वं सयलं पढमं दसतिय दुसु सत्तरादियं सव्वं ।
णवयप्पहुदीसयल सत्तरति णवादिपण दुपदे ॥६७०॥

सत्तरसादि अडादीसव्वं पण चारि दोण्णि दुसु तत्तो ।
पंचचउक्कं दुगेक्कं चदुरिगि चदुतिण्णि एक्कं च ॥६७१॥

तत्तो तियदुगमेक्कं दुप्पयडी एक्कमेक्कठाण च ।
इगिणभबधो चरिमे एउदओ मोहणीयस्स ॥६७२॥

बंधुदये सत्तपदं बंधंसे णेयमुदयठाणं च ।
उदयंसे बंधपदं दुट्ठाणाधारमेक्कमाधेज्जं ॥६७३॥

बावीसेण णिरुद्धे दसचउरुदये दसादिठाणतिये ।
अट्ठावीसति सत्तं सत्तुदये अट्ठवीसेव ॥६७४॥

इगिवीसेण णिरुद्धे णवयतिये सत्तमट्ठवीसेव ।
सत्तरसे णवचदुरे अडचउतिदुगेक्कवीसंसा ।।६७५।।

इगिवीसं ण हि पढमे चरिमे तिदुवीसयं ण तेरणवे ।
अडचउसगचउरुदये सत्तं सत्तरसयं व हवे ।।६७६।।

णवरि य अपुव्वणवगे छादितियुदयेवि णत्थि तिदुवीसा ।
पणबंधे दोउदये अडचाउरिगिवीसतेरसादितियं ।।६७७।।

चदुबन्धे दो उदये सत्तं पुव्वं व तेण एक्कुदये ।
अडचाउरेक्कावीसा एयारतिगं च सत्ताणि ।।६७८।।

तिदुइगिबधेक्कुदये चादुतियठाणेण तिदुगठाणेण ।
दुगिठाणेण य सहिता अडचाउरिगिवीसया सत्ता ।।६७९।।

बावीसे अडवीसे दसचाउरुदओ अणे ण सगवीसे ।
छब्बीसे दसयतियं इगिअडवीसे दु णवयतियं ।।६८०।।

सत्तरसे अडचादुवीसे णवयचादुरुदयमिगिवीसे ।
णो पढमुदओ एवं तिदुवीसे णंतिमस्सुदओ ।।६८१।।

तेरणवे पुव्वंसे अडादिचाउसगचाउण्ह मुदयाणं ।
सत्तरसं व वियारो पणगुवसंते सगेसु दो उदया ।।६८२।।
तेणेवं तेरतिये चादुबधे पुव्वसत्तगेसु तहा ।
तेणुवसंत्तं सेयारतिए एक्को हवे उदओ ।।६८३।।

तिदुइगिबंधे अडचाउरिगिवीसे चादुतिएण ति दुगेण ।
दुगिसत्तेण य सहिदे कमेण एक्को हवे उदओ ।।६८४।।

दसगुदयेअडवीसतिसत्ते बावीसबंध णवअट्ठे ।
अडवीसे बावीसचाउबंधो सत्तवीसदुगे ।।६८५।।

बावीसबंध चादुतिदुवीसंसे सत्तरसयददगबंधो ।
अट्ठुदये इगिवीसे सत्तरबधं विसेसं तु ।।६८६।।

सत्तुदये अडवीसे बंधो बावीसपंचयं तेण ।
चउवीसतिगे अयदतिबंधो इगिवीसगयददुगबंधो ।।६८७।।

छप्पणउदये उवसंतंसे अयदतिगदेसदुगबधो ।
तेण तिदोवीसंसे देसदुणवबधयं होदि ।।६८८।।

चउरुदयुवसंतंसे णवबंधो दोण्णिउदयपुव्वंसे ।
तेरसतियसत्ते वि य पण चउ ठाणाणि बधस्स ।।६८९।।

एक्कुदयुवसंतंसे बंधो चदुरादिचारि तेणेव ।
एयारदु चादुबंधो चदुरंसे चदुतियं बधो ।।६९०।।

तेण तिये तिदुबधो दुगसत्ते दोण्णि एक्कयं बंधो ।
एक्कंसे इगिबधो गयणं वा मोहणीयस्स ।।६९१।।

णामस्स य बंधोदयसत्तट्ठाणाण सव्वभगा हु ।
पत्तेउत्तं व हवे तियसंजोगेवि सव्वत्थ ।।६९२।।

छण्णवछत्तियसगइगि दुगतिगदुग तिण्णअट्ठचत्तारि ।
दुगदुगचदु दुगपणचदु चदुरेयचदू पणेयचदू ।।६९३।।

एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छदुमट्ठ केवलिजिणाणं ।
एगचदुरेगचदुरो दोचदु दोछक्क बधउदयंसा ।।६९४।।

णामस्स य बंधोदयसत्ताणि गुणं पडुच्च उत्ताणि ।
पत्तेयादो सव्वं भणिदव्वं अत्थजुत्तीए ।।६९५।।

तेवीसादी बधा इगिवीसादीणि उदयठाणाणि ।
बाणउदादी सत्ता बंधा पुण अट्ठवीसतियं ।।६९६।।

इगिवीसादीएक्कत्तीसंता सत्तअट्ठवीसूणा ।
उदया सत्तं णउदो बंधा पुण अट्ठवीसदुगं ।।६९७।।

एगुणतीसत्तिदयं उदयं बाणउदिणउदियं सत्तं ।
अयदे बंधट्ठाणं अट्ठावीसत्तियं होदि ।।६९८।।

उदया चाउवीसूणा इगिवीसप्पहुदि एक्कतीसंता ।
सत्तं पढमचाउक्कं अपुव्वकरणोत्ति णायव्वं ।।६९९।।

अडवीसदुग बंधो देसे पमदे य तीसदुगमुदओ ।
पणवीस सत्तवीमप्पहुदीचात्तारि ठाणाणि ।।७००।।

अपमत्ते य अपुव्वे अडवीसादीण बंधमुदओ दु ।
तीसमणियट्टिसुहुमे जसकित्ती एक्कयं बधो ।।७०१।।

उदओ तीसं सत्तं पढमचाउक्क चा सीदिचाउ संते ।
खीणे उदओ तीसं पढमचाउ सीदिचाउ सत्तं ।।७०२।।

जोगिम्मि अजोगिम्मि य तीसिगितीसं णवट्ठयं उदओ ।
सीदादिचाऊछक्कं कमसो सत्तं समुद्दिट्ठं ।।७०३।।

पणादोपणगं पणचादुपणगं बधुदयसत्त पणगं च ।
पणछक्कपणगछक्कपणगमट्ठमेयारं ।।७०४।।

सत्तेव अपज्जत्ता सामी सुहुमो य बादरो चेव ।
वियलिंदिया य तिविहा होंति असण्णी कमा सण्णी ।।७०५।।

बंधा तियपणछण्णववीसत्तीसं अपुण्णगे उदओ ।
इगिचाउवीसं इगिछव्वीसं थावरतसे कमसो ।।७०६।।

बाणउदीणउदिचाउ सत्त एमेव बंधयं अंसा ।
सुहुमिदरे वियलतिये उदया इगिवीसयादि चाउपणयं ।।७०७।।

इगिछक्कडणववीसत्तीसिगितीसं च वियलठाणं वा ।
बंधतियं सण्णिदरे भेदो बंधदि हु अडवीसं ।।७०८।।

सण्णिम्मि सव्वबंधो इगिवीसप्पहुदिएक्कतीसंता ।
चाउवीसूणा उदओ दसणवपरिहीण सव्वय सत्तं ।।७०९।।

दोछक्कट्ठचउक्क णिरयादिसु णामबंधठाणाणि ।
पणणवएगारपणय तिपंचबारस चउक्कं च ।।७१०।।

एगे वियले सयले पण पण अड पंच छक्केगार पणं ।
पणतेरं बंधादी सेसादेसेवी इदि णेयं ॥७११॥

णिरयादिणामबंधा उगुतीसंतीसमादिमं छक्कं ।
सव्वंपणछक्कुत्तरवीसुगुतीसंदुगं होदि ॥७१२॥

उदयाइगिपणसगअडणववीस एक्कवीसपहुदिणवं ।
चउवीसहीणसव्वं इगिपणसगअट्ठणवीसं ॥७१३॥

सत्ता बाणउदितियं बाणउदीणउदिअट्ठसीदितियं ।
वासीदिहीणसव्वं तेणउदि चउक्कयं होदि ॥७१४॥

इगिविगल बंधठाण अडवीसूणं तिवीसछक्कं तु ।
सयलं सयले उदयां एगे इगिवीस पंचयं वियले ॥७१५॥

इगिछक्कडणववीसं तीसदु चउवीसहीण सव्वुया ।
णऊदि चऊ बाणउदी एगे वियले य सव्वयं सयले ॥७१६॥

पुढवीयादी पंचसु तसे कमा बंधउदयसत्ताणि ।
एय वा सयलं वा तेउदुगे णत्थि सगवीसं ॥७१७॥

मणिवचि बंधुदयंसा सव्वं णववीसतीसइगितीसं ।
दसणवदुसीदिवज्जिदसव्व ओरालतम्मिस्से ॥७१८॥

सव्वंतिवीसछक्कं पणुवीसादेक्कतीसपेरंतं ।
चउछक्कसत्तवीसं दुसुसव्वंदसयणवहीणं ॥७१९॥

वेगुव्वे तम्मिस्से बंघसा सुरगदीव उदयो दु ।
सगवीसतिस पणजुदवीसा आहारतम्मिस्से ॥७२०॥

बंधतियं अडवीसदु वेगुव्वं वा तिणउदिवाणउदी ।
कम्मे वीसदुगुदओ ओरालियमिस्सयं व बंधंसा ॥७२१॥

वेदकसाये सव्वं इगिवीसणवं तिणउदि एक्कारं ।
थीपुरिसे चउवीसं सीदडसदरी ण थीसंढे ॥७२२॥

अण्णाणदुगे बंधो आदीछ णउंसयं व उदयो दु ।
सत्तं दुणउदि छक्कं विभंगबंधा हु कुमदिं व ॥७२३॥

उदया उणतीसतियं सत्ता णिरयं व मदिसुदोहीए ।
अडवीसपंच बधा उदयो पुरिसं व अट्ठेव ॥७२४॥

पढमचऊ सीदि सत्तं मणपज्जवम्हि बंधंसा ।
ओहिं व तीसमुदयं ण हि बंधो केवलेणाणे ॥७२५॥

उदओ सव्वं चउपणवीसूणं सीदिछक्कयं सत्तं ।
सुदमिव सामायियदुगे उदओ पणुवीससत्तवीसचऊ ॥७२६॥

परिहारे बंधतियं अडवीसचउ ग तीससादिचऊ ।
सुहुमे एक्का बधो मणं व उदयसंठाणाणि ॥७२७॥

जहखादे बंधतियं केवलयं वा तिणउदि चउ अत्थि ।
देसे अडवीसदुगं तीसदु तेणउदि चारि बंधतियं ॥७२८॥

अविरमणे बंधुदया कुमदिं व तिणउदि सत्तयं सत्तं ।
पुरिसं वा चक्खिदरे अत्थि अचक्खुम्मि चउवीसं ॥७२९॥

ओहिदुगे बंधतियं तण्णाणं वा किलिट्ठलेस्सतिए ।
अविरमणं वा सुहजुगलुदओ पुंवेदयं व हवे ॥७३०॥

अडवीस बंधा पणछव्वीसं च अत्थि तेउम्मि ।
पढमचउक्कं सत्तं सुक्के ओहिं व वीसयं चुदओ ॥७३१॥

भव्वे सव्वमभव्वे बंधुदया अविरदव्व सत्तं तु ।
णउदिचऊ हारबंधणदुगहीणं सुदमिवुवसमे बंधो ॥७३२॥

उदया इगिपणवीसं णववीसतियं च पढमचउ सत्तं ।
उवसम इव बंधसा वेदगसम्मे ण इगिबंधो ॥७३३॥

उदयामदिं व खइये बंधादी सुदमिवत्थि चरिमदुगं ।
उदयंसे वीसं च य साणे अडवीसतियबंधो ॥७३४॥

उदया इगिवीसचऊ णववीसतिय च णउदिय सत्त ।
मिस्से अडवीसदुगं णववीसतिय च बधुदया ॥७३५॥
बाणउदिणउदिसत्ता मिच्छे कुमदि व होदि बंधतियं ।
पुरिसा वा सण्णीये इदरे कुमदि व णत्थि इगिणउदी॥७३६॥
आहारे बंधुदया संढं वा णवरि णत्थि इगिवीसं ।
पुरिसा वा कम्मसा इदरे कम्मं व बंधतियं ॥७३७॥
अत्थि णवट्ठ य दुदुओ दसणवसत्तं च विज्जदे एत्थ ।
इदि बंधुदयप्पहुदी सुदणामे सारमादेसे ॥७३८॥
चारु सुदंसणधरणे कुवलयसलोसगे समत्थेण ।
माधवचंदेण महावीरेणत्थे ग वित्थरिदो ॥७३९॥
णवपंचोदयसत्ता तेवीसे पण्णुवीस छव्वीसे ।
अट्ठचदुरट्ठवीसे णवसत्तुगुतीसम्मि ॥७४०॥
एगेगं इगितीसे एगे एगुदयमट्ठसत्ताणि ।
उवरदबंधे दस दस उदयंसा होंति णियमेण ॥७४१॥
उदयंसट्ठाणाणि य सामित्तादो दु जाणि दव्वाणि ।
बंधुदयं च णिरुंभिय सत्तस्य य सभवगदोए ॥७४१/१॥
तियपणछव्वीसबंधे इगिवीसादेक्कतीसचरिमुदया ।
बाणउदी णउदिचऊ सत्त अडवीसगे उदया ॥७४२॥
पुव्वं व ण चउवीसा बाणउदि चउक्कसत्तमुगुतीसे ।
तीसे पुव्वं वुदया पढमिल्लं सत्तयं सत्तं ॥७४३॥
इगितीसे तीसुदओ तेणउदी सत्तगं हवे एगे ।
तीसुदओ पढमचऊ सीदादिचउक्कमवि सत्तं ॥७४४॥
उवरदबंधेसुदया चउपणवीसूण सव्वयं होदि ।
सत्तं पढमचउक्कं सीदादीछक्कमवि होदि ॥७४५॥
बीसादिसु बंधसा णभट्ठ छण्णव पणपणं च छसत्तं ।
छण्णव छड दुसु छद्दस अट्ठदस छक्कछक्क गभति दुसु ॥७४६॥

बीसुदये बंधो ण हि उणसीदीसत्तसत्तरी सत्तं ।
इगिवीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतया बंधा ।।७४७।।

सत्तं तिणउदिपहुदी सीदंता अट्ठसत्तरी य हवे ।
चउवीसे पढमतियं णववीसीतीसयं बंधो ।।७४८।।

बाणउदी णउदिचऊसत्तंपणछस्सगट्ठणवीसे ।
बंधा आदिमछक्कं पढमिल्लं सत्तयं सत्तं ।।७४९।।

ते णवसगसदरिजुदा आदिमछस्सीदि अट्ठसदरीहिं ।
णवसत्तसत्तरीहिं सीदि चउक्केहिं सहिदाणि ।।७५०।।

तीसे अठ्ठवि बंधो ऊणतीसं व होदि सत्ता तु ।
इगितीसे तेवीसप्पहुदीतीसंतयं बंधो ।।७५१।।

सत्तं दुणउदिणउदीतिय सदिडहत्तरी य णवगट्ठे ।
बंधो ण सीदिपहुदीसुसमविसमं सत्तमुद्दिट्ठं ।।७५२।।

सत्तो बंधुदया चदुसग सगणव चदुसग च सगणवयं ।
छण्णव पणणव पणचदुसिगिछक्कं ण भेक्कं सुण्णेगं ।।७५३।।

तेण उदीए बंधो उगुतीसादीचउक्कमुदओ दु ।
इगिपणछस्सगअट्ठयणववीसं तीसयं णेयं ।।४५४।।

बाणउदीए बधा इगितीसूणाणि अट्ठाणाणि ।
इगिवीसादीएक्कत्तीसंता उदयठाणाणि ।।७५५।।

इगिणवदीए बधा अडवीसत्तिदयमेक्कयं चुदओ ।
तेणउदिं वा णउदीबंधा बाणउदिय व हवे ।।७५६।।

चरिमदुवीसूणुदओ तिसु दुसु बंधा छ तुरियहीण च ।
बासीदी बधुदया पुव्वं विगिवीसचत्तारि ।।७५७।।

सीदादिचउसु बंधा जसकित्ती समपदे हवे उदओ ।
इगिसगणवधियवीसं तीसेक्तीसणवगं च ।।७५८।।

वीसं छडणववीस तीसं छट्ठ च विसमठाणुदया ।
दसणवगे ण हि बंधो कमेण णवश्रट्ठयं उदश्रो ॥७५९॥
तेवीस बंधगे इगिवीसणवुदयेसु श्रादिमचउक्के ।
बाणउदिणउदि अडचउबासीदी सत्तठाणाणि ॥७६०॥
तेणुवरिम पंचुदये ते चेवंसा विवज्ज बासीदिं ।
एवं पणछव्वीसे अडवीसे एक्कवीसुदये ॥७६१॥
बाणउदिणउदि सत्तं एवं पणुवीसयादि पचुदये ।
पणसगवीसे णउदी विगुव्वणे अत्थिणाहारे ॥७६२॥
तेण णभिगितीसुदये बाणउदि चउक्कमेक्कतीसुदये ।
णवरि ण इगिणउदिपदं णववीसिगिवीसबंधुदये ॥७६३॥
तेणवदि सत्तसत्तं एवं पणछक्कवीसठाणुदये ।
चउवीसे बाणउदी णउदिउक्कं च सत्तपदं ॥७६४॥
सगवीस चउक्कुदये तेणउदीछक्कमेवमिगितीसे ।
तिगिणउदी ण हि तीसे इगिपणसगश्रट्ठणवयवीसुदये
॥७६५॥
तेणउदि छक्कसत्तं इगिपणवीसेसु अत्थि बासीदी ।
तेण छचउवीसुदये बाणउदी णउदिचउसत्तं ॥७६६॥
एवं खिगितीसे ण हि बासीदीएक्कतीसबंधेण ।
तीसुदये तेणउदी सत्तपद एक्कमेव हवे ॥७६७॥
इगिबंधट्ठाणेण दु तीसट्ठाणोदये णिरूंधम्मि ।
पढमचऊसीदिचऊ सत्तट्ठाणाणि णामस्स ॥७६८॥
तेवीसबंधठाणे दुखणउदड चदुरसीदि सत्तपदे ।
इगिवीसादिणउदश्रो बासीदे एक्कवीसचऊ ॥७६९॥
एव पणछव्वीसे अडवीसे बंधगे दुणउदसे ।
इगिवीसादिणवुदया चउवीसट्ठाणपरिहीणा ॥७७०॥

इगिणउदीए तीसं उदओ णउदीए तिरियसण्णि वा ।
अडसोदीए तीसदु णववीसे बंधगे तिणउदीए ॥७७१॥
इगिवीसादट्ठुदओ चउवीसूणो दुणउदिणउदितिये ।
इगिवीसणविगिणउदे णिरयं व छव्वीसतीसधिया ॥७७२॥
बासीदे इगिचउपणछव्वीसा तीसबाधतिगिणउदी ।
सुरगि दुणउदिणउदी चउसुदओ ऊणतीसं वा ॥७७३॥
इगितीस बंधठाणे तेणउदे तीसमेव उदयपद ।
इगिबंध तिणउदिचऊ सीदिचउक्केवितीसुदओ ॥७७४॥
इगिवीसट्ठाणुदये तिगिणउदे णवयवीसदुगबाधे ।
तेण दुखणउदि सत्तो आदिमछक्कं हवे बंधो ॥७७५॥
एवमडसीदितिदए ण हि अडवीसा पुणो वि चउवीसे ।
दुखणउदडसीदितिए सत्ते पुव्वं व बंधपदं ॥७७६॥
पणवीसे तिगिणउदे एगुणतीस दुगं दुणउदीए ।
आदिमछक्क बंधो णउदिचउक्केवि णऽडवीसं ॥७७७॥
छव्वीसे तिगिणउदे उणतीसं बाध दुगखणउदीए ।
आदिमछक्कं एवं अडसीदितिए ण अडवीसं ॥७७८॥
सगवीसे तिगिणउदे णववीसदुबंधयं दुणउदीए ।
आदिमछण्णउदितिए एयं अडवीसयं णत्थि ॥७७९॥
अडवीसे तिगिणउदे उणतीसदु दुजुदजउदिणउदितिए ।
बंधो सगवीसं वा णउदीए अत्थि णडवीसं ॥७८०॥
अडवीसमिवुणतीसे तीसे तेणउदिसत्तगे बंधो ।
णववीसेक्कत्तीसं इगिणउदी अट्ठवीसदुगं ॥७८१॥
तेण दुणउदे णउ दे अडसीदे बंधमादिमं छक्कं ।
चुलसीदेवि य एवं णवरि ण अडवीसबंधपदं ॥७८२॥

तीसुदयं विगितीसे सजोग्गबाणउदिणउदितिय सत्तो ।
उवसंतचउक्कुदये सत्तो बंधस्स ण वियारो ॥७८३॥

णामस्स य बंधादिसु दुतिसजोगा परूविदा एव ।
सुदवणवसंतगुणगणसायरचंदेण सम्मदिणा ॥७८४॥

णमिऊण अभयणंदिं सुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं ।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं ॥७८५॥

मिच्छत्तं अविरमणं कसायजोगा य आसवा होंति ।
पण बारस पणुवीसं पण्णारसा होंति तब्भेया ॥७८६॥

चदुपच्चइगो बंधो पढमे णंतरतिगे तिपच्चइगो ।
मिस्सगबिदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि ॥७८७॥

उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं ।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्हं होंति कम्माणं ॥७८८॥

पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य ।
चदुवीसा बावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति ॥७८९॥

थूलेसोलसपहुदी एगूणं जाव होदि दसठाणं ।
सुहुमादि सु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव ॥७९०॥

अवरादीणं ठाणं ठाणपयारा पयार कूडा य ।
कूडुच्चारणभंगा पंचविहा होंति इगिसमये ॥७९१॥

दस अट्ठारस दसयं सत्तर णव सोलस च दोण्हंपि ।
अट्ठ य चोद्दस पणयं सत्ततिये दुति दुगेगमेगमदो ॥७९२॥

एक्कं च तिण्णि पंच य हेट्ठुवरीदो दु मज्झिमे छक्कं ।
मिच्छेठाणपयारा इगिदुगमिदरेसु तिण्णि देसोत्ति ॥७९३॥

भयदुगरहियं पढमं एक्कदरजुदं दुसहियमिदि तिण्हं ।
सामण्णातियकूडा मिच्छा अणहीणतिण्णिवि य ॥७९४॥

मिच्छत्तारणण्णदरं एक्केणक्खेण एक्ककायादी ।
तत्तो कसायवेददुजुगलाणेक्कं च जोगाणं ॥७९५॥

अणरहिदसहिदकूडे बावत्तरि ण तेणउदी ।
सट्ठी धुवा हु मिच्छे भयदुगसंजोगजा अधुवा ॥७९६॥

चउवीसट्ठारसयं तालं चोद्दस असीदि सोलसयं ।
छण्णउदी बारसयं बत्तीसं बिसद सोल बि च ॥७९७॥

सोलस बिसदं कमसो धुवगुणगारा अपुव्वकरणोत्ति ।
अद्धुवगुणिदे भंगा धुवभंगाणं ण भेदादो ॥७९८॥

छप्पंचादेयंतं रूवुत्तरभाजिदे कमेण हदे ।
लद्धं मिच्छ चउक्के देसे संजोगगुणगारा ॥७९९॥

पडिणीगमंतराए उवघादो तप्पदोसणिण्हवणे ।
आवरणदुगं भूयो बंधदि उच्चासणाएवि ॥८००॥

भूदाणुकंपवदजोगजुजिदो खंतिदाणगुरुभत्तो ।
बन्धदि भूयो सादं विवरीयो बंधदे इदरं ॥८०१॥

अरहंदसिद्धचेदियतवसुदगुरुधम्मसंघपडिणीगो ।
बंधदि दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेण ॥८०२॥

तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणदो रागदोससंतत्तो ।
बंधदि चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघादी ॥८०३॥

मिच्छो हु महारम्भो णिस्सीलो तिव्वलोहसंजुत्तो ।
णिरयाउगं णिबंधदि पावमदी रुद्दपरिणामी ॥८०४॥

उम्मगदेसगो मग्गणासगो गूढहियय मादिल्लो ।
सठसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधदे जीवो ॥८०५॥

पयडीए तणुकसाओ दाणरदी सीलसंजमविहीणो ।
मज्झिम गुणेहिं जुत्तो मणुवाउं बंधदे जीवो ॥८०६॥

पयडीए तणुकसाओ दाणरदी सीलसंजमविहीणो ।
मज्झिमगुणेहि जुत्तो मणुवाउं बंधदे जीवो ।।८०६।।

अणुवदमहव्वदेहि य बालतवाकामणिज्जराए य ।
देवाउगं णिबंधदि सम्मादिट्ठी य जो जीवो ।।८०७।।

मणवयणकायवक्को माइल्लो गारवेहि पडिबद्धो ।
असुहं बंधदि णामं तप्पडिवक्खेहि सुहणामं ।।८०८।।

अरहंतादिसु भत्तो सुत्तरुची पढणुमाणगुणपेही ।
बंधदि उच्चागोदं विवरीदो बंधदे इदरं ।।८०९।।

पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जेदि अंतरायं ण लहदि जं इच्छियं जेण ।।८१०।।

गोम्मटजिणिंदचंदं पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं ।
गोम्मटसंगहविसयं भावगयं चूलियं वोच्छं ।।८११।।

जेहिं दु लक्खिज्जंते उवसमआदीसु जणिद भावेहिं ।
जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं ।।८१२।।

उवसम खइओ मिस्सो ओदयिगो पारिणामिगो ।
भेदा दुग णव तत्तो दुगणिगवीसं तियं कमसो ।।८१३।।

कम्मुवसम्मि उवसमभावो खीणम्मि खइयभावो दु ।
उदयो जीवस्स गुणो खओवसमिओ हवे भावो ।।८१४।।

कम्मुदयजकम्मिगुणो ओदयियो तत्थ होदि भावो दु ।
कारणणिरवेक्खभवो सभाविगो होदि परिणामो ।।८१५।।

उवसमभावो उवसम-सम्मं चरणं च तारिसं खइओ ।
खाइग णाणं दंसण सम्मचरित्तं च दाणादी ।।८१६।।

खाओवसमियभावो चउणाण तिदंसणं तिअण्णाणं ।
दाणादि पंच वेदगसरागचारित्तदेसजमं ।।८१७।।

श्रोदयिया पुण भावा गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं ।
लेस्सासिद्धासंजमश्रण्णाणं होंति इगिवीसं ॥८१८॥

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति परिणामा ।
इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहू जाणे ॥८१९॥

श्रोघादेसे संभवभावं मूलुत्तरं ठवेदूण ।
पत्तेये श्रविरुद्धे परसजोगेवि भंगा हु ॥८२०॥

मिच्छतिये तिचउक्के दोसुवि सिद्धे वि मूलभावा हु ।
तिग पण पणगं चउरो तिग दोण्णि य संभवा होंति ॥८२१॥

तत्थेव मूलभंगा दस छव्वीसं कमेण पणतीसं ।
उगुवीसं दस पणग ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं ॥८२२॥

उत्तरभंगा दुविहा ठाणगया पदगयात्ति पढमम्हि ।
सगजोगेण य भंगाणयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं ॥८२३॥

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्तेय मिस्सठाणाणि ।
तिग दुग चउरो एक्कं ठाणं सव्वत्थ श्रोदयियं ॥८२४॥

तत्थावरणज भावा पणछस्सत्तेव दाणपंचेव ।
श्रयदचउक्के णेदगसम्मं देसम्मि देसजमं ॥८२५॥

राग जमं तु पमत्ते इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि ।
णेभंगेण विहीणं चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे ॥८२६॥

श्रवधिदुगेण विहीणं मिस्सतिये होदि श्रण्णठाणं तु ।
मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो श्रण्णे ॥८२७॥

लिंगकसाया लेस्सा संगुणिदा चदुगदीसु श्रविरुद्धा ।
बारस बावत्तरियं तत्तियमेत्तं च श्रडदालं ॥८२८॥

णवरि विसेसं जाणे सुर मिस्से श्रविरदे य सुहलेस्सा ।
चदुवीस तत्थ भंगा श्रसहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥८२९॥

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा ।
चाकिरसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु ॥८३०॥

खाइयअविरदसम्मे चदु सोल बिहत्तरी य बारं च ।
तद्देसो मणुसेव य छत्तीसा तब्भवा भंगा ॥८३१॥

परिणामो दुट्ठाणो मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु ।
सम्मे अण्णं सम्मं चारित्ते णत्थि चारित्तं ॥८३२॥

मिच्छदुगयदचउक्के अट्ठट्ठाणेण खायियठाणेण ।
जुद परजोगजभंगा पुध आणिय मेलिदव्वा हु ॥८३३॥

उदयेणक्खे चढिदे गुणगारा एव होंति सव्वत्थ ।
अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे णेवा ॥८३४॥

दुसु दुसु देसे दोसुवि चउरुत्तरदुसदगासिदिसहिदसदं ।
बावत्तरिछत्तीसा बारमपुव्वो गुणिज्जपमा ॥८३५॥

बारचउतिदुगमेक्क थूले तो इगि हवे अजोगित्ति ।
पुण बार बार सुण्णं चउसद छत्तीस देसोत्ति ॥८३६॥

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा ।
णव छब्बारस तीसं वीसं वीसं चउक्कं च ॥८३७॥

पुणरवि देसोत्ति गुणो तिदुणभछछक्कयं पुणो णेवा ।
पुव्वपदे पंचयमेगारमुगुतीसमुगुवीसं ॥८३८॥

उगुवीस तियं तत्तो तिदुणभछछक्कयं च देसोत्ति ।
चदुसुवसमगेसु गुणा तालं रूऊणया णेवा ॥८३९॥

मिच्छादिठाणभंगा अट्ठारसया हवंति तेसीदा ।
बारसयं पणवण्णा सहस्ससहिया हु पणसीदा ॥८४०॥

रूवहियडवीससया सगणउदा दससया णवेणहिया ।
एक्कारसया दोण्हं खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥८४१॥

ओदयिया पुण भावा गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं ।
लेस्सासिद्धासंजमअण्णाणं होंति इगिवीसं ॥८१८॥

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति परिणामा ।
इदि मूलुत्तरभावा भंगवियप्पे बहू जाणे ॥८१९॥

ओघादेसे संभवभावं मूलुत्तरं ठवेदूण ।
पत्तेये अविरुद्धे परसजोगेवि भंगा हु ॥८२०॥

मिच्छतिये तिचउक्के दोसुवि सिद्धे वि मूलभावा हु ।
तिग पण पणगं चउरो तिग दोण्णि य संभवा होंति ॥८२१॥

तत्थेव मूलभंगा दस छव्वीसं कमेण पणतीसं ।
उगुवीसं दस पणगं ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं ॥८२२॥

उत्तरभंगा दुविहा ठाणगया पदगयात्ति पढमम्हि ।
सगजोगेण य भंगाणयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं ॥८२३॥

मिच्छदुगे मिस्सतिये पमत्तसत्तेय मिस्सठाणाणि ।
तिग दुग चउरो एक्कं ठाणं सव्वत्थ ओदयियं ॥८२४॥

तत्थावरणज भावा पणछस्सत्तेव दाणपंचेव ।
अयदचउक्के वेदगसम्मं देसम्मि देसजमं ॥८२५॥

राग जमं तु पमत्ते इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि ।
णेभंगेण विहीणं चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे ॥८२६॥

धिदुगेण विहीणं मिस्सतिये होदि अण्णठाणं तु ।
मणणाणेणवधिदुगेणुभयेणूणं तदो गे ॥८२७॥

लिंगकसाया लेस्सा संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा ।
बारस बावत्तरियं तत्तियमेत्तं च दालं ॥८२८॥

णवरि विसेसं जाणे सुर मिस्से अविरदे य सुहलेस्सा ।
चदुवीस तत्थ भंगा असहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥८२९॥

चक्खूण मिच्छसासणसम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा ।
चाकिरसायतिलेस्साणब्भासे तत्थ भंगा हु ॥८३०॥

खाइयअविरदसम्मे चदु सोल बिहत्तरी य बारं च ।
तद्देसो मणुसेव य छत्तीसा तब्भवा भंगा ॥८३१॥

परिणामो दुट्ठाणो मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु ।
सम्मे अण्णं सम्मं चारित्ते णत्थि चारित्तं ॥८३२॥

मिच्छदुगयदचउक्के अट्ठट्ठाणेण खायियठाणेण ।
जुद परजोगजभंगा पुध आणिय मेलिदव्वा हु ॥८३३॥

उदयेणक्खे चढिदे गुणगारा एव होंति सव्वत्थ ।
अवसेसभावठाणेणक्खे संचारिदे खेवा ॥८३४॥

दुसु दुसु देसे दोसुवि चउरुत्तरदुसदगासिदिसहिदसदं ।
बावत्तरिछत्तीसा बारमपुव्वो गुणिज्जपमा ॥८३५॥

बारचउतिदुगमेक्क थूले तो इगि हवे अजोगित्ति ।
पुण बार बार सुण्णं चउसद छत्तीस देसोत्ति ॥८३६॥

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा ।
णव छब्बारस तीसं वीसं वीसं चउक्कं च ॥८३७॥

पुणरवि देसोत्ति गुणो तिदुणभछछक्कयं पुणो खेवा ।
पुव्वपदे अड पंचयमेगारमुगुतीसमुगुवीसं ॥८३८॥

उगुवीस तियं तत्तो तिदुणभछछक्कयं च देसोत्ति ।
चदुसुवसमगेसु गुणा तालं रूऊणया खेवा ॥८३९॥

मिच्छादिठाणभंगा अट्ठारसया हवंति तेसीदा ।
बारसयं पणवण्णा सहस्ससहिया हु पणसीदा ॥८४०॥

रूवहियडवीससया सगणउदा दससया णवेणहिया ।
एक्कारसया दोण्हं खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥८४१॥

पुव्वं पंचणियट्टीसुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा ।
तत्तीयमेत्तो दसश्रडछच्चदुचदुचदुय एगूणं ।।८४२।।

उवसामगेसु दुगुणं रूवहिय होदि सत्त जोगिम्हि ।
सत्तेव श्रजोगिम्हि य सिद्धे तिण्णेव भंगा हु ।।८४३।।

दुविहा पुण पदभंगा जादिगपदसव्वपद भवात्ति हवे ।
जातिपदखइगमिस्मे पिडेंव य होदि सगजोगो ।।८४४।।

श्रयदुवसमग चउक्के एक्कं दो उवसमस्स जादिपदो ।
खइगपदं तत्थेक्कं गे जिणसिद्धगेसु दु पण चदू ।।८४५।।

मिच्छतिये मिस्सपदा तिण्णि य श्रयदम्हि होंति चत्तारि ।
देसतिये पंचपदा तत्तो खीणोत्ति तिण्णिपदा ।।८४६।।

मिच्छे श्रट्ठुदयपदा ते तिसु सत्तेव तो सवेदोत्ति ।
छिस्सुहुमोत्ति य पणगं खीणोत्ति जिणेसु चदुतिदुगं ।।८४७।।

मिच्छे परिमाणपदा दोण्णि य सेसेसु होदि एक्कं तु ।
जाति पदं पडि वोच्छं मिच्छादिसु भंगपिंड तु ।।८४८।।

श्रट्ठ गुणिज्जा वामे तिसु सग छच्चदुसु छक्क पणगं च ।
थूले सुहुमे पणगं दुसु चउतियदुगमदो सुण्णं ।।८४९।।

बारट्ठट्ठछवीसं तिसु तिसु बत्तीसयं च चउवीसं ।
तो तालं चउवीसं गुणगारा बार बार णभं ।।८५०।।

वामे चउदस दुसु दस श्रडवीसं तिस हवंति चोत्तीसं ।
ति छव्वीस दुदालं खेवा छब्बीस बार बार णवं ।।८५१।।

एक्कारं दसगुणियं दुसु छावट्ठी दसाहियं विसयं ।
तिसु छब्बीसं बिसयं वेदुवसामोत्ति दुसय बासीदी ।।८५२।।

बादाल वेण्णिसया तत्तो सहुमोत्ति दसय दोसहियं ।
उवसंतम्मि य भंगा खवगेस जहाकमं वोच्छं ।।८५३।।

सत्तरसं दसंगुणिदं वेदित्ति समाहियं तु छादालं ।
सहुमोत्ति खीणमोहे बावीससयं हवे भंगा ॥८५४॥

अडदालं छत्तीसं जिणेसु सिद्धेसु होंति णव भंगा ।
एत्तो सव्वपदं पडि मिच्छादिसु सुणह वोच्छामि ॥८५५॥

भव्विदराणण्णदरं गदीण लिंगाण कोहपहुदीणं ।
इगिसमये लेस्साणं सम्मत्ताणं च णियमेण ॥८५६॥

पत्तेयपदा मिच्छे पण्णरसा पंच चेव उपजोगा ।
दाणादी ओदइये चत्तारि य जीवभावो य ॥८५७॥

पिंडपदा पंचेव य भव्विदरदुगं गदी य लिंग च ।
कोहादी लेस्सा वि य इदि बीस पदा हु उड्ढेण ॥८५८॥

पत्तेयाणं उवरिं भव्विदरदुगस्स होदि गदि लिंगे ।
कोहादि लेस्ससम्मत्ताणं रयणा तिरिच्छेण ॥८५९॥

एक्कादी दुगुणकमा एक्केक्कं रूधिऊण हेट्ठम्मि ।
पदसंजोगे भंगा गच्छं पडि होंति उवरुवरिं ॥८६०॥

इट्ठ पदे रूऊणे दुगसावग्गम्मि होदि इट्ठधणं ।
असरित्थाणतधणं दुगुणेगूणे सगीयसव्वधणं ॥८६१॥

तेरिच्छा हु सरित्था अविरददेसाण खयियसम्मत्तं ।
मोत्तूण संभवं पडि खयिगस्सवि आणए भंगे ॥८६२॥

उड्ढतिरिच्छपदाणं दव्वसमासेण होदि सव्वधणं ।
सव्वपदाणं भंगे मिच्छादिगुणेसु णियमेण ॥८६३॥

मिच्छादीण दुति दुसु अपुव्वअणियट्टिखवगसमगेसु ।
सुहुमुवसमगे संते सेसेपत्तेयपदसंख ॥८६४॥

पण्णरसोलट्ठारस वीसुगुवीसं च वीसमुगुवीसं ।
इगिवीसावीसचउदसतेरसपणगं जहाकमसो ॥८६५॥

मिच्छादिट्ठिप्पहुदिं खीणकसाओत्ति सव्वपद भंगा ।
पण्णट्ठि च सहस्सा पंचसया होंति छत्तीसा ॥८६६॥

तग्गुणगारा कमसो पणणउदेयत्तरीसयाण दलं ।
ऊणट्ठारसयाणं दलं तु सत्तहियसोलसयं ॥८६७॥

तेवत्तरिं सयाइं सत्तावट्ठी य अविरदे सम्मे ।
सोलस चेव सयाइं चउसट्ठी खयियसम्मस्स ॥८६८॥

ऊणत्तीससयाइं एक्काणउदी य देसविरदम्मि ।
छावत्तरि पंचसया खइयणरे णत्थि तिरियम्मि ॥८६९॥

इगिदालं च सयाइं चउदाल च य पमत्त इदरे य ।
पुव्वुवसामगे वेदाणियट्टि भागे सहस्समट्ठूणं ॥८७०॥

अडसट्ठी एक्कसयं कसायभागम्मि सुहुमगे संते ।
अडदाल चउवीसं णेसु जहाकमं वोच्छं ॥८७१॥

अडदालं चारिसयापुव्वे अणियट्टिवेदभागे य ।
सीदी कसायभागे तत्तो बत्तीस सोल तु ॥८७२॥

जोगिम्मि अजोगिम्मि य बेसदछप्पण्णयाण गुणगारा ।
चउसट्ठी बत्तीसा गुणगारिणदेक्कूणया सव्वे ॥८७३॥

सिद्धे सु सुद्धभंगा एक्कत्तीसा हवंति णियमेण ।
सव्वपद पडि भंगा असाहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥८७४॥

आदेसेवि य एवं संभवभावेहि ठाणभंगाणि ।
पदभंगाणि य कमसो अव्वामोहेण आणेज्जो ॥८७५॥

असिदिसदं किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी ।
सत्तट्ठणाणीणं वेणयियाणं तु बत्तीसं ॥८७६॥

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तणेण य णवत्था ।
कालीसरप्पणियदिसहावेहि य ते हि भंगा हु ॥८७७॥

अत्थि सदो परदोवि य णिच्चाणिच्चत्तरोण य णवत्था ।
एसिं अत्था सुगमा कालादीणं तु वोच्छामि ॥८७८॥

कालो सव्वं जणयदि कालो सव्वं विणस्सदे भूदं ।
जागत्ति हि सुत्तेसुवि ण सक्कदे वंचिदुं कालो ॥८७९॥

अण्णाणी हु अणीसो अप्पा तस्स च सुहं च दुक्खं च ।
सग्गं णिरयं गमणं सव्वं ईसरकयं होदि ॥८८०॥

एक्को चेव महप्पा पुरिसो देवो य सव्ववावी य ।
सव्वंगणिगूढोवि य सचेदणो णिग्गुणो परमो ॥८८१॥

तत्तु जदा जेण जहा जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा ।
तेण तहा तस्स हवे इदि वादो णियदिवादो दु ॥८८२॥

को करदि कंटयाणं तिक्खत्त मियविहंगमादीणं ।
विविहत्तं तु सहाओ इदि सव्वंपि यसहाओत्ति ॥८८३॥

णत्थि सदो परदोवि य सत्तपयत्था य पुण्णपाऊणा ।
कालादियाविभंगा सत्तरि चदुपंतिसंजादा ॥८८४॥

णत्थि य सत्तपदत्था णियदीदो कालदो तिपतिभवा ।
चोद्दस इदि णत्थित्ते अक्किरियाणं च चुलसीदी ॥८८५॥

को जाणदि णवभावे सत्तमसत्तं दयं अवच्चमिदि ।
अवयणजुद सत्तसयं इदि भंगा होंति तेसट्ठी ॥८८६॥

को जाणदि सत्तचऊ भावं सुद्धं खु दोण्णिपंतिभवा ।
चत्तारि होंति एवं अण्णाणीणं तु सत्तट्ठी ॥८८७॥

मणवयणकायदाणगविणवो सुरणिवइणाणिजदिवुड्ढे ।
बाले मादुपिदुम्मि च कायव्वो चेदि अट्ठचऊ ॥८८८॥

सच्छंददिट्ठीहिं वियप्पियाणी तेसट्ठिजुत्ताणि सयाणि तिण्णि ।
पाखंडिणं वाउलकारणाणि अण्णाणिचित्ताणिहरंति ताणि ॥८८९॥

आलसड्ढो णिरुच्छाहो फलं किंचि ण भुंजदे ।
थणक्खीरादि पाणं व पउरुसेण विणा ण हि ।।८९०।।
दइवमेव परं मण्णे धिप्पउरुसमणत्थयं ।
एसो सालसमुत्तुंगो कण्णो हण्णाइ संगरे ।।८९१।।
संजोगमेवेति वदंति तण्णा णेवेक्कचक्केण रहो पयादि ।
अंधो य पंगू य वणं पविट्ठा ते संपजुत्ता णयरं पविट्ठा ।।८९२।।
सइउट्ठिया पसिद्धी दुव्वारा मेलिदेहिं वि सुरेहिं ।
मज्झिमपण्डवखित्ता माला पञ्चसुवि खित्तेव ।।७९३।।
जावदिया वयणवहा तावदिया चेव होंति णयवादा ।
जावदिया णयवादा तावदिया चेव होंति परसमया ।।८९४।।
परसमयाणं वयणं मिच्छं खलु होदि सव्वहा वयणा ।
जेणाणं पुण वयण सम्मं खु कहंचिवयणादो ।।८९५।।
णमह गुणरयणभूसाण सिद्धंतामियमहद्धि भवभावं ।
वरवीरणंदिचंदं णिम्मलगुणमिदणंदि गुरुं ।।८९६।।
इगिवी गेहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं ।
अधापवत्तं करणं तु करेदि अपमत्तो ।।८९७।।
जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति ।
तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोति णिद्दिट्ठं ।।८९८।।
अंतोमुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा ।
लोगाणम पमा उवरुवरि सरिसवड्ढिगया ।।८९९।।
बावत्तरितिसहस्सा सोलस चउ चारि एक्कयं चेव ।
धणअद्धाणविसेसे तियसंखा होदि संखेज्जे ।।९००।।
आदिधणादो सव्वं पचयधणं संखभाग परिमाणं ।
करणे अधापवत्ते होदित्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं ।।९०१।।

उभयधणे संमिलिदे पदकदिगुणसंखरूवहृपदचयं ।
सव्वधणं तं तम्हा पदकदिसखेण भाजिदे पचयं ॥९०२॥

चयधणहीणं दव्व पदभजिदे होदि आदि परिमाणं ।
आदिम्हि चये उड्ढे पडिसमयधणं तु भावाण ॥९०३॥

पचयधणस्साणयणे पचयं पभवं तु पचयमेव हवे ।
रूऊणपदं तु पदं सव्वत्थवि होदि णियमेण ॥९०४॥

पडिसमयधणेवि पदं पचयं पभवं च होदि तेरिच्छे ।
अणुकट्टिपदं सव्वद्धाणस्य य संखभागो हु ॥९०५॥

अणुकट्टिपदेण हदे पचये पचयो दु होदि तेरिच्छे ।
पचयधणूणं दव्वं सगपदभजिदं हवे आदी ॥९०६॥

आदिम्हि कमे वड्ढदि अणुकट्टिस्स य चयं तु तेरिच्छे ।
इदिउडतिरियरयणा अधापवत्तम्हि करणम्हि ॥९०७॥

अतोमुहुत्तकालं गमिऊण अधापवत्तकरणं तु ।
पढिसमयं सुज्झंता अपुव्वकरणं समल्लियइ ॥९०८॥

छण्णउदिचउसहस्सा अट्ठ य सोलस धण तदद्धाणं ।
परिणाम विसेसोवि य चउ संखापुव्वकरणसंदिट्ठी ॥९०९॥

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
कम उड्ढापुव्वगुणे अणुकट्टी णत्थि णियमेण ॥९१०॥

एकम्हि कालसमये संठाणदीहिं जहा णिवट्टंति ।
णणिवट्टंति तहंवि य परिणामेहिं मिहो जे हु ॥९११॥

होंति अणियट्टिणो ते पडिसमयं जस्सिमेकपरिणामो ।
विमलयरझाणहुदवहसिहाहिं णिद्दड्ढकम्मवणा ॥९१२॥

सिद्धे विसुद्धणिलये पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं कम्मट्ठिदिरयणसब्भावं ॥९१३॥

कम्मसरूवंणागय दव्वे ण य एदि उदयरूवेण ।
रूवेणुदीरणस्स य आबाहा जाव ताव हवे ॥६१४॥

उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडिकोडि उवहीणं ।
वास तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च ॥६१५॥

ाे कोडाकोडिट्ठिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा ।
संखेज्जगुणविहीणं सव्वजहण्णट्ठिदिस्स हवे ॥६१६॥

पुव्वाणं कोडितिभागादासंखेवअद्धओत्ति हवे ।
आउस्स य आबाहा णठदिपडिभागमाउस्स ॥६१७॥

आवलियं आबाहा उदिरणमासिज्ज सत्तकम्माणं ।
परभविय आउगस्स य उदीरणा णत्थि णियमेण ॥६१८॥

आबाहूणिकम्मट्ठिदीणिसेगो दु सत्तकम्माणं ।
आउस्स णिसेगो पुण सगट्ठिदी होदि णियमेण ॥६१९॥

आबाहं वोलाविय पढमणिसेगम्मि देय बहुगं तु ।
ाे विसेसहीणं विदियस्सादिमणिसेओत्ति ॥६२०॥

विदिये विदियणिसेगे हाणी पुव्विल्लहाणि अद्धं तु ।
एवं गुणहाणिं पडि हाणी अद्धद्धयं होदि ॥६२१॥

दव्वं ठिदिगुणहाणीणद्धाणं दलसला णिसेयछिदी ।
अण्णोण्णगुणसलावि य जाणेज्जो सव्वठिदिरयणे ॥६२२॥

तेवट्ठि च सयाइं अडदाला अट्ठ छक्क सोलसयं ।
चउसट्ठि च विजाणे दव्वादीणं च संदिट्ठी ॥६२३॥

दव्वं समयपबद्धं उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव ।
जीवसहत्थणकालो ठिद्धि अद्धा पल्लमिदा ॥६२४॥

मिच्छे वग्गसलायप्पहुदि पल्लस्स पढमसूलोत्ति ।
वग्गहदी चरिमो तच्छिदिसंकलिदं चउत्थो य ॥६२५॥

वग्गसलायेणवहिदपल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु ।
णाणागुणहाणिसला वग्गसलच्छेदणूणपल्लछिदी ॥९२६॥

सव्वसलायाणं जदि पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स ।
किं होदित्ति णिसेये सलाहिदे होदि गुणहाणी ॥९२७॥

दो गुणहाणि पमाणं णिसेगहारो दु होदि तेण हिदे ।
इट्ठे पढमणिसेये विसेसमागच्छदे तत्थ ॥९२८॥

रूऊणण्णोण्णब्भत्थवहिददव्वं च चरिमगुणदव्वं ।
होदि तदो दुगुणकमो आदिमगुणहाणि दव्वोत्ति ॥९२९॥

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयभागहारेण ।
हदगुणहाणि विभजिदे सगसगदव्वे विसेसा हु ॥९३०॥

पचयस्स य संकलणं सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्हि ।
अवणिय गुणहाणिहिदे आदिपमाणं तु सव्वत्थ ॥९३१॥

सव्वासिं पयडीणं णिसेयहारो य एयगुणहाणी ।
सरिसा हवंति णाणागुणहाणिसलाउ वोच्छामि ॥९३२॥

मिच्छत्तस्स य उत्ता उवरीदो तिण्णि तिण्णि समिलिदा ।
अट्ठगुणेणूणकमा सत्तसु रइदा तिरिच्छेण ॥९३३॥

तत्थंतिमच्छिदिस्स य अट्ठम भागो सलायछेदा हु ।
आदि मरासि पमाणं कोडाकोडिपडिबद्धे ॥९३४॥

इगिपंतिगदं पुध पुध अप्पिट्ठेण य हदे हवे णियमा ।
अप्पिट्ठस्स य पंती णाणागुणहाणिपडिबद्धा ॥९३५॥

अप्पिट्ठपंति चरिमो जेत्तियमेत्ताण वग्गमूलाणं ।
छिदिणिवहोत्ति णिहाणिय सेसं च य मेलिदे इट्ठा ॥९३६॥

इट्ठसलायपमाणे दुगसंवग्गे कदे दु इट्ठस्स ।
पयडिस्स य अण्णोण्ण भत्थपमाणं हवे णियमा ॥९३७॥

आवरणवेदणीये विग्घे पल्लस्स बिदियतदियपदं ।
णामागोदे बिदियं संखातीदं हवंतित्ति ॥९३८॥
आउस्स य संखेज्जा तप्पडिभागा हवंति णियमेण ।
इदि अत्थपदं जाणिय इट्ठठिदिस्साणए मदिमं ॥९३९॥
उक्कस्सट्ठिदिबंधे सयलाबाहा हु सव्वठिदिरयणा ।
तक्काले दीसदि तो धोधो बंधट्ठिदीणं च ॥९४०॥
आबाधाणं बिदियो तदियो कमसो हि चरमसमयो दु ।
पढमो बिदियो तदियो कमसो चरिमो णिसेओ दु ॥९४१॥
समयपबद्धपमाणं होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि ।
पडि यं बंधुदओ एक्को समयप्पबद्धो दु ॥९४२॥
सत्तं समयपबद्धं दिवड्ढगुणहाणि ताडियं ऊणं ।
तियकोणसरूवट्ठिददव्वे मिलिदे हवे णियमा ॥९४३॥
उवरिमगुणहाणीणं धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं ।
पढमे समयपबद्धं ऊणकमेणट्ठिया तिरिया ॥९४४॥
अंतोकोडाकोडीट्ठिदित्ति सव्वे णिरंतरट्ठाणा ।
उक्कस्सट्ठाणादो सण्णिस्स य होंति णियमेण ॥९४५॥
संखेज्जसहस्साणिवि सेढीरूढम्मि सांतरा होंति ।
सगसगअवरोत्ति हवे उक्कसादोदु सेसाणं ॥९४६॥
आउट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा ।
णामागोदे सरिसं आवरण दु तदियविग्घे य ॥९४७॥
सव्वुवरि मोहणीये असंखगुणिदक्कमा हु गुणगारो ।
पल्लासंखेज्जदिमो पयडिसमाहार मासेज्ज ॥९४८॥
अवरट्ठिदि बंधज्झवसाणट्ठाणा असंखलोगमिदा ।
अहियकमा उक्कस्सट्ठिदि परिणामोत्ति णियमेण ॥९४९॥

अहियागमणणिमित्तं गुणहाणी होदि भागहारो दु ।
दुगुणं दुगुणं वड्ढी गुणहाणि पडि कमेण हवे ॥९५०॥

ठिदि गुणहाणिपमाणं अज्झवसाणम्मि होदि गुणहाणि ।
णाणागुणहाणिसला असंखभागो ठिदिस्स हवे ॥९५१॥

लोगाणमसंखपमा जहण्णउड्ढिम्मि तम्हि छट्ठाणा ।
ठिदि बंधज्झवसाणट्ठाणाणं होंति सत्तण्हं ॥९५२॥

आउस्स जहण्णट्ठिदि बंधणजोग्गा असंखलोगमिदा ।
आवलिअसंखभागेणुवरुवरि होंति गुणिदकमा ॥९५३॥

पल्लासंखेज्जदिमा अणुकट्ठी तत्तियाणि खंडाणि ।
अहियकमाणि तिरिच्छे चरिमं खंडं च अहियं तु ॥९५४॥

लोगाणमसंखमिदा अहियपमाणा हवंति पत्तेयं ।
समुदायेण वि तच्चियं ण हि अणुकिट्टिम्मि गुणहाणी ॥९५५॥

पढमं पढमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिदूण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोऽणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥९५६॥

विदियं विदियं खंडं अण्णोण्ण पेक्खिदूण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥९५७॥

चरिमं चरिमं खंडं अण्णोण्णं पेक्खिऊण विसरित्थं ।
हेट्ठिल्लुक्कस्सादोणंतगुणादुवरिमजहण्णं ॥९५८॥

हेट्ठिमखंडुक्कस्सं उव्वंकं होदि उवरिमजहण्णं ।
अट्ठंकं होदि तदोणंतगुणं उवरिम जहण्णं ॥९५९॥

अवरुक्कस्सठिदीणं जहण्णमुक्कस्सयं च णिव्वग्गं ।
सेसा सव्वे खंडा सरिसा खलु होंति उढेढण ॥९६०॥

अट्ठण्हंपि य एवं आउजहण्णट्ठिदिस्स वरखंडं ।
जावय तावय खंडा अणुकट्टिपदे विसेसहिया ॥९६१॥

तत्तो उवरिमखंडा सगसगउक्कस्सगोत्ति सेसाणं।
सव्वे ठिदियणखंडाऽसंखेज्जगुणक्कमा तिरिये ॥९६२॥
रसबन्धज्झवसाणट्ठाणाणि असंखलोगमेत्ताणि।
अवरट्ठिदिस्स अवरट्ठिदि परिणामम्हि थोवाणि ॥९६३॥
तत्तो कमेण वड्ढदि पडिभागेण य असंखलोगेण।
अवरट्ठिदिस्स जेट्ठट्ठिदि परिणामोत्ति णियमेण ॥९६४॥
गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटदेवेण गोम्मटं रयियं।
कम्माणणिज्जरट्ठं तच्चट्ठवधारणट्ठं च ॥९६५॥
जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादिइड्ढिपत्ताणं।
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरू जयउ सो राओ ॥९६६॥
सिद्धंतुदयतडुग्गयणिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया।
गुणरयणभूसणंबुहिमइवेलाभरउभुवणयलं ॥९६७॥
गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मट सिहरुवरि गोम्मट जिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिण कुक्कड जिणो जयउ ॥९६८॥
जेण विणिम्मिय पडिमावयणं सव्वट्ठसिद्धि देवेहिं।
सव्वपरमोहि जोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयदु ॥९६९॥
वज्जयणं जिणभवणं ईसिपब्भारं सुवण्णकलसं तु।
तिहुवण पडिमाणिक्कं जेण कयं जयदु सो राओ ॥९७०॥
जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ ॥९७१॥
गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरकालं णामेण य वीरमत्तंडी ॥९७२॥

इति गोम्मटसार (कर्मकाण्डम्)



श्री भद्रबाहुस्वामी कृत

क्रियासार

पणमिय वीर जिणिंदं तियसिदणमसियं विमल णाणं ।
वोच्छं परमत्थपदं जंगम पइट्ठायणं सुद्धं ॥१॥
सिरिउज्जयंत सिहरे णाणाविहमुणि अरिदसंपुण्णे ।
चउविहसंघेण जुदं सुयसायरपारगं धीरं ॥२॥
सिरिभद्धबाहुसामिं णमसित्ता गुत्तिगुत्तमुणिणाहिं ।
परिपुच्छिच्चयं पसत्थं अट्ठं पइट्ठावण जइणो ॥३॥
अह पुव्व सूरिमुहकय विणिग्गय सव्वसाहुहियकरणं ।
पभणामि सुणह संजम-रिद्धो सिद्धों तुहं होइ ॥४॥
भरहे दूसह समए संघकम्म मेल्लिऊण जो मूढो ।
परिवट्ठदि गव्विरओ सो सवणो संघवाहिरओ ॥५॥

(इतिभद्रवाहुकृत यतिप्रतिष्ठापनविधानम्)

गामा देसा वण्णा पवणा हय मेहया समणिया ।
पडिसमयं गुण हाणी ण विणासं दूसमे भरहे ॥६॥

(इति भद्रवाहुकृत यते पदस्थापन)

णाणविहूणो जीवो जिणमग्गं छडिऊण उम्मग्गे ।
वट्टंतो अप्पाणं सावयलोयं पणासेइ ॥७॥
जम्हा तित्थयराणं उवएसो सव्व-जीव-दय-करण ।
आयरिय मुत्तिणूणं तम्हा सो वण्णिओ समये ॥८॥
वण्णत्तयसजादो पिदमादु विसुद्धमओ सुदेसो ।
कल्लाणंगो सुमुहो, तवसहणो चारुरुवोय य ॥९॥
दिक्खागहणे जोग्गो ण विच्छिण्णो णय अहिय अंगोय ।
छिव्विरणासो उम्माई चित्ती दुव्वसणसंतत्तो ॥१०॥

गायणवायणणच्चय पमुहं कुकम्माढि जीवणो वाओ ।
जइ कहव होइ साहु सो खंघ वाहिरओ ॥११॥

पिच्छ पडिदाय णिरदो उम्मग्ग पवट्ठगो अहंजुत्तो ।
जहकम विलोवि चरिओ णो समणो समणपुल्लोसो ॥१२॥

दिक्खाविहिणा रहिओ सयमेव य दिक्खिओ पमत्तट्ठो ।
सघपरि लचित्तो अवन्दणिज्जो मुणी होई ॥१३॥

पासत्थाणं सेवीं पासत्थो पंवचेल परिहीणो ।
विवरीयठ्ठपवादी दंणिज्जो जई होई ॥१४॥

संघाचारं चत्ता सयकप्पिय किरियकम्म संगहणो ।
गारवतय कयसोहो अवंदणिज्जो जई होई ॥१५॥

जो जारिसं य कप्पदि मुणिवरगणबाहिरं महामोहो ।
सो तारिसेण किरिया कमेण भठ्ठो मुणी होई ॥१६॥

होसई मग्गपभठ्ठा जिणरुव परुवणा विविह संघा ।
जम्हा तम्हा सूरी परिठवणं सव्वसोक्खयरं ॥१७॥

विण्णाण बहुलबुर्द्धी जिणमग्गपहाणो विगमलोहो ।
आसापासविमुक्को विमुक्क पडिकूलबुद्धीय ॥१८॥

देसकुलजाइसुद्धो आयारसुदत्थकरणसाचरणो ॥
जहाविहसंघसमुद्धरपवित्ति परिचिंतगो सुद्धो ॥१९॥

बंभण खत्तिय वइसो विमुक्क कुठढाइ सयलदोसगणो ।
सगपरसमयणयवह पभा ाो सुद्ध चारित्तो ॥२०॥

ववहारणया वेखी पर्राणदविवज्जिओ जियाऽणंगो ।
आइरिओ परिठबिदो अण्णोण्णावि पूजणिज्जो हु ॥२१॥

जहगुरूकमपरिहीणो जइ कोवि मणुस्सओ समायरओ ।
→ तस्स णिग्गहठ्ठं चउविह संघोयपवठ्ठेदि ॥२२॥

तस्स पइठावणठ्टं परूवियो विहिसेसणं किं पि ।
दिक्खा कज्जोवि पुणो उवयांर होइ णियमेण ॥२३॥

दिक्खा लग्गादो जइ वाणारि श्रो रुद्धसाठियो सुहयो ।
सूरो चंदो विइश्रो तइश्रो छठ्ठोय य रुछेसु ॥२४॥

तइश्रो छठ्टोदसमो इक्कारसमो कुजो बुहो य सुहो ।
लग्गगश्रो चउ पंचम सत्तम नव दसमगोय गुरु ॥२५॥

तइश्रो छठ्ठो णवमो दुवालसो सुंदरो हवे सुक्को ।
बीश्रो पंचमगो श्रढ्ठमोय एक्कारसो य सणी ॥२६॥

मज्झिम बलंच किच्चा सणीचरं धिसणयं च बलवंतं ।
श्रबलं सुक्कं लग्गे ता दिक्खदिज्ज सीसस्य ॥२७॥

श्रठ्ठिक्कारस छठ्टम दुग पणसंठो सणी बल विहूणो ।
मुत्तिगश्रो चउ सत्तम दसमोय गुरु हवे बलवं ॥२८॥

छट्ठो दसमो सो तह श्रबलो सुक्को सुहो वयग्गहणे ।
दो तइय पंच छठ्ठेक्कारसमो तह बुहोय सुहो ॥२९॥

तइये छठ्ठे दसमे एक्कारसगोय मंगलो रम्मो ।
सुक्कंगारय सणिणो सत्तमश्रो ससहरो श्रसुहो ॥३०॥

इय सम्मं णाउण लग्ग बलं दिज्जए णरे दिक्खा ।
लग्गेण विणा दिक्खा मारइ ,णासेइ फेडेइ ॥३१॥

संकंति गहण बछल खंड तिही भूमिकंपणिग्घोसा ।
परिवेस पमुह दोसं विवज्जए श्रपमत्तेण ॥३२॥

जह चिह मूलगुणाणं पविणमण भक्ति वीय तण्णासं ।
कीरंति श्रपमत्ता ततो बिबुब्व णमणेश्रो ॥३३॥

बुह गुरु सुक्को लग्गे सुहाय चंदोढु मज्झिमो लग्गे ।
श्रंगार सूर सणिणो मुत्तिगया णासगा होंति ॥३४॥

वीरा बुहगुरुससिरगो रंमा सुक्को हवे परं मज्झो ।
कज्जस्स विरणासयरा सरिण दिरगयर मंगलादीया ।।३५।।

रविससि कुज बुहसरिगरगो सुहया तुइया गुरुवि मज्झीमश्रो ।
सुक्को तइश्रो णूरगं दुठ्ठो मुणि भासियं लग्ग ।।३६।।

दुह गुरू सुक्का सुहया वेयगया मज्झिमो चंदो ।
सेसा सव्वे वि गहा विवज्जिमव्वा पयत्तेरग ।।३७।।

रविससि कुज सुक्कसरणी पंचमगा मज्झिमा मुणेयव्वा ।
बुहगुरुरगो विय दुण्णिवि मंगलमाहप्पकत्तारो ।।३८।।

ससि रवि कुज गुरुसरिगरगो छठ्ठे ठारगम्मि रम्मिगा होंति ।
सुक्क बुहापि य छठ्ठा मज्झिमया केवलं णूणं ।।३९।।

सत्तमगो सुरमंती सुह श्रो ससिसुक्क बुहय मज्झत्था ।
सरिणमंगलाश्रो णूणं वज्जेयव्वा पयत्तेरग ।।४०।।

श्राइच्च चंद मंगल बुह गुरु सुक्का विवज्जिया श्रठ्ठा ।
मज्झिमश्रो मंद गई रगरमम्मि सुहावहा एदे ।।४१।।

देवगुरु सुक्करगामा मज्झिमया बहु सरिगच्चरा णूरगं ।
वज्जेयव्वा य सया मंगल ससि दिणयरा णवमा ।।४२।।

बुह सुक्क गुरु तिण्णिवि दसमम्मि हवंति सव्वसिद्धियरा ।
ससि सणिरगो मज्झत्था श्रसुहा रवि मंगला णूरगं ।।४३।।

इक्कारसगा सव्वे सिद्धियरा बारसा महादुठ्ठा ।
एवं लग्गे रज्जे बिवाई पइठ्ठए रम्मं ।।४४।।

जइ लग्गं णवि लब्भइ तुरियं कज्जंच जायदे श्रहवा ।
तो धुव पयच्छायाइं रगिच्चल लग्गं गहेयव्वं ।।४५।।

तिरयठ्ठियम्मि धुवए करिज्ज दिक्खा पइठ्ठमाईयं ।
श्रद्ध ठ्ठियम्मि तम्मि हु करिज्ज ते हवइ दु मक्खाईं ।।४६।।

तणुच्छायाइ पयाइं सणिसिसि सुक्केसु वसु वसु चरणवल ।
अठ्ठदुहे णव भोमे मुणिरुद्धो गुरु रवी एसु ।।४७।।

सुयदेविमंत्त महिमा अणिहय सुगुणादिमत्त सत्तीए ।
सघे आलोचित्ता कायव्वं सूरिपठ्ठवण ।।४८।।

णिम्मलगामे णयरे णिम्मलभूवालसंघसंजुत्ते ।
फासुय भूमीए सदहत्थं खेत्तं परिठ्ठवहु ।।४९।।

अह चउरसीदिहत्थं चउसठ्ठिय चदुवीस परिमाणं ।
खेत्तं किज्जा सुद्धं वेदिजुगं भूमिमाणेण ।।५०।।

कायव्वं तत्थ पुणो गणहरवलयस्स पंच वण्णेण ।
चुण्णेण य कायव्वं उद्धरणं चारु सोहिल्लं ।।५१।।

दुई जम्मि संत्ति मंडल महिमा काउण पुप्फधूवेहिं ।
णाणाविह भिक्खेहिय करिज्ज परितोसियं चक्कं ।।५२।।

एवं बारस दिवसा उक्कस्मे मज्झिमा हु छद्दिवसा ।
सव्व जहण्णेण एओ मज्झिमदो तिण्णि वासरया ।।५३।।

पडिदिवसं गुणयत्तो जोइ जणो कुणदि तित्थ सुदपढणे ।
अहिसेय जोग्ग करिया अहवा परिवायणाकिरिया ।।५४।।

जत्थ दिणेपयठवणं तत्थ रहस्से ससंघ संजुत्तं ।
आयारंगं पुज्जिवि सारस्स दसं जुयं णूणं ।।५५।।

पयठवण जोग किरिया कम्मं किच्चा सवग्ग संजुत्तं ।
आयारंग जंतं पुणरवि पुज्जिज्ज भत्तिए ।।५६।।

जइ परगण हर सीसो पयठ्ठवणे संथुदो जह होदि ।
तो तस्स नामकरणं सलोय आलोयणा सहियं ।।५७।।

बारस बारस जावहु दोण जणाणं य दिज्जए दाणं ।
गाइय मंगल गीयं जुवईजणो भत्तिराएण ।।५८।।

जेण वयणेण संघो समच्छरो होइ तं पुणो वयणं ।
बारस दिवसं जाव दु वज्जिव्वं अप्पमत्तेण ॥५९॥

बारस इंदा रम्मा तावदिया चेव तेसिमवलाओ ।
ण्हाणादि सुद्धदेहास्ते वर मउड कद सोहा ॥६०॥

पुंडिक्खु दंड हत्था इंदाइंदायणीओ सिक्खलसा ।
आयरियस्स पुरत्था पढंति णच्चंति गायंति ॥६१॥

अह आविऊण सव्वे मडलमभिवंदिऊण दक्खिणदा ।
हिडिवि मंगलदव्वं फंसित्ता सत्त धण्णाणं ॥६२॥

जविऊण सत्तवारं पणवाइम अरिहंत वीयवयं ।
मयणक्खर सिरिवण्णं हो मंतं सुद्ध बुद्धीए ॥६३॥

कलसाइ चारि रुप्पय हेममयवण्णाई तोय भरियाइं ।
दिव्वोसहि जुत्ताइं पयण्वहणे होंति इत्थ जोग्गाइं ॥६४॥

पुरिसपमाणं रम्मं तद्धयं मज्झिमं परं होई ।
जण्हुपमाणं अहरं इणरिउ चत्तारि सीहठ्ठं ॥६५॥

सीहासणं पसत्थं भम्माणर सुरुप्पकठ्ठपाहणयं ।
आइरिय ठवणजोगं विसेसदो भूसियं सुद्धं ॥६६॥

तस्सतले वर पउमं अठ्ठदलं सालितंदुलो किन्न ।
मज्झे मायापत्ते ठल पिंड चारुं सव्वत्थ ॥६७॥

पच्छा पुज्जिवजितं तिययाहिण देवि सिंहपीठस्स ।
कुंभीपाणो सगणं परिपुच्छिय विउसउ तं पीठे ॥६८॥

तत्तो पुव्वगयाणं जईण णामग्गहं गुइं कुणदि ।
इंदो सिद्धन्तादिय सत्थं अग्गे समुद्धरदि ॥६९॥

---

० ॐ अर्हं क्ली श्री स्वाहा

तो वंदिऊण संघो वित्थर किरियाए चारु भावेण ।
आधोसदि एस गुरु जिणोव्व हम्माण सामीय ॥७०॥
जं कारदि एस गुरु घम्मत्थं तं ण जो दु मण्णेदि ।
सो सवणो अज्जाओ सावयवो सघ वाहिरओ ॥७१॥
एवं संघोसित्ता मुत्तामालादि दिव्ववत्थेहिं ।
पोत्थय पूयं किच्चा तदो परं पावपूजा य ॥७२॥
तत्तो विदिये दिवसे महामहं सति वायणा जुत्तं ।
भूयबलि गहसंति करिज्जए संघमोत्थं ॥७३॥
सग सग गणेण जुत्ता आयरियं जह कमेण वंदित्ता ।
लहुवा जंति सुदेसं परिकलियं सूरिसूरेण ॥७४॥
सो पढदि सव्व सत्थं दिक्खा विज्जाइ धम्मवत्थंच ।
णहु णिंददि णहु रुसदि संघोवि सव्वत्थ ॥७५॥
वंदण पमुहं सव्वं जहाकमं करिए पर णिच्चं ।
एसो होई विसेसो तस्स करे सव्व संघोय ॥७६॥
एवं पय परिठ्ठवणं जो सवकदि करिओ सयं सुद्धो ।
सो सिद्धलोय सोक्खं पवादि अचिरेण कालेण ॥७७॥
पंच सय पिच्छहत्थो अह चदु तिग दोण्णि हत्थो ।
संघ बड्ढु सीसो अज्जा पुणु होदि पिच्छकरा ॥७८॥
जो सवणो णहु पिच्छं गिण्हदि णिंदेदिमूढचारित्तो ।
सो सवणसंघवज्जो अवंदणिज्जो सदा होदि ॥७९॥
इय भद्दबाहुसूरी परमत्थपरुवणो महातेओ ।
जेसिं होइ समत्थो ते धण्णा पुण्णा पुण्णाय ॥८०॥

इति भद्रबाहुस्वामीकृत क्रियासार

— ❀ —

छह ढाला

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुँ त्रियोग सम्हारिकै ॥

ढाल

जे त्रिभुवन मे जीव अनन्त, सुख चाहैं दुख तैं भयवन्त।
तातैं दुःखहारी सुखकारि, कहैं सीख गुरु करुणा धारि ॥१॥
ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्याण।
मोह महामद पियो अनादि, भूल आपकूँ भरमत वादि ॥२॥
तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा।
काल अनंत निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्री तन धार ॥३॥
एक श्वास में अठ-दस-बार, जन्म्यौ मर्यो भर्यो दुःख भार।
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रत्येक वनस्पति थयो ॥४॥
दुर्लभ लहि ज्यो चिन्तामणी, त्यो पर्याय लही त्रसतणी।
लट-पिपीलि-अलि आदि शरीर, धरि धरि मर्यो सही बहु पीर ॥५॥
कबहूँ पंचेंद्रिय पशु भयो, मन बिन निपट अज्ञानी थयो।
सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशू हति खाये भूर ॥६॥
कबहूं आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अतिदीन।
छेदन भेदन भूख रु प्यास, भार वहन हिम आतप त्रास ॥७॥
बध-बन्धन आदिक दुःख घने, कोटि जीभतैं जात न भने।
अति संक्लेश भावतैं मर्यो, घोर श्वभ्रसागर मे पर्यो ॥८॥
तहाँ भूमि परसत दुख इसो, बीछू सहस डसै नहिं तिसो।
तहाँ राध-शोणित वाहिनी, कृमि-कुल कलित देह दाहिनी ॥९॥
सेमर तरु जुत दल असिपत्र, असि ज्यो देह विदारैं तत्र।
मेरु समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय ॥१०॥

तिल-तिल करें देह के खण्ड, असुर भिड़ावें दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधु नीरतें प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय ॥११॥
तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहुसागर लो सहे, करम-जोगतें नरगति लहे ॥१२॥
जननी उदर बस्यो नव मास, अंग सकुचतैं पाई त्रास।
निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवै ओर ॥१३॥
बालपने मे ज्ञान न लह्यौ, तरुण समय तरुणीरत रह्यौ।
अर्द्धमृतक सम बूढापनो, कैसे रूप लखै आपनो ॥१४॥
कभी अकाम निर्जरा करै, भुवनत्रिक मे सुरतन धरै।
विषयचाह-दावानल दह्यौ, मरत विलाप करत दुख सह्यौ ॥१५॥
जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुःख पाय।
तहँ तं चय थावर-तन धरे, यो परिवर्तन पूरे करे ॥१६॥

द्वितीय ढाल

ऐसे मिथ्यादृगज्ञानचरणवश, भ्रमत भरत दुख जन्म-मरण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहू बखान ॥१॥
जीवादि प्रयोजन भूततत्त्व, सरधै तिन माँहि विपर्ययत्त्व।
चेतन को है उपयोगरूप, बिन मूरति चिनमूरति अनूप ॥२॥
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल।
ताको न जान विपरीत मान, करि करै देह मे निज पिछान ॥३॥
मै सुखी दुखी मै रंक राव, मेरे धन गृह गोधन प्रभाव।
मेरे सुत तिय मै सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीन ॥४॥
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट जे दु.ख दैन, तिनही को सेवत गिनत चैन ॥५॥

शुभ-अशुभ बंध के फल मँझार, रति अरति करै निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लखै आपको कष्टदान ॥६॥
रोको न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान ॥७॥
इनजुत विषयनि मे जो प्रवृत्त, ताको जानो मिथ्याचरित्त।
यों मिथ्यात्त्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह ॥८॥
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर-दर्शन मोह एव।
अन्तर रागादिक धरै जेह, बाहर धन अम्बर तैं सनेह ॥९॥
धारै कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म- उपलनाव।
जे राग-द्वेष मलकरिमलीन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन्ह ॥१०॥
ते हैं कुदेव, तिनकीजु सेव शठ करत न तिन भव-भ्रमण छेव।
रागादि भाव हिंसा समेत, द[illegible] त्रस थावर मरण खेत ॥११॥
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अ[illegible]।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, सुन गृहीत जो है [illegible]न ॥१२॥
एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त।
कपिलादिरचित श्रुत को अभ्यास, सो है कुबोध बहुदेन त्रास ॥१३॥
जो ख्यातिलाभ पूजादि चाह, धरि करत विविध विधि देहदाह।
आतम [illegible]त्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन ॥१४॥
ते [illegible] मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हित-पन्थ लाग।
जगजाल-भ्रमणको देह त्याग, 'दौलत' निज आतम सुपाग ॥१५॥

[illegible]ी

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता बिन कहिये।
आकुलता [illegible] माँहि न तातैं, [illegible]-मग लाग्यौ चहिये।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारन शिव-मग सो दुविध विचारो ।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

परद्रव्यनि तैं भिन्न आप मे, रुचि सम्यक्त्व भला है ।
आपरूप को जानपनो सो, सम्यक्ज्ञान कला है ।
आपरूप मे लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोख-मग सुनिये, हेतु नियत को होई ।।२।।

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंध रु संवर जानो ।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यो का त्यो सरधानो ।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो ।
तिनको सुन सामान्य विशेषैं, दृढ़ प्रतीति उर आनो ।।३।।

बहिरातम, अन्तरआतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीव को एक गिनै, बहिरातम तत्त्व मुधा है ।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी ।
द्विविध संघ बिन शुद्ध-उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी ।।४।।

मध्यम अन्तर आतम है जे, देशव्रती अनगारी ।
जघन कहे अविरत समदृष्टी, तीनो शिवमगचारी ।
सकल निकल परमातम द्वै विधि, तिन में घाति निवारी ।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी ।।५।।

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्म-मल वर्जित सिद्ध महंता ।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगे शर्म अनन्ता ।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर-आतम हूजै ।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै ।।६।।

चेतनता-बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं ।
पुद्गल पंच वरन-रस, गन्ध-दो, फरस वसु जाके हैं ।

शुभ-अशुभ बंध के फल मँझार, रति अरति करै निजपद विसार ।
आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान ।।६।।
रोकी न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय ।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान ।।७।।
इनजुत विषयनि मे जो प्रवृत्त, ताको जानो मिथ्याचरित्त ।
यों मिथ्यात्त्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह ।।८।।
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर-दर्शन मोह एव ।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन र तैं सनेह ।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म-जल उपलनाव ।
जे राग-द्वेष मलकरिमलीन, वनिता गदादिजुत चिह्न चीन्ह ।।१०।।
ते हैं कुदेव, तिनकीजु सेव शठ करत न तिन भव-भ्रमण छेव ।
रागादि भाव हिंसा समेत, दर्ि त्रस थावर मरण खेत ।।११।
जे क्रिया तिन्हें जानहु कुधर्म, तिन सरधैं जीव लहैं अ ।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, सुन गृहीत जो है ान ।।१२।।
एकान्तवाद-दूि समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त ।
कपिलादिरि श्रुत को अभ्यास, सो है कुबोध बहुदेन त्रास ।।१३।।
जो ख्याति ाभ पूजादि चाह, धरि करत विविध विधि देहदाह ।
म अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन ।।१४।।
ते सब मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हित-पन्थ लाग ।
जाल-भ्रमणको देह त्याग, अब 'दौलत' निज आतम सुपाग ।।१५।।

ी ाल

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता बिन कहिये ।
आकुलता ि माँहि न तातैं, ि -मग लाग्यौ चहिये ।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारन शिव-मग सो दुविध विचारो ।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

परद्रव्यनि तैं भिन्न आप मे, रुचि सम्यक्त्व भला है ।
आपरूप को जानपनो सो, सम्यक्ज्ञान कला है ।
आपरूप मे लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोख-मग सुनिये, हेतु नियत को होई ।।२।।

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंध रु संवर जानो ।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यो का त्यो सरधानो ।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो ।
तिनको सुन सामान्य विशेषै, दृढ़ प्रतीति उर आनो ।।३।।

बहिरातम, अन्तरआतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीव को एक गिनै, बहिरातम तत्त्व मुधा है ।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी ।
द्विविध संघ बिन शुद्ध-उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी ।।४।।

मध्यम अन्तर आतम है जे, देशव्रती अनगारी ।
जघन कहे अविरत समदृष्टी, तीनो शिवमगचारी ।
सकल निकल परमातम द्वै विधि, तिन मे घाति निवारी ।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी ।।५।।

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्म-मल वर्जित सिद्ध महंता ।
ते है निकल अमल परमातम, भोगें शर्म अनन्ता ।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर-आतम हूजै ।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै ।।६।।

चेतनता-बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके है ।
पुद्गल पंच वरन-रस, गन्ध-दो, फरस वसु जाके है ।

जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिनमूर्ति निरूपी ॥७॥

सकल द्रव्य को वास जास मे, सो आकाश पिछानो।
नियत वर्तना निसदिन सो, व्यवहारकाल परिमानो।
यो अजीव अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा।
मिथ्या अविरति अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ॥८॥

ये ही आतम को दुःख कारण, तातै इनको तजिये।
जीव प्रदेश बंधे विधि सो सो, बंधन कबहुँ न सजिये।
-दम तै जो कर्म न आवै, सो संवर आदरिये।
तपबल तै विधि-झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये ॥९॥

सकलकर्म तै रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इह विधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
यहू मान समकित को कारण, -अंगजुत धारो ॥१०॥

वसु मद टारि निवारि त्रिसठता षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष विना संवेगादिक चित पागो।
अग अरु दोष पचीसो तिन संक्षेपहुं कहिये।
बिन जाने तै दोष गुनन को कैसें तजिये गहिये ॥११॥

ि मे शंका न धारि वृष भव सुख वाछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै तत्त्व कुतत्व पिछानै।
निज-गुन अरु पर-औगुन ढांकै, वा निज धर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतै चिगतै, निजपर को सु दिढावै ॥१२॥

धर्मी सो गउ-बच्छ-प्रीति-सम कर निज-धर्म दिपावै।
इन गुनतैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत् खिपावै ॥

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै ।
मद न रूप कौ, मद न ज्ञान कौ धन बल को मद भानै ॥१३॥

तप कौ मद न मद जु प्रभुता कौ, करै न सो निज जानै ।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित कौ मल ठानै ।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष-सेवक की नहिं प्रशंस उचरै हैं ।
जिन मुनि, जिन श्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हें न नमन करै हैं
॥१४॥

दोषरहित गुणसहित सुधी जे सम्यक्दर्श सजे हैं ।
चरित मोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजे हैं ॥
गेही पै गृह में न रचै ज्यों जल तैं भिन्न कमल है ।
नगर नारी को प्यार यथा, कादे मे हेम अमल है ॥१५॥

प्रथम नरक बिन षट्-भू-ज्योतिष, वान भवन षंड नारी ।
थावर विकलत्रय पशु मे नहिं उपजत सम्यक् धारी ॥
तीनलोक तिहुं कालमांहि नहिं दर्शन सम सुखकारी ।
सकल धरम को मूल यही इस बिन करनी दुखकारी ॥१६॥
मोक्ष महल की प्रथम सीढी, या बिन ज्ञान चरित्रा ।
कता न लहे, सो दर्शन, धारौ भव्य पवित्रा ।
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नर भव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै ॥१७।

(चतुर्थ ढाल)

सम्यक् श्रद्धा धारि पुनि सेवहु सम्यक्ज्ञान ।
स्वपर अर्थ बहु धर्मजुत जो प्रगटावन भान ॥१॥
सम्यक् साथै ज्ञान होय पै भिन्न अराधौ ।
लक्षण श्रद्धा जानि दुहू मे भेद अबाधौ ।

सम्यक् कारण जान ज्ञान कारज है सोई।
युगपत् होते हू प्रकाश दीपक तैं होई ॥२॥

तास भेद दो हैं परोक्ष परतछि तिनमांही।
मति श्रुत दोय परोक्ष अक्ष मनतैं उपजाहीं।
ि ान मनपर्जय दो है देश प्रतच्छा।
द्रव्यक्षेत्र परिमाण लिये जानै जिय स्वच्छा ॥३॥

ल द्रव्य के गुन परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल प्रगट केवलि भगवन्ता।
ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।
इहि परमामृत जन्म जरा मृतु रोग निवारण ॥४॥

कोटि जन्म तप तपैं ज्ञान विन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिनमांहि त्रिगुप्तितैं सहज टरैं ते।
मुनिव्रत धार अनन्त बार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान विना सुख लेश न पायो ॥५॥

तातैं जिनवर कथित तत्त्व अभ्यास करीजै।
विभ्रम मोहत्याग आपो लखि लीजै।
यह मानुष पर्याय सुकुल सुनिवो ि वानी।
इह विधि गये न मिलै, सुमणि ज्यो उदधि समानी ॥६॥

धन समाज गज बाज राज तो काज न आवै।
आपको रूप भये फिर रहावै।
तास ज्ञान को कारण स्वपर विवेक नो।
कोटि उपाय बनाय भव्य ताको उर आनो ॥७॥

जे पूरब शिव गये जाहिं अरु आगे जैहैं।
सो महिमा ज्ञानतनी मुनिनाथ कहै हैं।

विषय चाह दवदाह जगतजन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावै ।।८।।

पुण्य पाप फलमांहि हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय उपजि विनसै थिर थाई।
लाख बात की बात यहीं निश्चय उर लावो।
तोरि सकल जग दंद फन्द निज आतम ध्यावो ।।९।।

कुज्ञानी होय बहुरि दृढ चारित लीजै।
एकदेश अरू सकल देश तसु भेद कहीजै।
त्रसहिंसा को त्याग वृथा थावर न संघारै।
पर वधकार कठोर निंद्य नहिं वयन उचारै ।।१०।।

जल मृतिका बिन और नाहिं कछु गहै अदत्ता।
नि निता बिन सकल नारिसौं रहै विरत्ता।
अपनी शक्ति विचार परिग्रह थोरो राखै।
दश दिश गमन प्रमान ठान तसु सीम न नाखै ।।११।।

ताहू मे फिर ग्राम गली गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान ठान अन सकल निवारा।
काहू की धनहानि किसी जय हार न चिन्तै।
देय न सो उपदेश होय अघ बनिज कृषी तै ।।१२।।

कर द जलभूमि वृक्ष पावक न विराधै।
असिधनु हल हिंसोपकरण नहिं दे यश लाधै।
राग द्वेष करतार कथा कबहूं न सुनीजै।
औरहु अनरथदण्ड हेतु अघ तिन्हे न कीजै ।।१३।।

धर उर समता भाव सदा सामायिक करिये।
परब चतुष्टय मांहि पाप तज पोषध धरिये।

जो योगन की चपलाई तातैं ह्व आश्रव भाई ।
आश्रव दुखकार घनेरे बुधिवन्त तिन्है निरवेरे ।।९।।
जिन पुण्यपाप नहिं कीना आतम अनुभव चित दीना ।
तिन ही विधि आवत रोके सवर लहि सुख अवलोके ।।१०।।
निज काल पाय विधि झरना तासो निज काज न सरना ।
तप करि जो कर्म खिपावै सोई शिवसुख दरसावै ।।११।।
किनहू न करौ न धरे को षट्द्रव्यमयी न हरे को ।
सो लोकमाहि बिन समता दुःख सहै जीव नित भ्रमता ।।१२।।
अन्तिम ग्रीवक लौं की हद पायो अनत बिरिया पद ।
पर सम्यकज्ञान न लाधौ दुर्लभ निज मे मुनि साधौ ।।१३।।
जो भाव मोहतै न्यारे दृग ज्ञान व्रतादिक सारे ।
सो धर्म जबै जिय धारै तबही सुख अचल निहारै ।।१४।।
सो धर्म मुनिन करि धरिये तिनकी करतूति उचरिये ।
ताको सुनिये भवि प्रानी अपनी अनुभूति पिछानी ।।१५।।

छठ ाल

षटकाय जीव न हनन तै सब विधि दरबहिंसा टरी ।
रागादि भाव निवार तै हिंसा न भावित अवतरी ।
जिनके न लेश मृषा न जल मृण हू बिना दीयौ गहै ।
अठदशसहस विधि शील धर चिदब्रह्म मे नित रमि रहै ।।१।।
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर संग दशधा तै टलै ।
परमाद तजि चौकर मही लखि समिति ईर्या तै चलैं ।
जग सुहितकर सब अहितहर श्रुति सुखद सब संशय हरै ।
भ्रमरोगहर जिनके वचन मुख चन्द्रतै अमृत झरै ।।२।।

भोग और उपभोग नियम करि ममत निवारै ।
मुनिको भोजन देय फेर निज करहि अहारै ।।१४।।

बारह व्रत के अतीचार पन पन न लगावै ।
मरण समय सन्यास धारि तसु दोष नसावै ।
यो श्रावक पाल स्वर्ग सोलम उपजावै ।
तहंतै चय नर जन्म पाय मुनि ह्वै ि जावै ।।१५।।

पं म ाल

मुनि सकलव्रती बड़भागी भवभोगन तै वैरागी ।
वैराग्य उपावन मांई चिन्तै अनुप्रेक्षा भाई ।।१।।
इन चिन्तत समसुख जागै जिमि ज्वलन पवन के लागै ।
ही जिय आतम जानै तबही जिय शिवसुखठानै ।।२।।
जोवन गृह गोधन नारी हय गय जन आज्ञाकारी ।
इन्द्रिय भोग छिन थाई सुरधनु चपला चपलाई ।।३।।
सुर असुर खगाधिप जेते मृग ज्यो हरि काल दले ते ।
मणि-मन्त्र-तन्त्र बहु होई मरतें न बचावै कोई ।।४।।
चहुँगति दुःख जीव भरे हैं परिवर्तन पंच करे हैं ।
सब विधि ससार ारा यामै सुख नाहिं लगारा ।।५।।
शुभ अशुभ करमफल जेते भोगै ि एकहि तेते ।
सुत दारा होय न सीरी सब स्वारथ के हैं भीरी ।।६।।
जल पय ज्यो जिय तन मेला पै भिन्न २ नही भेला ।
तो प्रगट जुदे धनधामा क्यो ह्वै इक मिलि सुत रामा ।।७।।
पल रुधिर राधमलथैली, कीकस बसादितैं मैली ।
नवद्वार बहैं घिनकारी अस देह करैं किम यारी ।।८।।

जो योगन की चपलाई तातैं ह्व आश्रव भाई ।
आश्रव दुखकार घनेरे बुधिवन्त तिन्है निरवेरे ।।९।।
जिन पुण्यपाप नहिं कीना आतम अनुभव चित दीना ।
तिन ही विधि आवत रोके संवर लहि सुख अवलोके ।।१०।।
निज काल पाय विधि झरना तासो निज काज न सरना ।
तप करि जो कर्म खिपावै सोई शिवसुख दरसावै ।।११।।
किनहू न करौ न धरे को षट्द्रव्यमयी न हरै को ।
सो लोकमाहि बिन समता दु:ख सहै जीव नित भ्रमता ।।१२।।
अन्तिम ग्रीवक लौ की हद पायो अनत बिरिया पद ।
पर सम्यकज्ञान न लाधौ दुर्लभ निज मे मुनि साधौ ।।१३।।
जो भाव मोहतै न्यारे दृग ज्ञान व्रतादिक सारे ।
सो धर्म जबै जिय धारै तबही सुख अचल निहारै ।।१४।।
सो धर्म मुनिन करि धरिये तिनकी करतूति उचरिये ।
ताको सुनिये भवि प्रानी अपनी अनुभूति पिछानी ।।१५।।

छठ ाल

षटकाय जीव न हनन तै सब विधि दरबहिंसा टरी ।
रागादि भाव निवार तै हिंसा न भावित अवतरी ।
जिनके न लेश मृषा न जल मृण हू बिना दीयौ गहै ।
अठदशसहस विधि शील धर चिदब्रह्म मे नित रमि रहै ।।१।।
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर संग दशधा तै टलै ।
परमाद तजि चौकर मही लखि समिति ईर्या तै चलैं ।
जग सुहितकर सब अहितहर श्रुति सुखद सब संशय हरै ।
भ्रमरोगहर जिनके वचन मुख चन्द्रतै अमृत झरै ।।२।।

छ्यालीस दोष बिना सुकुल श्रावक तनै घर असन को ।
लैं तप बढ़ावन हेतु नहि तन पोषतें तजि रसन को ।
शुचि ज्ञान संजम उपकरण लखि कैं गहैं लखि कैं धरैं ।
निर्जन्तु थान विलोक तन मलमूत्रश्लेषम् परिहरैं ।।३।।

सम्यक् प्रकार निरोध मनवचकाय आतम ध्यावतें ।
तिन सुथिर मुद्रा देख मृगगण उपल खाज खुजावतें ।
रस रूप गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने ।
तिनमे न राग विरोध पंचेन्द्रिय जयन पद पावने ।।४।।

समता सम्हारैं थुति उचारैं वन्दना जिनदेव को ।
नित करैं श्रुतिरति करैं प्रतिक्रम तजैं तन अहमेव को ।
जिनके न न्हौन न दंत धोवन लेश अम्बर आवरन ।
भू माहिं पिछली रयन मे कछु शयनि एकासन करन ।।५।।

इक बार दिन मे लैं आहार खडे अलप निज पान में ।
कचलोच करत न डरत परीषह सो लगे निज ध्यान में ।
अरि मित्र महल मसान कंचन कांच निंदन थुतिकरन ।
अर्घावतारन असि प्रहारन मे सदा समता धरन ।।६।।

तप तपैं द्वादश धरैं वृष दश रतनत्रय सेवैं सदा ।
मुनि साथ मे वा एक विचरैं चहैं नहिं भव सुख कदा ।
यो है सकल संयमचरित सुनिये स्वरूपाचरन अब ।
जिस हाथ प्रगटै आपनी निधि मिटै पर की प्रवृत्ति सब ।।७।।

जिन परमपैनी सुबुधि छैनी डारि अन्तर भेदिया ।
वरणादि अरु रागादि तैं निज भाव को न्यारा किया ।
निजमाँहि निज के हेतु निज कर आपको आपौ गह्यौ ।
गुणगुणी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मंझार कछु भेद न रह्यौ ।।८।।

जहँ ध्यानध्याताध्येय को न विकल्प वच भेद न जहा ।
चिद्भाव कर्म चिदेश करता चेतना किरिया तहा ।
तीनो अभिन्न अखिन्न शुध उपयोग की निश्चल दशा ।
प्रगटी जहा दृगज्ञानव्रत ये तीनधा ऐकै लसा ।।९।।
परमान नय निक्षेप को न उद्योत अनुभव मे दिखै ।
दृग ज्ञान सुख बलमय सदा नहि आव भाव जु मो विखै ।
मै साध्य साधक मै अबाधक कर्म अरु तसु फलनि तै ।
चिद्पिण्ड चण्ड अखण्ड सुगुन करण्ड च्युत पुनि कलनि तै
।।१०।।
योचिन्त्य निज मे थिर भये तिन अकथ जो आनद लह्यौ।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा अहमिन्द्र के नाही कह्यौ ।
तबही सुकलध्यानाग्नि करि चउघाति विधि कानन दह्यौ।
सब लख्यो केवलज्ञान करि भविलोक को शिवमग कह्यौ।।११।।
पुनि घाति शेष अघाति विधि छिन मांहि अष्टम भू बसै ।
वसु कर्म विनसै सुगुन वसु सम्यक्त्व आदिक सब लसै ।
ससार खार अपार पारावार तरि तीरहि गये ।
अविकार अचल अरूप शुध चिद्रूप अविनाशी भये ।।१२।।
निज मांहि लोक अलोक गुण परजाय प्रतिबिम्बित भये ।
रहिहै अनन्तानन्त काल यथा तथा शिव परिणये ।
धनि धन्य है जे जीव नरभव पाय यह कारज किया ।
तिनही अनादि भ्रमण पंच प्रकार तजि वर सुख लिया।।१३।।
मुख्योपचार दुभेद यो बडभागि रतनत्रय धरै ।
अरु धरैंगे ते शिव लहै तिन सुयस जल जगमल हरै ।
इमि जानि आलस हानि साहस ठानि यह सिख आदरौ ।
जबलो न रोग जरा गहै तबलौं झटिति निजहित करो ।
।।१४।।

यह राग आग दहे । तातैं समामृत सेइये ।
चिर भजे विषय कसाय अब तो त्याग निजपद बेइये ।
कहा रच्यो पर पद मे न तेरो पद यहै क्यो दुःख सहै ।
अब दौल होउ सुखी स्वपद रचि दाव मत चूको यहै ।।१५।।

इक नव वसु इक वर्ष की तीज शुक्ल वैशाख ।
कर्यो तत्त्व उपदेश यह लखि बुधिजन की भाख ।
लघु धी तथा प्रमाद तैं शब्द अर्थ की भूल ।
सुधी सुधार पढो सदा जो पावो भवकूल ।।१६।।

ाई परी ह

क्षुधा तृषा हिम ऊष्न डंसमंसक दुख भारी ।
निरावरण तन अरति वेद उपजावन नारी ।
चरया आसन शयन दुष्ट दायक बध बंधन ।
याचै नही अलाभ रोग तृण परस होय तन ।
मल जनित मान सनमान वश प्रज्ञा और ान कर ।
दरसन मलीन बाईस सब साधु परीषह जान नर ।।१।।

सूत्र पाठ अनुसार ये कहे परीषह नाम ।
इनके दुख जो मुनि सहे तिन प्रति सदाप्रमाण ।।

अनसन ऊनोदर तप पोषत पक्षमास दिन बीत गये है ।
जो नहि बने योग्य भिक्षा विधि सूख अंग सब शिथिल भये है ।
तब तहां दुस्सह भूख की वेदन सहत साधु नहि नेक नये है ।
तिनके चरण कमल प्रति प्रतिदिन हाथ जोड़ हम शीश नये है
।।२।।

पराधीन मुनिवर की भिक्षा पर घर लेय कहै कुछ नाही।
प्रकृति विरुद्ध पारणा भुंजत वढत प्यास की त्रास तहाही।
ग्रीष्मकाल पित्त अति कोपै लोचन दोय फिरे जब जाही।
नीर न चहै ऐसे मुनि जयवन्ते वर्तो जगमाही ॥३॥

शीतकाल सवही जन कम्पत खड़े तहां बन वृक्ष डटे हैं।
झंझा वायु चलै वर्षाऋतु वर्षत बादल झूम रहे हैं।
तहां धीर तटनी तट चौपट ताल पाल परकर्म दहे हैं।
सहै सँभाल शीत की बाधा ते मुनि तारण तरण कहे हैं ॥४॥

भूखप्यास पीडै उर अतर प्रजुलै आंत देह सब दागै।
अग्नि सरूप धूप ग्रीषमको ताती वायु झालसो लागै।
तपै पहाड़ ताप तन उपजति कोपै पित्त दाह ज्वर जागै।
इत्यादिक गर्मी की बाधा सहै साधु धीरज नहिं त्यागै ॥५॥

डन्स मशक माखी तनु काटै पीडै बन पक्षी बहुतेरे।
डसै व्याल विषहारे बिच्छू लगै खजूरे आन घनेरे।
सिंह स्याल सुंडाल सतावै रीछ रोस दुख देहिं घनेरे।
ऐसे कष्ट सहैं समभावन ते मुनिराज हरो अघ मेरे ॥६॥

अन्तर विषय बासना वरतै बाहर लोक लाज भय भारी।
याते परम दिगम्बर मुद्रा धर नहीं सकै दीन संसारी।
ऐसी दुर्द्धर नगन परीषह जीतै साधु शील व्रतधारी।
निर्विकार बालकवत निर्भय तिनके चरणो धोक हमारी ॥७॥

देशकालका कारण लहिकै होत अचैन अनेक प्रकारे।
तव तहां छिन्न होत जगवासी कलमलाय थिरतापद छाडै।
ऐसी अरति परीषह उपजत तहां धीर धीरज उर धारै।
ऐसे साधुन को उर अन्तर बसो निरन्तर नाम हमारे ॥८॥

जो प्रधान केहरि को पकिडै पन्नग पकड़ पानसे चावैं ।
जिनकी तनक देख भौं बांकी कोटिन सूर दीनता जापैं ।
ऐसे पुरुष पहाड़ उड़ावन प्रलय पवन त्रिय वेदपयापैं ।
धन्य धन्य वे वीर साहसी मन सुमेर जिनका नही कांपै ।।६।।

चार हाथ परवान परख पथ चलत दृष्टि इत उत नही तानैं ।
कोमल चरण कठिन धरती पर धरत धीर बाधा नहीं मानैं ।
नाग तुरंग पालकी चढते ते सर्वादियादि नहीं आनैं ।
यो मुनिराज सहे चर्या दुख तब दृढकर्म कुलाचल भानैं ।।१०।।

गुफा मसान शैल तरु कोटर निवसैं जहां शुद्ध भू हेरैं ।
परमितकाल रहे निश्चल तन बार बार आसन नही फेरैं ।
मानुष देव अचेतन पशु कृत विपत्ति आन जब घेरैं ।
ठौर न तजैं भजैं थिरतापद ते गुरु सदा बसो उर मेरैं ।।११।।

जो प्रधान सोने के महलन सुन्दर सेज सोय सुख जोवैं ।
ते अब अचल अंग एकासन कोमल कठिन भूमि पर सोवैं ।
पाहनखड कठोर कांकरी गडत कोर कायर नहिं होवैं ।
ऐसी शयन परीषह जीतैं ते मुनि कर्मकालिमा धोवैं ।।१२।।

जगत जीव जावन्त चराचर सबके हित सबको सुखदानी ।
तिन्हे देख दुर्वचन कहै खल पाखंडी ठग यह अभिमानी ।
मारो याहि पकड़ पापी को तपसी भेष चोर है छानी ।
ऐसे वचन बाण की बेला क्षमा ढाल ओढे मुनि ज्ञानी ।।१३।।

निरपराध निर्वैर महामुनि तिनको दुष्ट लोग मिल मारैं ।
कोई खैंच खंभसे बांधै कोई पावकमे परजारैं ।
तहां कोप करते न कदाचित पूरब कर्म विपाक विचारैं ।
समरथ होय सहैं बध बंधन ते गुरु भव भव शरण हमारैं ।।१४।।

घोर वीर तप करत तपोधन भये क्षीण सूखी गल वांही ।
अस्थिचाम अवशेष रहो तन नसाजाल झलकै तिसमाही ।
औषधि असन पान इत्यादिक प्राण जाउ पर जांचत नाही ।
दुर्द्धर अयाचीक व्रतधारैं करें न मलिन धरम परछाही ।।१५।।

एक बार भोजन की बेला मौन साध बस्ती मै आवैं ।
जो न बनै योग्य भिक्षा विधि तो महन्त मन खेद न लावैं ।
ऐसे भ्रमत बहुत दिन बीतैं तब तपवृद्धि भावना भावैं ।
यो अलाभ को परम परीषह सहैं साधु सो ही शिव पावैं ।।१६।।

बात पित्त कफ श्रोणित चारो ये जब घटे बढ़ैं तनु माही ।
रोग संयोग शोक जब उपजत जगत जीव कायर हो जाही ।
ऐसी व्याधि वेदना दारुण सहैं सूर उपचार न चाहीं ।
आत्मलीन विरक्त देह सो जैनपती निज नेम निवाही ।।१७।।

सूखे तृण अरु तीक्षण कांटे कठिन कांकरी पाय बिदारैं ।
रज उड़ आन पड़े लोचन मे तीर फांस तनुपीर विचारैं ।
तापर पर-सहाय नहिं बांछत अपने करसे काढ न डारैं ।
यो तृण परस परीषह विजयी ते गुरु भवभव शरण हमारे ।।१८।।

यावज्जीव जल न्होन तजो जिन नग्नरूप बन थान खडे है ।
चलै वसैव धूप की बेला उडत धूल सब अंग भरे है ।
मलिन देह को देख महामुनि मलिन भाव उर नाहिं करे है ।
यो मल जनित परीषह जीतैं वही हाथ हम सीस धरे हैं ।।१८।।

जो महाविद्यानिधि विजयी चिरतपसी गुण अतुल भरे है।
तिनकी विनय वचन से अथवा उठ प्रणाम जान नाहि करैं है
तो मुनि तहां खेद नहिं मानत उर मलीनता भाव हरे हैं ।
ऐसे परमसाधु के अहनिशि हाथ जोड़ हम पांय परे हैं ।।१९।।

तर्क छंद व्याकरण कलानिधि आगम अलंकार पढ जाने ।
जाकी सुमति देख परबादी बिलखत होय लाज उर आनै ।
जैसे सुनत नाद केहरि का बन गयंद भाजत भय मानै ।
ऐसी महाबुद्धि के भाजन पर मुनीश मद रंच न ठानै ।।२०।।
सावधान वर्तै निशि वासर संयमशूर परम वैरागी ।
पालत गुप्ति गये दीरघ दिन सकल संग ममता पर त्यागी ।
अवधिज्ञान अथवा मनपर्यय केवलि ऋद्धि न अजहू जागी ।
यो विकल्प नहि करै तपोनिधि सो अज्ञान विजयी बड़भागी ।।२१।।
मैं चिरकाल घोर तप कीना अजो ऋद्धि अतिशय नहीं जागै ।
तपबल सिद्ध होत सब सुनियत सो कुछ बात झूठ सी लागै ।
यो कदापि चित मे नही चिंतत समकित शुद्ध शांति रस पागै ।
सोई साधु अदर्शन बिजई ताके दर्शन से अघ भागै ।।२२।।

ज्ञानावरणी तै दोई प्रज्ञा अज्ञान होई
एक महामोहते अदर्शन वखानिये ।
अन्तराय कर्म सेती उपजै अलाभ दुख
सप्त चारित्र मोहनी केवल जानिये ।।
नगन निषध्या नारि मान सन्माननारि
याचना अरति सब ग्यारह ठीक ठानिये ।
एकादश बाकी रहीं वेदना उदय से कही
बाईस परीषह उदय ऐसे उर आनिये ।।
एकमाँहि इन मांहि एक मुनि के कही,
सब उनतीस उत्कृष्ट उदय आवै सही ।
आसन शयन बिहाय दोय इन माँहि की
शीत उष्ण में एक तीन ये नाहि की ।।

।। इतिश्री ।।

बारहभावना

वंदूं श्री अरहंत पद, वीतराग विज्ञान ।
वरणूं बारह भावना, जग जीवनहित जान ।।

कहां गये चक्री जिन जीता भरतखंड सारा ।
कहा गये वह रामरु लछमन् जिन रावन मारा ।
कहां कृष्ण रुक्मणि सतभामा अरु संपति सगरी ।
कहां गये वह रंगमहल अरु सुवरन की नगरी ।।१।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रनमैं ।
गये राज तज पांडव बन को अग्नि लगी तन मैं ।
मोह नींद से उठ रे चेतन तुझे जगावन को ।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु बारह भावन को ।।२।।

सूरज चांद छिपै निकलै ऋतु फिर-फिर कर आवै ।
प्यारी आयु ऐसी बीतै पता नहीं पावै ।
पर्वत पतित नदी सरिता जल बहकर नहीं हटता ।
स्वास चलत यो घटै काठ ज्यो आरेसो कटता ।।३।।

ओस बूंद ज्यों गलै धूप मे वा अंजुलि पानी ।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्राणी ।
इन्द्रजाल आकाश नगर सब जगसंपत्ति सारी ।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी ।।४।।

काल-सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव-वन मे ।
नहीं बचावन हारा कोई यो समझो मन में ।
यंत्र मंत्र सेना धन संपत्ति राज पाट छूटै ।
वश नहिं चलता काल लुटेरा काय नगरि लूटै ।।५।।

चक्ररतन हलधरसा भाई काम नही आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की विनश नई काया।
देव धर्म गुरु शरण जगत मे और नही कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन यूंही उमर खोई।।६।।

जनममरण अरु जरारोग से सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव परिवर्तन सहता।
छेदन भेदन नरक पशुगति वध बंधन सहना।
राग उदय से दुख सुरगति में कहां सुखी रहना।।७।।

भोगि पुण्यफल हो इकइंदी क्या इसमे लाली।
कुतवाली दिन चार वही फिर खुरपा अरु जाली।
मानुष जन्म अनेक विपतिमय कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिलै शुभाशुभ को मेटो लेखा।।८।।

जनमे मरै अकेला चेतन सुखदुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह देह जुदी होगी।
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवै पिता पुत्र दारा।।९।।

ज्यों मेले मे पंथीजन मिलि नेह फिरै धरते।
ज्यो तरुवर पै रैन बसेरा पक्षी आ करते।
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थकथक हारे।
जाय अकेला हंस संग में कोई न पर मारे।।१०।।

मोहरूप मृगतृष्णा जगमे मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रम मै उठ उठ दौडै थक थककै।
जल नहिं पावै प्राण गमावै भटक भटक मरता।
—— पराई मानै अपनी भेद नहीं करता।।११।।

तू चेतन अरु देह अचेतन रह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतन तै बिछुडै ज्यो पय अरु पानी।
रूप तुम्हारा सबसो न्यारा भेदज्ञान करना।
जौलों पौरुष थकै न तौलो उद्यम सो चरना ।।१२।।

तू नित पौखे यह सूखै ज्यो धोवे त्यो मैली।
निश दिन करै उपाय देह का रोगदशा फैली।
मात पिता रज वीरज मिलकर बनी देह तेरी।
हाड मास नश लहू राध की प्रगट व्याधि घेरी ।।१३।।

काना पौडा पड़ा हाथ यह चूसै तौ रोवै।
फलै अनत जु धर्मध्यान की भूमि विषै बोवै।
केसर चंदन पुष्प सुगंधित वस्तु देख सारी।
देह परस तें होय अपावन निशदिन मल जारी ।।१४।।

ज्यो सरजल आवत मोरी त्यो आश्रव कर्मन को।
र्दवित जीव प्रदेश गहै जब पुदगल भरमन को।
भावित आश्रव भाव शुभाशुभ निशदिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनो कर्ता कारण बंधन को ।।१५।।

पन मिथ्यात्व योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब सत्तावन मानो।
मोहभाव की ममता टारे पर परणत खोते।
करै मोख का यतन निराश्रव ज्ञानी जन होते ।।१६।।

ज्यो मोरी मे डाट लगावे तब जल रुक जाता।
त्यो आश्रव को रोकै संवर क्यों नहि मन लाता।
पंच महाव्रत समिति गुप्त कर वचन काय मनको।
दशविध धर्म परीषह बाइस बारह भावन को ।।१७।।

चक्ररतन हलधरसा भाई काम नहीं आया।
एक तीर के लगत कृष्ण की विनश नई काया।
देव धर्म गुरु शरण जगत मैं और नहीं कोई।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन यूंही उमर खोई।।६।।

जनममरण अरु जरारोग से सदा दुःखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव परिवर्तन सहता।
छेदन भेदन नरक पशुगति वध बंधन सहना।
राग उदय से दुख सुरगति मे कहां सुखी रहना।।७।।

भोगि पुण्यफल हो इकइंदी क्या इसमे लाली।
कुतवाली दिन चार वही फिर खुरपा अरु जाली।
मानुष जन्म अनेक विपतिमय कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिले शुभाशुभ को मेटो लेखा।।८।।

जनमे मरै अकेला चेतन सुखदुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह देह जुदी होगी।
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं पिता पुत्र दारा।।९।।

ज्यो मेले मे पंथीजन मिलि नेह फिरैं धरते।
ज्यो तरुवर पै रैन बसेरा पक्षी आ करते।
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थकथक हारे।
जाय अकेला हंस संग में कोई न पर मारे।।१०।।

मोहरूप मृगतृष्णा जगमें मिथ्या जल चमकै।
मृग चेतन नित भ्रम मै उठ उठ दौडैं थक थककै।
जल नहिं पावै प्राण गमावै भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी भेद नहीं करता।।११।।

तू चेतन अरु देह अचेतन रह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतन तैं बिछुडैं ज्यो पय अरु पानी।
रूप तुम्हारा सबसो न्यारा भेदज्ञान करना।
जौलो पौरुष थकै न तौलो उद्यम सो चरना ।।१२।।

तू नित पौखे यह सूखै ज्यो धोवे त्यो मैली।
निश दिन करै उपाय देह का रोगदशा फैली।
मात पिता रज वीरज मिलकर बनी देह तेरी।
हाड मास नश लहू राध की प्रगट व्याधि घेरी ।।१३।।

काना पौंडा पडा हाथ यह चूसै तौ रोवै।
फलै अनंत जु धर्मध्यान की भूमि विषैं बोवैं।
केसर चंदन पुष्प सुगंधित वस्तु देख सारी।
देह परस तें होय अपावन निशदिन मल जारी ।।१४।।

ज्यो सरजल आवत मोरी त्यो आश्रव कर्मन को।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब पुदगल भरमन को।
भावित आश्रव भाव शुभाशुभ निशदिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनो कर्ता कारण बधन को ।।१५।।

पन मिथ्यात्व योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब सत्तावन मानो।
मोहभाव की ममता टारे पर परणत खोते।
करै मोख का यतन निराश्रव ज्ञानी जन होते ।।१६।।

ज्यो मोरी मे डाट लगावे तब जल रुक जाता।
त्यो आश्रव को रोकै संवर क्यो नहिं मन लाता।
पच महाव्रत समिति गुप्त कर वचन काय मनको।
दशविध धर्म परीषह बाइस बारह भावन को ।।१७।।

यह सब भाव सतावन मिलकर आस्रव को खोते ।
सुपन दशा से जागो चेतन कहां पडे सोते ।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध भाव न सवर पावै ।
डांट लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै ।।१८।।

ज्यो सरवर जल रुका सूखता तपन पड़ै भारी ।
संवर रोकै कर्म निर्जरा ह्वै सोखन हारी ।
उदय भोग सविपाक समय पक जाय आम डाली ।
दूजी है अविपाक पकावै पाल विषै माली ।।१९।।

पहली सबके होय नही कुछ सरै काम तेरा ।
दूजी करै जु उद्यम करके मिटै जगत फेरा ।
संवर सहित करो तप प्रानी मिलै मुकति रानी ।
इस दुलहिन की यही सहेली जानै सब ज्ञानी ।।२०।।

लोक अलोक आकाश मांहि थिर निराधार जानो ।
पुरुषरूप कर कटी भये षट द्रव्यन सों मानो ।
इसका कोइ न करता हरता अमिट अनादी है ।
जीव रु पुद्गल नाचै यामै कर्म उपाधी है ।।२१।।

पापपुण्य सों जीव जगत मै नित सुख दुःख भरता ।
अपनी करनी आप भरै सिर औरन के धरता ।
मोहकर्म को नाश मेटकर सब जब की आसा ।
निज पद मै थिर होय लोक के शीश करो बासा ।।२२।।

दुर्लभ है निगोद से थावर अरु त्रसगति पानी ।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ।
उत्तमदेह सुसंगति दुर्लभ श्रावककुल पाना ।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम पंचम गुणठाना ।।२३।।

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन शुद्धभाव करना।
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन बोधिज्ञान पावै।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर इस भव मे आवै ॥२४॥

षट् दरशन अरु बौद्धरु नास्तिक ने जग को लूटा।
मूसा ईसा और मुहम्मद का मजहब झूटा।
हो सुछंद सब पाप करें सिर करता के लावै।
कोई छिनक कोई करता से जग में भटकावै ॥॥२५॥

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन श्री जिनकी वानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामें सबको सुखदानी।
इनका चिंतन बार बार कर श्रद्धा उर धरना।
मंगल इसी जतनतें इकदिन भवसागर तरना ॥२६॥

चौबी ठाणा

देव धर्म गुरु ग्रन्थ कों वन्दो मनवचकाय।
गुणठाणा परयन्त्र की रचना कहों बनाय॥
गति चार इंद्री पांच, कायषट योग पंद्रै।
वेद तीन चौकषाय ज्ञान आठ सारे है॥
म सात दग चार लेश्याषट् भव्य दोय।
सैंनीं दोय सम्यक छै दोय ही आहारे हैं॥
गुण चौदा जीव चौदा प्रजा पर प्राण दस।
प्रत्यय सत्तावन उपयोग भेद बारह है॥
ध्यान सौले संज्ञा चार जाति लाख चउरासी।
आधघाटि कुल दौसै लाख कोडि धारे है॥

पहिले तें चतुलग गति चार पंचम मे नर पशु विचार ।
छट्ठे तें चौदम लग कही मानुष गति इक जानो सही ।।
इन्द्री पाँचो है मिथ्यात्व दूजे तें चौदम लग जात ।
इक पंचेन्द्री जिनवर कहो इमि इन्द्रिय वर्णन बरणई ।।

पहिले गुण षट्काय जु लसें दूजेतें चौदम त्रस बसे ।
पहिले दूजे तेरम योग हारक द्विक बिन जान नियोग ।।
तीजेमे दस इमि गिनिलाय मन वच अष्ट औदारिक काय ।
वैक्रियक मिल दस भये चौथे त्रयोदश पहिले कहे ।।
प मे मन वच वसु जान और औदारिक मिल नवठान ।
त्त मे एकादश योग हारक द्विक युत जान नियोग ।।
सप्तमतें बारम लग जान नव पंचमवत् जान सुजान ।
तेरम जोग सप्त निरधार अनुभय सत्य वचन मन चार ।।

औदारिक औदारिकमिश्र कार्माण मिल सप्त जु मिश्र ।
चौदम जोग भये सबक्षीण ये जोगन की विधि परवीन ।।
वेद प्रथमतें नव लग तीन आगे वेद न जान प्रवीन ।
अब कषाय को वर्णन करो गुण ठाणा भिन्न भिन्न उच्चरों ।।

पहिले दूजे सर्व मिश्र इक बीस भनीजे ।
चोथे हू एकबीस, चौकड़ी प्रथम न लीजे ।।
अप्रत्याख्यानी विना देश संयम में सतरा ।
प्रत्याख्यानी बिना तेर षट सत वसु इतरा ।।
नौवे गुण सात है संज्वलन त्रय वेद भव ।
दशवें सूक्ष्म लोग इक आगे ही कसाय गव ।।
प्रथम द्वितीय कुज्ञान तीन तीजे सु मिश्र धन ।
चौथे तीन सुज्ञान पांचवें मे भी इमि गन ।।

षटतें द्वादश तईं ज्ञान केवल विन चारो।
तेरम चौदम गुणस्थान केवल इक धारो।।

इहिविधि गुण पर ज्ञान को कथन कहो जगदीश ने।
अब संयम रचना कहूं जिमि सूत्तर भाषी जिने।।

पहिले तें चतु लगै असंयम ही इक जानो।
पंचम संयम देश छठे सप्तम इमि जानो।।

सामायिक छेदोपस्थापना परिहारविशुद्धि।
अष्टम नव गुण दोय नाहिं परिहारविशुद्धि।।

सांपराय सूच्छम दसे ग्यारमतें जु अयोग तक।
इक यथाख्यात ही जानिये, ये संयम सुखकर अधिक।।

पहिले दूजे दोय चक्षु अचक्षु भनीजे।
त्रय तें बारम तईं अवधियुत तीन गनीजे।।

केवल तेरम् चौद और षट लेश्या चतु लग।
पंचम षष्ठं सप्त तीन शुभ लेश्या हर अघ।।

पुनि अष्टम तें सयोग तक एक शुकल लेश्या कही।
गुण चौदह सब नासिकें जाय सिद्ध पदवी लही।।

पहिले भव्य अभव्य दुतियतें भवि चौदम तक।
त्रयगुण के जो नाम तहां वोही सम्यक इक।।

चतु पन षट् सत मांहि क्षय उपशम अरु वेदक।
वसुतें ग्यारम तईं दोय उपशम अरु क्षायिक।।

शेषन क्षायिक ही कही सैनी असैनी मिथ्यात्व मे।
गुण दूजे तें चौदम तईं इक सैनी ही सुखपात मे।।

पहिले दूजे हार अन्हारक तीजे हारक चौथे दोय।
पंचम तें बारम लग हारक तेरम हार अन्हारक होय।।

चौदम इक अनहार गनीजे गुनठाना चोदम इम लोय।
पहिले जीवसमास सकल है शेषन मे त्रस और न कोय।।
पर्यापति चौदम लग षट् ही प्राण बार मे लग दस जान।
तेरम् वच तन स्वास आयु चतु चौदम इक आयु पहिचान।।

ा कहियत षट् लग चारो, सप्त अष्ट त्रय हारन ठान।
नवमे मैथुन परिग्रह दोनो द परिग्रह आगे हान।।

पहिले दूजे दर्श दोय कुज्ञान तीन हैं।
मिश्र मांहि त्रय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन है।।
चतु पन षट्विज्ञान तीन शुभ रूप बखानो।
षट्तैं द्वादश तईं सप्त मनःपर्यय जानो।।
तेरम चौदम दोय है केवल दर्शन ज्ञान युत्।
अब कछु कुध्यान वर्णन करो जिनशासन अनुसार वत्।।

पहिले दूजे अष्ट आर्त्तरुद्दर के जोई।
मिश्र मांहि नव जान धर्म का एक मिलोई।।
पुनिवृष के दुव भेद मिलें चतुगण बाणो।
पंचम त्रय वृष मिलें एकादश पहिचानो।।
षट् अनायतन त्रय धर्म चउ ग्यारम लग शुकल।
बारम तेरम पुनि चौदमे क्रमतें शेष त्रिक शुकल।।

पहिले पचपन कहे अहारक द्विक बिन जानो।
पच मिथ्यात्व जु विना ही दुतिय पच्चास ानो।।
तीजे मिश्र जु माहि तीन चालीस बखानो।
अव्रत गण जिहिं नाम हुरिय चालिस छह जानो।।
यो कषाय जु पूर्ववत अव्रत ग्यारह पंच मे।
चौबीस योग कषाय के प्रमत्त गिनिये संघ मे।।

सप्तम अष्टम गुणस्थान बाईस जु आश्रव ।
नव मे सोलह लये धरम दस ग्यारम मे नव ।।
बारम मे नव जान तेरमे सप्त गनीजे ।
मन वच के दुय दोय औदारिक युगल सु लीजे ।।
कारमाण मिल सप्त ये तेरम गण मे जानिये ।
पुनि चौदम मे आश्रव नही यह मन वच उर आनिये ।।
चौरासी लख यौनी प्रथम गण ढाने सारी ।
दूजेंतें चौ तई लाख छब्बीस विचारी ।।
पंचम मे नर पशु लाख अट्ठारह जानो ।
षट्तें चौदह तई मनुज लख चौदह ढानो ।।
कुल कोडि प्रथम जान अब दूजें तें चतुलग चऊ ।
पंचम वर पशु सकल गत आगे मानव जान सऊ ।।
ये सब रचना पर तनी यामे हू नांहि जीव ।
तेरा दर्शन ज्ञान गण तामे रही सदीव ।।

ा ीस दण

वन्दो वीर सुधीर को महावीर गंभीर ।
वर्धमान सन्मति महा देव देव अतिवीर ।।
गत्यागत्य प्रकाश के गत्यागत्य व्यतीत ।
अद्भुत अतिगति सुगति जो जैनसूर जगदीश ।।
जाकी भक्ति बिना विफल गये अनन्ते काल ।
अगणित गत्यागति धरी कटो न जग जंजाल ।।
चौबींसो दंडकयिबै धरी अनन्ती देह ।
नांहि लखियो ज्ञान धन शुद्ध स्वरूप विदेह ।।

जिनवाणी परसादते लहिये आतम ज्ञान ।
दहिये गत्यागति सवै गहिये पद निर्वाण ।।
चौबीसो दंडक तनो गत्यागति सुन लेव ।
सुनकर विरक्त भाव धरि चहुँगति पानी देव ।।
पहिलो दंडक नारक तनो भवन पती दस दंडक भनो ।
ज्योतिष व्यंतर सुरगति बास थावर पंच महाद्दुख रास ।।
विकलत्रय अरु नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय धारक परपंच ।
ये चौबीसो दंडक कहे अब सुन लीजे भेद जु लहे ।।

नारक की गति आगति दोय नर तिर्यंच पचेन्द्रिय होय ।
जाय असैनी पहिला लगै मनबिन हिंसा करम न पगै ।।

सरीसर्प दूजे लग जांहि तीजे लग पक्षी शक नाहीं ।
सर्प जाय चोथे लग सही नाहर पंचम आगे नहीं ।।

नारी छट्ठे लग ही जाय नर अरु मच्छ सातवें थाय ।
ये तौ नरकतनी गति जान अब आगति भाखी भगवान ।।

नरक सातवें को जो जीव पशुगति ही पावे दुखदीव ।
और नारकी षष्ठ सदीव दो गति पावें नर पशु जीव ।।

छट्ठे को निकसो जु कदापि सम्यक्त्वी होवे निष्पाप ।
पंचम को निकसो मुनि होय चौथे के केवलि हू जोय ।।

तृतीय नरक को निकसो जीव तीर्थंकर हू ह्वै जग पीव ।
ये नारक की गत्यागत्य भाषी जिनवाणी में सत्य ।।

तेरह दंडक देव निकाय तिनके भेद सुनो मन लाय ।
नर त्रियच पंचेन्द्री बिना औरन के सुरपद नहिं गिना ।।

देव मरे गति पंच महाय भू जल तरुवर नर पशु काय ।
दूजे सुरग उपरले देव थावर ह्वै न कहैं जिनदेव ।।

सहस्त्रारते ऊचे सुरा मरकर होवे निश्चय नरा ।
नर पशु भोगभूमि के दोय दूजे सुरग परे नहिं जोय ।।
जाय नहिं यह निश्चय कही देवनि भोगभूमि नहि लही ।
करम भूमियां नर अरु ढोर इन बिन भोगभूमि नहि और ।।
जांय न तातें आगति होय गति इनको देवनि की होय ।
कर्मभूमियां तिर्यग सत्त श्रावकव्रत धरि वारम गत्त ।।
सहस्त्रार ऊपर तिर्यंच जांय नहीं ये तजि परपंच ।
अव्रत सम्यक्त्वी नरभाय बारम तें ऊपर नहिं जाय ।।
अन्यमति पंचाग्नी साध भवनत्रिक तें जाय व बाध ।
परिव्राजक दंडी है जेह पचम परे वाहि उपजेह ।।
परम हस नामा परमती सहस्त्रार ऊपर नहि गति ।
मोक्ष न पावे परमत मांहि जैन बिना नहीं कर्म नशाहिं ।।
श्रावक आर्य अणुव्रत धार बहुरि श्राविकागण अविकार ।
च्युतस्वर्ग परे नहिं जाय ऐसो भेद कहो जिनराय ।।
व्यलिंग धारी जे जती नवग्रीवक आगे नहिं गती ।
ाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय परतछ लिंग निंद्य है सोय ।।
च पंचोत्तर नव नवोत्तर महागुणा बिन और न धरा ।
ई बार देव जिय भयो पै केई पद नाही लयो ।।
न्द्र हूवो न शची हू भयो लोक बाल कबहूं नहिं थयो ।
ोकान्तिक हूवो न कदापि अनुत्तर मंह पहुंचो न कदापि ।।
। पद धरि अन पद नहिं धरे अल्पकाल मे मुक्तहि बरे ।
ः विमान सर्वारथ सिद्ध सबतें ऊंचो अतुल जु रिद्धि ।।
ाके ऊपर है शिवलोक परे अनन्तानंत अलोक ।
ाति आगति देवनि को भनी अब सुनि लो मानुषगति तनी ।।

जिनवाणी परसादतें लहिये आतम ज्ञान ।
दहिये गत्यागति सवैं गहिये पद निर्वाण ।।
चौबीसो दंडक तनी गत्यागति सुन लेव ।
सुनकर विरक्त भाव धरि चहुँगति पानी देव ।।
पहिलो दंडक नारक तनो भवन पती दस दंडक भनो ।
ज्योतिष व्यंतर सुरगति बास थावर पंच महादुख रास ।।
विकलत्रय अरु नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय धारक परपंच ।
ये चौबीसो दंडक कहे अब सुन लीजे भेद जु लहे ।।
नारक की गति आगति दोय नर तिर्यंच पंचेन्द्रिय होय ।
जाय असैंनी पहिला लगैं मनबिन हिंसा करम न पगै ।।
सरीसर्प दूजे लग जांहि तीजे लग पक्षी शक नाहीं ।
सर्प जाय चोथे लग सही नाहर पंचम आगे नहीं ।।
नारी छट्ठे लग ही जाय नर अरु मच्छ सातवे थाय ।
ये तौ नरकतनी गति जान अब आगति भाखी भगवान ।।
नरक सातवें को जो जीव पशुगति ही पावे दुखदीव ।
और नारकी षष्ठ सदीव दो गति पावें नर पशु जीव ।।
छट्ठे को निकसो जु कदापि सम्यक्त्वी होवे निष्पाप ।
पंचम को निकसो मुनि होय चौथे के केवलि हू जोय ।।
तृतीय नरक को निकसो जीव तीर्थंकर हू ह्वै जग पीव ।
ये नारक की गत्यागत्य भाषी जिनवाणी में सत्य ।।
तेरह दंडक देव निकाय तिनके भेद सुनो मन लाय ।
नर त्रियंच पचेन्द्री बिना औरन के सुरपद नहिं गिना ।।
देव मरे गति पंच महाय भू जल तरुवर नर पशु काय ।
दूजे सुरग उपरले देव थावर ह्वै न कहे जिनदेव ।।

सहस्त्रारते ऊंचे सुरा मरकर होवे निश्चय नरा ।
नर पशु भोगभूमि के दोय दूजे सुरग परे नहिं जोय ।।
जाय नहिं यह निश्चय कही देवनि भोगभूमि नहि लही ।
करम भूमियां नर अरु ढोर इन बिन भोगभूमि नहि और ।।
जांय न ताते आगति होय गति इनको देवनि की होय ।
कर्मभूमिया तिर्यंग सत्त श्रावकव्रत धरि वारम गत्त ।।
सहस्त्रार ऊपर तिर्यंच जांय नही ये तजि परपंच ।
अव्रत सम्यक्त्वी नरभाय बारम तें ऊपर नहिं जाय ।।
अन्यमति पंचाग्नी साध भवनत्रिक तें जाय व बाध ।
परिव्राजक दंडी है जेह पचम परे वाहि उपजेह ।।
परम हस नामा परमती सहस्त्रार ऊपर नहि गति ।
मोक्ष न पावे परमत माहि जैन बिना नही कर्म नशाहि ।।
श्रावक आर्य अणुव्रत धार बहुरि श्राविकागण अविकार ।
अच्युतस्वर्ग परे नहिं जाय ऐसो भेद कहो जिनराय ।।
द्रव्यलिग धारी जे जती नवग्रीवक आगे नहि गती ।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह होय परतछ लिंग ि है सोय ।।
पंच पचोत्तर नव नवोत्तर महागुरग बिन और न धरा ।
केई बार देव जिय भयो पै केई पद नाही लयो ।।
इन्द्र हूवो न शची हू भयो लोक बाल कबहूं नहिं थयो ।
लोकान्तिक हूवो न कदापि अनुत्तर मंह पहुँचो न कदापि ।।
ये पद धरि अन पद नहि धरे अल्पकाल मे मुक्तहिं बरे ।
हे विमान सर्वारथ सिद्ध सबतें ऊँचो अतुल जु रिद्धि ।।
ताके ऊपर है शिवलोक परे अनन्तानंत अलोक ।
गति आगति देवनि की भनी अब सुनि लो मानुषगति तनी ।।

चौबीसो दंडक के मांहि, मनुष जांहि यामें शक नांहि।
मुक्तिहु पावे मनुष मुनीश, सकल धरा को ह्वै अवनीश ॥
मुनि बिन मोक्ष न पावे और, मनुष विना नहिं मुनि को ठौर।
सम्यग्दृष्टी जे मुनिराय, भवदधि उतरे शिवपुर जाय ॥
तहा जाय अविनश्वर होय, फिर जग में आवे नहि कोय।
रहे सासते आतम मांहि, आतमराम भये शक नांहि ॥
गति पच्चीस कही वरतनी, आगत पुनि बाईस हि भनी।
तेजकाय अरु वात जु काय, इन बिन और सबै नर थाय ॥
गति पच्चीस आगति बाईस, मनुषतनी भाषी जगदीश।
ता ईश्वरसम आतमरूप, ध्यावे चिदानंद चिद्रूप ॥
तो उतरे भवसागर भया, और न कोई शिवपुर लया।
ये सामान्य मनुष की कही, अब सुनि पदवी धर की सही ॥
तीर्थंकर की आगति दोय, सुर नारक तें आवे सोय।
फेर न गति धारे जग ईश, जाय विराजे जग के शीश ॥
चक्री अर्द्ध चक्री वाहली स्वर्गलोक तें आवें बली।
इनकी आगति एकहि कही, अब सुनिये जागति जू सही ॥
चक्री की गति तीन बखान, स्वर्ग नरक अरु मोक्ष सुथान।
तप धारे तो सुर शिव जाय, मरे राज में नरक लहाय ॥
आखिर पावे पद निर्वाण, पदवीधर ये पुरुष प्रधान।
बलभद्दर की है जुगती सुरग जायके ह्वै शिवपती ॥
तप धारे ये निश्चय भाय, मुक्तिपात्र सूत्रन मे गाय।
अर्द्ध चक्रि को एकहि भेद, जाय नरक में लहे जु खेद ॥
राजमांहिं यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्तिपंथ नहिं धरे।
आखिर पावें पद निर्वाण, पदवी धारक बड़े सुजान ॥

इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही बखान।
आखिर पावें पद शिवलोक, पुरुष शलाका शिव के थोक ।।

ये पद पाय सु जग के जीव, अल्पकाल में ह्वै जगपीव।
औरहु पद केई गहे, कुलकर नारद हू नहिं लहे ।।

रुद्र भये न मदन हू भये, जिनवर तात मात नहिं थये।
ये पद पाय रुलें नहिं जीव, थोरे दिन में ह्वै शिवपीव ।।

इनकी आगत्ति श्रुतते जान, जागति रीति कहूँ जु बखान।
कुलकर देवलोक ही जाय, मदन मदन हरि ऊरध थाय ।।

नारद्र रुद्र अधोगति जाय कलह कलक महादुखदाय।
जन्मान्तर पावे निर्वाण बड़े पुरुष ये सूत्र प्रमाण ।।

तीर्थंकर के पिता प्रसिद्ध स्वर्ग जाय के होवें सिद्ध।
माता स्वर्ग लोक ही जाय आखिर शिव सुख वेग लहाय ।।

ये सब रीति मनुष की कही अब सुनि तिर्यंगगति की सही।
पचेन्द्री पशु मरण कराय चौबीसो दडक मे जाय ।।

चौबीसो दंडकतें मरें पशु होय तो हानि न परे।
गति आगति वरणी चौबीस पचेन्द्री पशु की जगदीश ।।

ता परमेश्वर को पथ गहो चौबीसो दडक को दहो।
विकलत्रय की दस दस गति आगति भाषी है जिनपती ।।

थावर पचविकलत्रय तीन भइ तिर्यन्च पचेन्द्री लीन।
इनहीते विकलत्रयथाय, इन ही दस मे उपजे आय ।।

नारक विन दडक है जोय पृथ्वी पानी तरुवर होय।
तेज वायु मरि नव मे जाय मनुष होय नहिं सूत्र कहाय ।।

थावर पंच विकलत्रय ढोर ये नव गति भाषी मदमोर ।
दसतें आय तेज अरु वाय होय सही गावे जिनराय ।।

ये चौबीसो दंडक कहे इनकूं त्याग परम पद लहे ।
इनमे रुले सो जग को जीव इनसे तिरे सो त्रिभुवन पीव ।।

जीव ईश मे और न भेद ये कर्मी वे करम उछेद ।
कर्मबध जौलो जगजंत नाशत कर्म होय भगवत ।।

मिथ्या अव्रत जोग अरु मद प्रमाद कषाय ।
इन्द्रिय विषय जु त्यागिये भ्रमण दूर हो जाय ।

जिन बिन गति बहुते धरी भयौ नहि सुलझार ।
जिन मारग उर धारिकें लहिये भवदधि पार ।।

जिन भज सब परपच तज बड़ी बात है येह ।
पच महाव्रत धारिके भ ल को जल देह ।।

अन्तःकरण जु शुद्ध है जिन धरमी अभिराम ।
भाषा भविजन कारणे भाषी 'दौलतराम' ।।

।। इति चौबीस दण्डक ।।



श्रीमत्पूज्यपादस्वामिविरचितः

टोपदेशः

यस्य स्वयं स्वभावाप्तिरभावे कृत्स्नकर्मणः ।
तस्मै संज्ञानरूपाय नमोऽस्तु परमात्मने ॥१॥

योग्योपादान योगेन दृषदः स्वर्णता मता ।
द्रव्यादिस्वादिसम्पत्तावात्मनोऽप्यात्मता मता ॥२॥

वरं व्रतैः पदं दैव नाव्रतैर्बत नारकम् ।
छायातपस्थयोर्भेदः प्रतिपालयतोर्महान ॥३॥

यत्र भावः शिवं दत्ते द्यौः कियद्दूरवर्तिनी ।
यो नयत्याशु गव्यूति क्रोशार्द्धे किं स सीदती ॥४॥

हृषीकजमनातंकं दीर्घकालोपलालितम् ।
नाके नाकौकसा सौख्यं नाके नाकौकसामिव ॥५॥

वासनामात्रमेवैतत्सुखं दुःखं च देहिनां ।
तथा ह्युद्वेजयंत्येते भोगा रोगा इवापदि ॥६॥

मोहेन संवृतं ज्ञानं स्वभावं लभते न हि ।
मत्त· पुमान्पादार्थानां यथा मदनकोद्रवैः ॥७॥

वपुर्गृहं धनं दाराः पुत्रा मित्राणि शत्रवः ।
सर्वथान्यस्वभावानि मूढः स्वानि प्रपद्यते ॥८॥

दिग्देशेभ्य. खगा एत्य सवसंति नगे नगे ।
स्वस्वकार्यवशाद्याति देशे दिक्षु प्रगे प्रगे ॥९॥

विराधक. कथ हंत्रे जनाय परिकुप्यति ।
त्र्यगुल पातयन्पद्भ्यां स्वय दंडेन पात्यते ॥१०॥

रागद्वेषद्वयीदीर्घनेत्राकर्षण कर्मणा ।
अज्ञानात्सुचिर जीव. ससाराब्धौ भ्रमत्यसौ ।।११।।

विपद्भवपदावर्ते पदिके वातिबाह्यते ।
यावत्तावद्भवत्यन्याः प्रचुरा विपदः पुरः ।।१२।।

दुरर्ज्येनासुरक्षेण नश्वरेण धनादिना ।
स्वस्थंमन्यो जनः कोऽपि ज्वरवानिव सर्पिषा ।।१३।।

विपत्तिमात्मनो मूढ. परेषामिव नेक्षते ।
दह्यमानमृगाकीर्णवनातर तरुस्थवत् ।।१४।।

आयुर्वृद्धि क्षयोत्कर्षहेतु कालस्य निर्गम ।
वांछतां धनिनामिष्टं जीवितात्सुतरा धन ।।१५।।

त्यागाय श्रेयसे वित्तमवित्तः संचिनोति य. ।
स्वशरीरं स पंकेन स्नास्यामीति विलंपति ।।१६।।

आरभे तापकाण्प्राप्तावतृप्ति प्रतिपादकान् ।
अंते सुदुस्त्यजान् कामान् कामं कः सेवते सुधीः ।।१७।।

भवति प्राप्य यत्सगमशुचीनि शुचीन्यपि ।
स कायः संततापायस्तदर्थं प्रार्थना वृथा ।।१८।।

यज्जीवस्योपकाराय तद्देहस्यापकारकं ।
यद्देहस्योपकाराय तज्जीवस्यापकारकं ।।१९।।

इतिश्चिन्तामणिर्दिव्य इतः पिण्याकखंडक ।
ध्यानेन चेदुभे लभ्ये क्वाद्रियतां विवेकिनः ।।२०।।

स्वसंवेदनसुव्यक्तस्तनुमात्रो निरत्ययः ।
अत्यतसौख्यवानात्मा लोकालोकविलोकनः ।।२१।।

सयम्य करणग्राममेकाग्रत्वेन चेतसः ।
आत्मानमात्मवान्ध्यायेदात्मनैवात्मनि स्थित ।।२२।।

अज्ञानोपास्तिरज्ञानं ज्ञानं ज्ञानि समाश्रयः ।
ददाति यत्तु यस्यास्ति सुप्रसिद्धमिद वचः ॥२३॥

परीषहाद्यविज्ञानादास्रवस्य निरोधिनी ।
जायतेऽध्यात्मयोगेन कर्मणामाशु निर्जरा ॥२४॥

कटस्य कर्त्ताहमिति संबंधः स्याद् द्वयोर्द्वयोः ।
ध्यानं ध्येयं यदात्मैव संबंधः कीदृशस्तदा ॥२५॥

बध्यते मुच्यते जीवः सममो निर्ममः क्रमात् ।
तस्मात्सर्व प्रयत्येन निर्ममत्वं विचिंतयेत् ॥२६॥

एकोऽहं निर्ममः शुद्धो ज्ञानी योगीन्द्र गोचरः ।
बाह्याः संयोगजा भावा मत्तः सर्वेऽपि सर्वथा ॥२७॥

दुःखसंदोहभागित्व सयोगादिह देहिनाम् ।
त्यजाम्येन ततः सर्व मनोवाक्कायकर्मभिः ॥२८॥

न मे मृत्यु. कुतो भीतिर्न मे व्याधिः कुतो व्यथा ।
नाहं बालो न वृद्धोऽह न युवैतानि पुद्गले ॥२९॥

भुक्तोज्झिता मुहुर्मोहान्मया सर्वेऽपि पुद्गलाः ।
उच्छिष्टेष्विव तेष्वद्य मम विज्ञस्य का स्पृहा ॥३०॥

कर्म कर्महिताबन्धि जीवो जीवहितस्पृहः ।
स्वस्वप्रभावभूयस्त्वे स्वार्थं को वा न वछति ॥३१॥

परोपकृतिमुत्सृज्य स्वोपकारपरो भव ।
उपकुर्वन्परस्याज्ञो दृश्यमानस्य लोकवत् ॥३२॥

गुरुपदेशादभ्यासात्संवित्तेः स्वपरांतरं ।
जानाति यः स जानाति मोक्षसौख्यं निरंतरम् ॥३३॥

ष्वस्मिन्सद भिलाषित्वाद भीष्टज्ञापकत्वतः ।
स्वयं हितप्रयोक्तृत्वादात्मैव गुरुरात्मनः ।।३४।।

नाज्ञो विज्ञत्वमायाति विज्ञो नाज्ञत्वमृच्छति ।
निमित्तमात्र मन्यस्तु गतेर्धर्मास्तिकायवत् ।।३५।।

अभवच्चित्तविक्षेप एकाते तत्त्वसंस्थितिः ।
अभ्यस्येदभियोगेन योगी तत्वं निजात्मनः ।।३६।।

यथा यथा समायाति संवित्तौ तत्त्वमुत्तमम् ।
तथा तथा न रोचंते विषयाः सुलभा अपि ।।३७।।

यथा यथा न रोचंते विषयाः सुलभा अपि ।
तथा तथा समायाति संवित्तौ तत्वमुत्तमम् ।।३८।।

निशामयति निःशेसमिंद्रजालोपमं जगत् ।
स्पृहयत्यात्मलाभाय गत्वान्यत्रानुतप्यते ।।३६।।

इच्छत्येकांतसंवासं निर्जनजनितादरः ।
निजकार्यवशात्किंचिदुक्त्वा विस्मरति द्रुतं ।।४०।।

ब्रुवन्नापि हि न ब्रूते गच्छन्नपि न गच्छति ।
स्थिरीकृतात्मातत्त्वस्तु पश्यनपि न पश्यति ।।४१।।

किमिदं कीदृशं कस्य कस्मात्क्वेत्य विशेषयन् ।
स्वदेहमपि नावैति योगी योगपरायण ।।४२।।

यो यत्र निव ास्ते स तत्र कुरुते रतिं ।
यो यत्र रमते तस्मादन्यत्र स न गच्छति ।।४३।।

अगच्छस्तद्विशेषणामनभिज्ञश्च जायते ।
अज्ञाततद्विशेषस्तु बद्धयते न विमुच्यते ।।४४।।

परः परस्ततो दुःखमात्मैवात्मा ततः सुखं ।
अत एव महात्मानस्तन्निमित्तं कृतोद्यमा· ।।४५।।

अविद्वान्पुद्गलद्रव्यं योऽभिनन्दति तस्य तत् ।
न जातु जंतोः सामीप्यं चतुर्गतिषु मुञ्चति ।।४६।।

आत्मानुष्ठाननिष्ठस्य व्यवहारबहिःस्थितेः ।
जायते परमानंदः कश्चिद्योगेन योगिनः ।।४७।।

आनंदो निर्दहत्युद्धं कर्मेन्धनमनारतं ।
न चासौ खिद्यते योगीर्बहिर्दुःखेष्वचेतनः ।।४८।।

अविद्याभिदुरं ज्योतिः परं ज्ञानमयं महत् ।
प्रष्टव्यतदेष्टव्यं तद्द्रष्टव्यं मुमुक्षुभिः ।।४९।।

जीवोऽन्यः पुग्दलश्चान्य इत्यसौ तत्त्वसंग्रह ।
यदन्यदुच्यतेकिंचिप्सोऽस्तु तस्यैव विस्तरः ।।५०।।

इष्टोपदेशमिति सम्यगधीत्य धीमान्
मानापमानसमतां स्वमताद्वितन्य ।
मुक्ताग्रहो विनिवसन्सजने वने वा
मुक्तिश्रियं निपपमामुपयाति भव्यः ।।५१।।

।। इति श्रीइष्टोपदेशः समाप्तः ।।

— ❀ -

卐 आध्यात्मिक रोचक भजन

संग्रहकर्त्ता —शान्तिकुमार गंगवाल

जाना नही निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए।
ध्याया नही शुद्ध आत्मा, ध्यानी हुए तो क्या हुए ।।टेक।।
श्रुत सिद्धान्त पढ लिये, शास्त्रवान बन गये।
आतम रहा बहिरात्मा, पडित हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।१।।
पच महाव्रत आदरे, घोर तपस्या भी करे।
मन की कषायें ना गई, साधु हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।२।।
माला के दाने फेरते, मनुवा फिरे बाजार मे।
मनका न मन से फेरते, जपिया हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।३।।
गा के बजा के नाच के, पूजन भजन सदा किये।
भगवन हृदय मे ना बसे, पुजारी हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।४।।
करते न जिनवर दर्श को, खाते सदा अभक्ष्य को।
दिल मे जरा दया नही, मानव हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।५।।
मान बडाई कारणे, द्रव्य हजारो खर्चते।
घर के तो भाई भूखन मरे, दानी हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।६।।
औगुन पराये हेरते, दृष्टि न अन्तर फेरके।
"शिवराम" एक ही नाम के, शायर हुए तो क्या हुए ।। जाना० ।।७।।

आवरण पृष्ठ का परिचय

सम्यक्श्रद्धा की शक्ति

आचार्य समतभद्र को भस्मक व्याधि हो गई थी, जिससे जितना भी खाते जाओ, वह थोडे से समय मे ही भस्म हो जाता था। आखिर अपने गुरु की आज्ञानुसार मुनिपद छोड दिया और एक शिवालय मे जाकर भोग चढाने के बहाने सवा मन गरिष्ठ भोजन करने लगे। धीरे-धीरे रोग शात होने लगा, जिससे भोग बचने लगा। राजा को सदेह हो गया राजा ने पता लगा ही लिया कि ये भोग चढाने के बहाने स्वय खा जाते हैं।

राजा ने कहा—शिवपिण्डी को नमस्कार करना पडेगा। समतभद्र ने विश्वास के साथ कहा-तुम्हारी मूर्ति मेरा नमस्कार सहन नहीं कर सकेगी। राजा ने मूर्ति को जजीर से बधवा दिया। समतभद्र ने २४तीर्थंकरो की स्तुति प्रारम्भ की। बीच मे चन्द्रप्रभु की स्तुति प्रारम्भ करते ही पिण्डी फट गई और चन्द्रप्रभु की मूर्ति प्रकट हो गई। यह सम्यक्त्व की अटल श्रद्धा की शक्ति थी।

श्री दिगम्बर जैन कुंथुविजय ग्रन्थमाला समिति जयपुर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित ग्रन्थो के बारे मे सम्मतिया

प्रथम प्रकाशन :

लघुवि ानु ाद

(यंत्र-मन्त्र-तन्त्र विद्या का एकमात्र संदर्भ ग्रन्थ)

ग्रन्थमाला समिति द्वारा भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के पावन पुनीत अवसर पर लघुविद्यानुवाद (यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विद्या का एकमात्र सदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया गया। इसका विमोचन **चामुण्डराय मडप मे** दिनाक २४-२-८१ को निमित्तज्ञान शिरोमणि श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज साहब के कर कमलो द्वारा हुआ था। समारोह मे दिगम्बर जैनाचार्य, मुनिगण आर्यिकाए, क्षुल्लक-क्षुल्लिकाए व गणमान्य श्रावक म च पर काफी सख्या मे उपस्थित थे। स्वस्ति श्री पट्टाचार्य चारुकीर्तिभट्टारक स्वामीजी व श्री पट्टाचार्य लक्ष्मीसेनभट्टारक स्वामीजी भी मौजूद थे। समाज के गणमान्य व्यक्तियो मे साहू श्री श्रेयासप्रसादजी, जैन सर-सेठ भागचन्दजी सोनी, श्री त्रिलोकचन्दजी कोठारी, श्री पूनमचन्दजी गगवाल (भरियावाले) श्री पन्नालालजी सेठी, श्री निर्मलकुमारजी सेठी आदि के नाम प्रमुख हैं। चामु डराय मण्डप खचाखच नर-नारियो से भरा हुआ था। यह ग्रन्थ करीब सात सौ पृष्ठो का दुर्लभ रगीन चित्रो, यत्रो-मन्त्रो तथा अनेक कष्ट निवारक व ऋद्धि सिद्धि दायक सामग्री का आकर्षक आवरण पृष्ठ व सुन्दर डिजाइन मे प्लास्टिक कवर के साथ यह सन् १९८१ का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। इतना सरल सुगम सामान्य भाषा मे प्रस्तुतीकरण जन-सामान्य के लिये आज तक किसी ग्रन्थ मे एक साथ उपलब्ध नही था। ग्रन्थ मे प्रकाशित सामग्री परमपूज्य श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज साहब व परमपूज्य श्री गणिनी १०५ आर्यिका विजयामतीजी ने बहुत ही कठिन परिश्रम से सकलन किया है।

श्री १०८ आचार्य स्थिवर र म्भवसागरजी महाराज

परम पूज्य चारित्रचक्रवर्ति सिद्धान्तवेत्ता सिद्धक्षेत्र वदनाभक्त शिरोमणि स्वर्गीय श्री १०८ आचार्य महावीरकीर्ति महाराज ने बहुत परिश्रम करके

इस विद्यानुवाद को लिखा था। आपके समाधिमरण के बाद गुरु की यह कृति लाखो नरनारियो को अनेको सकटो से बचाने के लिए व धर्मध्यानपूर्वक जीवन बिताने के लिए सहायक बने, इस दृष्टि से आचार्य कुन्थुसागर एव गणिनी आर्यिका विजयामति माताजी ने इस ग्रन्थ को प्रकाश मे लाकर महान उपकार किया है।

इस विद्यानुवाद मे सातसौ लघुविद्या, पाचसौ महाविद्याओ का वर्णन है। आठो महानिमित्तो का वर्णन है। इसकी पदसख्या एक करोड दस लाख है। धर्म प्रचार की भावना से इस ग्रथ को छपाकर महापुण्य के भागी श्री शान्तिकुमार गगवाल को हमारा शुभाशीर्वाद है कि आपकी धर्म की भावना बढती रहे।

स्वस्ति श्री पट्टाचार्य चारुकीर्तिभट्टारक स्वामीजी

हमे आपका भेजा हुआ लघुविद्यानुवाद ग्रथ प्राप्त करके प्रसन्नता है। हमने इसका अवलोकन किया और पाया कि हमारे रोजाना के स्वाध्याय मे काम आ रहा है। ग्रथमाला समिति प्रसशा की पात्र है और हम आपको और अधिक धार्मिक सेवाये करते रहने के लिए आशीर्वाद देते है।

श्री पन्नालालजी साहित्याचार्य पी एच डी., प्राचार्य श्री गणेश दिगम्बर जैन सस्कृत महाविद्यालय, सागर [म प्र]।

लघुविद्यानुवाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र का अच्छा ग्रथ है। इसके सकलन मे अच्छा श्रम किया गया है। प्रकाशन भी सुन्दर हुआ है। आशा है यन्त्र, मन्त्र अभ्यासीजन इससे लाभ उठायेंगे।

पण्डित श्री सुमेरचन्दजी दिवाकर सिवनी [म. प्र]

लघुविद्यानुवाद ग्रथरत्न की प्राप्ति से बहुत हर्ष हुआ। इसके प्रकाशन आदि कार्यो मे सहयोगियो का बडा उपकार है। उन सबको मेरा धन्यवाद है। धर्म कार्यों मे खूब उत्साह धारण करते रहे।

डा० प्रो० अक्षयकुमारजी जैन [इन्दौर] एम० ए, (हिन्दी सस्कृत) एफ० जे०, पी० एच० डी०, साहित्य, आयुर्वेदिक, धर्मरत्न सिद्धान्तशास्त्री, सम्पादन कला विशारद, एम० पी० फलित-ज्योतिष-विशेषज्ञ।

लघुविद्यानुवाद दुर्लभ उपलब्धि

कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति जोहरी बाजार, जयपुर से प्रकाशित 'लघुविद्यानुवाद' ग्रन्थ यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्यामहोदधि का मन्थनरूप नवनीत है। इस सचित्र नयनाभिराम अपूर्व कृति मे भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का मणिकाचन सयोग है।

मानवजीवन मे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारो पुरुषार्थो की उपलब्धि के लिए भारतीय प्राचीन साहित्य मे, जो भी आगम परम्परा से प्राप्त अनुभवगम्य सामग्री थी, उसका सारभूत यह स्मरणीय सग्रहणीय ग्रन्थ पाच खण्डो मे एक साथ उपस्थित कर चमत्कृत कर देता है।

आचार्य महावीरकीर्ति अध्यात्म, योग, मत्र-ज्योतिष-आयुर्वेद के सागर थे, उन्ही के शिष्य परम्परा मे आचार्य गणधर कुन्थुसागरजी एव गणिनी आर्यिका रत्न विजयामति माताजी ने जो सग्रह प्रकाशित करवाया है वह स्तुत्य/सास्वत श्रद्धा/सुमनाजलि प्रत्येक के लिए मार्गदर्शक है, इस ग्रन्थराज मे, श्रमण वैदिक एव आर्येतर भारतीय परम्परा के शब्द-ब्रह्म-ज्ञाता-ऋषिकल्प आचार्यो के अनुभव सिद्धि-दुर्लभ अनेक यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र तो एकत्रित हैं ही, अपितु उनकी सुबोध सरल विधि भी साथ मे है।

चक्रेश्वरी, पद्मावती, ज्वालामालिनी आदि शासन देवी-देवताओ के सुन्दर रगीन चित्र और मत्र महोदधि, मत्रमहार्णव, मत्रशास्त्र आदि ग्रन्थो की उत्तम-प्रमाणित सामग्री भी इसमे एक साथ मिल जाती है। बीजाक्षर कोष का सक्षिप्तीकरण, स्वरूप-शब्द ब्रह्मवाद के गुप्त रहस्य एव तन्त्रो-यन्त्रो और मन्त्रो का इतना सरल, सुगम सामान्य भाषा मे प्रस्तुतिकरण, जन सामान्य के लिए आज तक किसी भी ग्रन्थ मे एक साथ उपलब्ध नही पाया, मुद्राविधि, आसनो, मण्डलो के नक्शे, मुहूर्त साधन एव आसनो की विधि और उपाय – इक्कीस उत्तम चित्रो सहित प्रथम खण्ड मे ही हैं।

द्वितीय मे पाँच सौ आठ मन्त्र, अनेको कल्पगारुडी विद्याए; क्षेत्रपाल मन्त्र-यन्त्र साधन विधि विधान विस्तारपूर्वक हैं।

तृतीय खण्ड मे चौबीस तीर्थकर; महालक्ष्मी सरस्वती, चौंसठ योगिनी, पचागुली, आदि का विस्तारपूर्वक सचित्र वर्णन है। इस खण्ड के अट्ठारह चित्र सभी कठिन विषयो को व्यावहारिक और सिद्धियोग्य बना देते हैं।

चतुर्थ खण्ड मे दुर्लभ चौसठ यक्ष-यक्षणियो के चित्र, सोलह विद्यादेवियो का स्वरूप, महिमा तथा होम, आहुति, वाचनविधि का उत्तम निरूपण किया है। होम कुण्डो के नक्शे, मन्त्रो के स्वरूप, चित्र बहुत ही स्पष्ट बडे टाइपो मे सुगम और सरल, सरस बोधगम्य शैली मे है।

पंचम खण्ड मे नागार्जुन, पूज्यपाद, आचार्यो के सोने, चाँदी, पारा धातुओ के जारण, मारण, शुद्ध-सिद्ध प्रयोगो के सूत्र-नुस्खे, विज्ञान के अन्वेषी, प्रयोगप्रेमी छात्रो, प्राध्यापको और साधको के लिए बेजोड रिसर्च सामग्री देते हैं। एकाक्षी नारियल, गोरचन, वन्दा, वहेडा, हाथी जोडी कल्प और जडी-बूटियो के बडे सीधे

सरल प्रयोग अनेक ग्रहस्थ और सामान्य जनो के लिए उपचार शान्तिलाभ और ज्ञानवृद्धि की शास्त्रोक्त सामग्री देते हैं।

सात सौ पृष्ठो एव दुर्लभ रगीन चित्रो, मत्रो, यत्रो तथा अनेक कष्ट निवारक रिद्धि सिद्धि दायक सामग्री का आकर्षक आवरण पृष्ठ व सुन्दर डिजाईन मे प्लास्टिक कवर के साथ यह प्रकाशन १९८१ की ऐतिहासिक सपत्ति है। योग मत्र तत्र यत्र विद्याप्रेमी, जिज्ञासु, सन्तो ग्रहस्थो, विद्वानो छात्रो के लिए इस प्रकार का प्रकाशित ग्रन्थ भारत मे किसी भी भाषा मे पढने को नही मिला। यह सभी को सग्रहणीय है।

इस बहुरगी ग्रथ मे पूज्य आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी एव गणिनी आर्यिका विजयामति माताजी की तपस्या का जीवनरूप दीखता है, जो श्रावको, भक्तो जिज्ञासु वात्सल्यप्रेम परम्परा को पावन विशुद्ध सास्वत प्रसाद दे, इस अलौकिक मार्ग पर आरूढ करता है। **संयोजकद्वय श्री गंगवाल शांतिकुमारजी एवं प्रबन्ध सम्पादक श्री लल्लूलालजी गोधा** इस अथक परिश्रम एव स्तुत्य कार्य के लिए जैन समाज द्वारा अभिनदनीय हैं।

श्री अगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर

श्री दि० जैन कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति, जयपुर (राज०) ने आचार्य कुन्थुसागरजी व श्री गणिनी आर्यिका विजयामतिजी के सग्रहित लघुविद्यानुवाद नामक एक बडा सजिल्द ग्रन्थ श्री शान्तिकुमार गगवाल व लल्लुलाल जैन (गोधा) ने प्रकाशन करवाया था। **यह विशेषरूप से उल्लेखनीय है** कि यह ग्रन्थ ५ खण्डो मे विभक्त है। इसमे यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के अलग-अलग खण्ड हैं। आचार्य महावीर कीर्तिजी की सग्रहित सामग्री को इस मे व्यवस्थित रूप दिया गया है। बहुत ही थोडे समय मे इसका प्रकाशन करवाया गया है। ग्रन्थ के सग्रहकर्त्ता व प्रकाशक दोनो का ही यह प्रयत्न सराहनीय है। अपने विषय का अपने ढग का यह उल्लेखनीय ग्रथ है। समाज का इससे लाभ उठाना चाहिये।

श्री राजकुमार शास्त्री, निवाई

आपने लघुविद्यानुवाद ग्रथ मे अद्‌भुत साहस, अद्‌भुत लगन एव अथक परिश्रम के साथ अपनी धार्मिक भावना का परिचय दिया है। इतने कम समय मे इतने महान् ग्रथ का जो प्रकाशन करवाया है, वह स्तुत्य है। हमे आप जैसे युवक पर गर्व है। भगवान महावीर आपको सुख स्वास्थ्य वृद्धि प्रदान करते हुए चिरायु करें, यही कामना है।

सम्मति

(डा दामोदर शास्त्री, व्याकरणाचार्य, सर्वदर्शनाचार्य, जैनदर्शनाचार्य,

दिनाक २४-२-८१ को श्रवणवेलगोल के चामुण्डराय-मण्डप मे विमोचन समारोह के अवसर पर लिये गये चित्रो की झलक।

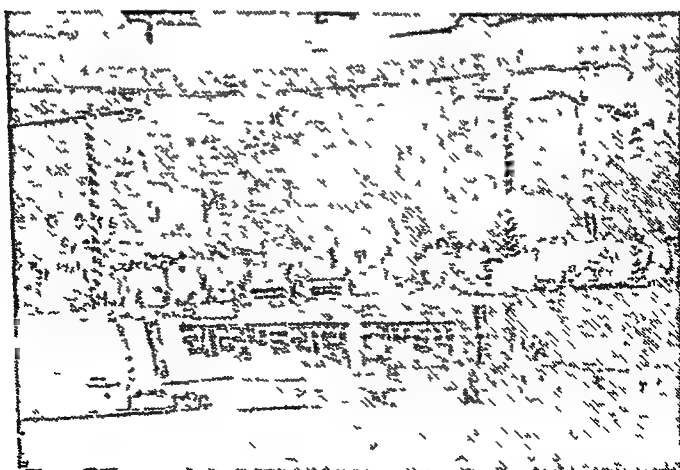


कु थुविजय ग्रंथमाला समिति के प्रथम प्रकाशन "लघुविद्यानुवाद" ग्रथ की प्रथम प्रति सग्रहकर्ता श्री १०८ गणधराचार्य कु थुसागरजी महाराज को भेंट करते हुए प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गंगवाल

.. ार्य विमलसागरजी महाराज लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ
समोचन करते हुए। प्रति भेंट कर रहे हैं श्री १०८
गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज। साथ मे खडे हैं
प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल।

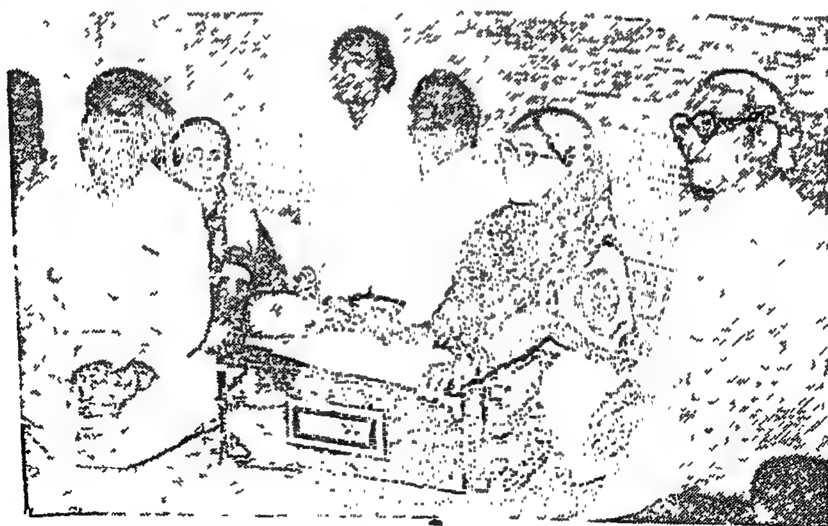


चामुण्डराय मण्डप मे श्री १०८ गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज
लघविद्यानुवाद ग्रथ की उपयोगिता के बारे मे प्रकाश डालते हुए



श्री गरिणनी १०५ श्रार्यिका विजयामति माताजी को ग्रथ भेंट करते हुए
प्रकाशन सयोजक शान्तिकुमार गगवाल





बहिन श्रीमति कनकप्रभाजी हाडा समारोह मे आध्यात्मिक भक्ति सगीत का
कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए



'श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अनाहत यंत्र मंत्र विधि' पुस्तक का विमोचन करते हुए श्री १०८ आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज। प्रति भेंट कर रहे हैं – शान्तिकुमार गंगवाल।



श्री १०८ आचायरतन देशभूषणजी महाराज 'तजो मान करो ध्यान' का विमोचन करते हुए तथा श्री शान्तिकुमार गंगवाल प्रति भेंट कर रहे हैं।

एम ए (सस्कृत, हिन्दी, प्राकृत व जैन शास्त्र) विद्या वारिधि (पी एच डी) प्राध्यापक एव अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग, नई दिल्ली।

लघुविद्यानुवाद (यत्र, मत्र, तत्र विधि का एक मात्र सदर्भ ग्रन्थ)

वीतराग धर्म के प्रति सामान्य जनता मे सद्भावना को बढाने के उद्देश्य से, तथा लोक कल्याण की भावना से तान्त्रिक प्रयोग को जैन धर्म की परिधि मे स्थान मिला है। पारमार्थिक दृष्टि से तो धर्माराधना ही मन्त्र है—"धर्माराधना जगत त्रियोगवशीकरणैक मन्त्र"।

(पद्मनन्दि पचविंशतिका २/१६) आचार्य जिनसेन कृत सहस्रनाम स्तोत्र मे भगवान के विशेषण मन्त्रवित, मन्त्रकृत, मत्री, मत्रमूर्ति आए है। मत्र सिद्धि हेतु अहिंसक द्रव्यो का प्रयोग ही जैनधर्म सगत है। (उत्तरपुराण मे ३६/१४७) धर्मप्रभावना की दृष्टि से इस ग्रथ की महान उपयोगिता है। इसमे सदेह नही मूलाचार मे ५/४ पर आचार्य वसुनन्दी का वचन है। "प्रभावनावाद पूजा, दानव्याख्यानमत्र-तत्रादिभिसम्यगुपदेशे मिथ्यादृष्टि विरोध कृत्वा अर्हंत्प्रणीत शासनोद्योतनम"। इससे स्पष्ट है कि धर्मभावना के अ गो-साधनो मे तत्र मत्र को स्थान है। अनगार धर्मामृत (१/५६) मे कहा है–मन्त्रादि का प्रयोग भी पुण्यकर्म जाग्रत करके अपने कार्य मे उनका उपयोग हेतु करणीय होता है। इस दृष्टि से कर्म व्यवस्था का भी खण्डन नही होता — तन्त्र विज्ञान मे।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस ग्रथ के प्रकाशन से लुप्त यत्र, मत्र तत्र विद्या को परम्परा पुनर्जीवित हुई है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे इस ग्रथ के प्रकाशन से विद्वानो को हर्ष होना स्वाभाविक है। मैं इस ग्रथ के प्रकाशन समिति को तथा विशेषकर प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमारजी गगवाल को धन्यवाद देता हू।

श्री विमलप्रकाशजी जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

लघुविद्यानुवाद ग्रथ को आपने धर्मानुरागी जनो के लाभ के लिये और जनकल्याण की भावना से तथा आपसी सहयोग से प्रकाशित किया है। यह जानकर हमे बहुत प्रसन्नता है। दिगम्बर साधुव्रतीजनो को यह ग्रथ आप नि शुल्क भेज रहे हैं। यह बहुत ही प्रसन्नता और पुण्य का कार्य है।

श्री साहू श्रेयासप्रसादजी जैन

लघुविद्यानुवाद ग्रथ की प्रति आपने मेरे स्वाध्याय के लिये भेजी है। उसके लिये मेरा धन्यवाद स्वीकार करें।

मुझे आशा है समाज इस ग्रथ की उपयोगिता को समझने का प्रयास करेगा।

श्रीमान् निर्मलकुमारजी सेठी

लघुविद्यानुवाद ग्रथ के प्रकाशन मे आपने जो योगदान दिया वो बहुत ही उत्तम कार्य किया है। आचार्य महाराज व माताजी अत्यन्त ज्ञानवान हैं। समाज को इस ग्रन्थ से बहुत ही लाभ मिलेगा।

श्री राजेन्द्रकुमार जैन खमरिया [मोजी, दमोह म प्र]

मैंने लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ का अवलोकन किया यह महान कृति है।

मै० प्रकाशचन्द प्रदीपकुमार जैन, शाहपुरा [म प्र]

आपका ग्रन्थ लघुविद्यानुवाद देखकर, सौभाग्य से बहुत प्रसन्न हूँ। आप लोगो के अकथनीय प्रयास से जैन मन्त्रो की इतनी बडी निधि छिपी पडी थी वह आज प्रकाश मे आई है।

श्री पारसलाल पाटनी, तिलकनगर, जयपुर

श्री शातिकुमारजी गगवाल, लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य आपके जीवन मे सबसे बडा कार्य था। इसको आपने जिस दृढता एव लगन पूर्वक सम्पन्न करके जो सफलता प्राप्त की है, वह जयपुर जैन समाज के लिये ही नही वरन् सपूर्ण भारतवर्ष मे जब तक यह ग्रन्थ विद्यमान रहेगा तब तक आपकी कीर्ति लहराती रहेगी। भगवान आपकी धर्म की निष्ठा आत्मसाहस एव धर्म प्रचार की भावना मे दिनदूनी रात चौगनी वृद्धि प्रदान करे, ऐसी मेरी हार्दिक भावना है।

श्री भूषणकुमार जैन बी एस सी, एल एल बी एडवोकेट, हिसार

लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ का मैंने अवलोकन किया है। यह वास्तव मे बहुत अच्छा ग्रन्थ है।



द्वितीय प्रकाशन

श्री ु िंशति ती ं र नाह यंत्र मंत्र विधि

(कन्नड से हिन्दी मे अनुवादित)

भारत गौरव विद्यालंकार सम्यक्त्व चूडामणि आचार्यरत्न
श्री देशभूषणजी महाराज

गणधराचार्य १०८ श्री कुन्थुसागर जी महाराज ने राजस्थान का होते हुए भी कन्नड भाषा का अच्छी तरह से अध्ययन करके श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र-मन्त्र विधि पुस्तक कन्नड भाषा के प्राचीन ग्रथ का प्रयत्नपूर्वक सशोधन करके अनुवाद किया है। आज के युग मे प्राचीन साहित्य का प्रकाशन होना अत्यन्त आवश्यक है आपका प्रयास स्तुत्य है।

स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेनजी भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी (कोल्हापुर)

ग्रथमाला समिति द्वारा भेजी हुई श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र-मन्त्र विधि पुस्तक मिली, किताब बहुत उपयोगी है। सब दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ऐसे ही अन्य ग्रन्थ आपकी ग्रन्थ माला से प्रकाशित हो, यही मगल कामना है।

श्री पन्नालाल साहित्याचार्य पी एच डी प्राचार्य
गणेश दि० जैन सस्कृत महाविद्यालय, सागर (म प्र)

ग्रन्थमाला समिति द्वारा प्रेषित श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र मन्त्र विधि पुस्तक प्राप्त हुई। ग्रन्थमाला समिति का प्रयत्न इस दिशा मे सराहनीय है।

विद्वतरत्न पण्डित श्री सुमेरचन्द दिवाकर शास्त्री उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासभा, सिवनी [म प्र]

ग्रथमाला समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र मन्त्र विधि पुस्तक प्राप्त हुई। बहुत उपयोगी कृति है।

डॉ० नेमीचन्द जैन

सम्पादक "तीर्थंकर", इन्दौर।

श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यन्त्र मन्त्र विधि पुस्तक की सबसे बडी देन यह है कि यह कन्नड से हिन्दी मे आई है। निश्चय ही इसके लिए हम ग्रथ-माला के कृतज्ञ हैं, जिससे इस क्षेत्र मे एक नये क्षितिज को जन्मा है। प्रकाशन की उत्तम छपाई होने के साथ-साथ मूल्य भी उचित है।

प्रो० अक्षयकुमार जैन, इन्दौर

लघुविद्यानुवाद ग्रन्थ के प्रकाशन के वाद •

श्री दिगम्बर जैन कु थु विजय ग्रन्थमाला की यह भेट सग्रहणीय है। उत्तम कागज पर चौवीस तीर्थंकरो के चित्र विघ्न यत्र-म त्र अलग-अलग पृष्ठो पर बडे टाइपो मे स्पष्ट हैं। महावीर प्रभावना मन्त्र शक्ति का मुखपृष्ठ प्लास्टिक कवर सहित वडा मोहक, रगीन, आकर्षक एव प्रभावशाली है। पुस्तक खोलते ही भगवान पार्श्वनाथ की केशरिया खड्गासन मूर्ति श्रद्धावनत कर देती है। आचार्य प्रवर श्री महावीरकीर्तिजी, श्री देशभूषणजी महाराज, श्री विमलसागरजी महाराज, श्री सन्मतिसागरजी महाराज, श्री कुन्थुसागरजी महाराज, विजयामति माताजी के विशाल पूर्ण रगीन आकर्षक चित्रो ने पुस्तक की रमणीयता मे अनुपम वृद्धि की है। जैन दर्शन साहित्य आयुर्वेदाचार्य महादेव धनुषकर की प्रस्तावना म त्र तत्र की वैज्ञानिक शक्ति प्रभाव और उपयोगिता पर उत्तम प्रकाश डालती है। तीर्थंकरो की आराधना से जो अतिशय चमत्कार एव फल हुए है उनका क्रमवद्ध विस्तृत ऐतिहासिक विवरण चौविस बिन्दुओ मे सरस रूपेण वर्णित है।

नागार्जुन यत्र विधान, नवग्रह यत्र, चितामणी सकलन के कारण पुस्तक अनुपम हो गई है। योधराज दीवानजी पर राजकोप से तोपो के गोलो द्वारा मृत्यु दण्ड और भक्ति से उनकी रक्षा का अन्तिम पृष्ठ बहुत ही प्रभावशाली है। विद्वानो व श्रेष्ठियो के सदेश प्रकाशन सयोजक के आत्मनिवेदन अनेक विषयो को परिचित कराते है। भक्ति सगीत एव आशीर्वादात्मक अनेक रग-विरगे चित्र पुस्तक मे हैं।

प० राजकुमार शास्त्री

सचालक अखिल विश्व जैन मिशन, निवाई-टोक (राज०)

श्री दिगम्बर जैन कुन्थु विजय ग्रन्थमाला समिति जयपुर (राज) द्वारा प्रकाशित श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यत्र म त्र विधि पुस्तक को आद्योपान्त पढकर वडी प्रसन्नता हुई। पुस्तक अपने आप मे अपूर्व है। प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमारजी गगवाल ने इसके प्रकाशन मे वडा कठिन परिश्रम किया है और इस विषय की सर्वागपूर्ण कृति प्रकाशित कर एक बडे अभाव की पुर्ति कर अपूर्व सेवा की है। इसके लिये परम पूज्य १०८ गणधराचार्य श्री कु थुसागरजी महाराज के वडे कृतज्ञ आभारी हैं। साथ ही प्रकाशन सयोजक श्री गगवालजी व उनके सभी सहयोगी धन्यवाद के पात्र है। हम आशा करते हैं आप सदैव सोत्साह कार्यकारी रहेगे।

श्री अगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर

ग्रन्थमाला समिति द्वारा प्रकाशित श्री चतुर्विशति तीर्थंकर अनाहत यत्र

मंत्र गोमन पुस्तक परमउपयोगी है।

तृतीय प्रकाशन

तजो मान करो ध्यान

श्री १०८ सन्मार्ग दिवाकर निमित्त ज्ञान शिरोमणि
आचार्य विमलसागरजी महाराज

पुस्तक तजो मान करो ध्यान की लेखिका परमविदुषी गणिनी आर्यिका विजयामती माताजी की लेखन कला बहुत सुन्दर है। उनकी बुद्धि दूरदर्शी और शान्त है। सर्व समाज व इतर समाज के लिये यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। पढने वालो को निश्चय ही आगे का मार्ग-दर्शन होगा—ऐसी मेरी कामना है।

श्री १०८ बालब्रह्मचारी विश्वधर्म प्रवक्ता स्थिवर
आचार्य सभवसागरजी महाराज।

पुस्तक तजो मान करो ध्यान बहुत ही सारगर्भित एव सैद्धान्तिक वचनो से रचित है जो माताजी के सिद्धात के ज्ञान का प्रकाशन करती है। माताजी ने अपने जीवन मे उच्च ज्ञान के द्वारा जो आचरण किया है उस ज्ञान एव चरित्र के सारभूत छन्द भक्ति आदि समूह की यह पुस्तक है। **सभी ज्ञान पिपासु मुमुक्षुओ को चाहिये कि इस आगमसार पुस्तक को** पढकर अपनी आत्मा मे लगे हुए अहकार, ममकार को नष्ट कर के शिव सुख के भागी बनें, और माताजी को भी इस प्रकार के स्वपर कल्याणार्थ और भी अनेक ग्रथो की रचना करने की शक्ति प्राप्त हो। ग्रथमाला के प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमार गगवाल को मेरा शुभाशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार धर्म कार्य करते रहे।

पन्नालालजी जैन, साहित्याचार्य पी एच डी प्राचार्य श्री गणेश
दिगम्बर जैन सस्कृत महाविद्यालय, सागर (म प्र)

ग्रथमाला समिति द्वारा प्रकाशित तजो मान करो ध्यान पुस्तक प्राप्त हुई। श्री पूज्य १०५ आर्यिका विजयामती माताजी की लेखनी से लिखित यह पुस्तक जन-जन का कल्याण करेगी।

स्वस्तिश्री पट्टाचार्य लक्ष्मीसेन भट्टारक स्वामीजी

ग्रथमाला समिति द्वारा प्रकाशित तजो मान करो ध्यान पुस्तक प्राप्त हुई। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। चित्र सहित जानकारी मिलती है। आपकी ग्रथमाला से ऐसे ही उपयुक्त ग्रथ प्रकाशित हो यही मगल कामना है।

श्री १०५ क्षुल्लक सन्मतिसागरजी ज्ञानानन्दजी महाराज

ग्रन्थमाला समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक तजो मान करो ध्यान जिसका विमोचन श्री १०८ आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज के कर कमलो द्वारा हुआ है। यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। समाज मे इसका अच्छा आदर हो रहा है।

प्रो० अ कुमार जैन एम०ए० शास्त्री, इन्दौर

"ध्यान योग पर अमर कृति तजो मान करो ध्यान"

प्रस्तुत कृति "तजो मान करो ध्यान" श्री दिगम्बर जैन कुथुविजय ग्रथमाला समिति जयपुर, [राजस्थान] का तीसरा रत्न है। ४५ चित्र समन्वित अनेक रग-बिरगे दुर्लभ पूज्य आचार्य, मुनि, आर्यिका, क्षेत्रादि के अतिरिक्त ध्यानतत्व निरूपण के उदाहरण रूप चित्रो का कृति मे प्राण प्रतिष्ठा कर दी है भारतीय साहित्य मे घरेंड, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, जनक, हेमचन्द्र, शुभचन्द्र, कुदकुदाचार्य प्रभृति ऋषियो के ध्यानयोग अनेक बृहद ग्रन्थ हैं। वर्तमान विश्व मे ध्यान और योग के क्षेत्र मे महेश-योगी स्वामी–मुक्तानन्द, आचार्य–रजनीश, प्रजापति ब्रह्माकुमारी, महर्षि अरविन्द एव सहज सिद्धि सर्वांग योगादि के जितने भी आश्रम और पथ के अग्रेजी और हिन्दी मे प्रकाशित अब तक के जो ग्रथ है उनमे यह कृति अलग से पहचान बनाती है। तत्वो की ध्यान, धारणा उपासना द्वारा आत्म-शान्ति एव आत्मानन्द प्राप्ति के लिये व्यवहारिक क्रिया मार्ग-दर्शन कराने वाले पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु धारणा तथा शुद्ध चैतन्यरूप ब्रह्मानन्द के आत्म साक्षात्कारी बहुरगी चित्र ध्यान के स्वरूप शक्ति और प्रभाव प्रदर्शित कराने वाली हिन्दी मे यह प्रथम कृति है। गर्ग जैन परम्परा के सभी ग्रन्थो के श्लोक, द्वारा विषय को स्पष्ट सरल सुबोध बनाया गया है। प्रस्तावना डा० दामोदरजी शास्त्री की विद्वता एव गवेषणापूर्ण है। अपनी बात मे लेखिका ने सरस–सरल शैली मे ध्यान का मूल कलश जन-जन को सौंप दिया है। बडे-बडे टाइपो मे और सुन्दर चिकने, मोटे कागज पर मुद्रित इसकी छपाई, सफाई सभी प्रशसनीय है। लगभग 224 पृष्ठो की सजिल्द नयनाभिराम प्लास्टिक कवर युक्त यह पुस्तक योग-ध्यान के अध्यात्म प्रेमी के लिये सग्रहणीय है। मूल्य मात्र 15/– रुपये है। इस महत्वपूर्ण कृति के प्रकाशन सयोजक श्री शान्तिकुमार गगवाल है।

हस्सरदिउच्चपुरिसे थिरछक्केसत्थगमणदेवदुगे ।
तस्सद्धमंतकोडाकोडी आहारतित्थयरे ॥१३२॥
सुरणिरयाऊणोघणरतिरियाऊण तिण्णि पल्लाणि ।
उक्कस्सट्ठिदिबंधो सण्णीपज्जत्तगे जोगे १३३॥
सव्वट्ठिदीणमुक्कस्सओ दु उक्कस्ससंकिलेसेण ।
विवरीदेण जहण्णो आउगतियवज्जियाणं तु ॥१३४॥
सव्वुक्कस्सठिदीणं मिच्छादिट्ठी दु बंधगो भणिदो ।
आहारं तित्थयरं देवाउं वा विमोत्तूणं ॥१३५॥
देवाउगं पमत्तो आहारयमप्पमत्तविरदो दु ।
तित्थयरं च मणुस्सो अविरदसम्मो समज्जेइ ॥१३६॥
णरतिरिया सेसाउं वेगुव्वियछक्कविलय सुहुमतियं ।
सुरणिरिया ओरालियतिरियदुगुज्जीवसंपत्तं ॥१३७॥
देवा पुणएइंदियआदावं थावरं च सेसाणं ।
उक्कस्ससंकिलिट्ठा चदुगदिया ईसिमज्झिमया ॥१३८॥
बारस य वेयणीये णामेगोदे य अट्ठ य मुहुत्ता ।
भिण्णमुहुत्तं तु ठिदी जहण्णयं सेसपचण्हं ॥१३९॥
लोहस्स सुहुमसत्तरसाणं ओघं दुगेकदलमासा ।
कोहतिये पुरिसस्स य अट्ठ य वस्सा जहण्णठिदी ॥१४०॥
तित्थाहाराणंतोकोडाकोडीजहण्णठिदिबंधो ।
खवगे सगसगबंधच्छेदणकाले हवे णियमा ॥१४१॥
भिण्णमुहुत्तो णरतिरियाऊणं वासदससहस्साणि ।
सुरणिरय आउगाणं जहण्णओ होदि ठिदिबंधो ॥१४२॥
सेसाणं पज्जत्तो बादरएइंदियो विसुद्धो य ।
बंधदि सव्वजहण्णं सगसगउक्कस्सपडिभागे ॥१४३॥
एयं पणकदि पण्णं सयं सहस्सं च मिच्छवर बंधो ।
इगिविगलाणं अवरं पल्लासंखूणसंखूणं ॥१४४॥